श्रीभगवत्-पुष्पदन्त-भूतवलि-प्रणीतः

खडागमः

श्रीवीरसेनाचार्यं विरचित घवला-टीका-समन्वितः। तस्य तृतीय खंडः

बन्ध-स्वामित्व-विचयः

हि-दीभाषानुपाद तुष्टना म रिटप्पण-प्रस्तावनानेकपरिशिष्टै सम्पादित

सम्पादक

नागपुरस्य नागपुरमहाविद्यालय सस्कृताध्यापक एम् ए, एट् वा, डी लिट् इ युपाधिधारी हीराटाटो जैनः

सहसम्पादक

बालचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

सशोधने सहायको

∘या वा, सा सु, प देवकीनन्दन सिद्धा तशास्त्री डा नेमिनाथ-तनय आदिनाथ॰ उपाज्याय , एम् ए., डी लिट.

प्रकाशक

श्रीमन्त शेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र

जैन साहित्योद्धारक-फड कार्या उय

अमरावती (बरार)

बि. स. **२००४**) बीर निर्वाण-सवत् **२४७३** (ई. स. **१९४७**

मृत्य रूप्यक-दशकम्

प्रकाशक ---

भीमन्त श्रेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द्र, जैन-साहित्योडास्कर्फड-कार्याख्य अमरावती (बरार)



मुद्रक----टी. एम्. पाटील मैनेजर सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, अमरावती.

ŞAŢKHAŅŅĀGĀMĀ

OF

PUŞPADANTA AND BHÜTABALI

WITH

THE COMMENTARY DHAVALA OF VIRASENA

VOL. VIII BANDHA-SWAMITVA-VICAYA

Edited

with introduction, translation, indexes and notes

Dr. HIRALAL JAIN, M. A., LL. B., D. Litt., C. P. Educational Service, Nagpur-Mahavidyalaya, Nagpur.

ASSISTED BY

Pandit Balchandra Siddhanta Shastri.

with the cooperation of

Pandit DEVAKINANDAN Siddhānta Shāstri Dr. A N. UPADHYE
M. A., D. LITT.

Published by

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra, Jaina Sähitya Uddhārakā Fund Kāryālaya, AMRĀOTI (Berar).

1947.

Price rupees ten only.

"Pubished by— Shrimant Soth Shitabzai Laxmichandra, Jama Sahitya Uddharaka Fund Kāryālaya. AMRAOTI [Berar].



Printed by—

T. M. Patil, Manager,

Saraswati Printing Press.

AMRAOTI (Berar).

विषय-सूची

				पृष्ठ
\$	प्राक्कथन			?
	र प्रस्तावना			
	Introduction			
8	विषय-परिचय	****		ŧ
२	बन्ध-स्वामित्व-विचयकी वि	षय-सूची	••••	९
ş	शुद्धि-पत्र	••••		१७
	२			
	मूल, अनुवाद और टिप्प	ण बन्ध-स्वामित्व-विचय	१ -3	१९८
٤	ओघकी अपेक्षा बन्धस्या	मित्व	••••	8
₹	આદેશની " "		••••	53
	3			
	परिशिष्ट			
ţ	बन्ध-स्वामित्व-विचय-सूत्रप	5I)	••••	8
₹	अवतरण-गाथा-सूची	••••	••••	२१
ŧ	न्यायोक्तियां	••••	••••	,,
8	प्रन्थोल्डेख	••••	••••	२ २
4	, पारिभाषिक शब्द-सूची	`	••••	,,

प्राक्-कथन

षट्खण्डागम सार्तवें माग खुदाबण्डोक प्रकाशित होनेके दो वर्ष पश्चात् यह आठवां माग बन्धस्वामित्व-विचय पाठकोंके हाथ पहुंच रहा है | इस मागके साथ पट्खण्डागमके प्रथम तीन खण्ड पूर्णतः विद्वत्ससारके सम्मुख उपस्थित हो गये | कागज, मुदण व व्यवस्थादि सम्बन्धी अनेक कठिनाइयों व असुविधाओंके होते हुए भी यह कार्य गतिशील बना ही रहा है, इसका श्रेप प्रन्यमालाके संस्थापक श्रीमन्त सेठजी व अन्य अविकारी, भेरे सहयोगी एं. बाल्चन्द्रजी शास्त्री तथा सरस्वती श्रेसके भैनेजर श्रीयुत टी. एम. पाटीलको है जो इस कार्यको विशेष रुचि और अपनत्वके साथ निवाहते जा रहे हैं | इन सबका में हत्यसे अनुगृहीत हूं | उन्हींके सहयोगके बल्पर आगका कार्य मी समुचित रूपसे चलता रहेगा, ऐसी आशा है | नवें भागका मुदण प्रारम्म हो गया है |

गगपुर महाविषाक्षय, नागपुर ७-९-१९४७

हीराठाठ



INTRODUCTION.

The present volume contains the complete third part (Khanda) of the Satkhandagama. It is called Bandha-samittavicaya which means ' Quest of those who bind the Karmas '. Out of the 148 varieties of Karmas, it is only 120 that are capable of being produced directly by the soul. The author of the Sutras has mentioned, in the form of questions and answers, the spiritual stages (Gunasthanas) and the detailed conditions of life and existence (Marganasthanas) in which specified Karmas may be forged; Fortytwo Sutras are devoted to the Gunasthana treatment, and the rest 282 to the Margana-sthana. The commentator has enlarged the scope of the treatment of the subject by raising twentythree questions and answering them in relation to all the Karmas. In this way, good many details about the Karma Siddhanta have been exposed and the whole work is very important for a thorough study of Jaina Philosophy.

विषय-परिचय

इस खण्डका नाम बन्धस्वामित्व-विचय है, जिसका अर्थ है बन्धके स्वामित्वका विचय अर्थात् विचारणा, मीमांसा या परीक्षा । तरनुसार यहां यह विवेचन किया गया है कि कैनसा कर्मबन्ध किस किस गुणस्थानमें व मार्गणास्थानमें सम्भव है। इस खण्डकी उत्पत्ति इस प्रकार बतर्जाह गई है —

कृति आदि चौशीस अनुयोगदारों में छठने अनुयोगदारका नाम बन्यन है। बन्यनके चार भेद हैं — बन्य, बन्यक, बन्यनीय और वन्यनियान । बन्यनियान चार प्रकारका है — प्रकृति, स्थिति, अनुमाग और प्रदेश । इनमें प्रकृतिबन्य दो प्रकारका है — मूल प्रकृतिबन्य और उत्तर प्रकृतिबन्य । सन्युक्तपणा छुठ १२० के अनुसार उत्तर प्रकृतिबन्य भी दो प्रकारका है, एकैकोत्तरप्रकृतिबन्य और अन्योगाद्वउत्तरप्रकृतिबन्य । एकैकोत्तरप्रकृतिबन्य के समुक्तिनादि चौशीस अनुयोगदार हैं जिनमें बारह्यां अनुयोगदार बन्यस्वामिस्व-विचय है।

इस खण्डमें २२४ सूत्र हैं । प्रथम ४२ सूत्रों में ओव अर्थात् केवल गुणस्थानानुसार प्रक्रपण है, और रोप सूत्रों में आदेश अर्थात् मार्गणानुसार गुणस्थानोंका प्रकर्पण किया गया है। सूत्रों में प्रश्नेत्तर क्रमसे केवल यह बतलाया गया है कि कीन कीन प्रकृतियां किन किन गुणस्थानों में बन्ध को प्राप्त होती है। किन्तु धवजातारें सूत्रोंको देशानशिक मानकर बन्धल्युच्छेद आदि सम्बन्धी तेबीस प्रश्न और उठाये हैं और उनका समाधान करके बन्धीद्यल्युच्छेद, स्वोद्य-परोदय, सानतर-निरन्तर, सप्रख्य-अग्रय्य, गति-सेयोग व गति-स्वामित्व, बन्धाल्यान, बन्धल्यान, बन्धल्यान, सादि-अवादि व धुव-अधुव बन्धोंकी व्यवस्थाका स्पर्धीकरण कर दिया है, जिससे विषय सर्वागर्ण प्रकृपित हो गया है। इस प्रकरणाकी कुछ विशेष व्यवस्थायें इस प्रकार कें

सान्तरबन्धी —एक समय यंत्रका दितीय समयमें जिनका बन्ध विश्वान्त हो जाता है वे सान्तरबन्धी प्रकृतियां हैं। वे ३४ हैं — असातावेदनीय, लीवेद, नपुंसकवेद, अराते, शोक, नस्कराति, एकेन्द्रियादि ४ जाति, समचतुरस्वतंत्र्यानको छोड़ शेष ५ संस्थान, अवर्षमनाराच-संहननको छोड़ शेष ५ संहनन, नरकाग्यातुर्धी, आताप, उच्चेत, अवशस्त्रविहायोगति, स्वायर, सुक्षम, अपर्यान्त, साधारणशरीर, अस्थिर, अञ्चन, हुम्मन, हुस्बर, अनुदेय और अवशक्तिर्की। निरन्तरबन्धी — जो प्रकृतियां जवन्यसे भी अन्तर्भेहर्त काल तर्क निरन्तर रूपसे बंधती हैं वे निरन्तरबन्धी हैं। वे ५४ हैं — धुवबन्धी ४७ (देखिये पृ. ३), आगु ४, तीर्धकर, बाहारकसरीर और आहारकसरियोगोगांग

सान्तर-निरन्तरबन्धी— जो जबन्यसे एक समय और उत्कर्षतः एक समयसे केकर अन्तर्सृद्वेतिक कांग भी बंधती रहती हैं वे सान्तर-निरन्तरबन्धी प्रकृतियां हैं । वे ३२ हैं — साताबेदनीय, पुरुषवेद, हास्य, रित, निर्देग्गित, नृतुष्यगित, देवगित, पंचिन्दिय जानि, औदारिक-हारीर, बैक्तियिकशरीर, समचतुरस्त्तंस्थान, कौदारिकशरीरांगोपांग, बैक्तियिकशरीरांगोपांग, बक्र्यंस-संहमन, निरंग्गिता पुत्रम्त, मनुष्यगत्यानुत्र्यी, देवगत्वानुत्र्यी, परवात, उच्छ्नास, प्रशस्तिबहायोगित, क्षत्त, बादर, पर्योग्त, प्रत्येवकशरींग, स्थिर, क्रुम, सुमग, सुस्यर, आदेय, यशकीर्ति, नीचगोत्र क्षीर कंचगेत्र ।

गतिसंयुक्त — प्रश्नके उत्तरमें यह बतलाया गया है कि विवक्षित प्रकृतिके बन्धके साथ चार गतियों में कीनसी गतियों का बन्ध होता है। जैसे — मिण्यादृष्टि जीव ५ झानाबरणको चारों गतियों के साथ, उच्चगोत्रको मनुष्य व देवगतिके साथ, तथा यशकीर्तिको नस्कर्गतिके विना शेष २ गतियों से संयुक्त बांधता है।

गतिस्वामित्वमें विवक्षित प्रकृतियोंको बांधनेवाके कीन कीनसी गतियोंके जीव हैं, यह प्रकृपित किया गया है। जैसे — ५ ज्ञानावरणको मिध्यादिक्षेत असंयत गुणस्थान तक चारों गतियोंके, संयतासंयत तिर्यंच व मनुष्य गतिके, तथा प्रमचादि उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्यगतिके ही जीव बांधते हैं।

अध्यानमें विवक्षित प्रकृतिका बन्ध किस गुगरथानसे किस गुगरथान तक होता है, यह प्रगट किया गया है। जैसे — ५ इनावरणका बन्ध भिष्यादृष्टिसे लेकर सूरुमसाम्पराय गुगरथान तक होता है।

सादि बन्ध — विवक्षित प्रकृतिके बन्धका एक वार व्युच्छेद हो जानेपर जो उपशामश्रेणीसे अष्ट हुए जीवके पुनः उसका बन्ध प्रारम्भ हो जाता है वह सादि बन्ध है। जैसे — उपशान्त-कषाय गुंजेंस्थानसे अष्ट होकर सुक्पसान्यराथ गुंजस्थानको प्राप्त हुए जीवके ५ ज्ञानावरणका बन्ध।

अनादि बन्ध — विवक्षित कर्मके बन्धके ब्युव्धितिस्थानको नहीं प्राप्त हुए जीवके जो उसका बन्ध होता है वह अनादि बन्ध कहा जाता है। जैसे — अपने बन्धव्युन्धिति-स्थान रूप सुक्तसाम्पराय गुणस्थानके अन्तिम समयसे नीचे सर्वत्र ५ झानाबरणका बन्ध । क्षुंच बन्ध — अमन्य जीवोंके जो ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध होता है वह अनादि-अनन्त होनेंस प्रुव बन्ध कहळाता है।

धुवबन्धी प्रकृतियां ४७ हैं — ५ झानावरण, ९ दर्शनावरण, भिष्यात, १६ कषाय, भय, जुगुस्मा, तैजस व कार्मण झरीर, वर्ण, मन्य, रस, स्पर्श, अगुरुळचु, उपघात, निर्माण और ५ अन्तराय।

> अध्रुव बन्ध- भव्य जीवोंके जो कर्मबन्ध होता है वह विनक्षर होनेसे अध्रुव बन्ध है। अध्रुवबन्धी प्रकृतियां—ध्रुववन्धी प्रकृतियोंसे शेष ७३ प्रकृतियां अध्रुववन्धी हैं। इनमें ध्रुववन्धी प्रकृतियोंका सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव चारों प्रकार तथा शेष

उक्त व्यवस्थाय यथासम्भव आगेकी तालिकाओं में स्पष्ट की गई हैं---

प्रकृतियोंका सादि व अध्यव बन्ध ही होता है।

बन्धोदय-तालिका

	1.4131 (110 11								
संस्था	प्रकृति	स्वोद्यबम्धी मादि	सान्तरबन्धी आदि	बन्ध किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक	उदय किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक	88			
१- 4	ज्ञानावरण ५	स्वा- बन्धी	निरन्तरबन्धी	१-१०	१-१२	•			
६ –९	चक्षुदर्शनावरणादि 😮	,,	,,	,,	,,	**			
१०-११	निदा, प्रचला	स्व-परा.	,,	१-८	,,	३५			
१ २-१8	निदानिदादि 🤻	"	", -	१–२	१–६	₹०			
१५	सातावेदनीय	,,	सा. निर.	१-१३	१- १४	16			
१६	असातावेदनीय	"	सान्तरबन्धी	१ −६	"	80			
१७	मिथ्यास्य	स्वो.	नि.	8	ę	४२			
१८-२१	अनन्तानुबन्धी ४	स्व-परो.	"	१–२	१–२	३०			
२२-२५	अप्रत्याख्यानावरण ४	, ,	"	88	1-8	84			
२६-२९	प्रत्याख्यानावरण ४	,,	,,	१- -4	8-4	40			
२०-३१	संज्वस्नकोधादि ३	,,	,,	१-९	१ –९	42,44			
11	संज्वलमलोम	,,	33	"	१-१0	46			

संस्था	- प्रकृति	स्वोदयबन्धी भादि	सान्तर बन्धी भादि	बम्ब किस गुणस्थानस किस गुणस्थान तक	उष्य किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक	ह ड
३ 8- ३ ५	इ।स्य, रति	स्त्र-परो.	सा. निर.	१- ८	१-८	९५
३६-३७	अपरति, शोक	,,	सा.	१–६	,,	80
३८-३९	भय, जुगुप्सा	"	नि.	१-८	,,	५९
80	नपुंसकवेद	"	सा.	8	१-९	४२
88	स्रीवेद	"	,,	१–२	,,	३०
ध २	पुरुषवेद	,,	सा. नि.	१९	,,	५२
४३	नारकायु	परो.	नि.	१	8-8	४२
88	तिर्यगायु	स्व-परो.	,,	१२	<i>8-u</i>	30
84	मनुष्यायु	,,	,,	१, २, ४	8-68	६१
8.ई	देवायु	परो.	"	8-0	ś-8	६४
	नरकगति			(३को छोड़)		
8.0	निरक्तगात तिर्थग्गति	"	सा.	8	"	४२
85	।तयग्गात मनुष्यगति	स्त्र-परो.	सा. नि.	१-२	१- -u,	३०
४९		,,	"	∮-8	6-68	४६
40	देवगति	परी.	,,	१-८	१ -8	६६
46.48		स्व-परी.	सा.	8	8	४२
44	पंचेन्द्रिय जाति	"	सा. नि.	१-८	6-68	ξ ς
५६	औदारिकशरीर *	"	,,	6-8	१-१३	8 8
40	वैक्रियिकशरीर	परो.	,,	१-८	6-8	६६
45	आहारकशरीर	"	नि.	9-6	٩	७१
49	तैजसशरीर	स्वा.	,	8-6	१–१३	६६
ξø	कार्मणशरीर	,,	"	"	"	"
६१	औदारिकाञंगोपांग	स्व-परो.	सा. नि.	∮−8	" -	88
63	वैकियिकअंगोपांग	परें।.	,,	१-८	4-8	६६
44	भाइ हक अंगोपांग	,,	नि.	9-6	8	७१

ξg	निर्माण	स्त्री.	नि.	1-6	₹-१३	48
Ęų	समयतुरस्रद्धंस्थान	स्त्र-पर्ते.	सा. नि.	,,	.,,	223
ĘĘ	न्यप्र े।ध र्षारेमण्डलसं स्थ ान	,,	सा.	१–२	,,	ેર •
६७	स्वातिसंस्थान	,,	,,	>>	,,	72
६८	कुब्जकसंस्थान	स्त्र-परे।.	सा.	१-२	१ -१३	ą.
६९	वामनसंस्थान	"	"	,,	,,	,,
90	हुण्डकसंस्थान	,,	,,	?	,,	४२
७१	वज्रवृष्यमनाराचसंहनन	55	सा. नि.	१- 8	"	88
७२	वज्रनाराचसंहनन	"	सा.	१–२	१-११	ŧ.
७३	नाराचसंह्रनन	"	"	,,	"	,,
હ્ય	अर्धनारा चसंहनन	"	"	"	१−७	19
હષ	की छितसंहनन	n	"	"	'n	**
હ	असंप्राप्तसृपारिकासंहनन	,,	,,	१	"	४२
৬৬	स्पर्श	स्बे.	नि.	१-८	१-१३	ĘĘ
৩८	रस	39	"	**	,,	,,
७९	गन्ध	,,	71	11	,,	11
٥٥	चर्ण	"	,,	,,	,,	,,
د ۲	नरकगत्यानुपूर्वी	परी.	· सा.	١ ا	१, २, ४	8.5
८२	तिर्यग्गस्यानुपूर्वी	स्त्र-परो.	सा. नि.	१–२	"	30
۷₹	मनुष्यगत्य।नुदूर्वी	,,	"	१–४	,,,	88
<8 .	देवगत्यानुदूर्वी	परो.	, ,	₹-८	"	44
८५	अगुरूलघु	स्त्रे।.	नि.	,,	१-१३	,,
८६	उपघात	स्व-परा.	,,	"	,,,	,,
৬১	परवात	, ,	सा. नि.	,,	,,	,,
۷۵	आवाम	,,	सा.	१	₹ .	85
८९	उद्यो त	,,	,,	१२	6-re	₹.
90	ड च् ट्यास		सा. नि.	₹	1-14	44
98	प्रशस्तविद्ययोगति	77	19	! !!	,,	*

संस्था	प्रकृति	स्त्रोइववन्धी धारि	सान्तर बन्धी आदि		डदय किस गुजस्थानसे किस गुजस्था	प्रव
				तक	तक	<u> </u>
९१	अध्रशस्तिवहायोगति	स्व-परो.	सा.	१–२	११३	३०
९३	प्रत्येकशरीर	"	सा. नि.	१- ८	,,	६६
98	साधारणशरीर	"	सा.		8	४२
९५	त्रस	,,	सा. नि.	१-८	१–१४	६६
९६	स्थावर	,,	. सा.	1	8	४२
९७	सुमग	,,	सा. नि.	१-८	1-18	44
96	दुर्भग	,,	सा.	१-२	∮-8	३०
९९	सुस्वर	,,	सा. नि.	१-८	१-१३	8 8
800	दुस्वर	,,	सा.	१−२	"	३०
१०१	য়ুশ	स्त्रो.	सा. नि.	१-८	"	44
१०२	अशुभ	,,	सा.	१–६	,,	80
१०३	बादर	स्व-परो.	साः निः	१−८	१- १४	44
१०४	सूक्ष्म	"	सा.	₹ .	₹	४२
१०५	पर्याप्त	"	सा. नि.	१-८	8-58	६६
१०६	अपर्याप्त	,,	सा.	१	१	४२
१०७	स्थिर	स्वे।.	सा. नि.	₹-८	१-१३	६६
१०८	अस्थिर	"	सा.	१–६	,,	80
१०९	आदेय	स्व-परो.	सा. नि.	₹-८	4-48	9.9
११०	अनादेय	"	स₁.	१-२	\$-8	३०
111	यशकीर्ति	,,	सा. नि.	१-१०	6-68	9
१ १२	अयशकी(तैं	"	सा.	१–६	1-8	80
११ ६	तीर्थंकर	परो.	नि.	8-5	१३-१४	৬ই
११४	उष्यगोत्र	स्त्र-परो.	सा नि.	१-१०	5-68	•
११५	नीचगोत्र •	я	"	१-२	9-4	₹•
११६-३०	अ न्तराय ५	स्वो.	नि.	१-१0	१-१२	

प्रत्यय-तालिका (ए. १९-२४)

६ गुणस्थान	मिध्वास् <u>व</u> प	अविरति १२	कवाय २५	योग १५	समस्त ५७
मिष्यात्त्र	ч	१२	२५	१३ आहारद्विकसे रहित	44
सासादन		37	11	,,	90
मिश्र		11	२१ अनन्तानुबन्धिचनुष्कसे रहित	१० आ. द्विक, औ. मि., वै. मि. व कार्भणसे रहित	84
असंयत	•	,,	31	१३ आहारद्विकसे रहित	8.4
देशसंयत		११ त्रसअसं- यम रहित	१७ अप्रत्याख्यानचतुष्कसे र दि त	९ आ. द्विक, औ. मि., बै. द्वि. व कार्मणसे रहित	₹७
प्रमत्त			१३ प्रत्याख्यानचतुष्कसे रहित	११ आइ।रद्विकसे सहित उपर्युक्त	.
अप्रमत्त	 .		"	९ भाहारक्ष्मिसे रहित उपर्युक्त	२२
अपूर्वकरण			,,	27	,,
अनिवृत्ति- करण भा. १			७ नोकषाय ६ से हीन	39	१६
मा. २			६ नपुंसकवेदसे दीन	,,	१५

			7		
गुणस्थान	मिध्यास्त्र ५	मधिरति ३२	धवा व २५	बोग १५	समस्त ५७
अनिष्टृत्ति- करण मा. ३			५ सीवेदसे हीन	९ आ. द्विक, औ. मि., वे. द्वि. व कार्मण से रहित	\$8
श्रा ४			४ पुरुपवेदसे हीन	,,	१३
· মা. ৸			३ संभ्यलनकोश्यसे ही न	"	१२
भा. ٩			२ संख्वलनमानसे हीन	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	११
শা. ৩			१ संख् ख नमायासे हीन	"	१०
सूक्ष्मसाम्प- शय			n	"	"
उपशान्त- क्षयाय			••••	,,	9
श्चीणबोह			••••	"	1,
सयोग- वेबवरी	***			७ सत्य व अनुभय मन और	y
अयोग- वेज्ञली				क्चन, औ. द्विक., कार्मण 	
					•

विषय-सूची

	-		
फ्रम नं. विषय	पृष्ठ	क्रमनं. विषय	पृष्ठ
१ धवलाकारका मंगलाचरण	१	१४ ध्रुववन्धी प्रकृतियोंका निर्देश	e,
२ वन्ध-स्वामित्व-विचयका दे। प्रकारसे निर्देश	,,	१५ निरन्तरबन्ध और भुवबन्धमें विशेषता	"
३ बन्ध-स्वामित्व-विचयका अवतार	ર	१६ मूळ और उत्तर प्रत्ययोंकी विस्तृत प्ररूपणा	१९
४ बन्घ व मोक्षका स्वरूप ५ वन्ध ₋ स्वामित्व-विचयका निरु-	Ę	१७ गतिसंयोगादिविषयक प्रश्लोका उत्तर	२८
त्त्वर्थं ६ ओघसे वन्ध-स्वामित्व-विचयक चौदह जीवसमासोंका निर्देश	" "	१८ निद्रानिद्रादिक पत्रीस प्रकृ- तियोंके बन्धस्यामित्व आदिका विचार	10
 जोदह गुणस्थानोंमे प्रकृतियन्ध ज्युच्छेदकी प्रतिक्षा 	4	१९ निद्रा और प्रचला प्रकृतिके बंध- स्वामित्व आदिका विचार	3 '1
८ व्युच्छेदके भेद और उनका निरुक्त्यर्थ	"	२० सातावेदनीयके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	₹८
ओघकी अपेक्षा बन्धस्वामित्व प	७ -९२	२१ असातावेदनीय आदि छह प्रकृतियोके बन्धस्वामित्व	
बन्धकाँकी प्रक्रपणामें तेईस प्रश्नोंका उद्भावन	y	आदिका विचार २२ मिथ्यात्व आदि सोलह प्रकृति- योंके बन्धस्वामित्व आदिका	80
१० प्रकृतियोंकी उदयञ्युच्छिचि	९	विचार "	धर
११ प्रकृतियोंके बन्धोदयकी पूर्वा- परता	११	२३ अत्रत्याख्यानावरणीय आदि नौ प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व	
१२ पांच झानावरणीयादिकोंके बंधके		आदिका विचार	ક્રફ
स्वामी व उसके व्युच्छेदस्थानकी प्ररूपणा करते हुए उन तेईस		२४ प्रत्याख्यानावरणचतुष्कके बन्ध स्वामित्व आदिका विचार	чо
प्रश्नोंका उत्तर १३ सान्तर, निरन्तर और सान्तर-	१२	२५ पुरुववेद और संज्वलनकोश्वके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५२
निरन्तर इ.पसे बंधनेवाली प्रकृतियोका निर्देश	१६	२६ संज्वलन मान और मायांके बन्ध- स्वामित्व आदिका विचार	५५

()	्खडानन	का अस्तावना	
क्रम नं विषय	पृष्ठ	ऋम नं. विषय	á
२७ संज्वलम लोभके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	ष्ट	1	(o)
२८ हास्य, रति, भय और जुगुप्साके बन्धस्थामित्व आदिका विचार	५९	1	१०४
२९ मनुष्यायुके वन्धस्वामित्व आदिका विचार	६१		०५
३० देवायुके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	ફ્ક	४४ सातवीं पृथिवीमें झानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	,,
३१ देवगति आदि सत्ताईस प्रकृति- योंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	33		०९
३२ आहारकशरीर और आहारक शरीरांगोपांगके बन्धस्थामित्व	40		. ११
आदिका विचार ३३ तीर्थेकर प्रकृतिके वन्धस्वामित्व	ঙং	तिर्यग्गतिमें — ४७ निर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचे-	
आदिका विचार	€७	द्विय तियंच पर्याप्त और पंच-	
३४ तीर्थेकर प्रकृतिके विशेष कारणें।की आशंका	૭૬	ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध -	१२
३५ तीर्थेकर प्रकृतिके बन्धके सीलह कारणोंकी प्ररूपणा	હ	४८ निद्रानिद्रा आदिके बन्ध-	१९
३६ तीर्थेकर प्रकृतिके उदयका माहात्म्य	९१	४९ मिथ्यात्व आदिके बन्ध	۲۹ ۲۹
आंदेशकी अपेक्षा बन्धस्वामित्व ९३	-३९८	५० अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कके बंध-	
गतिमार्गणा			२५
३७ नरकगातेमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्यामित्वका विचार		५१ देवायुके बन्बस्वामित्वका बिचार १ ५२ पंचेन्द्रिय तिर्येच अपर्याप्तोंमें	२६
३८ निद्रानिद्रादिके बन्धस्वामित्वका	٩.	क्वानावरणीय आदिके ब न्धः	
विचार	९८	,	२७
३९ मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वक विचार	र १०१	मनुष्यगतिमें —	
४० मनुष्यायुके बन्धस्यामित्वका विचार	१०२	(५३ मतुष्य, मतुष्यपर्याप्त और मतुष्यनियोंमें ओघके समान बन्धस्वामित्वकी प्रकृषणा १	रै०

	विषय	।-सूची	!
क्रम नं. विषय	वृष्ठ	क्रम नं. विषय	ás
५४ मतुष्य अपवीत्तीमें पंचेतिय तिर्वेच अपवीत्सीके समान बन्ध- स्वामित्वकी प्रकृषणा देवगतिमें — ५५ देवोंमे पांच झानावरणीय आदिके	१३४	६६ मतुष्यायुके बन्धस्यामित्यका विचार ६७ तीर्थंकर महातिके बन्ध- स्वामित्यका विचार ६८ मतुविकासि केकर सर्वार्थसिद्धिः	१५४ "
बन्धस्यामित्व भाविका विचार	१३७	तक पांच झानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१५५
५६ निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वकाविचार	१४१	इन्द्रियमार्गणा	
५७ मिथ्यात्व आदिके बन्धः स्वामित्वका विचार	१४३	६९ एकेन्द्रिय, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त अपर्याप्त, विकलत्रय पर्याप्त अपर्याप्त, तथा पंचेन्द्रिय अप-	
५८ मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१४४	र्याप्तों पंचेन्द्रिय तिर्यंच अप- र्याप्तोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यंच अप- र्याप्तोंके समान बन्धस्वामित्वकी	
५९ तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्य आदिका विचार ६० भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें कुछ विदोषताके साथ सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्व आदिकी प्रकृपणा	१ ४५ १४६	प्ररूपणा ७० पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्वासॉर्मे पांच झानावरणीय आदिके बन्ध- स्थाभित्वके विचारमें बन्धक आदि विवयक तेरेसा प्रश्लोंके एक-द्विसंयोगादि अंगोंकी प्रकृ	१५८
६१ सौधर्म और ईशान कल्पवासी देवोंमें सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्रकृपणा	180	पणा ७१ उक्त जीवॉर्मे निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१७ ०
६२ सनत्कुमारसे लेकर सहस्रार करुप तकके देवोंमें प्रथम पृथि	,,,,	बन्धस्थामत्वका विचार ७२ निद्रा और प्रचलाके बन्ध स्वामित्वका विचार	tos ees
बीस्थ नारकियोंके समान बन्ध- स्वामित्वकी प्ररूपणा	१४८	७३ साताबेदनीयके बन्धस्थामित्वका विचार	,,
६३ भारत करवसे लेकर नी प्रेवेयक तक पांच ज्ञानावरणीय भारिके बन्धस्वामित्वका विचार	१४९	ण्ड असाताबेदनीय भादि छड् प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्वका विचार	१७८
६४ निदानिदा आदिके बन्ध- स्वामित्वका विचार	१५२	७५ मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामि- स्वका विचार	१ ८०
६५ मिथ्यात्व आदिके वस्थ स्वामित्वका विचार	१५३	७६ अप्रत्यास्यानावरणीय आदिके वन्धस्यामित्वका विचार	१८२

र्र	46.	(9 काराम	AN ACCUSAN	
कम नं.	विषय	वृष्ठ	क्रम नं. विषय	রন্থ
स्वामित्वका (संज्वलनकोधके	१८ ४	योगमार्गणा ८९ पांच मनोयोगी, पांच वचनयोग और काययोगी जीबोंमें सर प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्वर्ष	Ŧ
बम्धस्वामित्व	न और मायांके काविचार कियम्बस्थामित्वका	१८५	ओघके समान प्ररूपणा ९० उक्त जीवोंमें सातावेदनीय विष यक बन्यस्वामित्वकी कुरू	
विचार ८१ हास्य, रति,	ाय और जुगुप्साके	,,	विद्येषता ९१ औदारिककाययोगियोंमें मनुष्य	२०२
बन्धस्तामित्वर ८२ मतुष्यायुके विचार	क्षा विचार यन्ध्रसामित्वका	१ ८६ "	गतिके समान बन्धस्वामित्वक प्ररूपणा ९२ उक्त जीवॉमें सातावेदनीयव	२०३ ते
	स्वामित्वका विचार के बन्धस्वामित्वका	१८७	बन्धस्वामित्वकी मनोयोगियोँ समान प्ररूपणा ९३ औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें	हें २०५
८५ आहारकदारी अंगोपांगके	र और आहारक बन्धस्वामित्वका	"	पांच क्षानावरणीय आदिकं बन्ध स्वामित्वका विचार ९५ निद्रानिद्रा आदिकं बन्ध	,,
विचार ८६ तीर्थंकर प्रकृति विचार	के बन्धस्वामित्वका	१९१	स्वामित्वका विचार ९५ सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वक	२० ९
ą	जयमार्गणा	,	विचार ९६ मिथ्यान्व आदिके बन्धस्वामिन्वक	२१२ ग
८७ पृथिवीकायिक वनस्पतिकारि	, जलकायिक, कि, निगोद जीव		विचार ९७ देवचतुष्कके वन्धस्वामित्यक	२१३
वादर सूक्ष्म तथा वादर	पर्याप्त अपर्याप्त		विचार ९८ वैकिथिककाययोगियोंमें देव गतिके समान बन्धस्वामित्यक	૨ ૧૪ -
समास बन्धर	तेर्येख अपर्याप्तोंके बामित्वकी प्रकृपणा	१९ २	प्ररूपणा ९९ वैकियिकामिश्रकाययोगियोंमें देव	२१५ -
सूक्ष्म पर्याप विद्योचताके	। वायुकायिक वाद्र । अपर्याप्तोंमें कुछ साथ पंचोन्द्रिय प्तोंके समान बन्धः		गतिके समान बन्धस्वामित्वक् प्ररूपणा १०० उक्त जीवोंमें तिर्यगायु औः	ે ર રર દ
स्वामित्वकी :		१९९	मनुष्यायुके बन्धाभावक विद्यापता	ो २ २९

विषय	-त्थी	įξ
वृष्ठ	क्रम नं. विषय	वृ ष्ठ
२६९	११४ हास्य व रतिसे छेकर तीर्यकर मक्तति तक ओधके समाम प्रकृपणा ११५ अपगतचेहियोंमें पांच झाना- वरणीय आविके कन्ध-	રપષ્ઠ
२३२	वरणीय आदिके बन्ध- स्वामित्वका विचार	२६४
२३७	११६ सातावेदनीयके बन्धसामित्वका विचार	२६५
२३८	११७ संज्वलनकोधके बन्धस्वामित्वका विचार	२६६
२३९	११८ संज्वलन मान और मायाके बन्धस्वामित्वका विचार	२६७
રક ર	११९ कंज्वलनलोमके बन्धलामित्यका विचार	२६८
	कषायमार्गणा	
રહર	१२० क्रोधकपायी जीवोंमें पांच झाना- वरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	250
रडर	१२१ द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	२७२
२४५	१२२ निद्रासे छेकर प्रत्याख्यानावरण- चतुष्क तक ओघके समान	•
રકટ	प्ररूपणा १२३ पुरुषवेदादिकी ओघके समान	२७४
	प्रकृपणा	२७५

१२४ हास्य व रतिसे लेकर तीर्थंकर

१२५ मानकवायी

प्रकृति तक ओधके समान

श्वानावरणीय आदिके बन्ध

खामित्वका विचार

१२६ द्विस्थानिक आदि प्रकृतियोंकी

ओघके समान प्रस्पना

जीवोंमें

,,

६७६

कस ने.

विषय १०१ आहारक च आहारकमिश्र काय-योगियोमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध खामित्वका विचार १०२ कार्मणकाययोगियोंमें

झानावरणीय आदिके खामित्वका विचार १०३ निद्रानिद्रा आदिके खामित्वका विचार १०४ सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका

आदिके

आदिके खामित्वका विचार वेदमार्गणा १०७ स्त्री, पुरुष और नपुंसकवेदियों में पांच क्रानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार १०८ निदानिदा आदि द्विस्थानिक प्रकृतियोंके

बन्धस्वामित्वकी

ओघके

,,

२५१

248

विचार ६०५ मिथ्यात्व

स्वामित्वका विचार १०६ देवगति

ओघके समान प्ररूपणा १०९ निद्रा और प्रचलाकी ओ घके समान प्ररूपणा ११० असातावेदनीयकी

१११ मिथ्यात्व आदिक एकस्थानिक

११२ अप्रत्याख्यानावरणीयकी ओघके

११३ प्रत्याच्यानावरणीयकी भोघके

प्रकृतियोंकी ओधके समान

समान प्ररूपणा

समान प्ररूपणा

समान प्रहरणा

प्ररूपणा

पांच

बन्ध-

क्रम नं. विषय	78	ऋम नं.	विचय	98
१२७ हास्य रति आदिकी समान प्ररूपणा			र्ययक्षानियोंसे,पांच कार	π-
समान प्ररूपणा १२८ मायाकषायी जीवीं ज्ञानावरणीय आदिके	र्भ पांच	स्वामि	प जा।दक वन त्यकाविचार और प्रचलाके वन	264
स्वामित्वकाविचार १२९ द्विस्थानिक आदिकी	"	स्वामि	त्वका विचार	"
समान प्ररूपणा	,,	कावि		६९६
१३० हास्य-रति आदिकी समान प्रक्रपणा	ओघके २७८	१४३ शेष ऽ यताके प्ररूपण	ग्रुतियाँकी कुछ विदे साथ ओघके समा	ो- न
१३१ लोभकषायी जीवोंमें कानाबरणीय आदिके	•••	१४४ केवलक	पनियोंमें साताबेदनीय	
स्वामित्वका विचार १३२ शेष प्रकृतियोंकी ओघरे	" समान		गमित्वका विचार संयममार्गणा	<i>२९.</i> ७
प्ररूपणा १३३ अकवायी जीवोंमें स		१४५ संयत यज्ञानि	योंके समान अन्ध	•
नीयके बन्धस्यामित्वक। ज्ञानमार्गणा	विचार ,,		चकी प्ररूपणा दनीयके बन्धस्वामित्वां	२९८ i
१३४ मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञान विभंगज्ञानियोंमें पांच ब		कुछ वि १४७ सामारि	क-छेदोपस्थापनशुद्धि-	·, -
णीय आदिके बन्धस्या विचार	मित्वका २७९	संयतीं आदिके	र्गाच ज्ञानावरणीय बन्धस्वामित्वका विचा	r
१३५ एकस्थानिक प्रकृतियोंकी समान प्ररूपणा	ओघके २८५	१४४ शेष स्वामित	प्रकृतियोंके बन्ध वकी मनःपर्ययक्रानियों	
१३६ आभिनियोधिक, श्रुत अयधिकानी जीर्वोमें	और पांच	१४९ परिहार	न प्ररूपणा युक्सिसंयतोंमें पांच	
ज्ञानायरणीय आदिके स्वामित्वका विचार	बन्ध - २८६	स्वामित्वका वि		₹0₹
समान प्ररूपणा	ओघके २८७	स्वामित्र	वेदनीय आदिके बन्ध- का विचार	३०५
१६८ सातावेदनीयके बन्धस्या विचार	मिल्बका २८८	१५१ देवायुके विचार	• •	३०६
१३९ दोच मक्तियोंकी समान प्रकपणा	भोषके २८९	१५२ आहारइ इारीरांग का विख	पांगके बन्धस्याधिता	
		सा (ज्ञाच	"	fol

क्रम	मं. विषय	28	कम नं.	विषय	áa
१५३	स्दमसाम्परायिक संयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धसामित्वका विचार	३ ०८	पांच	और पद्मलेक्यावालां । ज्ञानावरणीय आदि स्वामित्वका विचार	में के ३३३
	यथास्यातविद्वारगुद्धिसंयतोंमें सातावेदनीयके बन्धसामित्वका विचार संयतासंयतोंमें पांच क्वाना-	રે ૦૬	१६६ द्विस सम १६७ अस	थानिक प्रकृतियोंकी ओर्घ न प्ररूपणा तावेदनीयकी ओर्घ	के ३३७ के
	बरणीय आदिके बन्ध- खामित्वका विचार असंयत जीवोंमें पांच शाना-	३१०	१६८ मिध	न प्ररूपणा पात्य आदिके बन्ध पेत्यकाविचार	∄8० 1∙ ∄3€
	बरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३१२	सम	याख्यानावरणीयकी ओर्घ न प्ररूपणा	३४१
	हिस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्रकृपणा	३१७	सम	ाल्यानावरणकी ओछो निप्रकृपणा	३४३
	एकस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	,,	प्रकृत		"
	मनुष्यायु और देवायुके बन्ध- स्वामित्वका विश्वार	,,	१७२ देशा प्रकृष	ाँगा	३४४
१६०	तीर्थेकर प्रकृतिके बन्ध- स्वामित्वका विचार दर्शनमार्गणा	३१८		ारकद्वारीर और आहारव रांगोपांगके बन्धस्वामित्व ार	
१६१	चश्चदर्शनी और अचश्चदर्शनी जीवोंमें ओघके समान बन्ध- स्वामित्वकी प्रकृपणा			कर प्रकृतिके बन्ध त्वका विचार छिक्यावार्लोमें मिथ्यात	३४५
१६२	सातावेदनीयके बन्धसामित्वमें कुछ विशेषता	" ₹१९	दण्ड प्ररूप	ककी नारकियोंके समा णा	म ३४६
१६३	- अवधिदर्शनी जीवोंमें अवधि- ज्ञानियों और केवलदर्शनी			रुछेड्यावार्लोमें तीर्घक ते तक ओघके समा ।णा	
	जीवॉमें केवलकानियोंके समान बम्धस्वामित्यकी प्ररूपणा लेदयामार्गणा	"	बस्ध	जीवोंमें साताबेदनीयरे स्वामित्वकी मनोयोगियों न प्रकृपणा	के के
१६४	ठरवानागणा इ.च्या, नील और कापोत लेक्या- बालोमें असंयतीके समान		१७८ द्विस	न प्रक्षणा यानिक और एकस्यानिः तेयोंकी नयप्रैवेयकविमा	
	बन्धस्वामित्वकी प्रक्रपणा	३२०		दिवाँके समान प्ररूपणा	"

3.4	षद्	(संद्धानमः	भा अस्तावका		
कम र	तं. विषय	વૃષ્ઠ	क्रमनं.	विषय	£8
	भव्यमार्गणा भव्य जीवोंमें ओघंक समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	३५८	विच १९२ अस	ातावेदनीय आदिके	३७५
₹८०	अभव्य जीवोंमें पांच क्वानाः घरणीय आदिकं बन्धः स्वामिन्वका विचार	३५९	१९३ अग्र	स्सामित्वका विचार त्याख्यानावरणीयकी धिक्षानियोंके समान गणा	३७६
१ ८१	सम्यक्तवमार्गणा सम्यन्दष्टि और क्षायिकसम्य- न्दृष्टि जीवोम आभिनिवाधिकः		अभ १९५ प्रत्य	ं जीवोंमें आयुके बन्धका ।व ।ख्यान।वरणचनुष्ककेबन्ध मन्यका विचार	રૂજ્
	क्रानियोंके समान बन्ध- स्वामित्वकी प्ररूपणा सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वमें	३६३ ३ ६४	१९६ पुरुष बन्ध	मत्यका ।यचार ।वंद और संज्वलनकोधक ।स्वामित्वका विचार बलन मान और मायोके	,,
१ ८३	कुछ विशेषता वेदकसम्यग्दष्टियोंमें पांच क्वानावरणीय आदिके बन्ध- स्वामित्वका विचार	4 45	बन्ध १९८ संज्य	क्यामित्वका विचार ।स्वामित्वका विचार ।स्त्रको भके बन्ध- मेत्वका विचार	₹9<
	असातावेदनीय आदिके बन्ध- स्वामित्वका विचार अप्रत्याख्यानवरणीय आदिके	३६७	१९९ हास् जुगु ^र विच	साके बन्धस्यामित्वका	३७९
१८६	बन्धस्वामित्वका विचार प्रत्याख्यानावरणचतुष्कके वन्ध- स्वामित्वका विचार	इहर ३७०		ित आदिके <mark>बन्ध</mark> मेत्वका विचार ारकदारीर और आहारक-	"
	देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार आहारकदारीर और आहारक	३७१	कार्	रांगोपांगके बन्धस्वामित्व- वेचार सदनसम्यग्दिष्टयोंकी मित-	३८०
,	द्यारीरांगोपांगके बन्धस्वामित्वका विचार उपदामसम्यग्दष्टियोंमें पांच	३७२	२०३ सम्य	(योंके समान प्ररूपणा गिमध्यादिष्टयोंकी असं- के समान प्ररूपणा	" ३८३
!	क्कानावरणीय भादिके बन्ध- स्वाभित्वका विचार मिद्रा और प्रचलके बन्ध-	,,	समा	ग्रहिएयोंकी अभव्य जीवोंके न प्ररूपणा जीवोंमें श्रोघके समान	३८६
	लामित्वका विचार	રુજ		जावाम आधेक समान स्वामित्वकी प्रह्रपणा	"

		સાહ્	-47	र्
क्रम	नं. विषय	पृष्ठ	क्रम नं. विषय	पृष्ठ
4 •6	सातावेदनीयके बम्बस्वामित्व- की चश्चदर्शनी जीवोंके समान प्रकरणा	३८७	२०८ आहारक जीवॉमें ओघके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	1 ९0
30 0	असंबी जीवोंमें अभव्योंके समान बन्धस्वामित्वकी प्रकपणा		२०९ अनाहारक जीवोंमें कार्मण काययोगियोंके समान वन्ध- स्वामित्वकी प्रकपणा	398

शुद्धि-पत्र

षृष्ठ	٩.	भशुद	গুৰ
4	१८	किस गुणस्थान तक	किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक
•	8	उववस्रो	उवएसो
१३	U	बोच्छिजंदि	वोच्छिज्जदि
\$4	६	बज्झति	बज्यंति
,,	११	बंधमाणाणि ।	बंधमा णाणि
77	१२	वंधति	बंधंति
,,	२५-२६	दश प्रकृतियां तथा दर्शनावरणकी	दश प्रकृतियों तथा दर्शनावरणकी चार ही
		···· स्वोदयसे ही बंधती हैं.	प्रकृतियोंको बांधनेवाळे सब गुणस्थान
		•	स्वोदयसे ही बांधते हैं.
15	Ę	पुष्छणं पश्चिषणं ।	पुच्छाणं पश्चिषणं बुच्चदे ।
37	२२	ये तीन प्रश्न प्राप्त होते हैं।	इन तीन प्रश्नोंका उत्तर कहते हैं।
łc	۷	द थि	इस्थि
**	२३	अञ्चभ, पांच	अञ्जभ पांच
"	२४	विद्वायोगति स्थावर	विद्वायोगित तया स्थावर
રષ	4	दु बाबीसा	दुवावीसा
२५	२०	È	ŧ
32	•	उदयकोच्छेदो	उदयवी रुक्षेदादी
34	4	कदि गदिया	कदिगदिया
¥c	1	इचरे	उ ण्यदे

	•
٠.	

षट्खंडागमकी प्रस्तादना

युष	٩.	अशुद्ध	शुद्ध .
કર	,88,	गिर्यगरपाओग्याणुपुन्ति	णिर्यगद् णिर्वमस्याओग्नाणुपुरिव
"	,RE	नार्कायु और	नारकायु, नरकगति और
44	٠	धुववंघो।	धुववंघो
"	१७-२१		***
		जाता ?	ध्रुत्र बन्ध और अनादिक बन्ध भी क्यों।
			नहीं पाया जाता ?
97	२३	अनादि रूपसे भ्रुत्र बन्धका	अनादि एवं ध्रुव बन्धका
طره	8	वंघा॥ २०॥	वंघा। एदे वंघा, अवसेसा अवंघा॥२०॥
"	१५	बन्धक हैं॥ २०॥	बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, रोप अवन्धक
			हे 🛚 २०॥
५२	4	<u>दुविहाभावादो</u>	धुवियाभावादो '
"	१ ८	दो प्रकारके बन्धका	ध्रुव बन्धका
**	રષ	×××	२ प्रतिषु दुविहामानादो इति पाठः ।
બહ	દ	गयपञ्चभो	सगपच्चओ'
"	२०	गतप्रस्य है, अर्घात् उसका प्रस्य	स्वनिमित्तक है,
		जपर बतला ही चुके हैं,	
"	२३	अनुभागोदयसे अयवा अनन्तगुण-	अनुमागोदयकी अपेक्षा अनन्तगुणे हीन
	٠.	द्वानिसे दीन	
" "	₹ •	×××	१ प्रतिषु 'गयपच्चओ 'इति पाठः ।
44	२०	क्योंकि, वहां	क्योंकि, [मिथ्यान्व और सासादन गुण-
		*	स्थानमें]
७८ ९१	१० १४	अ न्तर्दीपक	अन्तदीप क
"	-	लोकस्स अञ्चणिङ्जा वंदणिङ्जा	ळोगस्स
"	,, १५	अर्चनीय, वंदनीय,	अञ्चणिरजा पूजणिरजा वंदणिरजा
९२	१९	पांच मुष्टियों अर्घात् अंगोंसे	अर्चनीय, पूजनीय, बंदनीय,
• •	• •	ा । अल्बा समाद्य जना स	पांच मृष्टियों अधीत् पांच अंगों द्वारा
49	¥	वंधो	भूमिस्पर्शसे वंघो
4.8	२२	ब्रितीय दण्डकार्चे (१)	
		, - m, (1)	द्वितीय दण्डक अर्थात् निदानिदा आदि दिस्थानिक प्रकृतियों हैं
			क्षरनागना अक्रातयाङ्ग

गृष्ठ	ψ̈́.	अशुद	शुक्
१०६	₹	जसकित्ति-णिमिण	जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण
11	१६	यशकीति, निर्माण	यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण
213	23	अत्थगदी प	अत्य गदीए
19	२५	अर्थगतिसे	इस गतिमें
१२१	۹,	उप्पण्णाणं सणक्कुमारादि'	उप्पण्णाणं, ओराल्डियसरीरअंगोवंगस्स सणक्कुमारादि [*]
१ २१	२४	जीवोंके, और सन्त्कुमारादि	जीवोंके उपर्युक्त प्रकृतियोंका, तथा औदा- रिकशरीरांगोषांगका सनरकुमारादि
"	"	भी इनका निरन्तर	भी निरन्तर
१ २२	٠	मणुस्साउ-मणुसगरपाओग्गाणु- पुन्वीओ	मणुस्साउ- [मणुसगइ-] मणुसगइ- पाभोग्गाणुपुट्योओ
"	۷	तिरिक्खाउ-तिरिक्खगद्दपाओ- गगाणुपुन्वीओ	तिरिक्खाउः [तिरिक्खगइः] तिरिक्ख- गद्दपाओग्गाणुपुब्बीओ
37	२१	मनुष्यायु एवं	मनुष्यायु, (मनुष्यगति) एवं
"	२२	तिर्थगायु, तिर्थग्गतिष्रायोग्यानु- पूर्वी	तिर्यगायु, [तिर्यग्गति], तिर्यग्गति- प्रायोग्यानुपूर्वी
१२७	y	पज्जन-पत्तेय	पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय
11	१९	पर्याप्त, प्रत्येक	पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक
१३०	R	भुववंधितादो । x x x	धुववंधित्तादो । भवसेसाणं सादि- अद्भुवो, अद्भुववंधित्तादो ।
".	१५	ध्रुववन्धी हैं । x x x	ध्रुवबन्धी हैं। शेष प्रकृतियोंका सादि और अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।
१३४	11	णवदंसणा-सोलसकसाय-	णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त- सोलसकसाय-
438	٩	[तिर्यन्गइ-तिर्यन्गइपाओगाणु- पुन्वी-]	पुरुवी-]
१४९	4	णिमिण-पंचंतरा इ याणं	णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं
99	२०	निर्माण और	निर्माण, उष्चगोत्र और
१ ६०	₹o	साादासाद	सादासाद
₹0₹	१ २	पविष्मा	पडियम्ब

षृष्ड	ά	গহ্যৱ	যুৱ
\$ 08	ŧ	सांतर-णिरंतरो ।	स्रांतर-णिरंतरो,
168	4	आदेज्ज-जसकित्ति	आदेज्जः [अणादेज्जः] जसकिचिः
27	१७	आदेय, यशकीर्ति	आदेय, [अनादेय], यशकीर्ति
१९७	ą	अत्थगईप	अत्य गर्रप
35	₹७	अर्था पत्तिसे	इस पर्यायमें
१९९	4	पज्जसापङ्जाणं	पञ्जसापञ्जसाणं
વર્ષ્ક	ć	मिच्छर्द्वीसु	मिच्छाइट्टीसु
306	**	11 204 11	॥ २०५ ॥
₹ {o	ર	रदि-स्रोग	रदि-अरदि-सोग
11	१५	रति, शोक	रति, अरति, शोक
३१ ६	२४	नरकगगति	नरकगति
146	8	वेष्टिङज्जिदि	वोच्छिज्जदि
३६७	ŧо	जसकितिणामाणं	अजसकित्रिणामाणं
"	२७	अयशकि र् ति	अ यशकीर्ति
३८०	Ł	असंजसम्मादिट्टिप्प हु डि	ब संजदसम्मादिद्विप्य दु डि
,,	१२	मदिणाणिभंगो	मविभण्णाणिभंगो ^१
"	२₹	मतिज्ञानियोंके	मतिअज्ञानियोंके
,,	રહ	×××	१ प्रतिष्ठ मदिणाणिसंगी इति पाठः ।



सिरि-भगवंत-पुष्फदंत-भूदवलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो तस्स तदियखंडो

बंधसामित्तविचओ

साहृवज्झाइरिए अरहंते वंदिऊण' सिद्धे वि । जे पच ठागवांठे वोच्छ बधस्म सामित्तं ॥

जो सो बंधसामित्तविचओ णाम तस्स इमो दुविहो णिदेसो ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

किमइमिदं सुत्तं बुच्चदे ? संबंधाभिहेर्यं-पओजणपदुप्पायणहं । जो सो वंधसामित्तविचओ

साधु, उपाध्याय, आचार्य, अरहंत और सिद्ध, ये जो पंच लेकपाल अर्थात् लेकोत्तम परमेप्टी है उनको नमस्कार करके वंधके स्वामित्वको कहते है।

जो वंधस्वामित्वविचय है उसका यह निर्देश ओष ओर आदेशकी अपेक्षासे दो प्रकार है ॥ १ ॥

शंका-यह सूत्र क्यो कहा जाता है?

समाधान—सम्बन्ध, अभिधेय और प्रयोजनके बतलानेके लिये उक्त सूत्र कहा गया है।

'जो वह वंधस्वामित्वविचय है 'इससे सम्बन्ध कहा गया है। वह इस प्रकार

१ प्रतिषु 'बट्टिऊण 'इति पाठ । २ अ आप्रत्यो 'लोकचाले 'इति पाठ ।

३ प्रतिपु 'समधामिहिय ' इति पाठ ।

णामित्त एरेण संबंधो कहिंदो । तं जहा— किद-वेदणादिचदुवीसअणिओगहारेसु तत्थ बंधणमिदि छड्डमणिओगहारं । तं चउन्विहं बंधो बंधगा बंधणिः वंधविहाणिमिदि । तत्थ वंधो णाम
जीवस्स कम्माणं च संबंधं णयमस्सिद्ण पर्रुवेदि । बंधगो ति अहियारो एक्कारसअणिओगहारेहि
बंधो प्ररुवेदि । बंधणिः णाम अहियारो तेवीसवम्गणाहि वंधजोगमम्बंधजोगां च पीग्माठदव्वं
पर्रुवेदि । जं तं बंधविहाणं तं चउन्विहं प्यिड-डिहि-अणुभाग-परेसचंधो चेदि । तत्थ
पयिडवंधो दुविहो मूलपयिडवंधो उत्तरपयिडवंधो चेदि । जो सो मूलपयिडवंधो सो दुविहो
एगेगमूलप्यिडवंधो अव्योगाठमूलपयिडवंधो चेदि । जो सो अव्योगाठमूलपयिडवंधो सो दुविहो
सुजगारिक्षो पर्योडहाणवंधो चेदि । तत्थ उत्तरपयिडवंधस समुक्कित्तणाओ चदुवीसअणिओगाहाराणि भवंति । तेसु चदुवीसअणिओगहारेसु वंधसामित्ती जाभ अणिओगहारे । तत्सेव वंधसामित्तविचओ ति सण्णा । जो सो ति वयणण जेण सो संभालिदो तेण एसो णिडेसो
संबंधपरुव्यो । एसो चेव अभिदेर्थपरुवओ वि । ते जहा— जीव-कम्माणं मिन्छतासंजनकसाय-जोगेहि एयत्परिणामो वंधो । उत्तं च—

है- कृति, वेदना आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंमें बन्धन नामक जो छठा अनुयोगद्वार है वह चार प्रकार है- बंध, बंधक,यन्धनीय और बन्धविधान। उनमें बन्ध नामक अधिकार जीव और कमोंके सम्बन्धका नयको अपेक्षा करके निरूपण करता है। बन्धक अधिकार ग्यारह अनुयोगद्वारोंसे यन्धकोंका निरूपण करता है। यन्धनीय नामक अधिकार नेईस बर्गणाओं से बन्धयोग्य और अवन्धयोग्य पुद्गल द्रव्यका प्ररूपण करता है। जो वन्ध विधान है वह चार प्रकार है— प्रकृतिबंध, स्थितिबंन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध। उनमें प्रकृतिवन्ध दो प्रकार है— मुलप्रकृतिवन्ध और उत्तरप्रकृतिवंध। जो मूलप्रकृतिवन्ध है वह दो प्रकार है— एक-एकमूलप्रकृतिबन्ध और अव्वागादमूलप्रकृतिबन्ध । जो अञ्बोगाद्रमुलप्रकृतिवन्ध हे वह दो प्रकार है— भूजगारवंध और प्रकृतिस्थानवन्ध। इनमें उत्तरप्रकृतिबन्धकं समुत्कीर्तन करनेवाले चौबीस अनुयोगद्वार हैं। उन चौबीस अनुयोगद्वारोंमें बन्धस्वामित्व नामक अनुयोगद्वार है। उसका ही नाम वन्धस्वामित्वविचय है। जो बन्धस्वामित्वविचय बन्धन अनुयोगद्वारके अन्तर्गत बन्धविधान अधिकारके भीतर प्रसिद्ध है वह प्रवाहरूपसे अनादिनिधन है। 'जो सो 'इस वचनसे चूंकि उसका स्मरण कराया गया है इसीलिये यह निर्देश सम्बन्धका निरूपक है, और यही अभिधेयका भी निरूपक है। वह इस प्रकार है— जीव और कमोंका मिथ्यात्व, असंयम, कपाय और बोगोंसे जो एकत्व परिणाम होता है उसे बन्ध कहते हैं। कहा भी है-

१ प्रतिष्ठ 'अभिहिय ' इति पाठः ।

बंधेण य संजोगो पोग्गलदव्येण होइ जीवरस । बंधो पुण विण्णेओ बंधविओओ पमोक्खोर द ॥ १ ॥

एदस्स वंधस्स सामितं वंधसामितं, तस्स विचओ [वंधसामित्तविचओ, विचओ] विचारणा भीमांसा परिक्वा इदि एयद्वे। । तस्स वंधसामित्तविचयस्स इमे दुविहो णिदेसे ति जेणदं सुतं देसामासियं तेणत्य पञ्जेजणं पि परुवेदव्वं। किमइमेरथं वंधस्स सामितं उच्चदे १ संत-दव्व-वेत-फीसण-कालंतर्रर-भावण्याबहुब-गइरागइबंधगतेण अवगयाणं चोहससुणद्वाषाणं अणवगदं वंधविसेसे वंधगतं वंधकारणाइरागईओ च सम्मं ण णव्वंति ति काऊण चोहस-गुणह्वाणाणं आहिकिच्च अप्पाउआणमणुगहुइं वंधविसेसो उच्चदे। तस्स णिदेसो दुविहो ओघोदसभेएण। तिविहो किण्ण होदि १ ण, वयणपओगो हि णाम परहो। ण च परो वि दुणयविदिरितो अत्थि जेण तिविहा एयविहा वा परुवणा होज्ज ति । ओघोणेहेसो दव्य-हियणयाणुग्गहकरो, इयरो वि पज्जविद्वयणयस्स ।

जीवका पुर्गळ द्रथ्यसे जो वन्ध साहित संयोग होता है उसे बन्ध और बन्धके वियोगको मोक्ष जानना चाहिये॥१॥

इ.स. वन्धका जो स्वामित्व है वह वन्धस्वामित्व है। उसका जो विचय है वह बन्धस्वामित्वविचय है। विचय, विचारणा, मीमांसा और परीक्षा, ये समानार्थक इन्द्र हैं। ' उस वन्धस्वामित्वविचयका यह वो प्रकारका निर्देश हैं। चूंकि यह सूत्र देशामर्शक हैं इ.स. लिये यहां प्रयोजन भी कहना चाहिये।

शंका-यहां बन्धके स्वामित्वको किस लिये कहा जाता है ?

समाधान—संस्व, द्रच्य, क्षेत्र, स्पर्दान, काळ, अन्तर, आव, अन्यबहुत्य और गत्या-गति वस्थक रुपसे जाने गये चीदह गुणस्थालोंके वस्थाविशेषके अझात होनेपर वस्थकस्य व वस्थानिमित्तक गालेकामारीका मेळ प्रकार झान नहीं हो सकता, पेसा जानकर चौदह गुणस्थालोंका अधिकार करके अच्यायु शिष्योंक अनुमहके लिये वस्थविशेष कहा जाता है। उसका निर्देश ओघ और आदेशके भेदले दो प्रकार है।

शंका-वह निर्देश तीन प्रकारका क्यों नहीं होता ?

समाधान---नहीं दोता, क्योंकि बचनका प्रयोग परके लिये होता है, और पर भी दो नयोंको छोड़कर है नहीं जिससे तीन प्रकार या एक प्रकार प्ररूपणा होसके।

भोधनिर्देश द्रव्यार्थिक नयवालोंका और इतर अर्थात् आदेशनिर्देश पर्यायार्थिक नयवालोंका अनुमद्दकर्ता है।

१ प्रतिप्र 'पमोक्खा ' इति पादः ।

ओधेण वंधसामित्तविचयस्स चोदसजीवसमासाणि णादव्वाणि भवंति ॥ २ ॥

' जहा उंदसो तहा णिदेसो 'ति जाणावणह्रमोघेणति उत्तं । वंघसामित्तविचयस्सेति संबंधे छट्टी दृष्ट्या । अथवा, वंधसामित्तविचण इदि विमयत्वनवणसत्तर्माए छट्टीणिदेसो कायव्यो । पुट्यमवगया चेव चे।हमजीवसमासा, पुणे। ते एत्थ किमई पर्रुविज्जेते ? ण एस दोसो, विस्सरणालुअसिस्ससंभारणहत्वादो ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी सम्मामिच्छाइट्टी असंजदसम्माइट्टी संजदासंजदा पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा अपुज्वकरणपइट्टउवसमा खवा अणियट्टिवादरसांपराइयपइट्टउवसमा खवा सुहुमसांपराइयपइट्ट-उवसमा खवा उवसंतकसायवीयरागछदुमत्या खीणकसायवीयरायछदु-मत्या सजोगिकेवली अजोगिकेवली ॥ ३ ॥

ओषकी अपेक्षा बन्धस्वामिर्त्वविचयंक चाँदह जीवसमास जानने योग्य हैं ॥ २ ॥

' जैसा उद्देश वसा निर्देश हाला है ' इसके झापनार्थ ' ओघसे 'एमा कहा है । ' बन्धस्यामिन्वविचयके 'यह सम्बन्धमं पठी विभाक्त जानना चाहिये । अथवा ' बन्ध-स्वामिन्वविचयमें ' इस प्रकार विपयाधिकरण लक्षण सप्तमी विभाक्तिके स्थानमें पठी विभक्तिका निर्देश करना चाहिये ।

शंका—चोदह जीवसमास पूर्वमें जाने ही जा चुके हैं, फिर उनकी यहां प्ररूपणा किसलिये की जाती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है. क्योंकि, यह कथन विस्मरणशील शिष्योंके स्मरण करानेके लिये है।

मिध्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यिमध्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत, अपन्तृकरणप्रविष्ट उपशमक व क्षपक, अनिष्टृतिचादरसाम्परायिक-प्रविष्ट उपशमक व क्षपक, स्क्ष्मसाम्परायिकप्रविष्ट उचशमक व क्षपक, उपशान्तकषाय वीत-रागछद्मस्य, क्षीणकषाय वीतरागछद्मस्य, क्षीणकषाय वीतरागछद्मस्य, संयोगिकेवळी और अयोगिकेवळी, ये चौदह जीव-समास हैं ॥ ३ ॥

एदस्स सुनस्त अत्थे। जहा जीवहाणे वित्थेगेण परुविदो तहा एत्थ परुवेदच्चो, विसेसाभावादो । एवं चेाइसण्डं जीवसमासाणं सरुवं संमालिय वंथसामित्तपरुवणइमुत्तरसुत्तं मणदि —

एदेसिं चोइसण्हं जीवसमासाणं पयडिबंधवोच्छेदो काद्व्वा भवदि ॥ ४ ॥

जिद जीवसमासाणं पयिडिवेभवोच्छेदो चेव उच्चिंदि तो एदस्स गंधस्स वंधसामित्त-विचयसण्णा कपं घडदे ? ण एस दोसों, एदिम्स गुणद्वाणे एदासिं पयडीणं षंधवोच्छेदो होदि त्ति कहिंद हेडिल्टरगुणद्वाणाणि तासिं पयडीणं वंधसामियाणि त्ति सिद्धीदो । किं च बोच्छेदो दुविहो उपादाणुच्छेदो अणुप्पादाणुच्छेदो चेदि । उत्पादः सत्तं, अनुच्छेदो विनाझः अभावः नीरुपितां इति यावत् । उत्पाद एव अनुच्छेदः उत्पादानुच्छेदः, भाव एव अभाव इति यावत् । एसो दव्यदियणयव्यवहारे । ण च एसो एयंतण चप्परुआं, उत्तरकांठे अध्विद्यज्ञायस्स

इस सूत्रका अर्थ जैसे जीवस्थानमें विस्तारसे कहा गया है वैसे ही यहां भी कहना चाहिये. क्योंकि, जीवस्थानसे यहां कोई विशेषता नहीं है। इस प्रकार चौदह जीवसमासोंके स्वरूपका स्मरण कराकर वन्धस्वामित्यंके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

इन चौदह जीवसमासोंके प्रकृतिबन्धच्युच्छेदका कथन करने योग्य है ॥ ४ ॥

शंका—यदि यहां जीवसमासोंका प्रकृतिवन्धन्युच्छेद ही कहा जाता है तो फिर इस प्रस्थका 'बन्धस्यामित्व यह नाम कैसे घटित होगा ?

समाधान—यह कोई दोप नहीं है, क्योंकि. इस गुणस्थान है हतनी प्रकृतियोंका बन्धन्यु-छंद्र होता है, यसा कहनपर उससे नीचेक गुणस्थान उन प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी हैं, यह स्वयमेव सिद्ध हो जाता है। दूसरी वात यह है कि ट्यु-छंद्र दो प्रकारका है— उत्पादानु-छंद्र और अनुत्पादानु-छंद्र। उत्पादना अर्थ सत्व और अनु-पादानु-छंद्र। उत्पादना अर्थ सत्व और अनु-पादानु-छंद्र। उत्पादना अर्थ सत्व और अनु-पादानु-छंद्र। (इस अन्य प्रवाद है। 'उत्पाद ही अनु-छंद्र उत्पादानु-छंद्र। (इस अकार यहां कर्मधारय समास है)। उक्त कथनका अभिमाय भावको ही अभाव वत्वाचान है। यह द्वन्यार्थिक नयक आश्चित व्यवहार है। और यह पकान करासे अर्थात् सर्वध्या मिथ्या भी नहीं है, क्योंकि, उत्तरकालमें विवक्षित पर्यायके विनाहासे विशिष्ट द्वन्य पूर्व

६ मतिष्र 'निरूपिता ' इति पादः ।

विणासेण विसिद्धदव्यस्स पुट्विल्लकाले वि उवलंमादो । दृब्बद्धियणयिम संताणं पज्जायाणं कथमभावो ? को भणदि तेसिं तत्थाभावो 'ति, किंतु ते तत्थ अपद्धाणा अविविक्खिया अर्णिया इदि तेसि द्व्यत्तेष्म ण तत्थ पज्जायत्तं । कथमिथियवसेण अदृब्बाणं पज्जयाणं दव्यत्तं ? ण, द्व्यदे एयंतेण तेसि पुथमृद्दाणमणुवलंभादो, दव्यसहावाणं चेतुवलंभा । जिदि एवं तो भावस्स दुचिसादिसु समण्यु चिमममण् इव अभावववहारो किण्ण कीरदे ? ण एस देसिं, दुचिसादीणं चिसममयस्सेव अभावण सह पच्चासत्तीए अभावादो । दव्यद्वियस्स कथमभावव्यवहारो ? ण एम दोसी, 'यदिस्त न तद् द्वयमितिल्प्य वत्तेन 'इति दो वि णए अविल्पंवज्ञण हिर्यणामणयस्स भावाभावव्यवहारविर्हाभावादो । अतुत्यादः असन्तं, अनुन्छेदो

कालमें भी पाया जाता है।

शंका--इच्यार्थिक नयमें विद्यमान पर्यायोंका अभाव कैस होता है ?

समाधान—यह कौन कहना है कि उनका वहां अभाव हेता है, किन्तु वे वहां अग्रधान, अविवक्षित अथवा अनर्पित हैं. इसल्डिये उनके द्रव्यपना ही है. पर्यायपना वहां नहीं है।

शंका — इच्यार्थिक नयके बरासे इन्यसे भिन्न पर्यायोंके इन्यन्व कैसे सम्भव है ?

समाधान — यह रांका शिक नहीं, क्योंकि, पर्याये द्रव्यमे सर्वथा भिन्न नहीं पायी जातीं, किन्तु द्रव्यस्वरूप ही वे उपलब्ध होती हैं।

र्शका—यदि ऐसा है ने। फिर पदार्थके अन्तिम समयके समान द्विचरमादि समयोंमें भी अभावका व्यवहार क्यों नहीं किया जाता ?

समाधान—यह केर्ष दोष नहीं है. क्योंकि, द्विचरमादिक समयोंके आन्तम समयके समान अभावके साथ प्रत्यासात्त नहीं है।

शंका-इव्यार्थिककी अपेक्षा पर्यायों में अभावका व्यवहार कैसे होता है ?

समाधान—यह कंई देग्प नहीं, क्योंकि, ' जो है वह देलिका अतिक्रमण कर नहीं रहना ' इस लिये देलों नयोंका आश्रयकर स्थित नैगमनयके भाव व अ<mark>भाव रूप व्यवहारमें</mark> कोई विरोध नहीं है ।

अनुत्पादका अर्थ असत्य और अनुच्छेदका अर्थ विनाश है।अनुत्पाद **ही अनु**च्छेद

६ मतियु 'तथासावो ' इति पाठः ।

बिनाझः, अनुत्पाद एव अनुच्छेदः (अनुत्पादानुच्छेदः) असतः अभाव इति यावत्, सतः असत्विविधान् । एसो पञ्जवद्वियणयव्यवहागे । एत्ये पुण उप्पादाणुच्छेदमस्सिद्ण जेण सुचक्तेरण अभावव्यवहारो कदो तेण सावो चेत्र पयडिवंधस्स परुविदो । तेणेदस्स गंयस्स वंधसामिचवित्रयसण्णा घडदि चि ।

पंचण्णं णाणावरणीयाणं चदुण्हं दंसणावरणीयाणं जसिकति-उच्चागोद पंचण्हमंतराहयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥५॥

बंधो बंधगो चि भणिदं होदि । पयडिससुक्तिचणाए णाणावरणादीणं सरूयं परुजिद-भिदि णेह परुविडजदे, पउणरुत्तियादो । का बंधो को अवंधओ चि णिहेसादो एदं पुच्छा-सुचमार्सेकियसुचं वा । कि भिच्छाइडी बंधओ कि सामणमम्माइडी कि सम्माभिच्छाइडी किं असंजदसम्माइडी एवं गंतृण किं अजोगी किं सिद्धो वंधओ चि तेणवं पुच्छा कायव्या । एदं देसामासियसुचं । किं बंधो पुख्यं बोच्छिज्जिदि किसुदओ पुख्यं बोच्छिज्जिदि किं दो वि समं बोच्छिज्जीत, किं मोदएण एदासिं बंधो किं परोदएण किं स-परोदएण, किं सांतरी बंधो किं

अर्थान् असन्का अभाव होता है, क्योंकि सन्के असन्यका विरोध है। यह पर्यायार्थिक नयके आधित व्यवहार है। यहांपर चूंकि सूत्रकारने उत्पादानुच्छेदका आध्रय करके ही अभावका व्यवहार किया है, इसिट्टिय प्रकृतितन्धका सद्भाव ही निक्तपत किया गया है। इस प्रकार इस प्रन्थका 'वन्धस्वामित्ववित्तय'नाम संगत ही है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगात्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक है और कौन अबन्धक है ? ॥ ५ ॥

'बन्ध ' प्रान्त्रसे यहां बन्धकका अभिप्राय प्रकट किया गया है। चूंकि प्रकृतिसमुत्कीतंन चूंठिकामें बानावरणादिकांका स्वरूप कहा जा चुका है. अन एव अव उनका स्वरूप
यहां नहीं कहा जाता, क्योंकि ऐसा, करनेसे पुनकिक दोष आवेगा।
कीन बन्धक और कीन अवन्धक देस निर्देशसे यह पृच्छास्य अथया आशंकास्य है,
ऐसा समझना चाहिये। इत्तीठिये क्या मिध्यादिष्ट वन्धक है, क्या सासाइनसम्यन्दिष्ट
बन्धक है, क्या सम्यग्निध्यादिष्ट वन्धक है, क्या आसंयतसम्यन्दिष्ट वन्धक है, इस प्रकार
जाकर क्या अयोगी बन्धक है, क्या सिद्ध जीव बन्धक है, ऐसा यहां प्रकृत करना
चाहिये। यह देशामर्थक स्व है। इसिटियं यहां क्या वन्धक पूर्वमें जुष्डिकित होती
है (१) क्या उदयकी पूर्वमें जुष्डिकित है (२) व्या दोनोंकी साथ ही व्युष्डिकित होती
है (३) क्या अपने उदयकी स्वर्य इनका बन्ध होता है (४) क्या अपने उदयक्ती स्वर्य क्षाय इनका बन्ध होता है (६)

णिरंतरो बंधो किं सांतरणिरंतरा, किं सपच्चओ किमपच्चओ, किं गद्दमंजुर्चे। किमगद्दसंजुर्चे। कदिगदिया सामिणो असामिणो, किं वा वंधद्धाणं, किं चिरमसमए बंधो वोच्छिज्जदि किं पढम-समए किमपढमअचरिससमए बंधो बोच्छिजदि, किं सादिगो वंधो किं अणादिओ, किं धुवो किमद्धवा चिं, तेणदाओ तेवीसपुच्छाओ पुच्चिलपुच्छाए अंतब्सूदाओ चिं द्रव्याओं। एरथुवउज्जंतीओ आरिसगाहाओ—

बंधों बंधविही पुण सामितदाण पञ्चयविही य ।
एदे पञ्चिणकामा ममण्याणेष्ठ मम्पेड्जा ॥ २ ॥
बंबोदय पुत्रं वा समं व शिवपण कस्स व पोण ।
अण्यदरम्पुदण्ण व सांत्रियांत्रं का च ॥ ३ ॥
पञ्चय-मामिनविहां संबुन्नदाणण्ण नह चेय ।
सामिन शेषव्यं पर्यंशंण टाणमांसः ॥ ॥ १ ॥
बंधोदय पुत्रं वा समं व सन्योदण नदृश्णा ।
सान्त शिवंतं वा वरिमेदर सादिआदीवा ॥ ५ ॥

बन्ध, बन्धविधि, बन्धस्वामित्व, अध्वानः अर्थात् वन्धसीमा और प्रत्ययविधि, ये पांच नियोग मार्गणस्थानीमें खोजने येत्यै हैं ॥ २ ॥

बन्ध पूर्वमें है, उदय पूर्वमें हैं, या होनों साथ है, किस कमेका वन्ध निजंक उदयके साथ होना है, किसका परके साथ, और किसका अन्यतरक उदयके साथ, कीन प्रकृति सानरबन्धवाली है, और कीन निरन्तरबन्धवाली, प्रत्ययविधि, स्वामित्वविधि तथा गनि-संयुक्त वन्धाण्यानिक साथ पकृतियोंक स्थानका आध्यकर स्वामित्व जानना चाहिय। ॥३-॥॥

बन्ध पूर्वमें, उदय पूर्वमें या दोनों साथ होते हैं, वह बन्ध स्वोदयसे परोदयसे या दोनोंक उदयसे होता है, उक्त बन्ध सान्तर है या निरन्तर, वह अन्तिम समयमें होता है या इतर समयमें, तथा वह सादि है या अनादि है ॥ ५॥

१ प्रतिपु 'मग्गेःजो ' इति पाठः ।

एरथ एदासु पुन्छसु विसमपुन्छाणमत्यो बुन्चदे । तं जहा- बंधवोन्छेदो एरथेव सुन्नसिद्धो ति तं मोक्त्ण पयडीणसुदयवोन्छेदं ताव वन्तइस्सामा । मिच्छन-एइंदिय-बीइंदिय-वी

इन प्रश्नोमें विषम प्रश्नोंका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है— चूंकि बन्धयु-छेद्र यहां ही सुन्नसं सिक्त है अत एव उसको छोड़कर प्रकृतियोंके उद्यव्युख्छेद्द की
कहते हैं। मिण्यान्त, एकेन्द्रिय, ईंन्ट्रिय, इंन्ट्रिय, जाति, आताण, स्थावर,
सुरूम, अपर्यान्त और साधारण, इन दृद्ध प्रकृतियोंका उद्यव्युख्छेद्द सिण्यादृष्टि गुण्स्थानके अन्तिम समयमें होता है। यह महाकर्मप्रकृतिप्राभृतका उपदेश है। चूर्णिस्प्राके
कर्ता येतिवृष्मावायेक उपदेशसे मिण्यान्य गुणस्थानके अन्तिम समयमे पांच प्रकृतियोंका
उदयव्युख्छेद होता है, क्योंकि. चार जाति और स्थावर प्रकृतियोंका उदयव्युख्छेद
सासादनसम्प्रवृष्टि गुणस्थानमें माना गया है। अनन्तावुबन्धी क्रोध, मान, माया और
लोमका उदयव्युख्छेद सासादनसम्प्रवृष्टि गुणस्थानमें होता है। अप्रयाख्यानावरण कोच, मान, माथा, लोस, नारकायु, देवायु, नरकगाति, देवगति, वैक्रियिकशरीर,
वैक्रियिकशरिरोगोपांग, चार आनुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय और अयदाखोति, इन सक्तर्यः
प्रकृतियांका उदयव्युख्छेद असंयतसम्प्रवृष्टि गुणस्थानमें होता है। प्रयास्थानावरण
क्रोध, मान, माथा, लोस, तिर्पयायु, तिर्पगति, उद्यात और नीच गोक, इन आठ प्रकृतियोंका
उदयव्युख्छेद संयतासंयत्यगुणस्थानमें होता है। तिहातिहा, प्रचलप्तमात्वरण, स्थानपुर्धि,
आहारशरीर और आहारशरीरांगोपांग, इन पांच प्रकृतियोंका उदयव्युख्छेद प्रसासांत्रामा है। तिहातिहा, प्रचलप्त्रक्त, स्थानपुर्धि,
आहारशरीर और आहारशरीरांगोपांग, इन पांच प्रकृतियोंका उदयव्युख्छेद प्रसासंवर्यान्ति होता है। तिहातिहा, प्रचलप्त्रक्ति, इन सक्तर्यः

१ प्रतिषु 'णसिऊणकत्ताराण- ' इति पाठः ।

२ मिल्के मिल्कादावं सहुमतियं सासणे अणेदंदी । धावरवियलं मिस्से मिस्सं च य उदयवोष्टिकणणा ॥ गो. क. २६५.

३ अयदे विदियक्साया नेगुन्त्रियङक णिरय-देवाऊ । मध्य-तिरियाष्टपुर्ज्ञा दुस्भगणादेज्य अञ्चलसं ॥ गो. क. २६६.

^{₩.} a. z.

पमत्तसंजदिमः उदयेवाच्छेदो' । अद्रणारायण-विक्यि-असंपत्तसेवद्वसरीरसंघडण-वेदगसम्मत्ताणं चदुण्हं पयडीणं अप्पमत्तसंजदिमः उदयेवाच्छेदो । हस्स-रिद-आदि-सोग-भय-दुगुंछाणं छण्णं पयडीणमधुव्वकरणिमः उदयेवाच्छेदो । हिस-णवुंसय-पुरिसंवद-कोह-माण-मायासंजरुणाणं छण्णं पयडीणमणिविद्विम्ह उदयेवाच्छेदो । रोजसंजरुणस्य एकस्स चेव सुहुमसांपराइयचरिमसमयिमः उदयेवोच्छेदो । वज्जणारायण-गारायणसरीरमंघडणाणं दोण्णं पयडीणं उवसंतकसायिम्य उदयेवोच्छेदो । शिहा-पयराणं दंग्ण्हं पि खीणकसायदुचिरमसमयिमः उदयेवोच्छेदो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं चोद्यसणं पयडीणं खीणकसायचरिमसमयिमः उदयेवोच्छेदो । ओराठिय-तेजा-कम्मइयमरिर-छसंग्रण पयडीणं खीणकसायचरिमसमयिमः उदयेवोच्छेदो । ओराठिय-तेजा-कम्मइयमरिर-छसंग्रण योराठियसरिरअंगोवंग-वज्ञरिसहवइर-णारायणसरिरसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-जवधाद-परघादुस्सास-देविहायगदि - पत्त्रसरिरियस्यहण्डस्यास-देविहायगदि -

गुणस्थानमें होता है। अर्थनाराज, कीलित, असंप्राप्तस्पाटिकासंहतन और वेदकसम्यक्त्य हम बार महानवांका उद्वयन्युच्छेद अप्रमत्तनंयन गुणस्थानमें होता है। हास्य, राने, अराने, तोक्क, भय और जुगुन्सा, इन छह प्रहानयोंका उद्वयन्युच्छेद अपूर्वकरण गुणस्थानमें होता है। होते, नपुंसक और पुरुपेद, संद्यलन कोष, माना और माया, इन छह प्रहानयोंका उद्वयन्युच्छेद अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें होता है। केवल एक संन्यलन लोभका उद्वयन्युच्छेद स्वस्मलाम्परायिक गुणस्थानक अन्तिम समयमें होता है। वज्रनाराच और नाराच शारीरसंहनत, हन दे। प्रहानयोंका उद्वयन्युच्छेद अपवानतक्षयय गुणस्थानक जिला है। व्यक्तनाराच और नाराच शारीरसंहनत, हन दे। प्रहानयोंका उद्वयन्युच्छेद शोणकपाय गुणस्थानक द्विचरम समयमें होता है। वो वानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय, इन बौदह प्रहानयोंका उद्वयन्युच्छेद शोणकपाय गुणस्थानक अन्तिम समयमें होता है। कौदारिक, तैजस और कार्मण शारीर, छह संस्थान, और्शादिक, तैजस और कार्मण होता है। कौदारिक, तैजस और कार्मण, स्वस्त्र अपवान स्वयन होता है। कौदारिक, तैजस और कार्मण शारीर, छह संस्थान, और्शादिक, तैजस और कार्मण, हाता है। कियान स्वयन्य होता है। विश्वनीय, सन्याय, स्वस्त्र कीर हिम्मण, हन उनतीस प्रहानवींका उदयन्युच्छेद सथोगिकेवली गुणस्थानमें होता है। दो वदनीय, सन्याय, प्रहान होता है। दो वदनीय, सन्याय,

१ देसे तदियकसाया तिरियाङकोब-र्णाच-निरियगर्दा । ङ्कंट आहारदुग श्रीणनिय उदयवे**ाच्छिण्णा** ॥ गो. क. २६७

२ अपमत्ते सम्मतः अतिमतियसहरीः यऽपुत्र्यान्ह । छण्वव शोकसाया अणियदीभागमानेष्ठ ॥ वेदतियः कोह-माण मायासज्ञरूणमेव सहुमते । सहुमा छोहां सते बञ्जणाराय-णारायं ॥ गो. क. २६८-२६९

३ सीलक्सायदुचिरमे णिदा पयलाय उदयवेष्डिण्णा। णाणंतरायदसयं दंसणचत्तारि चरिमन्हि॥ गो. क. २७०.

वोच्छेदो' । दोवेदणीय-मणुस्साउ-मणुस्सगद्-पंचिदियजादि-तस-यादर-पञ्जत-सुभग-आदेज्ज-जसगिति-तित्थयर-उच्चागोदाणं तेरसण्हं पयडीणमजोगिकेवलिम्ह उदयवोच्छेदो' । एत्थ उवसंहारगाहा—

> दस चदुरिगि सत्तारस अट्ट य तह पंच चेव चउरो य । छच्छनक एग दग दग चोदस उग्रतीस तेरसदयिवहीं ॥ ६ ॥

एन्सुद्यवोच्छेदं पहाविय कार्सि पयडीणं बंधो उदए फिंट्टे वि होदि, कार्सि पयडीणं बंधे फिंट्टे वि उदओ होदि, कार्सि बंधोदया समं बोच्छिज्जंति ति बुच्चदे। तं जहा— देवाउ-देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियक्षंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्व-आहारदुग-अजसिकत्तीण-मृहण्णं प्यडीणं पढममुदओ वोच्छिज्जदि पच्छा बंधे। । एस्थ उनसंहारगाहा—

> देवाउ-देवचउक्काहार्न्दुअं च अजसमद्वण्हं । पटममद्रओ विणस्सदि पच्छा बंधो मुणयेक्वो ॥ ७ ॥

मनुष्यगति, पंचेन्ट्रियजाति, त्रस, बादर. पर्याप्त, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थंकर और उचगोत्र, इन तेग्ह प्रकृतियोंका उदयन्युच्छेद अयोगिकेवली गुणस्थानमें होता है । यहाँ उपसंहारगाथा—

द्दा. चार. एक, सत्तरह, आठ. पांच,चार,छह, छह,एक,दो.दो,चौदह, उनर्तास और तेरह.(इस प्रकार क्रमशः मिथ्यादृष्टि आदि चौदह गुणस्थानोंमें उद्यव्युच्छिन्न प्रकृतियोंकी संख्या है)॥ ६॥

इस प्रकार उदयब्युष्ट्यंदको कहकर अब किन प्रकृतियोंका बन्ध उदयके नष्ट होनपर भी होता है, किन प्रकृतियोंका उदय बन्धके नष्ट होनपर भी होता है, और किन प्रकृतियोंका बन्ध व उदय दोनों साथ ही ब्युष्टियं होते हैं, इस वातको कहते हैं। बह इस प्रकार हे— देवायु, देवगति, बैंकियिकदारीर, बैंकियिकआंगीपांग, देवगतिप्रायोग्यायु-पूर्वी, आहारकदारीर, आहारकआंगोपांग और अयदाकीर्ति, इन आठ प्रकृतियोंका प्रधर्म उदयका विच्छेद होता है, प्रधात बन्धका। यहां उपसंहारगाथा—

देवायु, देवचतुष्क अर्थात् देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, वैकियिकशरीर और वैकियिक आंगोपांग, तथा आहारकशरीर, आहारक आंगोपांग एवं अयशकीर्ति, इन आठ प्रकृतियोंका पहिले उदय नष्ट होता है, पश्चात् बन्ध, ऐसा जानना चाहिये॥ ७॥

१ तदियेक्कबञ्ज-णिमिण थिर-सुर-सर-गदि उराल-तेजदुर्गः । सठाण वण्णागुरुचउक्क-पत्तेय जोगिम्हि ॥ गो. क. २७१.

२ तदियेक्क मणुबगदी पीचिंदिय-सुमग-तस-तिगादेज्ज । जस-तित्थं मणुबाऊ उच्च च अजांशिचरिम्रान्ह ॥ गो. क. २६३. १ गो. क. २६३.

४ देवश्व उक्काहारद्वगञ्जसदेवाउगाण सो पच्छा । गो. क. ४००

मिन्छत्त-अर्णताणुर्वधिच उक्त-अपच्चनखाणावरणच उक्त पञ्चनखाणावरणच उक्त-तिण्य-संजरुण-पुरिसवेद-हस्स-रिद-भय-दुर्गुछ-एईदियं-वीइंदिय-वीइंदिय-चडिरियं चार्चियादि - मणुसगइ-पाञोग्गाणुपुन्नि-आदाव-थावर-सुद्दम-अपज्ञत्त-साहारणाणं एक्ततीसपयडीणं वेपोदया समं वोच्छि-ज्जति । एत्थ उवसंदारगाद्याओ-—

> भिच्छत्त-भय-दुगुंछा-हस्त-रई-पुग्ति-थाश्यादावा । धुद्धमं जाङ्गच्यक्तं साहारणय अप^उजत्त ॥ ८ ॥ पण्णस्स कसाया विणु लेलिणकेल आणुप्तवी व । मणुसाणं एदासि समगं बंधोदबुच्छेदो ॥ ९ ॥

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-दोवेयणीय-लेहसंजलण-इत्थि-णवुंसयवेद-अरइ-सोग-णिरयाउ-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-णिरयगइ-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-पंचिदियजाइ-ओगालिय-तेजा-कम्मइयसरिर-छसंटाण-ओरालियमरीरअंगोवंग-छसंडचण-वण्णच उझ-णिरयगइ-तिरिक्खगइपाओ-गगाणुपुव्वि-अगुरुअलहुअच उक्क-उज्ञाव-दोविहायगइ-तम-वादर-पज्ञत-पंनयमरीर-थिराथिर-सुहा-प्रुह-सुमग-दुमग सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज जसगित्ति-णिमिण-तित्थयर-णीचु-चगोद-पंचे-

मिथ्यात्य, चार अनन्तानुबन्धी, चार अग्रन्याख्यानावरण, चार प्रत्याख्यानावरण, तीन संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रिन, भय. जुगुप्ता, पर्केन्द्रिय. द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चनिद्र्य, चनुरि-न्द्रियज्ञानि, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, स्थावर. सृक्ष्म. अपर्याप्त और साधारण, इन इकतीस प्रकृतियोंका बन्ध व उदय दोनों साथ व्युच्छित्र होते हैं। यहां उपसंहारगाथायें—

. मिथ्यात्व, भय, जुगुज्सा, हास्य, रति, पुरुषवेद, स्थावर, आताप, सुक्षम, एकेन्द्रिय आदि चार जाति, साधारण, अपर्याप्त, संज्वलनलेभके विना पन्द्रह कराय और मनुष्य-गत्यानुपूर्वी, इन प्रकृतियोंका बन्धज्युच्छेद और उद्दयन्युच्छेद साथ ही होता है॥८-९॥

पांच झानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, दो वदनीय, संज्ववनलेभ, स्रविद, नपुंसक-षेद, अरति, शोक, नारकायु, तिर्थगायु, मनुष्यायु, नारकगति, निर्यगति, मनुष्याति, पंचे-व्यियजाति, औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर, इह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, इह संहनन, पर्णादिक चार. नरकगत्यानुपूर्वी, निर्यगतिमायं।न्यानुपूर्वी, अगुरुलपु आदिक चार, उर्णात, दो विद्यायोगित, क्स, वादर, पर्योन्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, ग्रुम, अग्रुम, सुभग, दुर्भग, सुस्यर, दुस्यर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थकर, नीचगोत्र, उच्चगोत्र

१ अप्रतो ' दुगुंकाणमेगिदिय- ' इति पाठ-।

२ मिच्छतादाबाण णराणु-धावरचउनकाण । पण्णरकसाय-सगदुग-हरसादु-चउजाह-पुरिसवेदाणं । सम-मेचकचीसाणं सेसिगसीदाण पुन्व तु ॥ गो. क. ४००-४०१.

1. 4. 7

तराइयाणमेगासीदिपयडीणं पढमं बंधो वोच्छिज्जदि, पच्छा उदबो । एत्थ उवसंहारगाहा-

पुन्वुत्तवसेसाओ एगासीदी हवंति पयडीओ । ताणं बंधुच्छेदो पुन्नं पच्छोदउच्छेदो ॥ १० ॥

सेसाणं जडावसरमत्थं भणिस्सामा ।

मिन्छादिट्टिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु उवसमा स्ववा वंघा । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदद्धाएं चरिमसमयं गंत्र्ण वंघो बोन्छिजदि । एदं वंघा, अवसेसा अवंधा ॥ ६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो जुबंदे । तं जहा- 'मिष्ट्याइटिप्पट्टिड जाव सुद्वमसांपराइय-खवगा 'ति एदेण वयणेण अद्धाणं जाणाविदं । 'एदे वंघा, अवसेसा अवंघा ति 'एदेण वंघस्स सामित्तं जाणाविदं । 'सुद्वमसांपराइयसुद्धिसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण वंघो वोल्डिट-ज्ञदि 'ति एदेण वि 'किं चरिमसमए वंघो वोल्डिट-जदि ति 'पुल्छाए पढम-[अपढम-] अचरिमपडिसेहमुटेण पडिउत्तरो दिण्णो । अवसेसाणं पुल्छाणं ण परिन्छेओ कदो । तेणेदं

और पांच अन्तराय, इन इक्यासी प्रकृतियोंका पहिले बन्ध नष्ट होता है, पश्चात् उदय । यहां उपसंहारगाथा—

पूर्वोक्त प्रकृतियोंसे शेष जो इक्यासी प्रकृतियां रहती हैं उनका बन्धव्युच्छेद पहिले और उदयन्युच्छेद पश्चात् होता है ॥ १० ॥

होप प्रहतेंका अर्थ यथावसर कहेंगे-

मिथ्यादृष्टिसे लेकर सुरूमसाम्परायिकशुद्धिसंयत उपशामक व क्षपक तक उपर्युक्त ज्ञानावरणादि प्रकृतियोंके बन्धक हैं । सुरूमसाम्परायिककालके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध ब्युष्टिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ६ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है— 'मिथ्यादिष्टेसे लेकर सूक्त्यसाय-रायिक क्षपक तक' इस वजनसे बन्याप्त्रान झापित किया है। 'ये बन्धक हैं, होप अबन्धक हैं 'इस्ते बन्धका स्वामित्व झापित किया है। 'सुस्मसायप्रायिकशुक्तसंवतकालक आत्मस समयमें जाकर बन्ध ज्युच्छिक होता है 'इससे भी 'क्या चरम समयमें बन्ध ज्युच्छिक होता ?' इस प्रभक्ता प्रयम और [अपध्यन-] अबरम समयके प्रतिपेश्चकुक्ते प्रत्युक्त दिया गया। इसीलिये यह देशासर्थक

१ इतिपु 'संजदाए ' इति पाढः ।

दसामासियसुनं, तम्हा एत्य ठीणत्थाणं पह्नचणं कस्सामो । तं जहा— किं बंघो पुन्नं वेचिछज्ञति, किसुदवो पुन्नं वेचिछज्ञति, किंदि तेण्णं पुन्छाणं सुन्तरो बुन्नदे । एदासि सोटसण्णं पयडीणं बंधो पुन्नं वेचिछज्ञति, एदासि तिण्णं पुन्छाणं सुन्तरो बुन्नदे । एदासि सोटसण्णं पयडीणं बंधो पुन्नं वेचिछज्ञति, एदासि तिण्णं पुन्छाणं सुन्तरो बुन्नस्ता विष्कु वेचिछज्ञति सुहुमसांपराइयन्तरिससम्प, उद्यक्षो पच्छा वेचिछज्ञति; पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-चंचतराइयाणं स्त्रीणक्तराय-चिससम्प, असिक्ति उन्नागोरणमजोगियिसमम् उदयवोच्छेद्दंसणादे। किं सोदएण, किं सोदएण, किं सोदएण, किं सोदएण, किं सोदएण, किं सोदएण, किं सोदण्यरोदण्ण सांप्य-परोदण्ण वज्ज्ञसाणपयिष्ठपह्नणं कस्सामो ।तं जहा—णिरयाउ-देवाउ-णिरयाउ-देवाउ-णिरयाउ-देवाउ-णिरयाउ-देवाउ-णिरयाउ-वेचाउ-विज्ञयसरीर-आहारसरीर वेजिय-आहारसरीरगोवंग-णिरयगङ्-देवाइ-पाओगाणुपुट्व-तिरथयरिमिदि एदाओ एक्कारसपयडीओ परोदएण वज्ज्ञति । एत्थ उन्संहागाहा—

तित्थयर-णिरय-देवाउअ-वेउव्यिद्यस्क्यः दें। वि आहारा । एक्कारसपयडीणं वंथो हु परेगदए बुत्तो ॥ ११ ॥

पंचणाणावरणीय- [चउदंसणावरणीय-] मिञ्छत्त-तेजा-कम्मइयमरीर-वण्णचउक्कं अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमण-पंचंतराइयमिदि एदाओ सत्तवीसपयडीओ सादण्ण

सुत्र है और देशामर्शक होलेंसे यहां लील अर्थाल अन्तर्लिहित अर्थोकी प्रक्षणा करते हैं। वह इस मकार है— क्या वन्य पृथी ज्युच्छिक होता है, क्या उदय पृथी ज्युच्छिक होता है, या क्या उदय पृथी ज्युच्छिक होता है, या क्या देशों पृथी ज्युच्छिक होता है। या क्या देशों पृथी ज्युच्छिक होता है। या क्या देशों प्रचार अन्तिम समयमें व्युच्छिक होता है। त्यश्चात उदयकी व्युच्छिक होती है। क्योंकि पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय, इन चीदह मकृतियोका श्रीणकराय गुणस्थानके अन्तिम समयमें तथा यशकीर्ति व उच्चांग इन हो मकृतियोंका श्रीणकराय गुणस्थानके अन्तिम समयमें, तथा यशकीर्ति व उच्चांग इन हो मकृतियोंक प्रयोगिकेचलीके अन्तिम समयमें तथा यशकीर्ति व उच्चांग इन हो मकृतियोंक प्रयागिकेचलीक अन्तिम समयमें तथा यशकीर्ति व उच्चांग इन हो मकृतियोंक या पराव्या बोदय-परादयमें इनकावन्य होता है। इस प्रश्नका आश्चयकर उत्तर कहते हैं। अब यहां पहिले इस सम्वाक्य स्थान परादय और सोदय-परादयमें क्योनवाली प्रकृतियोंका निक्षण करते हैं। यह इस प्रकार है — नारकायु देशयु नरकाति, देवतियकारीरार्गायां, आहरककारीरार्गायां ना, आहरककारार्गायां सोना तथानायां पुर्वी और तीर्थकर, ये न्यारह प्रकृतियां परोद्यक्ष संपत्ति है। यहां उपसंहरणाया—

तीर्थेकर, नारकायु, देवायु, वैकिथिकदारीरादि छह और दोनों आहारक, इन ग्यारह प्रकृतियोका बन्ध परोदयसे कहा गया है ॥ ११ ॥

पांच इतावरणीय, [चार दर्शनावरणीय], भिष्यात्व, तैजस और कार्मण शरीर, इणांदिक चार, अगुरुकलपुक, स्थिर, जास्थर, ग्रुम, अशुभ, निर्माण और पांच अस्तरम्य, थे षञ्जंति । पंचदंसणावरणीय-दोवेदणीय-सोल्सकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-तिरिक्खगड्-मणुस्सगड्-पर्हेदिय बीहंदिय-तीहंदिय-चऽतिंदिय-पंचिंदियजादि-जेतालिजसतीर छ--संद्राण-जेतालियसतीर अंगोवंग- छसंघडण-तिरिक्खगड्-मणुस्सगड्पाजोग्गाणुपुल्वि-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदाव-उऽजोव-दोविहायगदि-तस-थावर-बाह्य-सुहुम-पञ्जत-अपञ्जत-पत्तेय-साधारण-सतीर-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आंदेज्ज-अणादे-ज-जसकित्ति-अजसिक्ति-णीजुच्चागोदिमिदि एदाओ वासीदिपयडीओ सोदय-परोदण्ण बञ्जति । एत्थ उवसंहारगाहाओ —

> णाणंतराय-दंसण-धिरादिच उत्तेत्रकस्मदेहाई । णिमिणं अगुरुवल्रहुअं वण्णच उन्नकं च मिच्छत्तं ॥ १२ ॥ सत्तावीमेदाओ बञ्जीत हु सोदण्ण पयडीओ । सोदय-गोदण्ण वि बञ्जनवसेतियाओ दू ॥ १३ ॥

एत्थ णाणावरर्णतराइयदसपयडीओ दंसणावरणस्स चत्तारि पयडीओ चेव वंधमाणाणि । सव्वगुणहाणाणि सोदएण चेव वंधति, मिच्छाइहिप्पहुडि जाव खीणकसाया ति एदार्सि णिरंतरोदयादो सोदएण वज्झमाणपयडीणमञ्मंतरे पादादो वा । जसकित्तिं मिच्छाइहिप्पहुडि

सत्ताईस प्रकृतियां स्रोदयसे यंधती हैं। यांच दर्शनावरणीय, दो घेदनीय सोलह कपाय, नौ गोकपाय, तिर्यगाय, मनुष्यायु, तिर्यगाति, मनुष्याति, एकेन्द्रिय, झीट्द्रिय, चनुटिर, हिंद्र्य, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिकारीर, छह संस्थात, औदारिकारीरांगोपांग, छह संहनन, तिर्यगातिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यातिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपधान, परधान, उच्छवास, आताप, उद्योत, दो विहायोगिति, त्रस. स्थावर, वादर, सूक्ष्म, पर्याप, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण शरीर, सुभग, दुभँग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अपशकीर्ति, नीचगोष और उच्चगोत्र, य व्यासी प्रकृतियां स्वोदय-परादय दोनों प्रकारसे बंधती हैं। यद्वां

पांच क्षानायरण,पांच अन्तराय, दर्शनावरण चार, स्थिर आदिक चार, तैजस और कार्मण द्वारीर, निर्माण, अगुरुकलयुक, वर्णादिक चार और मिथ्यात्व, ये सत्ताईस प्रकृतियां तो स्वोदयसे बंघती हैं और रोप प्रकृतियां स्वोदय-परोदयसे बंघती हैं ॥ १२-१३ ॥

यहां क्षानावरण व अन्तरावकी दश प्रकृतियां तथा दर्शनावरणकी चार ही प्रकृतियां वंधनेवाली हैं। ये अपने बन्ध योग्य सव गुणस्थानोंमें स्वोदयसे ही पंधती हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान तक इनका निरन्तर उदय रहता है, अथवा इनका पतन स्वोदयसे वंधनेवाली प्रकृतियोक भीतर है। यराकीर्ति प्रकृतिको मिथ्यादृष्टिस

१ सुर-णिरयाक तित्थं नेग्रुव्यिषक्कहारमिदि जेसिं । परउदयेण य मंघो मिच्छ सुहुमस्स घादीओ ॥ तेजदुर्गं वण्णचक थिर-सुहजुगलगुरु-णिमिण-धुवउदया।सोदयबधा सेसा बासीदा उमयबंघाओ ॥ गो. क. ४०२-४०३.

जाव वसंजदसम्माइहि ति सोद्षण वि परोद्दण वि वंचति, एदेसु दोणणं एककदरस्सुदय-तादो । उवरिमा सोद्दण चेव वंधित, संजदासंजदप्पहुडिउवरिमेसु गुणद्दणेसु अजमिकिति-उदपाभाषादो । उच्चागोदं मिच्छाइहि प्पहुडि जाव संजदामंजदा ति एदे सोद्दण परोद्दण वि बज्जिति, एत्थ दोण्णं गोदाणसुदयसंभावादो । उचिरमा पुण सोद्दण चेव वंधित, तत्थ णीचागोद्ससुदयामावादो । तम्हा जसिकिति-उच्चागोदाणि सोद्य-परोद्यवंधा इदि सिद्धं ।

पदासि बंघो किं सांतरे किं णिरंतरे। किं सांतर-निरंतरे। ति एदासि पुच्छणं पिडवणणं ।

प्रथ पदेण अरथसंबंघेण ताब सांतर-णिरंतर-सांतरिणरंतरेण बच्छमाणपयडीओ जाणांवेसी ।

तं जहा — पंचणाणावरणीय-णवर्दसणावरणीय-भिच्छत-सोल्सकसाय-भय-दुगुंछा-आउच उक्कआहार-तेजा-कम्मदुयसरीर-आहारसरीरअंगोंवंग-वण्ण-गंघ-रस-फास अगुरुवलहुअ-उवचाद-णिमिणतिरथयर-पंचंतराडयमिदि एदाओ चउवण्णं पयडीओ णिरंतरं वज्जीति । तरथ उवसंहारगाहा─

सत्तेताल धुवाओ तित्ययराहार-आउचनारि । श्वववणं पयडीओ बञ्जति णिरंतर सन्दार्वे ॥ १४ ॥

लकर असंयतसम्यन्दिष्ट तक स्वोदयसं भी बांधते हैं और परोदयमं भी बांधते हैं. क्योंकि, हन गुणस्थानोंमें यद्मकीर्ति और अयदाकीर्तिमेंसे किसी एकका उदय रहता है। असंयत-सम्यन्दिष्टे उपरेक गुणस्थानवर्ती जीव सोदयसे ही बांधने हैं, क्योंकि, संयतासंयतसे लेकर उपरिम गुणस्थानोंमें अयदाकीर्तिका उदय नहीं रहता। उच्चागेत्रका मिध्यादृष्टिस लेकर उपरिम गुणस्थानोंमें अयदाकीर्तिका उदय नहीं रहता। उच्चागेत्रका मिध्यादृष्टिस लेकर संयतासंयत तकके जीव स्वोदयसे और परोदयसे भी बांधने हैं, क्योंकि, यहां दोनों गोत्रोका उदय सम्भव है। परम्तु इससे उपरेक जीव स्वोदयसे ही बांधते हैं, क्योंकि, वहां निवागेत्रका उदय नहीं रहता। इस कारण यदाकीर्ति और उच्चगोत्र मृतृतियां स्वोदय-परोदयसे बंधनेवाली हैं, यह सिद्ध होता है।

अव ' उक्त सोलह प्रकृतियोंका बन्ध क्या सान्तर है, क्या तिरन्तर है, और क्या सान्तर-निरन्तर है? ' वे तीन प्रश्न प्राप्त होने हैं। यहां इस अर्थसम्बन्धसे पहिल्ने सान्तर, निरन्तर और सान्तर-निरन्तर रूपसे बंधनेवाली प्रकृतियोंका बोध कराते हैं। वह इस प्रकार है—पांच झानावरणीय, नी दक्षावरणीय, मिथ्याल, सोल्ड क्याय, भय, जुण्या आखु बार, आहारकक्षरीय, तैजसदारीर, कार्मणवारीर, आहारकदारीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्दा, अमुककल्युक, उपधात, निर्माण, तीर्थकर और पांच अन्तराय, ये चीवन प्रकृतियां निरंतर बंधती हैं। यहां उपसंहारगाधा—

सैंतालीस भुषप्रकृतियां, तीर्थकर. आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग और सार आयु, ये सब चौषन प्रकृतियां निरंतर वंधती हैं ॥ १४ ॥

१ प्रतिष्ठ 'तं जहा ' इति पाठः । २ सचेताल धुवा वि व तित्वाहाराज्या गिरतरमा । गो. क. ४०४.

काओ धुवर्वधियपयडीओ ? एदाओ चेव आउचउनक-तित्थयराहारदुयविरहिदाओ । एदासि परूवणगाहाओ —

> णार्णतरायदस्यं दंसण णव मिच्छ सेल्य्स कसाया । भयकाम दुर्गुच्छा वि य तेजा कामं च वणणचद् ॥ १५ ॥ अगुरुअव्हरू-उत्त्वादं णिमिणं णामं च होति सगदालं । बंघो चउन्त्रियपपो ध्वबंशीणं पयडिवंशों ॥ १६ ॥

णिरंतरबंधस्म धुववंधस्म को विसंसो ? जिस्से पयडीए पच्चओ जत्थ कत्थ वि जीवे अणादि-धुवभावेण ठन्भइ सा धुववंधपयडी । जिस्से पयडीए पच्चओ ' णियमेण सादि-अदुओ अंतोसुहुतादिकालावद्दाई सा णिरंतरवंधपयडी । जिस्से जिस्से पयडीए अद्धाव्यखएण वंधवेष्टिदेश संभवइ सा सांतरवंधपयडी । असादांवेदणीय-इत्थि-णबुंसयवेद-अरइ-सांग-णिरयगइ-जाइचउक्क-हेद्विमंप्चसंठाण-पंचसंघडण-णिरयगइपाओगगाणुपुष्वि-आदाबुज्जोव-अपसत्थविद्दायगइ-यावर-

शंका--- भ्रुववन्धी प्रकृतियां कीनसी हैं ?

समाधान—चार आयु, तीर्थकर और दो आहारसे रहित ये उपर्युक्त प्रकृतियां ही धुवप्रहातयों हैं। इन प्रहातयोंकी निरूपक गाथायें—

श्वानावरण और अंतरायकी दश, नो दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भयकर्म जुगुल्का, तेजस और कार्मण शरीर, वर्णीदिक चार, अगुरुकलघु, उपघात और निर्माण नामकर्म, ये सैतालीस धृववर्ची मकृतियां हैं। इनका प्रकृतिवर्म्य सादि, अनादि, ध्रुव एवं अध्रुव रूपसे चार प्रकारका होता है॥ १५–१६॥

शंका--किरंतरबंध और ध्रुवबंधमें क्या भेद है ?

समाधान—जिस प्रकृतिका प्रत्यय जिस किसी भी जीवमें अनादि एवं भ्रुव भावसे पाया जाता है वह भ्रुववंधप्रकृति हे, और जिस प्रकृतिका प्रत्यय नियमस सादि एवं अभ्रुव तथा अन्तर्मुकृते आदि काल तक अवस्थित रहनेवाला है वह निरन्तरबन्धप्रकृति है।

जिस जिस मकृतिका काळक्षयसे वन्थस्युच्छेद सम्भव हे वह सान्तरबन्धप्रकृति है। असातावेदनीय, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, अरित, शोक, नरकगति, जाति चार, अधस्तन पांच संस्थान, पांच संहनन, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, अप्रशस्तविहायो-

र घादितिःमिच्छ-कमाया भय-तेजगुरुदुग-णिमिण-वण्णचओ । सत्तेतालगुवाण चढ्धा संसाणय तु दुधा ॥ गो. क. १२४.

२ प्रतिषु 'पञ्जोब्जत्थ' इति पाठः । ३ प्रतिषु 'पचओ' इति पाठः । इतः सं. ३.

सुद्धम-अपञ्जतः साहारण-अधिर-असुह-दुभग-दुस्सर-अणाएञ्ज-अजसितती एदाओ चौत्तीसपय-हीयो सांतरं बञ्जीते । अवसेसाओ वतीम पयडीओ सांतर-णिरंतरं बञ्जीते । तासि णामणिदेसो कीरदे । तं जहा --- सादावेदणीय-पुरिसवेद-इस्स-रित-तिरिक्खगइ-मणुस्मगइ-देवगइ-पंचिदिय-जादि-ओरालिय-वेउव्वियसरीर-समचउरसमंठाण-ओरालिय-वेउव्वियसरीरओगीवग - वञ्जिरसह-वद्दरणारायणसरीरसंघडण-तिरिक्खगइ- मणुस्मगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्व-परघादुस्सास-पसत्य-विहायगइ-तस-बादर-पञ्जत-पर्वेयसरीर-थिंग-सुह-सुभग-सुस्सर-आदे ज्ज-जसिकित-णीचुबागोद -मिदि सांतर-णिरंतरेण वञ्जमाणपरडीओ' । एस्य उत्तरसंहारगाहाओ

> इथि-णउंसरवेदा जाइच उक्सं असाद-णिरवदृग । आदाउटजीवारह-मागासुह पचसठाणा ॥ १७ ॥ पंचासुहसदादणा विहायगद्द अप्यमियया अणेग । याव-सहसासहदस्स चोत्तीसिह सांतरा वथा ॥ १८ ॥

गति, स्थावर, स्क्ष्म, अपर्यान, साधारण, अस्थिर, अगुभ, दुर्भग, दुस्यर, अनादेय और अयशकीर्ति, ये चौतीस प्रकृतियां सान्तर रूपसे वंधती है। श्रेष वर्त्तास प्रकृतियां सान्तर रूपसे वंधती है। श्रेष वर्त्तास प्रकृतियां सान्तर निरम्तर रूपसे वंधती है। वह इस प्रकार है— सानावेदनीय, पुरुपवेद, हास्य राति, विध्याति, मृत्युपति, देवपति, पंचेन्द्रयज्ञात, औदारिकतारीर, वैक्रियकरारीर, समचतुरु स्वस्थान, आदारिकतारीरांगांगां वैक्रियकरारीर, समचतुरु स्वस्थान, आदारिकतारीरांगांगां वैक्रियकर शरीरांगोपांग, वर्क्त्रयक्ष्यक्रनाराच्यारीरन्दं सन्तर्भावनायांग्यातुपूर्वी, मृत्युपति, प्रमुपत्रपति, प्रयानत्वात्यारीर्ति, अस्तु स्वस्थान, अप्तान्तर्भाव, प्रवान्तर्भाव, अप्तान्तर्भाव, ये सान्तर्भनरन्तर, रूपसे वंधनेवाली प्रवृत्तियां है। यहां उपनेतर्भावयाँ—

स्त्रीवद, नपुंसकवद, जाति चार. अमातावदमीय, नरकगति, नरकगतिप्रायाग्यानु. पूर्वी, आताप, उद्योत, असति, शांक. अनुभ, पांच संस्थान, पांच अनुभ मंहनन, अप्रशस्त विहायोगिति स्थावर, सृक्ष्म पदं अनुभ आदि अम्य दश. इस प्रकार ये चींतीस प्रकृतियां यहां सान्तर वम्ध्वाली हैं॥ १७-१८॥

१ णिरयदुग-आइचउकक सहदि-सठाणपणपणा ॥ त्यामणादावदुग थावग्दमगं असादमदिन्धां । अरदी-सीगं चेदे सांतरगा हाति चोर्तासा ॥ गो क. ४०४-४०५

२ प्रतिषु 'सुस्सर-दुस्सर-आदेञ्ज- ' इति पाउः ।

३. सुर-णर-तिरियोगालिय-वेशन्वियदुग-पसत्थगदि वच्ज । परधादद्व-समयउर प्रचिदिय तसदसं साद ॥ हस्स-रिद-पुरिस-गोदद्व सप्पब्विक्खिम स्रोतरा होति । णृष्ट पुण पब्चिक्खे णिरतरा होति बत्तीसा ॥ गो. क. ४०६–४०७.

सांतरणिरंतरेण य बत्तीसवसेसियाओ पयडीओ । बउझति पञ्चयाणं दुपयाराणं वसगयाओ ॥ १९॥

एत्थ पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयपयडीओ णिरंतरं घञ्झंति, धुव-वंधिचादो । जसिकती सांतर-णिरंतरं चञ्झदि' । कुदो ? मिच्छाइडिप्यहुडि जाव पमनो ति सांतर-णिरंतरं वञ्झइ, पडिवक्खअजसिकतीए वंधसंभवादो । उत्तरि णिरंतरं वञ्झइ जसिकती, पडिवक्खपयडीए, वंधाभावादो । तेण जसिकती वंधण सांतर-णिरंतरा । उच्चागोदं मिच्छाइडि-सासणसमाइडिणो सांतरं वंधति, पडिवक्खपयडीए तत्य वंधसंभवादो । उत्तरिमा पुण णिरंतरं वंधति, पडिवक्खपयडीए तत्य यंधाभावादो । भोगस्मीसु पुण स्व्यगुणडाणजीवा उचागोदं वेच णिरंतरं वंधति, तत्य पजनकाले देवगइं मोत्ण् अण्णगईणं वंधाभावादो । तेण उचागोदं वि वंधेण सांतर-णितंनं ।

एदासिं पयडीणं किं सपत्रओं वंधी किमपत्रओं ति पुन्छिदे उच्चेदे— सपच्चेगी वंधी, ण णिक्कारणा । एरथ ताव पच्चयपरुवणा कीरदे । तं जहा— सिच्छत्तासंजस-कसाय-

शेष वत्तीस प्रकृतियां मूल व उत्तर भेद रूप दो प्रकार प्रत्ययोंके वशीभृत होकर सान्तर-निरन्तर रूपसे वंधती हैं ॥ १९ ॥

यहां पांच झानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियां निरन्तर वंधानी हैं, क्योंकि, य प्रकृतियां ध्रुयवन्धी हैं। यदाकीर्तिका जीव सान्तर-निरन्तर रूपसे वांधाने हैं। इसका कारण यह है कि मिध्याइएसे रुकर प्रमुख गुणस्थान तक यह प्रकृति सान्तर-निरन्तर वंधानी हैं, क्योंकि, यहां इसकी प्रतिपक्षी अयशकीर्तिका वन्ध सम्मव है। प्रमु हो सान्तर वंधानी है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है। इसील्येय यदाकीर्ति वन्धसे सान्तर-निरन्तर है। उच्चांपाकको मिध्याइए और सास्तर-निरन्तर है। उच्चांपाकको मिध्याइए और सास्तर-तसम्यन्दिए जीव सान्तर वांधाने हैं, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतिका वन्ध्र सम्भव है। परन्तु उपरितन गुणस्थानवर्ती जीव उसे निरन्तर बांधाने हैं, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिका वन्ध्र सम्भव है। परन्तु वध्या नहीं स्वाता तथा भोगभूमियोम सब गुणस्थानवर्ती जीव उसे तरिएस प्रकृतिका हो निरन्तर वांधाने हैं, क्योंकि, वहां पर्योक्तकाटमें देवणातिको छोड़कर अन्य गतियोंका वन्ध्य नहीं होता। इसल्यि व उच्चांको भी वन्धसे सान्तर-निरन्तर है।

' इन प्रकृतियोंका क्या सप्रत्यय अर्थात् सकारण वंध होता है या क्या अप्रत्यय अर्थात् अकारण वन्ध होता है ? ' इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं— इन प्रकृतियोंका वन्ध सकारण होता है, अकारण नहीं। यहां पहिले प्रत्ययोंकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस जोगा इदि एदे चत्तारि मूल्पचया । संगदि उत्तरपचयपह्वणं कस्सामा मिन्छाइडिआदिगुणहाणेसु ढाएट्णै— मिन्छतं पंचविहं एयंतण्णाण-विवरीय-वेणक्ष्य-संसक्ष्यमिन्छत्तामिद । तत्य
अस्थि चेव, णस्थि चेव; एगमव, अणगमेव; सावयवं चेव, णिरवयवं चेव; णिखमेव, अणिन्चभेव; इन्चाइओ एयंताहिणिवेसा एयंतमिन्छतं । विचारिज्जमाण जीवाजीवादिपयत्था ण संति
णिन्चाणिन्चविययेहि, तदो सध्यमण्णाणमेव, णाणं णस्थि ति अहिणिवेसो अण्णाणमिन्छतं ।
हिंसालियवयण चोज्ज-महण-परिग्गह-राग-दोस-मोहण्णाणहि चेव णिन्धुई होइ ति अहिणिवेसो विवरीयमिन्छतं । अइहिय-परित्यसुहाई सञ्बाई पि विणयादा चव, ण णाण-रंसण-तवोववासकित्यसिक्तिः ति अहिणिवेसो वेणक्षयमिन्छतं । सञ्बन्ध संदहो चेव णिन्छओ णस्थि ति

प्रकार है— प्रिथ्यात्व, असंयम, कवाय और यंग, यं बार मूळ प्रत्यय है। अब उत्तर प्रत्ययोंका निरूपण मिथ्यादि आदि गुणस्थानोंमें लाकर करने हैं— एकान्त, अज्ञान, विपरीत, वैतियिक और सांशियक मिथ्यात्वक मेहने मिथ्यात्व पांच प्रकार है। इतमें सत् हैं है, असत् हीं है, पर हीं है, अने क हीं है, मावयब हीं है, निरययब हीं है, निर्यय हीं है, अतित्य हीं है, स्वाव्य हीं है, निर्यय हीं है, अतित्य हीं है, स्वाव्य हीं है, हिन्या हीं है, अतित्य हीं है, स्वाव्य हीं है, हिन्या हीं है, अतित्य हीं है, स्वाव्य हीं है, हैं स्वाव्य हीं है, स्वाव्य हें हैं, हीं हैं हीं हैं हीं हीं स्विध्य सहला है। स्वाव्य हीं हीं हीं हैं, न

१ अपनी : दोएदुण 'इनि पाठ ।

२ गत्र इदमेव इत्यमंबेति धर्मिथमेयोःमिनिवेश एकान । स सि. ८, १, त रा. ८, १, २८. यत्रामिसमिवेश. स्यादस्यत धर्मिथमेयोः। इदमेवत्यमेवेनि तदेकान्तिकमुच्यते ॥ त सा ५, १.

३ हिताहितपरीक्षाविरहो-क्षानिकवम् । सः सि. ८, १ तः रः, २, २८. हिताहितविवेकस्य यत्रास्यन्तस्य देशीनम् । यथा पश्चवधा धर्मस्तराज्ञानिकग्रुच्यते ॥ तः सा. ५, ७.

४ पुरुष एवंदे सर्वनिति वा, निल्कांविति [वा अनिलामेविति वा], समन्यो निर्माय , केन्नहीं करूलाहारी, स्रो मिद्रपतिलेक्सादि विषयेंग, स. ति. ८, १ पुरुष एवंद गर्वमिति वा लिख एव वा अनिन्य एवेति, समन्यो निर्माय , केन्नहीं करूलाहारी, स्रो तिद्वपतिलेक्सादिरिययेंथ । न. रा. १, ८, २, ८, २, समन्योऽपि च निर्मायो प्रामाहारी च केन्न क्षमिंदिकीया यत्र विषयति हि तस्युत्तर ॥ त. सा. ५, ६,

५ सर्वदेवतानां सर्वसमयानां च समदर्शन वेनियकम् । सः सः ८, १., तः राः ८, १, २८. सर्वेषामपि केबानां समयानां तथेव च । यत्र स्थान् समदर्शित्व क्षेत्रं वेनियकं हि तत् ॥ तः सा. ५, ८.

अहिणिवेसी संसयमिच्छतं । एवमेदे मिच्छत्तपच्चया पंच ' ५ ।

हैं। इस प्रकार ये मिथ्यात्व प्रत्यय पांच (५) हैं।

असंयम प्रत्यय इन्द्रियानंयम और प्राण्यसंयमके भेदसे दो प्रकार है। उनमें इन्द्रियासंयम स्पर्श. रस्त, रूप. गन्ध. शब्द और नोइन्द्रिय जनित असंयमके भेदसे छह प्रकार है। प्राण्यसंयम भी पृथिवी, अप्, तेज, वायु. वनस्पति और त्रस जीवोंकी विराधनासे उन्पन्न असंयमके भेदसे छह प्रकार है। सब असंयम मिलकर वारह (१२) होते हैं।

कपायप्रत्यय सोलह कपाय और नौ नोकपायके भेदसे पञ्जीस प्रकार है। यह कपाय प्रत्ययोका योग पञ्जीस (२५) हुआ।

यंगाप्रत्यय मन, वचन और काय यंगाके भेदसे तीन प्रकार है। मनोयोग चार प्रकार है— सत्यमनोयोग, मुगमनोयोग, सत्य-मुगमनोयोग और असत्य-मुगमनोयोग । चचनयोग भी सत्यवचनयोग, मुगमचनोयोग, सत्य-मुगमचनयोग और असत्य-मुगाचनयोग भेदसे त्राप्त कार है। काययोग औदारिक, औदारिकमिश्र, वैकिषिक, वैकिषिक, मिश्र, आहारक, आहारकमिश्र, भैत कार्मण काययोगके भेदसे सात प्रकार है। इनका सर्वयोग पट्टाइ (१५) होता है। स्व मन्ययोंका योग सत्तावन (५७) हुआ।

१ सम्यव्हर्शन-झान-वारित्राणि कि मोश्रमार्गः स्याद्वा नवेखन्यतरपक्षापरिमह, संशयः । स. सि. ८, १. सम्याद्वर्शन-झान-वारित्राणि मोश्रमार्गः कि स्याद्वा न वेति मितिद्वेत सशयः । त. स. ८, १, २८, कि बा अवैच बा जेनी बमों-हिंसादिकक्षणः । इति यत्र मितिद्वेभ भवेत् सांशयिक हि तत् । त. सा. ५, ५.

२ अप्रती 'सप्चमीत असप्चमीत ससप्चमीत सदसप्चमीतमेग्ण चउव्विही मणजीनी । बचिजीनी वि चउव्विही सप्चमीत सप्चमीत ससप्चमीत सदसप्चमीतमेग्ण ', कप्रती 'सष्चमीत आरप्चमीत सप्चमीत सप्चमीत सप्चमीत अस्प नीत असप्चमीत असप्चमीतमेग्ण चउव्विही वि मण-विजीनी ' इति पाटः ।

्षेत्र । एत्य आहारदुगमवणिदं मिच्छाइट्टिपडिकद्भण्चया पंचवंचास होति [५५] । एदे प्रचित्र एक्य प्राहारदुगमवणिदं मिच्छाइट्टी सुन्तसीलसपयडीओ वंथिद् । एत्य पंचिमच्छतपञ्चयेषु अव-णिदेसु पंचासपञ्चाया होति [५०] । एदे एव पञ्चारि सामणसम्माइट्टी सुन्तसीलसपञ्डीओ वंथिद । पंचासपञ्चाया होति [५९] । एदे हि पञ्चारि सामणसम्माइटी सुन्तसीलसपञ्डीओ वंथिद । णिदेसु तेदालं पञ्चारा होति [६९] । एदे एवच्यार सम्माधिक्य स्वस्तु अधारालिय सिस्स-वेऽलिवय सिस्स-कम्माइय-अधाराणुष्वि पञ्चार । येवि । एदे असं जदसम्माइटि अधिक्यार स्वयार । एदे असं जदसम्माइटि अधिक्यार स्वयार । येवि । एदे असं जदसम्माइटि अधिक्यार अधारालिय सिस्स-वेऽलिवय सिस्स-कमाइद नामाइटि । एदे असं जदसम्माइटि । एदे प्रच्या होति [३७]। एदे एवच्यार से स्वदार से अधार से

इनमेंसे आहारक और आहारकमिश्रकी अलग करदेनपर मिथ्याइप्रिस सम्बद्ध प्रत्यय पचवन (५५) होते हैं। इन प्रत्ययोंसे मिथ्याहाँए सुत्रेक सेालह प्रकृतियोंको बांधता है। इनमेंन पांच भिथ्यात्वप्रत्ययोंका अलग करदेनेपर पचास (५०) प्रत्यय होते हैं । इन प्रत्ययोंसे सासादनसम्यग्दिष्ट सुबेकि सेक्टह प्रकृतियोंके। वांधता है । इन प्रचास प्रत्ययों में से औदारिकमिश्र, वैकिथिकमिश्र, कार्मण और चार अनन्तानुबन्धी प्रत्ययों की अलग करदेनेपर तेतालीस प्रत्यय है।ते हैं (४३)। इन प्रत्ययोंसे सम्यग्निध्यादिष्ट सीलह प्रकतियांको बांधता है। नेनालीस प्रत्ययाँमें श्रीदारिकामिश्र, वैकिथिकामिश्र श्रीर कार्मण प्रत्ययोंको मिलादेनपर छथालीस प्रत्यय होते हैं (४६)। इन प्रत्ययोंमे असंयतसम्बन्हारे विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बांधना है। इन असंयतसम्यग्दर्धिक प्रन्ययोंमेसे चार अप्रत्याख्यानावरण, औदारिकमिश्र, वैकिथिक, वैकिथिकमिश्र, कार्मण और जसासंयम इन नौ प्रत्ययोंको कम करदेनपर सैंतीस प्रत्यय होते हैं (३७)। इन प्रत्ययोंसे संयतासंयत विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको वांधता है। इन संयतासंयतके सैंतीस प्रत्ययोंमेंसे चार प्रत्याख्यान और ग्यारह असंयम प्रत्ययांको कम करदेनपर द्रोप वाईस रहते हैं. उनमें आहारक और आहारकमिश्रको मिला देनेपर चौवीस प्रत्यय होते हैं (२४)। इन प्रत्ययोसे प्रमत्तसंयत विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बांधता है। इन चार्वास प्रत्ययोंमेंसे आहारक-द्विकको कम करदेनेपर बाईस प्रत्यय होते हैं (२२)। इन प्रत्ययोंसे अप्रमुक्तसंयत और

अपुन्वकरणपद्द डवसमा' खवा च अपिदसोलसपयडीओ बंधित । एदेषु चेव छण्णोकसाएसु अवाणिदेसु सोलस होंति [१९] । एदेहि पचण्हि सहसअणियटी सोलस पयडीओ बंधित । एस्य णवुंसयवेदे अवाणिदे पण्णारस होंति [१९] । एदेहि पचण्हि विदियअणियटी अपिदपयडीओ बंधित । एस्य पुरिसवेदे अवाणिदे नेष्ट्रस होंति [१९] । एदेहि पच्चपिह तिदियअणियटी अपिदपयडीओ बंधित । एस्य पुरिसवेदे अवाणिद तेरह होंति [१९] । एदेहि पच्चपिह चारस होंति [१९] । एदेहि पच्चपिह चारस होंति [१९] । एदेहि पच्चपिह चारस होंति [१९] । एदेहि वारसपच्चएहि पेसमअणियटी अपिदपयडीओ वंधित । पुणा एस्य माण्यसंजलण अवाणिद चारस होंति [१९] । एदेहि वारसपच्चपिह पेसमअणियटी अपिदपयडीओ वंधित । पुणा एस्य माण्यसंजलण अवाणिद चारस होंति [१९] । एदेहि पच्चपिह सत्तमअणियटी अपिदपयडीओ वंधित । एदेहि चेच दसिह पच्चिह सुहुमसांपराइयो व अपिदस्यलीअसी वंधित । एदेहि चेच दसिह पच्चिह सुहुमसांपराइयो व अपिदस्यलिकसायडीओ वंधित । एदेहि चेच दसिह पच्चिह सुहुमसांपराइयो व अपिदस्यलिकसाय-वीणकसापिह चज्जमाण्यडीओ पच्चया । एदिहिंगा मिल्झसदी-दोमणविचोंगे अवाणिय ओरालियिसस्य-

अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशामक एवं क्षपक जीव विवक्षित से।छह प्रकृतियोंको बांधते हैं। इन्हीं प्रत्यवोंमेंस छह नोकपायंकों अलग करवेंनपर सालह होते हैं (१६)। इन प्रत्यवोंसे प्रथम आनिवृत्तिकरण से।छह प्रकृतियोंको बांधता है। इनमेंस नपुंत्रकंदको अलग करवेंनपर आनिवृत्तिकरण विवक्षित प्रकृतियोंको वांधता है। इनमेंस ल्रिकेट के स्वत्यवेंसे हितीय अनिवृत्तिकरण विवक्षित प्रकृतियोंको वांधता है। इनमेंस ल्रिकेट प्रकृतियोंको वांधता है। इनमेंस ल्रिकेट प्रकृतियोंको वांधता है। इनमेंस पुरुषवेदको अलग करदेनपर तरह होते हैं (१६)। इन प्रत्यवोंसे चतुर्ध अनिवृत्तिकरण विवक्षित प्रकृतियोंको बांधता है। पुना इनमेंस कोंधसंत्रवलको अलग करदेनपर वारह होते हैं (१६)। इन बारह प्रत्यवेंसे पंचम अनिवृत्तिकरण विवक्षित प्रकृतियोंको बांधता है। पुना इनमेंस कोंधसंत्रवलको अलग करदेनपर वारह होते हैं (१८)। इन प्रत्यवेंसे पंचम अनिवृत्तिकरण विवक्षित प्रकृतियोंको बांधता है। पुना इनमेंस मानसंज्यक्तिक करदेनपर ग्यारह होते हैं (१९)। इन प्रत्यवोंसे उटा अनिवृत्तिकरण विवक्षित प्रकृतियोंको वांधता है। इनहीं इच प्रत्यवोंसे प्रवस्त अनिवृत्तिकरण विवक्षित प्रकृतियोंको वांधता है। इनहीं इच प्रत्यवोंसे स्क्ष्मसाम्पराधिक सी विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको वांधता है। इन दश प्रत्यवोंसे स्क्ष्मसाम्पराधिक सी विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको वांधता है। इन दश प्रत्यवोंसे सक्ष्मसाम्पराधिक सी विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको वांधता है। इन दश प्रत्यवोंसे सक्ष्मसाम्पराधिक सारा करदेनिपर करवें पर होते हैं (१९)। ये नो उपशान्तकषाय और स्वाक्षक करवें के हारा वांधी जानेवाली प्रकृतियोंक प्रत्यव हैं। इनमेंसे मध्यम क्षित्रकेट स्वत्यवें से स्वयय विवेंक हारा वांधी जानेवाली प्रकृतियोंक प्रत्यव हैं। इनमेंसे मध्यम

१ अप्रतो 'अपुरुवकरणपद्दृहस्सुवसमा ' इति पाठः ।

२ प्रतिष्र '-सांपराइया ' इति पाठः ।

कम्मइयकायजोगेसु पश्खितसु सन होंति |<u>॰</u>|। एदेहि सत्तिहि पञ्चएहि सजोगिजियो। **षंघदि ।** एत्थ उवसंहारगाहाओ —

चदुपञ्चहगो बंधो पदमे उपिसिनिए निपचहंशों । मिस्सगिविदिओ उपिसदुगं च सेसेगदेसिंग्हें ॥ २० ॥ उपित्वच्यां चए पुण दुपञ्चओ जोगपञ्चओ तिष्ण । सामण्यपञ्चया खद्ध अट्ठणां होति कम्माणं ॥ २१ ॥ पणवण्णा इर वण्णा निदाल हादाल सन्तिसा य । चदुरीस दु बाधीसा सोलस एगूण जाव णव सत्ते ॥ २२ ॥

संपधि एगसमङ्य उत्तरुत्तरपञ्चएँ चोदसजीवसमासेसु भणिस्सामो । तं जहा --

दो दो अर्थात् सृग और सत्यसृग मन और चचन योगोंको अलग करके औदारिकमिश्र य कार्मण काययोगको मिला देनेपर सात होत हैं (७)। इन सात प्रत्ययोंसे संयोगी जिन [एक सातावेदनीयको] बांधेत हैं। यहां उपसंहारगाधायें—

प्रथम गुणस्थानमें चारों प्रत्ययोंसे वन्ध होता है। इससे ऊपर तीन गुणस्थानोंमें मिथ्यात्वको छोड़कर रोप तीन प्रत्ययसंयुक्त वन्ध होता है। देशसंयत गुणस्थानमें मिश्रक्ष अर्थात् विरामित प्रत्यय और काय व येता ये शेप दोनों उपरिम्म प्रत्यय रहते हैं। इसके ऊपर पांच गुणस्थानोंमें कपाय और योग इन दो प्रत्ययोंकि निमित्तसे बन्ध होता है। पुनः उपशान्तमोहादि तीन गुणस्थानों में कवल येगानिमित्तस बन्ध होता है। इस प्रकार गुणस्थान कमसे आठ कमींके ये सामान्य प्रत्यय हैं॥ २०-२१॥

प्यवन', पचास', तेताळीस', छवाळीस'. सैंतीस', चौवीस , दो बार वाईस' ', सोळह' और इसके आगे नी तक एक एक कम अर्थान् एन्द्रह, चेदिह, तेरह, बारह, ज्याद्ध, दश, दश', नी'', नी'' और सान', इस प्रकार कमसे सिच्यात्वादि अपूर्वकरण तक आठ गुणस्थातींसे, अतिवृत्तिकरणके सान मागोंसे तथा सूक्ष्मसाम्परायादि स्योग-केवळी तक शेष गुणस्थानोंसे वस्थात्ययोंकी संख्या है ॥ २२ ॥

अब एक समयमें होनेवाले उत्तरोत्तर प्रत्ययोंको चौदह जीवसमासोंमें कहते हैं।

१ अप्रती ' उवरिमातएवपच्चइओ ', काप्रनी ' उवरिमतिए चेव पञ्चइओ ' इति पाट. ।

२ अत्रती 'सेसेगदेसिहिं', काप्रती 'देसेक्टेसिहिं' इति पाठ | चटुपच्चइगी बधी पटमे णतरीतेगे तिपच्चइगी | मिस्सगविदियं उनरिमद्दन च देसकरबेसिम्म || गी क. ७८७.

[⊋] गो. क. ७८८.

४ पणवण्णा पण्णासा तिदाल छादाल सत्तर्तासा य । बदुवंसा बावांसा बावंसयपुरुवकरणो ति ॥ थूले सोलसपहुदी एपूण जाव होदि दस ठाण । एहुमादिसु दम णवय जोगिम्हि सत्तेवा ॥ गो. क.७८९.=७९०.

५ अप्रतौ '-पष्चएहि ' इति पाठः ।

तस्य ताव मिच्छाइडिस्स जहण्णेण दस पच्चया । पंचसु मिच्छनेसु एक्को । एक्केण इंदिएण एक्कं कायं जहण्णेण विराहेदि [ति] दोण्णि असंजमपच्चया । अणंताणुवंधि-चउक्कं विसंजोजिय मिच्छतं गयस्स आवित्यमेत्तकात्रमणताणुवंधिचउक्कस्सुद्यामावादो बारससु कसायसु तिण्णि कसायपच्चया । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स रिंद-आदि संगादोषु छुगलेसु एक्कदरं खुगले । दससु जोगेसु एक्का जोगे। एयमेदे सच्चे वि जहण्णेण दस पच्चया । १० । । पंचमु मिच्छतेसु एक्को । एक्केण इंदिएण छकाए विराहेदि ति सन असंजम-चच्चया । सोत्यसेसु कसायसु चनारि कसायपच्चया | ५ । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स-रि-अरिद-सोगदोखुगलेसु एक्कं चुगले । अय-दुगुंछाओ देणिण । तरसेसु जोगपच्चयसु एक्को । एवमेदे सच्चे वि अद्वारस होति [१८] । एवमेदेहि दस-अद्वारसज्वरणुक्कस्पण्चक्यस्य पक्को । एवमेदे सच्चे वि अद्वारस होति [१८] । एवमेदेहि दस-अद्वारसज्वरणुक्कस्पण्चक्यस्य स्क्को ।

एक्कींगिदिएण एक्कं कायं विराहिदि ति दोअसंजमपन्चया । सील्सेसु कसाएसु चत्तारि कसायपन्चया । तिसु वेदेसु एक्को वेदपन्चओ । हस्स-रिद-अरिद-सीगदोज्जालेसु एक्कदरं जुगलं । तेरससु जोगेसु एक्को । एवं जहण्णेण सासणस्स दस पचया होति <u>। १०</u> ।। उक्कसेण सत्तरस पन्चया होति, मिन्छत्तससुदयाभावादे। <u>१७ ।</u>। एवमेदेहि जहण्णुकस्स-

वह इस प्रकार है- उनमें मिध्यादृष्टिक जग्रन्यसे दृश प्रत्यय होते हैं। पांच मिध्यात्वाँमैंसे एक।
मिध्यादृष्टि एक इत्त्रियसे एक काथकी जग्रन्यसे विराधना करता है, इस प्रकार दो
असंयम प्रत्ययः अनन्तानुश्वत्धिवनुष्ट्यका विसंयोजन करके मिध्यत्वको प्राप्त दुए जोको
आवर्जीमात्र काल तक अनन्तानुश्विधवनुष्ट्यका उदय न रहतेसे वारह कथायों में तीन कथाय प्रत्ययः तीन वेदों में एक, हास्य रति और अरति शोक हन दे शुगल्जों मेंसे एक युगल, तथा दश योगों में एक योग, इस प्रकार ये सब ही जम्म्यसे दश प्रत्यय होते हैं (२०)। पांच सध्यात्वाँमें एक, एक इत्त्रियसे छह कायों की विराधना करता है, अतः सात असंयम प्रत्ययः सीलह कथायों में बार कथाय प्रत्ययः तीन वेदों में एक, हास्य रति और अरति शोक इन दे शुगल्जों में एक शुगल, भय व जुगुष्ट्या दे। तेरह योग प्रत्ययाँसेसे एक, इस प्रकार वे संभी अग्ररह होते हैं (१८)। इस प्रकार हन जम्मय दश और उन्हृष्ट अग्ररह प्रत्यांसेसे

एक इन्द्रियसे एक कायकी विराधना करना है इस प्रकार दो असंयम प्रत्यय, सोलह कपायोंमें बार कपाय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक वेद प्रन्यय, हास्य-रित और अरित-शोक हन दो युगलोंमें एक युगल, तरह योगोंमें एक योग, इस प्रकार सासादनसम्बन्धिके जघन्यसे दश (२०) और उन्करेंसे सत्तरह प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उसके मिध्यात्वका उदय नहीं रहना (१७)। इस प्रकार क्रमसे इन जघन्य और उन्कृष्ट दश व सत्तरह प्रत्ययोंसे । है ४. दस-सत्तारसपन्चएहि सासणसम्मादिङ्गी अप्पिदसीलसपयडीओ बंधदि ।

एक्केणिंदिएण एक्कं कार्य विराहेदि ति दो असंजमपञ्चया । अणंताणुषन्धि-चदुक्कवदिरित्तमारमकसाएसु तिण्णि कसायपञ्चया । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स रिद अरिद-सीगदीजुगलेसु एक्कं । दससु जोगेसु एक्को । एवमेदे सन्वे वि णत्र होति | ९ | । एक्केणिंदिएण छक्काए विराहेदि ति मत्त असंजमपञ्चया । अणंताणुबाँधविरहिदबारसकसाएसु तिण्णि कसायपञ्चया । तिसु वेदेसु एक्को । इस्स रिद-अरिद-सोगदोजुगलेसु एक्कवर्य जुगलं । दो भय-दुगुंछाओ । दससु जोगेसु एक्को । एवमेदे सोलस पञ्चया | १६ | । एदेहि कृष्णुक्करसणव सोलसपञ्चएहि सम्सामिन्छाइट्टी असंजदसमाइट्टी च अण्विदसोलसपयडीओ बंधिद ।

एक्केणिदिएण एक्कं कायं विराहिदि ति दो असंजमपरूचया । अणंताणुर्वचि-अप-चक्खाणच उक्किवरिहद अट्टकसाएमु दो कसायपरूचया । तिमु वेदेसु एक्का । हस्म-रिद-अपिट-सोगदोजुगतेमु एक्कं । णवजारोमु एक्का । एक्मेदे अह <u>। ८</u>। । एक्केणिदिएण पेचकाए विराहिदि ति छअसंजमपरूचया । दो कसायपरूचया । एक्का वेदपचओ । हस्स-रिद-अपिट-सोगर-

सासादनसम्यग्दप्रि विवक्षित सोलह प्रश्नतियाँका वांधता है।

एक इन्द्रियसे एक कायकी विराधना करना है इस प्रकार दो असंयम प्रस्यय, अनन्तानुविध्यनपृष्यको छोड़कर रोप बारह कपायोंमें तीन कपाय प्रस्यय, तीन विदास एक, हास्य रिन और अनि दोक इन दो युगलोंमेंस एक, दरा योगोंमेंस एक, इस प्रकार ये सभी नौ प्रस्य होन हैं (९)। एक इन्द्रियस छह कायोंकी विराधना करना है इस प्रकार सात असंयम प्रस्यय, अनन्तानुवन्धीस रिहत वारह कपायोंमें तीन कपाय प्रस्यय, तीन वेदोस एक, हास्य-रिन और अनिन्शोक इन देश गुगलोंमें एक युगल, भय और खुण्यसा ये दो दरा योगोंसे एक, इस प्रकार ये सीलह प्रस्यय होने हैं (१६)। इन अध्या वेदा दरा योगोंसे एक, इस प्रकार ये सीलह प्रस्यय होने हैं (१६)। इन अध्या विविध्यन सीलह प्रस्ययों से सम्यिमध्यादृष्टि और असंयनसम्यन्दृष्टि जीव विविध्यन सीलह प्रमुतियोंको बांधना है।

एक हान्द्रयम एक कायको विराधना करता है इस प्रकार दो असंयम प्रत्यस्य अनन्तानुविध्यनपृथ्य और अप्रत्याच्यानावरणचनुष्टयं रहित आड कवायोंमें दो कवाय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हास्य-रित और अरित-शोक इन दो युगलोंमें एक, नौ योगोंमें एक, इस प्रकार य आड प्रत्यय होते हैं (८)। एक इन्द्रियसे पांच कायोंको विराधना करता है इस प्रकार छह असंयम प्रत्यय, दो कवाय प्रत्यय, एक वेद प्रत्यय, हास्य-रित और अरिति शोक इन दो युगलोंमें एक, इस

₹. Ę.]

दोण्हं जुगलाणमेक्कदरं । भय-दुर्गुछाओ । णवजोगेसु एक्को । एवमेदे चोहस <u>। १४</u>। । एदे**हि** जहण्णकस्सअद्र-चोद्दसपच्चएहि संजदासंजदो अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि ।

चदुसंजलणेस् एक्को कसायपञ्चओ । तिस् वेदेस् एक्को । इस्स-रदि-अरदि-सोग-दीण्हं जगलाणमेक्कदरं । णवस जोगेस एक्को । एवमेदे पंच जहण्णेण पञ्चया । ५ । । एक्को कसायपचओ । एको वेदपचओ । हस्स रदि-अरदि-सोगदोण्णं जगलाणमेक्कदरं । भयदगुंछाओ । णवस जोगेस एक्को । एवमेदे सत्तक्कस्सपच्चया <u>। ७ ।</u> । एवमेदेहि जहण्णुक्कस्सपंच-सत्त-पच्चएहि पमत्तसंजदो अप्पमतसंजदो अपुव्वकरणो च अप्पिदपयडीओ बंधिद ।

एक्को संजलणकसाओ । एक्को जोगो । एवमेदे जहण्णेण दो परचया । २ । । उक्कस्सेण तिण्णि वेदेण सह । ३ । । एदेहि जहण्णक्कस्सदो-तिण्णिपच्चएंहि अणियडी अध्यदसीलसपयडीओ बंधिंद ।

लोभकसाओ एक्को । एक्को] जोगपच्चओ । एवमेदेहि जहण्णेण उक्कस्सेण वि दोहि पञ्चएहि सहमसांपराङ्गे। अप्पिदपयडीओ बंधदि । उवरि उवसंतकसाओ खीणकसाओ सजीगी च एक्केण चेव जोगेण बंधीत । एत्थ उवसंहारगाहा---

प्रकार ये चौदह प्रत्यय हैं। इन जघन्य और उत्क्रष्ट्र आठ व चौदह प्रत्ययोंसे संयतासंयत जीव विवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बांधता है ।

चार संज्वलनोंमेंसे एक कवाय प्रत्यय, तीन वेदोंमेंसे एक, हास्य-रति और भरति-शोक इन दो युगलोंमेंसे एक, तथा नौ योगोंमेंसे एक, इस प्रकार जघन्यसे ये पांच प्रत्यय हैं (५)। एक कपाय प्रत्यय, एक वेद प्रत्यय, हास्य-रति और अरति-शोक इन दो युगलोंमेंसे एक युगल, भय और जुगुप्सा, तथा नी योगोंमेंसे एक, इस प्रकार ये सात उत्कृष्ट प्रत्यय हैं (७)। इस प्रकृत इन जवन्य और उत्कृष्ट पांच व सात प्रत्ययांसे प्रमन्तसंयत, भप्रमत्तसंयत और अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीव विवक्षित प्रकृतियोंको बांधता है।

एक संज्जलनकषाय और एक योग इस प्रकार ये जघन्यसे दो प्रत्यय (२), तथा उत्कर्षसे वेदके साथ तीन (३), इस प्रकार इन जघन्य और उत्कृष्ट दो व तीन प्रत्ययाँसे भनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ती जीव विवक्षित सोल्ड प्रकृतियोंको बांधता है। लोभकवाय पक और पक योग प्रत्यय, इस प्रकार इन जघन्य व उत्कर्षसे भी दो प्रत्ययोंसे सहमसाम्प-रायिक जीव विवक्षित प्रकृतियोंको बांधता है। इससे ऊपर उपजान्तकपाय, श्रीणकपाय भार सयोगिकेवली केवल एक योगसे ही बन्धक हैं। यहां उपसंहारमाद्या--

दस अट्टारस दसयं सत्तरह णत्र सोल्सं च दोण्णं तु । अट्ट य चोदस पणयं सत्त तिए दु ति दु एयमेयं च ।। २३ ॥

किंगइसंबुत्ता ? एदिस्से पुच्छाए चोहसजीवसमासपिडबद्धे। उत्तरी बुच्चेदे । तं जहा— मिच्छाइड्डी चटुगदिसंजुत्तं चंधदि । णविर उच्चागोदं णिरय-तिरिक्खगई मोचूण दुगदिसंजुत्तं वंधदि । जसिर्कार्त्त णिरय-तिर्दे मोचूण दुगदिसंजुत्तं वंधदि । जसिर्कार्त्त णिरय-तिर्दे मोचूण त्यादिसंजुत्तं वंधदि । जसिर्कार्त्त वंधदि । उच्चागोदं णिरय-तिरिक्खगईओ मोचूण दुगदिसंजुत्तं वंधदि । असिर्कार्त्त पुण णिरयगई मोचूण तिगइसंजुत्तं वंधदि । सम्मामिच्छाइडी असंजदसमाइडीणं च सोल्सपयडीओ णिरयगई-तिक्खिगईओ मोचूण दुगइसंजुत्तं वंधदि । सम्मामिच्छाइडी असंजदसमाइडीणं च सोल्सपयडीओ णिरयगई-तिक्खिगईओ मोचूण दुगइसंजुत्तं वंधदि । संजदासंजदसपुडि जाव अपुव्यकरणदाए संखेज्जे भोग गंतूण द्विदा त्ति अप्पिदसोलसपयडीओ देवगदिसंजतं वंधति । उत्तरिमा अगदिसंजुत्तं वंधति ।

कदिगदीया सामिणो ? एदिस्से पुच्छाए परिहारे। वुच्चदे — मिच्छादिई। चदुगदिया

सिच्यात्व गुणस्थानमें दश व अठारह, सासादनमें दश व सत्तरह, दो गुणस्थानों में अर्थात् सिश्च और अविरतसम्बद्धिमें नी व सालह, संयतानयतमें आठ और चौदह, प्रसत्तसंयतादिक तीनमें पांच व सात, अतिचृत्तिकरणमें दो व तीन, सहम-साम्यतायमें दो, तथा उपशास्तकपाय. श्लीणकपाय एवं नयीगिकवर्णा गुणस्थानों एकमात्र, इस प्रकार एक जीवके एक समयमें जपन्य व उन्हुप्ट वन्ध्रमस्य पाये जाते हैं ॥ २३ ॥

'कौनसी गतिसे संयुक्त बन्धक है?' इस प्रश्नका चौदह जीवसमासोंस सम्बद्ध उत्तर कहते हैं। वह इस प्रकार हे— मिथ्यादां ए जीव चारों गतियांसे संयुक्त उक्त प्रकृतियोंका बन्धक है। विशेष इतना है कि उच्चगांवका नरकाति और तिर्यसातिकां छोड़कर शेष दो गतियोंसे संयुक्त बांधना है। यहांकार्तिकां नरकातिकां छोड़कर तीन तियोंसे संयुक्त बांधता है। सासादन गुणस्थानमें चौदह प्रकृतियोंको नरकगतिकां छोड़ तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है। उच्चगांवको नरक व निर्यगतिकां छोड़ शेष दो गतियोंसे संयुक्त बांधता है। किन्तु यशकीर्तिकां नरकगतिकां छोड़ शेष तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है। किन्तु यशकीर्तिकां नरकगतिकां छोड़ शेष तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है। सम्यगिमय्यादार्ध और असंयतस्यग्दार्ध जीव सोलह प्रकृतियोंको नरकगति व तिर्यगतिको छोड़ हो गतिसंयुक्त बांधत है। संयतासंयतसे लेकर अपूर्वकरण-कालके संख्यात बहुआग जाकर स्थित जीव विविधत सोलह प्रकृतियोंको देवगतिसंयुक्त बांधने हैं। इससे उपरके जीव अगतिसंयुक्त बांधते हैं।

' उक्त प्रकृतियोंके कितने गतिवाले जीव स्वामी होते हैं ?' इस प्रश्नका परिहार कहते हैं — मिप्पादिष्ट चारों गतियोंके जीव स्वामी हैं । सासादनसम्यग्दिष्ट, सम्यग्निष्ट्या-

१ गो. क. ७९२.

1 24

सामिणो । सासणसम्माइड्डी सम्मामिच्छाइड्डी असंजदसम्माइड्डिणो वि चदुगदिया सामिणो । दुगदिसंजदासंजदा सामिणो । उवरिमा मणुसगदिया चेव । अद्धाणं सत्तसिद्धं। पढम-अपढमचरिम-चरिमंसमयबंधवोच्छेदपुच्छाविसयपरूवणा वि सत्तसिद्धा चेव ।

किं सादिओ किमणादिओ किं धुवो किमद्धवो बंधो ति एदिस्से पुच्छाए बुच्चदे-चोहसपयडीणं बंधो मिच्छाइहिस्स सादिओ. उवसमसेडिम्डि बंधवोच्छेदं कादण हेट्रा ओदरिय बंधस्सादिं करिय पडिवण्णभिच्छताणं सादियंबंधोवलंभादे। । अणादिगो, उवसम-सेडिमणारूढमिच्छादिद्रिजीवाणं बंधस्स आदीए अभावादो । धुवो बंधो. अभवियमिच्छादिद्रीणं बंधस्स वोच्छेदाभावादो । अद्भवो, उवसम-खवगसेर्डि चडणपाओग्गमिच्छाइद्विबंधस्स धुवत्ता-भावादो । जसकित्ति-उच्चागोदाणं पि एवं चेव । णवरि अणादि-धवबंधा णत्यि. अजसकित्ति-णीचागोदाणं पडिवक्खाणं संभवादो । सञ्चगुणहाणेसु सेसेसु चोइसपुवपयडीओ सादि-अणादि-अद्भवमिदि तिहि वियप्पेहि बज्झंति । धुवभंगी णत्थि, तेसिं भवियाणं णियमेण बंधवोच्छेद-

इप्रि और असंयतसम्बन्द्धि भी चारों गतियोंके जीव स्वामी हैं। तो गतियोंके संयतासंयत जीव स्वामी हैं । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्यगतिके ही जीव स्वामी हैं। बन्धाध्यान सत्रसे सिद्ध है। प्रथम, अप्रथम-अचरम और चरम समयमें होनेवाले बन्धव्यक्लेट-सम्बन्धी प्रश्नविषयक प्ररूपणा भी सन्नसिद्ध ही है।

अव 'क्या सादिक बन्ध होता है, क्या अनादिक बन्ध होता, क्या ध्रुष बन्ध होता है, या क्या अध्रय बन्ध होता है? 'इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं - चौदह प्रकृतियोंका बन्ध मिध्यादृष्टिके सादिक हाता है, क्योंकि, उपशामश्रेणीमें बन्धव्युच्छेद करके पुनः नीचे उतरकर बन्धका प्रारम्भ करके मिथ्यात्वको प्राप्त हुए जीवोंके सादिक बन्ध पाया जाता है। अनादिक बन्ध होता है, क्योंकि, उपशमश्रेणीपर नहीं चढे इए मिथ्यादष्टि जीवेंकि बन्धके आदिका अभाव है। भ्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, अभन्य मिथ्यादृष्ट जीवोंके बन्धका कभी ब्युच्छेद नहीं होता। अध्रव बन्ध होता है, क्योंकि, उपराम और क्षपक धेणीपर चढ़नेके योग्य मिथ्यहिए जीवोंका बन्ध ध्रव नहीं होता। यशकीर्ति और उच्चगोत्र प्रकृतियोंका भी मिध्यादृष्टिके इसी प्रकार ही बन्ध होता है। विशेष इतना है कि इन दोनों प्रकृतियोंका उसके अतादि और धव बन्ध नहीं होता, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्षभूत अयदाकीर्ति और नीच गोत्रका बन्ध सम्भव है। रोप सब गुणस्थानोंमें चौदह भ्रवप्रकृतियां सादि, अनादि और अध्य इन तीन विकल्पोंसे बंधती हैं। वहां भ्रुव भंग नहीं है, क्योंकि, उन अस्य बीबोंके

१ प्रतिष 'पटम-अपटम-चरिम-अचरिम- ' इति पाढः ।

संभवादो । जसकिति-उच्चागोदाणं पुण बंधो सव्वगुणहाणेसु सादि-अद्भुवो चेव ।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुवंधिकोह-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगर्-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगरूपाओग्गाणुपुब्नि-उज्जोव-अप्पतत्थविद्दायगरू-दुभग-दुस्सर-अणादेञ्ज-णीवागोदाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ७ ॥

एदं पुच्छासुत्ते देमामासियं च । तेण कि मिच्छाइट्टी बंघओ कि सासणसम्माइट्टी बंघओ कि सम्मामिच्छाइट्टी बंघओ एवं गंतूण किमजोगी कि सिद्धा वंघओ, किमेदेसि कम्माणं बंधो पुखं वोच्छिङजीद, किसुदओ, कि दो वि समं वैचिन्छऽजीते, एदाओ कि सोदएण बज्झीत कि पोदएण, कि सोदय-पोदएण, कि सांतरं बज्झीत, कि णिरंतरं बज्झीत, कि सांतर णिरंतरं बज्झीत, कि पच्चणीह बज्झीत, कि पच्चणीह विणा यज्झीत, कि गाइसंजुतं बज्झीत, किमगइ-संजुत्तं बज्झीत, किदगिदया एदेसि बंघसामिणो होंति, किदगिदया ण होंति, कि वा बंघडाणं, कि चिमसमए वंघो वोच्छिङजीद, कि पटमममण, किमपदम-अचिमसमण् वंघो वोच्छिङजीद,

नियमसे बन्धन्युच्छेद सम्भव है । परन्तु यदाकीर्ति और उच्चगोत्र प्रकृतियेंका बन्ध सर्व गुणस्थानोंमें सादि और अधुव ही होता है ।

निद्रानिद्रा, प्रचलप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी कोध, मान, माया, रोभ, भीवेद, तिर्वगायु, तिर्यगाति, चार संस्थान, चार संहतन, तिर्यगातिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रश्नस्तिबहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इन प्रकृतियोंका कीन बन्धक है और कीन अवन्धक ? ॥ ७ ॥

यह एञ्छस्त्र भी दशामशंक है। अनएव क्या मिध्याद्यप्टि वन्धक है, क्या सासा-दनसम्याद्यप्ट वन्धक है, क्या सम्यभिमध्याद्यप्ट वन्धक है, इस प्रकार जाकर क्या अयोगी बन्धक है, क्या सिंड वन्धक हैं, क्या इन कमीका वन्ध पूर्वमें ब्युच्छित्र होता है, क्या उद्दर पूर्वमें ब्युच्छित्र होता है, क्या दोनों साथ ही ब्युच्छित्र होते हैं: ये प्रकृतियां क्या स्मेदयसे बंधनी हैं, क्या परोदयसे वंधनी हैं, क्या स्वादय-पोद्यसे बंधनी हैं, क्या प्रवासे सानतर बंधनी हैं, क्या निरन्तर बंधनी हैं. क्या सानतर-निरन्तर बंधनी हैं, क्या प्रवासेंस्व कंधनी हैं, क्या बिना प्रत्योंके बंधनी हैं. क्या गातिसंयुक्त बंधनी हैं, क्या अगतिसंयुक्त बंधनी हैं, क्या किता हैं, क्या चाम सान्यमं बन्ध ब्युच्छित्र होता है, क्या अप्रथम समयमें बन्ध ब्युच्छित्र होता है, क्या अप्रथम अन्यस्त समयमें बन्ध ब्युच्छित्र होता है, क्या अप्रथम अन्यस्त समयमें बन्ध ब्युच्छित्र होता है, क्या अप्रथम किमेदार्सि सादिओ षंथो, किमणादिओ, किं धुवो, किसदुवो षंथो त्ति एदाओ पुच्छाओ एत्य कादच्वाओ । एदासि पुच्छाणसुत्तरमुद्धवणद्वसुत्तरसुत्तं भणदि —

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ८ ॥

एदं देसामासियसुतं, सामित्तद्वाणपरूवणदोरण पुच्छासुतुह्द्वसञ्वत्थपरूवणादो । सामित्तमद्वाणं च सुत्तादो चेव णव्वदि ति ण तेसिमत्थो बुच्चदे । किमेदासि षेथो पुच्चं वोच्छिज्जदे, किसुदजो पुज्वं वोच्छिज्जदे, एदस्सत्थो बुच्चदे — थीणगिद्वितियस्स पुच्चं षेपो वोच्छिणो, पच्छा उदयस्स वोच्छेदो, सासणसम्मादिद्विचिरमसमए षंधे फिट्टे संते पच्छा उविर गंतूण पमत्तसंजदिम उदयवोच्छेदोवरुंमादो । अणंताणुषंपिचउक्कस्स षंथोदया समं फिट्टेति, सासणसम्माइद्विचिरमसमए एदेसि वंधोदयाणं जुगवं वोच्छेददंसणादो । इत्थिवेदस्स पुच्चं वंधो पच्छा उद्यो वोच्छिण्णो, सामणमिम वंधे वोच्छिण्णे पच्छा उद्यो वोच्छिण्णो, सामणमिम वंधे वोच्छिण्णे पच्छा उद्यो वोच्छिण्णो, सामणमिम वंधे वोच्छिण्णे पच्छा उद्यो वोच्छिण्णे।

क्या इन प्रकृतियोंका सादिक बन्ध है, क्या अनादिक बन्ध है, क्या ध्रुव बन्ध है, या क्या अध्रुव बन्ध है, इस प्रकार ये प्रदन यहां करना चाहिये। इन प्रदनोंका उत्तर कहनेके ठिये अगला सुत्र कहते हैं—

उपर्शुक्त प्रकृतियोंके मिध्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव बन्धक हैं। ये वन्धक हैं, शेष जीव अवन्धक हैं॥ ८ ॥

यह देशामशंक सृष है, क्योंिक, बन्यके स्वामित्व और अध्वानकी प्रक्रपणा द्वारा वह पृच्छात्व्रमें उदिए सब अयोंका निरूपण करता है। बन्यस्वामित्व और अध्वान चृंकि सृष्यके ही जाता जाता है अतः इन देनोंका अर्थ यहां नहीं कहा जाता। 'क्या इनका कम्प पहिले च्युच्छित्र होता है। यद्य उप पहिले च्युच्छित्र होता है। ' इसका अर्थ कहते हैं— स्त्यानगृद्धि आदि तीन प्रकृतियोंका पूर्वमें बन्ध च्युच्छित्र होता है, तत्पक्षात् उदयका च्युच्छेद होता है, क्योंिक सासाद्वसम्प्यदृष्टिक वरम समयमें बन्यके नष्ट होन्पर पक्षात् कपर जाकर प्रमत्तसंयनमें इनके उदयका च्युच्छेद पाया जाता है। अनन्तानुविश्वचुक्त प्रका अर्थ जाकर प्रमत्तसंयतमें इनके उदयका च्युच्छेद पाया जाता है। अनन्तानुवश्चित्रम् प्रकृति होता है। स्त्राच्यक्त प्रवृद्धिक सरम समयमें इनके बन्ध और उदय दोनों साथ नष्ट होते हैं, क्योंिक, सासाद्वसम्प्रकृष्टिक सरम समयमें इनके बन्ध और उदयका एक साथ च्युच्छेद देखा जाता है। स्त्रीवेदका पूर्वमें बन्य का च्युच्छित्र होता है। स्थांिक, सासादनगुणस्थानमें बन्धके ख्युच्छित्र होता है। स्थां प्रकृति त्यस्थात् उदयका च्युच्छेद होता है। होते प्रति प्रकृति त्यस्थात् त्यस्थात् उत्यक्त च्युच्छेद होता है। होते प्रति प्रकृति सर्वाप्रकृति स्थापित स्थित्याद्वित होता है।

णीचागोदाणि, सासणिम बंधवोच्छेदे जादे पच्छा उविर गंतूण संजदासंजदिम्म उदय-वोच्छेदादो, तिरिक्खाणुपुन्वीए असंजदसम्माइडिम्डि उदयवोच्छेदुवरुंमादो । एवं मिड्झिम-चदुसंद्राणाणि, सासणिम्म बंधे थक्के संते उविर गंतूण सजोगिम्डि उदयवोच्छेदारो । एवं चेव माज्ञ्ञमचदुसंघडणाणि, सासणिम्म बंधे थक्के संते उविर अपमत-उवसंतकसाएसु कमेण देग्णं द्राण्णसुदयक्खयदंसणादो । एवं अप्यस्थिवद्दायगदीए, सासणिम्म बंधे थक्के संते उविर सजोगिम्डि उदयवोच्छेदारो । एवं दुसग-अणादेज्जाणं वत्तव्यं, सासणिम्म बंधे थक्के स्वीर असंजदसम्मादिडिम्डि उदयवोच्छेदो । एवं दुस्सरस्य वि वत्तव्यं, सासणिम्म बंधे थक्के सजीगिकेविजिन्ड उदयवोच्छेदारो ।

किं सोदएण किं परोदएण किन्नुभएण बज्झंति ति पुच्छाए उत्तरो बुज्वेद । तं जहा-श्रीणिगिद्धित्तियमित्थिवेदं तिरिक्खाउअं तिरिक्खगइ चदुमंठाणाणि चदुमंघडणाणि तिरिक्ख-गदिपाओग्गाणुपुट्यि उज्जोवं अप्यसत्यविद्वायगदिमणंताणुवंधिचदुक्कं दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि च मिच्छादिद्वि-सासणसम्माइडिणो सोदएण वि परोदएण वि वंधति, विरोहा-

योंका पूर्वमें वन्धव्युच्छिष्ठ होता है, तन्यक्षात् उद्यका व्युच्छेद होता है, क्योंिक सासादनगुणस्थानमें बन्धका व्युच्छेद हो जानेपर पक्षात् अपर जाकर संयतासंयत गुणस्थानमें
उदयका व्युच्छेद होता है, तथा निर्यमानिमायोग्यातृष्वींके उद्यका व्युच्छेद संस्यतसम्यव्हिष्ट गुणस्थानमें पाया जाता है। इसी प्रकार मध्यम चार संस्थानोंका पूर्वमें बन्धे
व्युच्छिष्ठ होता है, तन्यक्षात् उदयका व्युच्छेद होता है, क्योंिक सासादन गुणस्थानमें
बन्ध के कक जानेपर अपर जाकर सर्थागंकवली गुणस्थानमें उद्यका व्युच्छेद होता है।
हसी प्रकार ही मध्यम चार संहनन हैं, क्योंिक, सासादनगुणस्थानमें इनक बन्धके कक
जानेपर अपर अप्रमत्तसंयत और उदाशानकथाय गुणस्थानोंमें क्रममें दो दो संहननोंका
उद्यक्ष्य देखा जाता है। इसी प्रकार अपरास्तविद्यानिका भी कथन करना चाहिये,
क्योंिक, सासादनगुणस्थानमें बन्धके कक जानेपर अपर स्थोगंकवलोंमें उदयका व्युच्छेद
होता है। इसी प्रकार उपने स्थानकथा कथन करना चाहिये, क्योंिक, सासादनमें
बन्धके कक जानेपर अपर असंयतसम्याद्धिमें उदयका व्युच्छेद होता है। इसी प्रकार
इस्यका व्युच्छेद होता है। इसी प्रकार स्थानेकवलींमें

' उपर्युक्त प्रकृतियां क्या स्वाद्यसे क्या परोद्यसे या क्या स्व-परोद्दय अभयरूपसे वैधती हैं? इस प्रहृतका उत्तर कहते हैं। वह इस प्रकृत हे—स्त्यानगृद्धित्रय, स्त्रीवेद, तिये-गायु, तियंग्गति, चार संस्थान, चार संहृतन, तियंग्गतिप्रायाग्यागुपूर्वी, उद्यात, अप्रशस्त-विहायोगित, अनन्तानुवश्चित्रतुष्क, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इन प्रकृतियोंको मिष्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि स्वाद्यसे भी और परोद्यसे भी बांघते हैं, क्योंकि, भावादो ।

कि सांतर कि णिरंतरं कि सांतर णिरंतरं वज्झंति ति एदस्सरथो चुच्चदे — थीण-गिद्धितियेमणंताणुवंधिचउनकं च णिरंतरं वज्झहं, धुववंधित्तादो। इत्थिवेदो मिच्छाइडि-सासण-सम्मादिद्वीहि सांतरं वज्झहं, वंधगद्धाए खीणाए णियमेण पडिवक्खपयडीणं वंधसंभवादो। तिरिक्खाउअं मिच्छाइडि-सासणसम्मादिद्वीहि णिरंतरं वज्झहं, अद्धाक्खएण वंधस्स यक्कणा-मावादो। तिरिक्खगङ-तिरिक्खगङपाओग्गाणुप्वतीओ सांतरः णिरंतरं वज्झंति।

होदु सांतरकंघी, पडिवकखपयडीणं कंघुवर्तमादोः ण णिरंतरकंघी, तस्स कारणाणु-वरुंमादो ति बुत्ते बुच्चदे — ण एस दोसो, तेउक्काइय-वाउक्काइयमिच्छाइट्टीणं सत्तमपुढवि-णरइयमिच्छाइट्टीणं च भवपडिबद्धसंकिठेसेण णिरंतरकंघोवरुंभादो । सासणसम्माइट्टिणो दोण्णं पयडीणमेदासि कर्घ णिरंतरवंघया ? ण, सत्तमपुढविसामणाणं तिरिक्खगइं मोत्तृणण्णगईणं कंघा-भावादो ?

इसमें कोई विरोध नहीं है।

' उक्त प्रकृतियां क्या सान्तर, क्या निरन्तर, या क्या सान्तर-निरन्तर बंधती हैं?' इसका अर्थ कहते हैं — स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुविध्यनुष्क निरन्तर बंधती हैं, क्योंकि. ये धुववन्धी प्रकृतियां हैं। क्षीवेदको मिथ्यादृष्टि और सासादृतसम्यग्दृष्टि सान्तर बांधते हैं, क्योंकि, बन्धककालके श्लीण होनेपर नियमसे प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव है। तियंगायुको सिष्धादृष्टि और सासादृनसम्यग्दृष्टि निरन्तर बांधते हैं, क्योंकि, कालके अथसे बन्धके रुकनेका अभाव है। निर्यगति और तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको सान्तर-निरन्तर बांधते हैं।

शंका— प्रतिपक्षभून प्रकृतियोंके बन्धकी उपलिध होनेसे सान्तर बन्ध भले ही हो, किन्तु निरन्तर बन्ध नहीं हो सकता, क्योंकि उसके कारणोंका अभाव है ?

समापान—इस राकाका उत्तर कहते हैं कि यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, तेजकायिक और वायुकायिक मिथ्यादृष्टियों तथा सप्तम पृथिवीके नारकी मिथ्यादृष्टियोंके भवेस सम्बद्ध संक्केशके कारण उक्त दोनों प्रकृतियोंका निरस्तर बन्ध पाया जाता है।

शंका-सासावनसम्यन्दि इन दोनों प्रकृतियांके निरन्तर बन्धक कैसे हैं ?

समाधान—यह शंका ठीक नहीं, क्योंकि, सप्तम पृथिवीके सासादनसभ्यग्रहिप्योंके तिर्यग्गातिको छोड्कर अन्य गतियोंका बन्ध ही नहीं होता।

१ अ-आप्रत्योः 'तिरिय- ' इति पाठः ।

२ अ-आप्रत्योः 'बधय- 'काप्रतो 'बधिय- 'इति पाठः ।

चदुसंशण-चदुसंभडण-उज्जोव अपसत्थविहायगदि-दूभग-दुस्सर-अणादेज्जाणमित्य-वेदभंगो, सांतर्र्षाधतं पिंड भेदाभावादो । शीचागोदस्स तिरिक्खगदिभंगो, तेउ-वाउक्काइएसु सत्तमपुदविणेद्दएसु च शीचागोदस्स शिरंतरं बंधुवतंभादो ।

कि पञ्चपहि बज्बंति कि तिह विणा, एदस्सत्थे। बुज्बदे — मिन्छादिही मिन्छत्ता-संजम-कसाय-जोगसण्णिदचदुहि मूट्यप्चपहि पणवण्णुत्तप्यच्छि दस-अङ्कारस्यग्समय-संभविजहण्णुकस्तप्यच्चपहि य एदाओ पयडीओ वंशदि । सासणसम्माइडी मिन्छतं मोत्ण् तीहि मूट्यप्चपहि पंचासुत्तप्यच्चएहि एगसमयसंभविददस-सत्तारसज्ञहण्णुक्कस्पप्यच्चएहि य एदाओ पयडीओ वंशदि । जवि तिन्धिताउअस्म वेउन्वियमिस्स-कम्मइयप्चपिह विणा तेवण्ण ओरालियमिस्सण् च विणा सतेताल पञ्चया मिन्छाइडि-सामणाणे होति ।

गइमंजुत्तपुच्छाए अस्यो बुरचंदे । तं जहा — थीणगिद्धितय-अणंताणुवंधिचउक्कं च भिच्छाहड्डी चउगइसंजुतं, मासणे। णिरयगईए विणा तिगइसंजुतं वंधइ । इस्थिवंदं भिच्छा-इड्डी सामणे। च णिरयगईए विणा तिगइमंजुतं वंधइ । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ तिरिक्ख-

चार संस्थान, चार संहतन, उद्योन, अप्रशस्तविहायोगानि, दुर्भग, दुस्वर और अनादंय प्रकृतियां स्रोवदक समान हैं, क्योंकि, सान्तरयन्धित्यके प्राति इन प्रकृतियोंमें स्रोवेदसे कोई भेद नहीं है। नीचगोत्र तिर्यग्गतिके समान है, क्योंकि, तजकायिक और बायुकायिक तथा सनम गृथिवीके नारकियोंमें नीचगोत्रका निरन्तर वस्ध पाया जाना है।

अव ' सुत्रोक्त प्रकृतियां क्या प्रत्ययांसे यंभती हैं या क्या उनके विना ?' इसका अर्थ कहते हैं—सिध्यादिए जीव सिध्यात्व. असंवम, कताय और येता संख्रावाले चार मूल प्रत्ययांसे, पचवन उत्तर प्रत्ययांसे, तथा एक समयमें सम्भव होनवाले दरा और अद्रारह ज्ञास्य व उत्तुष्ट प्रत्ययांसे, हम प्रकृतियांको वांभते हैं। सासादत्तनस्ययादिए सिध्याच्यों छोड़कर श्रंप तीन सूल प्रत्ययांसे, पचास उत्तर प्रत्ययांसे, तथा एक समयमें सम्भव दद्या और सत्तरह प्रस्ययांसे उत्तरह प्रत्ययांसे, वांभते हैं। विशेष यह कि तिर्युपादे विशेषिकसम्ब और सत्तरह प्रस्ययांसे साम प्रत्यावांके वांसा सप्यादिके तिर्पन, तथा वीक्रायक्त सिक्ष, कार्मण और औदारिकसिश्रके विना सामादत्तसम्यदृष्टिके तिरालांस प्रत्याव होते हैं।

गतिसंयुक्त प्रस्तका उत्तर कहते हैं । यह इस प्रकार है—स्सानगृद्धि आदि तीन तथा अनन्तानुवन्धिचनुष्कको मिथ्यार्दाष्ट जीव चारों गतियोंसे संयुक्त और सासादन-सम्यग्दिष्ट नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है । क्लेविदको मिथ्यादिष्ट और सासादनसम्यग्दिष्ट नरकगतिके विनातीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है । तिर्यमायु, तिर्यमाति,

१ अप्रती 'पञ्चयामिदि सासणाण ' इति पाठः ।

गुइपाओग्गाणपुन्ति-उज्जोवे मिच्छाइही सासणा च तिरिक्खगइसंज्ञत्तं बंधंति । चउसंठाण-चउसंघडणाणि मिच्छाइही सासणसम्माइही तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधेति । अप्पसत्थ-विद्वायगद्व-दभग दस्सर-अणादेजज-णीचागोदाणि मिच्छाइट्टी देवगईए विणा तिगइसंज्ञत्तं, सासणी देव-णिरयगईहि विणा दुगदिसंजुत्तं बंधदि ।

कदि गदिया सामिणा त्ति बुत्ते थीणगिद्धितिय-अणंताणुवंधिचउक्कादिपयडीणं वंधस्स चउम्गडमिच्छाडद्रि-सासणसम्मादिद्रिणो सामी । बंधद्धाणं सासणचरिमसमए बंधवोच्छेदो च सत्तिणिहिही ति ण प्रणी बच्चेदे ।

किमेदासिं पयडीणं सादिओ बंधओ ति पुच्छासंबद्धी अत्थी बुच्चेद । तं जहा ---थीणगिद्धितिय-अणंताणवंधिचउक्काणं वंधी मिच्छाइडिनिह सादिओ अणादिओ ध्रवो अद्धवे। च । सासणिम्म अणाइध्रवेण विणा दुवियप्या । सेसाणं पयडीणं बंधा मिच्छाइट्टि-सासणेस सादिगो अद्धवो च ।

णिद्दा-पयलाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ९ ॥

एदं प्रच्छासत्तं देसामासियं, तेणेत्य पुव्चिल्लपुच्छाओ सव्वाओ पुच्छिदव्वाओ ।

तिर्यग्गतिप्रयोग्यानपर्वी और उद्योतको मिध्यादाष्ट्र और सासादनसम्यग्द्रष्टि तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं। चार संस्थान और चार सहननेंको मिध्यादिष्ट और सासादन-सम्यन्द्रष्टि तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। अप्रशस्त्रविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रको मिथ्यादाप्ट देवगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त, और सासा-दनसम्यन्द्रष्टि देव व नरक गतिके विना दो गतियोंसे संयुक्त बांधता है।

कितने गिनवाले जीव स्वामी होते हैं. ऐसा कहनेपर उत्तर कहते हैं—स्यान-गृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्क आदि प्रकृतियोंके बन्धके चारों गृतियोंवाले मिथ्या-हाष्ट्रि और सासादनसम्यग्रहि स्वामी हैं। बन्धाध्वान और सासादनके चरम समयमें होने-बाला बन्धव्यच्छेद समसे निर्दिष्ट है, अतः उसे फिरसे नहीं कहते।

'क्या इन प्रकृतियोंका सादिक बन्ध है ? ' इस प्रश्नसे सम्बद्ध अर्थको कहते हैं। वह इस प्रकार है - स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध मिथ्याद्दाष्टि गुण-स्थानमें सादिक, अनादिक, ध्रव और अध्रव रूप होता है। सासादन गुणस्थानमें अनादि और भ्रवके विना दो प्रकारका होता है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध मिध्याद्वष्टि और सासादन दोनों गुणस्थानोंमे साविक व अध्व होता है।

निद्रा और प्रचला प्रकृतियोंका कीन बन्धक है और कीन अबन्धक ? ॥ ९ ॥ यह प्रष्टासम्म देशामशीक है. अतएव यहां सब प्रचीक प्रका प्रका चाहिये। पुष्टिद्सिस्सस्स संदेहविणासणद्वमुत्तरसुत्तं भणदि -

मिन्छाइडिप्पहुडि जान अपुन्नकरणपिवद्वसुद्धिसंजदेसु उनसमा स्वना नंधा । अपुन्नकरणद्वाए संसेन्जदिमं भागं गंतृण नंधो नोन्छिज्जदि । एदे नंधा, अनसेसा अनंधा ॥ १० ॥

एदं पि देसामासियसुत्तं, वंघद्वाणं वंधसामि-असामिणो च अपुव्वकरणद्वा**ए अपहम-**अचरिमसमए वंधवोच्छेदं च भणिद्ण संसत्ये सूचिय अवहाणादो । अधुव्वकरणद्वा**ए पहम-**सत्तमभागे णिहा पयटाणं बंधो थक्कदि ति एत्थ वत्तत्वं । कथमेदं णव्वदे ? परमगुरूवएसादो ।

क्रिमेदेसि कम्माणं बंधे। पुब्बं पच्छा समयुद्दएण वेष्टिञ्ज्जदि ति पुच्छाए णिच्छओ कीरदे । प्देसि बंधो पुर्व्व विणस्सदि', पच्छा उदयस्स वोच्छेदो; अपुञ्वकरणद्वाए पढमसत्तम-भागे बंधे शक्के संते उदिर गंतुण खीणकसायस्स दुचरिमसमयिन्ह उदयवेष्टिग्रहादो ।

किं सोदएण पोदएण सोदय-परोदएण बज्झित ति पुज्लाए बुज्वेद- एदाओ दो वि पयडीओ सोदय-परोदएण बज्झिति, णाणांतरावर्षचकस्मेव एदार्सि धुवोदयत्तामावादो । किं

इंकायुक्त शिष्यके सन्देहको दूर करनेके लिये उत्तर सूत्र कहें न हैं--

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्ठशुद्धसंयतोंमें उपशमक और क्षपक तक बन्धक हैं। अपूर्वकरणकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्धव्युःखेद होता है। ये बन्धक हैं, श्लेष जीव अबन्धक हैं।। १०॥

यह भी देशामर्शक सुत्र है, क्योंकि वह वन्धाध्वात, वन्धस्वामी अस्वा मी तथा अपूर्वकरणकालके अपया-अवरम समयमें होत्वाले वन्धस्युच्छेदको कहकर होग अर्थोंको सुवित कर अवस्थित है। अपूर्वकरणकालके प्रथम सभम भागमें निद्रा और प्रवला प्रकृतियोंका बच्च रुक जाना है, ऐसा यहां कहना वाहिये।

शंका-यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान--यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

ं क्या इन दोनों कर्मोका बन्ध उदयसे पूर्व, प्रधान अथवा साध्यमें व्युट्यिक होता है ? 'इस प्रस्तका निर्णय करने हैं — रनका बन्ध पूर्वमें नष्ट होना है, नत्पश्चान् उदयका पुष्टुकेंद्र होना है, क्योंक, अपूर्वकरणकारक प्रथम स्तम भागमें बन्धके रुक्त उत्तेपर ऊपर जाकर शीणकपाय ग्रुणस्थानके क्षियस समयमें उदयका ब्युच्छेट्ट होता है।

'दोनों कर्म मकतियां क्या स्वोदय, क्या परोदय या क्या स्वोदय परोदयसे कंघती हैं ?' इस प्रक्तका उत्तर कहते हैं- ये दोनों ही प्रकृतियां स्वोदय-परोदयसे कंघती हैं, क्योंकि, पांच ∎ानावरण और पांच अन्तरायके समान इन दोनों प्रकृतियोंके भूकोदयका अभाव है ।

र प्रतिपु 'पुष्त्र व णस्सदि ' इति पाठः ।

1.60

सांतरं णिरंतरं सांतर-णिरंतरं बच्छांत ? पदाओ णिरंतरं बच्छांत, सत्तालधुवपयडीसु पादादो । किं पच्चंपहिं बंधदि ति पुच्छाए बुच्चंद— मिच्छाइही चदुहि मूल्पंबंपिहें पणवणणणाणासमसुत्तरपबएहि दस-अद्दारसएगसमयजहण्णुकस्सपबएहि, सासणे मिच्छतेण विणा तिहि मूल्पंबंपिहें पणवणणणाणासमसुत्तरपबएहि दस सत्तारसएगसमयजहण्णुकस्सपचएहि, सामाणिच्छाइही तिहि मूल्पंबंपिहें त्वालुत्तरपबएहि एगसमयणव-सोल्सजहण्णुक्तस्सपबएहि, अवंशवदसमामाइही तिहि मूल्पंबंपिहें छातालुत्तरपचएहि एगसमयणव-सोल्सजहण्णुक्तस्सपचएहि, अवंशवदसमामाइही तिहि मूल्पंबंपिहें छातालुत्तरपचएहि एगसमयणव-सोल्सजहण्णुक्तस्सप्बंपिहें, प्रात्मक्ष्यं अन्यत्वे स्तर्तास्त्रम्य सिहंपिहें हिंपिहें स्तर्तास्त्रम्य पहि एगसम्बर्धं कें स्वर्तास्त्रम्य कार्याच्याचिहें स्वर्तास्त्रम्य कार्याच्याचिहें स्वर्तास्त्रम्य कार्याच्याचिहें स्वर्तास्त्रम्य कार्याच्याचिहें स्वर्तास्त्रम्य विष्टं स्वर्ताचारिहें स्वर्तास्त्रम्य विष्टं स्वर्तास्त्रम्य विष्टं स्वर्ताचारिहें स्वर्तास्त्रम्य विष्टं स्वर्ताचारिहें स्वर्तिचारिहें स्वर्विहें स्वर्तिचारिहें स्वर्तिचारिह

शंका---- उक्त दोनों प्रकृतियां क्या सान्तर, निरन्तर या सान्तर निरन्तर बंधती है?

समाधान—ये दोनों प्रकृतियां निरन्तर बंधती हैं, क्योंकि, ये सैंताछीस छुव प्रकृतियोंके अन्तर्गत हैं।

'ये प्रकृतियां किन किन प्रस्यांसे बंधनों हैं ?' इस प्रइनका उत्तर कहते हैं — मिण्डाहार्ष्ट जीव चार मूळ प्रस्यांस, पजवन नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रस्यांसे, तथा दश और
अठारह एक समय सम्बन्धी अग्रन्य व उत्कृष्ट प्रस्यांसे निद्रा एवं प्रचला प्रकृतियोंको बांधते
हैं। सासादनसम्याहिष्ट मिण्यात्वके विमा तीन मूळ प्रस्यांसे, प्रचास उत्तर प्रस्यांसे, तथा
इश और सत्तरह एक समय सम्बन्धी अग्रन्य व उत्कृष्ट प्रस्यांसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते
हैं। सस्यामिण्याहिष्ट तीन मूळ प्रस्यांसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं। असंयत्तरसम्याहिष्ट
हैं। सस्यामिण्याहिष्ट तीन मूळ प्रस्यांसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं। असंयत्तरसम्याहिष्ट
होन मूळ प्रस्यांसे, ख्यालीस उत्तर प्रयांसे, तथा एक समय सम्बन्धी हो सो सोलह
ज्ञमन्य व उत्कृष्ट प्रस्यांसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं। अस्यत्तरस्याहिष्ठ के सीच सोलह
ज्ञमन्य व उत्कृष्ट प्रस्यांसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं। अस्यत्तरस्याहिष्ठ तथा
एक समय सम्बन्धी आठ व बौदह ज्ञपन्य और उत्कृष्ट प्रस्यासे उक्त प्रकृतियोंको बांधते
हैं। प्रमत्तर्सयत हो सूळ प्रस्यासेंसे, ज्ञीतीस उत्तर प्रस्यासेंस उक्त प्रकृतियोंको बोंधते
हैं। प्रमत्तरस्याम्य व उत्कृष्ट प्रत्यासेंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं। अप्रमत्तरस्यत और
स्वर्णि पात्र ज्ञापन्य व उत्कृष्ट प्रत्यासेंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं। अप्रमत्तरस्यत सीस

१ प्रतिपु 'पमचसंजदो हि' इति पाठः ।

गइसंजुत्तवंपपुच्छाए यत्योः — मिच्छाइटी चउगइसंजुतं, सासणो तिगइसंजुतं, सम्माभिच्छाइटी असंजदसम्माइटी देव-मणुस्सगइसंजुतं, उबरिमा देवगइसंजुतं णिहा-पयलाओ हो वि कंपंति । कदिगादेवा सामी, एदिस्से पुच्छाए बुचदे- भिच्छाइटी सासणसम्माइटी सम्माभिच्छाइटी असंजदसम्माइटी चउगइया, दुगदिसंजदासंजदा, उबरिमा मणुस्सगईया सामी । अद्याणं सुगमं । वोच्छिणणपदेसो वि सुगमे। कि सादिओ ति पुच्छाए बुचदे- भिच्छाइटिन्ट णिहा-पयलाणं कंपो सादिओ अणादिओ धुवो अद्भुवो ति चदुवियप्पो। सासणादिगुणटाणेसु तिवियप्पो, धुवताभावादो। सेसं सुगमं।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ११ ॥

कंघो कंघयो ति घेत्तव्यो । एदं पुच्छासुतं देसामासियं, सामिपुःछं णिदिसिद्ण सेस-पुच्छाविसयणिदेसाकरणादो । तेणेत्य सन्वपुच्छाओ णिद्दिसदव्वाओ । पुन्छिदसिस्ससंसयपुन्नमणह-सुत्तरसुत्तं भणदि—

गतिसंयुक्त बन्धसम्बन्धी प्रक्तका अर्थ कहते हैं — मिथ्यारिष्ट जीव चारों गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्बन्धि तीन गतियोंसे संयुक्त, सम्बन्धियादिष्ट और असंबन-सम्बन्धियेव व मनुष्य गतिसे संयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिसे मंयुक्त निद्रा व मचला दोनों महतियोंको बांघते हैं।

'कितने गितयोंवाले जीव उक्त दोनों प्रकृतियोंके स्वामी हैं ?' इस प्रस्तका उत्तर कहते हैं— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यान्मध्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि चारों गतियोंवाले; दो गितयोंवाले संयतासंयन, तथा उपरिम्न अस मृतयानिक्याने स्वामी होते हैं। वस्त्राम है। चरम समयादिक्य बन्ध- अष्टुष्टिक्यमदेश भी सुनम है। उत्तर प्रकृतियोंका बन्ध- स्वाद्रिक्ट कर स्वाद्रिक्य स्वाद्

सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ११ ॥

'बन्ध' राष्ट्रसे बन्धकरूप अर्थ प्रष्टुण करना चाहिये। यह पृष्छासूत्र देशामर्शक है, क्योंकि, वह स्वामिविषयक पृष्छाका निर्देश करके शेष पृष्छाविषयक निर्देश नहीं करता। इसलिये यहां सब पृष्छाओंका निर्देश करना चाहिये। शंकायुक शिष्यके संशयको दूर करनेके लिये उत्तर सुत्र कहते हैं— मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेविल ति बंधा । सङ्गोगि-केविलअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२ ॥

षदं पि सुत्तं देलामासियं, सामितमदाणं बंधिवणामदाणं च भणिद्णण्णेक्षिमत्थाणमणिद्देसादो । तेणिदरेसिं परूवणा कीरदे । तं जहा — एदस्स बंधो पुज्वसुदको पच्छा
वोच्छिज्जदि, सजोगिचरिमसमयं बंधे वोच्छिज्णे संते पच्छा अजोगिचरमसमय उदयवोच्छेदादो ।
सादावेदणीयं मिच्छाइडिप्पहुडि जाव सजोगिकेवित ति सोद्देशण परोद्देशण वि बज्छदि,
सादासादोदयाणं परावित्तंदसणादो, म-परोदर्शह बंधिवरोहाभावादो च । मिच्छाइडिप्पहुडि
जाव पमत्तो ति सांतरो बंधो, तत्थ पडिवक्खपर्यडीए बंधसंभवादो । उविर णिरतरो,
पडिवक्खपर्यडीए बंधाभावादो । जिम्ह जिम्ह गुणहाणे जित्तया जित्या मृत्यस्था णाणासमयउत्तरपञ्चया एगसमयजहण्णुककस्सपञ्चया च बुत्ता ताणि गुणहाणाणि तेतिश्हि
पद्मपद्मिं सादावेदणीयं वंधीतं ।

मिध्यादृष्टिसं लेकर सयोगिकेवली तक सातावेदनीयके बन्धक हैं। सयोगिकेवलिकालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, श्रेष जीव अबन्धक हैं॥ १२॥

यह भी सूत्र देशासर्शक है, क्योंकि, वह स्वामित्व, बन्धाण्वान और बन्धिबताश-स्थानको कहकर अन्य अयोंको निर्देश नहीं करता। इस कारण अन्य अयोंकी मक्यणा करते हैं। वह इस मकार है— सातावदनीयका वन्ध पूर्वेमें और उदय परवात, खुब्छिक होता है, क्योंकि, स्योगकेवउक्त कान्तिम समयमें बन्धके खुब्छिक होनेयर पीछे अयोग-केवलीक अनित्म समयमें उदयका खुब्छेद होता है। सातावदनीय मिध्यावृष्टिसे लेकर स्यागिकेवली तक स्वोदयसे और परोदयसे भी बंधता है, क्योंकि, यहां साता और असाताके उदयमें परिवर्तन देखा जाता है, तथा स्व-परोदयसे बन्ध होनेमें कोई विरोध भी नहीं है। मिध्यावृष्टिसे लेकर प्रमत्त गुणस्थान तक सातावदनीयका बन्ध सान्तर है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष महति (असाता) का बन्ध सम्भव है। प्रमत्त गुणस्थानसे ऊपर निरन्तर बन्ध हैं,क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष ग्रहतिक बन्धका अभाव है। जिस जिस गुणस्थानसे जितने वित्तने मूळ प्रत्यय, नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्यय और एक समय सम्बन्धी जान्य व उत्हृष्ट प्रत्यय कहे गये हैं, वे गुणस्थान उतने प्रत्ययोंसे सातावदनीयको बांधते हैं। मिच्छाइडी फिरवगईए बिणा तियहसंजुतं । अप्पतस्याए तिरिक्खगईए सह कर्ष सादकंगे? ण, फिरवगई व अवंतियअपसत्यनाभावादों। एवं सासणी वि । सम्मामिच्छाइडी अर्सजबसम्माइडी दृगहसंजुतं वंशित फिरव-तिरिक्खगईए विणा । उनिरेमा देनयइसंजुत्तं । अपुल्वकरणस्य चरिमसत्तमभागपहाँ उनिर अगदिसंजुतं वंशित । मिच्छाइडि-सासणसम्माइडि-सम्मामिच्छाइडि-असंजदसम्माइडिणो चदुगिदग, दृगदिसंजदासंजदा सामिणो, सेसा मणुत-गदीए चेव । वंशदाणं वंशवोच्छेदडाणं च सुगमं सुजुतादो । सन्त्रेसु गुणहाणेसु सादा-वेदबीयस्य वंशी सादि-अद्धवो, सादासाटाणं परावत्तणसरूवेण वंशदो ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अधिर-असुह-अजसकित्तिणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १३ ॥

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेणेत्य सञ्चपुच्छाओ कायञ्चाओ । अधवा, आसंकिय-

मिथ्यादृष्टि जीव नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त सातावेदनीयको बांधते हैं।

शंका -- अप्रशस्त तिर्यग्गतिके साथ कैसे सातावेदनीयका बन्ध होना सन्भव है ?

्हीं प्रकार सासावनसम्यानृष्टि भी तील गतियाँसे संयुक्त सातावदनीयको बांधते हैं। सम्यांमध्यादृष्टि और असंयतसम्यानृष्टि नत्क और तियंगातिक विना दो गतियाँसे संयुक्त बांधते हैं। अपूर्वकरणके अस्ताम स्वान हों। अपूर्वकरणके अस्ताम सम्यान स्वान हैं। अपूर्वकरणके अस्ताम सम्यान स्वान हैं। अपूर्वकरणके अस्ताम सम्यान स्वान हैं। सम्यानृष्टि, सासा-वनसम्यानृष्टि, सम्याम्भध्यानृष्टि, प्रवान सम्यान्त्रि, सम्याम्भध्यानृष्टि, प्रवान सम्यान्त्रि, हो। सामा-वनसम्यानृष्टि, सामा-वनसम्यानृष्टि, सम्याम्भध्यानृष्टि, सम्याम्भध्यान्त्रि, सम्याम्भध्यान स्वान और असाताका परिवर्तित बन्ध होनसे सातावेदनीयका बन्ध सादि और अधुव है।

असातांबेदनीय, अरित, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति नामकर्मका कौन षन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ? ३ ॥

यह पृष्छासूत्र देशामर्शक है, इसलिये यहां सब प्रश्लोको करना स्नाहिये। अथवा

१ अ काप्रस्थोः 'अप्पसत्यामावादोः', आप्रतो 'अप्पसत्यामावेणः', मप्रतो 'अप्पसत्यत्यामावादोः' इति पादः ।

सुत्तमेदमिदि दड्टवं । तण्णिण्णयजणणडेमुत्तरसुत्तं भणदि -

मिच्छादिट्विप्यहुडि जाव पमत्तसंजदा वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १४ ॥

एदं देसामासियं सुनं, पुन्छदरथाणमगदेसं छिविद्ण अवङाणादो । तेणेदेण सुइदरथाणं अत्थपरूवणा कीरदे । असादावेदणीयस्स पुन्वं बंधी उदबी पच्छा बान्छिण्णो, पमन्तसंजदम्मि बंधवोच्छेदे संते पच्छा अजोगिचरिमसमयिम उदयवोच्छेदादो । एवमरदि-सोगाणं, पमन्तसंजदम्मि बंधे णंडु संते अपुव्वचरिमसमयिम उदयवोच्छेदादो । अथिर-असुहाणं पि एवं चेव वत्तव्वं, पमन्तिम बंधे विण्डुं स्वागिचरिमसमयिम उदयवोच्छेदादो । अअन्तानितिए पुच्चमुद्देशो वीच्छिज्जीद पच्छा वंधी, अमंजदमम्मादिद्विन्हि उदए णुडुं पच्छा पमन्तमंजदिम्म वंधवोच्छेदादो ।

असादांबदणीय-अरदि-सोगा सादय-परादर्शह बज्झेति. उदयस्स धवताभावादो ।

यह आशंका सूत्र है ऐसा समझना चाहिये। उसके निश्चयोत्पादनार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं--

मिथ्यादृष्टिमं लेकर प्रमत्तमेयत तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं॥ १४॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि. वह पूछे हुए अधींके एक देशको छूकर अवस्थित है। इस कारण इसके द्वारा स्वित अधींकी प्रक्रपण की जाती है। असातावदनीयका पूर्वमें बन्ध और पश्चान् उदय खुण्छिक होता है, क्योंकि, प्रमण्णक्याण्यानमें
स्वयुक्त कुल्ले के अधींनाके कर्माके अन्तिम समयमें उदयका व्युक्तेष्ठ होता है।
इसी प्रकार अरित और शोकका बन्ध पूर्वमें और उदय पश्चात् ब्युक्तिछ होता है, क्योंकि,
प्रमत्तसंयतमें बन्धके नष्ट होजानेपर पीछे अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें उदयका ब्युक्तेष्ठ
होता है। अस्थिर और अगुभ प्रकृतियांका भी इसी प्रकार ही बन्धेत्रव्युक्तेष्ठ कहता
चाहिये, क्योंकि, प्रमत्तसंयतमें वच्छेक नष्ट होता है।
अथान्य उपक्रिक स्वता है। अथान्य विश्वेष नष्ट होता है। उदय ब्युक्तिछ होता है। पश्चात् बन्ध,
क्योंकि अस्थितसम्बन्धिय गुणस्थानमें उदयके नष्ट होजानपर पीछे प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें
बन्धका ब्युक्तेष्ठ होता है।

असानावदनीय. अरति और शोक प्रकृतियां स्वादय परादयसे बंधती हैं. क्योंकि,

१ अ-आप्रत्यो ' णियजणणहु- ' इति पाठ ।

एवमजसिकती वि, उदयस्स अद्भुवन्तेणण भेदाभावादा । णविर संजदासंजदप्पहुि उचिर परादर्भेणव वंघो, तस्य जमिकति मान्ण अवगण उदयाभावादा । अधिर-असुहाण सोदएणेव वंघो, तस्य जमिकति मान्ण अवगण उदयाभावादा । अधिर-असुहाण सोदएणेव वंघो, बुवेदियतादा । एदामि छण्णं पयडीणं मिन्छाइडिप्पहुि छसु वि गुणदृश्णेसु सांतरा वंघो । कुरे । एदामि एविवन्यपर्द्धाणाम्य वंघो ग्रेड्यामावादा । णाणावरणादिमात्सपयडीणं जे पन्वया एकविदा एदा छसु छसु गुणदृश्णमु तक्षि चय पच्चिति एदाओ छप्यवदीओ बच्छति । असाद-अपिद-सांग मिन्छाइडि-असंजदसम्मादिष्टणं देव-मणुमगद्रमंजुनं, उत्तरिमा देवगङ्गंजुनं, सम्मा-मिन्छाइडि-असंजदसम्मादिष्टणं देव-मणुमगद्रमंजुनं, उत्तरिमा देवगङ्गंजुनं वंधेति । एवं अधिर-असुम-अजमिकतीणं,भदाभावादा । चुजाइभिन्छाइडि-मानणमम्मादिष्टि सम्मामिन्छाइडि-असंजदसम्मादिष्टणं सामी । द्रगद्रभवदामंजदा सामी । पमतसंजदा मणुमा व । वंधदाणं वंधवाच्छरहाणं च सुगमं । एदाओ छ वि पयडीओ वंधण मादि-अद्धवाओ ।

मिच्छत्तः णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगङ् एइंदिय-वेइंदिय-तीइं-दिय-चर्डोरिदयजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण-णिरयगङ-

इनका उदय धव नहीं है । इसी प्रकार अयशकार्ति भी स्वोदय परोदयसे वंधनी है, क्योंकि, उदयकी अध्वताकी अपेक्षा इसके उक्त तीनों प्रकृतियोंने केंद्रि भेद नहीं है। विशेष इतना है कि संयतासंयतसे लेकर आगे इसका बन्ध परोदयसे ही होता है. क्योंकि, वहां यशकीर्तिको छोडकर अयशकीर्तिका उदय नहीं रहता । अस्थिर और अशुभ प्रकृतियोंका बन्ध स्वेदयसे ही होता है.क्योंकि.व धुत्रोदयी प्रकृतियां है । इन छहाँ प्रकृतियोंका मिथ्या-दृष्टि आदि छहों गुणस्थानोंमे सान्तर बन्ध होता है । इसका कारण यह है कि यहां इसकी प्रतिपक्ष प्रकृतियाँके वस्थन्युच्छेदका अभाव है । अभावरणादि सोलह प्रकृतियाँके जो प्रत्यय इन छह गणस्थानोमें कहे गये हैं उन्हीं प्रत्ययोंस हो ये छह प्रकृतियां वंधनी है । असाता-वेदनीय, अरति और डोक प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि जीव चारों गतियोंसे संयुक्त, सासा-दनसम्यग्टाप्ट नरकगतिको छोड़कर तीन गतियोसे संयुक्त, सम्यग्मिथ्याद्यप्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि देव मनुष्य गतियोंसे संयुक्त, तथा उपिम जीव देवगृतिसे संयुक्त बांधते हैं। इसी प्रकार अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति प्रकृतियोंका भी गतिसंयुक्त बन्ध जानना चाहिये. क्योंकि, उनसे इनके कोई भेद नहीं है। चारो गतियोंके मिथ्यादृष्टि. सासादन-सम्यन्द्राप्टे, सम्यन्मिथ्याद्दप्टि और असंयनसम्यन्द्रप्टि स्वामी हैं । दो गनियोंके संयता-संयत स्वामी है । प्रमत्तसंयत मनुष्य ही स्वामी होते हैं । वन्याध्वान और वन्धव्युच्छेद-स्थान सुगम है। ये छहीं प्रकृतियां वन्धने सादि एवं अधव है।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, नारकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्रात्तमुपाटिकासंहनन, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, स्थात्रर,

पाओग्गाणुपुन्ति आदाव थावर सुहुम अपज्जत्त साहारणसरीरणामाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ १५ ॥

एदं पुच्छासुतं देसामासियं, तेणेत्थ सञ्चपुच्छाओ कायव्वाओ । पुच्छिदसिस्सस्स संसयविणासणदृसुत्तरसुत्तं भणदि—

मिच्छाइद्दी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १६ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, सामित्तद्वाणांणं दोणणं चेत्र परूत्वणादो । तेणेदेणं सुद्ददश्याणं परूत्वणं कीरदे — मिन्छत्तस्य वंथोदया समें वैशिन्छन्जेति, मिन्छाइडिचरिमसमए वंथोदयवोन्छेद्दंसणादो । एइंदिय-वीइंदिय-तीइंदिय-चर्जिरियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारण-सरीताणं मिन्छत्तभंगो, मिन्छाइडिम्हि वंथोदयवोन्छेदं पिड एदार्सि मिन्छत्तेण सह भेदाभावादो । णर्बुस्यवेदस्स पुत्र्वं वंथवोन्छेदो पन्छा उदयस्म', मिन्छाइडिम्हि वंथे णट्टे सेते पन्छा अणि-यहिम्हि उदयबोन्छदादो । एवं णिरयाइ-णिरयगइपाओरगाणुपुव्विणामाणं वत्तव्यं, मिन्छाइडिम्हि

स्क्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मका कीन बन्धक है और कीन अबन्धक है ? ॥ १५॥

यह पृष्छासूत्र देशामर्शक है. इसलिये यहां पूर्वीक सब प्रक्तोंको करना चाहिये । पूछनेवाले शिःयका संशय नष्ट करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिध्यादृष्टि जीव बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, श्रेप जीव अबन्धक हैं॥ १६॥

यह दशामर्शक सृत्र है. क्योंकि. वह बन्धस्वामित्य और बन्धाध्वान इन दोनोंका ही प्रस्तण करता है। इस कारण इससे स्वित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं— मिध्यान्व प्रश्नाका बन्ध और उदय दोनों साथ ब्युष्टिय होते हैं, क्योंकि. मिध्याद्य प्रश्नाका कारण और उदय दोनों साथ ब्युष्टिय है क्योंकि. मिध्यादि गुणस्थानके अवित्तम समयमें इसके बन्ध और उदयका ब्युच्छेद देखा जाता हैं। एके.ट्रिय, क्रीन्ट्रिय, क्यादित्य जाति है। क्योंक्रिय जाति है। क्योंक्रिय क्यादित्य जाति है। क्योंक्रिय स्वाधारणसरीर प्रश्नातेयोंका बन्धोदयब्युच्छेद मिध्यात्य प्रश्नातेक ही समान है, क्योंकि, मिध्यादि गुणस्थानमें होनेवाले बन्धोदयब्युच्छेद के प्रति इनका मिध्यात्यके साथ कोई सद नहीं है। नपुंतकवेदका पूर्वमें बन्धवुच्छेद कोर पक्षात् उदयका खुच्छेद होता है, क्योंकि, मिध्यादि गुणस्थानमें वन्धके नष्ट होजानेपर पीछे अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें उदयका खुच्छेद कहना खाहिय, क्योंकि, मिध्यादिष्ट गुणस्थानमें वन्धके मध् होजानेपर पीछे असंयतसस्यव्हि गुणस्थानमें

क्षेष्ठे णड्डे सेते पच्छा असंजदसस्माइडिम्डि उदयवीच्छेदादो । एवं हुंडसंठाण-असंपत्तसेवह-सरीरसंघडणाणं पि वत्तव्यं, मिच्छाइडिम्ड वंधे फिट्टे सेते पच्छा जहाकमेण सजीगिकेविट-अप्यमत्तर्सजदेसु उदयवीच्छेदादो ।

मिश्कतस्य सोदएणेव वंघो। णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाञ्चागमाणुपुन्विणामाञ्चे परो-दएणेव वञ्चिति, सोदएण सगवंघस्म विरोहादो। णत्तुसयवेद-एइंदिय-बीईदिय-तीइंदिय-चर्डारे-दियज्ञादि-हुंडमंठाण-असंपत्तमबद्वसरीरसंघडण-आदाव-थावर-सुहुम-अपऽजत्त-साहारणसरीराणि सोदय-परोदणहि वञ्चीति, उमयथा वि विरोहाभावादो।

मिच्छतं णिरयाउअं च णिरंतरबेधिणो, धृवबंधितादो अद्धाक्खएण बंधविणासा-भावादो । अवसेससव्वपयडीओ सांतरं वञ्जीत, तार्मि पडिवक्खपयडिबंधसंभवादो ।

चदुहि म्लग्च्चारि पंचयंचामणाणाममयउत्तरपञ्चारिह दम अद्दारसण्गसमयब्रहण्णु-स्कस्मपञ्चारिह य मिन्ळार्रही एदाओं पयडीओ यंघड । णवरि वेउन्विय-वेउन्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपञ्चारिह विणा एगवंचामपञ्चारिह णिरयाउअ वंधइ त्ति वत्तव्वं । एवं

इनके उद्यका व्युच्छेद होता है। इसी प्रकार हुण्डसंस्थात और असंशासख्याटिकासंहतनका भी कहना चाहिय. क्योंकि, मिध्यादाष्टि गुणस्थानमें यन्थके नए होजानेपर पछि यथा-क्रमेस सर्यागकेवली और अश्रमत्तसंयत गुणस्थानमे इनके उद्यका व्युच्छेद होता है ।

सिथ्यान्वका स्वेद्यसे ही यन्ध्र होता है। नारकायु, नरकगानि और नरकगानि प्रायोग्यातुष्वीं नामकर्स एंग्ड्यसे ही वेधने हैं. क्योंकि, स्वोद्यसे इनके अपने बन्धका विरोध है। नयुंसकदर, एकेन्द्रियः डीन्द्रियः वीन्द्र्यः वृत्तिन्द्रियः जाति, हुण्डसंस्थान, असंमाननस्यादिकालेहनन, आनाप, स्थायः सुस, अपर्ययः और माधारणस्योद्य परोदयसे वेधने हैं, क्योंकि, दोनी प्रकारसं भी इनका वन्ध्र हानेसे कोई विरोध नहीं है।

मिथ्यात्व और नारकायु प्रकृतियां निरम्तर वंधनेवाली हैं, क्योंकि ध्रुवक्धी होनेसे कालक्ष्यमे इनके बन्धविनादाका अभाव है। दोर सब प्रकृतियां सान्तर बंधनी हैं, क्योंकि, उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वन्धकी सम्भावना है।

चार मूल प्रत्ययोंसे, पचवन नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा दृश व अठा-रह एक समय सम्बन्धी जधन्य एवं उत्हुष्ट प्रत्ययोंसे मिष्यादिष्ट इन प्रकृतियोंकी बांभता है। विरोप इतना है कि वैकियिक, वैकियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मण काययोग प्रत्ययोंके विना वह इक्यावन प्रत्ययोंसे नारकायुको वांधता है. ऐसा कहना चाहिये। इसी

१ प्रतिपु 'ताहिं ' इति पाडः ।

[णिरयगइ-] णिरयगइपाञोग्गाणुपुटनीणं । बेइंदिय-तेइंदिय-चर्जिदिय-सुहुम-साहारण अपज्ञताणं वेउञ्जिषदुगेण विणा तेवण्णा परुचया ।

मिच्छतं चउगइसंज्ञतं, णबुंसपवेदं देवगईए' विणा तिगइसंजुतं, णिरवाउ-णिरव-गइ-णिरवगइपाओग्गाणुपृत्विणामाओ णिरवगइसंजुतं, हुंडसंठाणं देवगई मोत्तृण तिगइसंजुतं, असंपत्तसेवहसरिरसंघडण-अपडजत्तणामाओ तिरिक्व-मणुसगइसंजुतं, सेमाओ तिरिक्खगइ-संजुतं वंशंति ।

मिन्छत्त-गर्नुसयेवद-डुंडसंठाण-अमंपत्तसेवद्वसरीरसंवडणाणं चउगइमिन्छाइई। सामी । एइंदिय-आदाव-थावरणामाणं वंधस्त णिरयगर्ड् मोत्तृण तिगइमिन्छाइई। सामी । सेसाणं पयडीणं तिरिक्ल-मणुसगइमिन्छाइई। सामी । वंधद्वाणं वंधवेल्छेरहाणं च सुगमं । मिन्छत्तस्स बंधो सादि-अणादि-श्वन-अद्ववेभण्णं चउन्विहा । मेमाणं वंधो सादि-अद्ववे। ।

प्रकार [नरकगानि और] नरकगानिप्रायोग्यानुपूर्वीके भी इक्यावन प्रत्यय हैं । द्वान्द्रिय, वीन्द्रिय, चतुरिन्द्रय, मुक्ष्म, साधारण और अपर्याप्त प्रकृतियोंके वैकियिकहिकके विना निरुप्त प्रत्यय है ।

मिथ्यात्यको चार गतियाँसे संयुक्त, नपुंसकवेदके देवगतिके विना तीन गतियाँसे संयुक्तः नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायेत्यातुपूर्वी नामकर्मके। नरकगतिके संयुक्त; हुण्डसंस्थानको देवगतिको छोड़ तीन गतियाँसे संयुक्त, असप्राप्तस्पाटिकाशरीरसंहनन और अपर्याप्त नामकर्मके। निर्यंगाति च मनुष्यगतिमे संयुक्त, तथा देशच प्रकृतियोंको निर्यंगातिसे संयुक्त वांधते हैं।

मिध्यात्व, नयुंसकांवर, हण्डसंस्थान और असंग्रासख्याटिकासरीरसंहतन प्रकृतियोंके चारों गतियोंके मिध्यादिष्ट स्वामी हैं। एकेन्द्रिय, आताप और स्थावर नामकर्मके बन्धके नरकगतिको छोड़ रोव तीन गतियोंक मिध्यादिष्ट स्वामी हैं। रोप प्रकृतियोंके तिर्थेगाति व मनुष्यानिक मिध्यादिष्ट स्वामी हैं। वेष्य प्रकृतियोंके तिर्थेगाति व मनुष्यानिक मिध्यादिष्ट स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धन्युच्छेत्स्थान सुगम हैं। मिध्यात्वक बंध साहि, अनादि, भ्रव और अभ्रव भेदसे चार प्रकार है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध साहि और अभ्रव होना है।

१ अपनो 'णबुसर्यवदं व देवगईए 'इति पाटः।

२ प्रतिपु ' बंधवोच्छिण्णाणं ' इति पाठः ।

अपच्चनस्राणावरणीयकोधःमाणःमायाःलोभःमणुसगइ-ओरा-लियमरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वञ्जरिसहवहरणारायणसंघडण-मणुसगइपाओश्गाणुपुव्यिणामाणं की वंधी को अवंधी ? ॥ १७॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १८ ॥

एदं देसामाभियस्तं, सामित्तद्धाणाणं चेव परूवणादो । तेणदेण स्इट्स्थपरूवणा कीरदे । ते ब्रहा— अपन्चमत्वाणावरणचउक्करम् मणुसगइपाओरगाणुपुन्विणामाण् चंघोदया समं बोच्छिज्जेति, एककिन्द्व असंबदसम्मादिन्दि देण्णं विणासुवरुंभादों । मणुसगईए पुन्वं चंघो पच्छा उद्भो बोच्छिण्णो, असंबदसम्मादिन्दिन्दि बंघं णद्दे पच्छा अबोगिचिरिमममयिम उद्यवनेच्छेदादो । एवमोरालियसिनः ओरालियमिनिकंगोवंग-वज्जिरमहव्इरणारायणमंघडणाणं । णवरि सजीगिचिरिमसमए उदयवोच्छेटो ।

अप्रत्याख्यानावरणीय कोध, मान, माया, लेभ, मनुष्यगति, औदान्किशरीर. औदा-रिकश्चिरीरोगोषांग, वन्नपेभवन्ननाराचमंहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका कीन बन्यक और कीन अबन्यक है ? ॥ १७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिध्यादृष्टिमे लेकर असंयतमस्यग्दृष्टि तक वंधक हैं। ये बन्धक हैं, शेष जीव अवन्धक हैं।। १८॥

यह देशामर्शक सुत्र है, क्योंकि, वह केवल वन्धस्वामिन्य और वन्धास्वानका ही निरुपण करना है। इसी कारण इस सुक्त सुक्ति अर्थको प्रमाणा करने हैं। वह इस प्रकार है —अव्रत्याश्यानावरणज्ञ करने हैं। वह इस प्रकार है —अव्रत्याश्यानावरणज्ञ कर्जा सुक्त्य स्वाप्त क्षेत्र सुक्ति कर कर्या के विकार करने हैं। वह इस अर्थक वर्ष हों साथमें स्वृत्तिक हों हैं स्वर्थीक, एक असंयमतसम्बर्धि गुणस्थानमें हों लों विवार पाये जाते हैं। मनुष्यानिका पूर्वमें बन्ध और पश्चान् उदय व्युत्त्विक होता है, क्योंकि, असंयमतसम्बर्धि गुणस्थानमें बन्धक नए होंनपर पीछे अर्थानकेवलीके अस्तिम समर्थमें उदयक व्युत्त्विक होता है। स्वर्धा क्ष्मियमें उदयका व्युव्विक स्वर्धिक स्वर्धा होता है। विशेष स्वर्धिक क्षमित्र स्वर्धिक अर्थानकेवलीक समर्थमें उदयका व्युव्विक होता है। विशेष स्तान है कि सर्थागोंक अन्तिम समर्थमें उदयका व्युव्विक होता है।

१ प्रतिषु 'सामित्तदाणिण 'इति पाठ । २ प्रतिषु 'निणासाथुनलमादो 'इति पादः । ३ प्रतिषु '-सन्मारिद्धीरि 'इति पादः ।

अपच्चक्खाणावरणचउक्कादीणं सब्वेसिं सोदय-पंगदण्हि षंधो, विरोहाभावादो । णविर सम्मामिच्छाइडि-असंजदसम्मादिडीसु मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जिरसहसंघडणाणं परो-दिश्रो भणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जिरसहसंघडणाणं परो-दिश्रो शंधो । अपच्चक्खाणावरणचउक्कवंधो णिरंतरो, धुवबंधितादो । मणुसगइ-मणुसगइपा-ओम्माणुपुन्विवंधो मिच्छाइडि-सासणसम्माइडीणं सांतर-णिरंतरो, आणदादिदेवेसु णिरंतरां इटल् अण्णरक्ष सांतरंघुवलंमादो । सम्मामिच्छाइडि-असंजदसम्माइडीसु णिरंतरो, देव गेण्डस्य-अप्पिददोगुणडाणेसु अण्णगइ-आणुपुन्वीणं वंघाभावादो । एवमेरालियसरीर-ओरालियसरीर-ओरालियसरीर-ओरालियसरीर-अंगोवंग-वज्जिरसहसंघडणाणं वत्तर्वे । कुदो ? ओरालियसरीरस्स सन्वदेव-गेगइएसु तेज-वाउकाइएसु च णिरंतरं वंधुवलंभादो, अण्णरक्ष सांतरंबाणादो; ओरालियसरीर्वेगोवंगस्स सव्योग्दरुसु सणवक्नुमारादिदेवसु च णिरंतरं वंधं लद्दण इसाणादिहेडिम्देवाणं मिच्छाइडि-सासणेसु च सांतर्वधुवलंभादो, वज्जिरसहमंष्ठक्षस्य देव-गेगइयसम्मा-मिच्छाइडि-असंजदमम्मादिडीस णिरंतरं वंधं लद्दण अण्णरक्ष सांतर्वधुवलंभादो ।

अप्रत्याल्यान।वरणजनुष्क आदिक सवका स्वेदय-परोदयसे बन्ध होना है,क्योंकि, ऐसा होनमें कोई विरोध नहीं है। विरोध यह है कि सम्प्रिमप्यादिष्ट और असेयनसम्य-प्टिए गुणस्थानमें मनुष्यानिद्धिक. औदारिकद्विक एवं वज्रपैभसंहननका परोदय बन्ध होता है।

अप्रत्याख्यानावरणचनुष्कका वन्ध निरन्तर है, क्योंकि, ये चारों प्रकृतियां ध्रुव-वन्धों हैं। मनुष्याति और मनुष्यातिप्रायोग्यानुपूर्वाका बन्ध मिध्यादृष्टि और सासादन-सम्यादृष्टिक सान्तर निरन्तर है, क्योंकि आनतादि देवोंमें निरन्तर बन्धको प्राप्तकर अन्यत्र सान्तर वन्ध गया जाता है। सम्यामिष्यादृष्टि और अस्पत्रसम्यादृष्टि गुणस्थानोंमें निर-तर वन्ध है. क्योंकि. देवों व नाराकियोंके इन विवक्षित हो गुणस्थानोंमें अन्य गति व आनुपूर्वीके वन्धका अभाव हे। इसी प्रकार औदारिकशारीर, औदारिकशारीरांगापांग और वक्रपंपसंहतनक भी कहना चाहिये। इसका कारण यह कि औदारिकशारीरांगापांग और वक्रपंपसंहतनक भी कहना चाहिये। इसका कारण यह कि औदारिकशारीरांगापांग यही वन्ध सान्तर देखा जाता है. अदारिकशारीरांगापांगका सब नाराकियोंमें और सानत्कुमार एवं माहेन्द्र कर्यक देवोंमें भी निरन्तर बन्ध पाकर ईशानादिक अधस्तन देखोंके मिथ्यादिष्टि व सासादृत गुणस्थानोंमें तथा तियंच और मनुष्योंमें सान्तर बन्ध पाया जाता है। अपष्टवस्त्वाणावरण चउक्कं चउगुण हाणजीवा णाणावरणपण्चप्रहि चेव बंधेति । एवं मणुसगई-मणुसगईपाओग्गाणुपुञ्चीणं पि चदुसु गुणहाणेसु पच्चया परूवेदव्या । णविर सम्मामिन्छाईहिस्स बादालपच्चया वत्तव्या, ओगालियकायजोगपण्चयामावादो । असंजर्-सम्माइहिस्स चोदालपच्चया, ओगालियकायजोगप्जीगालियमिम्सकायजोगपच्याणसभावादो । एवमोरालियसगैर-ओगालियसगैरअंगांवंग-वज्जिरसहंसघडणाणं पि पचयपरूवणा मसुसगईए वं कायव्या।

अपन्यक्खाणचउक्कं मिन्छाइर्डी चउगइसंजुत्तं, सासणे। णिरयगईए विणा तिगर्व-संजुतं, तेसा दो वि देव-मणुसगइसंजुत्तं बंधिति । मणुसगइ-मणुसगइपाओभगाणुपुञ्जीओ सञ्च-गुणड्राणजीवा मणुसगइसंजुत्तं वंधिति । ओगालियसरीर-औगालियअंगोतंगाई मिन्छाइर्डि सासण-सम्मादिद्विणा विक्तिल-मणुसगइसंसुत्तं, मम्मामिन्छाइड्डि असंजदसम्मादिद्विणो मणुसगइसंजुत्तं षंधीते । एवं वञ्जरिसहवहरणारायणसंघडणस्म वि वत्तवंत्, भदाभावादो ।

अपञ्चनसाणचउक्कवंभस्स चउगङ्मिञ्छाङ्डि-सामणमम्मादिङि-सम्मामिञ्छाङ्क्डि-अमं-जदसम्मादिङ्डी सामी । मणुसगङ्गमणुमगङ्गपोगाणुपुव्वि-ओगल्यमगिर-ओगल्यिअंमोलंग-

अप्रत्याख्यानावरणजनुष्कको चार गुणस्थानोंके जीव ज्ञानावरणप्रत्ययोंसे ही बांधते हैं। इसी प्रकार मनुष्यगति और मनुष्यानिप्रायोग्यानुषूर्वीके भी प्रत्ययोंकी जारों गुणस्थानों में प्रस्ता कारता चाहिये। विशेषना यह है कि सम्यग्निष्याहिएके व्यालीस प्रत्यव कहना चाहिये, क्योंके, उसके औदारिककाययोग प्रयत्यका अभाव है। असंयत्य सम्यव्यक्त अभाव है। असंयत्य सम्यव्यक्त अभाव है। असंयत्य सम्यव्यक्त भाव है। असंयत्य सम्यव्यक्त अभाव है। इसी प्रकार औदारिककाययोग और अभिक्रमिक्काययोग और अविशिक्षमिक्षकाययोग प्रत्योंक। अभाव है। इसी प्रकार औदारिककाययोग अभाव है। इसी प्रकार औदारिककाययोग अभाव है। इसी प्रकार औदारिकमायोग और वज्रवीभसंहतनके भी प्रत्ययोंकी प्रकारणा मनुष्यगित नामकर्मक समान करना चाहिये।

अप्रत्याख्यानावरणजनुष्कको मिध्यादाष्ट्र जार गतियोंसं संयुक्तःसासादनसम्यादाष्ट्र वरकातिक विचा तीन गतियोंसं संयुक्तः और रोग दोनों गुणस्थानवर्गी जीव देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त वांधते हैं। मनुष्यगति और मनुष्यमतिमानेश्वानुष्यीका सर्वे गुणस्थानोंक जीव मनुष्य प्रतिसं संयुक्त वांधते हैं। औदारिकरापीर और और सिक्षादास्यापीय संयुक्त वांधते हैं। औदारिकरापीर और सासादनसम्यादाष्टि तियेगाति एवं मनुष्यगति संयुक्त वांधते हैं। सम्यीमध्यादाष्टि और अक्षंयतसम्यादाष्टि मनुष्याति संयुक्त वांधते हैं। इसी प्रकार वक्रपंभवक्रनाराच संदनका भी गतिसंयोग कहना चाहिये, क्योंकि, उक्त प्रकृतियोंसे इसके कोई भेव नहीं है।

अप्रत्यान्यानवरणचनुष्ककं बन्धकं चारों गतियोंकं मिध्यादृष्टि, सासाद्तसम्यग्रहाष्टे, सम्यग्मिध्यादृष्टि और असंयतसम्यग्रहृष्टि स्वामी हैं। मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रयोग्यानुपूर्वी, औदारिकदारीर, औदारिकअंगोणंग और वक्षप्रभयजनाराचलंहनन मकृतियोंकं चारो

१ प्रतिपु'व `इति पाठः ।

वञ्जरिसहबद्दरणारायणसरीरसंघडणाणं चउगद्दमिञ्जाद्दिःसासणसम्मादिष्टी सामी । दुगद्दसम्मा-मिञ्जादृद्धिःअसंजदसम्मादिट्टी सामी । वंघद्वाणं वंघणटुपदेसो वि सुगमो ।

अपन्यक्षाणचउक्कवंभे मिन्छाइहिम्हि चउन्तिहो, धुववंधितादो । सेसेसु गुणहाणेसु तिविहो, धुवत्राभावादो । मणुसगइ-ओराठियसरीर ओराठियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवहरणारा-यणसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुउन्तिणामाणं वंथे। सन्वर्गणहाणेसु सादि-अद्भुवो, पिडवक्क्ष-पयिडवंधसंभवादो । ओराठियसरीरस्स णिन्चिणगोदेसु सन्वकारुं वउन्तिवर-आहारसरीरबंध-विरहिसेसु धुववंथो । अणादियवंथो च किण्ण ठन्भदे ? ण, पिडवक्क्षपयिडवंधपसित्सस्भावं पहुच्च अणादि-धुवमावापरुवणादो', चउगइणिगोदे मोत्तृण णिन्चणिगोदेहि एत्य अहियारा-भावादो वा । वंथवर्ति पहुच्च पुण वंथस्स अणादियधुवत्तं ण विरुद्धारे ।

गतियोंके मिथ्यादष्टि व सासादनसम्यग्दाष्ट स्वामी है। दो गतियोंके सम्यग्मिथ्यादिष्ट और असंयतसम्यग्दिष्ट स्वामी हैं। वन्धाध्यान और वन्धनष्टमदेश अधीन् जिस स्थान तक बन्ध होता है तथा जहां बन्धको ब्युच्छित्ति होती हैं वह जानना भी खुगम है।

अप्रत्याख्यानायरणचतृष्कका वन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका है, क्योंकि, ये चारों प्रकृतियां ध्रुववन्धां हैं। शेष गुणस्थानों में इनका वन्ध तीन प्रकारका है, क्योंकि, वहां ध्रुव वन्ध नहीं होता। मनुष्याति, औदारिकशारीर, औदारिकशारीरांगोपांग, वक्रपेभ-वक्रनाराचसंहनन और मनुष्यातिप्रधेग्यानुषूर्वी नामकर्मका वन्ध सव गुणस्थानों में सादि व अध्रव है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वन्ध सम्भव है। सर्वकाल वैक्रियिक और आहारक शरीरोंके वन्धमें रहित नित्यनिगोदी जीवों में औदारिकशारीरका ध्रुव बन्ध होता है।

शंका—नित्यनिगोदी जीवोंमें आदारिकशरीरका अनादि वन्ध भी क्यों नहीं पाया जाता ?

समाधान—नहीं पाया जाता, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंकी बन्धशाकिके सन्-भावकी अपेक्षा करके अनादि रूपले श्रुव बन्धका प्ररूपण नहीं किया गया। अथवा चतुर्गितिनगोदींका वारों गतियोंमें होकर पुनः निगोदमें आये हुए जीवींको छोड़कर निल्पनिगोदींका यहां अधिकार नहीं है। परन्तु वन्धकी अभिन्यिकत विपेक्षा करके बन्धके अनादि और श्रुव होनेने कोई विरोध नहीं है।

१ प्रतिपु '-भावपरूवणादी ' इति पाठः ।

पच्चक्खाणावरणीयकोध-माण-माया-लोभाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १९ ॥

सुगमेंमदं सुनं ।

मिच्छाइट्टिपहुडि जाव संजदासंजदा वंधा ॥ २० ॥

णृदं देसामासियसुत्तं, सामित्तद्वाणाणमेव परुवणादो । तेणेत्थ अवुत्तत्थाणं परुवणा कीरदे । तं जहा— एदामि पयडीणं वेशेदया समं वोच्छिण्णा, संजदासंजदिमा वेथस्सेव उदयवोच्छद्दंसणादो । एदामि चउण्णं वि वेथो सोदय-पगदण्हि, कोथादीणं वेथकाल तस्सेव उदए वि होदव्यमिदि णियमाभावादा । एदामि चटुण्णं वि णिग्तंग वेथा, सत्तत्तालीसधुव-वेथपयडीसु पादादो । मिच्छादिहिआदिपंचगुणहाणसु ज पञ्चया परुविदा स्लुत्तरभेएण तहि पच्चणहि एदाओ वज्झति ति तसु तसु गुणहाणसु ते ते चेव पञ्चया वनव्या, वेथस्म पञ्चयससृहकञ्जतादो । अथवा, ण्दामि पयडीणं वेथस्स पञ्चवस्याणपयडीणं उदयसामण्णं

प्रत्याख्यानावरणीय क्रांथ. मान, माया और लोभका कान बन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ १९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टिसं लेकर संयतासंयत तक बन्धक हैं।। २०॥

यह देशामशंक मुत्र है. क्योंकि. यह वन्ध्यन्याभित्व और वन्ध्याध्यानका ही निरूपण करना है। इस कारण यहां अनुक अथोंकी प्रकृषणा करने हैं। वह इस प्रकार है—इस सारे प्रकृतियोंका वन्ध्र और उदय दोनें साथ ही उयुच्छित्र होने हैं, क्योंकि, संयतासंयत गुण्डानमें वन्ध्रके समान इसके उदयका भी उयुच्छित्र होना है। इस सारों ही गुण्डानमें वन्ध्र संवाद परिवृद्ध होना है। इस सारों ही गुण्डानमें वन्ध्र संवाद्ध परिवृद्ध होना है, क्योंकि, कोधादिकोंके वन्ध्यकालमें उसका ही उदय भी होना चाहिय एसा कोई नियम नहीं है। इस सारोंका ही निरन्तर वन्ध्र होना है, क्योंकि, ये चारों प्रकृतियों सेनालीस ध्रवक्षी प्रकृतियों भी आती हैं।

मिध्यादि आदि पांच गुणस्थानोंमें जो मूळ व उत्तर प्रत्यय कहे गये हैं उन प्रत्योंसे व प्रकृतियां वेधनी हैं, अन एव उन उन गुण-स्थानोंमें उन्हों उन्हों प्रत्योंको कहना चाहिय, क्योंकि, बन्ध प्रत्ययसमृहका कार्य है। अथवा, रन प्रकृतियोंके बन्धका अत्यय प्रत्याच्यान प्रकृतिका उदयसामान्य है।

१ प्रतिपु 'अवृत्तद्धाणं ' इति पाठ ।

पञ्चओ । संसकसायाणप्रदओ जोगो च पञ्चओ ण होदि, एतो उविर तेसु संतेसु वि एदार्सि वंधाभावादो । ण मिञ्छताणंताणुवंधि-अपञ्चक्खाणावरणाणप्रदओ वि एदार्सि वंधस्स पञ्चओ, तेण विणा वि वंधुवर्छमादो । जस्सण्णय-विदिरेगेहि जस्सण्णयविदिंगा होंति [तं] तस्स कज्ञमियरं च कारणं । ण चेदं पञ्चक्खाणीदयं मुञ्चा अण्णर्यादियं तम्हा पञ्चक्खाणीदओ चेव पञ्चओ, ति सिद्धं । मिञ्छाद्विद्विद्व णड्वंधसीरुसपयडींणं वंधस्स मिञ्छत्तेद्वो चेव पञ्चओ, तेण विणा तार्सि वंधाणुवरुंभादो । सामण्राम णड्वंधपपुर्वीसपर्वेणं अणेताणुर्वंभीणसुदओ चेव पञ्चओ, तेण विणा तार्सि वंधाणुवरुंभादो । असंजदमम्मादिद्विध्व णड्वंधपपपयडींणं चंधस्स अपञ्चक्खाणीदओं कारणं, तेण विणा तार्सि वंधाणुवरुंभादो । पमत्तसंजदिम णड्वंध-छप्पर्विण वंधस्म पमादो पञ्चोत, तेण विणा तार्सि वंधाणुवरुंभादो । एवमण्णर्य वि जाणिय वत्तरुं ।

एदाओ पयडीओ मिच्छाइटी च उगइसंजुत्तं, मामणे। णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं,

राप कपायोंका उद्य और यांग प्रत्यय नहीं है, क्योंकि, पांचवें गुणस्थानके ऊपर उनके रहनेपर भी इनका बन्ध नहीं होता। मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धी और अप्रत्यात्थ्यानावरण प्रकृतियोंका उद्य भी इन प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय नहीं है, क्योंकि, उनके उद्यक्ते विना भी इनका बन्ध पाया जाता है। जिसके अन्यय और व्यतिरंक के साथ जिसका अन्यय और व्यतिरंक होता है। इन उनका कार्य और व्यतिरंक होता है। वे वा अन्यव है नहीं, इन्मति यारणाव्यानाचरणका उद्य ही अपने बन्धका प्रत्य है, यह वात सिद्ध हुई। मिथ्यादिए गुणस्थानमें च्युच्छिक सोलह प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय मिथ्यात्वका उद्य ही है, क्योंकि, उसके विना उन सेलह प्रकृतियोंका बन्ध पाया नहीं जाता। सासादनगुणस्थानमें व्युच्छिक पर्वास प्रकृतियोंके बन्धका अनन्तानुबन्धिक उद्य ही प्रत्य है, क्योंकि, उसके विना उन पर्वास प्रकृतियोंके वन्धका अनन्तानुबन्धिक उद्य ही प्रत्य है, क्योंकि, उसके विना इन पर्वास प्रकृतियोंके वन्धका अनन्तानुबन्धिक जाता। असंयनसम्पर्य है, क्योंकि, उसके विना उनका वन्ध पाया नहीं जाता। प्रमत्तस्थ व्यवस्थ छह प्रकृतियोंके सम्भक्त प्रत्य प्राप्त नहीं जाता। प्रमत्तस्थ व्यवस्थ छह प्रकृतियोंके सम्भक्त प्रत्य प्राप्त नहीं जाता। इसी प्रकृतियोंके सम्भक्त प्रत्य प्राप्त नहीं काता। इसी प्रकृतियोंक जनका वन्ध पाया नहीं जाता। इसी प्रकृतियोंक अन्धक अन्य प्राप्त नहीं काता। इसी प्रकृतियोंक अन्यक्ष प्रत्य प्राप्त है, क्योंकि, उसके विना उनका वन्ध पाया नहीं जाता। इसी प्रकृतियोंक अन्यक्ष भी जानकर कहना चाहिये।

इन प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त, सासाद्वसम्यग्दृष्टि नरक-

१ प्रतिषु 'अण्णत्थ ति ' इति पाठः। २ अप्रतो ' णिरयगई ' आ-काप्रत्योः ' णिग्यगइ' इति पाठः।

सम्माभिच्छाद्द्वी असंजदसम्मादिद्वी देवगइ-मणुसगइसंजुत्तं, संजदासंजदा देवगइसंजुत्तं बंधेति । ण्दासि चउगइसिच्छाद्दि-सासणसम्मादिद्वि-सम्माभिच्छाद्दि-असंजदसम्मादिद्विणो बंधस्स सामी । संजदासंजदा दुगइया सामी । वंधद्वाणं वंधविणद्वद्वाणं च सुगमं । एदासिं बंधो मिच्छाद्दिम्द्वि च उच्चिद्दो, सनेदाळीमधुववंधपयडीम् पाटादा । उविग्मेमु गुणद्वाणसु तिविद्दो, दिवद्वामावादो ।

पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं को बंधी को अबंधो ? ॥ २१ ॥ _{समर्थ ।}

मिन्छाइट्टिपहुडि जाव अणियट्टिवादरसांपराइयपइट्टउवसमा खवा बंधा । अणियट्टिवादरद्वाए सेसे संखेज्जाभागं गंतृण बंधो बोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २२ ॥

'मिच्छादिहिप्पहुडि उवसमा स्वता वंधा एदण सुत्तावयवेण गुणहाणगर्येबंध-

गतिकं बिना तीन गतियोंसे संयुक्त, सम्यश्मिश्यादाष्ट और असंयत्मस्यग्रदृष्टि त्वगति एवं मनुष्यगतिसं संयुक्त, तथा संयतासंयत देवगतिय संयुक्त वांचते हैं। चारों गतियोंके कियाबाष्ट, सासात्त्रसम्यग्दृष्ट, सम्यग्निश्यादाष्ट्र और असंयत्तसम्यग्दृष्टि इन प्रकृतियोंके वस्थकं स्वामी हैं। देगातियोंके संयतासंयत न्यामी है। वन्धादान और वन्धावनपृश्यान स्थान सुगम है। मिथ्यादाप्टि गुणस्थानमं इनका चारों प्रकृतका वन्ध है, क्योंकि, य सेतालीन धुववन्धावतियोंमें आती है। उपार्थम गुणस्थानोंमें तोन प्रकारका वन्ध है, क्योंकि, वहां हो प्रकारक वन्धका अभाव है।

पुरुषवेद और संज्वलनकाषका कीन बन्धक और कीन अवस्थक ? ॥ २१ ॥ यह सब सगम है।

मिध्यादिष्टिस लेकर अनिवृत्तिकरणवादरम्यास्पायिकप्रविष्ट उपशमक एवं क्षपक तक बन्धक हैं। अनिवृत्तिवादरकालक शेषमें संस्थान बहुभाग जाकर बन्धच्युक्छेद होता है। ये बन्धक हैं, शेष जीव अवन्धक हैं॥ २२॥

ं मिथ्याद्दष्टिसं लेकर अनिवृत्तिकरण उपरामक और क्षपक वस्थक हैं 'इस

१ अमती 'देवं ' आपनी 'देवगड आपनी 'देवगई ' इति पाठ |

२ प्रतिषु : -गइय ं इति पाठ. ।

सामित्तं बंधद्धाणं च परुविदं । 'अणियहिबादरद्धाए सेसे संखेज्जाभागं गंतूण बंधो बोच्छिज्जदि' ति एदेण बंधविणहृद्दाणं परुविदं । तं जहा — सेसे अंतरकरणे कदे जा सेसा अणियहिअद्धा तम्मि सेसे संखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुखंडाणि गंतूणगखंडावसेसे पुरिसवेद-कोधसंजरुणाणं बंधो बोच्छिणणो ति उत्तं होदि । एदे तिर्णण चेव अन्धा एदेण परुविदा ति देमामासिय-सत्तमेदं । तेणदरिसयरधाणं परुवणा कीग्दे —

पुरिसंवेद-कीधमंजरुणाणं वंधीदया समं वेच्छिज्जंति, पुरिसंवेद-कोधसंजरुणाणं उदए संतक्खण्णुवसंमण वा णंड वंधाणुवरुभादा । संमारावत्थाए सोदण्ण विणा वि वंधो उवरुक्तिदि लि ण सांद्याविणाभावी एदासि वंधो ति वुत्ते होदु तथा तत्थ, इच्छिजमाणतादो । एत्थ पुण पडिवक्कपर्याडवंधेण विणा वंधविणहृहाणे चव उदयविणासादो एगास्हि कारे दोण्णं विणामो ण विकञ्जदं ति । एदासि दोण्णं पयडीणं सोदयपरोद्धि वंधो, सोदएणं विणा वि वंधोवरुमारो । कोध्येजरुणस्य वंधो णिग्नो, सत्तेत्तार्श्वस्थपयडीणं मज्जे

मुत्रावयवमं गुणस्थानगत वन्धस्यामिन्य और वन्धाध्यानका निक्षण किया है। अनिवृत्ति याद्रकालके श्रेपमें संन्यात वहुमाग जाकर वन्ध ब्युष्टिश्च होता है 'इससे वन्धव्युष्टिश्च स्थानका निक्षणण किया है। यह इस प्रकार है — श्रेप अर्थात् अन्तरकरण करनेपर जो अयरोग अन्तिवृत्तिकाल रहना है उस श्रेप कालके संन्यात बण्ड करनेपर उनमें बहुत कण्ड जाकर एक खण्ड अयशिष्ट गहनेपर पुरुपयेद शार संन्यलनकोधका वन्ध अयुष्टिश्च होता है, यह उसका असिशाय है। ये तीन ही अर्थ इस सूच हारा कहे गये हैं, अत एव यह देशामर्शक सूच है। इसी कारण इसके अस्य अर्थोकी प्ररूपणा की जाती हैं —

पुरुषवेद और संज्वलनकोध इनके बन्ध व उदय दोनों साथ ब्युब्छिल होते हैं, क्योंकि, पुरुषेवद और संज्वलनकोधके उदयके सम्बक्षयमे या उपशमसे नष्ट होनेपर उन होनोंका बन्ध नहीं पाया जाना।

शंका—संखारायस्थामें स्वोदयके विना भी बन्ध पाया जाता है. अत एव इनका बन्ध स्वोदयका अविनाभावी नहीं है ?

समाधान—ऐसी शंका करनेपर उत्तर देते हैं कि संसारावस्थामें वैसा भले ही हो, क्योंकि, वहां ऐसा इष्ट है। परन्तु यहांपर प्रतिपक्ष श्कृतिके बन्धके विना बन्ध-स्युक्छेदस्थानमें ही उदयका स्युक्छेद होनेसे एक कालमें दोनोंका स्युक्छेद विरुद्ध नहीं है।

इन दोनों प्रकृतियोंका स्वोदय-परोहयसे बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयके विना भी इनका बन्ध पापा जाता है। संज्वलनकोधका वन्ध निरस्तर है, क्योंकि, वह सैंतास्त्रीस पादादो । पुरिस्तेवदंशेशं सांतरे । कुरो ? मिच्छाइडिःसासणेसु पडिवक्स्वपयडीणं बंधु-बर्ठमादो । णिरंतरे वि, पस्म-सुक्केलेस्सयतिरिक्ख-मणुसीमच्छाइडि-सासणसम्मादिडीसु सम्मा-भिच्छाइडिआदिउवरिसगुणडाणेसु च णिगंतरवंधुवतंशादो ।

एदार्मि प्वयपरूवणे कीरमांण पुध पुध ज पबया मृत्कुत्तरणाणेगसमयमेयभिणणा गुणहाणाणं परुविदा ताणि गुणहाणाणि तीह प्रवप्ति एदाओ पयडीओ वंधित ति पुध-परुवणा णिथ्य, मेदाणुवरुमादी । अधवा पुरिस्तवेदा गयपबओ. अवगदवेदसु तन्बंधाणु-वरुमादी। कोधमंत्रकणी संवरुणकमादास्म तिव्वाणुभागोदयपबओ, उवसमसिडिस्टि कोध-चिर्माणुभागोदयपबओ, उवसमसिडिस्टि कोध-चिर्माणुभागोदयपबओ, उवसमसिडिस्टि कोध-चिर्माणुभागोदयादा अणंतगुणहीणेण गुणाणुभागोदण्य कोधमंत्रकणस्स वंधाणुवरुमादो । मिन्छाइडी सामणा च णिरयगईए सह पुरिस्वेदे तिगड्संजुत्तं वंधइ । णिरयगईए सह पुरिस्वेदे किण्ण वज्झेद ? ण, अवंताभावेण पडिसिद्धतादा । सम्मामिन्छाइडी असंजद-सम्मादिडी च दगहसंजुत्तं तीम णिग्य तिरिन्हागईणं वंधाभावादा । संवदासंजदण्यहुंड उवरिमा

भुवबन्धी प्रकृतियों के मध्यमें आया है। पुरुष्येदका वन्ध्र सान्तर है। इसका कारण यह कि मिध्याद्दि और सासादम गुणन्थानों में प्रतियक्ष प्रकृतियों का वन्ध्र पाया जाता है। बही बन्ध्र सिरन्तर भी है, क्येंकि, पदा एवं शुक्क लेट्याबोल निर्मन्त व मनुष्य मिथ्याद्दि और सासादमस्यग्दियों में तथा सम्यक्षिमध्यादि आदि उपरिम गुणन्थानों में भी निरन्तर वन्ध्र पाया जाता है।

हन दोनों प्रकृतियोंक प्रत्योंका प्ररूपण करनेपर मृत्य, उत्तर तथा नाला व एक समय सम्बन्धी प्रत्योंके महन्त निव्य प्रथक पुराक जो प्रत्यय जिन गुणक्यानोंके कहे गये हैं व गुणक्यान उन प्रत्ययोंने हत प्रकृतियोंको यांचेत है. अनः इनकी प्रथक प्रत्ययप्रकृषणा नहीं है, क्योंकि, उनने यहां केहि भर नहीं पाया जाता। अथवा पुरुष्यद प्रत्ययप्रकृषणा नहीं है, क्योंकि, अपगनवेदियोंने उनका बन्ध नहीं पाया जाता। स्वाप्य प्रत्येव तात्रका वन्ध नहीं पाया जाता। सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध स्वयं प्रत्येव सम्बन्ध सम्बन्

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यादृष्टि नगकगतिके विना पुरुषयेद्को नीन गतियाँसे संयुक्त बांघेत हैं।

शंका--नग्कगतिके साथ पुरुपवेद क्यों नहीं वंधना?

समाधान---नहीं वांधता, क्योंकि, वह अत्यन्ताभाव रूपसे प्रतिपिद्ध है।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि श्रीर असंयतसम्यग्दृष्टि दो गतियांसे संयुक्त बांघते हैं, क्यांकि, इनके नरकगति श्रीर तिर्पगतिके वन्धका अभाव है। संयतासंयतसे छेकर उपरिम जीव देवगइसंजुत्तं, सेमगर्ड्णं तृत्य वंधामावादो । अपुत्वकरणसत्तमसत्तमापपहुिं उविरामा अगादिसंजुत्तं वंधीत, तत्य गइकम्मस्स वंधामावादो । एवं कोधसंजरुणस्स वि वत्तव्यं । णविरि मिच्छाइट्टी चउगइसंजुत्तं वंधइ, तत्य णिरयगईण् सह वंधिवगेहाभावादो । पुरिसवेदवंधस्स चउगइमिच्छाइट्टि-सासणसम्माइट्टि-सम्मामिच्छाइट्टि-असंजदम्समादिट्टिणो सामी । दुगइसंजदासंजदा सामी, देव-णिरयगईस् तदभावादो । उविराम मणुसगईण् सामी, अण्णत्य पमत्तादीण-मभावादो । पुरिसवेदवंधो सत्वगुणद्राणेसु सादिगो अद्ध्वो, पिडवक्यवपर्याणे वंधुवरुमादो । णियमेण सम्मामिच्छाइट्टिपहुिं उविरामेसु वंधिवणासदंसणादो । कोधमंजरुणस्म मिच्छाइट्टिपहु उविरामेसु विविद्दो, युवनाभावादो ।

माण-मायसंजलणाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २३ ॥ सगमंत्रः

दियगितेस संयुक्त बांधेत हैं, क्योंकि, वहां डाय गतियोंका वस्य नहीं होता। अपूर्वकरणके सातवें समस भागमे टेकर उपित्म जीव अगितसंयुक्त पुरुषेवरको बांधते हैं, क्योंकि, यहां गतिकर्मका बन्ध नहीं होता। इसी प्रकार संख्यत्वसंग्रेथे भी कहना चाहिये। विदेश इतना है कि मिथ्यादृष्टि उसे चार गतियोंसे संयुक्त बांधता है, क्योंकि, वहां नरकगतिके साथ उसके बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं है।

पुरुपवेदके वन्धके वारों गतियोंवाले मिध्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्य-रिमध्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। दो गतियोंवाले संयतासंयत स्वामी हैं, क्योंकि, देव व नरक गतिमें संयतासंयतांका अभाव है। उत्परक जीव मनुष्यातिके ही स्वामी हैं, क्योंकि, दूसरी गतियोंमें प्रमत्तसंयतादिकोंका अभाव है। पुरुपवेदका बन्ध सब गुणस्थानोंमें सादिक व अध्रुव है. क्योंकि. वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिका वन्ध्य पाया जाता है, नियमसं सम्यगिमध्यादृष्टिसे लेकर उपरिम गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध्य विनाश देखा जाता है। संज्वलनकोधका मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध्य होता है, क्योंकि, वह धुचवन्धी है। उपरिम गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध्य होता है, क्योंकि, वहां धुव बन्धका अभाव है।

> संज्वलन मान और मायाका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है?॥ २३॥ य**द स**त्र सुराम है।

मिच्छाइड्रिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्टउबसमा स्वना बंधा । आणियट्टिबादरद्वाए सेसे सेसे संस्वेडजाभागं गंतृण बंधो बोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २४ ॥

'मिन्छाइड्रिप्पहुडि जात आणयिहियादरमीवराइयपिवइउवसमा खवा वंधा 'एंदण सुत्तावयंगण वंबद्धाणं गइरागण विणा गुणइणगयवंधमामितं च हुतं । 'अणियहियादरद्धाए सेसं सेसं संखेडजाभागं गेतृण वंधा वंधि-छङ्गदि 'एंदण सुत्तावयंगण वंधिवणइङ्गणं पर्विदं । कीधसंजल्णे विणाइ जो अवंसमा अणियहिअद्धाण संबंद्धानियांगा तिन्ह संखेडजं खंडे करेंद तत्थ बहुमागे गंतृण एयभागावसंम माणमंजलणम्म वंधवीच्छदा । पुणा तिन्ह एगखंडे संखेडजंबंड कंद तत्थ बहुमंद्ध गंतृण एग्वडावसंस मायामंजलणवंधवीच्छदी ति । कथमदं णव्बदे ? 'सेसं संसे संबंद्धज भाग गंतृणिति 'विच्छाणिहेमादा । कथायपाहुडसुत्तेणदे सुत्ते विक्छादि ति बुत्ते सच्चे विकङ्गहि ति बुत्ते सच्चे विकङ्गह कितु एयंतग्यहा एथ्य ण कायव्या इदस्य तं चेव

मिथ्यादिष्टमं तेका अनिवृत्तिकाणकादासाम्पराधिकप्रविष्ट उपशामक व क्षपक तक बन्धक हैं। अनिवृत्तिवादरकातके शेष शेषमें संख्यात बहुभाग जाका बन्ध व्युच्छित्र होता है। ये बन्धक हैं, शेष जीव अवस्थक हैं।। २४॥

ं मिध्यार्राष्ट्रमे लेका अनिवृत्तिकरणयादरम्मध्यरायिकप्रविष्ट उपनामक य अपक तक बन्धक है इस मुवाययमं यन्धाध्यात और गतिगत बन्धस्वामित्रक विना गुण स्थानगत बन्धस्वामित्र्य में कहा गाई। 'अनिवृत्तियादरकार्के त्यार देग्यमें संस्थात बहुभाग जाकर बन्ध स्टुन्डिक होता है इस मुवायय द्वारा वन्धितप्रस्थातकों प्रकेषणा की गई है। संख्यलनकाध्येक विनष्ट होत्तपर जे। द्वारा अनिवृत्तियादरकालका संस्थानयों भाग गहता है उसके संस्थात स्वष्ट करनेपर उनमें बहुभागोको विनाकर एक भाग देशप रहनेपर संख्यलमातका यन्ध्यपुट्डेंद्र होता है। पुनः एक स्वष्टकं संस्थात बन्ध्यपुट्डेंद्र होता है।

शंका--यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — 'हाप हापमें संस्थात यहुभाग जाकर 'हस वीप्सा अर्थात हो बार निर्देशसे उक्त प्रकार दोनों प्रकृतियोका ब्युच्छेद काल जाना जाता है ।

शंका—कपायप्राभृतके सुत्रसे तो यह सृत्र विरोधको प्राप्त होगा ?

समाधान—रेप्सी आदांका होनपर कहते हैं कि सचमुचमें कपायप्राधृतके सृत्रसं यह सुत्र विरुद्ध है, परन्तु यहां एकान्तग्रह नहीं करना चाहिय, क्योंकि, 'यही सन्य है ' सञ्चमिदि सुद्केवर्राहि पञ्चक्खणाणीहि वा विणा अवहारिज्जमाणे मिच्छत्तप्पसंगादो । क्षं सत्ताणं विरोहो ? ण. सत्तोवसंहाराणैमसयलसदधारयाइरियपरतंताणं विरोहसंभवदंसणादो । उवसंहाराणं कथं पुण सत्तत्तं जुज्जदे ? ण, अमियमायरजलस्स अलिंजर-घड-घडी-सराबुदंचण-गयस्स वि अभियत्त्वलंभादो ।

संपिंह एदेण सइदत्थाणं परूवणा कीग्दे । तं जहा-- एदासिं दोण्णं पयडीणं बंधोदया अक्कमेण बोच्छिज्जंति, उदए विणेष्ट वंधाणुवलंभादो । ण च उदयद्धाक्खएण उदयस्स विणासो एत्थ विविभ्छओ, संतोवसम-खएहि समुप्पण्णुदयाभावेण अहियारादो । एदासिं सोदय-परोदएहि बंधो. णिरंतरबंधीणं सांतरुदयाणं सोदएणेव बंधविरोहादो । णिरंतर-र्बंधीओ, धुवबंधीहि सह पादादो । मिच्छाइडिप्पहृडि जे पच्चया सूलुत्तरणाणेगसमयभेयभिण्णा पव्यं परुविदा तरगणविभिद्रजीवा तेहि चेव पच्चणहि एदाओ पयडीओ बंधेति. पच्चयंतरा-

या 'वही सत्य है 'एसा धनकेवित्यों अथवा प्रत्यक्षक्षानियोंके विना निश्चय करनेपर मिध्यात्वका प्रसंग हे।गा ।

शंका सर्वाके विरोध कैसे हो सकता है ?

समाधान-यह शंका डीक नहीं. क्योंकि, अल्प श्रुतके धारक आचार्योंके परतंत्र सत्र व उपसंहारोंके विरोधकी सम्भावना देखी जाती है।

शंका - उपसंहारोंके सम्रपना कैसे उचित है ?

समाधान--यह भी शंका ठीक नहीं, क्योंकि, अलिंजर (घटविशेष), घट, घटी, शराव व उदंचन आदिमें स्थित भी अमृतसागरके जलमें अमृतत्व पाया ही जाता है।

अब इस सुत्रके द्वारा सुचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है— इस दोनों प्रकृतियाँका बन्ध और उदय दोनों एक साथ व्यच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, इनके उदयके नए होनेपर फिर बन्ध नहीं पाया जाता। और यहां उदयकालके क्षयसे होनेवाला उदयका विनाज विवक्षित नहीं हैं, क्योंकि, सत्वेपराम या सन्वक्षयसे उत्पन्न उदयाभावका अधिकार है। इन दोनों प्रकृतियोंका स्वोदय परोदयस वन्ध होता है, क्योंकि, निरन्तरबन्धी और सान्तर उदयवाली प्रकृतियें के स्वोदयसे ही वन्ध होनका विरोध है। ये निरन्तरबन्धी प्रकृतियां है. क्योंकि, वे भ्रवयन्धी प्रकृतियोंके साथ आती हैं। मिथ्यादृष्टिसे लेकर मूल, उत्तर व नाना पर्व एक समय सम्बन्धी भेदोंसे भिन्न जो प्रत्यय पूर्वमें कहे जा चुके हैं, उन गुण-स्थानोंसे विशिष्ट जीव उन्हीं प्रत्ययोंस इन प्रकृतियोंको बांधते हैं, क्योंकि, अन्य प्रत्ययोंका

१ अप्रतो ' सत्तोवसंघाराणा- ', आ-काप्रखोः ' सत्तोवसंहाराणा- ' इति पाठः ।

२ अ-आप्रत्योः ' सहदत्थाणं ', काप्रतो ' सहदत्थाणं ' इति पाठः ।

भावादो । अथवा, एदासिं संजलणोदयविसेसो चेव परुचओ, तेण विणा बंधाणुवलंभादो ।

मिन्छादिडी चउगड्मंजुतं, तस्स सञ्चगड्मंभेहि विरोहाभावादो। सासणो तिगइसंजुतं, तस्स ाणरायगड्मंभेण सह विरोहादो। मम्मामिन्छाइडी अमंजदमम्मादिडी च दुगड्संजुतं वंभेति, तिमि णिरय-तिरिक्खगडीह सह विरोहादो। उत्तरिमा देवगड्-अगड्संजुतं वा वंभेति, तिमि ससगईहि सह विरोहादो। तिन्छाइडी सामणमम्मादिडी सम्मामिन्छाइडी असंजदसम्मादिडी चउगड्या, दुगड्संजदासंजदा, समा मणुस्मगईदा मामा। । वंभद्धाणं वंभवेतिच्छग्णडाणं च सुनुहिड्मिदि सुगमं। मिन्छाइडिम्म चउव्बिहो वंभो. अववीन्छग्णडाणं च सुनुहिड्मिदि सुगमं। मिन्छाइडिम्म चउव्बिहो वंभो. अववीन्ताता

लोभसंजलणस्म को वंधो को अवंधो ? ॥ २५ ॥

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्टउबसमा स्रवा बंधा। अणियट्टिबादरद्धाए चरिमसमयं गंतृण बंधो वोच्छिङजदि। एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २६॥

अभाव है। अथवा, इन प्रकृतियोका संज्वलनका उदयविदोष ही प्रत्यय है. क्योंकि. उसके विना इनका वन्ध पाया नहीं जाता।

मिध्यादि इन्हें चार गितयों से सुक बांधता है, क्यों कि, उसके सब गतियों के बच्के साथ कोई विराध नहीं है। सामादनसम्बद्धा तीन गतियों से संयुक्त बांधता है, क्यों कि, उसके नक्कातिबच्के साथ विरोध है। सम्यिमध्याद्धा और असंयत्तसम्बद्ध हो स्वित्त साथ विरोध है। सम्यिमध्याद्धा और असंयत्तसम्बद्ध हो सित्तां संयुक्त बांधत है, क्यों कि, उसके नरक व निर्यमातिक साथ बच्चे होने में विरोध है। उपरिम्न जीव देवातिसे संयुक्त या गतिसंग्राम राहत बांधत है, क्यों कि उसके होत प्रात्तां के साथ बच्चे होने विरोध हो। असंयत्तसम्बद्ध होने विरोध है। सित्याद्ध स्वतां स्वतां स्वतां के साथ बच्चे होने हो। असंयत्तसम्बद्ध होने सित्याद्ध हो। मिथ्याद्ध और असंयत्तसम्बद्ध होने सित्याद्ध हो। असंयत्तसम्बद्ध होने सित्याद्ध स्वतां के स्वतां के स्वतां के स्वतां है। स्वयाद्ध स्वतां है। स्वयाद्ध हो। सित्याद्ध के इसका चारों प्रकारका बच्चे होता है। स्वयाद्ध के असंयत्ता है। स्वयाद्ध के असंयत्ता के स्वतां के अववय्यका अभाव होने तीन प्रकारका है। दस्य होता है। इसव्यव्धा अभाव होने तीन प्रकारका है। दस्य होता है।

संज्वलनलोभका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २५ ॥ यह सब स्वयम है ।

मिथ्यादिष्टेसे लेकर अनिवृत्तिवादरसाम्पराधिकप्रविष्ट उपशमक और क्षपक तक बन्धक हैं। अनिवृत्तिवादरकालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर चन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं॥ २६॥ ' मिन्छाईडिप्पहुडि॰' एदेण सुतावयवेण वंधदाणं गुणडाणगयसामितं च परूविदं । 'अणियहिचादरु॰' एदेण वंधविणद्वडाणपरूवणा कदा । एरेसि तिण्णं चेवस्थाणं परूवणा कदा ति देसामासियसुत्तमेदं । तेणेदेण सुडदस्थाणं परूवणा कीरेद । तं जहा—

वंधो पुर्वं वेश्विठजदि पच्छा उदबो, अणियहिचरिमसमए वंधे वोच्छिणो सुहुम-सांपराइयचरिमसमए उदयवोच्छेदुवरुंभादो । लोभसंजलणस्स सोदय-परोहएहि वंधो, धुवो-दयत्ताभावादो । णिरंतरो वंधो, अववंधितादो । पच्चयपरुवणाए माणसंजलणभंगो । गइसंज्ञत-सामित्तद्वाण-वंधवंश्विष्ठणणहाणपरुवणांशा सुगमांशे । मिच्छाइहिस्स चउन्विहो वंधो, धुव-वंधितादो । सेसाणं तिविहो वंधो, धुवत्ताभावादो ।

हस्स-रिद-भय-दुगुंछाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ २७ ॥ _{सगमं ।}

ंसिध्यादिए में लेकर अनिवृत्तिवादरमाध्यायिकप्रविध उपदासक और क्षपक तक वन्धक हैं देस सूत्रोंद्रा द्वारा बन्धान्यान और गुणस्थानान वन्धस्यासिवकी प्रक्रपण की गई है। अतिवृत्तिवादरकालके अन्तिम समयकी प्रान्त होकर वन्ध ख्युच्छिन्न होता है ' इस सूत्रोंद्रा द्वारा वन्ध्र-बृद्धिला सिंग तिक्रपण किया गया है। चूंकि सूत्र द्वारा इन्हीं तीन अर्थोंकों प्रस्ताण की गई है, अनग्व यह देशासकों सूत्र है। इस कारण इसके द्वारा सूचिन अर्थोंकों तिकरण करने हैं। यह इस प्रकार हैं-

संज्वलनलंभका वन्ध पूर्वमं व्युच्छित्र होता है, पश्चात् उदयः क्योंकि, अनिवृक्ति-करणके अन्तिम समयमं वन्धके व्युच्छित्र होजानेपर स्वक्षमसाम्पराधिकके अन्तिम समयमं उदयका व्युच्छिद् पाया जाता है। संज्वलनलंभका स्वोदय-पर्वदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, उसके प्रुवेद्यत्यका अभाव है। वन्ध उसका निरन्तर है, क्योंकि, वह ध्रुवक्चधी है। प्रत्ययोंकी प्रक्रपणा संज्वलनमानक समान है। । गतिसंयुक्तता, स्वामित्व, अध्वान और वस्थायुच्छिक्तिस्थानकी प्रक्रपणार्थे सुनाम है। मिथ्यादिके चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी प्रकृति है। होग जीवोंके तीन प्रकारका वन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुवबन्धक अभाव है।

हास्य, रति, भय और जुगुप्सा प्रकृतियोंका कीन बन्धक है और कौन अबन्धक है ?॥ २७॥

यह सूत्र सुगम है।

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अपुज्वकरणपविट्टउवसमा खवा बंधा । अपुज्वकरणद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधा वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २८ ॥

एदेण बंधद्वाणं गुणगयबंधसामितं वंधविणइद्वाणं च एक्विदं । तेणंदं दसामासियं दहस्वमण्णहा ससत्याणमेत्य संभवाभावादा । तेणंदंण सहदत्थ्यकृत्वणा कीरदे— हस्स-रिद-भय-दुगुंळाणं बंधोदया समं वोच्छिड्नतंति, अपुण्वकरणचिरिमसमए चढुण्णं वोच्छेद्र्यतंभादो । सोदय-परोदणहि वंधो, धुवोदयत्ताभावादा परोदण वि वंधविरोहाभावादो । भय-दुगुंळाणं सम्बगुणहाणेमु णिगंतरा वंधो, धुववंधितादो । हस्म-रिदाण मिच्छाइट्टिप्यहृडि जाव पमत्तमंजदो ति सांतरी वंधो, एत्थ पडिवक्यपयडिवंधुवरुमादो । उविर णिगंतरा, पडिवक्यपयडिवंधा-भावादो । पच्यपकृत्वणाए णाणावरणभंगो । मिच्छाइट्टी चउगइमंजुतं, एदामि वंधमस्स चउगइयंधेण सह विरोहाभावादो । णविर हस्म-रिदाओ तिगइमंजुतं, व्याह्म कुर्तन्तं

मिध्यादृष्टिमे टेक्स अपूर्वकरणप्रविष्ट उपजमक और भ्रपक तक वंघक हैं । अपूर्व-करणकाटके अन्तिम समयको प्राप्त होकर वन्य व्युच्छिन्न होता है ।ये वन्यक हैं, शेष जीव अबन्यक हैं ॥ २८ ॥

हम मुत्रके द्वारा वन्धाध्यान, गुणस्थानगत वन्धस्यामिन्य श्रीर वन्धस्यां द्विलास्थानकी मुक्तपथा को है, हसीलिय इस देशासर्गक स्वत्र समझना चालिये, अन्यथा यहां शेष अर्थीकी सम्भावना नहीं है। अतरव इसके द्वारा मृद्यित अर्थोंकी प्रस्तावा नहीं है। अतरव इसके द्वारा मृद्यित अर्थोंकी प्रस्तावा नहीं है। कारव अरेग उदय दोनों साथ खुच्छित होते हैं, क्योंकि, अपूर्वक्तरणके अन्तिम समयमें उक्त चारों प्रदान्योंके वन्ध श्रीर उदय दोनों की खुचिछित पायी जाती है। इसका बन्ध स्वेत्य परादयंत्र होना है, क्योंकि, यु धुवाद्वार्य प्रमत्यां मही है अत्रक्त सरिद्यंत्र भी वन्ध होनों कोई विनोध नहीं है। अत्य और कुगुन्माका सब गुणस्थानोंमें निरन्तर वन्ध है, क्योंकि, वे धुववद्धी हैं। हास्य और रितका मिध्याद्यप्तिम लेकर प्रमत्तन्त्र स्वत्र है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वन्ध पाया जाता है। प्रमत्त्र से अरुप तिरन्तर वन्ध है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वन्ध पाया जाता है। प्रमत्त्र से अरुप निरन्तर वन्ध है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंक वन्धका अभाव है। प्रत्ययोंकी प्रकृत्या का सामान्यक्षेत्र से उत्तर निरन्तर वन्ध है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंक वन्धका अभाव है। प्रत्ययोंकी प्रकृत्या क्रियान्य के समान्य है। प्रत्ययोंकी प्रकृत्या व्यवस्था अभाव

मिथ्यादार चारों गिनयोंसे संयुक्त यांध्रेत हैं, क्योंकि, मिथ्यादाधिके इनके बन्धका चारों गतियोंके बन्धके साथ कोई विराध नहीं है । विरोप इनना है कि हास्य और रिनकी तीन गतियोंसे संयुक्त बांधना है, क्योंकि, इनके बन्धका नरकगतिके बन्धके साथ विरोध णिरयगड्वंघेण सह विरोहादो । सामणे तिगइसंजुत्तं, तत्थ णिरयगईए बंधाभावादो । सम्मा-मिच्छाइडि-असंजदसम्मादिडिणो दुगइसंजुत्तं, एदेसि णिरय-तिरिक्खगईण बंधाभावादो । उत-रिमा देवगइसंजुत्तं वंधंति, तेसु अण्णगईणं वंधाभावादो । णविर अपुन्वकरणद्धाए चिरमे सत्तमे भागे वहमाणा अगइसंजुत्तं वंधंति ति वत्तव्वं । चउगइमिच्छाइडि-सासणसम्माइडि-सम्मामिच्छाइडि-असंजदसम्मादिडिणे सामी । दुगइसंजदासंजदा, देव-णरइएसु अणुव्वईणमभावादो । उविरिमा मगुस्सा चेव होद्ण एदामि वंवस्स मामी, अण्णत्थ पमत्तादीणमभावादो । वंधद्धाणं वंध-विणइड्डाणं च सुगमं । भय-दुगुंछाणं मिच्छाइडिन्हि चउन्विहो वंधो, धुववंधितादो । उविरिमेसु तिविहो वंथो, धुवत्ताभावादो । हस्स-रदीणं वंधो सादि-अद्भुत्तो, पडिवक्त्वपविष्वंधुवरुमादो ।

मणुस्साउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २९ ॥

एदं देसामासियं पुच्छासुनं । तेण को मंथओ को अभयओ, किमेदस्स वंघो पुच्चं वोच्छिज्जदि किसुदओ किं दें। वि समें वोच्छिज्जति, किं सोदएण परोदएण किं सोदय-

है। सासादनसम्यग्हाँए तीन गतियाँसं संयुक्त वांधता है, क्योंकि, वहां नरकगतिका बन्ध नहीं रहता। सम्याभिष्यादृष्टि और असंयतसम्यग्हिए दो गतियाँसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, इनके तरकगति और नियंगतिके राधका अभाव है। उपरिम्न जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, इनमें अन्य गतियाँका वन्ध नहीं होता। विदाय इतना है कि अपूर्व करणकालके अस्तिम सन्तम भागमे वर्तमान जीव अगतिसंयुक्त वांधते हैं ऐसा कहना वाहिये।

बारो गतियाँबाले मिध्यादि, सासादनसम्यग्दि, सम्यग्निध्यादि और असंयनसम्यग्दिए स्वामी है। दो गतियोबाल संयनासंयन स्वामी हैं, क्योंकि, देव और नारिक्यों में अणुवातियोका अभाव है। उपरिम जीव मनुष्य ही होकर इनके बन्धके स्वामी हैं, क्योंकि, अन्यव ममत्तादिकोका अभाव है।

बन्धाश्वान और वन्धरवुच्छेदस्थान सुगम हैं। भय और जुगुस्ताका मिथ्यादिष्ट गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि. ये धुववन्धी प्रकृतियां हैं। उपरिम गुणस्थानोंमें तैन प्रकारका वन्ध होता है, क्योंकि. वहां धुव वन्धका अभाव है। हास्य और रिनेका वन्ध सादि अधुव है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष मकृतियोंका बन्ध उपरूज्ध है।

मनुष्यायुका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २९ ॥

यह देशामशंक पुष्छासूत्र है। इस कारण कीन बन्धक कीन अवन्धक; क्या इसका बन्ध पूर्वमें ब्युच्छित्र होता है,क्या उद्य,या क्या दोनों ही साथ ब्युच्छिक्ष होते हैं; क्या स्वोदयसे, क्या परोदयसे या क्या स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है; क्या इसका परोदएण, किं मांतर किं णिरंतर किं सांतर-णिरंतरं, किं पन्चएहि किं तेहि विणा, किं ग्रह्मंजुर्नं किमगड्संजुर्न वज्बह, एदस्स वंथस्स कदिगदिया सामी असामी वा, किं वंधद्धाणे, किं चरिससमए वंधो वोच्छिज्ञदि किं पढमसमए किमगढम-अविराससमए वंधो वोच्छिज्जदि, किं सादिओं किमणादिओं किं धुवा किमदुवा वंधो ति एदाओं पुच्छाओं एत्थ कायव्वाओं । पुणो पुच्च्छिदज्ञाणुग्गहडुं उत्तरसुत्तं भणदिं

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी वंधा। **एदे वंधा**, अवसेसा अवंधा ॥ ३० ॥

एश्य वंधद्वाणं गुणहाणाणि अस्मिद्ण वंधसामितं च उत्तं, तेण इदरस्थाणं परूवणा कीरदे । तं जहा--- मसुस्साउअस्म पुत्र्वं वंधा वोल्छिज्जदि पर्च्छा उद्येश, असंजदसम्मा-दिहिन्हि णहवंथस्स मणुमाउअस्म अजोगिचिरमसमए उद्येशच्छेदुवलंभादो । भिर्च्छाहहि-सामणसम्मादिहिणो सादण्ण परादण्ण वि मणुमाउअं वंधीत, अविराहादा । अभंजदमम्मादिही परादण्णेय, सोदण्ण मह तथ्य वंधविरोहादो । णिग्नरो वंधी, वज्जमाणभंव पडिवक्खपयडीण्

वस्य मान्तर, क्या निरम्तर, या क्या मान्तर-निरम्तर है: क्या प्रत्ययोमें या क्या उनके विना ही क्या होना है: क्या गनिमंधुक्त या क्या अगनिमंधुक्त वस्थ होता है, इसके वस्थके किननी गनियंबाले म्बामी अथवा अम्बामी है, बन्धाच्यात क्या है, क्या च्याम समयमें क्या खुछिह होता है. क्या अथम समयमें, या क्या अथम अब्धार समयमें यस्थ खुछिछ होता है: क्या साहिक, क्या अनाहिक, क्या धुष्ठ या क्या अध्य बन्ध होता है. इन प्रश्लेको यहां करना चाहिये। किरमें पुरुख्युक्त जनोंके अनुमहके लिये उत्तर मुख कहते हैं --

मिथ्यादिष्टे, सासादनसम्बग्दिष्टे और असंयतमस्वग्दिष्ट वन्धक हैं। य बन्धक हैं, श्रेष जीव अवन्धक हैं।। ३०॥

हम सुश्रमें बन्धाध्यान और गुणस्थानांका आश्रयकर वन्धस्यामिन्य ही कहा गया है. इसलिय अन्य अर्थोकी प्रकारणा करने हैं। वह इस प्रकार है — मगुष्यायुका पूर्वमें बन्ध च्युष्टिख होता है पक्षात उदय, क्योंकि, असंयतसम्यादिए गुणस्थानमें मगुष्यायुके वन्धके व्युष्टिख होजानेपर अयोगाकवरीके अनितम समयमें उदयका व्युष्टिख होजानेपर अयोगाकवरीके अनितम समयमें उदयका व्युष्टिख हाया जाता है। सिध्यादिए और सालादनसम्यादिए स्थेत्य और परोदयसे मगुष्यायुक्ते बांधते हैं, क्योंकि, इसमें कोई विरोध नहीं है। असंयतसम्यादिए परादयसे ही मगुष्यायुक्ते बांधते हैं, क्योंकि, स्योदयके साथ वन्ध होनका इस गुणस्थानमें विरोध है। इसका बांधते हैं, क्योंकि, स्थादयके साथ वन्ध होनका इस गुणस्थानमें विरोध है। इसका बांधते हैं, क्योंकि, स्थादयके साथ वन्ध होनका इस गुणस्थानमें विरोध है। इसका

षंघेण विणा षंघपरिसमितदेसणादो । बंधिवरोहो अंतरिमिदि किण्ण घेप्पदे ? ण, पडिवक्ख-पयिडिबंधकदंतरेण एत्थ पत्रोजणादो । मिच्छादिडिस्स मूलुत्तरणोणगसमयजहण्णुक्कस्सपञ्चया णाणावरणम्हि बुत्ता चेव होंति । णविर णाणासमयजक्कस्सपञ्चया सेत्ताळीस, ओराल्यिमिस्स-वेजिब्बयमिस्स-कम्मइयाणमभावाटो । सासणस्य णाणासमयजक्कस्सपञ्चया सत्तेताळीस, ओराल्यिमिस्स-वेजिब्बयमिस्स-कम्मइयाणमभावाटो । अमंजदसम्माइडिस्स मणुसाजअं बंधमाणस्य मृत्यच्चया । तिण्णि, मिच्छत्ताभावादो । एगसमइयजङ्गणुक्कस्पत्यवा णव साल्यः । णाणासमयजत्तरपञ्चया वादालं, ओराल्यि-आरालियमिस्स-वेजिब्बयिमस्य कम्मइयाणमभावाटो । तिण्णि व गुणहाणाणि मणुस्सगद्वसंज्ञं वंथित, तथ्यस्य अण्णाद्दि सह विरोहादो । चउगद्दिन्सासण-सम्माइडिणा सामी । दुगद्द्रश्चर्यक्रंजद-सम्मादिडिणा सामी । दुगद्द्रश्चर्यक्रंजद-सम्मादिडिणा सामी । विश्वचःख्यावद्वमम्मादिडिस्स अपदम-अचिमममण् । मणुस्माउअस्म वंथा सादि-अद्ध्वो, वंथस्स धुवत्ताभावादो ।

समाप्ति देखी जाती है।

शंका--वन्धका विरोध हो अन्तर है, ऐसा क्यों नहीं प्रहण करते ?

समाधान—ऐसा ग्रहण इसालये नहीं करने कि यहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्ध द्वारा किये गये अन्तरने प्रयोजन है।

मिथ्याइष्टिकं मूल और उत्तर नाता व एक समय सम्बन्धी जघन्य एवं उत्कृष्ट प्रत्यय हानावरणमें कह हुए ही होत हैं। विशेष इतना है कि नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय तिरेपन होते हैं, क्योंकि, बिक्रियकांम्रिअ कार्यक क्षेत्र कार्यक सारावर सारावर सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय मिला होते हैं, क्योंकि, यहां औदारिकांम्य, बैक्रियिकांम्रिअ और कार्मण काययोगोंका अभाव है। मनुष्यायुको बांधने बाल असंयतसम्यग्दृष्टिकं मूल प्रत्यय नीन होते हैं, क्योंकि, उसके मिथ्यात्वका अभाव है। एक समय सम्बन्धी जग्नन्य व उत्कृष्ट प्रत्यय नी और सोलह होते हैं। नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्यय व्यालीस होते हैं, क्योंकि, यहां औदारिकांमिअ, बैक्रियिकांमिअ और कार्यण कायालीस होते हैं, क्योंकि, यहां औदारिकांमिअ, बैक्रियिकांमिअ और कार्यण कायालीस कार्य होते हैं।

तीनों ही गुणस्थान मनुष्यगितसे संयुक्त बांधिते हैं, क्योंकि, उसके बन्धका अन्य गानियोंके साथ विरोध है। चारों गिनयाँवाले मिथ्याहिए और सासादनसम्यग्हिए स्वामी हैं। दो गितयाँवाले असंवतसम्यग्हिए स्वामी हैं। दो गितयाँवाले असंवतसम्यग्हिए स्वामी हैं। क्योंकि, तिर्यगति और मनुष्य-गतिमें स्वित असंवतसम्यग्हिएगोंके मनुष्यायुवन्धसे विरोध है। बन्धाध्वान सुगम है। क्ष्मध्युक्छेद्र असंवतसम्यग्हिएके अम्यम अन्यम समयमें होता है। मनुष्यायुक्त बन्ध सादि-अध्व है, क्योंकि, उसके वन्धके धुवताका अभाव है।

देवाउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ३१ ॥ _{सुगर्म ।}

मिन्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी संजदासंजदा पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा वंधा।अप्पमत्तसंजदद्धाए संखेज्जदिभागं गंतृण वंधो वोन्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३२ ॥

' भिच्छादृष्टिपहुडि॰ ' एदेण सत्तावयंत्रण वंथदाणं गुणगयसामित्तं च परुविदं । 'अपमत्तसंबदद्धाए॰ ' एदेण वंथविणदृष्टाणं परुविदं । तिण्णं चेत्र परुवणादां देसामासिय-सुत्तमिणं । तेणेदेण सङ्दत्थे भणिस्मामा । तं जहा — एदस्म पुञ्चमुदश्रे वोच्छिञ्जदि पच्छा बंभो, देवाउअस्स असंबदसम्मादिद्विचिमसम्मर वेच्छिण्णुदयस्म अपमत्तद्धाण् संखेञ्जदिभागं गंतृण वंथवोच्छेदुवर्ठमादा । पंगद्रिणव वंथा, सादण्णवस्म तिन्थयरस्मव वंथविंगहादा । णिरंतरो वंथो, बडिवक्क्षपदिवंथक्यंतगभावादो ।

मिच्छाइड्डिस्म देवाउअं वंधंतस्य चत्तारि मूलपच्चया । एगयमइया जहण्युक्कस्य-

देवायुका कीन बन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ ३१ ॥ यह सब सगम है ।

मिथ्यादिष्ट, सामादनमस्यग्दष्टि, असंयतसस्यग्दष्टि, संयतासयत, प्रमत्तसंयत, अंग अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं। अप्रमत्तसंयतकारुके संख्यातवें भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं॥ ३२॥

ंमिध्याद्दांष्ट आदि अप्रमत्तसंयत तक वन्धक हैं इस सृत्रांश द्वारा वन्धा ध्वाल और गुणस्थातमत स्वामित्वकी प्ररूपणा की गई है । 'अप्रमत्तसंयतकालक संख्यातवें भाग जाकर वन्ध खुष्टिख हाता है ' इससे वन्धविनप्रध्यातकी प्ररूपणा की है। इस तीन अर्थों की ही प्रस्पणा करतेंसे यह सृत्र द्वामार्शक है। इस कारण इससे सृत्रित अर्थोंको कहेते हैं। वह इस प्रकार है— द्वाखुका पूर्वमें उदय खुष्टिख होना है प्रकार करते हैं। वह इस प्रकार है— देवाखुका पूर्वमें उदय खुष्टिख होना है प्रकार वन्ध, क्योंकि, असंयतसम्यग्दिष्ट अनितम समयमें इसके उद्दर्यक खुष्टिख होना है। होनेपर पक्षात् अप्रमत्तकालके संख्यातंत्रे भाग जाकर वन्ध्युष्टिख पाया जाता है। इसका वन्ध्य परंत्रयसे होनेपर पक्षात् स्वसे होनेपर पक्षात् स्वसे होनेका विरोध है। वन्ध इसका विराद है। वन्ध इसका वन्ध इसका वन्ध इसका विराद है। वन्ध इसका व

देवायुको बांधनेवाले मिथ्यादृष्टिके मूल प्रत्यय चार होते हैं। एक समय सम्बन्धी

184

पञ्चया दस अहारस । णाणासमयउक्कस्सपञ्चया एक्कवंचात, बेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणं तत्थाभावादो । सासणसम्मादिष्टिस्स पञ्चया देवाउअं बंधमाणस्स णाणावरणबंधतुल्ला । णविर णाणासमयउक्कस्सपञ्चया छादालं, वेउव्विय-वेउ-व्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । असंजद्सम्मादिष्टिपञ्चयपस्त्रणाए णाणावरणभंगो । णविर णाणासमयउक्कस्सपञ्चया बादालं, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरा-लियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । उविरमेसु गुणहाणेसु पञ्चया देवाउअस्स णाणा-वरणतुल्ला ।

सन्त्रे देवगइसंज्ञतं, अण्णगइषंघेण देवाउअवंधस्स विरोहादो । तिरिक्ख-मणुस्सगइ-मिन्छाइही सासणसम्माइडी असंजदसम्माइडी संजदासंजदा सामी । उवरिमा मणुसा चेव, अण्णत्य महन्वयाणमणुवलंमादो । वंधद्वाणं सुगमं । अप्यमत्तद्वाएं संखेज्जदिमागे गदे देवाउअस्स वंधवोज्छेदो । अप्यमत्तद्वाएं संखेजसु भागेसु गदेसु देवाउअस्स वंधो वोच्छिज्जदि ति केसु वि सुत्तपोत्थएसु उवलन्भइ । तदी एत्थ उवएसं लढ्णूण वत्तव्यं । देवाउअस्स वंधो सादिओ अद्भुवो, अद्भुवंधितादो ।

जयन्य व उत्कृष्ट प्रत्यय क्रमशः दश और अठारह होते हैं। नाना समय सम्बन्धों उत्कृष्ट प्रत्यय इक्यावन होते हैं, क्योंकि, वहां वैक्षियक, वैक्षियकभिष्ठ, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका अभाव है। द्वायुको बंधिनवाले सासादनसम्यव्यक्ति प्रत्यय झानावरणके बन्धके समान हैं। विशेष दतना है कि नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय छ्यालील होते हैं, क्योंकि, बैक्षियिक, वैक्षिपिकभिश्र, औदारिकभिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका यहां अभाव है। असंयतसम्यव्यक्ति प्रत्ययक्षपणा झानावरणके समान है। विशेषता यह है कि नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय व्यालीस हैं, क्योंकि, वैक्षियिक, वैक्षियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका यहां अभाव है। उपरिम गुणस्थानोंमें देवायुके प्रत्यय झानावरणके समान हैं।

सभी जीव देवगांतिसे संयुक्त वांध्रते हैं. क्योंकि, अन्य गतियोंके बन्धके साध देवायुक्ते बन्धका विरोध है। निर्यंच और मनुष्य गतिके मिण्यादाष्टि, सासादनसम्बन्दिष्ट असंयतसम्यादाष्टि और संयतासंयत स्वामी हैं। उपरिम्न जीव मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, दूसरी गतियों में महावतोंक। अभाव है। वन्धाष्ट्राच सुगम है। अप्रमत्तकालके संक्यातवें भागके बीत जानेपर देवायुका बन्ध्र युच्छेद होता है। अप्रमत्तकालके संक्यात बद्धभागोंके बीत जानेपर देवायुका बन्ध युच्छिल होता है, ऐसा किन्हीं स्वयुद्धतकोंमें पाया जाता है। इस कारण यहां उपदेश प्राप्तकर कहना चाहिये। देवायुका बन्ध सादि व अधुव है, क्योंकि वह अधुववन्धी है।

देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-संठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणु— पुव्वि-अगुरुवरुद्व-उवधाद परधाद-उस्सास-पसत्वविद्यायगइ-तस बादर-पञ्जत्त-पत्तेयसरीर-विर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेञ्ज-णिमिणणामाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ ३३ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइद्विपहुडि जात्र अपुत्त्वकरणपड्टउवममा खत्रा वंधा । अपुत्वकरणद्वाए संखेडजे भागे गंतृण वंधो वोच्छिज्जदि ! एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३४ ॥

जेणेदण सुनेष वंथद्वाणं गुणगयमामित्तं वंथतिणहृष्टाणं ति य तुनं तेणेदं देसामामियं । तदी एदेण सहदत्थपरुवणा कीर्षेदः देवसङ्गद्वयाङ्गप्रश्नेमगाणुषुश्चिन्पद्रश्चियमगिर्वेद्यस्वयान् अगोतंबेगणामाण पुश्चसुद्रश्चो वोच्छिज्ञत्वदि पच्छा वंगा, अमंजदसम्मादिष्टिस्टि णहोद्याणेमदासि चुदुण्णं पयडीणमपुष्यकरणद्वाणः संविज्ञसु भागेसु गंदसु वंथवोच्छद्दवर्दमदेश । तजा-कस्मक्ष्य-

देवगीत, पंचेद्रियज्ञाति, बेकियिक, तेजम व कार्मण अर्गर, ममचनुरुषसंस्थान, बैकियिकअरिरांगोपांस, वर्ण, गंध, रम, रम्बं, देवगतिप्रायेगयातुपूर्वी, अगुरूरुष, उपघात, परपात, उच्ह्वास, प्रशस्तिबहायागित, त्रम, बादर, पर्यात, प्रत्येकशर्मर, स्थिर, जुम, सुभग, सुस्वर, आदेय और निर्माण, इन नामकर्म प्रकृतियोंका कीन चन्यक और कीन अवस्थक है १॥ ३३॥

यह सुत्र सुगम है।

मिथ्यारिष्टिमे रोका अपूर्वकाणाविष्ट उपशामक व अनक तक वस्पक हैं। अपूर्वकाण-कारके संस्थात बहुमागोंकी विताकर इनका बच्च ब्युच्छिन्न होता है। ये बच्चक हैं, शेप जीव अबन्यक हैं॥ २४॥

चुंक इस पुत्रके द्वारा बन्याध्यान. गुणस्थानगत स्वांमान्य और बन्धविनमस्थानका है। निर्देश किया गया है अनएश्व यह देशासशंक सुत्र है। इस कारण इसके द्वारा सृचित अर्थेको प्रकृषण करते हैं — देशानि, देशानिआयोग्यानुपूर्वी, बेक्तियकसशीर और बेक्तियक शरीरोगायोग नामकर्मका पूर्वो उदय शुच्छित्व होना है पञ्चात बन्ध, क्योंकि, असंयतसम्यक्षिष्ठ गुणस्थानमें इन चारों प्रकृतियोंक उदयंक तथ होजानेपर पश्चात् अपूर्वकरणकालके संक्यात बहुआगोंकी विताकर इनका बन्ध्यनुष्ट्येह पाया जाता है। तेजस व कार्मण शरीर,

सरीर-समचउरससंठण-वण्ण-यंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवधाद-परधाद-उरसास-पसत्थिवहाय-गइ-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ सुस्सर-णिमिणणामाणं पुट्यं बेघो वोच्छिजविद पच्छा उदशे।, अपुट्य-करणिन्द णहुबंघाणं एदामि पयडीणं सजोगिचिरमसमयिन्म उदयवोच्छेदुवरुंभादो । पंचिदिय-जादि तस-बादर पज्जत-सुभगादेज्जाणं पि एयं चेव। णवरि एदामिमजोगिचरिमसमए उदओ वोच्छिण्णा ।

देवगइ-देवगइपाओगगाणुपुल्वि-वेउन्वियसरीर-वेउन्वियसरीरओगोवंगणामाणं परोदएण सच्चगुणडाणेसु वंधो, पगेदण्ण वज्झमाणपृक्कारमपयडीहि सह पादादो । तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रम-फास-अगुरुअलहुअ थिर-सुभ-णिमिणणाभाओ सोदण्णेव वज्झित, युवोदयत्तादो । पिचि-दियजादि-तम-वादर-पञ्जत्ताणं मिच्छाइडिन्ह वंधो सोदय-पगेदओ। उविर सोदओ चेव, तत्थ पिडवक्चुदयाभावादो। समचउरममंठाण-पमत्भविहायगइ-सुस्सराणं सव्यगुणहाणेसु सोदय-पगेदओ,पिडवक्चुदयाभावादो। सुभगादजाणं मिच्छाइडि-मामणसम्माइडि-सम्मामिच्छा-इडि-अमंबदरममादिडीम् सोदय-पगेदओ। उविर सोद्र पोहचेता

समचनुरस्नसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुल्धु, उपप्रात, परदात, उरुङ्गास, प्रशाननिवहायोगानि, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुम, सुन्यर और निर्माण नामकर्मका पूर्वमें बन्ध व्युच्छित्र होता है पश्चान उदय, क्यांकि, अपूर्वकरणमें वस्थके नष्ट होजानेपर पश्चान् स्योगाकेवलीके अन्तिम समयर्थे इन प्रकृतियोका उदयव्युच्छित् पाया जाता है एचिन्द्रिय-जाति, यात, वादर, पर्याप, सुभग और आदेय, इनका भी वन्धेद्वय्युच्छेद्द इसी प्रकार है। विशेष्ट

द्वानित, द्वानित्रायोग्यानुषुवीं, वैकिथिकदारीर और वैकिथिकदारीरांगोपांगका वन्ध तब गुणस्थानोंमें परेाद्यमं होता है. क्योंकि, य प्रकृतियां परेाद्यमं वंधनेवाली ग्यारह प्रकृतियोंक साथ आती हैं। तज्ञान कर्माण दारी, वर्ण, गम्य, रम, स्पर्श, अगुन्नुयु, स्थिर गृम ओर निर्माण, य नामकमेयकृतियां स्वाद्यमं हो वंधनी है. क्योंकि, व युवादेषी हैं। प्रवेदिय ज्ञाति, त्रस, वादर और पर्योप्त प्रकृतियोंका वन्ध मिथ्याहिए गुणस्थानमें स्वाद्य परेाद्यमं होता है। इसकं ऊपर स्वाद्यमं ही होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उद्यका अभाव है। समजनुरक्षसंस्थान, प्रदास्नाविहायोगाति और सुस्वरका सब गुणस्थानोंमें स्वाद्य परेाद्य क्या है। स्माक्त क्या मिथ्याहाष्टि, सामाद्वसम्याहिए सम्प्राद्वस्य परेाद्य होता है। इसके ऊपर स्वोद्यसं हो होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उद्यक्त अभाव है।

१ मतिषु ' एदं ' इति पाठः ।

परबाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्टि-सासणसम्माइड्टि-असंजदसम्मादिड्टीसु सोदय-परोदजो बंधो; अपञ्जतकाले परघादुस्सासाणसृदयाभावे वि, विग्गहगदीए उनघाद-पत्तेयसरीराण' उदयामावे वि, मिच्छाइड्टिन्दि पत्तेयसरीरस्स साहारणसरीरोदए संते वि बंधुवरुंभादो । अव-सेसाणं सोदजो चेव, अपञ्जत-साहारणसरीरोदयाणमभावादो । णवरि परघादुस्सासाणं पमत्ताम्म सोदय-परोदजो बंधो ।

तेजा-कम्महयसरीर-वण्ण-गंघ रस-कास-अगुरुवळहुव-उवचाद-णिमिणाणं णिरंतरी घेषो, धुवबंधितादो । देवगइ-देवगइराओम्गाणुपुव्य-वेउव्ययसरीर-वेउव्ययसरीर-अंगोवंगाणं मिच्छा-इहि-सासणसम्मादिङ्गीसु सांतर णिरंतरे। । कुदो ? असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु णिरंतर-षंधुवरुंभादो । उवरि णिरंतरो चेव, एगसमण्ण वंधुवरमाभावादो । समचउरसमंठाण-पसत्थ-विहायगइ-सुभग-सुस्सर-आंदेज्जाणं सांतर-णिरंतरो मिच्छाइडि-सासणसम्मादिङ्गीसु, भागभूमिण्सु णिरंतर्रबेधुवरुंभादो । उवरि णिरंतरं, पडिवक्खपयडिचंशाभावादो । पंचिदियजादि-तम-बादर-

उपधान, परधान, उच्छ्वास और प्रत्येकदारीर प्रकृतियोंका मिथ्यादिए, मामादनसम्यग्दिए, भीर असंयनसम्यग्दिए, मामादनसम्यग्दिए, भीर असंयनसम्यग्दिए गुणस्थानों में स्वोद्य-परोद्य बन्ध है. क्योंकि, अपर्यातकारुमें परचान और उच्छ्वास प्रकृतियोंके उद्यक्त अभाव होनेपर भी उनका वन्ध, विष्रहणिने उपधान और प्रत्येकरारिके उदयक अभाव होनेपर भी उनका बन्ध तथा मिथ्यादिए गुणस्थानमें मन्येकरारिक साधारणसरीरके उदयके होनेपर भी वन्ध पाया जाना है। दोष गुणस्थानमें मन्येकरारिक साधारणसरीरके उदयके होनेपर भी वन्ध पाया जाना है। दोष गुणस्थानमें निर्मेक उनका बन्ध स्वोदय ही है, क्योंकि, वहां अपर्याप्त और माधारणसरीरके उदयका अभाव है। विरोपना यह है कि परधान और उच्छ्वासका प्रमत्त गुणस्थानमें स्वोदय-परोद्य बन्ध है।

तैज्ञस व कार्मण दारीर. वर्ण, गन्ध, रस, रगर्ग, अग्रुटलयु, उपधान और निर्माण, रमका निरस्तर बन्ध है, क्योंकि, ये ध्रुववन्धी प्रकृतियां हैं । देवगति, देवगति, यागिव्यायानुपूर्वी, वैकित्मिकदारीर और वीक्रियकदारीर हैं। इसका वन्ध विध्यादाष्टि और सासादनसम्बन्धार होंगे प्रकृतियां होंगे सासादनसम्बन्धार प्रकृतियां से सामादान सम्बन्ध कार्य हैं कि असंख्यातवर्षायुक्त निर्यंच और समुख्यों निरस्तर हम्य प्रयाजाना है। इससे ऊपर निरस्तर है। बन्ध है, क्योंकि, एक समयसे वन्धका नादा नहीं होता। समजनुरक्तसंस्थान, प्रशास्तविद्यायाति समग्रु सुमग्, सुस्तर और आदेय प्रकृतियोंका बन्ध विध्यादिष्ट और सासादनसम्बन्धदार्थिमें सान्तर-निरस्तर है, क्योंकि, योगभूमिजोंमें उनका निरस्तर वन्ध पाया जाना है। उत्तर निरस्तर है, क्योंकि, योगभूमिजोंमें उनका निरस्तर वन्ध पाया जाना है। उत्तर विरस्तर ही बन्ध है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंक बन्धका श्रमाव है। पंचिन्तिय-

१ मतिषु ' पत्तेयसरीराणि ' इति पाट: I

पञ्जतः पत्तेयसरीराणं मिन्छाइड्टिन्हि सांतर-णिरंतरे। बंधो । कृदो ? सणक्कमारादिदेव णेरङ्गएस भोगभूमिएसु च णिरंतरबंधुवरुंभादो । सासणादिसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । परघादस्सासाणं मिच्छ.इ.हिम्हि सांतर-णिरंतरे।, देव-णेरइएम् भोगभूमीए च णिरंतरबंधवरुंभादो। सासणादिस णिरंतरो, अपन्जत्तर्बंधाभावादो । थिर-सुभाणं मिच्छाइड्डिप्पहृडि जाव पमत्तो ति सांतरे। उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खपयडिबंधादो ।

दवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुन्वि-वेउन्वियदुगाणं मिन्छाइडि-सासणसम्मादिडीस् ओरा-लियमिस्स कम्म (य-वेउव्वियद्गाभावादे। एक कवंचास-छाएदालीमपच्चया । सम्मामिच्छा-दिहिमिन बादाळीस रचवरा, वे उव्वियकाय जेगाभावादी । असंजदसम्मादिहिमिन चोदाळीस-पच्चया, वेउन्वियद्गाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं पच्चया सञ्वराणद्वाणेस [णाणावरण-] पच्चयतल्ला. विमेसकारणाभावादो । जदि अतिथ तो चिंतिय वत्तव्वो ।

देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीओ सव्वगुणद्वाणजीवा देवगइसंजुत्तं बंधति, अण्णगईहि सह विरोहादो । वेजव्वियमिरार-वेजव्वियमिरारअंगोवंगाणि मिच्छाइडी देव-णेरडयगडसंजत्तं ।

जाति. त्रस. बादर. पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध है। इसका कारण यह है कि सनत्कमारादि देवाँ। नारकियाँ और भोगभामजोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है । सामादन आदि उपरिम्न गणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । पर्धात और उच्ह्यासका मिथ्यादिष्ट गुणस्थानमें सान्तर निरनर बन्ध है, क्योंकि, देव, नारकी और भोगभूमिजोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। सासादन आदि उपरिम गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, वहां अपर्याप्तके बन्यका अभाव है। स्थिर और गुम प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्त तक सान्तर है। ऊपर निरन्तर है, क्योंकि, वह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है।

देवगाति, देवगातिप्रायोग्यानपूर्वी और वैकियिकद्विकके प्रत्यय मिथ्यादृष्टि और सामादनसम्बन्हिए गणस्थानोंमें क्रमसे इक्यावन और छ्यालीस हैं. क्योंकि. यहां औदारिकामिश्र, कार्मण और वैकियिकद्विक प्रत्ययोंका अभाव है । सम्याग्मध्याद्दाप्ट गुणस्थानमें व्यालीस प्रत्यय हैं. क्योंके. वहां वैक्रियिक काययोगका अभाव है। असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें चवालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, वहां वैक्रियिकद्विकका अभाव है। दोप प्रकृतियोंके प्रत्यय सर्व गुणस्थानोंमें [क्वानावरणके] प्रत्ययोंके समान हैं, क्योंकि, विशेष कारणींका अभाव है। और यदि हैं तो विचारकर कहना चाहिये।

देवगति और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको सब गुणस्थानोंके जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उनके बन्यका विरोध है। वैकिषिकद्यारीर और बैक्रियकशरीरांगीपांगकी मिध्यादृष्टि जीव देवगति च नरकगतिसे संयक्त बांघते हैं। उपरिम उविद्मिगुणडाणेसु देवगङ्संजुर्त वंधिति, समगुणडाणाणं णिरवगङ्बंधेण सह विरोहादो । पंचिंदिवजादि-तेजा-कम्मड्य-वणण-गंध-म्म-काम-अगुरुअलहुअ-उवधाद परघाद - उस्सास-तस-बादर-पज्जत-पत्तेयसरीर-णिमिणणामाओ मिन्छाइड्डी चउगइसंजुर्त, सासणो तिगङ्संजुर्त, सम्मामिन्छादिष्टि-अमंजदसम्मादिष्टिणो दुग्डसंजुर्त, उविरमा देवगङ्संजुर्त वंधित । समचउरस-संठाण-पसर्थविद्यायाङ्धिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आरंजणामाओ मिन्छाइष्टि-सासणसम्मादिष्टिणो तिगङ्संजुर्त, णिरयर्गरुए अभावादे! । सम्मामिन्छाइडि-अमंजदसम्मादिष्टिणो दुग्रइसंजुर्त, णिरय तिरिक्खगईणमभावादो । उविरमा देवगइसंजुर्त, तन्य समग्रहणं वंधाभावादो ।

देवगदि-देवगदिभाश्रामाणुपुडि-चेत्रव्यित्तम्तरेतं वर्डाव्ययमरेत्रं श्रोवंगणामाण वेधस्स विरिक्ष्यं मणुस्मगद्द मिल्छाइडि-मानणभभाइडि-सम्माभिन्छाइडि-अमंजदरममादृडि-संजदासंजदा सामी । उबरिमा मणुसा चेत्र, अण्णाय तेसिमभावादा । पेचिदियजादि तेजा-कम्मद्द्यसपीर-समचउरसमंद्राण-वण्ण-गंव-रप-फाम अगुफ्त्रव्यहुव-उववाद परवाद उम्माम-प्मस्थविद्दायगई-तम-बादर-पजन-पत्त्यसरीर-थिर-सुभ-मुभग-मुम्पर-आहेज णिमिणणामाणं चउगद्दमिन्छाइडि-सामणपम्माइडि-सम्मामिन्छादिडि अनंबदममादिडिणा, दुगद्रसंजदामंजदा, मणुमगद्रपनादश्रे

गुणस्थानोंमें देवगितसे संयुक्त यांचेत हैं. क्योंकि. रोध गुणस्थानोका नरकगितवरचके साथ विदाश है। पंजित्द्रयज्ञाति तंत्रम च कार्याण दार्गर वर्ण, गस्य, गस. स्पर्श. अगुरूळ हु, उपचान, पराज्ञत, उद्वृद्धास, त्रम. वाहर, पर्यात, प्रत्येकार्गर ओंग निर्माण तामकर्मको मिथ्यादार्ष वार्ग गित्यांचे संयुक्त, साथांमिथ्यादार्ष व असंयत्मकप्याद्धार्थ कार्य गत्मकार्य हुए हो। तांचे संयुक्त, नाथां उपरिम्न जील हरगानिम संयुक्त वार्थेन हैं। अस्यत्मकप्यस्थात, प्रतान्ति संयुक्त, तथांचे तहे। अस्यत्मकप्यस्थात, प्रतान्तिकार्यामांचे, विश्व तुम्रे । अस्य तुम्रे कार्यक्र कार्यक्र कार्यक्र है। सम्याभ्याद्धार्थ व साव्यक्तसम्याद्धार्थ निर्माण कार्यक्र कार्यक्र कार्यक्र स्थापक है। स्थापक्ष है। स्थापकष्ठ है। स्थापक है। स्थापक है। स्थापक है। स्थापक है। स्थापकष्ठ है। स्थापक है। स्य

देवनति. देवनित्रप्रयेश्यानुपूर्वी. वैकियिकशरीर और वैकियिकशरीरांगांगां नामकर्मोक व्यथेक निर्मेव व मनुष्य गतिवांक प्रिष्यादृष्टि. सामादमसम्प्रादृष्टि. सम्प्राम्प्रयादृष्टि. स्वायंत्रसम्प्रयादृष्टि. स्वयंत्रसम्प्रयादृष्टि. स्वयंत्रसम्प्रयादृष्टि और संयनास्यत्य स्वायी हैं। उपित्रम जीव मनुष्य ही स्वामी हैं, स्वर्योक, अवश्र प्रसम्प्रयाद्वादेशका अभाव है। पंचाहित्यज्ञाति नेजस व कार्मण शरीर, सम्बनुत्रस्थात्म, वर्ण, नच्य, नच्य, स्वर्ण, अगुरुक्षण, उपयान, पर्यान, उच्छ्वास, प्रशासीवहायाति, त्रस, यादर, पर्याम, प्रस्कारीर, स्थितः होश, सुस्य अपन्य अपनेय अपनेय विकास सम्बन्धित्यादृष्टि, सासादनसम्प्रयदृष्टि, सम्बन्धनसम्प्रयदृष्टि, देव यतियोवां स्थातस्यत्व, तथा मनुष्यातिक सम्प्रामिष्यादृष्टि व अभ्यतनसम्प्रयदृष्टि दो यतियोवां संयतास्यन, तथा मनुष्यातिक

सामी । बंधद्वाणं सुगमं । अपुन्यकरणदं मत्तसंडाणि काऊण छसंडाणि उविर चिडिय सत्तम-संडावसेसं वंधो बोन्छिज्ञदि । सुनाभावं सत्त चैव संडाणि कीरंति ति कथं णव्यदे ? ण. आइरियपरंपरगगद्वदेसादो । तजा-कम्मइयसरिर-वण्ण-गंध-रम-फास-अगुरुवलहुव-उवधाद-णिमिणणामाणं मिन्छादिद्विस्ट चउन्विहो वंधो, युवर्त्राधतादो । उवरिमगुणसु तिविहो, युवताभावादो । अवसमाओ पयडीओ सादि-अद्भीवयाओ, पडिवक्खपयडिवंधमंभवादो, पर-धादस्सासाणमपज्जतमंत्रतं वंधमाणकाले पडिवक्खवंधपयडीए अभाव वि वंधाभाववलंसादो ।

आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंगणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ३५ ॥

सुगममेद ।

अप्पमत्तसंजदा अपुव्यकरणपड्टुउवसमा खवा बंधा । अपुव्य-करणद्धाए संखेजे भागे गंतृण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३६ ॥

प्रमत्तसंयतादिक स्वामी हैं । बस्याध्वान सुगम है । अपूर्वकरणकालके सात खण्ड करके छह खण्ड ऊपर चढ़कर सातवें खण्डके होत रहनेपर उनका बस्थ व्यच्छिन्न होता है ।

र्शका—सूत्रके अभावमें सात ही खण्ड किये जाने हैं यह किस प्रकार झात होता है?

समाधान — नहीं, यह आचार्यपरम्परागत उपदेशमें जात होता है।

तैजम व कार्मण दार्गर, वर्ण, गन्ध, रम, स्पर्दा, अगुरुळवु, उपघात और तिर्माण नामकर्मोका मिथ्यादि गुणस्थातमें चारों प्रकारका बन्ध है. क्योंकि, ये ध्ववन्धी प्रकारियों हैं। उगर्पम गुणस्थातोंमें तीन प्रकारका बन्ध है. क्योंकि, वहां ध्रुव बन्ध नहीं है। दोष प्रकारमा मार्च व अध्य बन्धे नहीं है। दोष प्रकारमा मार्च व अध्य बन्धे नहीं के स्वाप्त का का सम्भव है। प्रपाद और उच्छानमं अथ्योंने मंत्रक कालमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव है। प्रपाद और उच्छानमं अथ्योंने मंत्रक कालमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धके अभावमें भी उनका बन्ध नहीं पाया जाता है।

आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांग नामकर्मीका कौन बन्धक और कीन अवन्यक है ? ॥ ३५ ॥

यह सुत्र सुगम है।

अप्रमत्तमंयत और अपूर्वकरणशिष्ट उपरामक व क्षपक बन्धक हैं। अपूर्वकरण-कारुके संख्यात बहुआगोंको विताकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं।। ३६।। एरं देसामासियसुत्तं, बंबद्धाणं, सामित विणङ्कद्वाणं वि यं परुवणादो । तेणेदेण स्इत्त्याणं परुवणा कीरंदे— एदासिसुद्रश्रो एक्वं वोच्छिज्ञदि पच्छा बंघो, पमतसंजदिम्म णङ्कीदवाणमेदासिमपुच्वरुणमिन वंधवोच्छेदृबरुंभादो । परोदएणेव एदाओ बज्झितं, आहार-द्वगीदयिविहदुअपमत्तेसु चेव वंघोवरुंभादो । णिरंतरं वज्झितं, प्रहिवक्वपपदीण वंघण विषा वंधभावादों । वच्चपरुवणाणः मृत्रुत्तरणोणेगममयत्रुष्टणुक्कस्सपच्चया णाणावरणस्सव वत्त्व्वा । जिदी चदुसंजरण-पानणोकसाय-जोगा माबीस चेव आहारदुगस्य पच्चया तो सच्चेसु अपमतापुक्वरुष्टेश्वरेण आहारदुगस्यण होद्वयं । ण चेवं, तहाणुवरुंभादो । तदो अण्णिहि वि पच्चपित्तं होद्ववितिदे ए ण एस दोसी, इन्छिज्जमाणातादो । के त अण्ण पच्चया जेहि आहार-दुगस्स वंघो होदि ति इते वुच्चदं— तिरथयदाहिस्य-वहसुद-पवयणाणुरागा आहारदुग-पच्चो । अप्यत्वस्युवितिसत्तमभागं

यह रेशामशंक सुत्र है, क्योंकि वह बन्धाध्वान, स्वामित्व और बन्धविनप्रस्थानका ही प्ररूपण करता है। इसी कारण इस सुत्रस स्विन अधीकी प्ररूपण करते हैं इन दोनों प्रश्नियों अपने क्योंकि उद्युविन व्यूकि एक होता है, प्रश्नात बन्धः क्योंकि प्रमत्तसंयनमें इनके उद्यक्षे नष्ट हैं जानेत्र अधुकंकरणमें बन्धव्युव्छेद राया जाना है। ये सी प्रश्निया प्रमत्त्र यें रेदये वंधती है, क्योंकि आहारिकके उद्यक्ष रोहत अप्रमत्त्रसंयनोंमें अधीन अप्रमत्त्र योग अधुकंकरण गुणस्थानोंमें ही इनका बन्ध पाया जाना है। उक्त दोनों प्रकृतियांका बन्ध किरत्तर होता है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्धक विना इनके बन्धका सद्भाव पाया जाता है। उत्तर होता है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंक बन्धक विना इनके बन्धका सद्भाव पाया जाता है। प्रयक्ष्य प्रणामका स्वत्यांक स्वत्य उत्कृत्य प्रस्था काला है। इस्ता वाहिय

शैका – चार संज्वलन, नो नोकपाय और नो योग. इस प्रकार यदि वाईस ही आहारकक्षिकके प्रत्यय हैं तो सर्व अवमन और अपूर्वकरण संयनोंमें आहारक्षिकका वन्ध होना चाहिये । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, वैसा पाया नहीं जाता । अन एव अन्य भी प्रत्यय होना चाहिये ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अन्य प्रत्ययोंका मानना अभीष्ट ही है। शंका — वे अन्य प्रत्यय कौनसे हैं जिनके द्वारा आहाराद्विकका वन्ध होता है ?

समाथान — इस शंकाक उत्तरमें कहते हैं — नीर्थंकर, आंचार्य, वहुश्चन अर्थान् उपाप्याय और प्रयचन, इनमें अनुराग करना आहारद्विकका कारण है। इसके अनिरिक्त प्रमादका अभाव भी आहारद्विकका कारण है, क्योंकि, प्रमाद सहिद जीवोंमें आहारद्विकका बन्ध पाया नहीं जाता।

१ आप्रती 'त्रियय' इति पाठ । २ आ काक्षऱ्योः 'क्थामावादा' इति पाठ । ३ प्रतिपु 'अपूल्लास्त्रसिम' इति पाठ ।

किष्ण बंघो ? ण, तस्य तिस्ययराइरिय-बहुसुद-पवयणविसयरागज्ञणिदसंसकाराभावादो । देवगइसुंजुत्ती आहारदुगवंघो, अण्णगर्शहे सह तन्त्रंघविरोहादो । मणुसा चेव सामी, अण्णस्य तिस्ययराइरिय-बहुसुदरागस्स संजमसहियस्स अणुवरुभादो । वंघद्वाणं बंघविणहृद्वाणं च सुगमं, सुत्तिणिहृद्वतादो । मादिओ अद्भुवे च वंघो, आहारदुगपच्चयस्म सादि-सपज्ञवसाणत्तरंसणादो ।

तित्थयरणामस्त को बंधो को अबंधो ? ॥ ३७ ॥ _{सगर्ग ।}

असंजदसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपरट्टउवसमा स्ववा बंधा । अपुव्वकरणद्वाए संस्वेज्जे भागे गंतृण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३८ ॥

एदं दसामासियसुत्तं, सामित्त-त्रंथद्धाण-त्रंथविणड्डाणाणं चेव परूवणादो । तेणेदेण

शंका-अपूर्वकरणके उपरिम सप्तम भागमें इनका वन्ध क्यों नहीं होता?

समाधान---नहीं होता. क्योंकि वहां तीर्थंकर आचार्य. बहुश्चत और प्रवचन-विषयक रागसे उत्पन्न हुए संस्कारोंका अभाव है।

आहारद्विकक। वन्धे देवगतिसं संयुक्त होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उसके बन्ध होनेका विरोध है। इनके बन्धके मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्यत्र तीर्थेकर, आचार्य और बहुश्वत विषयक राग संयम साहित पाया नहीं जाता। बन्धाप्वान और बन्धिनपस्थान सुगम हैं, क्योंकि, ये सुत्रमें ही निर्देष्ट हैं। दोनों प्रकृतियोंका साहिक और अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, आहारहिकका प्रत्यय सादि और सपर्यवसान देखा जाता है।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन चन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ३७ ॥ यह सूत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्द्यधिते ठेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक और क्षपक तक बंधक हैं। अपूर्वकरणकारुके संख्यात बहुभागोंको विताकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं।। ३८।।

यह देशामर्शक सूत्र है. क्योंकि वह स्वामित्व,बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थानका इ. इ. १०. सुद्दस्थवणणं कस्सामे — तित्थयरस्म पुन्वं बंदो वो छिज्जदि पन्छ। उद्यो, अपुन्वकरणछसत्तमभागचिरमसमण् णद्वंधस्म तित्थयरस्म संजोगिष्डमसमण् उद्यस्मादि काद्र्ण अजोगिचिरमसमण् णद्वंधस्म तित्थयरस्म संजोगिष्डमसमण् उद्यस्मादि काद्र्ण अजोगि-अजोगिजिणेमु तित्थयरवंधाणुवत्भादो । णिरंगेः वंधो, मगवंधकारणे संते अद्यास्वएण् बंधुवरमाभावादो । असंजदमम्मादिटी दृगद्रमंजुतं वंधीत, तित्थयरवंधस्म णिरय-तिरिक्खगद्द-बंधिह सह विगेदादो । उद्योगा देवगद्दसज्जन, मणुमगइटिन्द्रजीवाणं तित्थयरवंधस्स देवगद्दं मोत्तृण अण्णपदिह सह विगेधादो । तितिद्यमं नदस्मादिटी मार्गा, तिरिक्चगईएं नित्थयरस्स वंधाभावादो । मा होद् तत्थ तित्थयरकममंवधरम् परंगेः, जिणाणमभावदो । किंतु पुच्वं बद्धतिरिक्खाउआणं पच्छ। पडिजाणसम्मजोदिगुणिह तित्थयरकममं वंधाभावादो । ति तिक्व सुप्एण्णाणं तित्थयरम्म वंथस्म सामितं त्यस्मिट ति वृतं—ण्, चढनित्यन्तम्पुस्साउआणं जीवाणं वद्यालाव देवाउआणं जीवाणं च नित्थयरकमम्म वंधाभावादो । ते पि

श्रंका—निर्यमानिमें तीर्थकरवर्मके बन्धका प्रारम्भ मेले ही न हो. पर्योकि, यहाँ जिमोंका अभाव है। किन्तु जिन्होंने पूर्वमें निर्यमायुका बांध लिया है उनके पीछे सम्य-क्यादि गुओंके बात होजानेसे तीर्थकरकर्मकी वांधकर पुनः निर्यचोंमें उत्पन्न होनेपर तीर्थकरके बन्धका स्वामिपना पाया जाता है।

समाधान - इसके उत्तरमें कहते हैं कि ऐसा होना सम्भव नहीं है. क्योंकि, जिन्होंने पूर्वमें निर्यंत्र व मनुष्य आगुका बन्ध करालिया है उन जीवोंके नरक व देव आयुओंके बन्धसे संयुक्त जीवोंके समान तीयेकरकर्सके बन्धका अभाव है ।

शंका—वह भी कैसे सम्भव है ?

१ प्रतिपु 'सुत्ते 'इति पाठः । २ प्रतिपु '-गईहि 'इति पाठः ।

कुरो ? पारद्धितत्थ्यरावंधभनादो' तदियभंव तित्थ्यरसंतकिम्मयजीवाणं मोक्स्वगमण-णियमादो' । ण च तिरिक्तः मणुस्सेष्ठप्पण्णमणुससम्माइर्द्धणं देवेसु अणुप्पिज्जय देव-णेरद्द्युप्पण्णाणं व मणुस्सेषुप्पत्ती अश्यि जेण तिरिक्तः-मणुस्सेषुप्पण्णमणुससम्माइर्द्धणं तदियभवे णिच्छुई होज्ज । तम्हा'तिगद्दअसंजदसम्माइर्द्धणं चेव साभिया ति सिद्धं । सादिओ अद्भुवी च वंदो, वंधकारणाणं सादि-सांतत्तदंसणादो । तित्थयरकम्मस्म पच्चयपरूवणइस्तर-सुत्तं भणदि---

समाधान —क्योंकि, जिस भवमें तीर्थंकर प्रकृतिका येथ प्रारम्भ किया गया है उससे तृतीय भवमें तीर्थंकर प्रकृतिके सम्बयुक्त जीर्थंके मेश्व जानेका नियम है । परम् तियम क्षेत्र प्रकृतिके सम्बयुक्त जीर्थंके मेश्व जानेका नियम है । परम् तियम की स्वयं और समुख्यों उत्पन्न हुए भनुष्य सम्बय्धंके उत्पन्न हुन्ते तहीं जिससे कि निर्यंच व मनुष्योंमें उत्पन्न हुए प्रमुख्य सम्बय्धंक्ष्यं तृतीय भवमें मुक्ति हो सके । इस कारण तीन गतियोंके असंयनसम्बय्धंक्ष ही तीर्थंकर प्रकृतिके वन्धके स्वामी हैं, यह वात सिद्ध होती है ।

विशेषार्थ—यहां शंकाकारका कहना है कि जिस जीवन पूर्वमें निर्यगायुको बांध िया है वह यदि पश्चान् सम्यक्ष्यादि गुणोंको प्राप्त कर नीर्थकर प्रकृतिका बन्ध प्रारम्स करे और नत्पश्चान् सम्पक्ष प्राप्त होता के उत्पन्न हो तो वह नीर्थकर प्रकृतिक बन्धका स्वामी क्यों नहीं हो सकता है एक उत्तरमें आवार्य कहते हैं कि यह सम्भव नहीं है, कारण कि तीर्थकर प्रकृतिको वाधेनेक भवम तृतीय भवमें मोश्च जानेका नियम है। परन्तु यह ब.त उक्त जीवमें वन नहीं सकती, क्योंकि, निर्यगायुको वाधेनेब छा जीव हित्रीय भवमें तिर्यव होकर सम्यव्हिष्ट होनेसे तृतीय भवमें देव ही होगा, मुख्य नहीं। अत एव कोई भी तिर्यव तीर्थकर प्रकृतिक बन्धका स्वामी नहीं होसकता।

र्तार्थेकर प्रकृतिका सादिक व अधुव वन्ध होता है, क्योंकि, उसके वन्धकारणोंके सादि-सान्तता देखी जाती है। तीर्थेकर कर्मके प्रत्ययोंके निरूपणार्थ उत्तर सुत्र कहते हैं—

१ अप्रती '-तित्थयर स्मास्स बंधाभागादो ', आ काग्रत्योः '-तित्थयरबंधाभागादो ' इति पाठः ।

२ एतवा तीर्थवस्तमासकी मनुष्यगतावेत वर्तमानः पुरुषः की नपुननो वा तीर्थवस्तवात् पृष्टतस्तृतीयभवे प्राप्त बद्धमारसते । प्र. सा. १०, ३१३–१९.

३ प्रतियु 'तं जहा' इति पाठः।

कदिहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोदं कम्मं बंधीत ? ॥ ३९ ॥

कथं तिरथयरस्स णामकम्मावयवस्स गोदसणणा ? ण, उच्चागोदवंषाविणाभावित्रणेण तिरथयरस्स वि गोदत्तसिद्धीदो । संसकम्माणं पच्चार अभिणद्ण तिरथयरणामकम्मस्सेव किमिदि पच्चयप्त्रणामकोदि । संसकम्माणं पच्चार अभिणद्ण तिरथयरणामकम्मस्सेव किमिदि पच्चयप्त्रणा कीरदे ? सोउसकम्माणि मिच्छत्तपच्चयाणि, मिच्छतीदाण विणा पर्देसि वंधा-भावादो । एणुवीसकम्माणि अर्णनाणुविधिपच्चयाणि, तदुदण्ण विणा तिसि वंधाभावादो । दस कम्माणि असंजमपच्चयाणि, अपच्चक्खाणावरणोदण्ण विणा तिसि वंधाभावादो । पच्चक्काणावरणचदुक्कं सगमामण्णादयपच्चयं, तेण विणा तब्बंधाणुवरुभादो । उचकम्माणि पमादपच्चयाणि, पमादेण विणा तिसि वंधाणुवरुभादो । देवाउअं मिच्झिमविसीदिएच्चइयं, अप्यमतद्धाण् संस्त्रिविद्याणे गेव देवाउअस्स

कितने कारणेंमि जीव तीर्थकर नाम-गोत्रकमेकी बांधते हें ? ॥ ३९ ॥ श्रंका—नामकर्मके अवयवभूत नीर्थकर कर्मकी गे।त्र संबा केसे सम्भव है ?

समाधान—यह दांका ठीक नहीं. क्योंकि. उद्य गोत्रके वन्धका अधिनाभावी होनेसे नीयंकरकर्मको भी गोत्रत्व सिद्ध है।

र्श्वका—दोष कर्मीके प्रत्ययोंको न कहकर केवल तीर्थकर नामकर्मकी ही प्रत्ययः प्ररूपणा क्यों की जाती है ?

समाधान—सोलह कर्म मिध्यात्वातिमत्तक है, क्योंकि, मिध्यात्वक उर्यक विना इनके बन्धका अभाव है। पञ्चीस कर्म अनन्तानुवन्धितिमत्तक हैं, क्योंकि, अनन्तानु बन्धी करायक उदय विना उनका बन्ध नहीं पाया जाता। दश कर्म असंयमीनिमत्तक हैं, क्योंकि, अमत्याक्यात्वादरणेक उदय विना उनका वग्धे नहीं होता। प्रत्याक्यात्वादरण-बनुष्क अपने ही सामान्य उदयनिमत्तक है, क्योंकि, उसके विना प्रत्याक्यात्वादरण-बनुष्कका बन्ध पाया नहीं जाता। छह कर्म प्रमादिनिमत्तक है, क्योंकि, प्रमात्तक विना उनका बन्ध नहीं पाया जाता। देवायु मध्यम विशुद्धिक स्थानको न पाकर मध्यम विशुद्धिन

तित्थयरणामगोयकम्म— तीर्थकत्वित्रथन नाम वीर्थकरनाम, तथ गोष च कमीविशेष ऐक्पेक्वरमावान तीर्थकरनामगोत्रम् । अ. रा. पृ २३१३.

२ अ-आप्रन्याः 'तस्बंढाणाणुवलभावो ', काप्रतो 'तदढाणाणुवलभावो ं इति पाठः ।

3. 49. 1

स्थानमें ही देवायुका वन्धन्युच्छेद देखा जाता है। आहारक्षिक विशिष्ट रागसे संयुक्त संयमके निमित्तम वंधना है, क्योंकि, ऐसे संयमके विना उसका बन्ध नहीं पाया जाता। परभवनिवन्धक सत्ताईस कर्म एवं हास्य रति, भय, जगुरसा, पुरुषवेद और चार संज्वलन-कपाय, य सब कर्म कपायविद्यापके निमित्तसे वंधनवाले हैं, क्योंकि, इसके बिना उनके भिन्न स्थानोंमें बन्धव्यच्छेटकी उपपत्ति नहीं बनती । सोलह कर्म कपायसामान्यके निमित्तरे वधनेवाले हैं, क्योंकि, अणमात्र कपायके भी होनेपर उनका बन्ध पाया जाता है। सातावेदनीय योगनिमित्तक है, क्योंकि, सुक्ष्म योगमें भी उसका बन्ध पाया जाता है। इस प्रकार चंकि सब कमोंक प्रत्यय युक्तिबलस जाने जाते हैं, अतः उनका यहां कथन नहीं किया गया। किन्त इस तीर्थंकर नामकर्मका बन्धप्रत्यय नहीं जाना जाता— कारण कि यह मिध्यात्वनिमित्तक ते। हो नहीं सकता, क्योंकि, मिध्यात्वके होनेपर उसका बन्ध नहीं पाया जाता । असंयमनिमित्तक भी नहीं है, क्योंकि, संयतोंमें भी उसका बन्ध देखा जाता है। कपायसामान्यनिमित्तक भी यह नहीं है, क्योंकि, कपायके होनेपर भी उसका बन्ध-व्यच्छेर देखा जाता है, अथवा क्यायके होनेपर भी उसके बन्धका प्रारम्भ नहीं होता। क्याय-मस्यतानिमित्तक भी इसका बन्ध नहीं हो सकता, क्योंकि, तीवकवायवाले नारकियोंके भी उसका बन्ध देखा जाता है। तीव कपाय भी इसके बन्धका कारण नहीं है. क्योंकि. मन्द्रकपायवाते सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देवों और अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती जीवोंमें भी उसका बन्ध देखा जाता है। सम्यक्त भी उसके बन्धका कारण नहीं है. क्योंकि, सम्य-ग्द्रष्टिके भी तीर्थंकर कर्मका बन्ध नहीं पाया जाता । केवल दर्शनविश्च दता भी उसका कारण नहीं है, क्योंकि, वर्शनमोहका क्षय करचकनेवाले भी किन्हीं जीवाँके उसका वन्ध

1 8. 80.

बलंभादो । तदो एदस्स वंधकारणं वत्तव्वमेव । अधवा. असंजदःपमत्तःसजोगिसण्णाओ व्व एदं सुत्तमंतदीवयं सव्वकम्माणं पच्चयपुरुवणाए ति एदं सुत्तमागदं । कदिहि कारणेहि---किमेक्केण कि दोहि कि तिहिमेवं पुच्छा कायव्वा । एवंविहसंसयिम द्विदाणं णिच्छय-जणणहमत्तरसत्तं भणदि---

तत्य इमेहि सोलसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोदकम्मं बंधंति ॥ २०॥

तत्थ मणुस्सगदीए चेव तित्थयरकम्मस्स बंधपारंभो होदि, ण अण्णत्थेति जाणावण्डं तत्येति वृत्तं । अण्णगदीस किण्ण पारंभो होदि ति वृते - ण होदि, केवलणाणीवलिस्वयजीव-दन्त्रसहकारिकारणस्य तित्थयरणामकम्मत्रंपर्शारभस्य तेण विणाः समुप्तत्तिविरोहादो । अधवाः तत्थ तित्थयरणामकम्मवंधकारणाणि भणामि ति भणिदं होदि । सोठपेति कारणाणं संखा-णिदेसो कदो । पञ्जबद्रियणए अवलविञ्जमाणे तित्थयरकम्मबंधकारणाणि सोलस चिन होति। दव्यद्रियणए पण अवलेथिज्जमाणे एककं पि होदि. ट्रां वि होंति । तरी एत्थ सीलम् चेव

नहीं पाया जाता। अन्य इसके यन्धका कारण कहना ही चाहिये। अथवा असंयत, प्रमत्त और सयोगी संझाओंके समान यह सत्र सव कमोंकी प्रत्ययप्ररूपणामें अन्तर्दीपक है. इसीलिये यह सत्र आया है। कितने कारणांस — क्या एकस, क्या दोसंः क्या तीनस इस प्रकार यहां प्रश्न करना चाहिये । इस प्रकार संशयमें स्थित जीवोंके निश्चयात्पादनार्थ उत्तर सत्र कहते हैं---

वहां इन सोलह कारणोंसे जीव तीर्थकर नाम-गात्रकर्मको बांधते हैं ॥ ४० ॥

मनुष्यगतिमें ही तीर्थंकरकर्मके बन्धका प्रारम्भ होता है. अन्यत्र नहीं, इस वातके इत्तपनार्थ सूत्रमें 'बहां' पेसा कहा गया है।

शंका—मनुष्यगतिके सिवाय अन्य गतियाँमें उसके वन्धका प्रारम्भ क्यों नहीं होता ?

समाधान इस इांकाके उत्तरमें कहते हैं कि अन्य गतियोंमें उसके बन्धका प्रारम्भ नहीं होता, कारण कि तीर्यंकर नामकर्मक बन्धके प्रारम्भका सहकारी कारण केवलज्ञानसे उपलक्षित जीव द्रष्य है, अतएव, मनुष्य गतिके विना उसके बन्ध प्रारम्मकी उत्पत्तिका विरोध है। अथवा, उनमें तीर्थकरनामकर्मके यन्धके करणोंको कहते हैं, यद अभिन्नाय है। 'सोलह' इस प्रकार कारणोंकी संख्याका निर्देश किया गया है। पर्यायार्थिक नयका अधेलम्बन करनेपर तीर्थंकर नामकर्मके बन्धके कारण सोलह ही होते हैं। किन्तु द्रऱ्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर एक भी कारण होता है, हो भी होते हैं। इसलिये यहां सोलह ही कारण होते हैं येसा अवधारण नहीं करना

कारणाणि ति णावहारणं कायव्वं । एदस्स णिण्णयद्वमुत्तरसुत्तं भणदि -

दंसणिवसुज्झदाए विणयसंपण्णदाए सीळव्वदेसु णिरदिचारदाए आवासएसु अपरिहीणदाए खण-ळवपिडबुज्झणदाए छद्धिसंबेगसंपण्णदाए अधायामें तथा तवे, साहृणं पासुअपिवागदाए साहृणं समाहिः संधारणाए साहृणं वेज्जावच्चजोगजुत्तदाए अरहंतभत्तीए बहुसुदः भत्तीए पवयणभत्तीए पवयणवच्छळदाए पवयणपभावणदाए अभिक्खणं आभिक्खणं णाणावजोगजुत्तदाए इच्चेदेहि सोळसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोदं कम्मं वंधति।। ४१॥

एदस्स मुतस्स अत्थे। बुज्बेद । तं जहा— दंसणं सम्मदंसणं, तस्स विमुज्बदा दंसण-विमुज्बदा, तीए दंसणविसुज्बदाए जीवा तित्थयणामगोदं कम्मं वंधंति । तिमुखवोड-अर्ड-

चाहिये। इसके निर्णयार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं।

दर्शनविशुद्धता, विनयसम्पन्नता, शीठ-व्रतोंमें निरतिचारता, छह आवरयकोंमें अपरि-हीनता, क्षण-छवत्रतिवायनता, छन्त्र-संवेगसम्पन्नता, यथाशक्ति तप, साधुओंको प्रासुकपरित्यागता, साधुओंकी समाधिसंधाग्णा, साधुओंकी वैयावत्ययोगायुक्तता, अरहंतभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, प्रवचनवत्सछता, प्रवचनप्रभावनता और अभीक्ष्ण-अभीक्ष्णज्ञानोपयोगयुक्तता, इन सोछह कारणोंसे जीव तीर्यकर नाम-गोत्रकमको बांचते हैं ॥ ४१ ॥

इस सुत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है— 'दर्शन' का अर्थ सम्यग्दर्शन है। उसकी विशुद्धताका नाम दर्शनविशुद्धता है। उस दर्शनविशुद्धतासे जीव तीर्थंकर नाम गोत्रकर्मको वांध्रते हैं। तीन सृहताऑसे रहित और आठ सलॉसे व्यतिरिक्त जो

१ अप्रती 'यथापाये', आप्रती 'यथामे', काप्रती 'यथाथामे ' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'साहण ' इति पाठः ।

२ दर्सनिविद्यादिर्विनयसम्पन्नता शीलमेतप्तनितिवारिद्याशिष्णकानोपयोग-सर्वगौ सतितस्याग तपसी साधुः समापित्रयाद्वर सरणकर्षद्वापार्थं बहुश्यः प्रवचनमितात्वरपत्रपत्तिहाणिर्माप्रमानमा मवपनकस्तत्वमिति तीर्मे-करतस्य । त. त्. १, २, ४ अर्गिरेत तिद्य पत्रपण-गुरु-धेन-बहुत्स्युर तवस्सी य । वण्कस्त्वाय प्रति अमिक्स-नाणोवजोगो य ॥ देतपाविष्य आवस्सय य सीलज्य शिरस्यारी । खण्कत तविष्याय वेदावप्ते समाही य ॥ अपुष्पनाणगरुष सुयमर्था पत्रयंत्र पमावण्या। एपृहि कारणेहि तित्यवरातं छह्ह जीवो॥ प्र. सा. १०,३२०-३२२.

मरुविदित्तसम्मदंसणभावां दंसणिवसुङ्ग्रदा णाम । कथं ताए एक्काए चेव तिःथयरणाम-कम्मस्स बेघो, सन्वसम्माइई।णं तिःथयरणामकम्मवंथपर्सगादो तिः ? तुन्वदे— ण तिमृदा-बोष्ठतद्वसन्विदिरोहि चेव दंसणिवसुङ्ग्रदा मृद्धणयादिप्पाएण हादि, किंतु पुविवसुपृणिह सरूवं रुद्धणं हिदसम्महंसणस्स साहणं पासुअपिन्चिगो साहुणं समाहिसंधारण साहुणं वेजजा-कम्बजोगं अरहंत-महंसणस्स पहुमुद्दभर्तीए पवयणभत्तीए पवयणवन्छन्दाए पवयणं पहुमुव् स्मिक्खणं णाणीवजोगाञ्जत्तवणे प्यद्वावणं विसुन्द्रदा णाम । तीःग दंसणिवसुन्द्रदाए एक्काए वितिथयनकम्मं वंशित।

अथवा, विषयसंपण्णदाए चेव तित्थयरणामकस्म वंधति । तं बहा — विणञ्जो तिविद्धो णाण-दंसण-चारितविणञ्जो ति । तत्य णाणविणञ्जो णाम अभिक्सवर्णाभक्तस्वणं णाणाव-जोगञ्जतदा बहुसुदभत्ती पवयणभत्ती च । दंसणविणञ्जो णाम पवयणसुवहहसस्वमावसहहणं तिमुखादो जोसरणमहस्वरुच्छहणसरहंत-सिद्धभत्ती स्वण-स्वपश्चित्रङ्गणदा स्रद्धसंवसंसपण्णदा

सम्यन्दर्शन भाव होता है उसे दर्शनविशुद्धता कहते हैं।

र्शका-केवल उस एक दर्शनविशुखनामे ही तीर्थकर नामकर्मका बन्ध कैसे सम्भव है, क्यांकि, ऐसा माननेसे सब सम्यग्दिएयाँके तीर्थकर नामकर्मके बन्धका प्रसंग आवेगा ?

समाधान—इस रांकाके उत्तरमें कहेत हैं कि शुद्ध नयके अभिप्रायस तीन मुक्ताओं और आठ मटोंस रहित होनेपर ही दर्शनिवशुद्धता नहीं होती, किन्तु पूर्वोक पुणोंसे अपने निजस्यरूपको प्राप्तकर स्थित सम्यन्दर्शनकी माधुओंको प्राप्तुक परित्याग, साधुओंको समाधिसंधारणा. साधुओंको वैयावृत्तिका संयोग. अरहेतमिक. बहुश्वतमिक, प्रवचनअक्ति, प्रवचनवस्तटता, प्रवचनप्रभावना और अमेहिशक्तानेपयोग-युक्ततोम प्रवर्गनका नाम विश्ववता है। उस एक ही दर्शनिवशुद्धताने जीव नीर्थकर कर्मको

अथवा, विनयसम्पन्नतास ही नीर्थंकर नामकर्मका बांधन है। वह इस प्रकारस-कानविनय, वर्शनविनय और चारित्रविनयक अन्से विनय तीन प्रकार है। उनमें वार्रकार क्वानोपयोगस युक्त रहनेके साथ बहुश्रुतभक्ति और प्रवचनभक्तिका नाम क्वानविनय है। आगमोपिए सर्व प्रायोंके अद्धानके साथ तीन मुढ्ताऑस रहित होना, आठ मलोका छोड़ना, अरहेतभक्ति, सिद्धभक्ति, अण लवमनिवुद्धता और लिध्यसंवगसम्पन्नताको दर्शन

१ प्रतियु 'सम्बरुद्धण ', मप्रती 'सम्बरुद्धण ' इति पाठः ।

२ आ-काप्रत्योः ' जुत्तत्त्वेण ' इति पाठ ।

२ अ-कामस्योः ' पडिबज्जाणदा ', आपनौ ' परिबज्जाणदा ' इति पाठः ।

च'। चिरित्तविणयो णाम सील्य्वदेसु णिरादिचारदा आवासएसु अपरिहीणदा जहाथामे तहा तवा च । साहूणं पासुगपरिच्चाओ तेसि समाहिसंघारणं तेसि वेज्जावच्चोगासुन्तदा पवयण-विल्ल्यां पासुगपरिच्चाओ तेसि समाहिसंघारणं तेसि वेज्जावच्चोगासुन्तदा पवयण-विल्ल्यां पि विणयो, तिरंयणसमृहस्स साहु-पवयण ति ववएसादो । तदो विणयसंपण्णदा एक्का वि होद्ण सोल्याववा । तेणदीए विणयसंपण्णदाए एक्काए वि तिरथरणामकाम मणुआ वंधित । देव-णरह्याण कथमेसा संभवदि १ ण, तस्य वि णाण-दंसणविणयाणं संभवदंसणादो । कथं तिसस्हक्जं दोहि चेव सिक्बदे १ ण एस दोसो, मिट्टया-जल्स्र्एणकंदिहिंतो ससुप्यज्ञमाणस्यवकंमादो, दोहि तरिगिहिंता चेव ससुप्रज्ञमाणस्यवकंमादो, दोहि तरिगिहिंता क्षेत्र मणुप्ण वा किक्किजमाण-

विनय कहते हैं। श्रील-जतोंमें निरातिचारता, आवश्यकोंमें अपरिहीनता अर्थात् परिपूर्णता, और शक्य बुसार तपका नाम चारित्रविनय है। साधुओं के लिये प्रासुक आहारादिकका हान, उनकी समाधिका धारण करना, उनकी वैयाहितामें उपयोग लगाना, और प्रवचन सत्तलता, यह झान, दर्शन एवं चारित्र तीनोंको ही विनय है, क्योंकि, रत्नत्रय समूहको साधु व प्रवचन संझा प्राप्त है। इसी कारण चूंकि विनयसम्पन्नता एक भी होकर सोल इ अवयवाँसे सहित है, अतः उस एक ही विनयसम्पन्नतासे मनुष्य तीर्थंकर-नामकर्मको बांधते हैं।

शुंका — यह विनयसम्पन्नता देव नारिकयोंके कैसे सम्भव है ?

समाधान — उक शंका ठीक नहीं, क्योंकि, देव-नारिक्योंमें भी झानविनय और दर्शनविनयकी सम्भावना देखी जाती है!

शंका—तीनों विनयोंके समूहसे सिद्ध होनेवाला कार्य दोसे ही कैसे सिद्ध हो सकता है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मही, जल और सूरणकंदसे उत्पन्न होने वाल। सूरणकंदक। अकुर उसके कन्द और दुर्दिन अर्थात् वर्षासे ही उत्पन्न होता हुआ पाषा जाता है, अथवा दो घोड़ोंसे सींच। जानेवाल। रथ बलवान् एक ही देव, विद्याधर या मनुष्यसे

१ अरहंत सिद्ध-चेद्दय सुदे य धन्मे य साधुवाने य । आयरिय उवन्द्राप् सुपवयणे दंसणे चाति ॥ भत्ती पूरा वण्णजणणं च णासणमवण्णवादस्स । आसादणपरिहारो दंसणविणको समासेण ॥ मः आः ४७-४८,

२ प्रतिप्र 'तिरियण ' इति पाठः ।

३ अप्रती 'कांट्रिज्जमाणसेदंसणस्स ', आप्रती 'कंदिञ्जमाणस्सेदंसणस्स ', काप्रती 'कट्टिज्जमाणस्से-दंसणस्स ' इति पाठः ।

सुवरुभारो वा । जाँदे दोहि चेव तित्थयरणामकम्मं वज्ज्ञदि तो चरित्तविणत्रो किमिदि तिक्कृत्योमिदि बुचेदे ? ण एस दोसो, णाण-दंसणविणयकज्ञविरोहिचरणविणवा ण होदि ति

पदुर्यायणफळतादो ।

अथवा, सीलव्यदेसु णिरहिचारदाए चेव तिरथयरणामकम्म बज्झ । ते जहां— हिंसालिय-चोजव्यम-परिगाहिंहिंता विरदी वदं णाम । वदपरिरक्खणं सीलं णाम । सुरावाण मांसभक्षण कोह माण-माया-लोह-हस्स-रइ-सोग भय-दूर्गुलित्य-पुरिस-णुंसयवेयापरि-बांगो अदिचारो; एट्सिं विणासो णिरदिचारो संपुण्णदा, तस्स भावो णिरदिचारदां । तीए भे सीलव्यदेसु णिरदिचारदाए तिरथयरकम्मस्स बंधो होदि । कथमेरथ सेसपण्णसण्णं संभवो ? ण, सम्मदंसणेण खण-लवपडिचुन्छण-लद्धिसंगेमसंपण्णत-साहुसमाहिसंधा-

खींचा गया पाया जाता है।

शंका—यदि दो ही विनयोंसे तीर्थंकर नामकर्म बांधा जासकता है तो फिर चारिकविनयकों उसका कारण क्यों कहा जाता है ?

समापान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, झान-दर्शनविनयके कार्यका विरोषी चारित्रविनय नहीं होता, इस बातको स्वित करनेके लिये चारित्रविनयको भी कारण मान लिया गया है।

अथवा, शील वर्तोमें निरितचारतासे ही तीर्थकर नामकर्म बांधा जाता है। वह इस प्रकारसे— हिंसा, असत्य, चाँयं, अब्रह्म और परिप्रहरों विरत होनका नाम बत है। बर्ताकी रक्षाको शिल कहते हैं। सुरापान, मास्मक्षण, क्रांध, मान, माया, लाम, हास्य, राते, होक, भय, ब्रुगुस्सा, अविवर, पुरुपवेद पयं नपुरस्कवेद, इनके त्याग न करनेका नाम अंतिचार और इनके विनाशका नाम निरितचार या सम्पूर्णता है, इसके भावको निरिते-चारता कहते हैं। शील बतोंमें इस निरितचारनास तीर्थकर कर्मका वस्य होता है।

शंका - इसमें शेष पन्द्रह भावनाओंकी सम्भावना कैसे हो सकती है ?

समाधान — यह डीक नहीं, क्योंकि क्षण-लवप्रतिबुद्धता, लब्धि संवेगसम्पन्नता,

१ अप्रती '-परिवनक्षणं', आ काप्रत्योः 'पन्त्रिक्क्षण ' इति पाठः ।

२ अहिंसादिए बेतेस तत्रात्रिपालनायेषु च कै।धवर्जनायिषु झीलेषु नितवणा वृत्तिः झील अतेत्वनतिचारः । स. सि. ६, २४. **चारियविकल्पेषु शील अतेतु निरवणा वृत्तिः शील अतेत्वनतिचारः — अहिंसादिए** अतेषु ४×× नितवणा वृत्तिः काय-वाद्य-सनवां शिल बेत्ति वृत्ति क्षायः वृत्ति काय-वाद्य-सनवां शिल बेति कायः वृत्ति क

३ अप्रतो ' णिरदिचारदीए ', आ-काप्रत्यो ' णिरदिचार तीए ' इति पाठः ।

रण-वैचाव्यव जोगञ्जत्त नासुअपरिक्षाग-अरहंत-बहुञ्जद प्वयणभति-पवयणपहावणुक्रम्बण्डाह्रि इति विशा सीळव्यदाणमणदिचारत्तस्य अणुववतीदो । असंबेच्जपुणार सुद्धीप् कस्म जिञ्जरणहेद्द वदं णाम । ण च सम्मत्तेण विणा हिंसालिय-चोच्जवन्यपरिस्पृह्णविद्धाते । होदं ग्राम । ण च सम्मतेण विणा हिंसालिय-चोच्जवन्यपरिस्पृह्णविद्धाते । होद्द ग्राम । एवे सम्मतेण विणा हिंसालिय-चोच्जवन्यपरिस्पृह्णविद्धाते । होद्द ग्राम एदेसि संभवे। ण पाणविणयस्स ? ण, छदच्व-णवपदत्थसमृह-तिहुवणविस्पृण् अभिन्नखण् मिन्नखण् सिल्चवित्रात्ते । ण तत्थ चरणविणयाभावो वि, जहायामतवावासयापरिद्धीणत्त-पव्यणव्यक्ष्यत् अणुवत्तीदो । ण तत्थ चरणविणयाभावो वि, जहायामतवावासयापरिद्धीणत-पव्यणव्यक्ष्यत् लस्यणवरणविणएण विणा सीलव्यक्ति । तस्हा तदियमेदं तित्ययर-णामकम्मवंयस्स कारणं ।

आवासएसु अपरिहीणदाए--- समदा-थर्व-वंदण-पडिक्रमण-पश्चक्खाण-विश्रोसम्मभेएण

साधुन्नमाधिधारण, वैयात्रस्योगयुक्तता, प्रासुक्षपरिस्याग, अरहतमिक, बहुश्रुतमिक, प्रवचनमिक और प्रवचनप्रभावना लक्षण शृद्धिसे युक्त सम्यग्दर्शनके विना शील मतीकी निरित्वारता वन नहीं सकती। दूसरी अत यह है कि जो असंस्थात शृणित श्रेणींसे कर्मनिर्जराको कारण है वही बत है। और सम्यग्दर्शनके विना हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्म और परित्रहसे विरत होने मात्रसे वह गुणश्रेणीनिर्जरा हो नहीं सकती, क्योंक, दोनोंसे ही उत्पन्न होनेवाले कार्यकी उनमेंसे एकके द्वारा उत्पत्तिक विरोध है।

र्शका — इनकी सम्भावना यहां भले ही हो, पर क्वानविनयकी सम्भावना नहीं हो सकती?

सेमाधान — पेस्ता नहीं है, क्योंकि छह द्रव्य, नौ पदार्थोंके समूह और श्रिभुवनको विषय करनेवाले एवं बार बार उपयोगविषयको प्राप्त होनेवाले हानविनयके विना शीक्ष-व्यांके कारणभूत सम्यन्दर्शनकी उत्पत्ति नहीं बन सकती।

शील मतविषयक निरतिचारतामें चारित्रविनयका भी अभाव नहीं कहा जासकता है, क्योंकि यथाशकि तप, आवश्यकापरिहीनता और प्रवचनवत्सलता लक्षण चारित्र-विनयके विना शील मतविषयक निरतिचारताकी उपपत्ति ही नहीं बनती। इस कारण यह तीर्येकर नामक्रोके वश्यका तीसरा कारण है।

आवस्यकोमें अपरिद्यीनतासे ही तीर्थंकर नामकर्म बंधता है - समता, इतब,

छावासया होति'। सतु-मित्त-मणि-पाहाण-सुवण्ण-महियासुं राग-देसाभावो समदा णामः । तीदा-णागद-बद्दमाणकालविसयपंचपरमेसराणं भेदमकाऊण णमो अरहताणं णमो जिणाणमिबादिणमो-क्कारो दच्वद्वियणिषंघणो थवों णाम । उसहाजिय-समवाहिणंदण-सुमइ-एउमप्पह-सुपास-चंदप्पह-पुप्फदंत-सीयल-सेयंस-वासुप्डज-विमलाणंत-धम्म-संति-कुंसु-अर-मिंह-मुणिसुक्वय-णिम-णेमि-पास-बद्दमाणादितित्थयराणं भरहादिकेवलीणं आहरिय-बद्दतालयादीणं भेयं काऊण णमोक्कारो गुणगयभेदमल्लीणो सहकलावाउलो गुणाणुसरणसरूवो वा बंदणां णाम । पंच-महस्वएसु चउरासीदिलक्खगुणगणंकिलिरसु ससुप्पणकलंकपक्वारूवां पडिककमणं णाम ।

बन्दना, प्रतिक्रमण, प्रत्याच्यान और ब्युत्सर्गके भेदसे छह आवश्यक होते हैं। शक्तिक, सिण-पायाण और सुवर्ण व्यक्तिकाम राग-द्रेयक अभावको समता कहते हैं। अनीत, अनावका तो द्रियं के प्रतिक्ष अभावको समता कहते हैं। अनीत, अनावका और स्वत्यान करके अरहन्त्रीको नमस्कार का नाम स्तव है। क्रियं क्ष्यान्य नमस्कार का नाम स्तव है। क्रियं क्ष्यान्य नमस्कार का नाम स्तव है। क्रियं मुज्यं क्ष्यान्य नमस्कार का नाम स्तव है। क्रियं मुज्यं क्षित समय, अजित, सम्मय, पुण्यदन्त, श्रीतल, श्रेयांस, बासुपूर्य, विमल, अनन्त, धर्म, शानिन, कुन्यु, अर, मिल, मुनिसुवत, निम, प्राप्त क्ष्यांस, बासुपूर्य, विमल, अनन्त, धर्म, शानिन, कुन्यु, अर, मिल, मुनिसुवत, निम, सिम, प्राप्त क्ष्यों के स्वालया। निम, क्ष्यों के स्वयं क्ष्यालया। क्ष्यां के स्वालया। क्ष्यां के स्वयं का स्वतं प्राप्त स्वतं के आधित. श्रीयं क्ष्यालयां क्ष्यालया। क्ष्यालयां क्ष्

स समदा पत्नी य बदण पडिकस्त्रमण तहेव णादन्य। पश्चनखाण विसामी करणीया वामया छणि॥ मूळा. २२. सामाद्रय चटवीसत्थव बदणय पडिक्सण । पश्चनखाण च तहा काओतम्मो हवदि छहो॥ मूळा. ७, १५. यडावरपडिनेया:— सामायिक चट्टीविवतिस्तव बंदना प्रतिक्रमण सन्यान्यान वायोत्सर्गक्षित । त. रा. ५, २४, ११. से कि त आदस्तय । अस्तरम्य धन्वद्र एण्चत्, त जहा— सामाद्रय चटवीसत्थवी बदणय पडि-क्कमणे काउस्त्रमणो पण्चनखाण से त आहस्तय । नन्योग्य ४४.

२ अप्रतो 'पडियास ', आ काप्रत्यो 'मडियाम ' इति पाठ ।

३ जीविद-सर्पे छ.सालामे सजीय विषयोगे य । वर्गोस्सर्देश्चादिस सबदा सामाइय णाम ॥ मुका-२३. तत्र सामायिक सर्वेसावययोगानिवृत्तिलक्षण चित्तस्येकत्वेन झाने प्रणिधानम् । तः सः १,२४,११.

४ उसहादिजिणवराण णामणिर्शत गुणाश्चीति च । काञ्च अध्विद्ण य तिसुद्धियणमी धवी णेखी ॥ मुला. २४. चतुर्विसितिस्तव. तीर्थकरगुणानुकीतेनम् । त. रा. ६, २४, ११.

५ अप्रती ' गुणगणमेदमञ्जिणो '; आ-काप्रत्यो . ' गुणगयभेदमञ्जिणो ' इति पाठः ।

६ अरहत-सिद्धपाडिमा-तव-सुद-गण गुरूण गादीण । किदिय-मोणेदरण य तियरणसकांचर्ण पणमो ॥ मूळा. २५ बदना विश्वद्धिः द्वपासना चतु क्षिरोजनतिः बादशावर्तना । तः रा. ६,२४,११.

७ प्रतिषु 'लक्खणगुणगण-'इति पाठः।

८ दब्बे खेते काठे भावे य कयावताहुसीहलय । लिंदण नाहल हती मण वच-कायेण पश्चिककमणी ॥ सूठा. २६. अतीतदोषनिवर्तनम् प्रश्चिकमणम् । त. रा. ६, २४, ११.

1. 98.1

महस्वयाणं विणासण-मलरोरहणकारणाणि जहा ण होसंति तहा करेमि ति मणेणालेविय चउ-रासीदिलम्खवदसुद्विपिडिग्गहो पञ्चक्खाणं णाम । सरीराहारेसुं हु मण-वयण-पद्मतीनो भोसारिय ज्य्रेयम्म एश्र-गेण चित्ताणेरोहो विभोसग्गों णाम । एदेसिं ख्रण्णमावासयाणं अपिरिहीणदा अखंडदा आवासयापरिहीणदा । तीए आवासयापरिहीणदाए एक्काए वि तिस्थयरणामकम्मस्स वंघो होदि । ण च एत्य सेसकारणाणमभावो, ण च दंसणविसुद्धि-विणययंपति-वदसीलिणरिद्यार-खणलवपिडेबोह लद्धिसेवगसंपत्ति-जहाथामतव-साहसमाहिसंथा -रण-वेज्जावच्चोगा-पासुभपरिज्वारित-यहुसुद-पवयणभत्ति-पवयणवच्छलु-प्यहावणाभिक्खण-णाणोवजोगान्जताहि विणा ख्रवासएसु णिरदिचारदा णाम संभवदि । तम्हा एदं तित्थयर-णामकम्मष्यंचम चत्रस्थकाणं ।

खण-ठवपडिबुज्झणदाए— खण-ठवा णाम कालविसेसा। सम्मदंसण-णाण-वद-सीठ-गुणाणगुज्जालणं कलंकपक्खालणं संयुक्खणं वा पडिबुज्झणं णाम, तस्स भावो पडिबुज्झणदा। खण-लवं पडि पडिबुज्झणदा खण-लवपडिबुज्झणदा। तीए एक्काए वि तिरथयरणामकम्मस्स

मलेत्यादनके कारण जिस प्रकार न होंगे वैसा करता है, येसी मनसे आलेखना करके चीराली लाख वर्तांकी गुद्धिके प्रतिप्रहक्षा नम प्रत्याख्यान है। शरीर व आहारमें मन एवं वचनकी प्रवृत्ति सेत्र रायाख्यान है। शरीर व आहारमें मन एवं वचनकी प्रवृत्ति सेत्र एकाप्रतासे विच्याका निरोध करते छे व्यवस्थान कहते हैं। इन छह आवश्यकार्योक्ती अपरिहीनता भर्यांत अखण्डताका नाम आवश्यकापरि-हीनता है। उस एक ही आवश्यकार्योक्तिता सीर्यंकर नामकर्मका यन्य होता है। इसमें शेष कारणेंका अभाव भी नहीं है, क्योंकि दर्शनिवगुद्धि, विनयसम्पत्ति, वत-शीलनिरित-चारता, श्रवण लव्यतिवांध, लिख्य संवेगसम्पत्ति, यथाशक्ति तथ, साधुसमाधिसंधारण, वैयाव्ययोग, प्रासुकपरित्याग, अरहन्त्रभिक्त, वहुश्वनभक्ति, तथ, साधुसमाधिसंधारण, वैयाव्ययोग, प्रासुकपरित्याग, अरहन्त्रभक्ति, वहुश्वनभक्ति, वचनकासिक, प्रवचनवास्वलता, सचनवासावना और असीक्षण हानोपयोगपुक्तता, इनके विना छह आवश्यकोंमें निरित-चारता समभव ही नहीं है। इस कारण यह तीर्थंकर नामकर्मक वन्यका चतुर्थ कारण है।

क्षण-स्वयतिबुद्धतासे तीर्थंकर नामकर्म बंघता है-- क्षण और स्वयं कास्त्रविशेषके नाम हैं। सम्यग्दर्शन, झान, वत और शीस गुणोंको उज्ज्वस करने, मस्त्रको घोने अथवा जरु।नेका नाम प्रतियोधन और इसके भावका नाम प्रतियोधनता है। प्रत्येक क्षण व स्वर्मे होनेबासे प्रतियोधको क्षण-स्वप्रतिबुद्धना कहा जाता है। उस एक ही क्षण-स्वप्रतिबुद्धतासे

१ णामादीणं छण्हं अजीगपाविज्जणं तियरणेण । पश्चकक्षाणं णेयं अणागयं चागमे काले ॥ मूला २०० अनागतदीवापोहनं प्रत्यास्थानम् । त. रा. ६, २४, ११०

२ प्रतिषु 'सरीराहारासु ' इति पाठः ।

२ देवस्सियणियमादिछ जहुत्तमाणेण उत्तरकालिन् । जिणगुणधितणञ्जो काउस्सम्गो तण्डविसम्गो ॥ मूला. २८. परिमितकालाविषया सरीरे ममत्वनिबृष्ठिः कायोत्सर्गः। त. रा. ६,२४,११.

षंद्रो । एस्थ वि पुट्वं व सेसकारणाणमंतन्भावो दरिसेदच्वो । तदो एदं तित्वयरणा**मकम्म-**षंश्वस्स पंचमं कारणं ।

रुद्धिसंवेमसंपण्णदाए — सम्महंसण-णाण-चरणेसु जीवस्स समागमा रुद्धी णाम । हरिसो संतो संवेगो णाम । रुद्धीए संवेगो रुद्धिसंवेगो, तस्स संपण्णदा संपत्ती । तीए तित्ययर-णामकम्मस्स एक्काए वि बंघो । कथं रुद्धिसंवेगसंपयाए सेसकारणाणं संभवेग ? ण सेस-कारणेहि विणा रुद्धिसंवेगस्स संपया जुड्बदे, विरोहादो । रुद्धिसंवेगो णाम तिरयणदोहरुखो, ण सो दंसणिसुड्बदादीहि विणा संपुण्णा होदि, विपाडिसेहादो हिरण्ण-सुवण्णादीहि विणा अक्को च । तदा अपणो अंतीसिनसेसकारणा रुद्धिसंवेगसंपया छट्टं कारणं।

जहाथामे तहा तवे — चरो वीरियं थामे। इदि एयट्टो । तवो दुविद्दो बाहिरो अच्छं-तसे चेदि । बाहिरो अणसणादिओ, अच्मंतरो विणयादिओ। एसी सच्चे। वि तवे। वारसविद्दो । जहाथामे तहा तवे संते तित्थयरणामकम्मं बज्झह । कुदा ? जहाथामतवे सयरुसंसतित्थयर-

तीर्यंकर नामकर्मका वन्ध होता है। इसमें भी पूर्वके समान होग कारणोंका अन्तर्भाव विक्रलाना बाहिये। इसीलिये यह तीर्यंकर नामकर्मके वन्धका पांचवां कारण है।

लिधसंवेगसम्पन्नतासे तीर्थंकर कर्मका बन्ध होता है -- सम्यग्द्रांन, सम्यग्द्रांन और सम्यक्षारित्रमं जो जीवका समागम होता है उसे लिध्य कहत हैं; और हुई व सारिवक भावका नाम संवेग हैं। लिध्यसं या लिध्यमं संवगका नाम लिधसंवेग और उसकी समग्रकताका अर्थ संग्राप्ति है। इस एक ही लिध्यसंवगसम्पन्नतासं तीर्थंकर नामकर्मका क्य होता है।

शंका - लिधसंवेगसम्पदामें शेष कारणोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान — क्योंकि, रोप कारणोंके विना विरुद्ध होनेसे लिधसंवेगको सम्पदाका संयोग ही नहीं होसकता। इसका कारण यह कि रत्नत्रयजनित हर्पका नाम लिध्यसंवेग है। और वह वर्षनविध्यता(कोंके विना सम्पूर्ण होता नहीं है, क्योंकि, इसमें हिरण्य सुवर्णा-विकोंके विना धनाक्य होलेंके समान विरोध है। अन एव दोप कारणोंको अपने अन्तर्गत करनेवाली लिधसंवेगसम्पदा नीर्यंकर कमेवन्धका छठा कारण है।

शक्त्यनुसार तपसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— वल, वीर्य और थाम (स्थामन्) ये समानार्थंक शब्द हैं । तप दो प्रकार हैं— बाह्य और आश्यन्तर । इनमें अनशनादिकका नाम बाह्य तप और विनयादिकका नाम आश्यन्तर तप है । छह बाह्य एवं छह आश्यन्तर इस प्रकार मिळकर यह सब तप बारह प्रकार है । जैसा बळ हो बैसा तप करनेपर सीर्थंकर नामकर्म बंधता है । इसका कारण यह हैं कि यथाशकितपर्म तीर्थंकर नामकर्मक बन्धके

१ त्रतिपु 'अदो ' इति पाठः ।

कारणाणं संभवाहो, जदो जहाथामा णाम ओघवरुस्स धीरस्स णाणंदसणकठिदस्स होदि । ण च सत्य दंसणविसुञ्जदादीणममावो, तहा तवतस्स अण्णहाणुववसीदो । तदो एदं ससमं कारणं ।

साहूणं पासुअपरिचागदाए — अणंतणाण-दंसण-वीरिय-विरइ-खइयसम्मत्तादीणं साह्यां साहू णाम । पगदा ओसरिदा आसवा जन्हा तं पासुअं, अधवा जं णिरवज्जं तं पासुअं । किं ? णाण दंसण-चिरतादि । तस्स परिच्चागो विसञ्जणं, तस्स मान्नो पासुअपरिच्चागदा । दयायुद्धीए साहूणं णाण-दंसण-चिरतपरिच्चागो दाणं पासुअपरिच्चागदा णाम । ण चेंद्र कारणं घररथेसु संभवदि, तत्थ चरिताभावादो । तिरपणांवदेसो वि ण घरत्थेसु अरिथ, तेर्सि विद्विवादादिउवरिभसुत्तोवदेसणं अहियाराभावादो । तदो एदं क्याणं महेसिणं चेव होदि । ण च एश्य संसकारणाणमसंभवो । ण च अरहंतादिसु अभित्तमंते णवपदत्थविसयसहरूणेणुस्मुक्के सादिचारसीठ्यदे परिहणावासए णिरवज्जो णाण-दंसण-चरित्तपरिच्चागो संभवदि, विरोहादो । तदो एदमद्रमं कारणं ।

सभी रोप कारण सम्भव हैं, क्योंकि, यथाधाम तप हान-दर्शनसे कुक्त सामान्य बखवाब, और धीर व्यक्तिके होता है, और इसलिये उसमें दर्शनविग्रुद्धतादिकोंका अभाव नहीं होसकता, क्योंकि, पेसा होनेपर यथाधाम तप वन नहीं सकता। इस कारण यह तीर्यंकर नामकर्मकण्यका सातवां कारण है।

साधुओं के द्वारा विहित प्रामुक अर्थात् निरवध हान-दर्शनादिक के त्यागसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— अनत्तक्राल, अनन्तद्दर्शन, अनन्तवीर्थ, विरित और क्षायिक सम्यक्तवादि गुणांक जो साधक हैं वे साधु कहलाते हैं। अक्षां हे । वह हान, दर्शन व वारियादिक हो तो सह है। वह हो गये हैं उसका नाम प्रामुक है। वह हान, दर्शन व वारियादिक ही तो सकते हैं। अथवा जो निरवध है उसका नाम प्रामुक है। वह हान, दर्शन व वारियादिक ही तो सकते हैं। अथवा जो निरवध है उसका नाम प्रामुक परित्याग और इसके भावको प्रामुकपरित्यागता है। वह कारण प्रहस्थों सम्यव नहीं है, क्योंकि, उनमें वारियका नाम प्रामुकपरित्यागता है। वह कारण प्रहस्थों से सम्यव नहीं है, क्योंकि, उनमें वारियका अभाव है। राज्यवका उपदेश भी एहस्थों सम्यव नहीं है, क्योंकि, इष्टिवादादिक उपरिम श्रुतके उपदेश देवमें उनका अधिकार नहीं है। अत पब यह कारण महर्षियोंके ही होता है। इसमें शेष कारणोंकी असंभावना नहीं है, क्योंकि अरहत्तादिकोंमें भक्ति रहित, नी पदार्थविषयक अद्धानसे उम्मुक, सार्तिवार हील-वर्तोसे सहित और आवश्यकोंकी हीनतासे संयुक्त होनेपर निरवध कान, क्यांक व्यक्तिका परित्याग विरोध होनेसे सम्भव ही नहीं है। इसो कारण यह तीर्थंकर नामकर्म बन्धका आठवां कारण है।

१ अप्रतो 'बीरस्स ' इति पाठः ।

साहुणं समाहिसंवारणदाए— दंसण-णाण-चित्तेषु सम्ममन हाणं समाहि णाम । सम्मं साहुणं पारणं संवारणं । समाहीए संवारणं समाहिसंवारणता । ताए तित्यवरणामकर्ममं बच्चिति ति । केण वि कारणेण पर्दति समाहि दहुण सम्मादिही पवयण-वण्डले पवयणपहावओं विणयसंपणों सील-वदादिचारबिज्ञ ओं आरहेतादिसु भत्ते। संतो जिदि पेरेदि ते समाहिसंवारणं । कुदो एदमुवलक्मदे ? सं-सहपंजनणता । तेण बच्छिदि ति तुत्ते होदि । ण च एत्थ सेसकारणाणमभानो, तदस्थितस्स दिगिसदत्तादो । एवमेदं पवमं कारणं ।

साहुणं वेज्जावरूचजोगजुतदाए — व्यापृतं यत्क्रियते तहैयावृत्यम् । जेण सम्मत्त णाण-अरहेत-बहुसुदभत्ति-पवयणवर्छछादिणा जीवो छुज्जद् वेज्जावरूचे सी वेज्जावरूचनोगो देसण-विसुच्यदादि, तेण छुत्तदा वेज्जावरूचजोगजुत्तदा । ताए एवंविहाए एक्काए वि तिरथयरणामकम्मं वेषद् । एत्थ सेसकारणाणं जहासंभवेण अंतरुभावो वत्तत्वो । एवमेदं

साधुओंको समाधिसंधारणनासे तीर्थंकर नामकर्म बंधना है – दर्शन. झान व बारिकमें सम्यक् अवस्थानका नाम समाधि है। सम्यक प्रकारसे धारण या साधनका नाम संधारण है। समाधिका संधारण समाधिसंधारण और उसके भावका नाम समाधि-संधारणता है। उससे नीर्थंकर नामकर्म बंधना है। किसी भी कारणसे गिरती हुई समाधिको देखकर सम्यव्हीट, प्रवचनवत्स्मल, प्रवचनप्रभावक, विनयसम्पल, शील बना-तिकारवर्षित और अरहेनादिकोंमें माकमान होकर चूंकि उस धारण करना है इसीलियं वह समाधिसंधारण है।

शंका - यह कहांसे जाना जाता है ?

समाधान—यह 'संघारण' पदमें किये गये 'सं' दाव्यके प्रयोगस जाना जाना है। इस समाधिसंघारणसे तीर्थेकर नामकर्म बंधता है, यह अभिग्राय है। इसमें दोप कारणोंका अभाव नहीं है, क्योंकि, उनका अस्तित्व वहां दिखळा ही जुके हैं। इस प्रकार यह नीवां कारण हैं।

साधुओंको वैयावत्ययोगायुकतासे तीर्थकर नामकर्म बंधता है— ब्यापृत अर्थात् रोगादिसे व्याकुल साधुके विषयमें जो किया जाना है उसका नाम वैयाकुत्य है। जिस सम्यक्ष्य, हान, अरहन्त्रभक्ति, बहुकुनभक्ति एवं प्रवचनवत्सलत्यादिसे जीव वैयावत्यमें लगता है वह वेयावत्ययोग अर्थात् दर्शनविद्युक्ताते गुण हैं, उनसे संयुक्त होनेका नाम वैयावत्ययोगायुक्तता है। इस मकारकी उस एक ही वैयावत्ययोग-युकतासे तीर्थकर नामकर्म बंधता है। यहां शेष कारणोंका यथास-भव अन्तर्भाव कहना

१ प्रतिषु 'सीउवदादि ' इति पाठः ।

२ आ-काप्रत्योः ' पर्वजणादारेण बन्कादि ' इति पाठः ।

1 69

दसमं कारणं ।

अरहंतभत्तीए — खिंदचादिकम्मा केवल्णाणेण द्विदसम्बद्धा अरहंता णाम । अभवा, णिद्विदहकम्माणं घाइदघादिकम्माणं च अरहंतित्ति सण्णा, अरिहणणं पिंड दोण्डं भेदा-भावादो । तेसु भत्ती अरहंतभत्ती । ताए तित्ययरकम्मं बज्झह् । कथमेत्थ सेसकारणाणं संभवे ? बुच्चदे — अरहंतबुत्ताणुदाणाणुवत्तणं तदणुदाणपासो वा अरहंतभत्ती णाम । ण च एसा दंसणविस्तज्ज्ञदादीहि विणा संभवद, विरोहादो । तदो एसा एककारसमं कारणं ।

बहुसुदभत्तीए — बारसंगपारया बहुसुदा णाम, तेसु भत्ती - ते**हि वक्खाणिद-**आगमरथाणुवत्तर्ण तदणुडाणपासो वा – बहुसुदभत्ती । ता**ए** वि तिस्थयरणामकम्मं बज्ज्ञद्द, दंसणविसुज्ज्जदादीहि विणा एदिस्मे अमंभवादो । एदं बारसमं कारणं ।

चाहिये। इस प्रकार यह दृशायां कारण है।

अरहन्तर्भाक्तसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है-जिन्होंने घातियाकर्मोंको नष्ट कर केवल-हानके द्वारा सम्पूर्ण पदार्थोंको देख लिया है वे अरहन्त हैं। अथवा, आठों कर्मोंको दूर करदेनेवाले और घातिया कर्मोंको नए करदेनेवालोंका नाम अरहन्त है, क्योंकि कर्म-शक्त विवाशके प्रति दोनोंमें कोई भर नहीं है। (अर्थात् 'अरहन्त' शक्तक अर्थ सुंकि 'कर्म-शक्त नए करनेवाला' है, अत एव जिस प्रकार चार चातिया कर्मोंको नए कर देनेवाले स्वयोगी और अर्थोगी जिन 'अरहन्त 'शब्दके वाच्य हैं उसी प्रकार आठों कर्मोंको नष्ट कर देनेवाले सिद्ध भी 'अरहन्त 'शब्दके वाच्य होसकते हैं, क्योंकि, निरुक्त्यर्थकी अपेक्षा दोनोंमें कोई भर नहीं है। उन अरहन्तां में जो गुणापुरागकर भक्ति होती है वही अरहन्तभक्ति कहलाती है। इस अरहन्ताभक्तिये तीर्थंकर नामकर्म यंक्षता है।

शंका-इसमें शेष कारणोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान—इस दांकाका उत्तर देने हैं कि अरहन्तके द्वारा उपदिष्ठ अनुष्ठानके अनुकुछ प्रवृत्ति करने या उक्त अनुष्ठानके स्पर्शको अरहन्तमक्ति कहते हैं। और यह दर्शनविद्युद्धतादिकोंके विना सम्भव नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है। अतपव यह तीर्थंकर कर्मबन्धका न्यारहवां कारण है।

बहुश्रुतभक्तिसे नीर्थंकर नामकर्म बंधता है— जो बारह अंगोंके पारगामी हैं बे बहुश्रुत कहे जाते हैं, उनके द्वारा उपिदृष्ट आगमार्थके अनुकूठ प्रवृत्ति करने या उक्त अनु-ष्ठानके स्पर्श करनेका बहुश्रुतभक्ति कहते हैं। उससे भी तीर्थंकर नामकर्म बंधता है, क्योंकि, यह भी दर्शनविद्युद्धतादिक रोप कारणोंके विना सम्भव नहीं है। यह तीर्थंकर नामकर्मयन्यका बारहवां कारण है। पवयणभत्तीए — सिद्धंतो बारहंगाणि पवयणं, प्रकृष्टं प्रकृष्टस्य वचनं प्रवचनिमितं स्थुत्सतेः । तिन्दं भत्ती तत्थ पदुष्पादिद्रथाणुद्राणं । ण च अण्णहा तत्थ भत्ती संभवह, असंयुष्णे संयुष्णववहारिवेरेहादे । तीए तित्थयरणामकस्मं वज्झह । एत्थ सेसकारणाणमंतन्भावो वत्तत्त्वो । एकमेदं तिस्समं कारणं ।

पवयणवच्छल्दाए— पवयणं सिद्धंता बारहंगाइं, तस्य भवा देस-महन्बईणे। असंजद-सम्माइडिणो च पवयणा । कुदे। एस्य आकारस्य अस्सवणं ? 'एए छन्च समाणा 'चिं सुत्तेण आदितुङ्कीए क्यअकारतादो । तेसु अणुरागे। आकंखा मेमंदेभावो पवयणवच्छल्दा णाम । तीए तिस्थरकमं चज्ज्ञइ । कुदे। ? पंचमहन्बदादिआगमस्थविसयस्सुक्कडाणुरागस्स दंमणविसज्ज्ञदादीहि अविणाभवादो । तेणेदं चोहसमं कारणं ।

प्रवचनभक्तिसे तीर्थंकर नामकर्म वंधना है— सिद्धान्त या बारह अंगोंका नाम प्रवचन है, क्योंकि, 'प्रकृष्ट वचन प्रवचन, या प्रकृष्ट (सर्वेक्ष) के वचन प्रवचन हैं 'ऐसी ब्युत्पत्ति है। इस प्रवचनमें कह हुए अर्थका अर्गुष्टान करना, यह प्रवचनमें भक्ति कही जाती है। इसके विना अन्य प्रकारसे प्रवचनमें भक्ति काती है। इसके विना अन्य प्रकारसे प्रवचनमें भक्ति कामभ्य नहीं है, क्योंकि, असम्पूर्णें स्माप्तिक व्यवहारका विरोध है। इस प्रवचनमें भक्ति कामभ्य नहीं है क्योंकि। इस प्रवचनकित से नीर्थंकर नामकर्म वेधना है। इसमें शेष कारणोंका अन्तर्भाव कहना चाहिये। इस प्रकार यह तरहवां कारण है।

प्रवचनवन्सलतासे तीर्थेकर नामकर्म वंधना हे— सिद्धान्त या बारह अंगीका नाम प्रवचन है: इसमें होनेवाले देशवती, महावती और असंयतसम्यग्दिष्ट प्रवचन कहे जाते हैं।

र्शकाः—इसमें अकारका अवण क्यें। नहीं होता, अर्थात् 'प्रवचनमें होनेवाळे' इस विप्रहके अनुसार 'प्रावचन 'होना चाहिये, न कि 'प्रवचन '?

समापान—' अ, आ, इ. ई. उ. उ. ये छह स्वर और ए, ओ, ये दो सम्ध्यक्षर, इस प्रकार ये आठों स्वर अविरोध भावसे एक दूसरेके स्थानमें आदेशको मान्त होते हैं '। इस सुत्रसे आदि बुद्धिरूप आ के स्थानपर अ का आदेश हो गया है ।

उन प्रवचनों अर्थान् देशवती, महावती और असंयतसम्यग्दष्टियोंमें जो अनुराग, आकांक्षा अथवा 'ममेदे' बुद्धि होती है उसका नाम प्रवचनवस्तानता है। उसके तीर्थंकर कमें बंधता है। इसका कारण यह है कि पांच महाबतादिकए आगमार्थावेषयक उत्कृष्ट अनुरागका दर्शनविशुद्धतादिकांके साथ अविनाभाव है, अर्थात् उक्त प्रकार प्रवचनवास्तन्तता दर्शनविशुद्धतादि होष गुणोंके विना नहीं वन सकती। इसीलिये यह चौदहवां कारण है।

१ प्रवचनं द्वादशाङ्ग तदृपयोगानन्यत्वात्संघो वा प्रवचनम् । प्रवः पृः ८२.

२ एए क्रण्य संमाणा योण्णि अ संन्यसम्बद्धा सरा अह । अण्णोष्णस्मित्रिरोहा उत्रेति सन्त्रे समाएस 🌡 कसायपा**हुड** १, पृ. ३२६.

पवयणपदावणदाए— आगमइस्स पवयणमिदि सण्णा । तस्स पद्दावणं णाम वण्णाक्षणणं तन्त्रुक्किरणं च, तस्स भावा पवयणपदावणदा । तीए तिरथयरकस्म चन्त्रद, उक्कद्वश्वयणपदावणस्य दंसणविसः ज्ञादादीहि अविणाभावादो । तेणेदं पण्णरसमं कारणं ।

अभिक्खणमभिक्खणं णाणोवजोगज्ञत्तराए — अभिक्खणमभिक्खणं णाम बहुवार-मिदि भणिदं होदि । णाणोवजोगो ति भावसुदं दव्वसुदं वावेक्खदे । तेसु सुदुम्सुदुद्धतदाए तित्थयरणामकम्मं बच्चइ, दंसणविसुच्यदादीहि विणा एदिरसे अणुववत्तीदो । एदेहि सोल्सेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामकम्मं बंधति । अथवा, सम्महंसणे संते सेसकारणाणं मज्ये एग-दुगादिसंजोगेण बच्चदि' ति वत्तव्वं ।

जस्स इणं तित्थयरणामगोदकम्मस्स उद्रुण्ण सदेवासुर-माणुसस्स लोकस्स अन्वणिज्जा वंदणिज्जा णमंसाणिज्जा णेदारा धम्म-तित्थयरा जिणा केवलिणो हवंति ॥ ४२ ॥

प्रवचनप्रभावनासे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— आगमार्थंका नाम प्रवचन है, उसके वर्णंजनन अर्थात् कीर्तिवस्तार या बृद्धि करनेको प्रवचनकी प्रभावना और उसके भावको प्रवचनप्रभावनता कहें हैं। उससे तीर्थंकर कर्म बंधता है, क्योंकि, उत्कृष्ट भावको प्रवचनप्रभावनाका दर्शनविगुद्धतादिकोंके साथ अविनाभाव है। इसीलिय यह पन्द्रह्यों कारण है।

अभोक्ण अभीक्ण झानोपयोगयुक्ततासे तीर्यंकर कर्म बंधता है— अभीक्ण अभी-क्णका अर्थ 'बहुत वार 'है। झानोपयोगसे भावश्चत अथवा द्रव्यश्चतकी अपेका है। उन (भाव व द्रव्य श्वत) में बार बार उग्रक रहनेसे तीर्यंकर नामकर्म बंधता है, क्योंकि, दर्शनिविग्रुद्धतादिकोंके विना यह अभीक्ण अभीक्ण झानोपयोगयुक्तता बन नहीं सकती।

इन सोलह कारणोंसे जीव तीर्थंकर नामकर्मको बांचते हैं। अथवा, सम्यग्दर्शनके होनेपर रोग कारणोंमेंसे एक दो आदि कारणोंके संयोगसे तीर्थंकर नामकर्म बंचता है, ऐसा कहना चाहिये।

जिन जीवोंके तीर्थंकर नाम-गोत्रकर्मका उदय होता है वे उसके उदयसे देव, असुर और मनुष्य ठोकके अर्चनीय, वंदनीय, नमस्करणीय, नेता, धर्म-तीर्थंके कर्ता जिन व केवळी होते हैं ॥ ४२ ॥

र तान्येतानि बोडसकांशांणि सस्यम्यान्यंगांनांने व्यस्तानि समस्तानि च तांधेकतामकर्माखकांशांनि प्रकेतस्यानि । सः सिः ६, २४: तः रां. ६, २४, १३: तीर्थकतामकर्माण बोडस तत्कारणान्यमून्यनिकम् । स्वस्तानि समस्तानि च मनन्ति सञ्चान्यमानानि ॥ इ. पु. ३४, १४९. एते ग्रणाः समस्ता स्वस्ता ना तीर्थकरनाम्य आखना सम्ताति । त. पू. सान्य ६, २३.

तिस्थरणामगोदकम्मस्सेति एत्थ 'उदओ तेणित ' दोण्णं पदाणमञ्जाहारी कायच्यो, अण्णहा अत्याणुवरुंमादो । जस्स जेसि जीवाणं इणं एदस्स तित्थयरणामगोदकम्मस्स उदको तेण उदण्ण सदेवासुर-माणुसस्स रोगस्स अञ्चणिज्ञा ति संबंधो कायच्यो । चरु-चित्र-पुष्फ-फरु-मेश्व-ध्व-दीवादीहि सगमतिरगासी अञ्चणा णाम । एदाहि सह अइंद्रप्य-कप्परुक्त-महामद्द-सच्यदोमहादिमहिमाविहाणं प्जा णाम । तुहुं णिइवियहकम्मो केवरुणाणाण दिहसच्बहे। चम्सुम्बुह्सिइगोडीए पुडाभयदाणी सिद्धपिवारुओ दुइणिग्गहक्ते देव ति पसंसा वंदणा णाम । पंचहि सुईहि बिणिदचरुणेषु णिवदणं णमंसणं । धम्मो णाम मम्मद्रसण-णाण-चित्ताणि'। एदेहि संसार-सायरं तरंति ति एदाणि तित्थं । एदस्स धम्म-तित्थस्स कत्तारा जिणा केवरिणो णेदारा च भवंति ।

एवमोबाणुगमो समने।।

सूत्रमें ' तीर्थंकर नाम-गंशकर्मका' यहां ' उत्य' और ' उसमे ' हन दो पर्योका अध्याहार करना चाहिये, अन्यया अर्थंकी उपलब्धि नहीं होती । जिसके अर्थान् जिन जीव्येके, यह अर्थान् इस तीर्थंकर नाम गोजकर्मका उत्य होता है व उसके उदयसे देव, असुर एवं मृत्य्योसे परिपूर्ण लेकके अर्थनीय होता है, एसा सस्वस्थ करना चाहिये। चरु, बिल, एसा सस्वस्थ करना चाहिये। चरु, बिल, एसा सस्वस्थ करना चाहिये। चरु, बिल, पुष्प, कल, गम्थ, पृष और दींप आदिकोंस अपनी अर्थेत मिला प्रकाशित करनेका नाम अर्थना है। इसके साथ ऐन्द्रभ्यत, कल्यवृक्ष, महामह और सर्थनोस्पद्र, इत्यादि महिमा विधानको पृता करने हैं। आप अप कर्मोको नप्र करोग्याल, केवल्डानम समस्त पदार्थोंको देखनेवाल, प्राम्युल विराधेको गोधीम अभ्ययदान देनेवाल, शिप्परिपरिणल और दुष्टिनप्रहक्तियोल स्थानिक सामित्र करोगि विकास करोगि हो पांच मुण्यियं अर्थात संगोंस जिनेन्द्र देवके चरणोंमें गिरनेको नमस्कार कहते हैं। धर्मका अर्थ सम्यग्दर्शन सम्यग्रहान और सम्यग्हवारित है। चृकि इससे संसार-सामरको तरते हैं इसीलियं इन्हें नीर्थं कहा जाता है। इस धर्मनीयेके कर्ता जिन, केवली और नेता होने हैं।

इस प्रकार ओघानुगम समाप्त हुआ।

१ सददृष्टि-झान-वृत्तानि धर्म धर्मेश्वरा विद्. । र. श्रा ३

२ जं नाण-दंतप-परितमावजो तिव्यवस्थामावाजो । मवभावजो य तारेह तेण तं मावजो तित्ये ॥ विकेषाः १०३८.

आदेसेण गिदयाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु पंचणाणावरण-छदंसणावरण-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-इस्स-रिद-अरिद-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगिद-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जिरसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुन्वि-अगुरुल्हुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थिविहायगिद-तस-बादर-पज्जत-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहा-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेउज जसिकित-अजसिकित-णिमिणुच्चागोद-पंचेतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ४३॥

एदं देसामासियपुन्छ।सुतं, तेणेदेण सुद्दमन्वपुन्छ।ओ एस्थ वत्तन्वाओ । एवं पुन्छिदसिस्साणिन्छथजणणृहसत्तरसतं भणदि —

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्टी बंधाः। <mark>एदे बंधा</mark>, अबंधा णित्थ ॥ ४४ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, मामितद्धाणाणं चेव परूवणादो । तेणेदेण सूइदत्थाणं परूवणं

आंदराकी अपेक्षा गितमार्गणानुसार नरकगतिमें नारिक्रयोंमें पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, मातावेदनीय, असातावेदनीय, वारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रित, अरित, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, ओदारिक तैजम व कार्मण शरीर, समचनुरस्नसंस्थान, औदारिकश्चीरांगोपांग, वज्रषेभमंहनन, वर्ण, गन्ध, रम, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्पानुपूर्वी, अगुरुअलसुक, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगित, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक-शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आंदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उक्ष्वगोत्र और पांच अन्तराय, इन कर्मोका कौन वन्थक और कौन अयन्थक है ? ॥ ४३॥

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, इसी कारण इसके द्वारा स्वित सब पृच्छाओंको यहां कहना चाहिये। इस प्रकार पृच्छायुक्त शिष्यके निश्चयजननार्थ उत्तर सुत्र कहते हैं—

मिथ्यादृष्टिको आदि लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ ४४ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि, वह बन्धस्यामित्व और बन्धाध्वानका ही निकपण करता है। इसी कारण इसके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं — पांच झानावरणीय, कस्सामो — पंचणाणावरणीय-छंत्रणावरणीय-सादासाद-बारसकताय-हस्त-रिः अरदि-सोग-भय-दुर्गुछ-पिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगल्रहुअ-उवचाद-परषाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत पत्तेयसरीर-थिगाथिर-सुहासुङ-अजसिकत्ति-णिमिण-यंचेतराइयाणं एदेसि-मेल्य वंधोदयविन्छेद्रेश णारेय, विरोहाभावादे। । पुरिसवेद-मणुसगइ-आराल्यियसरिर-सम्बउरस-संद्र्यण-आराल्यियसरित्रओगोवंग -वज्जरिसहमयडण-मणुमगइपओग्गाणुपुव्य-पसन्धविद्यावगइ--सुमग-सुस्वर-आदेज्ज-जसिकति-उच्चागोदाणसुरओ एत्थ णारेथ चेव, विरोहादो। । तम्हा एरथ एदासु पयडीसु वंधोदयवोन्छेदाणं पुत्र्यापुज्वविचारो णारेथ।

पंचणाणावरणीय-चहुदंसणावरणीय-चिंविदयबादि-तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंघ-रस-फास-अगुक्तअरुकुअन्तस-बादर-पञ्जत-विराधिर-सुमासुभ-अजसकिति णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ भंषो । णिदा-पयळा-सादासाद-बारसक्ताय-हस्स-रिद-अरिद-मोग-भय-दुगुंछाओ सोदय परो-दएहि बच्छति, सन्वगुणहाणेसु परावचणोदयादो । उदयादं मिच्छाइहि असंजदसम्मादिहीसु सोदय-परोदण्हि बच्छह, विम्महगदीण् उदयाभावादो । सासणसम्मादिह-सम्मापिन्छादिहीसु सोदएण बच्छह, तेसि तथ उप्पतीए अभावादो । परपादुस्सास-पनेयसरीराणि मिच्छाइहि-

छह दर्शनावरणीय, सानावेदनीय, असानावेदनीय, वाराह कराय, हास्य, रिन, अर्सन, श्रीक, अय, जुगुस्ता, एवंसेन्द्रयज्ञानि, नेजल व कांग्रेण शर्मार, वर्ण, नण्य, राम, स्थर्म, अयुक्त, उपधात, एरवात, उरुवात, उरुवात, उरुवात, उरुवात, उरुवात, उरुवात, उरुवात, अरुवात, अयुक्त, अयुक्त, अयुक्त, अयुक्त, अयुक्त, त्रिक्टर, स्थर्म कांद्र विरोध नहीं है अर्थान् इनका वस्थादय-युक्तेष्ठद्र वधासभ्यव उत्त उपित गुणस्थानों होता है जो नरकानिमें सम्भव नहीं हैं। पुरुचेष्ठ, मुख्यानि, औन्तारिकशारीय, सम्भव नहीं हैं। पुरुचेष्ठ, मुख्यानि, औन्तारिकशारीयों व्यवस्थान अरुव्यनिमायोग्यायुव्यन्ति, मानस्वित्यन स्थापनिमायोग्यायुव्यन्ति, मानस्वित्यानीत, सुमान, सुस्य, आदेष, व्यवस्थानि और उच्चानेत्र, राम कांग्रेण, व्यवस्थानि और उच्चानेत्र, राम कांग्रेण व्यवस्थानि स्थापने स्थापनिमायोग्यायुव्यन्ति, मानस्वित्यानीत, सुमान, सुस्य, आदेष्य, व्यवस्थानि और उच्चानेत्र, राम कांग्रेण व्यवस्थानि स्थापने स्थापने

पांच कानावरणीय, बार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रपञ्जात, नजस व कामंण शरीर, वर्ष, गम्ब, रस, स्वर्त, अगुरुल्यु, बस, बहर, पर्यान, स्थिर, अस्थिर, गुप्त, अशुज्ञ, अस्वकारी, तिमण और पांच अन्तराय, इनका स्वोद्य वम्प है। निद्या, प्रचला, साला व असाता वेदनीय, बारक काया, हास्य, राते, अरति, श्रांक, प्रय और जुगुन्सा, य प्रकृतियां स्वोदय-परोहयते वेधता हैं, क्योंकि, इनका सब गुणस्थानोंम परिवर्तित उदय रहता है। व्याप्त, प्वत्र प्रकृतियां स्वोदय-परोहयते वेधता हैं, क्योंकि, श्रांक अस्वत्र प्रमुख्य स्वाद्य स्वाद्य परिवर्तित उदय रहता है। व्याप्त प्रकृति स्वाद्य परोहयते वंधती हैं, क्योंकि, श्रांक साम्यनिम्प्यास्थ अप्रकृति स्वाद्य स्वाद्य

श्रसंजद्यस्मादिद्वीसु सोदय-परोदएहि बज्बंति, अपज्जनकाठे एदेसिसुदयाभावादो । व्यवीर प्रेसेस्यस्तारस्य उपधादभंगो, विग्गहगदीए चेव उदयाभावादो । सेसेसु दोसु सोदएणेव पदार्सि संघो, तेसि तत्थ अपज्जनकाठाभावादो । पुरिसवेद-मणुसगइ-ओराठियस्तरिर-समचउरससंठाण-ओराठियस्तरिर-समचउरससंठाण-ओराठियस्तरिर-सोवान्य-वात्तरसंदाण-आराठियस्तरिर-सोवान्य-वात्तरसंदाण-आराठियस्तरिर-सोवान्य-वात्तरसंदाण-आराठियस्तरिर-सोवान्य-वात्तरसंदाण-वात्तर्याद्व-वात्तर्य-वात्तर्य-वात्तर्य-वात्तर्य-वात्तर्य-वात्तर्याद्व-वात्तर्य-वात्तर्याद्व-वात्तर्य-वात्व-वात्तर्य-वात्तर्य-वात्तर्य-वात्तर्य-वात्तर्य-वात्तर्य-वात्तर्

पंचणाणावरणीय-छंदसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुर्गृष्ठा-पंचिंदियजादि-ओराल्यि-तेजा-कम्मइयसरिर-ओराल्यिसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस फास-अगुरुगलहुग-उनथाद-परषाद--उस्सास-तम-वादर-पञ्जत-पत्तेयसरिर-णिमिण पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, णिरयगइन्डि णिरंतर-बंधितादो। सादासाद-हस्स-दि-अरिर-सोग-थिराथिर-सुमासुभ-जसिकित्ति-अजसिकतीणं सांतरो बंधो, सञ्चगुणदृणिसु पडिवक्सपयडीण् बंधुवलंभादो। पुरिसवेद-मणुमगइ-समचउरससंद्राण-वज्ञिरसहसंघडण-पसन्धविद्वायगइ-सुभग-सुस्सर-ओदेज्ज-मणुसगइपाओग्गाणुपुन्व-उज्चागोदाणं मिन्छादिदि-सासणसम्मादिद्वायाइ-सुभग-सुस्सर-अदेज्ज-मणुसगइपाओग्गाणुपुन्व-उज्चागोदाणं

प्रकृतियां मिध्यादि श्रीत असंयतसम्यादि गुणस्थानाम स्वोदय परोदयसे वंधती हैं, स्योंकि, अपयोंत्तकालमें इनका उदय नहीं रहता। विशेष इतना है कि प्रत्येकशरीरका बच्च उपधातक समान है, स्योंकि, केवल विश्वहगतिमें ही उसका उदय नहीं रहता। शेष दो गुणस्थानों में स्वोदयसे ही इतका बच्च हाता है, स्योंकि, शेष दें तीं गुणस्थान नारिकयोंके अपयोग्त-कालमें होते नहीं हैं। पुरुषवेद, मजुष्याति, औदारिकशरीर, समचतुरक्षसंस्थान, बौदारिकशरीरांगाएंगा, वक्षप्रसंदत्तन, मजुष्यात्रप्रायोगपुर्वी, मशस्तविद्वायोगित, सुप्रम, सुस्य, आदेय, यशकीर्ति और उच्चयोत्र महत्तविर्वेक वारों गुणस्थानोंमें परोदयसे ही सच्छ होता है, स्योंकि, नार्कश्योंक इनके उदयका विरोध है।

पांच ब्रात(वरणीय, छह दर्शतावरणीय, बारह कथाय, अय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय-जाति, औदारिक ते जस व कामण रारीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्रशं, अगुरुक्ष, उपघात, परधात, उरुक्वास, नस, बादर, पर्यात, प्रत्येकशारीर, निर्माण और पांच अन्तराय, हनका निगन्तर वन्ध्र है, क्योंकि, ये प्रष्ठतियां नरकगतिमें निरन्तर वंचती है। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुम, अगुम, यशकीर्ति और अयशकीर्ति प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध्र है, क्योंकि, सर्व गुणस्थानोंमें दनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध्र पाथा जाता है। पुरुष्वेष, मुख्यगित, समचतुरुक्षसंस्थान, वक्षपंमसंहचन, प्रशस्तविहायोगित, सुमग, सुस्यर, आदेय, मुख्यगितप्राचीम्यानुष्पी और उच्चगोज, हनका निश्यादि और सासादनसम्बन्धि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध्र है, क्योंकि, यहाँ इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध्र पाथा जाता है। विशेषता हतती है कि तीर्थकर मणुसगइपाओमगाणुपुच्वीणं मिच्छादिद्विस्हि तित्थयरसंतक्तम्मयिम्म णिरंतरे। वि वंषो सम्मदि । सम्माभिन्छादिद्विःअसंजदसम्मादिद्वीसु णिरंतरे। यंषो, एदासि पढिनक्वअपयडीणं वंधासानारे। ।

एदाओ पयडीओ वंधमाणभिच्छाइडिस्स चतारि सूलपञ्चया । णाणासमयउत्तरपञ्चया एक्संचास, ओरालिय ओरालियभिस्स-इत्थि-पुरिसपचयाणमभावादो । एगसमयजहण्णुकस्सपचया जहान्सेण दस अहारस । सासणस्य मूलपञ्चया तिण्णि, मिन्छताभावादो । णाणासमयउत्तर-पञ्चया चउचेतालीस, ओरालिय-ओरालियभिस्स-वेउन्वियभिस्स-कम्भइय-इत्थि-पुरिसपञ्च-याणमभावादो । एगसमयजहण्णुककसपञ्चया जहान्काण दस सतारम । मम्मामिन्छाइडिस्स मूलपञ्चया तिण्णि, मिन्छताभावादो । णाणासमयउत्तर-पञ्चया चालीस, ओषेषु पञ्चगसु अंतरालिय-इत्थि-पुरिसपञ्चयाणमभावादो । एगममद्वया तिण्णि, मिन्छताभावादो । एगमस्य इत्यत्या जहान्नमेण णव सोलस । असंजदसम्मादिइस्स मूलपञ्चया तिण्णि, मिन्छताभावादो । णाणासमयउत्तरपञ्चया वाएतालीस, ओषपञ्चएस भूलपञ्चया विष्य मिन्स-इत्थि-पुरिसपञ्चयाणमभावादो । एगमसमइय-जहण्णुकसपञ्चया जहान्नमेण णव सोलस ।

प्रहातिकी सत्ता रखनेवालं मिरवाशिष्ट जीवमें मनुष्यानि और मनुष्यानिप्रायोग्यानुपूर्वीका निरन्तर भी बच्ध पाया जाना है। सम्बामम्यादिष्टि और असंयनसम्बादिष्ट गुणस्थानोमें उक्त महातियोंका निरन्तर बच्ध है, क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बच्ध नहीं होता।

इन प्रकृतियाँको वांचनेवांछ मिध्यादृष्टि नारको जीवके मृत प्रत्यय चारों होन हैं। नाना समय सम्बन्ध उत्तर प्रत्यय इस्यावन होते हैं, क्योंकि, उनके औद्दारिक, औद्दारिक, अद्वार्गिक्ष, क्षेत्रिव, और पुरुष्येव, इन चार प्रत्ययाँका अभाव है। एक समय सम्बन्धी जान्य और उत्तरुष्ट मन्यय कासे दृश और अठाव होते हैं। ता सासादनसम्बन्ध उत्तर प्रत्यव तीन होते हैं, क्योंकि, उनके मिध्यात्वका अभाव है। नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्यव ब्वालीस होते हैं, क्योंकि, उनके प्रार्थात्वका अभाव है। नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्यव ब्वालीस होते हैं, क्योंकि, उनके प्रत्यादिक, आंद्रार्थिक मिश्र क्रांत्रिय, क्रांत्रिय, क्रांत्रिय, क्रांत्रिय, क्रांत्रिय, क्यांत्रिय, विक्रद्वार्वेत, क्यांत्रिय, क्यांत्रिय, क्यांत्रिय, क्यांत्रिय, व्यांत्रिय, नी और संस्थात्रिय, क्यांत्रिय, व्यांत्रिय, वी और संस्थात्रिय, क्यांत्रिय, विक्रद्वार्य, विक्रद्वार्य, वी क्यांत्रिय, नी और संस्थात्रिय, विक्रद्वार्य, विक्रद्वार्य, वी क्यांत्रिय, नी और संस्थात्रिय, क्यांत्रिय, विक्रद्वार्य, वी क्यांत्रिय, नी और

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सम्दासाद-बारसकसाय-पुरिस्वेद-हस्स-रदि-अर्राद-सोग-भय-दुगुंछ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंद्राण-ओरालियसरीर-अंगोवंग-बजिरसहसंपडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवधाद-परधादुस्सास-पस्तथिवहाय-गइ-तस-बादर-पञ्जत-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुम-सुभग-सुस्सर-ओदेञ्ज-जसिकित-णिमिण-पंचेतराइयाणि मिच्छाइडि-सासणसम्मादिडिणे दुगहसंज्ञ्लं, सम्मामिच्छाइडि-असंजदसम्मा-दिडिणो मणुसगइसंजुलं वंधीत, सेसगईणं वंधाभावादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओगगाणुपुन्नि-उच्चागोदाणि सन्त्रे मणुसगइसंजुलं वंध वंधित, सेसगईहि सह विरोहादो ।

एदार्सि सस्वासि पि पयडीणं बंधस्स णेरइया चेव सामी । बंधद्वाणं सुगमं । एदार्सि गेरइयाणं गुणद्वाणाणं चरिमाचरिमद्वाणेसु वंधवोच्छेदो णत्थि । सन्वपयडीणं बंधो सादि-अद्भवे, अणादि-सुवणेरइयाणमभावादो । अधवा, पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-मारसकसाय-भय-दुगुंछा-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुब-उबधाद-तेजा-कम्भइय-णिमिण-पंचतराइयाणं मिच्छाइद्विस्द् चउन्विद्दो बंधो, उवसमसेडीदो ओयरिय णिरयं पद्दिम्म सादि-अद्धवबंधदंसणादो । सेस-गुणद्वाणेसु युवं णत्थि, बंधवोच्छेद्मकुणमाणसासणादीणमभावादो । सेसपयडीणं बंधो सादि-

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता बेदनीय, बारह कथाय, पुरुगवेद, हास्य, रित, अरित, शोक, अय, जुगुल्सा, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक तैजल व कामण शरीर, समचतुरक्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, व अपंभसंहनन, वर्ष, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुरुषु, उपघात, परघात, उच्छवाल, प्रशस्तिवहायोगिनि, त्रस, बाद, प्रयोप्त, प्रयोकशरीर, स्थिर, अप्रक्रीत, आस, बादर, पर्योप्त, प्रयोकशरीर, स्थिर, अप्रक्रीत होमां अरीर पांच अन्तराय, इन प्रकृतियांको मिध्यादिष्ट एवं सासादनसम्यन्द्रष्टि हो [तिर्यंच और मजुष्य] गतियांसे संयुक्त बांधते हैं । सम्यगिमध्यादिष्ट और असंयतसम्यन्द्रष्टि मजुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनके शेष गतियोंका बन्ध नहीं होता। मजुष्यगति, मजुष्यगतिस संयुक्त वांधते हैं, क्योंकि, उनके स्था गतियोंका बन्ध नहीं होता। मजुष्यगति, मजुष्यगतिस संयुक्त वांधते हैं, क्योंकि, उनके शेष गतियोंका बन्ध विद्यातिसे संयुक्त ही बांधते हैं, क्योंकि, उनके शेष गतियोंका विरोध है।

इन सभी प्रकृतियोंके बन्धके नारकी जीव ही स्वामी हैं। बन्धाध्वान सुगम है। इन प्रकृतियोंका नारकियोंके गुणस्थानोंके चरम व अचरम स्थानोंमें बन्धव्युच्छेट्ट नहीं है। अर्थात् इन प्रकृतियोंका बन्धव्युच्छेट्ट नहीं है। अर्थात् इन प्रकृतियोंका बन्धव्युच्छेट्ट नारकियोंके सम्भव चार गुणस्थानोंमें नहीं होता। स्व प्रकृतियोंका बन्ध सादि-अष्ठ्य है, ब्यॉकि, अनादि और कुन नारिकेयोंका अभाव है। अथ्यात, पांच नानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कथाय, भय, जुगुस्ता, वर्णादिक चार, अगुक्कपु, उपघात, तैजस व कार्मण शरीर, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका सार, अगुक्कपु, उपघात, तैजस व कार्मण शरीर, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका सिध्याहिट गुणस्थानों वारों प्रकारका बन्ध है, क्योंकि, उपशामध्रेणीसे उतरकर नरकर्मे प्रविष्ट हुए जीवमें सादि व अध्रव बन्ध देशा जाता है। शेष गुणस्थानों में ध्रव बन्ध नहीं है, क्योंकि, बन्धव्युच्छेट्टकों न करनेवाले सासादनसम्यन्दिष्ट आदिकोका अभाव है। शेष

अड्वो चेव, अड्वबंधितादो ।

णिदाणिदा-पयलापयला-थीणिगिद्धि-अणंताणुवंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओगगाणुपुब्वि-उज्जोव-अप्पसत्थिविद्यागइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ४५ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अ**बंधा** ॥ ४६ ॥

सन्त्राणि षंपसामित्तसुत्ताणि देसामासियाणि ति दहन्त्राणि । तेणेदेण सुइदत्थपरूवणं कस्सामे। तं जहा— अणंताणुर्वधिचउक्कस्स वंधोदया समं वोन्छिज्जंति, सासणचिग्मसमयिम्म एदस्स समं वंधोदयवोच्छेदुवरुंभादो । थीणगिद्धितिय-इत्थिवद निरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउ-संठाण-चउसंघडण-क्सिरिक्खगइपाओग्गाणुपुन्त्रि-उज्ञोवाणं णिरयगदीण् उदओ णस्थि, विरोहादो ।

प्रकृतियोंका बन्ध सादि-अभ्रुव ही है, क्योंकि, व प्रकृतियां अभ्रुवबन्धी हैं।

निद्रा-निद्रा, प्रचल-प्रचल, स्त्यानगृद्धि, अनन्तातुषन्धी कोध, मान, माया, लेभ, श्लीवेद, तिर्यगायु, तिर्यमाति, चार संस्थान, चार संहनन, निर्यमातिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रश्नस्तिद्दायोगिति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इन प्रकृतियोंका कौन बन्यक और कौन अबन्यक है ? ॥ ४५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि चन्धक हैं। ये चन्धक हैं, श्रेष नास्की अ**चन्धक** हैं॥ ४६॥

बन्धस्वाभित्वके सब सुत्र देशामशंक हैं, ऐसा समझना चाहिय । इसी कारण इस सुत्रते स्वित अर्थकी प्रक्रपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— अनन्तानुविध्य-लतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें न्युच्छित्र होते हैं, क्योंकि, सासादनगुणस्थानके सरम समयमें अनन्तानुविध्यतुष्कका साथ ही क्योंद्रययुच्छेत्र पाया जाता है। स्यान-गृद्धि आदिक तीन, क्षोंबर, तिर्यमायु, तिर्यमाति, बार संस्थान, बार संहन्तन, तिर्यमाति-प्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनका नरकगतिमें उदय नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध तदेः यदासि पुष्पं पच्छा वा वंषोदयवोच्छेदविषारो णत्थि, संतासंताणं सण्यिकासविरोहारो । अप्यसंत्यविद्वायगर्-दुसग-पुस्सर-अणादेज्ज-णीषामोदाणं पुष्यं पंघो वोच्छिज्जदि पच्छा उदजो, सासणम्म णद्वषंषाणं असंजदसम्मादिद्विन्दि उदयवोच्छेदुवर्जमादी।

अप्यसंस्थविद्दायगङ्ग-दुस्सर-अणंताणुक्षेषिचउक्काणं सोदय-परोदएण वैधो, अखुवेदयनं तादो । णवरि अप्यसंस्थविद्दायगदि-दुस्सराणं सासणसम्मादिडिग्टि सोदओ चेवं अस्यि । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुन्व-उज्जाव-शीणगिद्धि-तियाणं परोदएलेव वेथो, एत्थ एदेसिमुदयामावादो । दुमग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं सोदएणेव वेथो, णरदण्य एदेसि पडिवक्खाणं उदयामावादो ।

थीणागिद्धितय-अणंताणुवंधिचउक्काणं णिरंतरां वंषो । इस्थिवेद-चउसंद्राण-चउसंघहण-उज्ञाव-अप्पसत्थिवद्वायगद्ः दुभग-दुस्सर-अणादेजाणं सांतरा वंषो, पिडवक्खपयिडवंधसंभवादा । तिरिक्खाउअस्स णिरंतरां वंषो, पिडवक्खपयिडवंधेण विणा वंधविरामुवरुंभादा । तिरिक्खगद्द-पाओग्गाणुपुच्चि-तिरिक्खगद्द-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरां वंषो, छसु पुढवीसु सांतरे। होद्दण् सत्तमपुद्धविक्टि णिरंतरेणेव वंधदंसणादो । जदि पिडवक्खपयिडवंधमस्सिद्दण थक्कमाणवंधा

है। इसीलिय इन प्रकृतियों के पूर्वमें अथवा पश्चात् बन्धोदयब्युच्छेदका विचार नहीं है, क्यों कि, सन् और असत् वस्तुके सिक्षकर्षका विरोध है। अप्रशस्तविहायोगित, तुर्भग, तुस्वर, अनोदेय और नीजगोजका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिष्ठ होता है, पश्चात् उदयः क्यों कि, सासादनगुणस्थानमें बन्धके नष्ट होजनेपर असंयतसम्यग्दार्ष्ट शुणस्थानमें इनका उत्रयस्यच्छेत्र पाया जाता है।

अमहास्तविहायोगति, दुस्वर और अनन्तानुवान्ध्रचलुष्कका स्वोदय-परोदयसे वन्ध्र होता है, क्योंकि, ये अध्रवोदयी प्रकृतियां हैं। विशेष इतना है कि अमहास्तविहायोगति और दुस्वरका सासादनसम्यग्दिष्ट गुणस्थानमें स्वोदय ही बन्ध होता है। तिथेगायु, तिथंगाति, चार संस्थान, चार संहनन, तिथंगातिप्रायोग्यायुपूर्वी, उद्योत और स्थानगृद्धित्रय, इनका परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनके उदयका अभाव है। दुर्भेग, अनादेय और नीचगोत्रका स्वोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, वाराकियोंकि, नाराकियोंकि

स्त्यानपृद्धि आदिक तीन और अनग्तानुबन्धिकनुष्कका निरन्तर बन्ध होता है। क्षींभेद, बार संस्थान, बार संहनन, उद्योत, अप्रशस्तिबहायीगति, दुभँग, दुस्वर और अनादेग, हनका सान्तर केन्ध्र होता है, भ्योंकि, इनकी मतिपक्ष मकृतियाँका बन्ध्र सम्मव है। तिर्थगातुक्का निरन्तर बन्ध्र होता है, भ्योंकि, इनकी मतिपक्ष मकृतियाँका बन्ध्र सम्मव है। तिर्थगातुक्का निरन्तर बन्ध्र होता है, भ्योंकि, तिर्पक्ष मकृतिक बन्ध्रेक बिना इसके कम्बक्की बिजानित पायी जाती है। तिर्थगातिमायोग्यानुपूर्वी, तिर्थगाति और नीवगोषका सान्तर-विरन्तर बन्ध्र होता है, भ्योंकि, छद्द पृथिवियोंमें इनका सान्तर बन्ध्र होकर सात्वर्षी पृथिवीमें निरन्तर कराये ही कन्य देका जाता है।

. सांतरचंघरपडी वुच्चिद तो उज्जोवस्स पिडवनस्ववंघरपडीए अणुज्जोवसस्त्वाए अमावादी उज्जोवेण णिरंतरबंधिणा होदव्वमध वंघविणासी अधि ति जिद सांतरत्तं वुच्चिद तो तित्थ-यराहारदुगाउआणं पि सांतरत्तं पसज्जदि ति ? एत्थ पिरहारो बुच्चदे— जं बुत्तं पिडवन्स्व-पदिबंधमस्त्रिक्ष्य धनकमाणवंघा सांतर्त्वाधि ति तं सांतरबंधीसु पडिवनस्वपयडिबंधाविणाभावं दृष्ट्य बुत्तं । परमत्यदे पुण एगसमयं वंधिद्ण विदियसमए जिस्से वंधविरामो दिस्सदि सा सांतरबंधपयडी । जिस्से बंधकाळों जहण्णो वि अंतोमुहुत्तमेत्तो सा णिरंतरबंधपयडि ति भेत्तव्वं।

पञ्चयपरूवणे कीरमाणे चउठाणियपयडिभंगो । णवरि तिरिक्खाउशस्स मिन्छाइडिम्डि एगुणवंचास पञ्चया, वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो ।

शंका—यदि प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका आश्रय करके बन्धविश्रान्तिको प्राप्त होनेवाली प्रकृति सान्तरवन्य प्रकृति कही जाती है तो उद्योतकी प्रतिपक्षसूत अनुयोत-स्वकप प्रकृतिका अभाव होनेसे उद्योतको तिरन्तरवन्यी प्रकृति होना चाहिये । अथवा बन्धका विनाश है, इस कारणसे यदि सान्तरता कही जाती है तो फिर तीर्थकर, आहारद्विक और आयु कर्मोंके भी सान्तरत्वाका प्रसंग आता है ?

समाधान—यहां उपर्युक्त शंकाका परिहार कहते हैं — प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका आश्रय करके बन्धविश्रान्तिको प्राप्त होनेवाली प्रकृति सान्तरवन्धी है. इस प्रकार जो कहा है वह सान्तरवन्धी प्रकृतियों प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धके शविनाभावको देखकर कहा है। वास्त्वमें तो एक समय वंधकर द्वितीय समयमें जिस प्रकृतिकी बन्धविश्वान्ति देखी जाती है वह सान्तरवन्ध प्रकृति है। जिसका बन्धकाल जधन्य भी अन्तर्मुहृतंमान्न है वह निरन्तरवन्ध प्रकृति है। प्रस्ता वाहिय।

प्रत्यवप्रकृषणां करते समय चनुस्थानिक (चार गुणस्थानोंमें बंधनेवाली) मृक्तियोंके समान ही मत्ययप्रकृषणा करना चाहिय । विशेष इतना है कि तियंगायुके मिथ्याहि गुणस्थानमें यहां उनंचास प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैकियिकसिश्च और कार्मण प्रत्ययोंका अनाव है।

१ प्रतिपु 'काला ' इति पाठः ।

[्] यासां त्रकृतीनां जरूपतः समयमात्रं नश्वः, उत्कर्षतः समयारात्यः यावदन्तमंतुर्तं न पतः, ताः सानतान्त्रः, अन्तर्भूद्रसेपान्येति सानता विश्ववद्यव्यान्तसादितो वन्त्रो यामां ताः सानता इति स्थ्रुत्वयेः । अन्तर्भूद्रसेपान्येत्राम् विश्ववस्यानंत्रमञ्जूषिनातिस्यतः सानतान्त्रम् इति कितार्थः । ××× जरूपनापि या अन्तर्भूद्रसे स्वित्यानं स्वत्यव्यान्त्रम् यास्यान्त्रम् यास्यान्त्रम् यास्यान्त्रम् स्वत्यवस्यान्त्रम् स्वत्यस्यान्त्रम् स्वत्यस्यान्त्रम् स्वत्यस्यस्य

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्माणुपुन्नि-उज्जोवाणि मिन्छाइहि-सासण-सम्मादिष्टिणो तिरिक्खगइसंज्ञतं वंधित । सेसाओ दुष्टाणपयडीओ दुगइसंज्ञतं वंधित । सम्बासिं पयडीणं गेरङ्या सामी । वंधदाणं वंधविणड्डाणं च सुगमं । शीणगिद्धितय-अर्थताणुकंधि-चउक्काणं मिन्छाइडिम्डि चउन्विहो वंधो । सासणे सादि-अद्भुवो । सेसाणं पयडीणं वंधो सादि-अद्भुवो चेव ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवद्रसरीरसंघडणणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ४७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ४८ ॥

एदेण सुइदरथाणं परूवणा कीरदे— मिन्छत्तस्स वंघोदया समं वोच्छिज्जंति, मिन्छाइडिचरिमसमए वंघोदयवोन्छेददंसणादो।णवंसयवेद-ढुंडसंटाण-असंपत्तसेवहस्तरासंघडण-णामाणं पुन्त्रं वंघो वोच्छिज्जदि पन्छा उदशे, मिन्छाइडिचरिमसमए णड्वंघाणमेदार्सि असंजदसम्मादिडिन्हि उदयवोन्छेदुवलंभादो । णवरि असंपत्तसेवहस्तरासंघडणस्स पुट्यावर-

तिर्यगायु, तिर्यगाति, तिर्यगातिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि यदं सासादनसम्यव्हि तिर्यगातिसे संयुक्त बांधते हैं। शेष द्विस्थान प्रकृतियोंको दो गित्रयांसे संयुक्त बांधते हैं। सब प्रकृतियोंके नारकी स्वामी हैं। वन्धाध्वान और बन्ध विन्नष्टर्यान सुगम हैं। स्त्यान्युद्धित्रय और अनन्तानुविध्यनुष्कका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकृत्का कर होता है। सासादनमें सादि और अधुव बन्ध होता है। शि प्रकृतियोंका बन्य सादि व अधुव ही होता है।

मिध्यात्व, नर्युसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपटिकाशरीरसंहनन नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ४७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष नारकी जीव अबन्धक हैं॥ ४८॥

इस सुत्रते स्वित अर्थोंकी प्रक्षणा करते हैं — प्रिध्यात्माछितका बन्ध और उदय दोनों एक साथ स्युच्छित्र होते हैं, क्योंकि, प्रिध्यादृष्टि गुणस्थानके चरम समयमें इसके बन्ध और उदयका जुड्छेद देखा जाता है। नयुंसकवेद, ष्रुण्डसंस्थान और असंप्रात्यस्यादिकाहारीरसंहनन नामकर्मोंका पूर्वमें बन्ध खुड्छित्र होता है, एखात् उदय क्यांकि, प्रस्थातस्य क्षिय क्षांकि क्षांक

वंबोदक्वोच्छेदविचारो णस्थि, वंधं मोत्तृण उदयाभावादो ।

मिन्छन्त-णबुंसयबेद-हुंडसंठाणांणं सोदःश्री बंघी । णबरि हुंडसंठाणस्स स-यरोदःश्री वि, विम्माहगदीए' तस्सुदयामावादो । असंपत्तसेवद्वसरीरसंघडणस्स परोदःश्री बंघो, तस्य संघ-ढणस्सुदयाभावादो । मिन्छनस्स णिरंततो वंघी, धुववंधित्तादो । सेसाणं तिष्णं सांतरो, एगसम्पण्णं षंधुवरमदंसणादो ।

पञ्चया चउडाणियपयडिपञ्चएहि समा। एदाओ पयडीओ चत्तारि वि हुगइसंख्तं बज्जंति । णेरङ्या सामी । [बंघदाणं] बंधविणडडाणं च सुगमं । भिच्छत्तस्स चडिन्बद्धो बंधो, धुनबंधितादो । सेसाणं सादि-अद्बो, धुनबंधिताभावादो ।

मणुस्साउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ४९ ॥ सम्बं

खपाटिकादारीरसंहननके पूर्व या पश्चात् यन्थोदयम्युच्छेर होनेका विचार नहीं है, क्योंकि, बन्धको छोड़कर वहां इसके उदयका अभाव है।

मिध्यात्व, नपुंसकवेद और हुण्डसंस्थानका सोदय बन्ध होता है। विशेष यह है कि हुण्डसंस्थानका बन्ध स्वोदय परोदयसे भी होता है, क्योंकि, विम्रहगतिमें उसका उदय नहीं दबता। असंमाप्तस्थाटिकाशारेसंहननका बन्ध परोदयसे होता है, क्योंकि, नगरिकामों संहननका उदय नहीं रहता। मिध्यात्वका बन्ध निरस्तर होता है, क्योंकि, वह कुकक्षिण मुक्ति है। होय तीन प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वह समयमें उनके बन्धका विश्वास होता है।

प्रत्ययोकी प्रक्रपणा चतुस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्ययोंके समान है। ये चारों ही प्रकृतियों हो गतियोंसे संयुक्त बंधती हैं। नारकी जीव स्वामी हैं। [बन्धाच्वान] और बन्धविनदृश्यान सुगम हैं। मिथ्यात्यमकृतिका बन्ध चारों प्रकृतिका होता है, क्योंकि, वह भुवबन्धी मकृति है। दोष प्रकृतियोंका साहि व अभुव बन्ध होता है, क्योंकि, ये भुवबन्धी नहीं है।

मनुष्यायुका कीन बन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ ४९ ॥ यह सुन सुराम है।

१ मामती 'गबीखं ' इति पाडः।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी बंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ५०॥

एदेण स्इद्त्यस्य पद्भवणं कस्सामा— एत्य षंघोदयाणं पुट्यावरवोच्छेदविचारो णित्य, वंघं मोतूण उदयामानादो । परोदएण वंघंति, णिरवमदीए मणुस्साउअस्स उद्बंबिरोहादो । णिरंतरं वंधंति, एगसमएण वंधुवरमाभावादो । सिच्छाइडिस्स एगूणवण्णपञ्चया, वेउ-व्यियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । सासणस्स चोहाठ असंजदसम्मादिडिस्स चालीस पञ्चया । सेसं सुगमं । मणुसगइसंद्धतं वंधंति । णेरइया सामी । वंधद्धाणं वंधविणहृहाणं च सुयमं । सारि-अद्धां वंधो, अद्धवंधित्तादो ।

तित्थयरणामकम्मस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ५१ ॥ सुगर्म ।

असंजदसम्मादिट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥५२॥ तित्थयरवंधस्स उदयादा पुट्टं पच्छा वोच्छेदो होदि ति सण्णिकासो णात्थि,तित्थयर-

निष्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतमम्यग्दृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, श्रेष नारकी जीव अबन्धक हैं॥ ५०॥

इस सुनसे सुनित अर्थकी प्रक्रपण करते हैं — यहां बन्ध और उन्यक्षे पूर्व या प्रधात व्युच्छेन होलेका विचार नहीं है, क्योंकि, बन्धको छोड़कर नाराक्षितीं इसके उदय नहीं रहता है। नारकी जीव इसे परीवसे होते हैं, क्योंकि, नरकातीती मुख्यपुर्व नहीं रहता है। नारकर वांध्रते हैं, क्योंकि, एक सामयमें इसके बन्धका विश्वाम नहीं होता। मिथ्याइष्टिके उनंचास प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, वैक्षियिकामध्य और कार्मक प्रस्था होते हैं। होण प्रस्थाव होते हैं। होण प्रस्थाव होते हैं। होण प्रस्थाव होते हैं। होण प्रस्थाव एक स्वाप्त है। मुख्यपुर्विक नारकी जीव मुख्यपतिस संयुक्त बांधते हैं। वारकी जीव स्वाप्ती है। इसका बच्च साहि व अध्यव होता है। इसका बच्च साहि व अध्यव होता है। इसका

तीर्थंकर नामकर्मका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ ५१ ॥ बह खुब खुगम है ।

असंयतसम्यग्दष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष नारकी अवन्धक हैं॥ ५२॥ तीर्थंकर मकृतिके बन्धका उदयसे पूर्व अथवा पब्चात् मुक्के**व होता है,** इस प्रकार स्सेन्युदयाशानादो । तेणेन परोदओ वंथो । णिरंतरो वंथो, एगसमएण वंथुनरमामानादो । पश्चया दंसणनिसुज्बदा लद्धिसंनेगसंपणणदा अरहंत-बहुसुद-पनयणभत्तिआदओं । मणुसगदिसंद्धत्तं । णेरहया सामी । वंथदाणं नंधनिणदृहाण च सुगर्म । वथो सादि-अद्धुवो, अद्भुववंधितादो ।

एवं तिसु उवरिमासु पुढवीसु णेयव्वं ॥ ५३ ॥

एदं बंधसामित्तं [सामण्णं] पहुच्च उत्त । विसेतं पुण अवलंबिज्जमणे भेदो अरिष । तं भिणस्तामो— मणुसगइ-मणुसगइपाओगगाणुपुर्जीण सांतर-णिरंतरो मिच्छाइडिम्हि पढमाए पुढनीए अंधी णरिष, सांतरो चेव; तित्यवरतंतकामियमिच्छाइडीणमभावादो । विदियदंडयम्हि [तिरिक्ख-गइ-] तिरिक्खगइपाओगगाणुपुर्जी-णीचागोदाण सांतर-णिरंतरो वंधो णरिष, सांतरो चेव, सत्तम-पुढिव सुबा अण्णस्य णिरयगदीए एदासि णिरंतरवधाभावादो । एसो भेदो पढम-विदिय-तिदयपुर्वीसु उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणमसंजदसम्मादिडिम्हि सोदओ चेव वंधो, तत्य अपज्जतकाले असंजदसमाइडीण अभावादो । मणुसगइदुग तित्थयरमत-

तुलना यहां नहीं है, क्योंकि, नीर्थंकर प्रकृतिका यहां नार्तक्योंमे उदय नहीं होता । इसी कारण इसका परोदयसे बन्ध होना है। बन्ध इसका निरन्तर होना है, फ्योंकि, एक समर्पये इसके बन्धका विश्वाम नहीं होना। इसके प्रत्यय दर्शनविश्वद्धता, लिख सबेग सम्प्रका, अरहन्तमिक, बहुश्रुतमिक ओर प्रवचनमक्ति आदिक हैं। मनुष्यानिसं संयुक्त इसका बन्ध होना है। नारकी जीव स्वामी है। बन्धाध्वान और यन्ध्यिनपृश्यान सुगम हैं। इसका बन्ध सोता दे अधुव होना है, क्योंकि, यह अधुवबन्धी प्रकृति है।

इस प्रकार यह व्यवस्था उपरिम तीन पृथिवियोमे जानना चाहिये॥ ५३ ॥

यह बन्धस्वामित्व [सामान्यको] अपेक्षासं कहा गया है । किन्तु विशेषनाका अवलम्बन करनेपर भेद है । उस कहत है — मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध प्रथम पृथिवीमें मिण्यादिष्ठ गुणस्थानमें सान्तर तिरन्तर नहीं है, किन्तु सान्तर हों है, क्यें क्यां त्रीं प्रवेकत प्रकृतिक सम्यवाले मिण्यादिष्ठ नारको जीव नहीं होने है । द्वितीय क्यां त्रीं प्रवेकत प्रकृतिक सम्यवाले मिण्यादिष्ठ नारको जीव नहीं होने है । द्वितीय क्यां त्रीं होते हैं । त्वितीय क्यां त्रीं के सान्तर तिरन्तर क्या नहीं होता, किन्तु सान्तर ही होता है, क्योंकि सत्तम पृथिवीको छोड़कर अन्यव नरकानिमें हन मकृतियोंके तिरन्तर क्यां का आव है । यह भेद प्रथम, दिनीय और तृतीय पृथिवियोंमें उपघात, प्रथम, दिनीय और प्रतीय पृथिवियोंमें उपघात, प्रथम, उक्तिय और प्रतीय पृथिवियोंमें उपघात, प्रथम, त्री क्यां का अस्यतसम्यव्हि गुणस्थानमें स्वीद्य ही वन्य होता है, क्योंकि, वहां अपर्यान्तकालमें असंयतसम्यव्हिष्टियोंका असाव है। मनुष्यगति और

कम्मियमिच्छाइट्टीणं णिरंतरं, सेसाणं सांतरं। असंजदसम्मादिटिस्स चालीस पच्चया, वेउन्त्रिय-मिस्सकम्मद्वयपच्चयाणमभावादो । एतिओ चेव भेदो, णस्य अण्णस्य कस्य वि ।

चउत्थीए पंचमीए छट्टीए पुढवीए एवं चेव णेदव्वं । णविर विसेसो तित्थयरं णित्थं ॥ ५४ ॥

तित्थयरस्स बंघो किमिदि णत्थि ति उत्ते तित्थयरं बंधमाणसम्माइडीणं मिच्छत्तं गंतूण तित्थयरसंतकम्मेण सह बिदिय-तदियपुढवीसु व उप्पञ्जमाणाणमभावादो । एदेणेव कारणेण मणुसगइदुगं मिच्छादिडी सांतरं बंधइ । णत्थि अण्णो भेदो ।

सत्तमाए पुढवीए णेरइया पंचणाणावरणीय छदंसणावरणीय-सादासाद चारसकसाय पुरिसवेद-हस्स रदि अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि ओरालिय तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरा-

मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी तीर्थंकर मक्तिकी सत्तावाले मिथ्यादृष्टियोंके निरन्तर बंधती हैं, रोप नाराकियोंके सान्तर बंधनी हैं । असंयतनमध्यदृष्टिके चालीन प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, विकिथिकामिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका यहां अभाव है । इनना ही भेद है, अन्यत्र कहीं और कोई भेद नहीं है ।

चतुर्थ, पंचम और छठी पृथिवीमें इसी प्रकार जानना चाहिये। विशेषता केवल यह है कि इन पृथिवियोंमें तीर्थंकर प्रकृति नहीं है। । ५४॥

शंका---नीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध यहां क्यों नहीं होता?

समाधान — इस इांकाके होनेपर उत्तर देते हैं कि जिस प्रकार तीर्थंकर प्रकृतिको यांघनेवाले सम्यगुद्धि जीव मिथ्यात्वको प्राप्त होकर तीर्थंकर प्रकृतिकी सत्ताके साथ ब्रितीय तृतीय पृथिवियोंमें उत्पन्न होते हैं वेल इन पृथिवियोंमें उत्पन्न नहीं होते। इसी कारण ने ही सनुष्याति और सनुष्यातिप्रायोग्यानुपूर्वीको मिथ्याद्याप्टि सान्तर बांधते हैं। और कोई सेट नहीं है।

सातवीं पृथिवीके नारिकयोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता और असाता वेदनीय, वारह कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, श्लोक, भय, खुगुप्सा, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्नसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग,

श्वस्मे तित्व बंघदि बसामेघाण पुण्णगो तेव । गो. क १०६. पकाइसु तित्वयरहाँणो । क. म्र. ३, इ. इ. इं. १४.

ठियसरीरअंगोनंग-वज्जरिसहसंघडण वण्ण गंध-रस-फास-अगुरुवऌडूव-उवचाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविद्दायगइ-तस-बादर-पज्जत-पत्तेयसरीर⊸ थिराथिर-[सुद्दा-] सुइ-सुगभ-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिभिण-पंचं-तराइयाण को बंधो को अबंधो? ॥ ५५ ॥

सुगमं ।

मिच्छादिट्टिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्टी बंधा । एदे बंधा, अबंधा णिय ॥ ५६॥

एदेण देसामासियसुनेण सुइदन्थपरुवणं कस्सामो — एत्थ उदयादो बंधो पुच्चं पच्छा वा बोच्छिणो ति विचारो णित्थ, एत्थ तस्स असंभवादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणा-वरणीय-चिव्रत्यजाद-तेजा-कम्मइय-चण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुग-तस-बादर-पञ्जत-थिरा-थिर-सुभासुम-अजसिकित-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एदेसिं धुबोदयत्तादो । णिदा-पयल्य-सादासाद-बारसकसाय-इस्स-रि-अरिद-सोग-अय-दुगुंछाणं सोदय-परोदओ बंधो, अदुबो-द्वयत्तादो । उचाद-परावद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइहिम्हि सोदय-परोदओ बंधो । सेसेसु

बर्ज्रषभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्ध, अगुरुरुष्ट, उपघात, परवात, उच्छ्वाम, प्रशस्तविद्यायो-गति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥५५॥

यह सूत्र सुगम है।

मिध्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यन्दृष्टि तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अवन्धक नहीं हैं॥ ५६॥

हस देशामर्शक स्वत्रे हारा स्वित अर्थकी प्रक्रपणा करते हैं— यहां उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चान् खुव्छिब होता है, यह विचार नहीं है; क्योंकि, यहां उसकी सम्माधना नहीं है। पांच बानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेट्टियजाति, तैज्ञस व कामेण शरीर, वर्ण, रान्स, रार्य, अर्थक्ष्य, अर्थ, त्यार, पर्याप्त, हिसर, अस्थिय, प्रमुक्त अर्थ, त्यार, पर्याप्त, हिसर, अस्थिय, हुम, अयशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तराय, हनका स्योद्य वन्ध होता है, क्योंकि, ये खुवेद्यों प्रकृतियां हैं। निद्रा, प्रचल, साता व असाता वेदनीय, बारह कमाय, हास्य, रति, अरति, शोक, अर और अर्थ, देश होता है, क्योंकि, वे अधुवेदायी प्रकृतियां हैं। उपधात, पर्यात, उच्छ्वास और प्रस्केक्शरीर, इनका मिरधा

सोदब्रो चेव, तेसिमेत्य अपञ्जतकाले अभावादो । पुरिसवेद-ओरालियसरीर-समचउरससंद्राण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वञ्जरिसहसंघडण-पसत्थिविद्दायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेञ्ज-जसिकत्तीणं फोटओ वंगो. एदेसिमदयस्स एत्थ विरोहादो ।

पंचणाणावरणीय-खदंसणावरणीय-बारहकसाय-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादिः -जोरालिय-तेजा-कम्मइयससिर ओरालियसरीरअंगोवंग-वण्णचउनक-अगुरुवल्द्धव-उवधाद-परधाद-उरसास-तस-बादर-पञ्जन-पत्तेयसरीर-णिमिण पंचेतराइयाणं णिरंतरा वंधो, एख धुववंधितादो । सादा-सादः इस्स-रिद-अरदि-सोग-थिराथिर-सुभासुभ-जसिकतिः अजसिकत्तीणं सांतरा वंधो, सव्वगुण-ट्ठाणेसु पदासिमेगाणेगसमयवंधसंभवादो । पुरिसवेद-समचउरससंठाण-वज्जिरसहसंघडण-यसस्य-विद्वायगर्-सुभग सुस्सर-आदेज्जाणं मिन्छादिष्टि-सासणसम्मादिडीसु सांतरां वंधो, एगाणेग-समयवंधसंभावादो । सम्मामिन्छादिष्टि-असंजदसम्मादिडीसु णिरंतरां वंधो, पडिवक्खपयडीणं वंधाभावादो ।

एदाओ पयडीओ बंधंतमिच्छाइहिस्स मूलपच्चया चत्तारि । णाणासमयउत्तरपच्चया

हा शुणस्थानमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है। शेष गुणस्थानों में स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, मिथ्यादिकों छोड़कर शेष गुणस्थान यहां अपर्याप्तकालमें नहीं होते। पुरुषवेद, औदारिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वक्कर्षमसंहनन, प्रशस्तिवहायोगित, सुमग, सुस्यर, आदेय और यशकीर्ति प्रकृतियोंका परोदय कथा होता है, क्योंकि, हनके उदयका यहां विरोध है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कपाय, भय, जुगुप्सा, पंचेन्द्रिय-जाति, औदारिक तैजस य कामण शरीर, औदारिकशरीरांगे।पांग, वर्णादिक चार, अगुरु-छप्तु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रस्, श्वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, य प्रकृतियां यहां ध्रुवयन्धी हैं। साता व असाता चेदनीय, हास्य, रति, अराति, शोक. स्थिर, अस्थिर, शुअ, अशुअ, यशकीर्ति और अयशकीर्ति प्रकृतियांका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सब गुणस्थानोंमें इनका एक और अनेक समय तक बन्ध सम्भव है। पुरुष्वर, समचनुरक्तसंश्यान, वक्ष्यंभसंहनन, प्रशस्तिविद्यायाति, सुअन, सुस्वर और अद्येय, इन प्रकृतियांका निध्यादिष्ट व सासावन-सम्पन्दिष्ट गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनका एक अनेक समय तक बन्ध सम्भव है। सम्यगिमप्यादिष्ट और असंयतसम्यन्दिष्ट गुणस्थानोंमें उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष मकृतियोंके बन्धका असाव है।

इन प्रकृतियोंको बांधनेवाले मिथ्यादृष्टि नारकीके मूल प्रत्यय चार, नाना समय

प्तकनंचास । एगसमद्द्यजहण्णुकस्तपुरच्या दस अद्वारत । सावणसम्मादिद्विस्स मूल्यच्या तिभिष्य, पाणासमयउत्तरपुच्चया चउवेत्तालीत, एगसमयजहण्णुकस्तपुरच्या दस सत्तारस । सम्माभिच्छादिद्वि-असंजदसम्मादिद्वीसु मूलपुच्या तिभिषा, उत्तरपुच्चया चालीस, एगसमय-जहण्णुक्कस्तपुच्चया णव सोलस ।

एदाओ सन्वरयङ्गीओ मिच्छाहिः-सासणसम्मादिङ्गिणो च तिरिक्खगङ्गसंज्ञतं त्रंभंति, सम्माभिच्छादिङ्गि असंजदसम्मादिङ्गिणा मणुसग्दमंज्ञत्तपुभयत्थ अण्णगर्दणं वंधाभावादो । णेरह्या सामी । वंधद्माणं वंधविणङ्काणं च सुरामं । पंचणाणावरणीय-छदंमणावरणीय-वारस-कसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फाय-अगुरुअल्ड्अ-उवघाद-णिमिण-पंचेतरा-इयाणं मिच्छाहिङ्गिः चउल्विहा वंघो धुववंधित्तादो । समगुणहाणेसु धुववंधो णित्थ, वंधवोच्छेदमकुणमाणसासणादीणमभावादो । अवसमाणं पयङीणं वंधो सन्वगुणहाणेसु सादि-अङ्बो, अङ्ववंधित्तादो ।

सम्बन्धी उत्तर प्रत्यय इक्यावन, नथा एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्छष्ट प्रत्यय दश और भंडाएड होने हैं। सासादनसम्बन्धिक मृत्य प्रत्यय नीन, नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्यय खबाळीस और एक समय सम्बन्धी जघन्य व उन्छप्ट प्रत्यय दश और सत्तरह होने हैं। सम्बन्धियायाडप्रि और अनंबनसम्बन्धि पुणक्शानीम मृत्य प्रत्यय नीन, उत्तर प्रत्यय चालीस, नथा एक समय सम्बन्धी जघन्य व उन्छप्ट प्रत्यय नी और मोत्रह होते हैं।

इन सब प्रकृतियोंको मिथ्याद्दष्टि और सामादनसम्यद्धि तिर्यगातिसे संयुक्त बांघते हैं, तथा सम्यामध्यादिष्टि और असंयतसम्यद्धिए मनुष्यगतिसे संयुक्त बांघते हैं, क्योंकि, दोनों जगह अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है। नारकी जीव इनके बन्धके स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनप्रस्थान सुगम हैं।

पांच झानावरणीय. छह दर्शनावरणीय, वारह कपाय, भय, जुगुप्सा, नेजस च कामण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुल्यु, उपधान, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका सिध्याद्य गुणस्थानमें चारी प्रकारका वन्य होता है. क्योंकि, ये धुववनथी प्रकृतियां हैं। शेष गुणस्थानोंमें धुव वन्ध नहीं है. क्योंकि, इनके वन्धशुच्छेदकों न करनेवाले सासादन सम्यन्दिध आदिकोंका अभाव है। शेष प्रकृतियांका बन्ध सब गुणस्थानोंमें सादि और अधुव होता है, क्योंकि, वे मकृतियां अधुवयन्धी हैं।

१ प्रतिपु 'म्रूरुपयर्जा ' इति पाउः।

९ प्रतिपु 'मिण्डाइड्वाहि ' इति पाठः ।

णिहाणिहा-पयलापयला-थीणागिद्धि-अणंताणु**वंधिकोथ-माण-**माया-लोभ इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्**खगइ-**पाओगगाणुपुञ्जी-उज्जोव-अप्पसत्थिवहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ?॥ ५७॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी सामणसम्माइट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ५८ ॥

एदस्स अत्थो उच्चेट् — अणंताणुर्वाधचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणे चेव देण्णं वोच्छेद्धवलंभादो । अपसत्थविद्दायगइ-दुभग-दुस्सर-अणारेंडज-णीचागोदाणं पुट्वं वंधो पच्छा उदओ वोच्छिडजदि, सासणसम्मादिद्विन्द्वं वंधे वोच्छिण्णे संते पच्छा असंजद-सम्मादिद्विन्द्वं उदयवोच्छेदुवलंभादा । थीणगिद्धितय-इस्थिवेद-तिस्क्बगइ-चउसंद्वाण-चउ-

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तातुबन्धी कोध, मान, माया, लोभ, स्रीवेद, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यातुष्ट्वी, उद्योत, अप्रशस्त-विहायोगति, दुर्मग, दुस्वर, अनादेय ओर नीचगोत्र, इन प्रकृतियोंका कौन बन्धक और कीन अवन्यक हैं? ॥ ५७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादिष्ट और सासादनसम्यग्दिष्ट बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष जीव अवन्धक हैं॥ ५८॥

इस सुत्रका अर्थ कहते हैं — अनन्तानुविश्वचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथ न्बुच्छिक्ष होते हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें ही दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है। अप्रशस्तविद्यायोगति, बुर्मग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इनका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिक्ष होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दि गुणस्थानमें बन्धके व्युच्छिक्ष होजानेपर तत्पश्चात् असंयतसम्यग्दि गुणस्थानमें उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। स्यानगृद्धि आदिक तीन, सौबेद, तिर्यगाति, वार संस्थान, वार संहमन, तिर्यगातिमाको-

१ अ आप्रत्योः ' असंजद विद्वीहि ', काप्रती ' असंजवसम्माहद्वीहि ' इति पाठः ।

संघष्टण-तिरिक्खगद्दपाओग्गाणुपुन्ती-उज्जोनाणं पुन्तं पच्छा बंधोदयनोच्छेदनिचारां णरिथ, एदासिमेत्थ उदयाभावादो ।

अणंताणुर्वधिचउक्कस्स सोदय-परोट्रण वंघो, अद्ध्वोदयत्तादो। अप्पसत्यविद्यायगर्-दुस्सराणं मिच्छाद्द्विस्ह सोदय-परोट्रण वंघो, अपञ्जतकारुं एदासिमुद्रयाभावादो । सासणे सोद्र्यणेव वंघो, तस्सेत्य अपञ्जतकारुभावादो । दुभग-अणादेञ्ज-णीचांगोदाणं सोद्रएणेव वंघो, धुवोदयत्तादो । थीणगिद्धितिय-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंग्रण-चउसंप्रडण-तिरिक्खगइ-पाओग्गाणुपुन्ती-उज्जोवाणं परोद्रएणेव वंघो । कुदो ? विस्ससादो ।

र्याणिगिद्धितिय-अर्णताणुवंधिचउनक-तिरिक्खगड्-तिरिक्खगड्पाओग्गाणुपुट्यी-णीचा-गोदाणं णिरंतरा वंधो । कुदे। ? एत्य धुववंधितादो । सेसाणं सांतरा, एगसमण्ण हिं वंधवोच्छे-दुवरुंभादो । पन्चया चुउद्दाणपयडिपन्चयसमा । एदाओ सम्वपयडीओ तिरिक्खगड्संजुत्तं वंधति । जेरङ्या सामी । वंधद्धाणं वंधविणद्वद्वाणं च सुगमं । थीणगिद्धितय-अर्णताणुवंधि-चउक्काणं भिच्छाइद्विरिद्द चउन्विद्दो वंधो, धुवयंधितादो । सासणिग्म सादि-अद्धवो । सेसाणं

ग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनके पूर्वमें या पश्चात् बन्धोदयब्युच्छेद होनेका विचार नहीं हैं, क्योंकि, यहां इनके उदयका अभाव है।

अनन्तानुबन्ध्यनुष्कका स्योदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, व अधुवोदयी हैं। अवसस्तविहायोगति और दुस्यरका सिष्याद्दिए गुणस्थानमें स्वोदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, अपयोन्तकालमें इनका उदय नहीं रहता। सासादन गुणस्थानमें स्वोदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, अपयोन्तकालमें आवा स्वोदयसे ही इतका बन्ध होता है, क्योंकि, इस गुणस्थानका यहां अपयोन्तकालमें आवा है। दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्र, इनका स्वोदयसे ही यन्ध होता है, क्योंकि, ये महतियां धुवोदयी हैं। स्थानपृत्वी आदिक तीन, स्रावेद, तिर्थगाति, बार संस्थान, चार संहनन, तिर्थगातिमायोगपानुपूर्वी और उद्योत, इनका परोदयसे ही वन्ध होता है। इसका कारण स्वमान ही है।

स्त्यानमृद्धि आहिक तीन, अनन्तानुयिध्यनुष्क, तिर्यमाति, तिर्यमातिमायाग्यानु-पूर्वी और नीवगोत्र, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां वे ध्रुवबन्धी हैं। होष मकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंके, एक समयसं इनका बन्धन्युञ्छेद पाया जाता है। प्रत्यमंकी प्रत्याचा बनुस्थानिक प्रकृतियोंके समान है। इन सब मकृतियोंको तिर्यमानिसे संयुक्त बांधते हैं। नारको जीव इनके बन्धके स्वामी हैं। बन्धान्यान और बन्धविकस्थान सुनाम हैं। स्यानमृद्धि आदिक तीन और अनन्तानुविध्यनुष्कका मिध्यादिष्ट गुणस्थानमें बारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी प्रकृतियां हैं। सासादनगुणस्थानमें

१ प्रतिषु ' हि ' पदं नोपलम्यते, मप्रती तु समुपलम्यते तत् ।

पयडीणं बंधो सञ्बत्य सादि-अद्भुवो, अद्भुवबंधितादो ।

मिच्छतः णवुंसयवेद-तिरिक्खाः हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीर-संघडणणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ५९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ६० ॥

एदस्स वक्खाणं णिरओघएगड्डाणियैवक्खाणतुल्लं । णवरि तिरिक्खगड्संजुत्तं बंधदि ति वत्तव्वं ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुन्वी-उच्चागोदाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ६१ ॥

सुगमं ।

सादि व अधुव बन्ध होता है। रोप प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र सादि व अधुव होता है, क्योंकि, वे अधुवबन्धी हैं।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तमृशटिकाशरीरसंहनन प्रकृतिर्योक्ता कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ५९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ६०॥

इस सुत्रका व्याख्यान नारकसामान्यकी एकस्थानिक प्रकृतियोंके व्याख्यानके समान है। विशेष इतना है कि [यहां सातवीं पृथिवीमें]तियंगातिसे संयुक्त बांघते हैं, ऐसा कहना चाहिये।

सनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र प्रकृतियोंका कौन बन्धक और कौन अथन्यक है ? ॥ ६१ ॥

यह सूत्र सुगम है।

१ प्रतिषु ' एगद्वाणाणिय- ' इति पाठः ।

सम्मामिन्छाइट्टी असंजदसम्माइट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अनंधां ॥ ६२ ।।

एदस्स अरथो बुच्चदे — एरव चंघादा उदओ पुट्चं पच्छा वा वोच्छिण्णो ति विचारो णिरिय, एदासिमेश्य उदयाभावादो । एदासिं परोदएणेव वंथो, णिरयगदीए उदया-भावादो । णिरंतरो वंथो, एपासमएण वंयुक्तमाभावादो । पच्चया चउड्डाणियपयडिपच्चयतुत्त्र्य । मणुसगइसंजुत्ते सम्मामिच्छाइडि-असंजदसम्मादिडिणो वंथित । णेरइया सामी । वंयद्वाणं वंथविणडडाणं च सुगमं । सादि-अद्भववंथो, अद्भुवंथितादो सम्मामिच्छाइडि-असंजदसम्मा-इडिणिच्याणुनगमणे णियमादो वा ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्ख-पञ्जता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावर-णीय-सादासाद-अट्टकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउञ्चिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचजुरससंठाण-

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये वन्धक हैं, शेष गुणस्थानवर्ती अबन्धक हैं ॥ ६२ ॥

हसका अर्थ कहते हैं — बन्धसे उदय पूर्वमें ध्युध्छिल होता है या प्रक्षान्, यह विचार यहां नहीं हैं न्यांकि, हमका यहां उदय नहीं है। इनका परोदयसे ही बन्ध होता है, स्योंकि, राकातिम हमके उदयका अभाव है। बन्ध निरन्तर होता है, स्योंकि, यक समयसे इनके बन्धका विभाग नहीं होता। इनके प्रत्यय चतुस्थानिक प्रकृतियोंकि एत्योंके समान हैं। स्यायिक्यादिष्ट और असंयनसम्यग्हिए मतुष्यातिसे संयुक्त बांधने हैं। नात्का स्वामी हैं। बन्धाध्यात और बन्धनिनप्रस्तान सुमान हैं। सादि व अधुव बन्ध होता है, स्योंकि व अधुववरूषों हैं। अथवा सम्यामध्यादिष्ट और असंयनसम्यग्हिए और असंयनसम्यग्हिए और असंयनसम्यग्हिए और असंयनसम्यग्हिए होते हैं। सुक्ति व अधुववरूषों हैं। अथवा सम्यामध्यादिष्ट और असंयनसम्यग्हिएयोंके सुक्तिगनममें निवम होनेसे भी सादि व अधुव बन्ध होता है।

तिर्यमातिमें तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच स्रोतिमतिसोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, आठ क्याय, पुरुषंवद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुम्सा, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक तैजस

१ मिस्पाविदः उच्च मञ्जद्ग सत्ते हते बया । सिच्छा सामणसम्मा मञ्जदुगुरुच ण कंशति ॥ गी. क. १०७. ५ अ-काप्रत्यो. 'णियमामावातो ' हति पाठ. ।

वेउब्वियसरीरअंगोवंग वण्ण गंध-रस-फास-देवगदिपाओग्गाणुपुब्वी-अगुरुवलहुव -उवघाद--परघाद--उस्सास- पसत्थविद्यायगद्द--तस-बादर-पज्जत्त-पर्त्तेयसरीर-[थिरा-] थिर-युद्दासुह-सुभग-सुरसर-आदेज्ज-जस-कित्ति-अजसकित्ति गिमिण-उच्चागोद पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ६३ ॥

सुगमं ।

मिच्छ।इट्टिप्पहुडि जाव संजदासंजदा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ ६४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो बुच्चदे — देवगइ-वेडिवयसरीर वेडिवयसरीरअगोवंग-देवगइ-पाओग्गाणुपुन्ति उच्चागोदाणं तिरिक्खेसु उदयाभावादो पुत्र्वं पच्छा वंधोदयवोच्छेदविचारा णस्थि, मंतासंताणं साण्णिकासविरोहादो । अवसेसपयडोसु वि एस विचारो णस्थि, अस्थगदीए एदासिं बंधोदयबोच्छेदाभावादो । पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइय-सरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहव-िधरा- विश्त-सभासभ णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ

व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैकियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगति-प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरूलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त. प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ६३ ॥

यह सुत्र स्गम है।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं॥ ६४ ॥

इस समका अर्थ कहते हैं- देवगति, वैकियिकशरीर, वैकियिकशरीरांगोपांग. देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र, इनका तिर्यचॉमें उदय न होनेसे बन्धोदयब्युच्छेदकी पूर्वापरताका विचार नहीं है, वयोंकि, सत् और असत्की समानताका विरोध है। होष प्रकृतियोंमें भी यह विचार नहीं है, क्योंकि, अर्थगतिसे इनके बन्धोदयव्य व्हेदका समाच है।

पांच शानावरण, चार दर्शनावरण, वैक्रिथिक तैजस व कार्मण शरीर, वर्ष, कार्च, रस, स्पर्श, अगुरुखदु, स्थिर, मस्थिर, घुंब, अग्रुम, निर्माण और पांच अन्तरीय, B. W. 24.

षेषा, धुनेष्वतादो । णिद्दा-पयळा-सादासाद-अङ्कसाय-पुरिसंवर-इस्स-रिद-अरिद-सोग भय-दुर्गुख-सम्ब-उरसंस्ठाण-पसत्थिवद्वायगङ्-मुस्सराणं सन्बद्दाणेसु सोदय-परोदःओ वंषो । णविर जोणिणीसु पुरिसंवेदवंषो परोदओ । उवधादवंषो मिन्छादिद्वि सामणसम्मादिष्टि-असंजदसम्मा-दिद्वीणं सोदय-परोदओ, विग्यहगदीए उवधादस्पुदयाभावादो । सम्मामिच्छादिङ्वि-संगदा-संबदाणं सोदओ चेत्र, तिसमपञ्जतकालभावादो । परधादुस्सास-पत्तेयत्तराणं मिन्छादिङ्कि-सासणसम्मादिष्टि-असंजदसम्मादिष्ठीसु सोदय-परोद्दो एदाओ सोदयणेव संसदे, तत्थेयद्स अपञ्जतकालभावादो । तस्य वादर पञ्जत पंचित्रयजादीओ मिन्छादृष्टी सोस्य-परोदएणं वंधइ, पडिवक्ववयग्रहीणं उदयसंभवादो । अवसंमा सोदएणेव, तत्थ पडिवक्ववयग्रहीणसुदयाभावादो । पंचिदियतिरिक्व-पंचित्रियातिक्व-पंचित्रियातिक्व-पंचित्रियातिक्व-पंचित्रियानावादो । णविर् पंचिदियतिरिक्वेसु मिन्छादृशीणं पञ्जतस्य सोदय-परोद्दओ वंधो, तत्थ पडिवक्ववयग्रहीण उदयसंभवादो । सुमगादेज-जसिक्तिणं मिन्छादिङ्-सासणसम्मादिङ्-सम्मामिन्छादिङ्-

इनका सोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्वोदयी प्रकृतियां हैं। निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, आढ कपाय, प्रत्यवेद, हास्य, रति, अरति, शाक, भय, जुगुप्सा, समचत्-रक्रसंस्थान, प्रशस्तविहायागित और सुस्वर, इनका सब गुणस्थानीम स्वादय परोदय बन्ध होता है। विशेष इतना है कि योनिमर्ता तिर्यचोमें पुरुपवदका बन्ध परोदयसे होता है। उपचातका बन्ध मिथ्यादार्ध, सामादनसम्यग्दिष्ट और असंयतसम्यग्दिष्ट जीवाँके स्वोदय परोदय होता है.क्योंकि, विब्रहगतिमें उपधातका उदय नहीं होता । सम्यग्मिथ्या-इप्रि और संयतासंयताक स्वोदय ही वन्ध होता है, क्योंकि, उनके अपर्याप्तकालका अभाव है। परघात, उच्छवास ओर प्रत्येकशरीरका बन्ध मिध्यादृष्टि, सामादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यन्द्राष्ट्रि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, इन प्रकृतियाका अपूर्याप्त-कालमें उदय नहीं होता। शेष दो गुणस्थानोंमें स्वोदय वन्ध होता है।विशेषता यह है कि योनिमतियोंमें असंयतसम्यग्दिए जीव इन्हें स्वोदयसे ही बांधना है,क्योंकि, योनिमतियोंके अपर्याप्तकालमें असंयनसम्यन्द्रष्टि गुणस्थानका अभाव है । त्रम, बादर, पर्याप्त ओर पंचे-न्द्रिय जाति, इनको मिथ्यादिष्ट जीव स्वोदय-परोदयमे वांधना है, क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदय सम्भव है। होष गुणस्थानवर्ता स्वोदयसे ही बांधते हैं,क्योंकि, उन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है। पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंमें स्वोदयसे ही सब गुणस्थानोंमें बन्ध होता है. क्योंकि, इनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है। विशेषता यह है कि पंचीन्द्रिय तिर्यचॉर्मे मिथ्यादृष्टियोंके पर्याप्त प्रकृतिका स्बोदय परोद्य बन्ध होता है, क्योंकि, क्वां प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय सम्भव है। सुमग, आदेय ओर यशकोर्तिका बन्ध मिथ्या-

असंजदसम्मादिङ्गीतु वंधो सोदयपरे।द्रओ, ए२थ पडिवक्खुदयदंसणादो । संजदासंजदेसु सोदंशी वेव, तत्थ पडिवक्खाणमुदयामावादो । मिच्छादिङ्गि-सासणसम्मादिङ्गि-सम्मामिच्छादिङ्गि-असंजदसम्मादिङ्गीतु अजसिकतीए वंधो सोदय-परोदओ, एत्थ पडिवक्खुदयदंसणादो । संजदा-संजदेसु परोदओ, तत्थ पडिवक्खुदयदंसणादो । संजदा-संजदेसु परोदओ, तत्थ पडिवक्ख्यपर्यक्षए चेव उदयदंसणादो । देवगदि-वेउव्यवसरीर-वेउव्यवस्तरीरअंगोवंग-देवगदिपाओग्गाणुपुच्वी-उच्चागोदाणं परोदओ वंधो, एदासिमेत्थ उदय-विरोहादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-अइकसाय-अय-दुगुंछा तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास अगुरुगलहुव उवघाद-णिमिण-पंचतराइयाणं णिरंतरा बंधो, धुवबंधितादो । सादासाद-इस्स रिदे-अरिद-सोग-धिराधिर-सुभासुभ-जसिकत्ति-अजसिकतीणं सांतरी बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो । पुरिसवेदस्स मिल्छाइडि-सासणेसु सांतरी णिरंतरो च बंधो, पम्म-सुक्क-लेस्मिएसु णिरंतरवंधदंसणादो । सेसगुणहालेसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिवंधाभावादो । पंचि-

हिए, सास्पादन सम्याग्टिए, सम्याग्मध्यादिष्ट व असंयतसम्याग्दिए गुणस्थानों से स्वीद्य परोद्दय होता है, क्यों कि, इन गुणस्थानों से प्रतिपक्ष प्रकृतियों का उदय देखा जाता है। संयतासंयतों में इनका स्वोदय ही वन्ध होता है, क्यों कि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियों के उदयका अभाव है। मिध्यादिए, सासादनसम्यादिए, सम्याग्मध्यादिए, सासादनसम्यादिए, सम्याग्मध्यादिए, और असंयतसम्यादिए गुणस्थानों में अयदाक्षीतिका वन्ध देवाद्य परोद्य होता है, क्यों कि, इन गुणस्थानों में उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिका भी उदय देखा जाता है। संयतास्यत्येम उसका परोद्य वन्ध होता है, क्यों कि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतिका ही उदय देखा जाता है। देवगति, वैकिथिकदारीर, वैकिथिक हारिएन, वेकिथिक हारिएन, वेकिथिक हारिएन, वेकिथिक हिंदी से स्वाप्ति, विकिथिक हिंदी से स्वाप्तिका स्वाप्ति

पांच झानावरणीय, छह दर्शन।वरणीय, आठ कथाय, अय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुळ उ. उपधात, निर्माण और पांच अस्तराय, इनका निरस्तर बच्ध होता है, क्योंकि, ये छुववन्धी प्रकृतियाँ हैं। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, होतक, हियर, अस्थिर, गुम, अग्रुअ, यशकीर्ति और अयशकीर्ति, इनका सान्तर बच्च होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके वण्यका विधाम देखा जाता है। पुरुषवेदका निर्यादिष्ठ और सासादनसम्यग्दियोंमें सान्तर व निरन्तर बच्च होता है, क्योंकि, पद्म और गुक्य कुम कुम कुम कुम स्थानिक स्थार वह सा है। कुम गुम्स्याकि, पद्म और गुक्क छह्यावाळे जीयोंमें निरस्तर बच्च देखा आता है। कुम गुम्स्याकि, पद्म निरस्तर बच्च होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष मक्कित्योंकि वर्षका असाय है।

दियन्तस-बादर-पञ्जत-पत्तेयसरीराणं बंधे। मिन्छाइडिम्डिं सांतर-णिरंतरे, तेउ-पम्म-सुक्कक्रेस्सिएस णिरंतरवंबदंसणादे। सेसुवरिमगुणडाणेषु णिरंतरे, तत्य पिडवन्तवयदिवंधामावादो।
समयउरसंसंठणस्स वंधे। मिन्छाइडि-सासणेसु सांतर-णिरंतरे, असंखेज्जवासाउरसु तेउ-पम्मसुक्क-क्रेस्सियमंखेज्जवासाउरसु च णिरंतरवंधदेसणादो। उपिनेमगुणेसु णिरंतरे, तत्थ पिडक्क्स्यपदिकंधामावादे। परवादस्सास्तां मिन्छाइडिम्डि सांतर-णिरंतरो वंधो, अपज्जतसंख्तबंधामावादे। तेउ-पम्म-सुक्क-क्रेसिएसु संखेज्जवासाउएसु असंखेज्जवासाउरसु च णिरंतरबंधदेसणादे। उचिरिमगुणेसु जिरंतरो वंबो, तत्थ अपज्जतसः वंधाभावादे। पसत्यविद्यामर्बूए मिन्छाइडि-सासणेसु सांतर-णिरंतरे, सुहितेक्रेसियसंखेज्जासंखेज्जवासाउरसु णिरंतरबंधदेसणादा। उचिरिमगुणेसु जिरंतरे, परिवादक्तिवादादी सुम-मुस्पर-अदिज्जाणं
मिन्छाइडि-सासणेसु सांतर-णिरंतरे, सुहितेक्रिस्यसंखेज्जासंखेज्जवासाउरसु णिरंतरबंधदेसणादा। उचिरिमगुणेसु जिरंतरे, परिवादक्तिक्तिवादादी सुम-मुस्पर-अदिज्जाणं
मिन्छाइडि-सासणेसु सांतर-णिरंतरे, सुहितेक्रिस्यसंखेज्जासंखेज्जवासाउरसु णिरंतर्ववदंसणादे। उचिरि णिरंतरे, परिवादक्तिक्तिक्तिवादादी। देवगिददून-वेउव्वियदुन-

पंचेन्द्रिय, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीर, इनका मिथ्याद्दष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि तेज, पद्म और शक्ल लक्ष्यावाले जीवोंमें इनका निरन्तर बन्ध वेखा जाता है। शेष उपरिम गुणस्थानॉम निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां मतिपक्ष प्रकृतियोके बन्धका अभाव है। समजतुरुक्षसंस्थानका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दिष्टियोंमें सान्तर निरन्तर होता है, क्योंकि, असंख्यातवर्षायुष्क और तेज, पदम एवं शुक्ल लेश्यावाले नियंचोंके इन गुणस्थानोंम निरम्नर बन्ध देखा जाना है। उपारम गुणस्थानोंमें उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके षन्धका अभाव है। परघात और उच्छवास प्रकृतियोंका मिश्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तक बन्धसे संयुक्त इनके बन्धका अभाव होनेसे तेज.पदम एवं शुक्ल लेक्यावाल संख्यातवर्षायुक्त और असंख्यातवर्षायुक्तोंमें निरन्तर बन्ध देखा जाता है। उपरिम गुणस्थानीमें दोना प्रकृतियाका निरन्तर बन्ध होता है. क्योंकि, उनमें अपर्याप्तके बन्चका अभाव है। प्रशस्तिबहायागतिका मिथ्याद्दीष्ट और सासादनसम्यग्हाप्टेयोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ग्रुभ तीन लेक्यावाले संख्यातवर्यायुष्क और असंख्यानवर्षायुष्कोंमें निरन्तर यन्थ देखा जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । हाभ, सुस्वर और आदेय प्रकृतियोंका मिध्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, शुभ तीन लेड्यावाले संस्थातवर्षीयक और असंख्यातवर्षायुष्कामं निरन्तर बन्ध देखा जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि. बहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोके बन्धका अभाव है। देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैकियिक

र प्रतिष्ठ ' मिच्छाइड्वीहि ' इति पाठः।

उच्चागोदाणं मिच्छाइडि सासणेष्ठ सांतर-णिरंतरे। षंघो, सुहतिलेरिसयसंखेज्जासंखेज्जवासाउएसु णिरंतरबंधवलंभादो । उवरि णिरंतरे। बंघो ।

तिरिक्खेष्ठ मिन्छाइङ्गाणं यूठपञ्चया चतारि । उत्तरपञ्चया तेवंचास, वेउन्विय-वेउन्वियमिस्सपञ्चयाणमभावारो । णवरि देवगङ्चउक्कस्स एक्कवंचास पञ्चया, वेउन्विय-वेउन्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मङ्यपञ्चयाणमभावादो । एंगसमयजङ्ण्णुक्कस्सपञ्चया दस अष्टारस । सासणस्स मूठपञ्चया तिण्णि, उत्तरपञ्चया अङ्गेतालीस । वेउन्विय-चउक्कस्स छाएत्ताठीस, पुन्वित्वर्णाणं चेवाभावादो । एगसमयजङ्ण्णुक्कस्सपञ्चया दस सत्तारस । सम्माभिन्छाइङ्गिःअसंजदमम्मारिङ्गीणं मूठोघपञ्चया चेव । णवरि सम्माभिन्छा-इङ्गिक्ट वेउन्वियकायोगोग अमंजदमम्मारिङ्गित्र वेउन्विय-वेउन्वियमिस्सजोगा अवणे-दत्वा । संजदामजदे ओपण्य पुरिस-णबुंसयपञ्चया अवणेदन्वा । असंजदसम्माइङ्गिहे ओरालिय-मिस्स-कम्मङ्गपञ्चया अवणेदन्वा ।

इरिर. वैक्रिविकशरीरांगोपांग ओर उच्चगेत्रिका मिध्यादिष्ट एवं सासादनसम्यग्दिष्टयों में सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, शुभ तीन छेश्यायाले संख्यातवर्षायुष्क और असंख्यातवर्षायुष्कोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है।

तियं बाँमें मिध्यादि एयोके मूळ प्रत्यय चार होते हैं। उत्तर प्रत्यय तिरेपन होते हैं, क्योंकि, यहां वैकियिक और वैकियिकमिश्र प्रत्ययोंका श्रभाव है। विशेष इतना है कि देवगति बतुष्क हिक्यायन प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, वैकियिक, वैकियिकमिश्र, बीदारिक मिश्र और कामेग प्रत्ययोंका श्रभाव है। यक स्वाय सम्बन्धी ज्ञम्य व उत्तर प्रत्य तिन और उत्तर फ्रम्स देवा और कामेंग प्रत्ययोंका श्रभाव है। दिक समय सम्बन्धी ज्ञम्य व उत्तर प्रत्येक, श्रभाव होते हैं। बोकियिक बतुष्क के उत्तर प्रत्येय प्रत्य तीन और उत्तर प्रत्यय अवताळी होते हैं। वैकियिक बतुष्क के उत्तर प्रत्यय व्यक्तिक होते हैं, क्योंकि, पूर्वोक्त प्रत्ययोंका ही अभाव रहता है। एक समय सम्बन्धी ज्ञम्य व उत्तर प्रत्यय कमसे देवा और सत्तरह होते हैं। सम्प्रामिष्ट्याहिष्ट शुण्यवानमें विकास वायोग और असंयत होते हैं। विशेषका और वैकियिकमिश्र योगोंको कम करना चाहिये। संयतासंयत गुणस्थानमें जोघ प्रत्यय ही होते हैं। इस प्रकार चार प्रकारक तियं वोंक प्रत्ययोंकी प्रत्ययोंकी प्रत्ययं ही कि देविक प्रत्या कम करना चाहिये। असंयत सम्यत्य क्ष करना चाहिये। असंयत सम्यत्य क्ष का कम का का वाहिये।

१ अमतावत प्राक् ' णवरि देवगइचउनकरस ' इत्यधिकः पाढः

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-अइकसाय-अरादि-सोग-भय-दुगुंडण-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रम-फास-अगुरुमाउट्टग-उवधाद-परवाद-उस्सास-तस-बादर-पज्ञत-पत्तेयसरीर-िणमण-पंचताइयाणं मिन्छाइई। चउगइसंजुताणं, सासणे। णिरयगईए विणा तिगइ-संजुताणं, सेसा देवगइसंजुताणं बंधया। सादावेदणीय-इसस-रिजो मिन्छाइई। सासणे। च णिरय-गईए विणा तिगई-संजुतं, सेसा देवगइसंजुतं कंधते। एवं असिक्रींत पि बंधते, विसेसामावादो। असादाविर्याय-अअसिकितीओ मिन्छाइई। चउगइसंजुतं, सासणे। तिगईसंजुतं, तेसा देवगइसंजुतं विदेति प्रिसेवेदं मिन्छाइई। सासणे। च णिरयगईए विणा तिगइसंजुतं, सेसा देवगइसंजुतं विदेति । प्रिसेवेदं मिन्छाइई। सासणे। च णिरयगईए विणा तिगइसंजुतं, सेसा देवगइसंजुतं विदेति । विद्यादिवेदा-सम्वर्यप्रस्तेव्याण-प्रस्थितहायगइ-सुमग सुस्सर-आंदेजाणमेवं चेव वत्तव्यं। वेदगदिवेदा-मिन्छाइंगि देव-णिरयगईमंजुतं वेदंति। विद्यादिवेदा-स्वर्याओं स्वर्यं देव-णिरयगईमंजुतं, सेसा देवगइसंजुतं । थिर-सुमाणं सादभंगो। अधिर-असुहाणं असादभंगे। उच्चागोदं मिन्छाइंग्रि-सासणसम्माइंग्रिणो देव मणुसगइसंजुतं, सेसा देवगइसंजुतं वंदंति।

पांच झानावरणीयः छह दर्शनावरणीयः, आठ कपायः, अरति, शोकः, भयः, जुगुप्ताः, पंचेन्डिय जाति. तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलव, उपधात, परघात. उच्छवास. त्रस. वारर. पर्याप्त. प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्तराय. इन प्रकृतियाँके मिथ्याद्यां चारों गतियासे संयुक्तः सासादनसम्यग्द्राष्ट्र नग्कगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त, और शेप जीव दवगतिम संयुक्त बन्धक हैं। साताबेदनीय, हास्य और रतिको मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिक विना तीन गतियाँसे संयुक्त. तथा शेष जीव देवगातिसे संयुक्त बांधते हैं। इसी प्रकार यशकीर्तिको भी बांघते हैं, क्योंकि, इसके काई विशेषता नहीं है। असातावदनीय और अयशकीर्तिका मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त, सासादन तीन गतियोंसे संयुक्त, और शेष जीव देवगतिसे संयुक्त वांधते हैं। पुरुपवदको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिके विना तीन गतियासे संयक्त और शेप जीव देवगतिसे संयुक्त बांधने हैं। समचतुरस्र-संस्थान, प्रशस्तविहायागिन, सुमग, सुस्वर और आदेय प्रकृतियोंका गतिसंयोग भी इसी प्रकार कहना चाहिये। देवगानि और देवगानिप्रायाग्यानुपूर्वीको सब देवगानिसे संयक्त बांघते हैं।[बेकियिकदारीर] और वैक्रियिकदारीरांगोपांगको मिथ्यादि देव व नरकगतिसे संयुक्त तथा शेष देवगतिले संयुक्त बांघते हैं। स्थिर और शुभ प्रकृतियोंका गतिसंयोग साताबेदनीयके समान है। अस्थिर और अग्रुम प्रकृतियोंका गतिसंयोग असाताबेदनीयके समान है। उच्चगोत्रको मिथ्यादृष्टि और सासाद्रनसम्यग्दृष्टि देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त, तथा शेष तिर्यंच देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं।

१ प्रतिपु 'जसकि चिं हि वध पि ' इति पाठः ।

सन्त्रासि पयडीणं वंधस्स तिरिक्खा चेव सामी । वंधदाणं वंधविणहृष्टाणं च सुगमं । पंचणाणावरणीयः छदंसणावरणीयः अइकसायः भयः दुगुंछाः तेजाः कम्मइयः वण्ण-गंधः नसः-फासः-अगुरुवरुद्धवः उवधादः णिमिणः पंचतराइयाणं मिञ्छाहृद्दिस्हं चउित्वहो वधो, सेसेसु तिविहो, धुवामावादो । अवसेसाणं पयडीणं सादिः अद्ववे ।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणिगद्धि-अणंताणुवंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्साउ-मणुसाउ-तिरिक्सगइ-मणुसगइ-ओरा-लियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्सगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थिविद्दायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ ६५ ॥

सुगममेदं ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी बंधा । एदे वंथा, अवसेसा अवंधा ॥ ६६ ॥

सब प्रकृतियों के बन्धके तिर्यंच ही स्वामी हैं। वन्धाचान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। पांच झानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, आठ कपाय, भय, जुगुप्ता, तिजस व कार्मण शारीर, वर्ण, गन्धा, रस. स्पर्श, अगुरुळचु, उपधान, निर्माण और पांच अन्तराय, हमा पिथाहिए गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। शेष गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें ध्रुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका साहि व अध्रुव बन्ध होता है।

निद्रानिद्रा, प्रचलप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, क्षीवेद, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यगाति, मनुष्यगित, औदारिक-अरिरागोयांग, पांच संह्यान, तिर्यगातिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगितप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रसस्तिबहायोगिति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय व नीचगोत्र, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ६५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, श्रेष जीव अवन्धक हैं ॥ ६६ ॥ पदेण सुद्दर्थाणं पह्रवणा कीरदे — थीणगिद्धितय-इश्यिवद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खागइ-जोराल्यिसरिर-च उसंद्राण-जोराल्यिसरिरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खा-प्राथोगगाणुपुःची —
उज्जीव-अपसर्थविद्यायाद-दुस्सर-णीचागोदाणं तिरिक्खाईए उदयवोच्छेदो णस्यि, सांसणे
पंघवोच्छेदो चेव । जवरि तिरिक्खाइयाओगगाणुपुःचीएं पुत्र्वं पंघो वोच्छिण्णो पच्छा उदब्रो,
असंजदसमादिद्विगद उदयवोच्छेद्र:दें। अर्थतगुःबंधिच उक्कस्स यंथोद्या समं वेष्टिक्ण्णा,
सासणसम्मादिद्विनिद उत्पयत्तेष्ठर:दें। । अर्थतगुःबंधिच उक्कस्स यंथोद्या समं वेष्टिक्ण्णा,
सासणसम्मादिद्विनिदस्यम्यिद्द उत्पयवोच्छेदर्दसणादो । मणुसाउ-मणुस्यायायायायुख्यीणं
तिरिक्खाई उदयो चेव णस्यि, विरोहादो । तेर्थन्याःसं वेष्ट्येद्याणं पुत्रवं पच्छा वोच्छेदविचारो णस्य । दुभग-अणादेज्जांण पुत्रवं वेषे वोच्छिज्यवंषाणं अर्थवस्यमाविदिनिद उदयवोच्छदंत्रभणादो ।

यीणगिद्धितिय-अंगताणुर्वधिचउक्कःइरियवेद-चउसेठाण-पंचसंघडण-उञ्जीव अप्पसत्थ-विद्ययगङ्कुमगःदुम्मर-अंगादेञ्जाणं सोदय-परोदण्हि चंदो । णत्ररि तिरिक्खजीणिणीसु इरिथ-वेदस्स सोदण्णेव चंदो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगङ्गणीचागोदाणं सोदण्णेव चंदो । मणुस्साउ-

स्त्यानगृद्धि आदिक तीन, अनन्तानुबन्धिचनुष्क, स्नीवेद, चार संस्थान, पांच संहनन, उद्योत, अप्रशस्तावेहायांगाति, दुर्भग, दुस्वर और अनादेय, इनका स्वोदय-परोदयसे बन्ध हाना है। किन्तु विशेष इतना है कि तिर्यंच योनिमतियोंमें स्रोवेदका स्वोदयसे ही बन्ध होना है। तिर्यगायु, तिर्यगाति और नीचगोत्रका स्वोदयसे ही बन्ध होता है।

१ प्रतिपु ' तिरिक्खगहपाओमगाशुपूर्वा ' इति पाठः ।

२ मतिषु 'सासणी ' इति पाटः ।

मणुसगर्-मणुसगर्पाओग्गाणुपुत्र्वीणं परादर्णेव बंधो । ओराठियसरीर-ओराठियसरीरओगोबंगाणं सो**दव-ररोदएण कं**घो, विग्गहगदीए उदयाभावादा । तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुत्र्वीए वि सोदय-परो**दर्ण कं**घो, विग्गहगदीए विणा अण्णस्य उदयाभावादे। ।

यीणगिद्धित्तय-अर्णताणुवंभिचउनकाणं णिरंतरां वंघा, युववंभितादां । इत्यिवद-मणुसगइ-चउसंद्राण-पंचसंषडण-भणुमगइपाओग्गाणुयुव्यी-उज्जीव-अप्पस्त्यविद्यायगइ-दुभग—दुस्सर-अणादेज्जाणं सांतरां वंघा, एगसमएण वंधुवरमदंसणादां । तिरिक्खाउ-मणुस्साउआणं णिरंतरां वंघा, जहण्णेण वि एगसमयवंधाणुवर्द्धभादां । तिरिक्खाउ-मणुस्साउआणं णिरंतरां वंघा, जहण्णेण वि एगसमयवंधाणुवर्द्धभादां । तिरिक्खगइ-औराठियदुग-तिरिक्ख-गइपाओग्गाणुपुव्यी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरां, तेउ-वाउकाइयाणं तेउ-वाउकाइय-सत्तम-पुद्धभीपरह्परिंदां आगंतृणं पंचिंदियतिरिक्ख-तप्यज्जतं-जाणिणीसु उपण्णाणं सणक्कुमारादिं-देव-भरब्युर्द्दितो तिरिक्खिसुप्पण्णाणं च णिरंतरवंधदंसणादां। पविरि मासणे सांतरा चेव, तस्स तेउ-वाउकाइयसु अभावादो सत्तमपुद्धवीदो तरगुणेण णिग्गमणाभावादो च । ओराठियदुगस्स

मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायांग्यानुषूर्वीका परोदयसे वन्ध होता है। औदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगायांगका स्वोदय-परोदयसे वन्ध होता है, स्वाँकि, विम्नहगतिमें इनका उदय नहीं रहता। निर्यगतिप्रायोग्यानुष्रीका भी खोदय परोदयसे बन्ध होता है, स्वाँकि, विम्नदगतिको छोड़कर अन्यत्र उसके उदयका अभाव है।

स्त्यानगृक्षित्रय और अनन्तानुबन्धिचनुष्कका निरस्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये धृवक्ष्मी हैं। इतिवर्द, मनुष्यगित, यार संस्थान, पांच संहतन, मनुष्यगितप्रायोग्यानुपूर्वी उघोत, अमदास्तिविद्यायोगित, दुमंगः दुस्यर और अनादेय, हनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उक्ष समयमें हनके बन्धका विधाम देखा जाता है। निर्येगानु और मनुष्यापुका निरस्तर बन्ध होता है, क्योंकि, जम्पस्ते भी हनका एक समय बन्ध नहीं पाया जाता। तिर्यमालि, औदारिकद्विक, तिर्यगातिमायोग्यानुपूर्वी ओर नीचगान, हनका सान्तर निरस्तर क्ष्य होता है, क्योंकि, जेक्षकायिक व वायुकायिकांक नया तेजकायिक, वायुकायिक व सम्पत्तम पृथिवीक्ते तारिकर्योमेंसे आकर पंचनिद्रय तिर्यंच और उसके पर्याप्त व योनिमतियोंमें उत्पन्न पृथिवीक्ते तारिकर्योमेंसे आकर पंचनिद्रय तिर्यंच और उसके पर्याप्त व योनिमतियोंमें उत्पन्न पृथिवीक्ते तारिकर्योमेंसे आकर पंचनिद्रय तिर्यंच और उसके पर्याप्त व योनिमतियोंमें उत्पन्न प्रश्निक्ते और सन्तरक्रमारादि देव व नार्राकर्योमेंसे तिर्यंचामें उत्पन्न पुष्ट जीवोंके भी हनका निरस्तर बन्ध देखा जाता है। विपारत यह है कि सासादन गुणस्थानमें सान्तर ही बन्ध होता है, व्याप्त व प्रणस्थान तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमें होता नही है, तथा सन्तम प्रणस्थान के साथ विपारकारीक जीवों होता। औदारिकद्विकका

१ काप्रती ' तिरिक्खसपञ्जत ' अ आप्रत्यो ' तिरिक्खतसपञ्जत ' इति पाठ ।

२ प्रतिषु ' उपपण्णाण ओरालियसरीरअगोवग सणक्कुमारादि- ' इति पाठः।

सांतर-णिरंतरे। 1

एदासि पच्चया सव्यगुणेषु पंचद्वाणियपयडिपच्चएहि तुन्छा । णवरि तिरिक्ख-मणुस्साउआणं मिच्छाइडिम्हि कम्मइयपच्चयो णव्धि । पंचिदियतिरिक्खपञ्जन-पंचिदिय-तिरिक्खजाणिणीसु आगलियभिस्स-कम्मइयपच्चया पव्धि । च उथ्विहेमु तिरिक्खेमु सामणे ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया पव्धि, अपज्जनकाल तस्माउर्वभाभावादो ।

थीणिगिद्धितय-अणंताणुर्वधिच उक्काणं भिल्छाइडी चडगइमंज्रतं, सायणं तिगइ-संज्ञतं वेषञ्जो । इत्थिवेदं णिरवगईण विणा तिगइमंज्रतं, मणुपाउ-मणुसगइराजोग्गाणुपुःचीओ मणुसगइसंज्ञतं, तिरिक्खाउ-तिक्कियगइराजोग्गाणुपुःची-उउजावाणि तिरिक्यगाइमंज्रतं, ओगा-ठियससीर-चडसंटाण-ओगालियमरीग्जेगोवंग-पंचमंबद्दणाणि तिरिक्य-मणुमगइमंज्रतं, अपसत्थ -विह्ययगइ-दुसग-दुस्सर-अणादेऽज-णीचागोदाणि द्वगदीण् विणा तिग्रक्षंज्ञनं वंधित । एटासिं पवडीणं वेषस्स तिरिक्खा सामी । वेषद्वाणं वंधविणद्वाणं च सुगमं । वीणागिद्धितिय-अणंताणुवेषिच उक्काणं मिन्छाइडिमेट चउन्विहो वंधी । सामणे द्विहा, अणादि-सुवा-

सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

इन प्रकृतियोंकं प्रत्यय सब गुणस्थानोंमं पंचस्थानिक प्रकृतियोंकं समान है। विशेषता केवल यह है कि नियंगायु और मनुष्पायुका मिथ्यार्थि गुणस्थानों कामेश प्रत्यय नहीं होता। पंचित्रय निर्यंच पर्यंक्त और पंचित्रय निर्यंच योगिमनियोंमें औद्दार्शिकामिश्र व कामेण प्रत्य नहीं होता। वार प्रकृतिक नियंगों सामादन गुणस्थानमें आदारिकामिश्र कामेण प्रत्यय नहीं होते। चार प्रकृतिक नियंगों सामादन गुणस्थानमें आदारिकामिश्र और कामेण प्रत्यय नहीं होते, क्योंकि, अपर्यंक्तकाल में उनके आयुका वस्त्र नहीं होता।

स्थानगृहिजय और अनम्बानुवन्धिजनुष्कि सिक्ष्यादिष्ट चार्ग गतियोस संयुक्त अरेत सालादनसम्बद्धि तीन गतियोस संयुक्त वन्ध्यक है। व्यविद्का नरकगतिक विज्ञा नीन गतियोस संयुक्त मनुष्यातिक संयुक्त निव्यातिक संयुक्त मनुष्यातिक संयुक्त निव्यातिक संयुक्त तथा अश्वास्तीवक्षयाति दुर्मग, दुस्यर अनिव्याति व मनुष्यातिक संयुक्त तथा अश्वास्तीवक्षयाति दुर्मग, दुस्यर अनिव्याति व निव्यातिक निव्यातिक स्वयातिक निव्याति संयुक्त वांध्य है। इत महानियोक वन्ध्यक निर्यात्व स्वाप्ति हैं। विवादाति प्रतिव्याति क्षित्यक और अन्तरानुविधिकालक्षका सिष्यादिष्ट गुणस्थानमें वार्ग प्रकारका वन्ध होता है। सालादन गुणस्थानमें दो प्रकारका वन्ध होता है। सालादन हो। तथे प्रकृतियोका

१ प्रतिषु 'इत्थिवेदः ' इति पाठः !

२ प्रतिपु 'अपञ्जत्त- ' इति पाठः ।

भावादो । सेसपयडीणं बंधो सादि-अद्भुवो, अद्भुवंधितादो ।

मिच्छत्तःणबुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइं-दिय-चउरिंदियजादि हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-णिरयगइपाओ-ग्गाणुपुञ्चि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ६७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ६८ ॥

ण्दस्म अत्थे। बुच्चदे — मिच्छत्त-प्रदेदिय-वीइंदिय-तीइंदिय-चार्टार्य-आदाय-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं वंधोदया समे वोन्डिण्णा, मिच्छाइर्डि मोत्तूणेदासि उवस्मिसु उदयाभावादां। णबुंसयवेद-हुंडसंठाण-अमंपत्तसेवहसंघडणाणं वंधवोच्छेदो चेव णोदयस्स, सन्वगुणेसुदयदंसणादां। णिरयाउ-णिरयगद्दपाओगगापुच्नीणं निरिक्चगरीण् उदयाभावादो पुन्वं पच्छा वंधोदयबा-छेटविचारं। णरिथ।

बन्य सादि व अथुव है।ता है, क्योंकि व अथुववन्धी हैं।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, नारकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरि-न्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तस्याटिकाशरीरसंहनन, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, रथावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साथारणशरीर नामकर्मीका कीन बन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ है ७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादिष्ट बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष तिर्थेच अबन्धक हैं ॥ ६८ ॥

इसका अर्थ कहते हैं — मिथ्यात्व, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, वीन्द्रिय, खतुरिन्द्रिय, आताप, स्थावर, सुक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनका बन्ध और उदय दोनों साथ ख्रुन्डिछल होने हैं, क्योंकि मिथ्यादिष्ट गुणस्थानको छोड़कर उपरिम गुणस्थानोमें इन प्रकृतियोक उदयका अभाव है। नपुंसकवेद, दुण्डसंस्थान और असंधाप्तस्थाटिकासंहनन, इनके बन्धका ही व्युच्छेद हैं, उदयका नहीं, क्योंकि सब गुणस्थानोमें इनका उदय देखा जाता है। नारकायु और नरकागित्रायोग्यानुपूर्वका नियंग्गनिमें उदय न होनेसे इनके पूर्व या पश्चात् बन्धोदयन्युच्छेड़ होनेका विचार नहीं है।

मिध्यान्यका स्वादयसे ही, नारकायु, नरकगित और नरकगितयायेग्यानुपूर्वीका परेत्वसे ही, तथा रोग महितयेंका स्वोदय-परोदयसे ही बच्च होता है। विरोचता यह है कि पेवेदियात् होता है। विरोचता यह है कि पेवेदियात् होतिया का स्वित्यात् होतिया होतिया होतिया होतिया होतिया होतिया होता है। पंचेदिया जाति, आतात, स्थायर, सुक्त और साधारण महितयोंका परोत्यसे बच्ध होता है। पंचेदिया त्रियं पर्याप्त और योनिमितयों में अपर्याप्तका परोत्यसे बच्ध होता है। योनिमितयों में मधुक्तवेदका एवेदिया बच्ध होता है। मिध्याप्त और नारकायुका दिन्तर बच्ध होता है। स्वर्थाप्त और नारकायुका त्रियस्त क्ष्य होता है, स्वर्थों के, एक समयसे इनके बच्धका विश्वाम नहीं होता। रोग प्रकृतियोंका बच्ध सान्तर होता है, स्वर्थों के, एक समयसे इनके बच्धका विश्वाम नहीं होता। रोग प्रकृतियोंका बच्ध सान्तर होता है, स्वर्थों के, एक समयसे इनके बच्धका विश्वाम नहीं होता। रोग प्रकृतियोंका बच्छ सान्तर होता है, स्वर्थों के, एक समयसे इनके बच्धका विश्वाम देखा जाता है।

मिथ्यात्व, नपुंसक्षेवद, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तस्पादिकासंहनन, नरकगाति, नरक-गतिप्रायोग्यातुपूर्वी, पक्षेत्र्वर, इंग्लिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, आताप, स्थावर, स्कृम, अपर्याप्त और साधारण, इनके तिरपन प्रत्यय होते हैं। योनिमतिपाँमें इक्यावन प्रत्यय होते हैं। नारकायुके तिर्येच, पंजीस्त्रय तिर्येच और पंजीस्त्रय तिर्यंच पर्यान्तोंमें इक्यावन प्रत्यय होते हैं। पंजीस्त्रय तिर्यंच योनिमतियोंमें उनेचास प्रत्यय होते हैं।

मिथ्यादिष्टे तिर्यंच मिथ्यात्वको चारों गतियोंसे संयुक्त, नपुंसक्रेवद व दुण्ड-संस्थानको तीन गतियोंसे संयुक्त; नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायाज्य्वीको नरकगतिसे संयुक्त; एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, आताप, स्थावर, सुंस्य और साधारण, इनको तिर्यगातिसे संयुक्त; तथा असंप्राप्तस्पाटिकासंहनन और अपर्याप्तको तिर्यगाति व मनुष्यगतिसं संयुक्त बांधने हैं। इन मक्कतियोंके क्षण्यके तिर्यक्त च खुवमं । निष्कासस्य स्वादिनी अभादिभी चुची व्यद्धमे ति चडव्यित चंची विसान सीह-अद्भो, अद्भवंधितादो ।

अपन्त्रवस्त्राणकोध-माण-मायाःहीमाणं की वैधी की अवंधो ? ॥ ६९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाहट्टिपहुडि जाव असंबदसम्बादिटी वंभा । एदे वंभा, अवसेसा अवंधा ॥ ७० ॥

एदेण समहिदत्याणं पयासा कीरिद — एदासि वैवीदया समं वैविक्णा, देण्डम-संजदसम्मादिद्विन्द विणासुवर्रुमादा । सोदय-परादर्ण विषो, अद्भुनेदयता । विश्वस्ति, 'कुव-विचत्तादो । पञ्चया तिरिक्ताणं पंचद्वाणियपयिद्विपच्चएहि तुस्ता । 'मिक्छाईही चाउनह-संजुत्तं, सासणसम्मादिही तिगदसंजुत्तं, सम्मामिक्छादिही 'असंजदसम्मादिही दिवनहर्सजुत्तं

स्वामी हैं। बन्धाच्यान और बन्धावनष्टस्थान सुगम हैं। मिण्यात्वका सादिक, अंतादिक, भुष और अभुव चारों प्रकारका बन्ध होता है। दोष ग्रंहतियोका सीदि व अभुव कन्ध होता है, क्योंकि, वे अभुववन्धी हैं।

अप्रत्यास्थानावरण कोघ, मान, माया और छोसका कौन बन्धक और कौन अवन्धेक है ? ॥ ६९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिध्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक अन्यक हैं। 'ये वन्यक हैं, त्रेष'अवन्यक हैं ॥ ७० ॥

इस स्वकं द्वारा संग्रेडीत अधीका प्रकाश करित हैं— हम बारी बहुतियोंका बच्च और उदय दोनों साथ ग्युंच्छिक होते हैं, क्योंक, असंग्रेतस्वर्धकां है गुणस्थानमें देनिका विकाश पाया जाता है। इनका स्वाद्य-परादर्थस् बच्च होता है, क्योंकि, व अधुक्रीद्या है। किरमार बच्च होता है, क्योंकि, भुषयन्त्री है। इनके प्रत्येत सर्वे प्रतिक्रित एक्स्योंकि प्रकाशकी समान हैं। मिस्यादिष्ठ तियेव इन्हें बारी गीतगीस संयुक्त, सासावस्वर्धकांकि तीन गीतियोंसे संयुक्त, तथा संयोग्याधारि व अधियतस्वयादिष्ठ दिसाविक स्वयुक्त

१ प्रतिषु ' पंचड्ढाणाणिय- इति पाढः ।

षंषेति । तिरिक्खा सामी । वंधद्वाणं वंधविणदृष्टाणं च सुगमं । मिच्छाइद्विम्हि चउन्बिहो । सेसगुणेसु तिविहो, धुवाभावादो ।

ँ देवाउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ७१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी संजदासंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ७२ ॥

एदस्सस्यो बुरुचदे — बंघोदयाणमेन्य पुखं पच्छा वोच्छेदविचारो णस्यि, तिरिक्खगईए देवाउअस्म उदयाभावादा । परेदर्ण वंघो, बंधोदयाणमक्कमेण उत्तिबिरोहादो ।
शिरंतरो, एगसमरण वंधुवरसाभावादो । तिरिक्ख-पंचिदियतिरिक्ख-पंचिदियतिरिक्ख-जनगप्ध भिच्छाइडि-सामणसम्माइडि-अमंजदसम्माइडि-संजदामंजदाणं जहाकमण एक्कावण्ण-छादाठ-बादाठ-सत्ततीसपन्चया होति । जोणिणीस एगूणवंचास-चउवेदाळीस-चाळीस-पंचतीस-पञ्चया । सेसं सुगमं । सब्बे देवगङ्संजुने वंधीत । तिरिक्खा सामी । वंथदाणं वंथविणहुद्दाणं च सुगमं । देवाउअस्स वंधो सन्वत्थ सादि-अद्धवे।, अद्धववंधितादा ।

बांधते हैं। तिर्येच जीव इनके स्वामी हैं। वन्धाध्याल और वन्धविनएस्थान मुगम हैं। मिथ्याहष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका वन्ध होता है। रोप गुणस्थानोंम तीन प्रकारका बन्ध है, क्योंकि, उनमें धृव वन्धका अभाव है।

देवायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ७१ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतमम्यग्दृष्टि और संयतासंयत वन्धक हैं। ये बन्धक हैं, श्रेष तिर्यच अधन्धक हैं॥ ७२॥

इसका अर्थ कहते हैं— यहां वन्ध और उदयका पूर्व या एक्षात् श्युक्छेद्र होनेका विचार नहीं है, क्योंकि, तियेगातिमें देवायुक उदयका अभाव है। देवायुका परोदयसे बन्ध निर्माद कर्योंकि, उसके वन्ध और उदय होनोंक एक साथ अस्तित्वका विरोध है। क्या क्या तिरात्व होते हैं, क्योंकि, एक समयके वन्धिक्यामका अभाव है। तियेंच, पंचेत्त्रिय तियंच और पंचेत्त्रिय तियंच पर्यात्वकोंमें मिथ्याइटि, सासादनतम्बराद शि असंवत्त सम्यव्ध और संवतास्वनोंके यथाक्रमसे इक्यावन, ज्यालीस, व्यालीस और संतीस मत्यय होते हैं। वेदा योजनात्व साम्यव्ध होते हैं। वेदा वार्यात्व साम्यव्ध होते हैं। वेदा प्रत्य होते हैं। तियंच स्वापक्ष सुमा है। सब तियंच देवायुका देवगतिस संयुक्त बांधते हैं। तियंच स्वापि हैं। बन्धापका अगर वन्धित स्वापि हैं। वेदायुका देवभाविस स्वाप्त होते हैं। क्या प्रवाप करीर वन्धित क्या सुमा है। सव वियंच देवायुका देवगतिस संयुक्त बांधते हैं। तियंच स्वापि हैं। बन्धापका और वन्धित क्या अपने होते हैं। वेदायुका वन्धा स्वाप्त होते हैं। क्या प्रवाप करीर वन्धित क्या अपने हिं। वेदायुका वन्धित हैं। वियंच क्या विष्ट क्या वन्धित वन्धित हैं। वियंच क्या विष्ट क्या विष्य क्या विष्ट क्या विष्य क्या विष्ट क्

पंचिंदियतिरिक्सअपज्ञत्ता पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-भिच्छत-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्साउ-मणुस्साउ-तिरिक्साउ-मणुस्साउ-तिरिक्साउ-मणुस्साउ-हिर्य-चीहंदिय-तीहंदिय-चउरिंदिय-पंचिं-दियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंडाण-ओरालियसरीर-अंगोवंग-छसंघडण-चण्ण-गंध-रम-फास-तिरिक्सगइ-मणुसगइयाओ-गणपुठ्वी-अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद-उस्मास-आदाउज्जोव-दो-विद्ययगइ-त्य-यावर-यावर-युदुम-पज्जत-पत्तेय-माहारणसरीर-थिरा-थिर-युहासुह-सुगभ-िदुभग-ी सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जस-कित्त-अजसित-णिमिण-णीचुचागोद पंचेतराह्याणं को बंधो को अवंधो ?॥ ७३॥

सुगमं ।

सब्वे एदे बंधा. अबंधा गत्थि ॥ ७४ ॥

थीणगिद्धितिय-मणुस्याउ-मणुस्सगइ-एइंदिय-वीइंदिय-तीइंदिय-च**उग्दिंयजादि-हुंड-**

पंचेन्द्रिय तिर्यच अपयोप्तोंमें पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वदनीय, मिध्यात्व, सालह कपाय, नौ नोकषाय, तिर्यमायु, मनुष्यायु, तिर्यमाति, मनुष्यायाते, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, प्रीन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक तैजस व कार्मण शरीर, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोषांग, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रम, स्पर्श, तिर्येगति व मनुष्यगति प्रयोग्यानुपूर्वी, अगुरुल्ध, उपघात, परधात, उच्छ्वाम, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, स्थम, पर्याप्त, प्रस्यक, साधारणश्ररीर, रिवर, अस्थिर, श्रम, अशुभ, अशुभ, त्रुभन, [दुर्भग], सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनोदय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीचगोत्र, ऊंचगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ७३॥

यह सूत्र सुगम है।

ये सब पंचेन्द्रिय तिर्थेच अपयोप्त बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ ७४ ॥ स्त्यानगुद्धित्रय, मनुष्यायु, मनुष्यगति, पकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, जीन्द्रिय, खतुरिन्द्रिय संस्वाकितिकारं स्ववेदानाः स्वरुपत्तेवक्षं वरुवितिहिद् वं संववका-मणुसगरमानामाणुपुर्वी -पर-षादुस्त्वव्यव्यवक्षेत्रव्यान् स्वावद् सावद-सुद्धम-पञ्चत-साद्धारण-सुमग-सुस्तर-दुस्तर-आदेज्ज--असब्रिति-उच्चामोद-कृत्थि-पुरिसवेदानामण्डजनएयु' उदयाभावादो अवसेसाणं पयडीणसुरूप-वेण्डिदानावादो च पृत्यं पञ्का वंबोह्यवोद्धवेत्रविचारो णस्पि ।

पंचणाकासणीय-च उदंसणावरणीय-मिन्छत-णवंसयवेद-तिरिक्ताउ-तिरिक्त्यणह् नेजारकम्णद्रवास्त्रीर-चण्ण-गंध-रस-प्राव-अगुरुआरुष्ट्य-तस-बाद्र-अप-छत्त-पिराधिर-चुमासुध-द्वमअष्णाक्षेण-अवस्तिति-पिरिण-पंचतराहय-जीवामीदाणं सोद्रपणेव वंघो । पिद्रा-पयरुर-साद्य-साद-सीत्यक्तसाव-छण्णोकसायाणं मोदय-गरीदरणेव वंघो, अदुवोदयनादो । ओरात्यिससीर-हु इसंद्राण-ओरात्रियसरीरअंगोवम-असंपत्तिवद्वसंपडण-उनचाद-पत्तियसरीराणं सोदय-परेदर्ण वंघो, विन्मद्दगदीए एदासिसुदयाभावादो । तिरिक्त्यमदिपाओगगालुपुन्नीए वि सोदय-पसेदर्ण वंषो, विम्महर्मादीए चेव-छद्दगदो । अण्यप्तकीणं परोद्रद्वणेव वंघो, एत्य एदासिसुदयाभावादो ।

जाति, हुण्डसंस्थानसे रिहित पांच संस्थान, असंप्राप्तस्थुपादिकासंहननसे रिहित पांच संहतन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परधात, उच्हवास, भाताप, उच्चात, हो बिहायोगतियां, स्थावर, सूक्ष्म, प्यांचल, साधारण, सुम्रण, सुस्वर, दुस्कर, आदेव, यदाच्चिति, उच्च्यमेव, स्रोध्व और पुरुषदेत, हनका अपर्याप्तीमें उदय न होनेसे तथा होष प्रकृतियोंका उदयपनुष्टेंद्र न होनेसे यहां वस्थ और उदयके पूर्व या प्रश्चात् स्थुष्टेंद्र होनेका विवाद नहीं है।

पांच जानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिण्यात्व, नपुंसकवेद, तियंगायु, विकंगाति, तैज्ञव व कार्यण दारीर, कार्य, गण्य, रस, स्पर्ध, अयुक्तकपु, जल, जलर, अवनर, अवनर, अविकार, विकंगाति, तेज्ञव व कार्यण दारीर, कार्य, गण्य, रस, स्पर्ध, अयुक्तकपु, जल, जल, कार्यप, अयुक्तकपु, जल, जल, कार्यप, अयुक्तकपु, जल, कार्यप, कार्यप, कार्यप, वित्रा, प्रचक्रा, साता व असाता वेवनीय, सोलद कथाय और छह नोकपाय, स्वक्रा सोवय परोदयसे ही बच्य काता है, क्योंकि, वे अपुवादयी प्रकृतिया हैं। नौदारिकतारीर, हुण्डकस्थान, नौदारिक दार्शियोगील, कर्यप्रकृत्यसे क्षेत्र कर्यप्रकृतिका क्षेत्र स्वक्रिय-परोदयसे ही वन्य क्षेत्र क्षेत्र परोदयसे ही वन्य क्षेत्र क्षे

१ प्रतिषु १ पुरिसमेका नवुसम्बन्धकारम् १ इति पाठ ।

२ मतिक्व ' राजिक्य कामानानो ' इति पाछः ।

षंचणाणावरणीयः णवदंसणावरणीय-भिच्छत्तः सोटसकसाय-भय-दगुंछा- तिरिक्ख-गण्- स्साउ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहञ्च-उवघाद-णिमिण-पंचेतरा-इयाणं णिरंतरी बंधी, ध्रवबंधितादी एगसमएण बंध्रवरमाभावादी च । तिरिक्खगड-तिरिक्ख-गडपाओगगाणपुन्ति-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरा वंधो, तेउक्काइय-वाउक्काइएहिंता पंचिदिय-तिरिक्खअपञ्जत्तएसप्पण्णाणमंत्रोम्हत्तकारुं णिरंतरं बंधवलंभादो, अण्णत्थ सांतरत्तदंसणादो । अवसेसाणं पयडीणं सांतरे। बंधी, एगसमएण बंधुवरम्बलंभादी ।

एत्थं सञ्चकम्माणं बादाल पञ्चया, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-इत्थि-परिसोरालिय-मण-विचेजोगाणमभावादो । णवरि तिरिक्ख-मणस्साउआणमिगिदालीस पच्चया. कम्मडयकाय-जोगेण सह चोइसण्णं पच्चयाणमभावादो । सेसं सुगमं ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइ-पाओग्गाणपुञ्जी-आदाउज्जीव-थावर-सहम-साहारणाणि तिरिक्खगृइसंज्ञतं बज्झति । मणस्साज-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुन्नी-उच्चागोदाणि मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति । कुदो ? सामावि-यादो । अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्ख मणुसगइसंज्ञतं वज्झंति । सन्वासिं पयडीणं बंधस्स

पांच ज्ञानावरणयि, नां दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कवाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगाय, मनुष्याय, औदारिक तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवक्धी प्रकृतियां हैं. तथा एक समयमें इनका बन्धविश्राम भी नहीं होता। तिर्यमाति, तिर्यमाति-प्रायोग्यानपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि तेजकारिक और वायुकायिक जीवोंमेंसे पंचेन्द्रिय निर्यंच अपर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्महर्त काल तक इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है, तथा अन्यत्र सान्तर बन्ध देखा जाता है। शेय प्रकृतियोंका सान्तर वन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें उनके बन्धका विश्वास पाया जाता है।

यहां सब कमाँके ज्यालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्च, खींबेद, पुरुषवेद, औदारिककाययोग, चार मन और चार वचन योग प्रत्ययोंका अभाव है। विशेषता यह है कि तिर्यगायु और मनुष्यायुके इकताळील प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, कार्मण काययोगके साथ यहां चीवह प्रत्ययोंका अभाव है। शेव प्रत्ययप्ररूपणा सगम है।

तियगाय, तिर्यगाति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यगाति-श्रायाग्योत् पूर्वी, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण, ये प्रकृतियां तिर्येचगतिसे संयुक्त बंधती हैं । मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र प्रकृतियां मनुष्यगतिसे संयुक्त बंधती हैं। इसका कारण स्वभाव ही है। शेष प्रकृतियां तिर्यमाति व मनध्यगतिसे संयक्त वंधती हैं। सब प्रकृतियोंके बन्धके तिर्येच स्थामी हैं। ₽. ŧ. १७.

तिरिक्सा सामी । वंशदाणं वंशविणहृहाणं च सुगमं । पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्तःसोटसकसाय-भय-दुगुंळा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुब-उवधाद-णिमिण-पंचेतराहुवाणं चउन्विहो वंशे, धुववंधितादो ।

मणुसगदीएँ मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु ओघं णेयन्वं जाव तित्ययरेत्ति । णवरि विसेसो, वेट्टाणे अपच्चक्खाणावरणीयं जधा पंचिंदियतिरिक्खभंगो ॥ ७५ ॥

एदस्सत्थे। बुच्चदे — आंघम्मि जासिं पयडीणं ज वंधया परुविदा ते चेव तासिं पयडीणं बंधया एत्थ वि होति ति आंघमिदि उत्ते । सन्वद्वाणेसु आंघते संपत्ते तिण्णिसेहर्ड बेड्डाणियपबडीणं अपच्चक्खाणावरणीयस्स च पंचिंदियतिरिक्चभंगे। ति परुविदं । एदेण देसासासिएण सहदत्थपरुवणं कस्सामे। तं जहा — पंचणाणावरणीय-चउदंमणावरणीय-जसिकित-उच्चागोद-पंचेतराइयाणं गुणगयपंधसामित्तेण, वंधोदयाणं पुच्चं पच्छा वोच्छेद-विचारेण, सोदय-परोदय-सांतर-णिरंतरबंधविचारणाए, वंधदाणं यंधविणहृहाणं च सादि-आदि-

बन्धाच्चान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं।पांच क्षानावरणीय, नो द्वानावरणीय, प्रिथ्यात्व, सोळह कपाय, भय, जुगुभ्सा, तैजस व कार्मण हारीर, वर्णादक चार, अगुरुट्यु, उपघान, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका चारों प्रकारका वन्य होता है, क्योंकि, भ्रुववन्धी हैं।

मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त एवं मनुष्यनियोंमें तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान जानना चाहिये । विशेषता इतनी है कि द्विस्थानिक प्रकृतियों और अप्रत्याख्याना-वरणीयकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्थंचोंके समान है ॥ ७५ ॥

इस सुषका अर्थ कहते हैं — ओप्रमें जिन महानियों के जो वन्ध्रक कहं गये हैं व ही उन प्रकृतियों के वण्यक यहां भी हैं, इसीलिय सुबमें 'ओप्रक समान' रेस्सा कहा है। सब स्थानों में ओप्रयक्षे प्राप्त होनेपर उसके निर्पेधार्थ 'हिस्यानिक प्रकृतियां और अप्रत्याक्यानावरणीयकी प्ररुपणा पंचित्रिय निर्यक्षेके समान है 'ऐसा कहा है। इस इसामर्शक सुबसे स्वित अर्थकी प्ररुपणा करने हैं। यह इस प्रकार है— पांच झाना-वरणीय, बाद देशेनावरणीय, प्रश्काति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका गुणस्थानगत वन्यस्थानित, नथ्य और उदयका पूर्व या पश्चात ज्युच्छेत्र होनेका विचार, स्योदय-परोदय बन्धका विचार, सान्तर-निरन्तर बन्धका विचार, रुम्धाप्यान और वन्ध्यनिष्टस्थान

१ अ-आप्रत्योः ' बघढाणं वधत्रिणहृहाणं सादिः '; काप्रती ' बंघढाण वंधत्रिणहृहाण च सुगम सादि ' इति पाटः । समतो स्वीकृतपाटः ।

विचारेसु वि ओघादो णित्थ भेदो । जत्थित्य तं परुवेमो — मिन्छाइहिस्स तेवण्ण पन्चया, सासणे अहेताळीस, सम्मामिन्छादिहिम्हि बाएताळीस, असंजदसम्मादिहिम्हि बोदाळीस, वेउव्वियदुगभावादो । मणुसिणीसु एवं नेव । णविर सव्वगुणहाणेसु पुरिस-णबुंसयवेदा, असंजदसम्माहिहिम्ह ओराळियमिस्स-कम्मह्या, अप्पमत्ते आंहारहुगं णित्थ । मिन्छाइही चड-गृहंसंज्तं, सासणे तिगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तं मणुसगृहंसंजुतं च बंधित ।

णिद्दाणिदा-पयलापयला-श्रीणागिद्धि-अर्णताणुर्वधिचल्रकः-इत्थिवेद्द-तिरिक्खाल-मणुसाल-तिरिक्खार्-मणुसग्द-ओरालियसरीर-चल्रसंत्रण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खाद्द-मणुसगद्दपाओरगाणुपुन्ति-तज्जोव-अप्पसत्थिविद्दायगद्द-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि त्ति एदाओ एत्थ बेद्दाणपयडीओ । ओघवेद्दाणपयडीहिंतो जेण मणुस्साल-मणुसदुग-ओरालियदुग-वज्जिरसद्दसंघडणेहि अधियाओ तेण पंचिदियतिरिक्खवेद्दाणभंगो ति व्रत्ते ।

ण्त्य थीणगिद्धितय-इस्थिवद-मणुस्साउ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसंप्रण-ओरा-लियसरीरअंगोबंग-पंचसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुञ्ची-अप्सस्थिबहायग**इ-दुभग-दुस्सर-अणा**-देडजाणं पुर्व्वं बंघो वोन्छिण्णो पर्दछा उदओ। अणंताणुवंधिचउक्कस्स बंधोदया समं बोस्छि-

तथा सादि आदि बन्धके विचारों भी ओ घसे कोई भेद नहीं है। जहां भेद है उसे कहते हैं—
मिथ्यादृष्टिक तिरेपन प्रत्यय, सासादनमें अकृताळील, सम्यिग्मध्यादृष्टिमें व्याळील और
असंयनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें चवाळील प्रन्यय होते हैं, क्योंकि, यहां वैकियिक व वैकियिकिमिश्र प्रत्यय नहीं होते। मनुत्यिनयों में इसी प्रकार प्रत्यय होते हैं। विशेष दतना है कि सब गुणस्थानों पुरुष व नयुंसक वेद, असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदिश्विमिश्र व कार्मण, तथा अममत गुणस्थानमें आहारिक्षक प्रत्यय नहीं होते। मिथ्यादृष्टि चार्रा गतियों से संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगितके विना तीन गतियों संयुक्त और उपरिम जीव देवगतिस संयुक्त व मनुत्यगितसे संयुक्त बांधते हैं।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुविध्यचतुष्क, स्त्रविद्, तिर्येगातु, मनुष्यानु, तिर्येगाति, मनुष्यानित, औदारिकदारीर, बार संस्थान, औदारिकदारीरांगोपांग, पांच संहनन, तिर्येगातिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यानिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अमदास्त-विहायोगिति, दुर्भग, दुस्वर, अनादीय और नीचगोत्र, ये यहां द्विस्थानिक मकृतियां हैं। अधिद्विस्थान मकृतियां हैं। अधिद्वास्थान मकृतियां कें। सनुष्यानु मनुष्यानिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकद्विक और वक्षप्रेमसंहनन प्रकृतियां कें। अति प्रवासिक्ष्यान प्रकृतियां कें। अति स्त्रविक और वक्षप्रेमसंहनन प्रकृतियां अधिक हैं, अत एवं पंचिन्द्रय तिर्यचांकी द्विस्थान प्रकृतियांके समान प्रकृपणा हैं। ऐसा कहा है। अत

यहां स्त्यानगृद्धित्रय, स्त्रीवेद, मनुष्यायु, मनुष्यगति, औदारिकरारीर, चार संस्थान, औदारिकरारीरांगोपांग, पांच संहनन, मनुष्यगतिप्रायानुपूर्वी, अप्रशस्त्रविद्दायोगति, दुर्भग, दुस्तर और अनादेय, इनका पूर्वमें वन्ध व्युच्छिम्न होता है, पश्चान् उद्दय । अनन्तानुः ज्बंति, सासणे दोणगमुन्छेददंसणादो । तिरिक्खाउ- [तिरिक्खगड्-] तिरिक्खगड्गाओस्गापु-पुन्वी-उज्जोत्ताणं सणुस्सेसुदयाभावादो वंशोदयाणं पुत्वं एच्छा बोच्छेदविचारो णरिश । णीचा-मोदस्स पुत्वं वंशो पन्छा उदओ बोच्छिण्णो, वंशे सासणस्मि णड्डे संते पच्छा संबदासंजदस्मि उद्यवोच्छेददंसणादो ।

मणुस्साउ मणुस्सगईओ सोदएणेव वंधित । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगई-तिरिक्खगई-पाओग्गाणुपुळी-उज्जोवाणं परोदएणेव, मणुस्सेसु एदासिमुद्याभावादो । अवसेसाओ पयडीओ सोदय-परोदएण षज्ञंति, अद्भुवोदयत्तादो काओ विग्गहगदीए उदयाभावादो का वि तस्थेबुदयादो ।

श्रीणगिद्धितिय-अणंताणुवंधिचउक्काणं णिरंतरा वंधो, धुववंधितादो । [मणुस्साउ-] तिरिक्खाउआणं पि णिरंतरो, एगममएण वंधुवरमाभावादो । मणुमगद्दग्रओगगाणुपुच्नी-ओराटिय-सरीरे ओराटियसरीरअंगोवंगाणं सांतर णिरंतरो, सच्वत्थ सांतरम्य एदास्ति वंधस्स आणदादि-

बिल्यनपुष्कका बन्ध और उदय देनों साथ व्युच्छित्र होते हैं, क्योंकि, सासादन श्राणस्थानमें दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है। निर्यगायु. [तिर्यगाति], निर्यगातिप्रायायानु-पूर्वी और उद्योत, इनका चूंकि मनुष्योंमें उदय होता नहीं है अनः इनके बन्ध और उदयके पूर्व या पश्चान् व्युच्छें हैंसोंका यहां विचार नहीं है। नीचगोपका पूर्वमें बन्ध और पश्चान् उदय व्युच्छित होता है, क्योंकि, सासादनमें बन्धके नए हो जानेपर पश्चान् संयता-संयतमें उदयका व्युच्छेद देखा जाता है।

मतुष्यायु और मतुष्यगति खोदयसे ही बंधती हैं। तिर्यगायु, तिर्यगति, तिर्यगाति मायोग्यातुपूर्वी और उद्योत महातियां परोदयसे ही बंधती हैं, क्योंकि, मतुष्योमें हकके उद्यक्त अभाव है। दोष प्रकृतियां खोदय-परोदयसे बंधती हैं, क्योंकि, वे अधुबोदयी हैं तथा किन्हींके विमहगतिमें उद्यक्त अभाव है तो किन्हींका वहां ही उद्य रहता है।

स्त्यानगृहित्तय और अनन्तानृविन्धयनुष्कका निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, वे धुववन्धी प्रकृतियां हैं। [मनुष्यायु] और तिर्यगायुका भी निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धका विधाम नहीं होता। मनुष्यातिमायोग्यानुष्वी, औदारिककारीर और औदग्ररिकहारीरांगोपांगका सान्तर-निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, इनके बन्धके सर्वत्र सान्तर होनेपर भी आनगादिक देवोंमेंसे मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्महर्त

१ अ-काप्रत्योः ' औराष्टियसरीर् ' इन्येतझारित ।

देवेहिंतो मणुस्सेसुप्पणाणमंतोमुहुत्तकाठं णिरंतरत्तुवठंभादो । अवसेसाओ सांतरं बज्बंति, एमसमप्प षंपुवरसर्दसणादो ।

एदासि पन्चया देासु वि गुणहाणेसु तिरिन्खवेद्दाणियपयश्चिपन्चएहि तुस्ता । श्रीध-गिद्धितय अणंताणुवंधिचउनकं च मिच्छाद्दद्दी चउगइसंख्र्चं, इरियंबेदं देा वि णिरयर्षक्ष् विषा तिमइसंख्र्चं, तिरिन्खाउ-तिरिन्खगइ-तिरिन्खगद्दपाओग्गाणुपुन्वी-उज्जोबाणि तिरिन्ख-गृद्रसंख्र्चं, मणुस्साउ-मणुस्सगद्द-मणुस्सग्र्द्रपाओग्गाणुपुन्वीओ मणुसगद्रसंख्र्चं, ओराठियस्तीर-चउसंग्र्य-ओराठियसरीरअंगोवंग-चंचसंपदणाणि तिरिन्ख-मणुसगद्दरंख्र्चं अप्यसर्थविद्दाययद्द-दुअग-दुस्सर-अणादेज्ब-भीचागोदाणि देवगईए विणा मिच्छाद्दद्दी तिगइसंख्र्चं, सासणो तिरिन्ख-मणुसगद्दरंग्र्चं वंथद ति ।

सन्द्रासि पयडीणं चंघस्स मणुसा सामी । चंघदाणं चंघविणहड्डाणं सादि-आदिविचारो वि ओचतुत्लो ।

णिहा-पयलाणं पुर्व्वपच्छावंपोदयवोच्छेद-मोदयपरोदय-सांतरिकरंतरं वंधद्धावं वंध-विणइहाणं सादिःआदिवंधपरिकखा ओपतुला । पच्चया मणुसगर्दए परूबिदपच्चयतुन्स्य । मिच्छाइही चउगइसंजुत्तं, सासणसम्मादिही तिगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं वंधिति ।

कास तक निरम्तरता पायी जाती है। रोप प्रकृतियां साम्तर बंधती हैं, क्योंकि, एक समयमें उनके बन्धका विधास देखा जाता है।

इनके प्रत्यय दोनों ही गुणस्थानोंमें तिर्येवोक्ती विस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्ययांके समान है। स्थानपृक्षित्रय और अनन्तानुकियवनुष्कको सिष्याहिष्ट वारों गतियोंसे संयुक्त, क्षीवंदको सिष्याहिष्ट व सासादनसम्पन्दिष्ट दोनों ही नरकारिके विना तील तित्योंसे संयुक्त, त्रियंगायु, तिर्येगाति तियंगातिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको तिर्येगातियों संयुक्तः त्रमुष्यायु, सनुष्यगति और सन्तुष्यातिप्रायोग्यानुपूर्वीको सनुष्यगतिको तिर्येगाति संयुक्तः त्रमुष्याति संयुक्तः त्रमुष्याति संयुक्तः त्रमुष्याति संयुक्तः त्रमुष्याति संयुक्तः तथा अप्रशस्तिविद्यागिति, दुर्भगः, दुस्वर, अनावेष त्रियंगाति व सनुष्यगतिसे संयुक्तः तथा अप्रशस्तिविद्यागिति, दुर्भगः, दुस्वर, अनावेष और तीवगोष्रको सिप्यादिष्ट देवगतिके विना तीन गतियंसि संयुक्त व सामाद्यक्षित्र विद्यानिति संयुक्त व सामाद्यक्षित्र (त्रियंगाति वर्ष सनुष्यातिके संयुक्त वांधते हैं। सब प्रकृतियोक क्ष्मके सनुष्य स्वासी हैं। वन्धाध्यात हथानिक सम्बुष्यान सीर सादिकारिकका विचार सी नोषके समान है।

नित्रा और प्रखलाका पूर्व या प्रधान होनेवाला वन्योत्रव्युच्छेन, स्वोत्त्य-परोदव-बन्ध, साम्तर-निरम्तर बन्ध, बन्धाप्तान,वन्धविनदृश्यान और सादि-आदि वन्धकी वरीका भोषके समान है। प्रत्यय मनुष्यगतिमें कहे हुए प्रत्ययोंके समान हैं। मिध्यादृष्टि बार्से गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्यन्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त, और होय ग्रुक्कानवर्ती देव- मणुस्सा सामी ।

सादाबेदणीयपरिक्खा वि स्लोघतुल्ला । णविर पच्चयमेदो सामिमेदो च णायव्यो ।
सिच्छाद्द्दी सासणसम्माद्द्दी सादाबेदणीयं णिरयगईए विणा तिगइसंजुनं, उविस्मा देवगइसंजुनं
बंधित । एवं सञ्चपदेषु पच्चयमंजुन्तसामित्तमेदो चेव । सो वि सुगमो । अण्णत्य स्लोधं
पिच्छद्ण ण कोच्छि मेदो अत्थि ति ण पर्विवञ्जदे । णविर पंचिदियन्तस-बादराणं बंधो
मिच्छाद्दिहिंद्द सोदओ सांतर-णिरंतरो । मणुसपञ्चत्तम् अपञ्जनवंधो परोदओ । एवं
मणुसिणीसु वि वन्तव्यं । णविर उवधाद-परधाद-उस्सास-पनेयसरीराणमसंजदसम्मादिहिन्द्द सोदओ बंधो । पुरिस-णचुंमयवेदाणं सव्यत्य परोदओ । इत्थिवेदस्स सोदओ । खबगसेडीए तिरुषयरस्स णत्थि बंधो, इत्थिवेदण सह खनगसेडिमारोहणं संभवाभावादो ।

मणुसअपज्जत्ताणं पंचिंदिंयतिरिक्खअपज्जत्तभंगो ॥ ७६ ॥

एदं बज्झमाणपयडिसंखाए समाणतं पेक्खिय पंचिदियतिरिक्खअपजतभंगो' ति वत्तं । पज्जविद्वयणए अवर्ळीयजमाणे भेदो उचलम्भदे । तं जहा — पंचणाणावरणीय-णवदंसणा-

गतिसे संयुक्त बांधते हैं। मनुष्य स्वामी हैं।

सालांबदनीयकी परीक्षा भी मूलोपके समान है। विशोप यह है कि प्रत्ययभेद व स्वामिभेद जानना चाहिये। मिध्याहिए और सासादनसम्प्रगारिष्ट मानांबदनीयको नरक- सातिके बिना तीन गनियोंसे संयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगीतिने संयुक्त बांघेत हैं। इस प्रकार सब परोंम प्रत्ययसंयुक्त स्वामिन्यभेद ही है। वह भी सुग्रम है। अन्यश्र मूलोघकी अपका शीर कुछ भेद नहीं है, इसीिल्ये उसकी यहां प्रकपण नहीं की जाती। विशेषता यह है कि पंचेल्ट्रिय, त्रम और वादरका वन्ध मिस्याहिए युष्ट्यानमें स्वादय और सान्तर-निरन्तर होता है। मुख्य पर्यापनकोंमें अपर्याजनक बन्ध परोद्यसे होता है। इसी प्रकार मनुष्यनियोंमें भी कहना चाहिये। विशेषता केवल यह है कि उपधात, परधात, उच्छवास और प्रत्यक्तशरीर, इनका असंयतसम्प्रयहिष्ट गुणस्थानमें स्वीदय क्य होता है। पुरुषवेद और नपुंतकवेदका स्वीद परोद्य बन्ध होता है। अपकोषी में तीव्यत्व स्वीद परोद्य बन्ध होता है। अपकोषी में तीव्यत्व स्वाप्ट परोद्य बन्ध होता है। अपकोषी में तीव्यत्व स्वाप्ट परोद्य क्या नहीं होता, है। अपकोषी में तीव्यत्व स्वाप्ट पराव्या नहीं होता, क्योंक, क्षीवेदके साथ अपकोषी चढ़नकी सम्भावना नहीं है।

मनुष्य अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है ॥ ७६ ॥

यह यध्यमान प्रकृतियाँकी [१०९] संख्यासे समानताकी अपेक्षा करके 'पंचेन्द्रिय-तियँच अपर्यान्तोंके समान है ' पेसा कहा गया है । पर्यायार्थिक नयका अवलंबन करने-पर भेद पाया जाता है । यह इस प्रकार है— पांच झानावरणीय,नी दर्शनावरणीय,साता

१ प्रतिषु ' पेक्खिय ओषभंगी ' इति पाठः ।

सोलसकसाय-णवणेकसाय-तिरिक्खाउ- मणुस्साउ तिरिक्खगई- मणुसगइ- एईदिय- वेर्धदियतींईदिय-चउरिरिय-पेचिदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरिर- छसंग्रण-ओरालियसरिर्कगीवंग-छसंभडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओगगाणुपुन्वी-अगुस्वल्रहुव-उवधादपरघाद-उस्सास-आदाउज्ञोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्ञत-अपज्ञत-पत्त्य-साधारण-सरीर-[थिरा-]थिर-सुहासुइ-सुभग-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज-अणादेज-जसिकित-अजसिकितणिमिण-णीजुच्चागोद-पंजतराइयाणि ति एदाओ एरथ बज्जमाणपयडीओ । एरथ थीणागिद्धतिय-इरिथ-सुरिस्वेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगई-एईटिय-बीईटिय-तीईदिय-चउर्गिदियजादि- हुंडसंग्रणविद्धिदर्पचसंग्रण-असंपत्तसेवृद्धविद्दिर्पचंचसंप्रहण-तिरिक्खाइपाओगगाणुपुन्वि-परघादुसंग्रण-वारावु-जोन-दोविहायगदि-थावर-सुदुम-पज्जत-साहारण-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्जक्साकित-उच्चागीदाणं उदयाभावादो वंथोदयाणं संतासंताणं सिण्कासाभावादो पुन्वं पच्छा
वेर्धोदयवो-छद्यरिर्व्ख परिस्खा ण कीरदे । ससपयडीणं पि वंथसंसव एरथ उदयस्स वोच्छेदाभावादो ण कीरदे ।

पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-मिन्छत्त-णबुंसयवेद-मणुस्साउ-मणुसगइ-पंचिदिय -जादि-तेज्ञ-कम्मइय-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-अपज्जत-थिराथिर-सुमासुम-दुभग -

पांच क्षानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, नपुंसक्तवेद, मनुष्यायु, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण द्वारीर, वर्णादिक चार, अगुरुरुपु, त्रस, अणादेज्ज-अजसिक्ति-णिमण-णीचागाद-पंचतराइयाणं सोर्जा वंधो । णिदा-पयला-सादासाद-विस्तकसाय-ओरालियसरीर-इंडसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-असंगत्तसेवटसंघडण-अणुसगढ्द-पांजाम्याणुपुष्टि-उवचाद-पत्तेयसरीगणं सोदय-परोदएणं वंधो, अद्धवोदयत्तादो, कार्सि च विस्माद-मदीए उदयामावादो एक्किस्स विस्महगदीए चेव उदयत्तादो । अवसेसाओं परोदएणेव चर्चित ।

पंचणाणावरणीय-णवरंसणावरणीय-मिन्छत्त सोलसकसाय-भय-दुर्गुछा-तिरिन्छ -मणु-स्साउ-भोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंघ रम-फास-भगुरुअल्हुअ-उवचाद-णिमिण-पंचेतरा-इयाणं णिरंतरो बंघो, एत्य बंघेण धउन्वियादो । अवसेसाणं सांतरो बंघो, एगसमएण बंधस्स विरामदंसणादो । [तिर्वग्गाइ-तिर्वग्गाइपाओग्गाणुपुत्री-]णीचागोदाणं बंधस्स सांतर णिरंतरत्तं किण्ण उच्चेद ? ण, तेउ-वाउक्काइयाणं सत्तमपुदवीणरङ्गाणं व मणुसेस्नप्तिए अभावादो ।

बादर, अपयोन्त, स्थिर, अस्थिर, गुझ, अग्रुभ, दुर्मग, अनाद्य, अयदाकीर्ति, निर्माण, नीचगोत्र, और पांच अन्तराय, इनका स्थोदय बन्ध होता है। निद्रा, प्रचला, साना व असाता बेदनीय, बीक कपाय, औदारिकदारीर, हुण्डसंस्थान, औदारिकदारीरांगोपांग, असंग्राप्तस्थारिकासंहनन, मनुष्यगतिप्रायोगयानुपूर्वी, उपधात और प्रत्यकदारीर, इनका स्थोदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ये अधुबेदयी प्रकृतियां हैं, तथा किन्हींका विक्रमानिमें उदय नहीं रहना और एकका विप्रहगतिमें ही उदय रहता है। दोष प्रकृतियां परोदयसे ही बंधती हैं।

पांच झानावरणीय, नो दर्शनावरणीय, मिथ्यात्य, सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगाषु, मनुष्यायुं, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गम्ध, रस, स्पर्श, अगुरुरुषु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, बन्धकी अपेक्षा ये प्रकृतियां भ्रव हैं। शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें उनके बन्धका विभ्राम देखा जाता है।

र्शका-ं[तिर्थग्गति, तिर्थग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और] नीचगोत्रकं बन्धमें साम्तर-निरम्तरता क्यों नहीं कहते ?

समाधान — नहीं कहते, क्योंकि, तेजकायिक व वायुकायिक जीवोंकी सातर्जी पृथिवीके नारकियोंके समान मनुष्योंमें उत्पत्तिका अभाव है।

१ अ-कामत्योः ' अवसेसद्वाओं '; आपतो ' अवसेसद्धाओं ' इति पाठः ।

२ मतिषु 'दजस्थियादो 'इति पाठः।

तिरिक्खाअपञ्जताणं व पश्चया परुवेदञ्चा । तिरिक्खाउ-तिरिक्खाम्ह-एर्म्सदय-भैम्मेकिक-तीर्वेदिय-च उरिरिद्यजादि तिरिक्खगक्षपाक्षेमगाणुपुन्नी-आदानुन्नीत-थावर-सुकुम-साहारणसरीराणि-तिरिक्ख-गङ्संज्ञत्ते चन्त्रति । मणुस्साउ-मणुमगङ्गाओग्गाणुपुन्नी-उच्चागोदाणि मणुसगङ्संज्ञत्तं बन्ज्रंति । अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्त मणुसगङ्संज्ञतं बन्ज्रंति । मणुस्सा सामी । बंधदाणं बंध-विणड्डाणं सादिअदिपरुवणा च पन्तिदियतिरिक्खभपञ्जत्तपरुवणाए तुल्ला ।

देवगदीए देवेसु पंचणाणावरणीय-खदंसणावरणीय-सादासाद-वारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रिद-अरिद-सोग-भय-दुगुंछा-मणुस्तग्रह-पंचिंदियजादि-ओरालिय- तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरा-लियसरीरअंगोवंग-वज्जिरसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसाणु-पुव्वि-अगुरुअलहुव उवघाद-परघाद--उस्सास-पसत्थविद्यायमदि-तस-वादर-पज्जत-पत्तेयमरीर-थिराथिर-सहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेण-जस-किति-अजसिकित-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ ७७ ॥

प्रत्ययाकी प्ररूपणा नियंच अपयोग्तोक समान करना चाहिये। तिर्वगायु, तिर्यग्गति, एकेन्त्रिय, द्वीन्द्रिय, चीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यग्गतिमायोग्यानुपूर्वी, आताब, उद्यात, स्थावर, सूक्ष्म ओर साधारणशारीरको नियंगतिसे संयुक्त वांघते हैं। मतुष्यायु, मतुष्यातिमायोग्यानुपूर्वी और उद्यागोको मनुष्यातिस संयुक्त वांघते हैं। शेष मकुत्यिक्षेत्री निर्यगति व मनुष्यातिमायोग्यान, वन्यकिष्यस्थाति विर्यगति व मनुष्यातिस संयुक्त वांघते हैं। मनुष्यात्म हैं। वन्धायान, वन्यकिष्यस्थान, वन्यकिष्

देवगतिमें देवोमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेक्सीक, सारह कथाय, पुरुषवद, हास्य, रित, अति, ज्ञोक, भय, जगुप्सा, मनुष्यगित, पंचिन्द्रियज्ञति, जौदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचनुरस्त्रसंस्थान, जौदारिकशरीगंगोणांग, वन्नर्षभसंहनन, वर्ष, गन्ध, रसर्स, स्पर्श, मनुष्यगितप्रायोग्यानुपुर्वी, अगुरुरुष्ठ, उपधात, परधात, उच्छ्वास, प्रश्चस्त-विद्यायोगित, त्रस, सादर, पर्याप्त, प्रत्येकशीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमग, सुख्य, आदेय, यशकीर्ति, जयस्थितीति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कृतन बन्धक और कृतन अवस्थक है ? ॥ ७७ ॥

्र सुगमभेदं ।

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्टी वंधा । एदे वंधा, अवंधा णस्थि ॥ ७८ ॥

देसामासियसुत्तमेदं, तेणेदेण सह्दत्यपरूवणं कस्सामो-- मणुसगइ-ओरालिय-सरीर-अंगोवर्ग-वज्जिरसहसंपडण-मणुसगइपाओरगाणुपुज्वी-अजसिकतीणमुदयाभावादो बंघो-दयाणं पुज्वं पच्छा बोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे। ण सेसाणं पि, बंघस्सेव उदयस्स बोच्छेदाभावादो।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिदियजादि-तेजाःकम्मइयसरीर-वण्ण-गंधनरस फास-अगुरुबळहुअ-तस-वादर-पज्जत-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसिकिति-णिमिण-उञ्चागोद-पंचेतराइयाणं सोदएणेव वंघो । णिहा-पयळा-मादासाद-वारमकमाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोगःभय-दुगुंछाणं सोदय-परोदएण वंघो, अद्धुवादयतादों । समचउरससंठाण-

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतमस्यग्दृष्टि तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं॥ ७८॥

यह सुत्र देशामशैक है, इसलिये इससे सृचिन अर्थकी प्ररूपणा करने हैं — मनुष्य-गति, औदारिकारारीर, औदारिकारारीरांगोपांग, वक्तपंगसंहनन मनुष्यातिप्रायाग्यानु-पूर्वी और अयशकीर्ति इनके उदयका अभाव होनेसे वन्ध और उदयक पूर्व या पश्चात् पुन्छेन्द्र होनेकी परीक्षा नहीं की जाती है। होण प्रकृतियांकी भी वह परीक्षा नहीं की जाती, क्योंकि, बन्धके समान उनके उद्यक्ष उपुन्नेस्ट्रका अभाव है।

पांच क्वानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेट्रिय जाति, तैजम व कामण दारीर, वर्ण, गम्ब, रस. स्पर्श, अगुरुल्षु, त्रस. वादर, पर्याप्त. स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, बादेय, यशकीर्ति, निर्माण, उद्यगोत्र और पांच अन्तराय. इनका स्वोदयसे हो वस्थ होता है। निदा. प्रचला, साता व अस्ताता वदनीय बारह कपाय, एउपवेदर, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुलुस्ता, इनका स्वाद्य परीवयंत्र वस्य होता है, क्योंकि, य अभुवोदयी प्रश्तियां हैं। समजुरस्तरंस्थान, प्रत्येकशरीर और उपधातका स्वोद्य

र कामतौ 'ओराळियसरीरंगोवग ' इति पाठः ।

२ मतिष्ठ ' अद्भवो अद्भवादयत्तादो ' इति पाठः ।

पत्तेयसरीर-उनघादाणं सोदय-परोदएण बंघो, विग्गदृगदीए उदयाभावादो । परघादुस्सास-पसत्यविद्यायगदि-सुस्सराणं सोदय परोदएण बंघो, अपञ्जतकाले उदयाभावे वि बंघदंसणादो । णविर सम्माभिच्छाइद्विस्स एदासिं सोदएण वंघो। मणुसगइ ओरालियसरीर ओरालियसरीरअंगो-वंग-वञ्जरिसद्दसंघडण-मणुस्साणुपुन्वी-अजसिकतीणं परोदएणेव वंघो, तत्थेदेसिसुदयविरोहादो।

पचणाणावरणीय-छदंतणावरणीय-भारसकसाय भय दुगुंका ओराल्यि तेजा कम्मइय-सरीर वण्ण-गंप-रस-फास-अगुरुअल्रहुअ-उवधाद-उस्सास-बादर-पञ्जत-पत्तेयसरीर-णिभिण-पंचं-तराइयाणं णिरंतरेर वंधो, देवगदीए वंधविरोहामावादो । सादासाद-इस्स-रि-अरिद-सोग-थिराथिर-सुभासुम-जसिकतीणं सांतरेर वंधो, एगसमएण वंधविरामुबलंभादो । पुरिसवेद-सम-चउरसमंद्राण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थिबहायगइ-युभग-सुस्सर-आदेञ्जुच्चागोदाणं मिच्छाइड्डि-सासणसम्माइटीसु सांतरेर वंधो, एगसमएण वंधविरामदंसणादो । सम्माभिच्छाइड्डि-असंजद-सम्माइट्डीसु णिरंतरेर, तत्थ पडिवक्यवरयडीणं वंधाभावादो । पंधिदियजादि-मणुस्साद्द्र-मणुस्साणुपु-त्री-ओराल्यसरीरअंगोवंग-तसाणं मिच्छाइड्डिम्डि सांतर-णिरंतरेर । सासणसम्मादिट्डि-सम्माभिच्छादिङ्डि-असंजदसम्मादिट्डीसु णिरंतरेर, पडिवक्खपयडीणं वंधाभावादो । णवरि

परोदयसे बन्ध होता है. क्योंकि. विधहगतिमें इनके उदयका अभाव है। परचात, उच्छवास, प्रशस्त्रविहायांगित और सुस्वर, इनका स्वादय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनके उदयका अभाव होता है। क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनके उदयका अभाव होता है। विशेषता यह है कि सम्याम्ययापिक इतका स्वोदयमें बन्ध होता है। मनुष्यापि, औदारिकहारीर, आदारिकहारीरांगोपांग, बज्जपेमसेहनत, मनुष्यानुपूर्व और अयशकीर्ति, इनका परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, देवोंमें इनके उदयका विशेष है।

पांच ब्रानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कयाय, अय, जुगुस्सा, औद्दारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गम्ध, रस, स्पर्श, अगुरुक्यु, उपधात, उच्छ्वास, बादर, पर्योच्न, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बच्छ होता है, पर्योक्त, स्त्रेसकशरीर, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बच्छ होता है, पर्योक्त, होक, स्क्रिस्त, अस्ति, अस्ति, इनके निरन्तर वच्छका विशेष नहीं है। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अस्ति, शक्ति, स्वक्र अस्तर, अस्ति, इनके निर्माण कार्यक्र क्षेत्र कार्यक्र सम्बन्धर कार्यक्र क्षेत्र कार्यक्र सम्बन्धर कार्यक्र स्वात् व व अप्ते क्षेत्र कार्यक्र स्वात्म हिन्दे व अप्ते अप्ते अप्ते अप्ते कार्यक्र स्वात्म व अप्ते क्षेत्र कार्यक्र सम्बन्धर कार्यक्र क्षेत्र कार्यक्र कार कार्यक्र कार कार्यक्र क

वायुक्तस्य सासणन्य सांतर-णिरंतरे। ।

मिच्छाइडिस्स थावण्ण, सामणस्म सत्तेत्तालीम, असंजदसम्मादिडिस्स तेत्तालीस देवेसु पं**र्वदे**वाः, जोषपञ्चपसु णबुंसयवेदोरालियदुगाणमभावादेः । सम्मामिच्छादिडिस्स एक्केतालीस पंर्वदेवाः, जोषपञ्चपसु णबुंसयवेदोरालियकायजोगाणमभावादेः । संसं सुगमं ।

एदाओ सन्वपयडीओ सम्मामिन्छादिहि-असंजदसम्मादिहिणो मणुसगइसंख्तं पंपेति, तत्य तित्वित्वतर्षम् वंभागवादा । मणुसगइ-मणुसाणुद्ध-उन्चागोदाणि मणुसगइसंख्तं, अवस्त्रसम्भा पयडीओ मिन्छाहि-सामणसम्माइहिणो तित्वित्व-मणुसगइसंख्तं वंधितं, अवि-रोहादो सन्वपयडीण वंधस्स देवा सामी । वंधद्वाणं वंधविणासो च सुगमो । पंचणाणावरणीय- छद्दमणावरणीय-वारमकसाय-भय-दुर्गुछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण गंध-रम-फास-अगुरुअल्दुअ- उवधाद णिमिण-पंचतराइयाणं मिन्छाइहिम्ह चउन्विहा वंधा । अण्णस्य तिविहा, यउन्विया-भावादो । अवसेसाणं पयडीणं मन्वगुणेसु सादि-अद्भो ।

मान्तर निरन्तर बन्ध है।ता है ।

देवोंमें मिथ्यादृष्टिकं यावन, सासाद्वकं मंताठील और असयतसम्यग्दृष्टिकं तैताठीसं प्रत्यय होते हैं, क्योंकि. यहां आघप्रत्ययोंमें नपुंसकवद और आदारिकद्विकका अभाव है। सम्यग्मिथ्यादृष्टिकं इकताठील प्रत्यय होते हैं, क्योंकि. उसके आघ प्रत्ययोंमें मर्पुसकवेद और औदारिकं काययोगका अभाव है। शेष प्रत्ययग्रमण सुगम है।

इन सब प्रकृतियोंका सम्याग्मध्यादिष्ट और असंयतसम्यग्रहिष्ट मनुष्यगतिस संयुक्त बांबते हैं, क्योंकि, इन गुणस्थानांमे नियंचगानिका बन्ध नहीं होता । मनुष्यगति, मनुष्यानुष्यीं और उच्चगात्रका मनुष्यगतिम संयुक्त बांधत हैं । दोष क्रकृतियोंको मिध्यादिष्ठ और सासादनसम्यग्रहाष्ट नियंगाति व मनुष्यगतिस संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, इसमें कोई विरोध नहीं है।

सर्व प्रकृतियोंके वन्धकं देव स्वामं हैं। वन्धाध्वान और वन्धविनाश सुगम है। वंच बानावरणीय, छह दर्शनीवरणीय. वारह कवाय, भय, जगुप्ता, तेजस व कांमेण इंगरीर, वर्ण, गन्थ, रस, स्पर्श, अगुरुरुपु, उपधात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका विश्ववाहीय गुणस्थानमें वारों प्रकारका वन्ध होता है। अन्य गुणस्थानों तीन प्रकारका क्यह होता है, अन्य गुणस्थानों तीन प्रकारका क्यह होता है, क्योंकि, वहां भूव वन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका नय गुणस्थानों सहिद व अभूव वन्ध होता है।

र अप्रती 'चउन्त्रितासोदों', आप्रती 'चउन्त्रियामोद्यादों', काप्रती 'चेड्सिहोमो**सन्ते**' इति ककाः।

णिहाणिहा-पयलापयला थीणगिद्धि-अणंताणुर्वधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-च उसंठाण च उसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुन्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविद्दायगइ-दुभ्म-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो? ॥ ७९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ८० ॥

अणंत।णुषंधिचउक्कस्स वधादया समं बोच्छिज्जीत, सासणिम उभयामार्बदंसाणादा । इत्थिवदस्स पुट्यं वंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जीद, सासणिम वेच्छिण्णषंधित्धवेदस्स असंजदसम्मादिष्टिम्ह उदयवोच्छेददंसणादा । अधवा, दवगदीण, वंधो चेव वोच्छिज्जिद णोदओ, तदुदयविरोहिगुणहाणाभावादो । एदमत्थपदमण्णत्थं वि जोजयन्त्र । थीणागिद्धितिय-

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी कोध, मान, माया, लोभ, स्रीवेद, तिर्वगायु, तिर्वम्मित. चार मैस्थान, चार संहतन, तिर्वम्मितप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रश्नन्तिबहायोगिति, दुर्भग, दुस्बर, अनादेय और नीचगोत्र, इनका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ ७९ ॥

यह सुत्र स्गम है।

मिच्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक है, शेष देव अबन्धक हैं। ८०॥

अनन्तानुवार्ध्यचतुष्कका वन्ध और उदय दोनों एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्यांकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है। ऋविदका पूर्वमें वन्ध और पश्चात् उदय द्युच्छिन होता है, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें ऋविदके वन्धके द्युच्छिन हो जानेपर असंयतसदयदार गुणस्थानमें उदयका व्युच्छेद देखा जाता है। अथवा, देखाातिमें वन्ध ही द्युच्छिन होता है, उदय नहीं, क्योंकि, देवगतिमें उक्त प्रहातियोंके उदयके विरोधी गुणस्थानोंका अभाव है। इस अर्थपदकी अम्यत्र भी योजना करना खादिये।

१ प्रतिषु ' उसवभाव ' इति पाठः । १ प्रतिषु ' -सन्माविद्वाहि ' इति पाठः । ३ प्रतिषु ' एक्सत्वपदमणत्व ' इति पाठः ।

1 8. 60.

तिरिक्खा उ-तिरिक्खा इ-च उसंठाण-च उसंघडण-तिरिक्खग इपाओ गगाण पुन्वी-उज्जीव अप्पसत्थ-विहायगड-द्रभग-दस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं देवेसदयाभावादी बंधोदयाणं पव्वं पच्छा वोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे ।

अणंताणुर्वधिचउक्किन्थिवेदा सोदय-परेदएण, अवसेसाओ पयडीओ परोदएणेव बज्जंति । थीणगिद्धित्तिय-अणंताणवंधिचउकक तिरिक्खाउआणं णिरंतरे। बंधो । अवसेसाणं सांतरा, एगसमएण बंधवरम्वरुंभादो । कयावि दो तिण्णियमयादिकारुपडिबद्धबंधदंसणादो सांतर-णिरंतरबंधी किण्ण उच्चदे ? ण, एदास पयडीस णिरंतरबंधणियमाभावादो । एदासिं पयडीणं पच्चया देवगइचउद्दाणपयडिपच्चयतुल्ला । णविर तिरिक्खाउअस्म पुव्विलुपच्चएस् वे अध्वयमिस्स कम्मइयपञ्चया अवणेदव्वा । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओगगाण-प्रनी-उज्जीवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं, अवसेसाओ पयडीओ मिच्छाइडी सामणमम्माइडी तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति. अविरोहादो । देवा मामी । वधदाण बधविणहङ्काण च सगमं । श्रीण-

स्त्यानगृद्धित्रय, तिर्यगाय, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन. तिर्यग्गतिप्रायोग्यानपूर्वी. उद्योत. अमराम्नविहायांगित, दर्भग, दम्बर, अनादेय और नीचगात्र, इनका देवाम उदयामाव होनेसे बन्ध और उदयक पूर्व या पश्चान व्यच्छेद होनेकी परीक्षा नहीं की आती ।

अनन्तानुबन्धिसत्क ओर स्त्रीवेद स्वेत्रय परेत्यसे तथा शेष प्रकृतियां परो-दयक्षे ही बंधनी है। स्थानगृज्जित्रय, अनन्तानुवन्धिचतुष्क ओर तियंगायुका निरन्तर यन्ध होता है। दोर प्रकृतियाँका सान्तर बन्ध होता है. क्योंकि. एव समयमे उनके बन्धका विभाग पाया जाता है।

शंका कदाचित दो तीन समयादि कालमे संबद्ध बन्धके देखे जानेसे सान्तर निरन्तर बन्ध क्यो नहीं कहते ?

समाधान--- नहीं कहते, क्योंकि इन प्रकृतियोंमें निरन्तर बन्धके नियमका अभाव है।

इन प्रकृतियोंके प्रत्यय देवगतिकी चतुस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्ययोंके समान है। विशेषता केवल यह है कि तिर्वगायुके पूर्वीक प्रत्ययोंमें वैकियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये। तिर्यमाय, तिर्यमाति, तिर्यमातिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनको तिर्य-गातिसे सयुक्त, तया शेव प्रकृतियोंकी मिण्याहाधे व सासादनसम्यग्हाधे तियंगाति और मनुष्यगतिस संयुक्त बांधने हैं, क्योंकि, उसमें कोई विरोध नहीं है। देव स्वामी हैं। वस्थाध्वान

१ प्रतिप्र ' योवो ' इति पाठ ।

६ अ काप्रत्योः 'णियमासावा ' इति पाछ ।

गिद्धितिय-जर्णताणुषंभिचउनकाणं' मिच्छाहाद्विन्दि चउन्त्रिहा षंघो । सार्वणे दुविहो, अणादि-धुवताभावादो । अवसेसाणं पयडीणं षंघो सादि-अद्धवो, अद्धवर्षधितादो ।

मिच्छतः णवुंसयवेद-एइंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेबद्धसंघ-डण-आदाव-यावरणामाणं को वंधो को अबंधो ? ॥ ८१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइद्वी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ८२ ॥

एदस्स अत्यो बुबोद् — भिच्छत्तस्स वंधोदया समं वाच्छिजांत, भिच्छाइद्विन्दि चेव तदुमयमुवरुभिय उविर तदणुवरुभादा । णवुसयवेद-एइदियजादि-ढुंडसंठाण-असंपत्तसेवद्वसंघ-डण आदाव-यावराणमेत्थुद्याभावादा वंधोद्याणं पुन्वापुन्ववीच्छेद्परिक्खा ण कीरदे । भिच्छतं सोद्र्ण, अण्णाओ पयडीओ पोद्र्णेव घन्झंत, तहोवरुभादो । भिच्छतं णिरंतरं बन्झइ, धुववंधितादो । अवराओ सांतरं बन्झंति, एगसमएण बंधुवरमुवरुभादो । एदासिं पच्चया

और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। स्त्यानगुद्धित्रय और अनम्तातुर्वन्धिचतुष्कका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारी प्रकारका बन्ध होता है। सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध **होता** है, स्थानिक, वहां अनादि और भुव बन्धका अभाव है। रोप प्रकृतियाँका बन्ध सा**दि य** अभुव होता है, क्योंकि, व अभुवयन्धी प्रकृतियां हैं।

मिष्यात्व, नपुंसकवेद, एकेन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तस्यादिकासंहनन, आताप और स्थावर नामकर्मोका कोन चन्यक और कीन अवन्यक है? ॥ ८१ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं॥ ८२॥

इसका अर्थ कहने हैं — निश्यात्यका बन्ध और उदय दोनों साथमें स्वुच्छिक्क होने हैं, क्योंकि, निश्यादिष्ट गुजस्थानमें ही निश्यात्यका बन्ध और उदय दोनों पाये जाते हैं, करा वे नहीं पाये जाते । नपुंसकवेद, एकेन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंमातस्युपादिका-गंडनन, आताप और स्थावर, इनके उदयका पहां अभाव होनेसे वन्ध अंपर उदयके पूर्व या पश्चात् स्युच्छेदकी परीक्षा नहीं की जातो। निश्वात्य मकृति स्थेदयके और कश्य प्रकृतियों परोत्यन्ते ही बंधती हैं, स्योंकि, वैसा पाया जाता है। निश्यात्य मकृति क्रिस्तर पंथती है, स्योंकि, धुवबन्धी है। अन्य मकृतियां सान्तर बंधती है, स्योंकि, एक स्नायमें

१ अन्कामकोः 'अणेताणुवंधी ति चउक्काण' इति पाठः । 🐪 २ मतिषु 'स्कीवर्ककेदरे' इति आहः ।

देक्सउद्धाणस्याह्मपञ्चयत्ह्य । मिच्छत्त-णंउसयवेद-हंडसंद्राण-असंपत्तसेवहसंपडणाणि तिरिक्स-मणुसगृद्दसंद्धतं, एइंदियजादि-आदाव-थावराणि तिरिक्सगृद्दसंद्धतं वज्ज्ञति, सामावियादो । देवा सामी । वंधदाणं वंधविणदृद्दाणं च सुगम । मिच्छतग्म वधो चउन्त्रिहो, धुववंधितादो । सम्मणं मादि अदवो, अदववंधितादो ।

> मणुस्साउअस्म को बंधो को अबंधो ? ॥ ८३ ॥ सम्म

मिच्छाइट्टी सामणसम्माइट्टी अमंजदसम्माइट्टी बंधा। एदे बंधा, अवसेमा अवंधा॥ ८२॥

एदम्स अत्थे। बुच्चदे— देवेषु मणुस्माउअस्स उद्याभावादा बंधादयाण पुट्यावर-वाच्छरपरिक्षा णात्य । पोदाएण बंधित', मणुस्माउअस्म देवमु उदयभाविगोहादा । णिरंतगे बधो, एगममएण वधुवरमाभावादा । मिन्छादिष्टि सामणसम्मादिष्टि असंजदसम्मा-दिद्यीणं जहाकमेण पंचाम पंचेताळीम [एक्केताळीम] पच्चया, सग स्योगपण्चएसु ओगाठिय-

उनका वन्धविश्वाम पाया जाता है। इन मक्तियोंके प्रत्यय देवाकी चतुस्थानिक मक्तियोंके प्रस्वाने कार सम्बन्धिक समान है। मिश्यान्य, नचुंनकवेद, इण्डमंस्थान और अमंत्राप्तामृत्यादिकासंहनन, ये तिर्वस्थाति च मनुष्यातिक समुक्त, तथा एकेहिंद्रवज्ञाति, आताप आह स्थापर, ये तिर्यमानिसे संयुक्त वथती है, क्योंकि, जमा स्थापति संयुक्त वथती है, क्योंकि, जमा स्थापति संयुक्त वथती है। वस्थापत्यका वस्थ चांगे प्रकार होता है, क्योंकि, वह भूववस्थी है। केश्यास्थान केश सम्बन्धिक व अववस्थी है। केश्यास्थान केश स्थापति व वस्थानिक व अववस्थी है।

मनुष्यायुका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ८३ ॥ यह सुत्र सुराम है।

मिथ्यार्दाष्ट, सासादनमस्यग्दष्टि और असयनसम्यग्दिष्ट बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, श्रेष् देव अबन्धक है।। ८४॥

हस स्वका अर्थ कहने हैं - देवोंसे मनुष्यायुका उत्तय न होनेसे पूर्व या पक्षान् विष्युक्त परीक्षा नहीं है। मनुष्यायुक्ते परोत्त्यसे बांधने हैं, क्योंकि, देवोंसे मनुष्यायुक्ते परोत्तयसे बांधने हैं, क्योंकि, देवोंसे मनुष्यायुक्ते उत्यक्ता विरोध है। वत्त्य उसका निरस्तर होता है, क्योंकि, एक सम्बद्ध विष्युक्तिका अभाव है। मिर्यादार्थि, सासावतस्यायद्वरि हो, अर्थयतस्यावद्वरि हो, क्योंकि, अर्थयतस्यावद्वरि हो, क्योंकि, अर्थयतस्यावद्वरि हो क्योंकि, अर्थयतस्यावद्वरि हो, क्योंकि, अर्थयतस्यावद्वरि हो, क्योंकि, अर्थयत्वर्क्षके क्योंकिकाव्यव्योंसे यहां बीदारिक, श्रीदारिकिमध्यं, वैक्तियक्तियं, कार्सम्य और नपुंक्षकेष्व

ओराख्यिसस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-णउंसयेवद्पच्चयाणमभावादो । मणुसगइसंजुत्तं । देवा सामी । बंधद्धाणं बंधाभावद्दाणं च सुगमं । सम्मामिच्छत्तगुणेण जीवा किण्ण मरंति ? तत्थाउअस्म बंधाभावादो । मा बंधउ आउअं, पुट्यमण्णगुणद्दाणिन्द आउअं बंधिय पच्छा सम्मामिच्छत्तं पिंडविज्ञयं तण गुणेण ण्णं कालं केरिदे ? ण, जण गुणेणाउवंधो संभवदि तेणेव गुणेण मरिदे, ण अण्णगुण्णेति परमगुरूवदेसादो । ण उत्तसामगेहि अणेयंतो, सम्मत्तगुणेण आउअ-बंधाविरोहिणा णिस्मरणे विरोहाभावादो । सादि-अद्धवो बंधो, अद्धवबंधितादो ।

तित्थयरणामकम्मस्स को बंधो को अवंधो ? ॥ ८५ ॥ _{सगमं ।}

असंजदसम्माइट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥८६॥

प्रत्ययोंका अभाव है। मनुष्यायुको मनुष्यगतिमे संयुक्त बांधने हैं। देव स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनएस्थान सुगम है।

शंका सम्यग्मिध्यात्व गुणस्थानके साथ जीव क्यों नहीं मरते ?

समाधान— चूंकि इस गुणस्थानमें आयुके वन्धका अभाव हे, अतएव जीव यहां मरण नहीं करते !

शंका—चहां आयुवन्य भेल ही न हो. फिर भी पहिले अन्य गुणस्थानमे आयुको पांधकर और पश्चात् सम्यग्मिथ्यान्यको प्राप्तकर उस गुणस्थानक साथ नो निश्चयतः मरण कर सकता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि जिस गुणस्थानके साथ आशुवन्ध सम्भव है उसी गुणस्थानके साथ जीव मरता है, अन्य गुणस्थानके साथ नहीं, ऐसा परमगुरुका उपदेश है।

इस नियममें उपजामकों के साथ अनैकान्तिक दोव भी सम्भव नहीं है, वयोंकि, आयुबन्धके अविरोधी सम्यक्त्वगुणके साथ निकलनें कोई विरोध नहीं है। (देखो जीवस्थान-चृत्रिका ९, सुत्र १३० की टीका)।

मनुष्यायुका बन्ध सादि व अधुव होता है. फ्यांकि, वह अधुवबन्धी है। तीर्थेकर नामकर्मका कीन बन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ ८५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्यग्दृष्टि देव बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं॥ ८६॥

१ प्रतिष ' आउमब्धिय ' इति पाठः ।

२ अप्रती ' गुणेण्णोजं '; आ-काप्रत्योः ' गुणेणण्णोण्ण ' इति पाठः ।

एत्य वंधोदयवा च्छेदविचारा णस्थि, उदयाभावादा । तेणव कारणण' परोदए वच्छाइ । वित्रंतरा तित्यवर्षभो, एगसमएण वंधुवरसाभावादा । दंसणविसुज्झदा-रुद्धिसेवेगसंपण्णदा-अरहंताइरिय-बहुसुद-पवयणभत्तीओ तित्थयरकम्मस्स विसेसपच्या । संसं सुगमं । मणुसगइ-संद्धती वंधो । देवा सामी । वंधदाण सुगमं । एत्थ वंधविणासा णिव्य । सादि-अद्धवो वंधो, अणादि सुवभावेण अवहिदकारणाभावादा ।

भवणवासिय-वाणवेतर-जोदिसियदेवाणं देवभंगो। णवरि विभेमो तित्थयरं णिथि ॥ ८७ ॥

एदेण सुनेण देमामासियण 'तिस्थयं णिश्च ति वज्ज्ञमाणपयिष्ठिभेदा चेव पर्कावदो पुरसुच्चारणाए । समचउरसमंडाण-उवचाद-परधाद उम्सास-पनेयमरीर-पसरशिवहाय-गदि-सुस्सरणामाओ अमंजदसम्मादिष्टिम्हि मोदाणाव वज्ज्ञिति । वज्ज्ञिवयिमस्म-कम्मद्वयप्च्चया असंजदसम्मादिष्टिम्हि अवणेदच्चा. भवणवासिय वाणवेतर-जोदिसिण्सु सम्मादिद्रीणमुववादा-

यहां तीर्षकर नामकर्मक बन्धांद्यव्युच्छेदका विचार नहीं है, क्योंकि, देवोंमें इसके उद्यक्त अभाव है। इसी कारण वह पराद्यमें बंधनी है। नीर्षकर प्रकृतिका बन्ध किरन्तर होना है, क्योंकि, एक समयम उसके बन्धविध्यमका अभाव है। दर्शनविष्ठ हुना, रूध्यिविध्यमका अभाव है। दर्शनविष्ठ हुना, रूध्यिविध्यमका, अरहन्त्रभक्ति, या रूप्यचनभक्ति, या त्रिष्ठक कर्मक विद्याप प्रस्यय है (जा सुत्र ५ में विस्नारम कहे जा चुके हैं)। वेष प्रस्य सुगम है। प्रस्य निक्षक कर्मक हिना देश प्रवास के स्वर्क हैं)। क्षा प्रस्य सुगम है। स्वर्धाय स्वर्मक विश्वपाद सुगम है। स्वर्धाय सुगम है। क्षा प्रस्य प्रमाद है। सारि व अध्यव वन्ध्र होना है। क्योंकि, अनादि व भ्रुष्य कर्मस अवस्थित रहनेक कार्णोंका अभाव है।

भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्येतिषी देवोंकी प्ररूपणा सामान्य देवोंके समान है। विशेषता केवल यह है कि इन देवोंके तीर्थकर प्रकृतिका बन्ध नहीं होता॥ ८७॥

इस देशामदीक सुबके द्वाग 'तीर्थंकर प्रकृतिका वन्ध्र नहीं होता इस पृथक् उच्चारणासे केवल वण्यमान प्रकृतियोका भेद ही कहा गया है। समचतुरक्रसंस्थान, उपचात, परचात, उच्छ्वास. प्रत्येकशरीर, प्रशस्तिवहायोगित और सुस्वर नामकर्म असंवतसम्यग्दिष गुणस्थानमें स्वोदयमें हो बंधते हैं। बेक्तियिकमिश्र और कार्मण प्रत्येवाँकी असंवतसम्यग्दिए गुणस्थानमें कम करना चाहिय, क्योंकि, भवनवासी, बानस्थन्तर और न्यांतियो देवोंमें सम्यग्दिएयोंकी उत्यक्तिका अभाव है। पंचेद्विय जाति

१ अ-काप्रत्योः 'कालेण ', आप्रता 'कालेणण ' इति पाठ ।

२ मवणतिए णिय तित्ययरं ॥ गो. क. १११ जिलहीलो जोइ भवण वंल ॥ कर्मग्रन्थ ३ ०००

३ त्रतिषु 'पदमुष्चारणापु ' इति पाठः ।

भावादो । पंचिंदिय-तसणामाओ मिन्छादिहिन्हि सांतरं बञ्झइ, एइंदिय-थावरपढिवक्खपयदीर्ण संभवादो । मणुसगइ-पणुसगइपाओग्गाणुपुन्वीओ मिन्छादिहि-सासणसम्मादिष्टिणो सांतरं बंधित । एसो भेदो संतो वि ण कहिदो । एसंविधे मेदं संतो वि ण कहिदो । एसंविधे मेदं संतो कि एक किहिदो । एसंविधे मेदं संतमकहंतस्य कथं सुत्तभावी ण फिहदे ? ण एस दोसो, देसामासियसुत्तेसु एवंविह्मावाविरोहादो ।

सोहम्मीसाणकेप्पवासियदेवाणं देवभंगो ॥ ८८ ॥

एदस्स अत्थो — जथा देवोधिम्म सन्वपयडीओ पर्सविदाओ तहा एत्थ वि पर्स्तेन दच्वाओ । एदमपणासुत्तं देसामासिथं, तेणेदण सुइद्त्था उच्चेर्रे — पंचिंदिय-तसणामाओ मिच्छाइट्टी देवोधिम्म सांतर णिरंतरं वंधित, सणक्कुमारादिसु एइंदिय-थावरवंधामावेण णिरं-तरवंधोवठंभादो । एत्थ पुण सांतरमव वंधित, पडिवक्खपयडिभावं पदुष्च एगसमएण

और त्रस नामकर्म मिथ्यादिष्ट गुणस्थानमें सान्तर बंधते हैं. क्योंकि, उक्त देवेंकि इस गुणस्थानमें एकेन्द्रिय जाति और स्थावर रूप प्रतिपक्ष प्रकृतियोंकी सम्मावना है। मनुष्याति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादिष्ट च सासादनसम्यग्दिष्ट सान्तर बांधते हैं। औदारिकदारीरांगोपांगका मिथ्यादिष्ट सान्तर बांधते हैं। यद्यपि बध्यमान प्रकृतिभेदके साथ यद भेद भी है, तथापि देशामशैक होनेसे वह सूत्रमें नहीं कहा गया।

र्शको—इस प्रकारके भेदके होनेपर भी उसे न कहनेवाले वाक्यका स्वन्य क्यों नहीं नष्ट होता ?

समाधान—यह कोई दोग नहीं, क्योंकि, देशामर्शक सूत्रोंमें इस प्रकारके स्वरूपका कोई विरोध नहीं है।

सीधर्म व ईशान कल्पवासी देवोंकी प्ररूपणा सामान्य देवोंके समान है ॥ ८८ ॥ इस स्वका अर्थ — जिस प्रकार सामान्य देवोंके सब प्रकारवांकी प्रकपणा की गई है, उसी प्रकार यहां भी प्रकपणा करना चाहिय। यह अर्पणास्त्र देशासर्शक है, इसिट्टिय इसके द्वारा स्विन अर्थको कहते हैं— एंचेन्द्रिय जाति और वस नामकर्मको मिथ्याहि देव देवों में सान्तर नरनर वांघाते हैं, क्योंकि, सनत्क्रमारादि देवोंमें पकेन्द्रिय और स्थार प्रकार वांचाते हैं। परन्तु वीर स्थावर प्रकृतियोंके वस्थका अभाव होनेसे निरम्पर क्या पाया जाता है। परन्तु वहुं उन्हें सान्तर ही बांधते हैं, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके सदस्यावकी अर्पक्षा करके

बंधुनरमदंसणादो । मिन्छादिङ्गिसणसम्मादिङ्गि मणुसगइदुर्ग देवोधिम्म सांतर-णिसंतर बंधित, सुवक्तलेस्सएस् मणुसगइदुगस्स णिरंतरवंधदंसणादो । एत्य पुण सांतरं बंधित, मणुसगइदुगणिरंतरवंधकारणाभावादो । ओराल्यिसरिरअंगोवंग देवाधिम्म मिन्छाइड्डी सांतर-णिरंतरं बंधित, सणककुमारादिसु णिरंतरवंधुवलंभादो । एत्य पुण सांतरमेव, थावरबंधकाले अंगोवंगस्स वंधानावादो ति ।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवाणं पढ-माए पुढवीए णेरङ्याणं भंगो ॥ ८९ ॥

णविरि एत्थ पुरिसवेदस्स सोदण्ण वेषो, अण्णेवरस्सुदयाभावारो । णउंसयेवदस्स पढमाण् पुढबीण् सेवरण्ण वेषो, गृथ्य पुण परादण्ण । पच्चण्सु णउंस्रयेवरो इत्थिवेदण सद्द अवणेदच्यो । सासणसम्माइडिस्टि वेडिव्यिमस्स-कम्मइयपच्चया पत्तिस्वविद्व्या, शेर्रास्य-सासणेसु तिसमभावारो । सदार-सहस्सारदेवेसु सिच्छाइडि-मासणयम्मादिडिणो मणुसमाइदुर्ग सांतर-णिरंतरं वंषीत, तत्थनणयुक्कोलिसण्सु मणुसगइदुर्ग मोत्तृण तिस्विस्वयादुद्यस्म

एक समयस बन्धविश्राम देखा जाता है। मिथ्याइष्टि और सामाइनसम्यादाष्ट्र मनुष्पातिद्विकको देवायमें सान्तर निरमार बांधने हैं. क्योंकि, गुक्ललंदयावालोंमें मनुष्पातिद्विकको निरम्तर बन्ध देखा जाता है। परन्तु यहां सान्तर बांधने हैं, क्योंकि, मनुष्पातिद्विकको निरम्तर बन्धेक कारणोक्षा अभाव है। श्रेंज्ञाकिकारीलांगोगोगोका देवायमें मिथ्याइष्टि सान्तर निरम्तर बांधने हैं, क्योंकि, सन्तक्ष्मारादि देवोंमें निरम्तर बन्धे पाया जाता है। परन्तु यहां सान्तर हो बांधने हैं, क्योंकि, स्थावस्य-धकालमें अोगोगोगका वन्ध मही हाता।

सनःकुमारेम लेकर शतार-महस्रार तक कल्पवामी देवोंकी प्ररूपणा प्रथम पृथिवीके नारकियोंके समान है ॥ ८९ ॥

विशेष इतना है कि यहां पुरुषेवदका स्वादयांस वन्ध्य होता है. क्योंकि, अस्य वेदके उदयका अभाव है। नपुंसकांवदका प्रथम पृथिवींमें स्वादयंस वस्थ होता है। परन्तु यहां उसका पांद्रपंस वस्थ होता है। परन्तु यहां उसका पांद्रपंस वस्थ होता है। प्रस्ता यहां उसका पर्वादयंस वस्थ होता है। प्रस्तयों में तुक्तिवकांदको स्वीवदकं साथ कम करना वादिय। मालादत्तमस्वयद्धि गुणस्थानमें यहां वैकियकांग्रिप और कार्मण प्रस्त्रयोंको जेवका अभाव है। शातार-सहस्त्रास्त्रयद्धियाँ उनका अभाव है। शातार-सहस्त्रास्त्रयद्धियाँ उनका अभाव है। शातार-सहस्त्रास्त्रयद्धियाँ मुण्यपातिकिको सामादत्तस्त्रयद्धियाँ है। इत्यादातिकिको सामादत्तर वायंत्र है। इत्याक्ति उत्त वल्योंके शुक्लस्टेहरवावाले द्वाँमें मनुष्पातिकिको

१ प्रतिषु ' सांतरं ' इति पाठः ।

वंधाभावादो ।

आणद जाव णवगेवेज्जिवमाणवासियदेवेसु पंचणाणावरणीय- छदंसणावरणीय-सादासाद--बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय- दुग्रंछा-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओराल्यिय-तेजा-कम्मइयसरीर-सम- चउरससंग्रण-ओराल्यियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस- फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुर्वी-अग्रुरुवल्रहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास- पसत्थिविहायगइ-तस-वादर-पज्जत-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग- सुस्सर-आदेज्ज-जसिकिति-अजसिकिति-णिमिण-पंचतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ९० ॥

सुगममदं ।

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्टी बंधा । एदे वंधा, अवंधा णित्थ ॥ ९१॥

एदेण सुइदन्धे भणिस्सामा-- मणुसगइ-श्रेशितियमशिरश्रेगीवंग-वज्जशिसद्दसंघडण-

छोड्कर निर्यग्गतिहिकके बन्धका अभाव है।

आनत करणेस लेकर नव श्रैवेयक तक विमानवासी देवोंमं पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कपाय, पुरुषेद, हास्य, रित, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजम व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिक-शरीरांगोपांग, वज्रषेभसंहनन, वर्ण, गम्भ, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुल्लु, उपधात, परधात, उच्छ्वास, प्रशस्तविद्वायोगित, त्रम, बादर, पर्यात, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्यर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है १॥ ९०॥

यह सूत्र सुगम है।

सिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक यन्धक हैं। ये वन्धक हैं, अवन्धक नहीं हैं॥ ९१॥

इस सुबके द्वारा सुचित अधौंको कहते हैं-अनुष्यगति, औदारिकहारीरांगोपांग,

मणुस्साणुपुच्वी-अजसिकतीणसुदयाभावादो सेसपयडीणं उदयवोच्छेदाभावादो च वंधोदयाणं पण्डापच्छोच्छेरपरिक्सा ण कीरदे ।

पंचणाणावरणीय चउदंसणावरणीय-पुरिसवेद-पंचिदियजादि तेजा कम्मह्यवरिर वण्णगंभ-रस-फास-अगुरुवरुहुव-तस बादर-पजन-थिराधिर-पुमानुभ-मुभग-आदेज-जसकिति-णिरिणजमागेद-पंचेतरायह्याणं सोदएणेव भंधो, धुवोद्द्रजादो । णिहा-पयटा-सादासाद-बारसकसायहस्स रिद-अरिद-सोग-भय-दुगुंडाणं सोदय-परादर्ण वंधो, अदुवोदयजादो । समच उरससंठाणजववाद-परायत-उस्सास-पराथविहायगद-पतेयमरिर सुस्सरणामाओ मिन्छाइडि-सासणसम्माइडि-असंजदसम्मादिडिणो सोदय-परादर्ण वंधीत । सम्मामिच्छाइडिणा सोदएणेव वंधीत,
तेसिमपञ्जतकाठामावादो । मगुसगइ-ओराव्यियसरीर-ओराव्यियसरीरअंगोवंग-वञ्जरिसहसंघडणमगुस्साणुपुञ्जी-अजसिकतीणं परोदर्णेव वंधी, देवेसु एदार्सि वंधोदयाणमक्कमेण उत्तिविरोहादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-वारसकसाय-भय-दुगुंछा-मणुसगइ पंचिंदियजादि-

सङ्गर्भसंहतन, मतुष्यानुषूर्वी और अयदाकीर्ति, हनका उदयाभाव होनंस तथा होर प्रकृतियोंके उदयन्युक्छेदका अभाव होनंस यहां वन्ध और उदयके पूर्व या प्रधान व्युक्छेद होनेकी परीक्षा नहीं की जाती है।

पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पुरुषेवर, पंचरिद्रय जाति, तेजस व कामेण दारीर, वर्ण, गम्ब, रम, स्पर्ध, अगुरुव्यु, अस, वादर, पर्याप, रिधर, अस्थिर, युम, अधुम, सुभम, आद्य, यदार्कीर्न, निर्माण, उच्चरेगात, धिर पांच अस्तराय, इनका स्वाद्यसे ही वन्ध होता है, क्योंकि, य पुणेवर्षयी प्रकृतियां हैं । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, यारह कथाय, हास्य, रित, अर्थात, द्रोक, भय और जुगुन्मा, इनका स्वोद्य परोदयसे वन्ध होता है, क्योंकि, य अप्रवादयी प्रकृतियां हैं। नमजनुरुक्यसंस्थात, उपधात, परणात, उच्छ्यास, प्रशस्तविद्यांत्रीत, प्रयोकदारीर और सुस्वर नामकर्मीका मिथ्यादिष्ट, सासादनसम्परादि, और अस्वयतसम्परादि, स्वादय परादय वांध्री हैं। सम्यविद्यायाणि, औद्यादिक्यादी, अद्योक्त होर, व्योधिक, उनके अपर्याप्तकालका असाव है। सम्यविद्यायानि, औद्योक्तिशारीर, अद्योक्ति, वेदोंकि, उच्चेक अपर्याप्तकालका समाव हो स्वर्थ स्वादयसंक्रीतिक परोदयसे हो वन्ध होता है, स्वर्योकि, देवोंके इन प्रकृतियांकि बन्ध भीर उद्यक्ष एक साथ अस्तरस्वयक्ता विराय है।

पांच झानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कथाय, भय, जुगुष्सा, मनुष्यगति,

र अमती ' -पण्डाच्छेद ' इति पाठः ।

असारित्य तेजा-कम्माइयसरीर-ओसारित्यसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंथ-रस-कास-मणुसगइपाओगगाणुपुन्वी-भगुरुअञ्चुअ-उवधाद-परघाद-उस्सास-तम-बादर-पज्ञत-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचेतराइयाणे
णिगंतरी वेथो, एन्थ थुववंथितादा । मादासाद-इस्स-रिद-अरिद-सोग-थिराधिर-सुआसुम-जसकित्ति-अजसित्तीर्ण मांतरी, एग्ममण्ण वंथविरामदंसणादा । पुरिम्मवंद समचउरमसंद्रण-वज्जीरसहमंघडण-पमन्थविद्यायाड-सुभग सुम्मर-आदेज्जुच्चागादाणि मिन्छादिद्वि-सामणसम्मादिद्विणो
मांतरं बंधित, एग्समण्ण वंथित्रिसुवर्जभादो । सम्माभिच्छादिद्वि-अभजदममादिद्विणो णिगंनं
बंधित, एउदिक्तरप्यदीण वंशाभावादो ।

एडामि पन्चया देवोधपच्चयतुल्या । णबीर सब्बत्ध इस्थिवेदपच्चओ अवणेदच्चो । सन्वे सन्वाओ पयडीओ मणुमगइमंजुनं बंधित, अण्णगर्दणं बंधाभावादो । देवा सामी । बंधद्धाणं वंधविणइडाणं च मुगमं । पंचणाणावरणीय छदंमणावरणीय-बारमकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कस्मइ्यमीर वण्ण-गंध-रम फास-अगुफ्अलहुअ-उवधाद-णिमिण-पंचेतगङ्गणो मिन्छाइडिम्हि चउन्त्रिहां वंधो । अण्णन्य तिविहां, धुवाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधो मन्त्रगुणहाणेमु मादि-अद्ववे, अद्ववंधितादो ।

पंचीन्द्रयज्ञाति. ओहारिक तज्ञम व कामण दार्गर, औदारिकदारीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्ग, मुग्यमतिप्रायायायुर्वी, अगुरुलयु, उपधात, परधाद, उच्छ्वास बुस, बादर, पर्याप्त, प्रत्यकदारीर, तिर्माण और पांच अन्तराय, इनका तिरन्तर बन्ध हाता है, क्योंकि, यहां य महतियां भ्रृवयन्धी है। साता व असाता बदनीय, हास्य, रित, अरति, द्रांक, स्थिर, अस्यिर, भ्रुव, अर्था, उदाक्षीति और अरदाक्षीति, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविधाम देखा जाता है। पुरुपवद, समजनुरुक्षसंस्थान, बज्रपंभ-संहन्त, प्रदास्तविहायांगति, सुभग, सुस्वर, आद्य और उच्चगात्र, इनको सिध्याहिष्ट पर्व सामावृत्तसम्पर्थि सान्तर वांधते हैं, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविधाम पाया जाता है। सम्यगिमप्रवादि और असंवतसम्पर्शिक, विभावते हैं, क्योंकि, उनके प्रतियक्ष प्रकृतियोंके वृत्यका अभाव है।

इन महतियाँके प्रत्यय देवोघ प्रत्ययाँके समान हैं। विशेषता केवल इतनी है कि सब जगह खीवेद प्रत्यकों कम करना चाहिय। उक्त सब दब सब महतियाँको मनुष्यगितसं संयुक्त बांधतं हैं, क्योंकि, उनके अन्य गतियाँके बन्धका अभाव है। देव बात में हैं। वश्वाध्यान और बन्धविनप्रध्यान सुगम हैं। पांच झानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बात क्याध्यान और बन्धविनप्रध्यान सुगम हैं। पांच झानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बात क्याध्यान और तजस व कार्मण शारीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुक्तपु, उपधात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका मिथ्यादाधि गुणस्थानमं बारों प्रकारका कम्य होता है। अग्यव तीन प्रकारका सम्य होता है, क्याँकि, वहां भुववन्यका अन्नाव है। ग्रेप महत्तियाँका वन्ध सब गुणस्थानों सादि व अधुव होना है, क्याँकि, क्यावक्रमान हैं।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-धीणागिद्धि-अणंताणुवंधिकोध -माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-चउसंटाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविद्दायगद्दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ ९२ ॥

सुगमं ।

मिन्छाइट्टी मासणसम्माइट्टी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ९३ ॥

एदस्स अन्धा बुड्वंद - अणंनाणुवंधिच उक्कस्म वंधोदया ममं वोल्छिज्जेति, मासणिम तदुभयबोल्छेददंगणादो ! अवसेयाणं वंधोदयबोल्छेदपिक्खा णिथ, तासिमेरपु-दयाभावादो । अणंनाणुवंधिच उक्स्स मादय पगेदण्णं वंधो, अज्ञबंदयनादो । अवसेसाणं पयडीणं परोद्रण्णेव, एस्थ तामि वंधेणुद्रयस्म अवहाणविरोहादो । धीणगिद्धितिय-अणंनाणु-वंधिच उक्काणं णिन्तरा वंधा, धुववंधितादो । स्वाणं सांतरा, एगममण्ण वंधीवरामदंगणादो। पच्चयाणं सहस्मारमंगो । सन्वे सच्चाओं पयडीओं मणुमगइमंत्रतं वंधीत । देवा सामी । वंधद्वाणं नंधविणहृहाणं च सुगमं । धीणगिद्धितग-अणंनाणुवंधिच उक्काणं मिन्छादिहुस्म

निद्रानिद्रा, प्रचलापचला, स्न्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी कोध, मान, माया, लोग, श्रीवेद, चार संस्थान, चार मंद्रनन, अपशस्त्रविद्वायोगीत, दुर्भग, दुस्बर, अनादेय और नीचगोत्र, इनका कोन बन्धक और कोन अवस्थक है ? ॥ ९२ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिष्यादिष्टि और सासादनसम्यग्दीष्ट बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष देव अवन्धक हैं॥९३॥

इसका अर्थ कहत है— अनत्तानुयश्घित्रनुष्कका वस्थ और उद्य दोनों साथ खुनिछल होत हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन होनोंका व्युच्छद देखा जाता है। शेष महित्योंके क्योंद्वरुष्ट्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहां उनके उदयका अमाव है। अनत्तानुवर्शव्यनुष्कका स्वेद्य-परोदयसे बन्च होता है, क्योंकि, बमाव है। अनत्तानुवर्शव्यनुष्कका स्वेद्य-परोदयसे ही होता है, क्योंकि, यहां उनके कम्भके साथ उदयके अवस्थानका विरोध है। स्थानगृक्षित्रय और अनत्तानुविध्य- खुनुकका निरत्तर बन्ध होता है, क्योंकि, युव्यन्धी है। शेष मक्रतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उनका वन्धिकाम देखा जाता है। प्रत्यप्रक्षपणा सहस्रार देखोंके समुग्ति हो देख स्वानगृक्षित्रय और अनत्तानुक्षित्र स्वान है। वस स्वानगृक्षित्रय को स्वानग्ति संयुक्त क्योंके हैं। इस स्वानगृक्षित्रय और अनत्तानुक्षित्रय स्वानगृक्षित्रय और अनत्तानुक्षित्रय और अनत्तान्त्र संयुक्त व्यक्ति संयुक्त विषय स्वानगृक्षित्रय और अनत्तान्त्र संयुक्त स्वानग्रेक्ष स्वानग्रेक्ष स्वानग्ति संयुक्त विषय स्वानग्रेक्ष स्वानग्रेक्ष स्वानग्रेक्ष स्वानग्रेक्ष स्वानग्रेक्ष स्वानग्तान्त्र संयुक्त और अनत्तान्त्र संयुक्त स्वानग्रेक्ष स्वानग्रेक्षित्र स्वानग्रेक्ष स्वानग्ति स्वानग्रेक्ष स्वानग्य स्वानग्रेक्ष स्वानग्य स्वानग्रेक्ष स्वानग्रेक्ष स्वानग्रेक्ष स्वानग्रेक्ष स्वानग्वानग

चउब्बिहो कंग्रो । अण्णत्थ दृषिहो, अणादि-धुवाभावतादो' । सेमाणं पयडीणं सादि-अदुवो, अद्भवषंभित्तादो ।

मिच्छत्त-णबुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ९४ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइद्वी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ९५ ॥

एदस्म अन्यो बुचेद् — मिच्छतस्स वधोदया समं वोन्छिजंति, मिच्छाइद्विस्ति तदुमयाभावदंमणादा। अवसेसाणं वधोदयवोन्छेद्रपरिवखा णस्थि, एरथेयंतेणदासिसुदयाभावादो। मिच्छत्तं मोद्दण् वज्झह् । कुदा ? माभावियादा । अवसेसाओ पयडीओ परोद्दण्ण। मिच्छत्तं णितंतरं वज्झह्, धुवबंधितादो। अवसेसाओ सांतग्मजुवबंधितादो। पच्चया महस्सारपच्यतुत्ता। मणुमगङ्मंजुत्तं बज्झंति। देवा सामी। बंधजाणं वंधविणहृहाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्म बंधो

वन्धिचतुष्कका मिथ्यादिष्के चारो प्रकारका वन्ध होना है। अन्यत्र दो प्रकारका वन्ध होना है, क्योंकि, वहां अनादि और ध्रुव यन्धका अभाव है। रोप प्रकृतियोंका सादि च अध्रुव यन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवयन्धी प्रकृतियों हैं।

मिथ्यात्व, नपुंसकवद, हुण्डमंत्र्यान और अमंशातस्पाटिकामंहनन नामकर्मोका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ९४ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं।। ९५॥

इस स्वका अर्थ कहते हैं — मिथ्यात्यका बन्ध और उदय दोनों साथ ब्युच्छिक्ष होते हैं, क्योंकि, मिथ्याद्दीए गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है। होष महतियोंके बन्धांद्यच्युच्छदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहां नियमसे हनके उदयका अभाव है। सिथ्यात्य महति स्टीद्यसे वंधती है। हसका कारण स्वभाव है। होष महतियां परोह्यसे पंधती है। सिथ्यात्य महति निरन्तर वंधती है, क्योंकि, धुवबन्धी है। होष महतियां सान्तर वंधती हैं। हेथे कुल वंधने हैं। होष महत्वप्रक्षा सहसार है। होष महत्वप्रक्षा साम है। मुज्यातिक संयुक्त वंधते हैं। देव स्वामी हैं। बन्धायात वैवोंके प्रक्षयोंके समान है। महुष्यातिक संयुक्त वंधते हैं। देव स्वामी हैं। वन्धायात और बन्धविनएस्थान सुमा है। मिथ्यात्वक वन्ध जारों प्रकारका होता है, क्योंकि,

१ प्रतिष्ठ ' जणाविवेषाभाषचायो ' इति पाठः ।

चउन्विहो, धुवषंधित्तादो । सेसाणं सादि-अद्भुवो, अद्भुववंधित्तादो ।

मणुस्साउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ९६ ॥ _{सुगर्म ।}

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ९७ ॥

एदस्स अत्था — बंधोदयाणं वोच्छेदपरिक्ता एत्य णिश्च, उदयाभावादो । परेदएण षज्छइ, बंधेणुदयस्स एत्य अवडाणिकोहादो । णित्तरो बंधो, एगसमएण वंशुवरमाभावादो । मिच्छाइडिस्स एत्णृवंचाम, सासणस्स चउएतार्क्षस, अभजदमम्मादिडिस्स चाठीस पञ्चया । मणुसगइसंज्ञते । देवा सामी । वंधदाणं वंधविणदृडाणं च सुगमं । सादि-अदुवो वंधो, अद्भववंधितादो ।

तित्थयरणामकम्मस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ९८ ॥ _{सगमं ।}

धुववन्धी है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव वन्ध होता है, क्योंकि, व अधुववन्धी है।

मनुष्यायुका कौन् बन्धक और कौन अबन्धक हे ? ॥ ९६ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतमम्यग्दृष्टि यन्यक हैं। ये बन्धक हैं, क्षेष देव अवन्यक हैं।। ९७॥

इसका अर्थ— वन्ध और उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा यहां नहीं है, क्योंकि, मनुष्यायुके उदयका देवोंमें अभाव है। वह परोद्यंस वैधनी है, क्योंकि, यहां उसके बन्धेक साथ उदयके अवस्थानका विरोध है। निरस्तर वन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके वन्धिवश्रामका अभाव है। मिष्याहर्षिके उनंचार. सासाइनसभ्यन्दर्धिके खाळीं असेयनसम्यन्दर्धिके वालींस माय्य होते हैं। मनुष्यातिसे संयुक्त बन्ध होता है। वेष स्वामी हैं। बन्धायान और वन्धीवनप्रश्यान सुगम हैं। सादि च अञ्चय कन्ध होता है, क्योंकि, वह अञ्चयक्यों मुक्ति है।

तीर्थकर नामकर्मका कीन बन्धक और कीन अवन्धक है १॥९८॥ **यह स्थ सुगम है**।

असंजदसम्मादिही बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥९९॥

एदस्सत्या बुज्वदे— बंघोदयाणं बोज्छेदविचारा णत्थि, संतासंताणं साण्णियास-विरोहादो । परोदएण वंधो, सञ्चत्य तित्ययरकम्मवंधोदयाणमक्कमेण उत्तिविरोहादो । णिरंतरी बंधो, संखेज्जावित्यादिकालेण विणा एगसमएण वंधुवरमाभावादो । एदस्स पञ्चया देवोघ-पञ्चयतुद्धा । उत्तरीत्तरपञ्चया पुण अरहंताहरिय-बहुसुद-पवयणभत्ति-लद्धिसंवेगसंपत्ति-दंसण-विसुद्धि-पवयणपहावणादओ । मणुसगहसंजुतो वंधो । देवा सामी । वंधद्धाणं वंधविणहृद्धाणं च सुगमं । सादि-अद्धवो वंधो, अद्धववंधितादो ।

अणुदिस जाव सन्वट्टसिद्धिविमाणवासियदेवेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-वारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय दुगुंछा-मणुस्साउ-मणुसगइ-पंचिदियजादि—ओराल्यि—तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओराल्यिसरीरअंगोवंग-वज्जरिसह-संघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुब्वी-अगुरुअलहुअ-

असंयतसम्यग्दिष्ट बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं॥ ९९ ॥

इसका अर्थ कहते हं— बन्ध और उदयके ज्युच्छेदका विचार यहां नहीं है, क्योंकि, सन् और असन् बन्धेदयको समानताका विरोध है। परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, सर्वत्र तीर्थंकर कमेंके बन्ध और उदयके एक साथ रहनेका विरोध है। मिरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, संज्यात आवाणी आदि कालके विना एक समयसे उसके बन्धविधामका असाव है। इसके प्रत्य देशेष प्रत्योंके समान हैं। परन्तु इसके उन्तर्यत्र अद्याय अरहन्तराकि, आवार्यभाकि, बहुधुतमक्ति, प्रवचनमिक, किंधिनंत्रसम्प्रति, दर्शनिवद्युद्धि और प्रयचनम्प्रावनादिक हैं। मुज्यगिक्ति संयुक्त इसका बन्ध होता है। वेच स्वामी हैं। बन्धाध्यान और बन्धविनम्रस्थान सुगम हैं। सावि-अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुववन्धी प्रकृति है।

शतुरिहोंसे लेकर सर्वार्धासिद्धि तकके विमानवासी देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छद्द दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, श्रोक, भय, जुगुप्सा, मतुष्यायु, मतुष्यगित, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण श्रीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकश्रीरांगोपांग, वज्रषेमसंह्वनन, वर्ण, गन्य, रस, स्पर्ध, उवधाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविद्दायगद्द-तसःवादर-पञ्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुद्दासुद्द-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकिति-अजसकिति णिमिण-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को वंधो को अवंधो ? ।। १०० ।।

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्टी वंधा, अवंधा णितथ ॥ १०१ ॥

एदस्स अरथे। परूविज्जेदे - मणुसाउ-मणुसगइ ओराल्यियसीर-ओराल्यियसीरअंगोवंग-वज्जिरसहसंवडण-मणुसगद्वपोअग्गाणुपुज्वी-अजमाकिति-तित्थयगणं उदयाभावादो अवसेसाणं च पयडीणमुदयवीच्छदाभावादो 'वंपादो उदयम्म कि पुत्र्वं कि वा पच्छा बोच्छेदो होदि' ति एस्य परिक्ता णात्थि ।

पंचणाणावरणीय-चउदंमणावरणीय-धुरिसंबद-पंचिदियजादि-तजा-कम्महयसरीर-वण्ण-गंच-सस-फास-अगुरुअठहुअ तस—बादर-पज्जन-थिराथिर-सुहासुह-सुभगादेज-जसिकिति-णिमिणुब्बागीद-पंचेतराहुबाणं सोदओ वंथो, एस्थ धुवीदयनादो । णिदा-पयका-सादामाद-

मनुष्यगितप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरूल्यु, उपधात, परघात, उच्छ्वाम, प्रशस्तविद्यायोगित, त्रम, बाद्र, पर्याप्त, प्रत्येकदारीर, स्थिर, अस्थिर, शुन, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीित, अयशकीित, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय. इनका कीन चन्धक और कीन अवस्थक है ? ॥ १००॥

यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्यग्दष्टि बन्धक हैं. अबन्धक नहीं हैं ॥ १०१ ॥

इसके अर्थकी प्ररूपण करते हैं — मनुष्यायु, मनुष्यापित औदातिकदारीर, अंत्रातिकदारीरांगीपांग. बजर्पभतंतनत. मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी अवदाकार्ति और तीर्थकर, इनके उदयका अभाव होनेसे, तथा हार प्रकृतियोक उदयन्युक्छेद्रका अभाव होनेसे 'बन्यसे उदयका क्या पूर्यमें या क्या पद्मात अ्युक्छेद्र होता है 'इस प्रकारकी बहुं परीक्षा नहीं है।

पांच ज्ञानावरणीय. चार दर्शनावरणीय, पुरुषवेद, पंचित्रयज्ञाति, तेजस व क्षामंण रारीर, वर्ण, नम्ब, रस, स्पर्श, अगुरुल्धु, जस, वादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अगुभ, सुभग, आदेय, यराकीतिं, निर्माण, उद्यगोत्र और पांच अन्तराय, इनका क्लोब्य वम्म रोता है, क्योंकि, ये यहां भुजोबयी हैं। निज्ञा, म्लक्स, सासा स अस्तास वासकसाय-इस्स-रिद-सोग-अय-दुगुंछाणं सोदय-परोदएण वंषो, अद्भुवीदयंतादो । परघादुस्सास-पसस्यविद्यायगद्द-सुस्सराणं सोदय-परोदएणं वंषो, अपञ्जतकाले उदयामावे वि वंधुवलंमादो । समचउरससंद्रगणुवणाद-पत्तेयसरीराणं पि सोदय-परोदएणं वंषो, विग्गहगदीए उदयामावे वि वंषदंसणादो । मणुसाउ-मणुसगद-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरओर्गण-वञ्जरिसद्संघडण-मणुस्सगद्दपाओग्गाणुपुट्वी-अजसकिति-तिस्थयराणं परोदएणं वंषो, एस्थदासिमुदयाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-वाससकसाय-पुरिसवेद-भय-दुगुंछा-मणुसाउ मणुसगइ-पंचिदियज्ञादि-ओरालिय तेजा-कम्मद्द्यसरीर-समच उरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जिरसह-संघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुन्व-अगुरुवलु व-उच्चाद-परचाद-उरसास-प्यत्यविद्यायाद्द-तस-बादर-पज्जत-पत्तेयसरीर सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-तित्ययरुचागोद-पंचतराङ्याणं णिरंतरो वंधो, एदासिमगसमप्ण चंधुवरमाओवादी । सादासाद-हस्स-रिद-अरिद-संग-विराधिर-सुद्वासह-जमकिति-अजमिकतीणं सांतरें। वंधो, एगसमप्ण चंधुवरमादो ।

वदनीय. वारह, कपाय, हास्य, रित. शोक. अय और जुगुप्साका स्वोदय-परोहयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ये अधुवेदयी प्रकृतियां हैं। परचात, उच्छ्वास, प्रशस्तव्हाप्योकाति और मुक्तरका स्थादय-परोहयसे बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकाव्ये उच्छक असाव होनेपर भी हनक बन्ध पाया जाता है। समजनुरकास्थान, उपघात और प्रत्येककारीयका भी स्थादय-परोहयसे बन्ध होता है, क्योंकि. विष्रहगितमें उदयके अभावेक होनेपर भी क्या होता है। मनुष्यातु, मनुष्याति, औदारिककारीरांगोपांग, वक्य प्रसंहतन, मनुष्यातिभावेग्यानुयाति, अवार्षिककारीर, औदारिककारीरांगोपांग, वक्य प्रसंहतन, मनुष्यातिभावेग्यानुयाति, अवार्षिकारी और तीर्थकरका परोहयसे बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ इनके उदयका अभाव है।

पांच हानावरणीय, छह दशेनावरणीय, बारह कपाय, पुरुषवेद, अब, जुगुप्सा,
मजुप्याज, अपुप्यानी, पेचेट्रिय जाति, औदारिक, तेजस व कामंण शरीर, समचतुरक्षसंस्थात, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रयंभसंहतन, वर्ण, गण्य, रस, स्पश्चे,
मखोव्यानुपूर्वी, अगुरुरुष्ठी, उपघात, परघात, उच्छ्वास्त, प्रशस्ताविहायेगति, चस, बादर,
पर्वास्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्येकर, उच्चगोत्र और पांचअन्तराय, इनका निरन्तर वच्च होता है, क्योंकि, इनके एक समयसे वन्धविभामका
अज्ञाब है। साता ब असाता वेदनीय, हास्य, रित, अपति, शोक, स्थिर, अस्यर, कुम्न,
अञ्च, यशकीति मेर अयशकीति, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे
इनका वन्धविभाम है।

एस्य असंजदसम्मादिहिन्दि बाएतालीस पच्चम, ओघपच्चएसु ओसालियदुगित्य-णवंसयवेदपच्चपाणमभावादो । सेसं सुगर्म । एदासिं पयडीणं वेचो मणुसगइसंजुत्ता । देवा सामी । षंथदाणं सुगर्म । वंथविणासो एत्य जित्य । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय बारस-कसाय-भय-दुर्गुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण गंध-रस-फास-अगुरुगल्डुग-उवपाद-णिमिण-पंचं-तराह्याणं तिविद्दो षेघो, धुवामावादो । सेसाणं पयडीणं सादि-अद्भवो, अधुवंधिसादो ।

इंदिपाणुनादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पञ्जता अपञ्जता बीइंदिय-तीइंदिय-चर्जारिदय-पञ्जता अपञ्जता पंचिंदियअपञ्जताणं' पंचिंदियतिरिक्सअपञ्जत्तभंगो ॥ १०२ ॥

एदमप्पणासुत्तं देमामासियं, वञ्झमाणपयडीणं संखमंत्रीत्रखय अवहिदतारी । तेणेदेण सुदृदत्थपरुतणं कस्सामे । तं जहां — एत्य ताव वञ्झमाणपयाडीणेदेसं कस्सामे । पंचणाणावरणीय-णवर्दसणावरणीय-सादासादः मिच्छत्त-सोट्सकसाय-णवणोकसाय-निरित्सवाउ —

यहां असंवतसम्यग्हिए गुणस्थानमं व्यालांस प्रत्यय हांन हैं, क्यांक, ओघप्रत्ययांमंस श्रीवारिकद्विक, स्त्रीवर और नपुंस्तकवर प्रत्ययांका अभाव है। राप प्रत्ययप्रस्पण सुगम है। इन प्रकृतियांका वश्य मनुष्ययातिल संयुक्त होता है। रेच स्वामी हैं। वन्धांथ्वान सुगम है। बन्धांविनाश यहां के हों। पांच बानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कथाय, भय, जगुरसा, तैजस व कामेण शरीर, वर्ण, गर्म, रस, स्थरी, अगुरुवस्तु, प्रधान, निर्माण और पांच अनत्यय, इनका तीन प्रकारका वन्ध होता है, क्यांकि, धुव वस्थका अभाव है। शेष प्रकृतियांका साहि व अधुष वस्थ होता है, क्यांकि, च अधुववस्थी हैं।

इन्द्रियमार्गणातुसार एकेन्द्रिय, बादर, सहम, इनके पूर्याप्त व अपयोप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, बतुरिन्द्रिय पूर्याप्त व अपर्याप्त तथा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवाँकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय तिर्थेच अपर्याप्तोंके समान है ॥ १०२ ॥

यह अर्पणासुत्र देशामर्राक है, क्योंकि, क्यामान प्रकृतियांकी [१००] संख्याकी अपेका करके अवस्थित है। इसी कारण इससे सचित अर्थकी प्रकृतणा करते हैं। यह इस प्रकार है— यहां पहिले क्यामान ब्रकृतियांका निर्देश करते हैं। पांच झानावरणीय, नी दशैना-वरणीय, साता व असाता वदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, नी नोकवाय, तिर्यनाय.

र अप्रती 'वर्डारिदपञ्जता अपञ्चत तंत्रिदयपञ्जता अपञ्चताणं ', आप्रती 'वर्डारिदपञ्जताः पन्मतानं ': काप्रती 'वर्डारिदपञ्जत अपञ्चताण 'इति पाटः ।

२ अमती '-मृप्पण्णामुचं ': आमती '-मृप्पण्णमुचं ' वृति पाटः ।

मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-एईदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंघ-रस-फाख-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुब्वी-अगुरुवल्हुव-उवचाद-परचाद-उस्सास-आदाबुजोव-दोविद्दायगइ-तस-धात्तर-सहुस-पज्जतापञ्चत पर्वपस्सीर-साहारण-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्व-अणादेज्व-जसिकिति-अजसिकिति-गिभिण-णीचुच्चागोद-वंचतराइयपपडीओ एर्य वज्झमाणियाओ । ए्इंदियमस्मिद्ण एटासिं परूवणं कस्सामो— इत्य-सुरिसवेद-मणुस्साउ-मणुसगइ-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-चिंदियजादि-अणितमपंचसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण मणुसगइपाओग्गाणुपुन्ती-दोविद्दायगदि-तस सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज उच्चागोदाणं उदयाभावादो भेसाणसुद्यवोच्छदाभावादो 'उदयादो वंधो किं पुत्रं वोच्छिज्जदि किं पच्छा वोच्छिज्जदि ? ति विचारो णिथ, संतामंताणं मण्णियामविरोहादो ।

ं पंचणाणावरणीय-चउदंमणावरणीय-सिच्छत्त-णुडुंसयवेद-तिरिक्खार्ज-तिरिक्खार्ज-पुर्क-दियजादि-तेजाकम्मइयसरीर-वण्ण गंध-रस-फास अगुरुगल्ड्ग-थावर-थिराथिर-सुद्वासुद्व-दुमग-

पांच क्षानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, भिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गात, एकेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुरुघु,

१ ख-काप्रत्यो ' तिरिक्काचि ' इति पाठः ।

अणोदेज्ज-िंगिमण-जीनागोद-पंचतराइयाणं सोदओ कंघो, एस्थ एदासिं धुनेहयदंसणादो ।
सादासार्य-सोरुसकसाय-इंग्लोकसाय-आदानुङजीव-बादरं-सुद्धम-पञ्जत-अपञ्जत-पेतेष-साद्धारण्मसीर-जसकिति-अजसिकतीलं सोदय-परादओ कंघो, अद्वनोदयत्तादो । ओराल्यियसीरहुंडसंद्राण-उनवादाणं पि सोदय-परादओ कंघो, विग्गहगदीए उदयाभावे वि वंधुवरुंभादो ।
तिरिक्षगद्याओगगाणुपुन्तीस् वि सोदय-परादओ, गहिदसरिरेसु उदयाभावे वि वंधदसणादो ।
परघादुस्सासाणं पि सोदय-परादओ कंघो, अपञ्चतद्वाए उदयाभावे वि वंधदसणादो ।
अवसेसाणं परादओ कंघो, एस्थ तार्मि सन्वदा उदयाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-णवरंमणावरणीय-मिन्छन-सोल्सकसाय-भय-दुर्गुङा-निग्निस्य-मणु-स्साउ-ओराल्यिन-तेजा-कम्मइयमरीर-बण्ण-गंघ-रस-फाम-अगुकाल्हुग-उवचाद-णिमिण-पंचेतरा-इयाणं णिरंतरा बंचो, एगसमएण बंशुवरमाभावादो । साादासाद-सत्तणोकसाय-मणुसगइ-एईदिय-पीइंदिय-चीइंदिय-च ३रिटिय-पंचिंदियजादि-ङमंठाण-आंगल्यिसरीरअंगोवंग-ङमंचडण-मणुसगइ

स्थावर, स्थिर. अस्थिर, गुम. अगुभ, दुर्भग, अनांदय, निर्माण, नीचगांत्र और पांच अन्तराय, इनका स्वादय बन्ध होता है. क्योंकि, इनका ध्रव उदय देखा जाता है। स्थात व असाना वैदनीय, सोलह करावर, छह नोकराय, आताप, उद्योत, वादर, व्हुस, पर्षांत, अपयाक्त, सोल्य, कार्यार, गर्गर, राह्म, पर्षांत, अपयाक्ति, इनका स्थादय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि ये अञ्चादयी फ्रानियों हैं। आंदारिकशारीर, इक्डा स्थादय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि ये अञ्चादयी फ्रानियों हैं। आंदारिकशारीर, इण्डाक्य के अपयाक्त भी स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि ये अञ्चादयी फ्रानियां स्थाय त्याप्त होतेष स्थाय होतेष स्थाय होता है। क्योंकि, विकास स्थाय होता है। क्योंकि, विकास क्याप्त होतेष स्थाय होता है। क्योंकि, विकास क्याप्त होतेष स्थाय होता है। क्योंकि, विकास क्याप्त होतेष स्थाय होता है। क्योंकि, अपयोक्तियां प्राचित्र व्यवस्था कार्या होता है। परधान और उच्छा कार्या होता है। परधान और उच्छा कार्या होता है। एस हा करिया है अपयोक्ति स्थायक्त होतेष उच्यक्त सर्वाह्म अभाव है। होप प्रकृतियोंका परोदय वन्ध होता है। क्योंकि, वहां उनके उदयका सर्वाह्म अभाव है।

पांच झानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यान्य सोलह कपाय, भय, बुगुप्सा, तिर्वगायु, मतुष्यायु, औदारिक, तेत्रस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस. स्पर्श, अगुरुल्यु, उपधात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरस्तर बन्ध होता है, स्पर्गीक, एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है। साता व असता वहनीय, सात नोकराय, मतुष्याति, एकेस्ट्रिय, ब्रीन्ट्रिय, बीट्यिय, चतुर्गिन्द्रय, पंचेन्द्रिय झाति. छह संस्थान, भंदारिक,

२ प्रतिष्ठ ' पंचणाणावरणीय-सादासाद- ' इति पाठ । ९ प्रतिष्ठ ' -धावर ' इति पाठः ।

पाओग्गाणुपुथ्वी-आदावुउजोव-देविहायगइ-तस-थावर-सुहुम-अपज्जत्त साहारणसरीर-थिराबिर-सुभासुम-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसिक्ति-अजसिकित-उज्ज्ञागोदाणं सांतरो बंघो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादे । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुष्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरे। बंघो, सन्वेइंदिएसु सांतरवंघाणमेदासि तेउ-वाउकाइयसु णिरंतर-बंधुवरुंमादो । परचादुस्साम-बादर-पज्जत-पत्तेयसरीराणं बंघो सांतर-णिरंतरो । कथं णिरंतरं ?' एइंदिएसुप्पण्णदेवाणमंतीसुहत्तकारुं णिरंतरवंघदंसणादो ।

एइंदिएसु मिन्छत्तासंजम-कसाय-जोगभेदेण चत्तारि मूल्यस्चया। पंचमिन्छत्तप्रया। कुदो ? पंचमिन्छत्तर्प्रया। कुदो ? पंचमिन्छत्तर्द्ध्याः एक्ति । एगो एइंदियासंजमो, छप्पाणामंजमा, कसाया सोल्स, इस्थि-पुरिसवेदेहि विणा णोकसाया सत्त, ओराल्यिदुग-कम्मद्रयमिदि तिण्णि जोगा, एट्रं सन्त्रे वि अहत्तीस उत्तरप्रच्या। णक्ति तिरिक्त-मणुस्साउआणं कम्मद्रयपन्चएण विणा सत्ततीम पर्च्या। एक्कारस अक्टसम

इारीरांगोषांग, छह संहतन, मनुष्यगतिप्रायागुपूर्वी, आताप, उद्योत, दे विहायेगानियां, प्रस, स्थायर, सुक्स, अपर्याप्त, साधारणदारीर, स्थिन, अस्थिर, हुभ्स, अध्युभ, सुमान, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेष, अनादेष, अनादेष, यदाकीति, अयदाकीती और उच्चगोत्र, हत्तका सानतर क्ष्य होता है, क्योंकि, एक समयसे हत्तका क्ष्याचिक्राम देखा जाता है। निर्यम्गति, तिर्यमानिक्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्र, इतका सानतर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सर्व एकोन्द्रयोग सानतर बन्धवाली इन प्रकृतियोका तेजकाषिक व वायु- काथिक जीवींमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। परधात, उच्छवास, बादर, पर्याप्त और प्रयोक्त होरी प्रकृतियोका क्ष्य सानतर-निरन्तर होता है।

शंका-इनका निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि एकेन्ट्रियोंमें उत्पन्न हुए देवोंके अन्तर्मुहर्तकाल तक इनका निरन्तर बन्ध देखा जाता है।

पकेन्द्रियों में मिध्यात्व, असंयम, कवाय और योगके भवसे चार मूळ प्रत्यय होते हैं। उत्तर प्रत्ययों में पांच मिध्यात्व प्रत्यय, क्योंकि, पांच मिध्यात्वोंके साध एकेन्द्रियों उत्पक्ष हुए नाना मनुष्योंके पांच मिध्यात्व प्रत्यय पाये जाते हैं। एक एकेन्द्रियासंयम, छह प्राणि-असंयम, सोलह कपाय, स्त्री और पुरुष वेदके विना सात नोकवाय, तथा हो औदारिक सर्मण ये तीन योग, ये सब ही अहतीस उत्तर प्रत्यव एकेन्द्रियों होते हैं। विदोचता केवल यह है कि तियेगायु व मनुष्यायुके कार्मण प्रत्यवके विना सैतीस प्रत्यय होते हैं। न्यारह व अठारह एक समय सम्बन्धी जवन्य और उत्कृष्ट

एगसमइयजहण्णुक्कस्सप्रच्या ।

तिरिक्खाउ- [तिरिक्खनइ-] तिरिक्चगईसाँ तिरिक्चगईशोगगाणुपुर्व्यी-आदाबुज्जीव-धावर-सुहुम-साहारणसरीराणि तिरिक्चगईसंजुत्तं वज्बंति । मणुस्साउ-मणुस्सगई-मणुस्साणुपुर्व्यी-उच्चागोदाणि मणुसगईसंजुत्तं वज्बंति । अवसेमोओ पवडीओ तिरिक्चगई-मणुसगई-मंजुत्तं वज्बंति, दुगईहि विरोह्यामाबादो । एईदिया सामी । वंधद्वाणं सुगर्ग । वंधवोर्च्छेदो णिर्ध्य । पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलमकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसगैर-वण्णचउक्क-अगुरुअ-लहुक्य-उवघाद-णिमिण-पंचेतगइयाणं चउन्विहो वंधो । अवसेसाणं सादि-अद्भवे। ।

एवं बादरएईदियाणं । णविर बादरं सोटगण बञ्जीद । सुहुमस्म एरादश्री बंशे । बादरएईदियपञ्जताणं बादरेईदियमंगो । णविर पञ्जतस्म सोदश्रो, अपञ्जतस्म एरादश्री बंशे । बादरएईदियअपञ्जताणं पि बादरएईदियमंगो । णविर श्रीणगिद्धितय-परबादुस्मास-आदावुज्ञीव-पञ्जत-जसिकत्तीणं परोदशो बंशे । अपञ्जत-अजस्त्रितीणं मोटशे । परघादुस्मास वाटर-

प्रत्यय होते हैं।

निर्यमानु, [तिर्यमानि,] निर्यमानिप्रायोग्यानुपूर्वा, आताप, उद्योन, स्थाधन, सुक्ष्म और साधारणदारीरका निर्यमानिस संयुक्त यांध्रने हैं। सनुष्यानु, सनुष्यानि, सनुष्यानु, पूर्वी और उक्क्योग्रको सनुष्यानिस संयुक्त यांध्रने हैं। रोग प्रकृतियोको निर्यमानि व सनुष्यानिस संयुक्त यांध्रने हैं, क्योंकि, दोनों गानियोके नाथ उनके बन्ध्रका विरोध निर्वाह निर्वाह संयुक्त यांध्रने हैं। क्यांध्राम है। वन्ध्रव्यक्त हैं नहीं। पांच कानावरणीय, सिर्वाह ने कार्य, ग्रंथ, जुगुल्सा, नैजन व कार्य, ग्रंथ, जुगुल्सा, नैजन व कार्यकार होना है। यांध्र अनुष्यान्य, होना वांध्रिक स्थानिक स्

इसी प्रकार बाहर एकेन्द्रिय जीवोंकी भी प्ररूपणा है। विशेष इतना है कि इनके बाहर नामकर्म स्वोदयसे बंधता है। सुक्ष्म प्रकृतिका दन्य परेन्द्र्यसे होता है। वाहर एकेन्द्र्रियोंक समान है। विशेषता केवल इननी है कि उनके पर्याप्त प्रकृतिका स्वोद्य और अपर्थाप्त प्रकृतिका एरोह्य वस्थ होता है। बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त प्रकृतिका एरोह्य वस्थ होता है। बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त प्रवृत्तिका स्वोद्य अहा वह एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी भी प्रकृषणा बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी भी प्रकृषणा बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी भी प्रकृषणा बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त विशेष स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त विशेष स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त है। अपर्योप्त और अयशकीर्तिका स्वाप्त व्यवस्व होता है। अपर्योप्त और अयशकीर्तिका स्वाप्त व्यवस्व होता है। अपर्योप्त श्रीर अयशकीर्तिका स्वाप्त व्यवस्व होता है। अपर्योप्त श्रीर अयशकीर्तिका स्वाप्त व्याप्त होता है। अपर्योप्त स्वाप्त स्वाप्त

१ अप्रतो 'बंधति 'इति पाटः ।

पञ्जत्त-पत्तेयसरीराणमेइंदिवसु सांतर-णिरंतरा बंधो । एरथ पुण सांतरा चेव, अपञ्जतेसु देवाणमुष्पत्तीए अभावादो । ओराल्यिकायजोगपञ्चओ णिर्ध । सुद्धमव्इंदियाणं एइंदियमंगो । णविर परघादुस्सास-बादर पञ्जत-पत्तेयसरीराणं सांतरा वंधो, सुद्धमेइंदियसु देवाणसुववादा-भावादो । बादर-आदाउज्जोव-जमकितीणं परोदओ वंधो । सुद्धमेइंदियपञ्जताणं [सुद्धमेइंदिय-भंगो । णविर पञ्जत्तस्स सोदओ, अपञ्जतस्स परोदओ वंधो । सुद्धमेइंदियअपञ्जताणं] सुद्धमेइंदियभंग्यज्ञताणं । णविर थीणगिद्धितय-परवादुस्सासपञ्जताणं परोदओ वंधो । अपञ्जतस्स सोदओ वंधो । अपञ्चलामस्स सोदओ । पञ्चरि थीणगिद्धितय-परवादुस्सासपञ्जताणं परोदओ वंधो । अपञ्चलाणमस्स सोदओ । पञ्चरि थीणगिद्धितय-परवादुस्सासपञ्चलाणं अवणेद्देशे ।

संपधि वीइंदियाणं भणामा — इत्थि-पुरिसवेदः मणुस्साउ-मणुसगर-एइंदिय-तीइंदिय-चर्जिंदिय-पेविंदियजादि-अर्णातमपंचसंद्राण-पंचसंघडण-मणुसगइपाओग्गणुपुन्वी-आदाव-पसत्थविहायगदि-थावर-सुहुम-साहारणसगिर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणसुदया-मावादे। सेमपयडीणं चोदयवाच्छेदामावादे। वहंदिएम् पंचिंदियतिरिक्खअपज्जस्त्रिह

उच्छाम, वादर, पर्याप्त और प्रत्येकदारीर, इनका एकेन्द्रियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध <mark>होता</mark> है । परन्तु यहां उनका सान्तर ही बन्ध होता है, क्योंकि, अपयीजकोंमें देवींकी उत्पत्तिका अभाव है । यहां प्रत्ययोंमें औदारिक काययोग प्रत्यय नहीं है ।

स्क्रम एफेन्ट्रियंकी प्रकपणा एकेन्ट्रियोंके समान है। विशेषता यह है कि परधान, उब्ब्र्यास गाइर, पर्यान और प्रत्येक्तरिस्का उनके साननर बन्ध होना है, क्योंकि, स्क्रम एकेन्ट्रियोंमें देशेकी उत्पत्तिका अभाव है। यहर, आनाण, उद्योत और प्रशाकीनिका परोदय वन्ध होना है। स्क्रम एकेन्ट्रिय पर्यान्तीकी प्रकपणा [स्क्रम एकेन्ट्रिय अर्थान्त अप्रतिका परोदय वन्ध होना है। स्क्रम एकेन्ट्रिय अर्थान्त प्रकृतिका स्वोदय और अपर्यान्त प्रकृतिका परोदय वन्ध होना है। स्क्रम एकेन्ट्रिय अर्थान्त अर्थान अर्थान्त अर्थान्त अर्थान अर्थान्त अर्थान्त अर्थान अर्थान्त अर्थान्त अर्थान्त अर्थान अर्थान अर्थान्त अर्थान अर

अब द्वीन्द्रिय जीवोंकी प्रकपणा करते हैं — स्त्रीवेद, पुरुपवेद, मनुष्यायु, मनुष्य-गति, एकेन्द्रिय, जीट्द्रिय, चनुशिन्द्रय, पंजीट्द्रिय ज्ञाति, अस्तिम संस्थानको छोड़ होत पांच संस्थान, अस्तिम संहननको छोड़ होत्य पांच संहनन, मनुष्यत्रायोग्यानुद्वी, आताष, प्रशस्तिविहायोगति, स्थावर, मूक्स, साधारणदारीर, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चनोज, इनके उदयका अभाव होनेसे, तथा होत्र प्रकृतियोंके उदयञ्जुच्छेदका अभाव होनेसे पंचीस्द्रय

१ अप्रती ' गृहमेण्ड्दियाणि वेदंदियमंगी '; आप्रती ' सृहमण्ड्रदियाणि वेदंदियमंगी '; काप्रती ' सृहमे-इंदियाणि वेद्दियमंगी ' दित पाठः ।

२ प्रतिषु ' एइदिय बीइंदिय-तीइंदिय- ' इति पाठः ।

भज्जमाणपपडीओ वंधमोणेसु 'वंधादो उदओ किंपुब्वं किंवापच्छावोच्छिण्णो'ति विचारो णरिय ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय भिन्छत्त-णवंसयवेद - तिरिक्खाउ- तिरिक्खगइ - बीइंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर वण्ण-गंब-रस-फास-अगुरुवरुहुअ-तस-बादर थिराथिर सुभा-सुभ-दुमग-अणिदज्ञ-णिमिण-णीचागोद-पंचंतरायइयाणं सोदओ वंधो, एस्य एदासि धुवीदयत्त-दंसणादो । णिदाणिदा-पयलापयल्ग-सादासाद-मोल्यसक्तमाय-ज्ञ्योकसाय-पञ्जतापञ्जत-जम-अजसिकतीणं सोदय-परेदओ वंधो, उभत्या वि वंधम्स विरोहामावादो । ओरालियमरीर-ढुंडसेत्या-ओरालियमरीरक्षगोवंग-असंपनसेवहसंघडण-उवचाद-पनेयमरीराणं पि सोदय-परादओ, स्थिमहत्विए उदयाभावे वि वंधुवरुभादो । तिरिक्चमित्राओग्याणुव्जीण वि सोदय-परादओ वंधो, विगाहारादीदो अण्णस्य उदयाभावे [वि] वंधदंसणादा । परायदुस्मासुनीव-अप्पमस्यविद्याय-गङ्कुस्सराणं वि सोदय-परादओं वंधा, अपञ्जतकाले उदयामावे वि वंधदंसणादा, उजीवस्स उज्जीवीदयविरहिद्दाविरहिदेश्-वंधुवरुभादो । इस्थ-पुर्मि-मणुस्माउ-मणुमगइ-एइंटिय-नीइंदियं-

तिर्येच अपर्याप्तीके द्वारा वध्यमान प्रकृतियोको वांधनेवाल द्वीन्द्रय जावोमें 'वन्धने उदय क्या पूर्वेमे या क्या पक्षात् ब्युब्छित्र होता है 'यह विचार नहीं है।

पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, प्रिथ्यास्त्र नपुंसकंत्रतः, तिर्यगायु, तिर्यमाति, ह्रान्द्रिय जाति, तेजस व कामण रार्गाः, वर्ण, तम्य, रस्त, स्पर्शाः, अगुरुत्वयु, बस्त, स्वाद्य अस्यतः, अस्यतः, युभ्य, अशुम्य, दुभ्य, अनादेव, तमाण, तीचगोज और पांच अस्तराय, हत्तका स्वोद्य वन्ध होता है. क्यांकि, यहां इनका भुव उदय देखा जाता है। विद्वातिद्रा, प्रचाणन्य व्याप्त, आर्याप्त, यदार्काति, जोर अयदार्काति है। विद्वातिक्रार्गाप्त, यदार्काति, जोर अयदार्काति है। विद्वातिक्रार्गाप्त, यदार्काति, जोर अयदार्काति है। विद्वातिक्रार्गाप्तयः, वच्च होता है, क्यांकि, दोनों प्रकारते भी इनक कम्थका विराध नहीं है। विद्वातिक्रार्गाप्तयः, हण्यसंस्थान, औदारिक्शरीरांगोपांग, असंप्राप्तयःगारिकाति, व्याप्त और प्रत्येक्शरीरः, इनका भ्याच वाता है। विद्वातिकाति होत्या होता है, क्योंकि, विद्वातिकाते होत्या होता है, क्योंकि, विद्वातिकाति क्षेत्रकारीयांग्यायांग्याप्तयः, विद्वातिकाति क्षेत्रकारीयः, विद्वातिकाति क्षेत्रकार अप्तयः वस्ता जाता है। परायात, उच्छ्वास, उद्योत, अपरास्तविद्यातीति और दुस्वरका भी स्वोद्य-परोद्य वस्त होता है। क्योंकि, अपरांत्रकार्य स्व स्वात्तिकार भी वस्य देखा जाता है। तथा उत्तिकार स्वतिक उद्योते सहित कीर्योत्य सहित कीर्योत्य उत्तक उपराया जाता है। तथा जाता है। है, तथा जाता है। तथा जात

१ मत्रती ' पृत्रंदिय बॉइंदिय-तोइदिय- ' इति पाठः ।

चर्जरिदिय - पंचिंदियजादि - अर्णतिमपंचसंठाण-पंचसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुच्वी-आदाव-पसत्यविद्वायगइ-थावर-सहम-साहारणसरीर-सुभग-मुस्पर-आदेच्चच्चागोदाणं परोदओ बंघो ।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सीलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस्साउ-भोरातिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुम्बलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरा वंधो, एगसमएण वंधुवरमाभावादो । दोण्णमाउआणं णिरंतरा, एगसमएण
वंग्छ्येदाभावादो । सादासाद-सत्तणोकसाय-मणुमगइ-एईदिय-वीईदिय-वीईदिय-चउरिंदियपंचिंदियजादि-छसंदाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुजी परघादुस्सास-आदाउज्जीव-देविहायगइ-तस-धावर-मादर-सुहुम-पज्जतापज्जत-पत्तय-साहारणसरीरथिराथिर-सुहासुङ सुभग-दुभग-सुस्मर-दुस्मर-आदेज-अणादेज्ज-असिकिति-उज्जागोदाणं सांतरो
वंथो, एगसमएणेदासिं वंधुवरमदंसणादो । परघादुस्सास-बादर-पज्जत-पत्तय-सराराणमेहंदिएसु
व मांतर-णिरंतरो वंथो किण्ण पर्वविदो १ण, देवाणमेहंदिएसु व विगलिदिएसु उववादाभावादो।

भन्तिम संस्थानको छे।इकर पांच संस्थान, पांच संहतन, मनुष्यातिप्रायोग्यानुपूर्वी, भागाप, प्रशस्तविद्यायोगाति, स्थावर, सुश्म साधारणदारीर, सुभग, सुम्बर, आदेय और उच्चेगोष, इनका परोदय यन्ध होना है।

पांच झानावरणीय. नी दर्शनावरणीय, मिथ्यात्य, सीलह कपाय, भय, जुगुत्सा, निर्यगायु, अनुत्यायु, औदारिक, तेजस व कार्मण दारीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुल्खा, उपचान, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता हैं, क्योंकि, एक समयस इनके बन्धविधामका अभाव है। दें। आयुओंका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धवृच्छेदका अभाव है। साता व असाता वेदनीय, सात नोक्ताय, मनुष्यगात, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, जिन्द्रिय, चर्डिट्रिय, पेचेन्द्रिय जाति, छह संस्थान, औदारिक हारीरांगोपांग, छह संहलन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपुर्वी, परधात, उच्छ्वास, आताप, उच्चेत, दें। विहायोगितियां, यस, स्थाय, वादर, स्थूम, पर्यान्त, अपर्योप्त, अस्येक व साधारण द्वारीर, स्थिप, अस्यर, अभ्रम, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, अद्येष, अन्वर्य, यदाकीर्ति और उच्च्योग, इनका सान्तर वन्ध होना है, क्योंकि, एक समयसे इनका वन्धविधाम देखा जाता है।

शंका—परधात, उद्दूष्यस, बाहर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीगका प्रकेन्द्रिय जीवॉके समान सान्तर-निरन्तर वस्थ क्यों नहीं कहा गया ?

समाधान—एकेस्ट्रियोंके समान विकलेस्ट्रियोंमें देवांकी उत्पत्ति न होनेसे यहां
 उक्त मक्कतियांका सान्तर-निरन्तर बन्ध नहीं कहा गया ।

तिस्विच्चमइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुःवी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरा वंदो । कघं णिरंतरो ? ण, तेत्र-वाउकाइएहिंतो बीइंदिएसुप्पणाणमंतोसुहतकाटमेदासि णिरंतरचंयुबलंभादो ।

एदासि मूलपञ्चया चत्तारि । पंच मिच्छत, दोइदियासंत्रमा, छप्पाणासंत्रमा, सोलस कसाया, सत्त णोकसाया, चत्तारि जोगा, सच्चेदे बीइदियस्सं चालीसुत्तरपञ्चया । णवरि तिरिक्ख मणुस्साउआणं कम्मइयपञ्चण्ण विणा एगुणचालीस पञ्चया । एक्कारस अद्यास एगसमइयजङ्णुक्कस्सपञ्चया ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चर्डारंदियजादि-तिरिक्खगइएओ-ग्गाणुपुष्वी-आदाबुज्ञीव-थावर-सुद्धम-साहारणाणं तिरिक्खगइसंजुनो वंधो । मणुस्साउ-सणुस्सगइ-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुत्र्वी-उच्चागोदाणं मणुसगइसंजुन्तो वंधो । सेसाणं पयडीणं तिरिक्ख-सणु-स्सगइसंजुन्तो वंधो । कुदो ? दोहि गदीहि सह विरोहाभावादो । वंधदाणं सुगमं । वंधवीच्छेदो णरिय । धुवियाणं चउन्विही वंधो । अवसेसाणं सादि-अद्वतो । एवं पण्डनातां । णविर

निर्यमानि, तिर्यमानिवायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तरःनिग्ग्तर वस्थ होना है।

शंका - निरन्तर बन्ध कसे होता है ?

समाधान—यह शंका शंक नहीं, क्योंकि, तेजकाधिक और वायुकाधिक जीवोंमेंस इंस्टिट्सोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अनूनमुँहर्न काल तक इनका निरस्तर वस्थ पाया जाता है ।

इनके मूल प्रत्यय चार होते हैं। पांच मिथ्यान्य, हो इन्हियानंयम, छह माणि असंयम, सोलह कपाय, सान नोकपाय और चार येता, ये सब इंग्डिंग जीवक चालीम जनर प्रत्यय होते हैं। विशेषता कवल इनमी है कि नियंगानु व मनुष्यायुके कामेण प्रत्ययके विना उननार्योस प्रत्यय होते हैं। ग्यारह व अटारह कममे एक समय सम्यन्धी जपन्य और उत्कृष्ट प्रत्यय होते हैं।

तिर्येगाषु, निर्यमाति, एकेन्द्रिय, झीन्द्रय, चनुरिनेद्रय जाति, निर्यमाति-प्रायोग्यातुपूर्वी, आताप, उद्योत, स्थायर, सदम और साभारण इनका निर्यमातिस् संयुक्त बंध होता है। मनुष्याषु, मनुष्याति, मनुष्यातिवायोग्यानुपूर्वी और उद्यागोशका मनुष्यातिस् संयुक्त बन्ध होता है जोष प्रकृतियाँका निर्यमाति और मनुष्यातिस् संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, दोनो गतियोक साथ उनके बन्धका विरोध नहीं है। वस्थापन्नान सुगम है। बन्धन्युच्छेद नहीं है। धुव प्रकृतियाँका चारों प्रकारका वस्थ होता है। होप प्रकृतियाँका सादि व अधुव बन्ध होता है।

इसी प्रकार ब्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी प्ररूपणा है। विशेषना केवल इतनी है कि

र त्रतिषु '- सम्बेदे वा बोहंदियस्म 'इति पाठः । २ प्रतिषु 'इवियाण ' इति पाठः ।

पज्जत्तणामस्स सोदओ, अपज्जत्तणामस्स पराहओ बंधो । एवमपञ्जत्ताणं पि वत्तस्त्रं । णविर यीणगिद्धितिय-परघादुस्सास-उज्जोव-अप्पसत्थविद्वायगद्द-पञ्जत-दुस्सर-जसिकतीणं परो-दओ वंधो । अपज्जत-अजसिकतीणं सोदओ। अपज्जताणमृहत्तीस पञ्चया, श्रीरालिय-कायास-चर्मोक्षविज्जोगाणमभावादो।

तीइंदियाणं तीइंदियपजतापज्ञत्ताणं च बीइंदिय-वीइंदियपज्जतं बीइंदियअपज्जतः भंगो । णविर वाणिदिण्णं मह तेइंदियपज्जत्ताणमेनकेताठीस पच्चया । अपज्जताणमेग्ण-चाठीस, ओराठियकायासच्चमोर्मवचिजोगाणमभावादो । तीइंदियणामस्स सोदओ बंधो । अवमर्मिदियणामाणं परोदओः।

चउरिंदियाणमेवं चेव वत्तवं । णविर चउरिंदियजादिषेषो सोदओ । सेसिंदियजादि-वंथो परेर्देओ । बादालीसुत्तरपच्चया, चक्किंदियपचेसार्दा । अपज्जताणं चालीस पच्चया,

उनके पर्याप्त नामकर्मका स्वादय और अपर्याप्त नामकर्मका परोदय बन्ध होता है। हसी प्रकार डीन्द्रिय अपर्याप्तोंका भी कथन करना चाहिये। विशेष यह है कि स्थानगृद्धित्रय, परधान, उच्छवास, उद्यान, अपरास्तीवहायोगाति, पर्याप्त, दुस्बर और यहाकीर्तिका परोप्तय वन्ध होता है। अपर्याप्त और अपहाकीर्तिका स्वोदय वन्ध होता है। अपर्याप्तोंक अदिनीय मन्यय होते हैं, क्योंकि, औदारिक काययोगा और असत्य मुणा बच्चनयोगका उनके असाव है।

र्जन्दियः जीन्द्रिय पर्याप्त और जीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्रक्रपण झीन्द्रियः, द्वीन्द्रिय पर्याप्त और झीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंक समान है। विशेषता इतनी है कि झाण इन्द्रियक साथ जीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंक इकतालीस प्रत्यय होते हैं। अपर्याप्तोंक उनतालीस प्रत्यय होते हैं। अपर्याप्तोंक उनतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उनके औदारिक काययोग और असत्य मृपा बचनयोगका अभाव है। जीन्द्रिय नामकर्मका स्वोद्य यन्ध होता है। शेष इन्द्रिय नामकर्मका स्वोद्य यन्ध होता है।

चतुरिन्द्रिय जीवोंका भी इसी प्रकार ही कथन करना खाहिये । विदेश इतना है कि उनके चतुरिन्द्रिय जातिका स्थाद्य बन्ध होता है। दोप इन्द्रिय जातियोंका बन्ध परोद्दय होता है। यहां चश्च इन्द्रियका प्रवेश होनेसे म्याठीस उत्तर प्रत्यय होते हैं। अपवीत्रोंके

१ आपती ' ओराडियकायसच्चमास- ' इति पाठः।

२ प्रतिपु ' तीइंदियाणं तीइंदियपञ्जताणं तीइंदियअपञ्जताणं चर्डारेदिय-बीइंदियपञ्जतः '; सपती ' तीइंदियाणं तीइंदियपञ्जतापञ्जताणं च बीइंदियपञ्चतः ' इति पाटः |

३ प्रतिप्र ' ओरालियकायसञ्चमोस ' इति पाठः ।

श्रीरालियकायासच्चमासवचिजागाणमभावादे। ।

पंचिदियअपञ्जताणं भणिस्सामा — एत्थ बज्जमाणपयडीओ पंचिदियतिरिक्ख-अपञ्जतिहि बज्जमाणाओ चेव, ण अण्णाओ । एत्थ एदासि उदयादो बंघो पुर्व पच्छा वा वोच्छिण्णो ति विचारो णत्थि, संतासंताणं वंथोदयाणमेत्थ वोच्छेदाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-च उदंसणावरणीय-मिञ्छल-णवंसयवेद-पंचिदियजादि-तेजा-कम्माइय-सरीर-वण्ण-गंभ-सम-काम-अगुरुअलहुअ-तम-बाहर-अपज्जन-विगिथिर-सुहासुह-दुभग-अणादेज्ज-अजसिकिलि-णिमिण-णीचागोद-पंचतराइयाणं सोदश्रो बंघो, पृवादयत्तादे। । णिहा-पयल्प-सादा-साद-सोलस्तकसाय-छणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्माउ-तिरिक्खगह-मणुसगहपाओगगाणुपुर्व्वीणं सोदय-परादेश्चे बंघो: उदराण विणा वि, संत वि उदण् बंधुबलंगादे। । आगल्यियमरीर-हुंड-संठाण-ओगालियमरीरअगोवंग-असंपत्तसेबहसंघडण-उबचाद-पंचयमरीराणं सोदय-परादओ बंघो, विगाहगदीग् उदयाशांव वि अण्णत्य उदण् संत वि बंधदंसणादे। । श्रीणगिद्धितय-इंध्य-पुरिसवेद-गईदिय-वीहंदिय-तीहंदिय-च उगिदिय-पंचसंठाण-पंचसंघडण-परायादुस्साम-आदावुक्षाव-देविहायगह-यावर-सुदुम-पज्जत-साहारणमरीर सुभग-सुम्मर-दुम्मर आदेज्ज-जमिकित-उच्चा-

चालीस प्रत्यय होते है, पर्योक, उनके औदारिक काययोग और असन्य-मृपा वचनयोगका अभाव है ।

पंचिन्द्रिय अपयोजींकी प्ररूपणा करते हैं— यहां यश्यमान प्रकृतियां पंचिन्द्रिय तिर्यंच अपयोजीं द्वारा यांधी जानेवाली ही हैं, अन्य नहीं हैं। यहां 'हनका उदयसे यन्ध पूर्वमें या पश्चात् ट्युच्छिल होता है' यह विचार नहीं है. क्योंकि सन और असत् बन्धोदयके ट्युच्छेदका यहां असाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिध्यान्य, नपुंसकेवर, पंचिन्द्रियज्ञाति, तेजम च कार्मण द्रारीर, वर्ण, गन्ध, रस्त, रुपद्रों, अगुरुत्वयु, त्रम, वादर, अपयोज, स्थिर, अस्थिर, द्राप्त, अगुर्स, दुर्भग, अनाद्य, अयदाकीर्ति, निर्माण, नीचसोच और पांच अस्वराद, द्राप्त, अगुर्स, दुर्भग, अनाद्य, स्वराद, व धुव्येद्र्य प्रकृतियां है। निद्रा, प्रचल्या, साता व असाता बर्दाय त्येय, सोठह कपाय, छह नोकपाय, तिर्याणु, मृत्युपायु और तिर्यमाति व मृत्युप्तातिवायोश्यापुत्रुची, इनका स्वाद्य परोद्य वस्य होता है, क्योंकि, उद्यके विना भी, तथा उदयके होत्यार भी हात्वा नक्य पांच जाता है। अीदारिकदारीर, हुण्डस्थान, अीदारिकदारीरांगोणांग, असंभानतस्यादिकासंहतन, उपवात और प्रदेक्ष हुण्डस्थान, अीदारिकदारीरांगोणांग, असंभानतस्यादिकासंहतन, उपवात और प्रदेक्ष हुण्डस्थान, अीदारिकदारीरांगोणांग, असंभानतस्यादिकासंहतन, उपवात और प्रदेक्ष हुण्डस्थान, अीदारिकदारींगोणांगंग, असंभानतस्यादिकासंहतन, उपवात्य और प्रदेक्ष हुण्डस्थान, व्यादेव वस्य होता है, क्योंकि, विप्रदेगतिकं उद्यापायकि होनेपर भी, तथा अस्य उद्यक्ष होते हुए भी इतका वन्ध देखा जाता है। स्यानस्यिक्षय, क्रीवेद, पुरुष्येद, एकेटिन्द्र्य, क्रीन्द्रिय, क्रीनिद्र्य, क्रातित्र्य ज्ञाति, पांच संस्थान, पांच संस्थान, पांच संस्थान, पांच संस्थान, पांच संस्थान, उपवात, उच्चेत, देश विहायोगातियां, स्वायर, स्वस्त, प्रयंत्र, साधारक हारीर, सुमग, सुस्तर, दुस्तर, आव्यर, साधारक हारीर, सुमग, सुस्तर, उस्तर, आव्यर, याक्षीति और उच्चागोन, इतका परोद्यसे हरक

गोदाणं परोदएण बंधो. एदासिमेत्थ उदयविरोहादो ।

पंचणाणावरणीय-जवदंसणावरणीय-सिच्छत्त-सीट्सकसाय-भय-दुर्गुंछा-तिरिक्ख-मणु-स्साउ-श्रेरालिय-तेजा-कम्मइ्यसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवठहुअ-उवचाद-णिमिण-पंचंतरा-इयाणं णिरंतरो बंघो, एत्थ एदासि धुववंधितादो । सादासाद-सत्तणोकसाय-मणुसगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-च उरिर्दिय-पीचेंदियजादि-छसंठाण-श्रोरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइ-पाञोग्गाणुपुच्वी-परचादुस्सास-आदाउजीव-देविद्दायगइ-तस-धावर-चादर-सुहुम-पञ्चतापञ्चत्त-पत्तय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुद्दासुह-सुभग-दुभग सुस्सर-दुस्सर-आदेञ्ज-अणादेञ्ज-जसित्ति— अजसिकत्ति-उच्चागोदाणं सांतरो बंधो, एगसमएणदासि बंधुवरमदंसणादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुच्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो । कथं णिरंतरो ? ण, तेउ-वाउ-काइणुह्वेतो पीचेंदियअपञ्चलसुप्रणणाणमंतीसुहत्तकालमेदासि णिरंतरबंधुवठंभादो ।

पंचिंदियअपज्जत्ताणमेदाओ पयडीओ बंधमाणाणं पंच मिच्छत्ताणि, बारस असंजम,

होता है, क्योंकि, यहां इनके उदयका विरोध है।

पांच झानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कवाय, भय, जुगुप्सा, नियंगायु, मनुष्यायु, औदारिक, नैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गम्य, रस, स्पर्श, अगुरुलपु, उपधात, निर्मण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये अववन्धी हैं। साता व असाता वदनीय, साता नोकपाय, मनुष्यगति, पकेन्द्रिय, हीट्टिय, चेट्टिय, चेट्टिय, पंचिन्ट्रय जारी, छह संस्थान, औदारिकशरीरांचीपांग, छह संहनन, मनुष्यगतिमायांग्यानुपूर्वी, परधात, उच्छवास, आताप, उद्योत, हो विहायोगितियां, त्रस, स्थावर, बादर, सुक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, पर्येक, साधारण शरीर, स्थिर, अस्थर, गुम्, अगुम, सुभैग, सुस्यर, बुस्यर, आदेय, अनोदय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चांगाइ, इनका सान्तर वन्ध होता है, क्योंकि, पक समयसे इनका क्यविक्षाम देखा जाता है। नियंगिति, नियंगितिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोकका सान्तर-विरन्तर वन्ध होता है।

शंका -- निरन्तर बन्ध कसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमेंसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्मुहर्त काळ तक इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

इन प्रकृतियोंको बांधनेवाले पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके पांच मिथ्यात्व, बारह

१ प्रतिषु 'बंधणाणं ' इति पाठः ।

सोल्स कसाय, सत्त णोकसाय दोणिण जोग ति बादालीस पच्चया होति । तिरिक्ख-मणुस्साउ-भाणं एक्केतालीस पच्चया, कम्मइयपच्चयाभावादो । सेसं सुगमं ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंहिय-बीइंटिय-तीइंटिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइ-पाञ्चेगगणुपुळी-आदाउञ्जेब-यावर-सुटुम-साहारणसरीगणं तिरिक्खगइसंजुत्ती बंधो । मणुस्साउ-मणुसगइ-मणुसगइपाञ्चोगगणुपुञ्ची-उच्चागोदाणं मणुसगइसंजुत्तो । सेसाणं पयडीणं बंधो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो । पंचिदियअपञ्जता सामी । बंधदाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णस्थि । पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सेाठसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवरुद्द-उवचाद-णिमिण-पंचेतराइयाणं चउव्विहो वंधो, धुवबंधितादो । सेसाणं सादि-अद्धतो ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावर-णीय-जसिकत्ति-उच्चागोद-पंचेतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १०३॥

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेणंदण सुइदत्थाणं परूवणा कीरदे । तं जहा — किं

असंषम, सोलह कपाय, सात नोकपाय और दो योग. इस प्रकार व्यालीस प्रत्यय होते हैं। तिर्षेगायु और मनुष्यायुके इकतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उनके कार्मण प्रत्ययका अमाव है। शेष प्रत्ययप्रकपणा सुगम है।

तिर्यगासु, तिर्यगाति, एकेन्द्रिय, ब्रीन्द्रिय, चार्निद्र्य, चार्निर्द्रय जाति, तिर्यगाति। प्रायोग्यासुपूर्वी, आताप, उद्योत, स्थावर, सृक्ष्म और साधारण द्वारीर, इनका निर्यगातिस संसुक्त बन्च होता है। मनुष्यासु, मनुष्यातिम त्रायाप्तामायापुर्वी और उच्चांगोषका सुन्यपातिस संसुक्त तथा द्वारा प्रायम क्रिक्त क्षेत्र का प्रायम प्रायम क्षित्र मनुष्यातिस संसुक्त होता है। पंचेन्द्रिय अपर्यान्त जीव स्वार्मा हैं। वन्धाध्यात सुगम है। बन्धवपुष्केष्ठ यहां है नहीं। पांच ब्रालावरणीय, नी दर्शनावरणीय, मिध्यात्व, सीलह कपाय, सय, जुगुस्स, तैज्ञस व कार्मण दारीर, वर्ण, गम्ध, रस, स्पर्यं, अगुरुल्यु, उपप्रात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका चार प्रकारण बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुववनधी हैं। दोप प्रकृतियोंका साहि व अध्रुव वन्ध होता है।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यद्यकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कीन वन्यक और कौन अवन्धक है ? ॥ १०३॥

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, इसिटिये इसके द्वारा सूचित अधौकी प्ररूपणा

भिष्काहृद्दी बंघजो किं सासणे बंधजो किं सम्मामिन्छाहृद्दी बंघजो किमकंजदसम्माहृद्दी बंघजो किं संजदासंजदो किं पनतो किमपमत्तो किमपुत्वो किमणियृद्दी किं सुदुमसांपराइयजो किसुव-संतकसाओ किं सीणकसाओ किं सजोगिजिणो किमजोगिमहार जो बंघजो ति एवमेसो एगसंजोगो । संपि एर्थ दुसंजोगादृद्दि अन्वसंचारं किरिय सोल्डसहस्स-विण्णसय-तेपा-सीदि-पण्णभंगा उप्पाएयव्या । किं पुन्वमेद्दार्सि वंघो बोन्छिज्ञदि किसुद्द को किं दो वि समं बोन्छिज्ञति एवमेत्य तिण्ण भंगा । किं सांदरण्ण वंधो किं परेतद्रएण किं सोदय-सरेहरूण्ण एत्थ वि तिण्ण भंगा । किं सांतरे वंधो किं णिरंतरे [किं] सांतर-णिरंतरो ति एत्य वि तिण्णेव भंगा । एदार्सि किं मिन्छत्तप्च को वेधो किमसंजमप्याओं किं कसायपच्यओं किं तागपच्यओं वंधो ति पण्णारस मृत्यव्याच्यां स्वर्धा विवर्धीय-सुद-संदेद-अण्णाणिमच्छत्त-चक्रकु-सोद-चाण-जिस्सा-पास-मण-सुत्वीकाइय-आउकाइय-तेडकाइय-वाड-काइय-वाणिस्तावीय-पण्णस्तिजाइय-सारकाइयानंजम-सोलसकाया-पण्णोकसाय-पण्णास्तानोपच्यप्ट हिष्ट

करते हैं। वह इस प्रकार है— क्या सिध्यादि यन्धक है, क्या सासादनसम्यग्दिष्ट वन्धक है, क्या सम्यग्निथ्यादि वन्धक है, क्या असंयतसम्यग्दिष्ट वन्धक है, क्या असंयतसम्यग्दिष्ट वन्धक है, क्या संयतामंयत, क्या प्रमत्त, क्या अप्रमत्त, क्या स्वामि स्वा

इनका बन्ध क्या मिथ्यात्वप्रत्यय है, क्या असंयमप्रत्यय है, क्या करायप्रत्यय है, या क्या योगप्रत्यय वन्ध है, इस प्रकार पन्द्रह मुल्प्यत्यय-निमित्तक प्रइतमंग होते हैं। एकान्त, विपरीत, मृङ् [विनय], सन्देह और अञ्चान रूप पांच मिथ्यात्व; चक्षु, ओत्र, ब्राण, जिह्ना, स्पर्श, मन, पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजकायिक, वायुकायिक, वनस्पति-कायिक और असकायिक, इनके निमित्तसे होनेवाले वारह असंयम; सोलह कवाय, नौ

१ अ-काप्रजोः '-पंचण्डसंगा ': आप्रती '-पंचण्ड संगा ' इति पाठः।

.चोहससदएकेताः जीसकोडाकोडी-पण्णारसलक्ख-अड्डारससहरस-अड्डसय-सत्तकोडी'-अड्डवंचास-लक्ख-बंबवंचासहरस-अड्डसय-एककहत्तिरजत्तरपञ्चयपण्णमंगां उप्पाएदच्वा १४४११५-१८८०७५८५५८७१। किं णिरयगइसंखुत्तं वज्झेति किं तिरिक्खगइसंखुत्तं किं मणुस्सगइसंखुत्तं [किंदेबगइसंखुत्तं] इदि एत्थ पण्णारस पण्डमंगा उप्पाएदच्वा । अद्धाणभंगपमाणं सुगमं । किमप्पिदगुर्णंडाणस्मादिए मज्झे अंते वंधो वोच्छिज्जदि ति एक्केककिंद गुणडाण तिष्णि तिष्णि भंगा उप्पाएयच्वा । सञ्चवंधवोच्छेदपण्डसमासो बाएताठीस । किंसादिओ वंधो किमणादिओ किंधुवा किमद्धवो ति एत्थ पण्णारस पण्डभंगा उप्पाएयच्या ।

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु उवसमा स्ववा बंधा । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतृण बंधो वोच्छिज्जिद । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १०४ ॥

एडस्स अत्थो उच्चदे-- पंचणाणावरणीय-चउदंमणावरणीय-पंचतराइयाणं पुत्र्वं वंधी

नोकपाय और एन्द्रह योग, इन प्रस्ययोंको स्थापित कर चीदह सी इकतालीस कोझकोई। एन्द्रह लाख, अठारह हजार, अठ सी सात करीड़ अठ्ठावन लाख, पचवन हजार, आठ सी इकत्तर उत्तर प्रत्यय निमित्तक प्रस्तर्भग उत्पन्न कराना चाहिये। १४४११४१८८०७५८५५२८६।

ये क्या नरकमितिसे संयुक्त बंधते हैं, क्या निर्यम्मतिसे संयुक्त बंधते हैं, क्या मयुष्यमितिसे संयुक्त बंधते हैं, या क्या देवगिनसे संयुक्त बंधते हैं, इस प्रकार यहां एन्द्रह प्रक्तमंग उत्पन्न कराना चाहिये। वन्धाध्वानका भेगश्रमाण सुगम है। क्या विवक्षित गुण्यस्थानके आदिमें, मध्यमें या अन्नमें वन्ध व्युष्टिष्ठस होता है, इस प्रकार एक एक गुण्यस्थानमें तीन तीन मंग उत्पन्न कराना चाहिये। वन्ध्यपुष्टक प्रकारिययक सर्व भेगोंका योग व्याक्षसे होता है। क्या समुद्र क्या अनादि, क्या भुव श्रीर क्या अध्रुव बन्ध होता है, इस प्रकार यहां एन्द्रह प्रकारंग उत्पन्न कराना चाहिये।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंपतोंमं उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं। सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, श्रेष अबन्धक हैं॥ १०४॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं -- पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच

१ प्रतिषु 'सत्त-सत्तकोडी ' इति पाठ.।

२ प्रतिषु 'पष्चया पण्णभगा 'इति पाटः।

र अ-आप्रत्योः ' किमपिदुगृण-', काप्रतो ' किमपिदुगृण- ' इति पाटः ।

पच्छा उदञ्जो बोन्छिज्जिद, सुद्दुमसांपराइयचरिमसमयिन्द णद्दवंधाणमेदासि खीणकसायचरिम-समयिम्म उदयवोच्छेदुवरुंभादो । जसिकतीए उचागोदस्स य पुत्रं वंधा पच्छा उदज्ञो बोन्छिज्जिदि, सुद्दुमसांपराइयचरिमसमयिम्म णद्दवंधाण अजोगिचरिमसमयिम्म उदर्य-बोच्छेदवरुंमादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावर्णीय-पंचंतराइयाणं सोदओ बंबो । जसिकतीए मिच्छाइडिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइडि ति सोदय-परोदएण बंधो, एदेसु अजसिकतीए वि उदयदंसणादो । उविर सोदएणेव, पडिवक्खुरयाभावादो । मिच्छाइडिप्पहुडि जाव संजदा-संजदो [ति] उच्चागोदस्स सोदय परोदएण बंधो, एदेसु णीचागोदस्म वि उदयदंसणादो । उविर मोदओ, पडिवक्खुरयाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं णिरंतरो वंघो, सव्वगुणहाणेसु वि एगमम०ण वंधवोच्छेदाभावादो । जसिकत्तीए सांतर-णिरंतरो वंघो, मिच्छाइहिप्पहुडि जाव पमत्तमंजदो ति सांतरो वंघो, णृदेसु पविक्खपयडिवंधदंसणादो; उत्ररि णिरंतरो, पडिवक्ख-

अन्तरायका पूर्वमें बन्धे और पश्चान् उदय स्त्रुच्छित्र होता है, क्योंकि. स्क्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें बन्धेक नष्ट हो जानेपर श्रीणकपाय गुणस्थानके अन्तिम नमयमें उनका उदयस्युच्छेद पाया जाना है। यशकीर्ति और उच्चगोत्रका पूर्वेस बच्धे और पश्चान् उदय व्युच्छित्र होता है, क्योंकि, स्क्ष्मनाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें बन्धके नष्ट हो जानेपर अयोगिकेवर्छीके अन्तिम समयमें इनका उदयब्युच्छेद्र पामा जाता है।

पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है। यद्याकीर्तिका मिथ्यादिष्टसे लेकर असंयतसम्यग्दिष्ट तक स्वोदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानांमें अयदाकीर्तिका भी उदय देखा जाता है। कपर इसका स्वोदयकी ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अयदाकीर्तिके उदयका अभाव है। मिथ्यादिष्टिसे लेकर संयतासंयत तक उच्चगोत्रका स्वोदय-परोदयसे स्वच्छ होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें नीचगोत्रका भी उदय देखा जाता है। उपरिम गुणस्थानोंमें उसका स्वोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, बहां नीचगोत्रके उदयका अभाव है।

पांच झानावरणीय, जार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सब गुणस्थानोंमें ही एक समयसे इनके बन्धव्युच्छेदका अभाव है। यशकीर्तिका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक इनमें प्रतिपक्ष प्रकृतिका बन्ध देखे जानेसे सान्तर बन्ध होता है और इससे ऊपर

[·] ६ अपती ' -समयम्मि गद्वबंधाणं उदय- ' इति पाठः ।

प्रसमिप वेभागावादो । उन्चासोदस्य मिन्छाहहि-सामणेसु सांतर-णिरंतरो । असंखेज्जैवासाउअ-तिरिक्क ग्रकुरतेसु, संखेज्जवासाउअसुहतिलिस्सएसु णिरंतरवंपदंसणादो । उत्तरिमगुणेसु विसंवरो, पिडवन्खस्यडीए वंधामावादो । पञ्चयाणं मृत्लेघभंगो । गृहसंजुतादि उत्तरि जाणिय वत्तस्त्रं ।

णिहाणिहा-पयलापयला-थीणागिद्धि-अणंताणुनंभिकोध-माण-माया-लोभ-इस्थिवेद-तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ- चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइराओग्गाणुपुन्वी-उज्जोव-अपमस्थिविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेञ्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १०५ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइड्डी सासणसम्माइड्डी वंधा । एदे वंधा. अवसेमा अवंधा ॥ १०६ ॥

प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव होनसे उसका निरम्तर वन्ध होता है। उक्त्यांत्रका सिष्याहिष्ट भीर सामादनसम्बर्ग्य हि गुणन्थानों मान्तर निरम्तर वन्ध होता है, क्योंकि, वहां असंन्यातवर्णायुष्क निर्मत व मुज्योंसे, तथा संन्यातवर्णायुष्क तीन शुभ लेक्या सालोंसे उत्तक निरस्तर बन्ध देखा जाता है। उपित्म गुणस्थानोंसे निरम्तर बन्ध होता है, स्यांकि, वहां प्रतिपक्ष महतिक वन्धका अनाव है। स्यांकि प्रहण्या मृलोधके समान है। गतिसयुक्ताहि उपरिम एच्छाओंके विषयमं जातकर कहना चाहिये।

निहानिहा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तातुवन्धी क्रोध, मान, माया, लोम, श्लीवेद, विर्यगासु, विर्यग्गति, चार संस्थान, चार सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अन्नक्सत्तविद्यायेगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादय और नीचगोत्र, इनका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ १०५॥

यह सूत्र सुगम है।

सिम्यादृष्टि और सासादनसम्यक्तिष्ट बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, श्रेष अबन्धक हैं ॥ १०६॥

र प्रतिषु 'ग सस्तेज्ज ' इति पाठ ।

एदस्स अत्यो दुच्चदे — यीणागिद्धितयस्स पुच्चं वंघो पच्छा उदक्षे वेषिच्छज्जिद, सासणसम्माइडि-पमतसंजदेसु जहासंखाए वंघोदयवीच्छेददंसणादो । अर्णताणुवंधिच उक्करूस दो वि समं वेच्छिज्जेति, सासणे तदुभयाभावदंसणादो । इस्थिवेदस्स पुच्चं वंघो पच्छा उदक्षे वेणि उच्छा उदक्षे वेण्टिङ्जिद, सासणाणियद्वीसु जहासंखाए वंघोदयवीच्छिद्वतंसाहे । विस्वन्धाउ-तिरिक्खाइ-उज्जीव-णीचागोदाणं पुच्चं वंघो पच्छा उदक्षे वोच्छिज्जिद, सासणसम्माविद्वि-सजदासंजदेसु तेसि दोण्णं वोच्छेदुवतंसादो । एवं चदुसंघडणाणं प वक्त्वं, सासण पिइचंघाणमप्यमन्तुवतंत्तस्तात्म एवं प्रवृद्धं विद्यसंघडणहुगोद्द्यवोच्छेद्दंसणादो । एवं विद्यंचाणाण्याप्यमन्तुवतंत्तस्तात्म एवं प्रवृद्धं विद्यसंघडणहुगोद्द्यवोच्छेद्दंसणादो । एवं विद्यंचाणाणुप्याचेन्छ्यन्दंसणादो । एवं विद्यंचाणाणुप्याचेन्छित्वं वेण्डेद्दंसणादो । एवं विद्यसंघडणाणुप्याचेन्छित्वं वेण्डेद्दंसणादो । एवं विद्यंचाण्यादा । एवं विद्यंचाणाच्यंचाण्यादा । एवं विद्यंचाण्यादा । एवं विद्यंचाण्यादा । एवं विद्यंचाण्यादा । एवं विद्यंचाण्यादा । विद्यंचाण्याद्यंचाण्यापाण्यापाण्याचाण्याचाण्याच्यंचाण्याच

इस स्वनका अर्थ कहते हैं — स्त्यानगृष्टिजयका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उद्य व्युव्छिक होता है, क्योंकि, सासादनसम्बद्ध मौर प्रमत्तस्यत गुणस्थानमें यूपाकसले इसके बन्ध व उदयका व्युव्छिद देखा जाता है। अनन्तानुबन्धिवतृष्कका बन्ध और उदय दोलों कर साथ उप्रकेष होते हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उत्त होतोंका अभाव देखा जाता है। स्रोवेदका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिक होता है, क्योंकि, सासादन और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानोंमें यथाकमसं उसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। विर्येगायु, तिर्येगाति, उद्योग और नीवगोंक, हनका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिक होता है, क्योंकि, सासादनसम्बन्धाद और संयतासंवत गुणस्थानोंमें कमशः को दोनोंका उच्च छह होता है, क्योंकि, सासादनसम्बन्ध हो और प्रवात् उदय व्युच्छिक होता है, क्योंकि, सासादन और स्थानका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिक होता है, क्योंकि, सासादन और स्थानके प्रविच्च का कि प्रवाद क्योंकि उपयात्त व हो नोकि उच्च व्युच्छिक होता है। इसी प्रकार चार संहननोंके भी पूर्व पक्षात् व क्योंकि अपसाद व प्रयात्तकत्वाय गुणस्थानोंमें कमसं उक्च वार संहननोंके मध्य व हितीय धुगलके उदयका स्वुच्छेद देखा जाता है। इसी प्रकार अपसादस्य प्रात्त व व व्यवक साता है। इसी प्रकार तिर्यमातिमायोग्यासुर्यी, दुर्वग और अनावेयके भी कहना चाहिये, क्योंकि, सासादन व असंयतसम्बन्ध प्रयादस्य स्वावेत क्यांक क्यांक व उदयका स्वुच्छेद देखा जाता है। इसी प्रकार अपसादस्य विद्यास्थानींमें कमसः सन्वेद क्या व व्यवक सम्बच्छेद देखा जाता है। इसी प्रकार अपसादस्य और दस्योक सम्बच्छेद देखा जाता है। इसी प्रकार अपसादस्य व व्यवका सम्बच्छेद देखा जाता है।

. श्रीणगिद्धितियादीणं सच्यासि पयडीणं वंघो सादय-परोदओ, उमयथा वि विरोहा-भावादो । श्रीणगिद्धितिय-अर्णताणुवंधिचउनक-तिरिक्खाउआणं णिरंतरो वंघो, एगसमएण वंधुवरमाभावादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाआंग्गाणुड्यी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो वंघो । कघं णिरंतरो ? ण, तेउ-वाउककाइयचरपंचिंदियमिच्छाइडीसु सत्तमपुढवीमिच्छाइडि-सासण-सम्माइडिणेरइणसु णिरंतरबंधुवरुंभादों । सेसाणं सांतरो वंधो, एगममएण बंधुवरमदंसणादो । पच्चया ओपपच्चयतुर्द्धा । तिरिक्खाउ तिरिक्खगदाओगगाणुद्ध्यी-उच्जोबाणं दो वि तिरिक्खगद्दसंजुनं, इरिथेवंदं णिरवगईण विणा तिगइसंजुनं, चउसंग्रण चउसंघडणाणि दो वि तिरिक्ख-णुसमइसंजुनं, अप्पारविद्यावाद्वाय-इन्ध्रग-तुस्सर-अणांदज्ज-णीचागोदाणि मिच्छाइडी निगहसंजुनं वंधद देवगईण् विणा, सासणां तिरिक्ख-मणुमगद्दसंजुनं । सेसाओ पयडीओ मिच्छाइडी चउगद्संजुनं मामणां निगइसंजुनं । सेसं चितिय वनस्वं ।

स्यानगृद्धित्रय आदिक सब प्रकृतियांका बन्ध स्वादय परोदय होना है. क्योंकि. दोनों प्रकारक भी उनके बन्धका विरोध नहीं है। स्यानगृद्धित्रयः अनन्तात्रविध्यतुष्क और तिर्पायका निरस्तर बन्ध होना है, क्योंकि. एक समयस इनके बन्धविश्रामका आमाव है। निर्यमाति, निर्यमातिग्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका - निरन्तर बन्ध कसे होता है ?

समाधान—यह रांका टीक नहीं, क्योंकि, तेजकायिक व वायुकायिक जीवोंमेंसे आकर पंचेट्टिय मिथ्यार्डाष्ट्योंमें उत्पन्न हुए जीवो तथा सप्तम पृथिवीके मिथ्यार्डाष्ट्र व सासादनसम्बग्दाष्टि नारकियोंमें उक्त प्रकृतियोंको निरम्तर बन्ध पाया जाता है।

रोप प्रकृतियोंका साम्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयस उनके बन्धका विश्वम देखा जाता है। प्रत्योंकी प्रकृषणा आध्यप्रवयोंके समान है। तिर्युगायु, तिर्युगाति संयुक्त स्थानात्र की प्रत्योंका प्रदेशातिक संयुक्त वांचित है। स्थावदकों नरकातिक विश्वम तिर्युगातिक संयुक्त वांचित है। स्थावदकों नरकातिक विश्वम तिर्युगाति संयुक्त वांचित हैं। सार संहत्वकों होनों हैं। तिर्युगाति व मनुष्यगतिक संयुक्त वांचित हैं। अध्यस्तविद्योगाति, दुर्पेग, दुस्वर, अत्रादेय और तींचगोत्रकों मिथ्याहि देवगतिक विश्वा तीन गतियोंस संयुक्त वांचित हैं, तथा साक्षावनसम्याक्ष्य तिर्युगाति संयुक्त वांचित हैं। तथा साक्षावनसम्याक्ष्य तिर्युगाति संयुक्त माच्या साक्षावनसम्याक्ष्य त्रियुगाति संयुक्त नेपित्र हैं। तथा प्रहित्योंकों मिथ्याहिष्ट चार्गा गतियोंसे संयुक्त वांचित हैं। तथा प्रहित्योंकों सिथ्याहिष्ट चार्गा गतियोंसे संयुक्त वांचित हैं। तथा साक्षावनसम्याक्ष्य वांचित हैं। तथा प्रहित्योंकों स्थावति संयुक्त वांचित हैं। तथा स्थावति हैं। तथा स्थावति संयुक्त वांचित हैं। तथा स्थावति संयुक्त वांचित हैं। तथा स्थावति हैं। तथा स्थावति संयुक्त वांचित हैं। तथा स्थावति स्थावति संयुक्त वांचित्र हैं। तथा स्थावति संयुक्त वांचित्र हैं। तथा स्थावति स्थावति स्थावति स्थावति स्थावति संयुक्त वांचित्र हैं। तथा स्थावति स्थावति

१ प्रतिषु ' णिरतरो बंधुबलभादो ' इति पाठः ।

णिहा-पयलाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १०७ ॥ सम्मं।

मिन्छाइट्टिप्पहुडि जाव अपुज्वकरणपविद्वयुद्धिसंजदेषु उव-समा ख्वा वंधा । अपुज्वकरणसंजदद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण वंधो वोन्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १०८ ॥

षदस्स अत्थे उच्चरे—चंधे एदासि पुट्यं वेन्छिज्जदि पन्छा उदझे, अपुट्य-खीणकसाएसु कमेण बंधोदयवोन्छेददंसणादो । सोदय-परोदएण सच्चगुणदाणेसु बंघो, अद्धुवोदयत्तादो । णिरंतरो, भुवबंधितादो । पन्चया सच्चगुणदाणेसु ओघपन्चयतुस्ला । मिन्छाइही चउगइसंजुत्तं, सासणे तिगइसंजुत्तं, सम्मामिन्छाइही असंजदसम्माइही दुगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं । गइसामित्तद्धाण-बंधवोन्छेदद्वाणाणि सुगमाणि। मिन्छाइद्विस्स चउन्विद्धो बंधो । सेसेसु तिविद्दो, थुवत्ताभावादो ।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १०९ ॥

निद्रा और प्रचलाका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ?॥ १०७॥ यह सुत्र सुगम है।

मिध्यादृष्टिसे ठेकर अपूर्वकरणप्रविष्टशुद्धिसंयरोमें उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं। अपूर्वकरणसंयतकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्धच्युच्छेद होता है। ये बन्धक हैं, श्रेष अबन्धक हैं।। १०८॥

इस सुत्रका अर्थ कहते हैं— इनका बन्ध पूर्वमें न्युन्छिन्न होता है और उदय प्रधात, क्योंकि, अपूर्वकरण व क्षीणकवाय गुणस्थानोंमें कमसे दनके बन्ध और उदयका च्युन्छेद देखा जाता है। सब गुणस्थानोंमें इनका बन्ध सोत प्रपोदयसे होता है, क्योंकि, व्यवका के अक्षेत्रवेदी हैं। निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, व्यवका हैं। प्रशास सब गुणस्थानोंमें ओधमन्यपांकि समान हैं। मिथ्याहिट वारों गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्बन्धिट तीन गितियोंसे संयुक्त, सम्यिगम्याहिट और असंयतसम्बन्धिट हो गतियोंसे संयुक्त, तथा होष गुणस्थानमंत्री देवागिस्त संयुक्त वार्थ होता है। गतिस्थान अभ्वान और बन्धन्यकुक्त्यान गुणस्थानमंत्री हे । मिथ्याहिट वारों प्रकारका बन्ध होता है। होष गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका

सातावेदनीयका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ १०९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली वंधां । सजोगिकेवलि-अद्धाए चरिमसमयं गंत्ण वंधों वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ११०॥

एदस्स अत्था उज्बंदे — बंधो पुन्नं पच्छा उदओ वोच्छिणो, सजागिकेवित-अजोगिकेवित्रा जहाक्रमेण बंधोदयबोच्छेददंसणादो । सोदय-परोदएण वंधो, सम्बगुणहाणेसु अद्भुबोदयत्तादो । मिन्छाइडिप्पहुडि जान पमत्तसंजदो ति सांतरे। वंधो, एगसमएण बंधुनरम-दंसणादो । उचीर णिनंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । पच्चया सम्बगुणहाणेसु ओघपश्चय-तुल्छा । मिन्छाइडि-सासणसम्मादिडिणो तिगइसंजुत्तं, णिरयर्गइए सह सादवंधाभावादो । सेमं सम्बमीषतुल्छं ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसिकतिणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १११ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिष्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं। सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्धव्युच्छेद होता है। ये बन्धक हैं, शेप अवन्धक हैं।। ११०॥

इस सुक्का अर्थ कहते हैं— साताबेदनीयका वन्ध पूर्वेमें और उदय पक्षात् खुच्छिक होता है, क्योंकि, स्योगकवाटी और अयंगाकेवाटी गुणस्थानोंमें कमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देवा जाता है। खोदय पराद्यसं बन्ध हाता है, क्योंकि, बह सब गुणस्थानोंमें अधुवादयी है। सिष्यादिसे लेकर प्रमत्तसंयन तक सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां एक समयसं उसका वन्धविद्याम देखा जाता है। प्रमत्तसंयतसे उपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिक वन्धका अभाव है। प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें ओपप्रत्ययोंके समान है। प्रिध्यादिष्ट और सासादत-सम्पन्तिष्ट तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, नरकगतिके साथ साताबेदनीयका बन्ध नहीं होता। शेष सब प्रकृपण ओपके समान है।

असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १११ ॥

र प्रतिपु' वंथों ' इति पाठः ।

२ अप-काप्रत्योः 'बंधा ' इति पाठः ।

[सुगमं ।]

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो ति वंधा। एदे वंधा, अवसेसा अवंधा॥ ११२॥

असादावेदणीयस्स पुत्रं बंधो पच्छा उद्भो बोच्छिण्णो, पमत्त-अजोगिकेवठीसु जहा-कमेण बंधोदयवोच्छेदुवरुंमादो । एवमरिद-सोगाणं वत्तन्त्रं, पमतापुत्त्वकरणेसु बंधोदयवोच्छेद-दंसणादो । एवं चेव अधिर-असुद्दाणं वत्तन्त्रं, पमत्त-सजोगिकेवठीसु बंधोदयवोच्छेदुवरुंमादो । अजसिकतीण पुत्त्वसुदओ पच्छा वंधो बोच्छिण्णो, पमत्तसंजद-असंजदसम्मादिद्वीसु बंधोदय-बोच्छेदुवरुंभाटो ।

अमारावेदणीय-अरिट्-सोगाणं मोदय-परोदएण सन्वगुणहाणेसु वंधो, परावत्तणीदय-तादो । अधिरासुभाणं सन्वरथं सोदएणं वंधो, धुवोदयत्तादो । अजसिकत्तीए मिच्छाइहिप्पहुडि जाव अमंजदमम्मादिहि ति मोदय परोदएणं वंधो, एदेसु पडिवक्खोदएणं वि बंधुवलंभादो ।

[यह सूत्र सुगम है।]

मिध्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तस्यत तक वन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष जीव अवन्धक हैं॥ ११२॥

असातावदनीयका पूर्वमें वन्ध और प्रधान उदय ज्युव्छित्र होता है, क्योंकि, प्रमत्तवयन और अयोगकेवली गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाना है। इसी प्रकार अराने और रोकके कहना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्त और अपूर्वकरण गुणस्थानोंमें क्रमराः इनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है। इसी प्रकार ही अस्थिर और अगुभके भी कहना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्त और सयोगकेवली गुणस्थानोंमें उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। अयशकीर्तका पूर्वमें उदय और एक्यान् वन्ध व्युच्छित्र होना है, क्योंकि, प्रमत्तवंचन और असंयतसम्यग्रहि गुणस्थानोंमें क्रमसे बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है।

असाताबेदनीय, अरित और शोकका सब गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, इनका उदय परिवर्तनशील है। अस्थिर और अग्रुभका सर्वेत्र स्वोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ये क्वोदयी हैं। अयशक्तिका मिथ्यादिसे लेकर असंयतसम्प्रदृष्टि तक स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयके साथ भी उसका बन्ध पाया जाता है। इसके ऊपर परोदयसे उतिर परोदएण, जसिनतीए चेव तत्थोदयंदंसणादे। । एदासि छण्टं पयडीणं सतिरी बंधो, दो-तिण्जिसमयादिकाटपटिबद्धवंधणियमाभावादो । पच्चया सुगमा । एदाओ छप्पबडीओ मिन्छाइडी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, सम्मामिन्छाइडी अमंजदसम्माइडी हुगइसंजुत्तं, उविरिमा देवगइसंजुत्तं वंधित । उविरि ओषभंगो ।

मिच्छत्त-णदुंसयवेदः-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीई-दिय-चर्जिदियजादिः हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-णिरयाणुपुब्बी -आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत-साहारणसरीरणामाणं को वंधो को अबंधो ? ॥ ११३ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ११४॥

' एदे बंघा 'ति णिहेसी अणस्थओ, अवगदइपरूवणादो । ण एस दोसी,

बन्ध होता है, क्योंकि, वहां यशकीर्तिका ही उदय देखा जाता है। इन छह प्रकृतियोका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, दोनीन समयादि रूप काल्यंस सम्बद्ध इतके बन्धंक नियमका अभाव है। प्रवय सुगम है। इन छह प्रकृतियोक्त मिश्यादिष्ट चार गतियोंस संयुक्त, सानादनसम्यादिष्ट तीन गतियोंस संयुक्त, सम्याग्मध्यादिष्ट व असंयतसम्यन्दिष्ट दो गतियोंसे संयुक्त, तथा उपरिम्म जीव द्वगतिसं संयुक्त बांधंत है। उपरिम्म अरुपणा जोक्ते समान है।

मिध्यात्व, नपुंसक्तेवर, नास्कायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, व्रीन्द्रिय, व्यतिन्द्रिय, व्यतिन्द्रिय, व्यतिनिद्रय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तस्यपिटकासंहरन, नरकानुपुर्वी, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपयीप्त और साधारणशरीर नामकर्मका कीन चन्धक और कीन अवस्थक है ? ॥ ११२॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं॥ ११४॥

शुंका—'ये बन्धक है' यह निर्देश अनर्थक है, क्योंकि, वह झात अर्थका प्रकरण करता है।

समाधान-यह कोई दीप नहीं है, क्योंकि, मेधावर्जित अर्थात् मुर्ख जनींके

१ प्रतिपु 'तत्तोदय ' इति पाठ ।

महाइजियमजणाणुग्महर्इ तिण्णेदसादो । मिञ्कत सपञ्चताणं यंयोदया समं वोच्छिज्यंति, मिञ्काद्रक्षित्वः वेव तदुअयवोच्छेददंसणादो । एदंदिय-पीइंदिय-वीदंदिय-चउतिर्दयजादि-आदाम-आवर-सुहुम-साहारणाणमेस विचारो णात्थ, पंचिंदियस तेसिसुदयामावादो । णविर पंचिंदियपज्जनएस अपज्जतस्स वि एसो विचारो णात्थि ति वत्तस्य । णवुंसयवेदस्स पुञ्चं वंयो पच्छा उद्यो वोच्छिज्जदि, मिञ्काद्दि-अणियिह्युणेसुं यंयोदयवोच्छेद्दंसणादो । एवं णिरयाउ-णिरयमङ्गित्वः प्वाच्याज्युज्वाणं वत्तन्यं, मिञ्काद्दि-असंगदसमादिद्दीसु वंयोदयवोच्छेद्दंसणादो । एवं सुंहसंद्राणसस वत्तव्यं, मिञ्काद्दि-संगोगिक्वरुससु वंयोदयवोच्छेद्दंसणादो । एवं सुंहसंद्राणस्स व वत्तव्यं, मिञ्काद्दि-अपमत्तेसु वंयोदयवोच्छेद्दंसणादो । एवससंपत्तसेबहृसंपहणस्स व वत्तव्यं, मिञ्काद्दि-अपमत्तेसु वंयोदयवोच्छेद्दंसणादो ।

मिन्छत्तस्स संदिएण वंधो, धुवोदयत्तादो' । णवुंसयवेद-अपञ्जताणं सोदय-परोक्ष्वो, अद्धवोदयत्तादो । णवीर पंचिंदियपञ्जत्तरसु अपञ्जतस्स परोदओ वंधो, तत्थ तदुदयाभावादो ।

भनुग्रहके लिये वह निर्देश किया गया है।

मिध्यात्व और अपर्यान्तका बन्ध च उदय दोनों एक साथ व्युन्छिक होते हैं, क्योंकि, मिध्यादिए गुणस्थाममें ही उन दोनोंका व्युन्छेद देखा जाता है। एकेन्द्रिय, इतिन्द्रिय, चतुरिन्द्रय जाति, आताप, स्थायर, सुक्त और साधारण, इन प्रकृतियंके यह विचार नहीं है, क्योंकि, पंचेनिंद्रय जीवेंग्रें उनके उदयका अभाव है। विदेश इतना है कि पंचेनिंद्रय पर्यान्त प्रकृतिक भी यह विचार नहीं हैं, ऐसा कहना चाहिये। मुद्धकंदका पूर्वमें बन्ध और प्रकृतिक भी यह विचार नहीं हैं, ऐसा कहना चाहिये। मुद्धकंदका पूर्वमें बन्ध और प्रकृतिक भी यह विचार नहीं हैं, ऐसा कहना चाहिये। मुद्धकंदका पूर्वमें बन्ध और क्रांत उदयका उपुन्छेद होता है, क्योंकि, मिध्यादि और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानोंमें क्रमका उप्तक्ष काथ और उदयका चुड्छेद देखा जाता है। इसी प्रकार नास्कार हुण्डसंस्थानक भी कहना चाहिये, क्योंकि, मिध्यादि और स्वयोगकेवळी गुणस्थानोंमें इसके बन्ध व उदयका उपुन्छेद देखा जाता है। इसी प्रकार लेखेशप्तस्थानोंमें इसके बन्ध व उदयका उपुन्छेद देखा जाता है। इसी प्रकार असंप्राप्तस्थानोंमें इसके बन्ध व उदयका उपुन्छेद देखा जाता है। इसी प्रकार असंप्राप्तस्थानोंमें इसके बन्ध व उदयका उपुन्छेद देखा जाता है। इसी प्रकार असंप्राप्तस्थानों स्वयं क व्ययका व्युन्छेद देखा जाता है। इसी प्रकार असंप्राप्तस्थानोंमें इसके वन्ध व उदयका उप्योक्त स्वयानोंमें इसके वन्ध व उदयका व्युन्छेद वाया जाता है।

सिध्यात्वका स्वोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि वह छुवोत्रयी है। नपुंसकवेद और अपर्याप्तका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, व अछुवोदयी हैं। विरोप इतना है कि पंकोक्टय पर्याप्तकोंमें अपर्याप्तका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें अपर्याप्तके

१ आप्रती '-अणियहिगुणहाणेसु ' इति पाठः।

२ अ आप्रक्षो. 'धुकोदयादो ' इति पाठः।

1 4. 284.

हुंडसंठण-असंपत्तसेवहसंघडणाणं सोदय-परादओ वंघो, विग्गहगदीए उदयाभावे वि वंधदसंणादो सन्वेसिं तदुदर्यणियमाभावादो वा । णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-चीइंदिय-तीइंदिय-चर्डारिदयजादि-णिरयाणुपुत्र्वी-आदाव-भावर-सुहुम-साहारणाणं परोदओ वंघो, पंचिदिएसु एदासिसुद्यविरोहादो उदएण सह वंधस्स उत्तिविरोहादो ।

मिन्छत्त-णिरयाउआणं णिरंतरा वंधो, एगसमएण वंधुवरमाभावादो । सेवाणं पयडीणं सांतरो, णिरंतरवंधे णियमाभावादो । पच्चया सुगमा । मिन्छतं चउगइसंजुतं, जउंसयेवद्-हुंडसंद्राणाणि तिगृहसंजुतं, अपञ्जनासंपत्तसेवृहसंघडणाणि तिरिक्त-मणुसगइसंजुतं चञ्चति । णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयाणुपुत्र्वीओ णिरयगइसंजुतं, सेसाओ मन्त्रपयडीओ तिरिक्त्वगइसंजुत्तं । सेसमोषं ।

अपच्चरसाणावरणीयकोध-माण-माया-छोभ-मणुसगइ-ओरा-लियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणमरीरमंघ-डण-मणुसगइपाओग्गाणुपुज्वीणामाणं की बंधो को अवंधो?॥११५॥ सर्गा।

मिध्यात्व और नारकायुका निरस्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे हनके बन्धिश्रामका अभाव है। रोष प्रकृतियाँका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, निरस्तर बन्ध होता है, क्योंकि, निरस्तर बन्ध में तियमका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं। मिध्यात्वका चारों गानियोंस संयुक्त, नपुंसक- बंद में तियमका अभाव है। प्रत्या तिवा तील गतियोंस संयुक्त. तथा अपर्याप्त और असीमाप्तस्वादिक संस्थानको देवाति व मनुष्यतिसे संयुक्त बांधते हैं। नामकायु, नरकागित और नरकानुपूर्वीको नरकागित से संयुक्त तथा रोष मब प्रकृतियाँको तिर्यग्गतिस संयुक्त वाधते हैं। रोष प्रकृतियाँको तिर्यग्गतिस संयुक्त वाधते हैं। रोष प्रकृतियाँको तिर्यग्गतिस संयुक्त बांधते हैं। रोष प्रकृतियाँको तिर्यग्गतिस संयुक्त बांधते हैं। रोष प्रकृतियाँको तिर्यग्गतिस

अप्रत्याख्यानावरणीय कोश, मान, माया, लोभ, मनुष्यगति, औदारिकश्चरीर, औदारिकश्चरीरांगोपांग, वत्रवेभवत्रनाराचश्चरीरसंहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्म, इनका कीन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ११५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

१ जा-काप्रत्योः ' गिरतरवधो ' इति पाठ ।

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्टी बंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ११६ ॥

मणुस्साणुपुन्ती-अपन्चक्षाणचउक्काणं बंधोदया समं वेक्छिज्जंति, असंजदसम्मा-दिद्विन्दिं तदुभयाभावदंसणादा । मणुसगईए पुन्तं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, असंजद-सम्मादिडि-अजोगिकेवलीसु वंधोदयवोच्छेददंमणादो । ओसालियसरीर-ओसालियसरीरअंगोवंग-वज्जिरसहवइरणारायणसरीरसंघडणाणभेतं चेत्र वत्तन्तं, असंजदसम्मादिडि-सजोगीसु वंधोदय-वोच्छेदुवलंभादो । अपन्चक्खाणच उक्कादीणं सोदय-परादएण वंधो, अद्धवोदयत्तादो । अपन्च-क्खाणचउक्कस्स वंधो णिरंतरा, थुववधितादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओगगाणुपुन्ती-ओसालिय-सरीर-ओसालियसरीरअंगोवगाणं मिन्छादिडि सासणसम्मादिङ्कीसु वंधो सांतर-णिरंतरा, तिरिक्ख-मणुस्सेसु सांतरस्स आणदादिदेवेसु णिरंतरनुत्रलंभादो । सम्मामिन्छादिडि असंजदसम्मादिङ्कीसु णिरंतरो, एगसमएण तथ्य वंधुवरमाभावादो । वज्जिरसहवदरणारायणसरीरसंघडणस्स मिन्छाइडि-

मिथ्यादृष्टिसे रुक्तर असंयतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक हैं । ये बन्धक है, श्रेष अबन्धक हैं ॥ ११६ ॥

मनुष्यानुष्वी ओर अप्रत्याच्यानावरणचनुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिल होते हैं, क्योंकि, असंयतसम्यन्दिए गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है। मनुष्यानिक पूर्वेमें बन्ध और प्रधान, उदय व्युच्छिल होता है, क्योंकि, असंयत-सम्यन्दिए और अप्रेगकिवली गुणस्थानोंमें क्रमशः उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद हेखा जाता है। भैदारिकशरीर, औदारिकशरीरगोग्यांग और वज्रपंभवज्ञनाराचशरीरसंहत्वक भी हसी प्रकार है, कहना वाहिय, क्योंकि, असंयतसम्यन्दिए और स्योगकेवली गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद राया जाता है।

अप्रत्याख्यावरणचतुष्कादिकाँका स्वादय पराहयसं बन्ध होता है, क्याँकि, व अधुवोदयी प्रकृतियां है। अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, धृषवन्धी है। मतुष्यगित, मतुष्यगितमायायानुष्वां, औदारिकदारीर और औदारिक द्यारीरागिपांगका बन्ध मिथ्याहिए व सासादनसम्बय्हिए गुणस्थानोंमें सान्तर-निरम्बर होता है, क्योंकि, वह निर्यंच व मतुष्योंमें सान्तर होकर से आनताहि देवोंमें निरन्तर पाया जाता है। सम्यिमध्याहिए और असंयतसम्बयहिए गुणस्थानोंमें उनका निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें एक समयीक इनके बन्धविभामका अक्षाद है। वक्षयंनिकक्षमाया अक्षाद है। वक्षयंनिकक्षमायानोंमें सान्तर वन्ध

१ प्रतिषु '-सम्मादिद्वीहि ' इति पाठ । २ प्रतिषु ' बधोदयचादो ' इति पाठ । ३ प्रतिषु ' मिरतबक्जमादो ' इति पाठ । ४ प्रतिषु ' -सचक्पाण ' इति पाठ ।

सायणेषु सांतरा वंदो । उद्योर णिरंतरो, पश्चिक्त्वपयडीणं वंधाभावादो । पञ्चया सुगमा । उद्योर मुळोषभंगो ।

पञ्चक्साणावरणकोध-माण-माया-लोभाणं को वंधो की अवंधो ? ॥ ११७ ॥

सुगमं ।

मिच्छादिट्टिपहुडि जान संजदासंजदा बंधा। एदे बंधा, अनसेसा अबंधा॥ ११८॥

एदं पि सुगमं ।

पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ११९ ॥

मिच्छादिद्विष्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठउवसमा स्रवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए सेसे संस्रेज्जाभागे गंतृण बंधो बोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १२० ॥

होता है। ऊपर उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। प्रत्यय सुतम हैं। उपरिम प्ररूपणा मूलेश्वके समान है।

प्रत्याख्यानावरण कोष, मान, माया और छोभका कौन बन्धक व कौन अवन्धक है ?।। ११७ ।।

यह सूत्र सुगम है।

मिध्यादृष्टिसे लेकर संयतासयत तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, श्रेष अबन्धक हैं॥ ११८॥

यह सूत्र भी सुगम है।

पुरुषवेद और संज्वलनकोधका कीन बन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ ११९ ॥ यह सूत्र सुगम है ।

मिध्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरणवादरसाम्परायिकप्रविष्ट उपज्ञसक व क्ष्पक तक बन्धक हैं। अनिवृत्तिकरणवादरकालके शेवभें संख्यात बहुआगोंके वीत जानेपर बन्ध ल्युन्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं॥ १२०॥

१ प्रतिपु 'सम्बेज्जेसु भागे ' इति पाठ ।

एदं पि सुगमं ।

माण-माया-संजलणाणं को बंधी को अबंधो ? ॥ १२१ ॥ सुगम ।

मिच्छादिहिप्पहुडि जाव अणियट्टी उनसमा ख्वा बंधा। अणियट्टिबादरद्वाए सेसे सेसे संस्रेज्जे भागे गंतृण बंधो वोच्छिज्जिदि। एदे बंधा, अवसेमा अबंधा॥ १२२॥

सुगम ।

लोभसंजलणस्म को बंधो को अबंधो ? ॥ १२३ ॥ _{सुगम} ।

मिन्छादिट्टिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । अणियट्टिवादरद्धाए चरिमममयं गंतूण बंधो वोन्छिज्जदि । एदे बंधा, अवमेमा अवंधा ॥ १२४ ॥

यह सूत्र भी सुगम है।

मञ्चलन मान और मायाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १२१ ॥ यह सूत्र सुराम है ।

मिथ्यादृष्टिसं लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं। अनिवृत्ति-बादरकालके शेष शेषमें मंख्यान बहुमाग जाकर बन्ध ज्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं॥ १२२॥

यह सूत्र सुगम है।

संज्वलन लोभका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ?॥ १२३॥

यह सूत्र सुगम है।

मिध्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं। अनिवृत्ति-करणणाद्रकालके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, श्लेष अबन्धक हैं॥ १२४॥ सुगमं ।

हस्स-रिद-भय-दुर्गछाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १२५ ॥ सुगम ।

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अपुज्वकरणपविट्टउवसमा ख़वा बंधा । अपुज्वकरणद्धाए चरिमसमयं गंतृण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२६ ॥

एदं पि सुगम ।

मणुस्साउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १२७ ॥ सम्म ।

मिच्छाइद्वी सासणसम्माइद्वी असंजदसम्माइद्वी बंधा । एदे बंधा. अवसेसा अबंधा ॥ १२८ ॥

सुगमं ।

यह सूत्र सुगम है।

हास्य, रति, मय और जुगुप्साका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥१२५॥ यह सक सगम है।

मिध्यादृष्टिसे ठेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपग्रमक व क्षप्रक तक बन्धक हैं। अपूर्वकरण-काठके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, जेष अबन्धक हैं ॥ १२६॥

यह सूत्र भी सुगम है।

मनुष्यायुका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ १२७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वन्धक हैं। ये बन्धक हैं, श्रेष अवन्यक हैं॥ १२८॥

यह सत्र सगम है।

देवाउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १२९ ॥ _{सगरं।}

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी संजदासंजदा पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा वंधा । अप्पमत्तदाए संखेज्जदिमं भागं गंतृण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १३० ॥

सुगमं ।

देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्वियन्तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-संठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणु-पुर्व्वा-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविद्यायगइ-तस-बादर-पञ्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेञ्ज-णिमिण-णामाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ १३१ ॥

सुगमं ।

देवायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १२९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिच्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमससंयत और अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं। अप्रमत्तकालके संख्यातवें भाग जाकर बन्ध ब्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं॥ १२०॥

यह सुत्र सुगम है।

देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैकियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्वसंस्थान, वैकियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यातुपूर्वी, अगुरुठ्यु, उपचात, परघाद, उच्छ्वास, प्रशस्तविद्दायोगीत, त्रस, षादर, पर्योप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, श्रुम, सुम्मम, सुस्वर, आदेय और निर्माण नामकर्म, इनका कौन बन्धक और कौन अषम्यक है ? ॥ १३१ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइडअसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणद्वाए संखेज्जे भागे गंतृण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १३२ ॥

प्रस्तस्थो वुच्चंद — देवगइ नेउ वियमसीर अगोवंग देवगइ पाओग्गाणुपुर्व्वाणं पुष्व सुद्देशो पच्छा वेभो वीच्छण्णा, अपुज्वकरणासंजदमम्मादिहीसु वभादयवीच्छेदुबरुंभादी । पंचिदियजादिन्तस-बादर-पञ्जत सुभग-आदे जाणं पुत्र्वं वभी पच्छा उद्शा वीच्छिज्जिद, अपुज्वकरणाजीगीसु वेभोदयवीच्छेदुबरुंभादी । तेजा कम्मडय-ममचउरममंद्राण-वण्ण-गंभ-स-स्मास-अगुस्वरुंद्व-उंपाद-परचाद-उस्माम-पमस्थविहायगड-प्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुम्मर-णिमिणणामाणमेवं चेव वत्त्वं, अपुज्वकरण-मजागीसु वेभोदयवोच्छेदुबरुंभादी ।

देवगइ-वेउन्थियसरीर-वेउन्थियसरीरआगंत्रंग-देवगइराओगगाणुपुःत्रीण परे।देओ वंधो, उदए संते एदासि वंधविरोहांटा । पंचिदिय-तजा कम्मडयमरीर-वण्ण-गध-रम-फाम-अगुरुव-रुद्दव तस-बादर-पञ्जत्त-थिर-सुह-णिमिणाणं सोदण्णेव वंधो, धुनादयत्तादो । पग्यादुम्मास-

मिध्यादिष्टिमें लेकर अपर्यकरणप्रविष्ट उपरामक व क्षत्रक तक चन्त्रक हैं। अपूर्वकरणकालके मंख्यात बहुमाग जाकर चन्ध ब्युच्छिन्न होता है। य चन्यक हैं, शेष अबन्यक हैं॥ १३२॥

इस स्वका अर्थ कहते हे—देवगांत. विकायकारांत, वैकियिकारारांगोपांग और देवगांतिप्रायोग्यापुर्योका पूर्वमें उदय और प्रकान वन्ध व्युष्टिक होता है, क्याँकि, अपूर्वकरण और अस्वप्रस्थात, अस्त बादर प्रवाद कुट्टकेंद्र पाया जाता है। पंचीन्द्र यज्ञाति, अस, बादर, पर्यान, सुभग और आद्य, हनका पूर्वमें वन्ध और प्रकान उदय व्युष्टिक होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और अयंगाकवकी गुणस्थानोंमें अससे हनके वन्ध और उदयका व्युष्टिक पाया जाता है। तैजस च कार्मण शारा, समजुरस्त्रमस्थान, वर्ग, तम्प, सम, स्वा, अगुरुक्ष्य, उपघात, परधात, उर्द्यका व्युष्टक साथा जाता है। तैजस च कार्मण शरीर, समजुरस्त्रमस्थान, वर्ग, तम्प, सम, स्वस्त अग्रेर निर्माण नामकर्म, हनके भी वन्ध व उदयका व्युष्टक होता है। स्वा वाहिय, क्योंकि, अपूर्वकरण और सयोगकेवली गुणस्थानोंमें इनके बन्ध व उदयका व्युष्टक होता है।

देवगात, वैकिथिकरारीर, वैकिथिकरारीरांगांगांग और देवगतिप्रायोग्याजुपूर्वीका एरोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उदयके हानपर इनके बन्धका विरोध है। पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण दारीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुट्यु, क्स, बादर, पर्याप्त, स्थिर, द्युभ भौर निर्माण नामकर्मका स्वोदयसे ही बन्ध होता है.क्योंकि,वे श्वचोदयी हैं। परधात, पसत्थिबहायगइ-सुस्सर-आंदेञ्जाणं सोदय-परोदंशे बंधो, अपञ्जतकाले उदयाभांव पि बंधुवरुंभादो, पसत्थिबहायगई-सुस्सराणमञ्जुवादयन्तदंसणादो, आदेज्जस्स मिन्छाइहिपहृष्टिजाव असंजदमम्मादिष्टि ति उदयस्स भयणिञ्जनुवर्लमादो, उविर सव्वरथ धुवोदयन्तदंसणादो च । समचउरममंठाणुवचाद-पत्त्यसरीराणमेवं चेव वत्तवं, विग्गहगदीए उदयाभावे वि बंधुवरुंभादो, समचउरमसंठाणोदयस्स मयणिञ्जतदंसणादो च । एवं सुमग-पञ्जताणं पि वत्तव्यं, पिंचिदियसु पिंडवक्षवपद्यं ए उदयाभावादो । एवर्गदं मिल्छाइहीणं पञ्जतस्स मोरण्णेव बंधो, तत्थ पिंडवक्षवपद्यं ए उदयाभावादो । एवर्गदं मिल्छाइहीणं पञ्जतस्स मोरण्णेव बंधो, तत्थ पिंडवह्यामान्यवं च पत्रवेदव्यं । णवरि उज्जतस्स सोरणः णवं बंधो । एवं सम्मामित्छादिष्टः आर्थेजदोष्ममादिष्टीणमंत्रं चेव पत्रवेदव्यं । णवरि उज्यास्य सोरणः णवं बंधो । एवं सम्मामित्छादिष्टः आर्थेजदोष्ममुण्डाणाणं पि वत्तव्यं । णवरि उवधाद-पण्याद-उपसाम पञ्जत-पंत्रवयमरीगणं पि मोदण्णेव बंधो, तत्थ अपञ्जत्वकात्यभावादो ।

नेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फाम-अगुरुअलहुअ-उवचाद-णिमिणाणं सव्वगुणहाणेस्

उरुज्यास, प्रशस्तिविहायांगति, सुस्वर और आदेय, हनका स्वाद्य परेग्द्य वन्ध होता है, स्पॉकि, अपर्याप्तकालमे उद्यक्त न हांनपर भी हनका बन्ध पाया जाता है, प्रशस्ति विहायांगिति और सुस्वर महानियांका अधुवादय देखा जाता है, तथा मिथ्याहिष्टसे लेकर असंयत्तसम्यग्दिष्ट आदेयका उदय अजनीय अर्थान विकर्णय पाया जाता है, और इससे अपर सवंत्र धुवाद्य देखा जाता है। समजनुरस्त्रसंस्थान, उपपान और श्रयंकहारीरके भी इसी प्रकार कहना चाहिय. क्योंकि, विमहगतिमें उदयके न होनपर भी बन्ध पाया जाता है, तथा समजनुरस्त्रसंस्थानका उदय अजनीय देखा जाता है। हमी प्रकार सुभग और पर्याप्तके भी कहना चाहिये. क्योंकि, पंचित्रयों में प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय देखा जाता है। विशेष हतना है कि पंचित्रय पर्याप्तकोंसे पर्याप्त प्रकृतिका स्वोदयसे ही वन्ध होता है। क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतिका स्वोदयसे ही वन्ध होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतिक अस्व स्वस्थान ही। इसी प्रकार करना चाहिये। सिमाद्यनसम्बद्ध पर्योप्तकों स्वरच्या हों। इसी प्रकार करना चाहिये। विशेष इपरीम गुणस्थानोंक भी कहना चाहिये। विशेष इतना है कि उपचारत स्वरच्यास्थ्याहिष्ठ आदि उपरिम गुणस्थानोंक भी कहना चाहिये। विशेष इतना है कि उपचार, परचात, उरुज्वसा, पर्याप्त और प्रत्येकहारीरका भी स्वोदयसे ही बन्ध होता है। इसी प्रकार क्षा प्रदात उरुज्वस, पर्याप्त और प्रत्यकहारीरका भी स्वोद्यसे ही बन्ध होता है। इसम होता है, क्योंकि, उन गुणस्थानोंमें अपर्याप्तकालका अभाव है।

तैजस व कार्मण दारीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपचात, और

१ त्रतिष्ठ ' पञ्ज एस्सोदपुणेव ' इति पाठ. ।

भिरंतरो भेषो, धुवर्षभितादो । पंचिदियजादीए मिच्छाइहीसु सांतर-णिरंतरो । कर्ष णिरंतरो १ ण, सणबकुमारादिदेवेसु णेरइएसु असंखेजजवासाउअ-सुइतिरुक्तिस्यातिरिक्ख-मणुस्सेसु च भिरंतरं कृषेत्र , तरथ एइंदियजादिआदीणं वंपाभावादो । एवं परपादुस्सास-तस-भादर-पज्जत-भेष्यसरीरणं वि वत्तन्त्वं, भेदाभावादो । समच उरससंद्राण-पसत्त्वविद्यायार-सुमाग-सुस्सर-बोदेज्जणं मिच्छाइहि-सासणेसु सांतर-णिरंतरो वेषो । कथं भिरंतरो १ ण, असंखेज्जवासाउएसु एट्।सि णिरंतरं कृष्टेचेन्द्रायार-पोरंतरो वेषो । उर्वरि णिरंतरो, पिटक्क्वस्वयवर्धीणं वंपाभावादो । धिर-सुमाणं मिच्छाइहिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो ति सांतरो, पिटक्कवस्वयवर्धीणं वंपाभावादो । असि गुरंतरो । देवगइ-वेजव्यवर्धार-बेजविवसरीरअंगोवंग-देवगइराबोगाणुद्वीणं मिच्छाइहिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो ति सांतरो, पिटक्कवस्वयवर्धीणं वेपसंभावादो । उर्वरि णिरंतरो । देवगइ-वेजव्यवर्धीर-वेजविवसरीरअंगोवंग-देवगइराबोगाणुद्वीणं मिच्छाइहिप्सामणेसु सांतर-णिरंतरो, सुहतिरुक्तिस्यतिरिक्ख-मणुरन्येसु णिरंतरक्षेशुवरुमादो । उत्तरि णिरंतरो । पच्चया सुगमा । मेर्स आवर्धगो ।

निर्माण, इनका सब गुणस्थानोंमें निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, धुववन्धी है । पंचेत्रिट्य जातिका मिथ्यादिष्योंमें सान्तर-निरन्तर वन्ध होता है ।

श्रंका---निरन्तर बन्ध कसे होता है?

समाधान—यह ठीक नहीं. क्योंकि, मानन्कुमारादि देव. नारकी. असैज्यातवर्षा-क्रुक्क और छुम तीन लेक्यावाले निर्यंच व मनुष्योंमें निरन्तर वन्ध पाया जाता है।

सामायनसम्यन्दिष्ट आदि उपरिम्न गुणस्थानीम निरन्तर वश्य होता है, क्योंकि हम गुणस्थानोमें एकेन्द्रियज्ञाति आदिकोका यन्त्र नहीं होता। इसी प्रकार परम्बत, उच्छवास, वस, बादर, पर्यान और प्रत्येकरारीरके भी कहना चाहिय, क्योंकि, इनके कोई विशेषना नहीं है। समस्यादनसम्याद्यार गुणस्थानोमें सान्तर-विरन्तर वस्त्र होता है। आवेषका मिथ्यादिष्ट व सामायुतनसम्याद्यार गुणस्थानोमें सान्तर-विरन्तर वस्त्र होता है।

शंका -- निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान — यह डीक नहीं, क्योंकि. असंख्यातवर्षायुष्कोंमें इनका निरन्तर क्ष्य पाया जाता है।

उपरिम गुणस्थानोमें इनका निरम्तर बन्ध होता है, क्योंक, मितपक्ष मक्रतियोंके बन्धका वहां अभाव है। स्थिर और गुभका मिध्यादिक्ष्में लेकर प्रमक्तसंयन तक सानतर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां मितपक्ष महानिक्ष बन्ध होता है, व्योंकि, यहां मितपक्ष महानिक्ष बन्ध सामव है। इससे ऊपर निरम्तर बन्ध होता है। द्वाति वैक्षिपकदारीर, वैक्षिपिकदारीरांगोपांग और देवगित्रायानेयानु क्षीक्ष निक्सायहर्ष और सासास्त्रनम्प्यादि गुणस्थानोमें सान्तर-निरम्तर बन्ध होता है, क्योंकि, गुभ तीन लेदयावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें निरम्तर बन्ध पाता जाते है। इससे ऊपर निरम्तर बन्ध होता है। प्रम्या द्वापम हैं। होष प्रकर्णणा सोषके समान है।

आहारसरीर-आहारअंगोवंगणामाणं को बंधो को अबंधो ? 11 833 11

सगमं ।

अप्पमत्तसंजदा अपुञ्चकरणपइट्रउवसमा खवा बंधा । अपुञ्चः करणद्वाए संखेज्जे भागे गंतण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा. अवसेसा अबंधा ॥ १३४ ॥

सगमं ।

तित्थयरणामाए को बंधो को अबंधो ? ॥ १३५ ॥ सगमं ।

असंजदसम्मादिट्टिपहुडि जाव अपुव्वकरणपहृद्वउवसमा स्ववा बंधा । अपुञ्वकरणद्वाए संम्वेज्जे भागे गंत्रण बंधो वोन्छिज्जदि । एदे बंधा. अवसेमा अबंधा ॥ १३६ ॥

आहारकशरीर और आहारकश्रीरांगोपांग नामकर्मीका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ १३३ ॥

यह सुत्र सुगम है।

अप्रमत्तमंयत और अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक व क्षपक बन्धक हैं। अपूर्वकरण-कालके मंख्यात बहुभाग जाकर बन्ध न्युन्छिल होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं 11 838 11

यह सूत्र सुगम है।

तीर्थंकर नामकीमका कीन बन्धक और कौन अबन्धक हैं ? ॥ १३५ ॥ यह सत्र सगम है।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक और क्षपक तक बन्धक है। अपूर्वकरणकारुके संख्यात बहुमाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, श्रेष अवन्धक हैं ॥ १३६ ॥

एदं वि सुगर्म ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-वणप्पदिकाइय-णिगोद-जीव-बादर-सुहुम-एज्जत्तापज्जताणं वादरवणप्पदिकाइयपत्तेयसरीर-पज्जतापज्जताणं च पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तमंगो ॥ १३७ ॥

एदमप्पणासुत्तं देमामासियं, तेणदेण सद्ददत्थाणं परूत्वणा कीरदे — तत्थ ताब पुढिविकाइयाणं भण्णमाणं पंचणाणावरणीयः णवदंसणावरणीयः सादासादः मिच्छतः मोठसकसायः णवणाकसायः तिरिक्तवाः मणुस्माः तिरिक्तवाः मणुस्सगदः गर्हदियः वीईदियः तीईदियः चार्डिदियः चार्डिद्यः चार्णियः चार्डिद्यः चार्जिद्यः चार्डिद्यः चार्डिद्यः चार्डिद्यः चार्डिद्यः चार्डिद्यः चार्डिद्यः चार्डिद्यः चार्जिद्यः चार्डिद्यः चार्डिद्यः चार्डिद्यः चार्डिद्यः चार्जिदः चार्जिदः

यह सुत्र भी सुगम है।

कायमार्गणानुसार पृथिवीकायिक, अन्कायिक, वनस्पतिकायिक और निगोर जीव बादर सुक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त तथा बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक्कारीर पर्याप्त अपर्याप्त जीवोंकी परूपणा पंचेन्द्रिय निर्पय अपर्याप्तोंके ममान है ॥ १३७ ॥

यह अर्पणास्त्र देशामशंक है, अन एव इससे स्वित अर्थोंकी प्रक्षणा करते हैं — उनसे पहले पृथिवीकायिक जीवोंकी प्रक्षपणा करने समय पांच झालावरणीय, तो इर्दानावरणीय, साता व असाता वंदनीय मिरयात्व, सोलह कराय. तो नोक्काय, तिर्वेगायु, मुद्रुप्यायु, निर्वेगाति, मुदुप्यायु, स्वितं स्वत्वेद्वयु, क्वींट्वयू औद्दारिक जाति, आदारिक तजस व कार्मण शरीर, छह संस्थान, औदारिक शरीराति प्रत्यायु, प्रवित्त्वयु, स्वांट्वयु, प्रवांट्वयु, स्वांट्वयु, अस्वांट्वयु, स्वांट्वयु, स्वांच्यायु, स्वांच्यु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यायु, स्वांच्यु

पंचणाणावरणीय च अदंसणावरणीय- मिन्छत- ण उंसयवेद - तिर्दिक्खाउ - तिरिक्खाइ- एदंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर चण्ण-गंभ-रस-कास-अगुरुअल्हुअ-थावर-थिराथिर-सुद्दासुह- हुमग-अणादेज्ज-णिमण-णीचागाद-पंचतराइयाणं सोदओ वंधो, एत्थ एदासिं धुवोदयतादो । इस्पि-पुरिसवेद-मणुस्साउ-मणुस्सगइ-चीइंदिय-तीइंदिय-चर्डरिंदिय-पंचिंदियजादि-पंचसंतण- ओराल्वियसरीरअंगोवंग- छसंपष्टण-मणुसगइपाओमगाणुपुजी-साहारण-दोविहायगद्द-तस-सुमग- मुस्सर-अदे-छुज्ज्यागोदाणं परोदओ वंधो, एदासिमेत्थ उदयविरोहादो । पंचदंसणा-वरणीय-साहासाद-सोल्सकसाय-छणोकसाय-बादर- प्रकुप- पञ्जतापञ्जत-जसकित-जजस- कित्तीणं सोदय-परोदओ वंधो, अद्भवोदयतादो । ओराल्वियसरीर-हंडसंद्रण-उत्तवाप्-पत्तेय-सीर-आवाय-जावाप्-पत्तेय-सीर-आवाय-जावाप्-पत्तेय-सीर-आवाय-जावाप्-पत्तेय-सीर-आवाय-जावाप्-पत्तेय-पत्तेय-पत्तेयाच्याप्-पत्तेयाचेप पि सोदय-परोदओ वंधो, एदासिमुदयाणुदयसहिदपज्जतापञ्जत्वासु वंधदंसणादो । तिरिक्खाग्रहपोगगाणुपुज्तीए सोदय-परोदओ वंधो, सेदयाणुदयविग्गहाविग्गह-गर्दीस वंधवंत्रभादो ।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्तः सोलसकसाय-भय-दुगुंछा- तिरिक्ख-मणु⊸

पांच ज्ञालावरण, चार दर्शनावरण, मिध्यात्व, तर्युसकंवद, तिर्यगायु, तिर्यमाति, एकेन्द्रिय जाति, तेजस व कामण हारीर, वर्ण, मध्य, रस, स्पर्श, अगुरुज्ञ्च, स्थाकर, स्थिर, हुम, अगुरुज् स्थाकर, स्थिर, हुम, अगुरुज् स्थाकर, स्थिर, हुम, अगुरुज् स्थाकर, स्थिर, हुम, अगुरुज् स्थाकर, स्थाकर, सिधर, हुम, अगुरुज् सुन्धेवर, वहां य प्रकृतियां ध्रुवोदयी है। स्रीवद, पुरुच्यद, मुख्यायु, मुख्यायु, मुख्यायु, मुख्यायु, अगुरुच्यायु, स्वायायु, अगुरुच्यायु, स्वायायु, स्वायायु, स्वायाय्यायु, स्वायायु, स्वाय्यायु, स्वायाय्यायु, स्वायायु, स्वाययु, स्वायायु, स्वाययु, स्वायायु, स्वाययु, स्वायायु, स्वयायु, स्वायायु, स्वाययु, स्वायायु, स्वाययु, स्वययु, स्वाययु, स्वाययु,

पांच झानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिध्यात्य, सोलह कपाय, मय, जुगुप्सा,

स्साउ-ओरालिय तंजा-कम्मइयसरीर-वण-गंध-स्स-फास-अगुहवलहुअ-उवधाद-णिमिण-पंचंतरा-इयाणं णिरंतरां वंधो, एगसमण्ण वंधुवरमाभाशदो धुववंधिचादा च । सादासाद-सत्तणोकसाय-मणुसगइ-एईदिय-बीईदिए-तीईदिय-चर्जरिदिय-वंचिदियजादि छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग— छसंघडण-मणुसगइपाओगमाणुपुन्नी-आदाउज्जोव-दोविहायगइ-तस-धावर-सुहुम-अपज्वत-साहा-रणसरीर-थिराशिय-सुमास्य-सुमार-दुमग-दुमग-सुसर-दुस्सर-आदेज्ज-अमिलित अजमिति -उच्चा-गोदाणं सांतरो वंधो, एगसमण्ण वंधुवरम-दंभणदो । तिरिक्श्वाइ-तिरिक्श्वाइपाओमाणुपुन्नी-णाचागोदाणं सांतर-णिरंतरो । कथं-णिरंतरे ? ण, तज-जाउकाइणहिंता धुव्विकाइण्युष्णणाणं णिरंतरवंधुवरुभादो । पर्वादुस्सास-वादर-पञ्चल-वंश्वनर्यमणि पि सांतर-णिरंतरे। वेषो । कथं णिरंतरो ? ण, देवाणं पुढ्विकाइण्युप्णणाणं सुहत्तम्संते णिरंतरवंधुवरुभादो ।

एदेसिं पच्चया एइंदियपच्चएहि समा । तिनिक्खाउ-तिनिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-

तियंगायु, मनुष्यायु, औदारिक तेजल व कार्मण जारीर वर्ण, गम्ध, रस, स्पर्श, अधुकलपु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरम्तर वम्ध होता है, क्योंकि, एक समयस इनके वन्धविश्रामका अभाव है, तथा ये ध्रुववन्धी भी है। साता व असाता वेइतीय, सात नेकपाय, मनुष्याति, एकिन्द्रय, डीन्द्रिय, चीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, छह संस्थान, औदारिकडार्गगोगाया, छह सहनन, मनुष्याति प्रायोग्यानुष्यी, आताप, उद्योत, हो दिहायोगितिया, त्रम, स्थावर, सक्ष्म, अपयोन्त, साधारणहारीर, स्थिर, अस्थिर, डुम, अद्यु, सुम, सुम्बर, दुस्वर, आदेष, उद्याक्ति, अयाक्षिति, विस्ताविष्ठाम देखा जाता है। निर्यगति, निर्यगतिमायोग्यानुष्यी और नीचगोष्ठका सान्तर वस्थ होता है।

शंका--निरन्तर बन्ध केल होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं. क्योंकि. तेज च वायु कार्यिकोंमेंने पृथिवीकायिकोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके निरन्तर यन्ध्र पाया जाता है ।

परघात, उच्छ्वास, वादर, पर्याप्त और प्रत्येकदारोरका भी सान्तर निरन्तर वन्त्र होता है ।

शंका—निरन्तर बन्ध कसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, पृथियीकाथिकोमें उत्पन्न हुए देवॉके अन्तर्सुहर्ननक निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

इन प्रकृतियोंके प्रत्यय एकेन्द्रियप्रत्ययोंके समान हैं। तिर्यगायु, तिर्यगाति,

1 884

तीइंदिय-च औरंदियजादि-तिरिक्खगङ्पाओग्गाणुपुव्वी-आदाबुज्ञोव-थावर-सहम-साहारणस्सरीराणि तिरिक्खगइसंज्ञतं बज्झंति । मणुसाउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओगगाणुपून्त्री-उच्चागोदाणि मणुस-गइसंज्ञतं बज्झंति । सेसाओ पयडीओ तिरिक्ख-मणसगइसंज्ञतं । तिरिक्खा सामी । बंधद्वाणं सुगमं । एत्थ बंधवोच्छेदो णत्थि । धृववंधीणं चउन्विहो बंधी । सेसाणं सादि-अद्धवी ।

बादरपुढविकाइयाणमेवं चेव वत्तव्वं । णवरि बाररस्स सोदएण बंधो, सहमस्स परे।दएण । बादरपुढविकाइयपज्जत्ताणं पि एवं चेव वत्तत्र्वं । णवरि पज्जत्तस्त सोदओ, अपञ्जत्तस्म परे।दओ वंधो । बादरपढविकाइयअपञ्जत्ताणं पि बादरपढविकाइयभंगो । जविर पज्जत्त-थीणगिद्धित्तिय परघादुस्मास-आदाबुज्जेश्व-जमिकत्तीणं परोदशो, अपज्जत्त-अजसिकतीणं सादओ वंशो । परघादस्सास-तम-बादर-प्रजन-पत्तेयसरीराणं सांतरी बंशो. अप्रजनतप्स देवाणस्ववादाभावादे। । परुचया सत्ततीस. ओरालियकायजोगपरुचयस्साभावादो ।

सहमप्रद्विकाइयाणं पुद्विकाइयभंगो । णवरि बादर-आदाउज्जोव-जसिकत्तीणं परादओ, सहम-अजसिकत्तीणं सोदओ वंधो । परवादस्माम बादर-पञ्जत्त-पत्तेयसरीराणं सांतरी

एकेन्द्रियः झीन्द्रियः, त्रीन्द्रियः, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यगतिप्रायोग्यानपूर्वी, आतःष, उद्योत, स्थावर, सृक्ष्म और सधारणदारीर, इनको तिर्यगातिसे संयुक्त बांधते हैं। मनुष्याय, मनुष्यगति, मनुष्यगतित्रायांग्यानुपूर्वी और उच्चगे त्रको मनुष्यगतिसे संयक्त वांधेन हैं। शेप प्रकृतियोंको मनुष्य च तिर्यगातिस संयक्त बांधते हैं । तिर्यंच सामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है। यहां वन्धन्युच्छेद है नहीं। ध्रवयन्धी प्रकृतियोका चारी प्रकारका वन्ध होता है। शेष प्रकृतियाँका सादि व अध्यव बन्ध होता है।

बादर प्रथिवीकायिकांकी भी इसी प्रकार प्रस्पणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि बादरका खोदय और सक्षमका परेत्ययमे बन्ध होता है। बादर पश्चिकायिक पर्याप्तोंकी भी इसी प्रकार प्ररूपणा करना चाहिये। विशेषता इतनी है कि पर्याप्तका स्योदय और अपर्याप्तका परोदय बन्ध होता है। बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंकी भी मरूपणा बादर पृथिवीकायिकोंके समान है। विशेषता यह है कि पर्याप्त, स्त्यान-गुद्धित्रयः परघातः उच्छवासः आतापः उद्योत और पशकीर्तिका परोदयः तथा अपर्याप्त और अयदाकीर्तिका स्वोदय बन्ध होता है। परघान, उच्छवास, त्रस, वादर, पर्याप्त और प्रत्येकदारीरका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तोंमें देवोंकी उत्पत्ति नहीं होती । प्रत्यय सैतीस होते हैं, क्योंकि, उनके औदारिककाययोग प्रत्ययका अभाव है।

स्क्म पृथिवीकायिकोंको प्ररूपणा पृथिवीकायिकोंके समान है। विशेष यह है कि बादर, आताप, उद्योत और यदाकीर्तिका परोदयः तथा सुक्म और अयदाकीर्तिका स्बोदय बन्ध होता है। परघात, उच्छ्वास, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकदारीरका सान्तर बंभो, सुद्दुमेईहिएसु देवाणसुववाद।भावादो णिरंतरवंधासावा । सुद्दुमपुडविकाइयपञ्जताणमेवं चेव वत्तन्त्रं । णविर पञ्जतस्स सोदभो, अपञ्जतस्स परोदभो वंधो । सुद्दुमपुडविकाइयअप-ज्जताणमेवं चेव वत्तन्त्रं । णविर अपञ्जतस्स सोदभो, पञ्जत-श्रीणगिद्धितिय-गरघादुस्सासाणं परोदभो वंधो । सन्त्रभाउकाइयाणं जद्दापञ्चासण्णपुडविकाइयभंगो । णविरि आदावस्स परोदभो वंधो, पुडविकाइए मोत्तृण अण्णस्य आदावस्सुदयाभावादो ।

पंचणाणावरणीय- णवरंसणावरणीय-सादासार्-मिच्छत-सांत्रसाय- णवणीकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-यंचजादि-ओरात्स्यि-तेजा-कम्मश्र्यसरीर-छसंठाण-ओरात्स्यसरीरअंगोवंग-छसंघडण-वण्णचउकक-तिरिक्खगइ-मणुसगश्रोगगाणुपुज्वी-अगुरुव-लहुवचउकक-आदाबुज्जोव-दोविहायगइ-तस-यावर-वादर-मुहुम पज्जतापज्जत-पत्तेय-साहारण-सरीर-थिराथिर-मुहासुह-सुमग-दुभग-सुस्मर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकिति-अजमिकिति— णिमिण-णीचुज्ज्वागाद-पंचेतराइयगर्वाओं ठविय वण्णकितकाइयाणं गरुवणा कीगरे-— भंभोदयाणं पुज्जापवा-पंचेतराइयगर्वोओं ठविय वण्णकितकाइयाणं गरुवणा कीगरे-— भंभोदयाणं पुज्जापवा-संचेतराइयगर्वोः

बन्ध होना है, क्योंकि, सक्ष्म एकेन्द्रियोंमें देवोंकी उत्पत्ति न होनंसे यहां निरम्तर बन्धका भ्रमाब है। सक्ष्म पृथियोकायिक प्यांप्तोंकी हसी प्रकार ही प्ररूपणा करना चाहिय । विद्यापना हनासे है। सक्ष्म पृथियोकायिक अपयोप्तोंकों भी हसी प्रकार ही प्रकपणा करना चाहिय । विद्याप हनना है। सक्ष्म पृथियोकायिक अपयोप्तोंकों भी हसी प्रकार ही प्ररूपणा करना चाहिय । विद्याप हनना है कि अपर्योप्तका स्वोदय और पर्योप्त, स्थानगृद्धित्रय, परधान व उच्छवासका परोद्य वन्ध होता है। सब अप्लापिक जीवोंकी प्रकपणा अपनी अपनी प्रयासक्ति अनुमार पृथियोकायिकोंके समान है। विदेशपता यह है कि आनापका परोद्य वन्ध होना है, क्योंकि, पृथियोकायिकोंकों छोड़कर अन्यत्र आनाप कर्मका उदय नहीं होता।

पांच झानावरणीय, ते। दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय. प्रिथ्यात्व, सिंट्यात्व, सींट्रार्ट्यात्व, सिंट्यात्व, सींट्रार्ट्यात्व, सिंट्यात्व, सींट्रार्ट्यात्व, सींट्रार्ट्यात्व, सींट्रार्ट्यात्व, सींट्रार्ट्यात्व, सींट्रार्ट्यात्व, सींट्रार्ट्यात्व, सात्व, स्थात्व, सात्व, सींट्रार्ट्यात्व, सींट्रांच्यात्व, सींट्रार्ट्याच्यात्व, सींट्रार्ट्याच्यात्व, सींट्रार्ट्याच्यात्व, सींट्रांच्यात्व, सींट्रार्ट्याच्यात्व, सींट्रांच्याच्यात्व, सींट्रांच्यात्व, सींट्राय्व, सींट्राय्व, सींट्राय्व, सींट्राय्व, सींट्राय्व, सींट्र्यांच, सात्व, सींट्र्यांच, सात्व, सींट्राय्व, सींट्र्याच्यात्व, सींट्राय्व, सींट्र्याय्व, सींट्र्याय्व, सींट्र्याव, सींट्र्याच, सींट्र्यंच, सींट्र्य, सींट्र्यंच, सींट्र्याच, सींट्र्यंच, सींट्र्यंच, सींट्र्यंच, सींट्र्यंच, सींट्र्यंच, सींट्र्यंच, सींट्र्यंच, सींट्र्यंच, सींट्र्

पंचणाणावरणीय - चउदंसणावरणीय - भिन्छत्त -णवुंसयवेद् --तिरिक्खाउ -- तिरिक्खाउ -- यदंदिवजादि - विराधित -चुहासुह - दुभग -- अणादे ज्ञ-- जीसणः -- गीचागोद - पंचेतराह्यणं सीदओं चंगो, अत्यगईए धुवोदयत्तादो । इस्पि-पुरिस्केद -- सणुसाउ -- स्वाधित -- निर्देश -- विराधित -- चुरिय -- पिति -- विराधित -- निर्देश -- निर्देश -- चुरिय -- चुरिय -- पिति -- तिरिक्खाय -- निर्देश -- निर्देश -- विराधित -- तिरिक्खायु -- तिर्देश -- विराधित -- तिरिक्खायु --

पंचणाणावरणीय-मिच्छत्त-सोलमकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुसाउ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसगैर-वण्णचउक्क-अगुरूवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचतराइयाणं णिरंतरो वंघो । सादासाद-सत्तणाकसाय-मणुस्सगइ-ग्इंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चर्डारेदिय-पंचिदियजादि--छसंठाण-ओरा-लियसरीरअंगांवंग-छमंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुर्वी-आदाबुज्जोव-न्देविहायगदि-तस- थावर-सुदुम-अपञ्जत-साहारणसरीर-थिराथिर-सुद्दासुद-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुम्सर-ओदंड्ज-अणादेज्ज-

पांच ज्ञानावणीय, चार दर्शनावरणीय, सिध्यास्य, नपुंसकवेद, निर्यगायु, तिर्यगाय, रिवर्यगान, एकंन्द्रिय ज्ञाति, नेजन व कामंण रारीर, वणादिक चार, अगुरुळपु, स्थावर, स्थिर अधियर, गुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, निर्माण, नीच्योग और पांच अन्तर्यक्ष, स्वाद्य वन्ध होना है, क्योंकि, अर्थायिक्तसे य प्रकृतियां ध्रुवेदियी हैं। स्वीवेद, पुरुवेचद, मुख्यायु, मुख्यार्गित, हीन्द्रिय, श्रीन्द्रिय, प्रविनेद्रय जाति, पांच संस्थान, औदारिक रारीरांगांपांग, छह संहतन, मुख्यानिमायोग्यानुपूर्वी, आनाप, दो विहायोगातियां, प्रक सुभग, सुस्थर दुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, हमका परोदय वन्ध होता है। पांच दुर्भग, सुस्थर दुस्वर, अन्तर्य और उच्चगोत्र, हमका परोदय क्या होता है। पांच दर्शनावरणीय साता व असाता वेदनीय, सोळह कपाय. छह नोकपाय, दुर्शस्थान, औदारिकहारीर, तिर्यागपूर्वी, उपघान, परचान, उच्छवास, उद्योत, बादर, सृक्ष्म, प्रयोत, अपर्यान, प्रयोक्त, स्रपर्योक्त, स्रपर्योक्त, प्रयोक्त, प्रयोक्त, स्वयंक्रारीर, साधारणहारीर, यशक्तीर्ति और अयशक्तीर्तेका स्वोदय-परोह्य क्ष्म होता है।

पांच ज्ञानावरणीय, मिध्यात्व, सोल्ह कपाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्याषु, श्रोदारिक, तेजल व कामेण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तरायका निरन्तर वन्ध्र होता है। साता व असाता वेदनीय, सात नोक्तपाय, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, झीन्द्रय, त्रीन्द्रय, चतुरिन्द्रय, पंचीन्द्रय जाति छह संस्थान, श्रीदारिक्यरीरांगोपांग, छह संस्थान, भीदारिकशरीरांगोपांग, छह संस्थान, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, दो विद्यायोगतियां, त्रस, स्थावर, सुक्ष, अशुम, हुभग, दुभग, स्वाप्ता

1 4. 140.

जसिकत्ति-अजसिकत्ति-उच्चागोदाणं सांतरी बंधो. एगसमएण बंधवरमवरुंभादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगडपाओग्गाणपुञ्ची-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो । कुदो ? तेउ-वाउकाइएहिंतो वणप्फदि-काइएसप्पण्णाणं महत्त्तस्संतो' णिरंतरबंधुवलंभादो । परघादुस्सास-बादर-पञ्जत्त-पत्तेयसरीराणं सांतर-णिरंतरो बंधो । कथं णिरंतरो ? ण. देवेहिंतो वणप्फदिकाइएसप्पण्णाणं सहत्तरसंतो णिरंतर-बंधवलंभादे। । पच्चया सगमा । गइसंज्ञतादि उवरिमेइंदियपरूवणातल्ला ।

एवं बादरवणप्फदिकाइयाणं च वत्तव्वं । णविर वादरस्स सोदओ वंधा, सुहमस्स परा-दओ । बादर-विणाफदि-ी पञ्जत्ताणं बादरवणाफदिभंगो । णवरि पञ्जत्तस्स सोदओ, अपज्ञत्तस्स परे(देश) बंधो । बादरवणप्फदिअपज्ञत्ताणं बादरेइंदियअपज्ञत्तभंगो । सहमवणप्फदिपज्ञत्तापज्जताणं सहमेइंदियपज्जतापज्जत्तभंगों । तसअपज्जताणं पंचिंदियअपज्जत्तभंगो । णवरि बीइंदिय-तीइंदिय-चर्डारेंदिय-पंचिंदियाणं सोदय-परोदओं वंधो । णिगोदजीवाणं तेसिं बादर-सहम-

सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इनका एक समयसे बन्धविश्राम पाया जाता है। तिर्यगाति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि तेज व वाय कायिकोंमेंसे वनस्पतिकायिकोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्महर्त तक निरन्तर बन्ध षाया जाता है। परघान, उच्छवास, वादर, पर्याप्त और प्रत्येकहार्रीरका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है।

शंका — निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, देवोंमेंसे वनस्पतिकायिकोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्भुद्धतं तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

प्रत्यय सुगम हैं। गतिसंयुक्तना आदि उपरिम प्ररूपणा एकेन्द्रिय प्ररूपणाके समान है।

इसी प्रकार बादर बनस्पतिकायिकोंके भी कहना चाहिय । विशेषता केवल इतनी है कि बादरका स्वोदय बन्ध होता है और सुक्ष्मका परोदय । बादर बनस्पति-कायिक पर्याप्तोंकी प्ररूपणा वादर वनस्पतिकायिकोंके समान है। विशेषता यह है कि पर्याप्तका स्वोदय और अपर्याप्तका परादय बन्ध होता है। यादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है। सक्ष्म बनस्पतिकायिक पर्याप्त व अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्तोंके समान है। त्रस अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है। विशेषता यह है कि द्वीन्द्रिय. त्रीन्द्रियः चतुरिन्द्रियं और पंचेन्द्रियका स्वोदयं परोदयं बन्धं होता है। निगोद जीव व

१ प्रतिषु 'सुहुत्तो ' इति पाठः । १ अप्रती 'व वत्तव्य ', आप्रती 'वत्तव्य ' इति पाठः । अत्रता 'स्टुमइदियपञ्ज्वमगो 'इति पाठः। ४ प्रतिप् 'तस- 'इति पाठः।

पञ्जत्तापञ्जताणं वणप्किदिकाइयभंगो । णविर यत्तेयसरीरस्स परोदओ सांतरा चंघो । तस-बादर पञ्जत-परघादुस्सासाणं वंघो सांतरो । साहारणसरीरस्स सोदय-परोदओ । बादरवणप्किद-काइयपत्तेयसरीरपञ्जतापञ्जताणं पि एवं चेव वत्तव्यं । णविर साहारणसरीरस्स परोदओ वंघो, पत्तेयसरीरस्स सोदय-परोदओ वंघो ।

तेउकाइय-वाउकाइय-वादर-सुहुम-पज्जतापज्जाणं सो चेव भंगो । णवरि विसेसो मणुस्साउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुञ्वी-उच्चागोदं णिर्वि ॥ १३८ ॥

एदमप्पणासुत्तं देसामासियं, तेणंद्रण सृहदृत्थपरूवणा कीरदे— परघादुस्सास-घादर-पञ्जत-पत्तयसरीराणं सांतरो बंघो, देवाणं नेउ-बाउकाइएसु उवबादाभावादो । तिरबखगड्-तिरिबखाणुपुर्व्याःणीचागोदाणं णिरंतरे। बंबो सोदओ चंवा । णवरि तिरिबखाणुपुर्व्याए बंघो सोदय-परादओ । आदाउज्जोवाणं परादओ बंघो । होदु णाम वाउकाइएसु आदाबुज्जोवाण-

उसके बादर सृक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्तांकी प्ररूपणा वृतस्पतिकायिकाँके समान है। विशेष यह है कि प्रत्येकशरीरका पराद्य व सान्तर वन्ध होता है। बस, बादर, पर्याप्त, परधात और उच्छ्वासका सान्तर बन्ध होता है। साधारणशरीरका स्वोद्य परोद्य बन्ध होता है। है। यादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त व अपर्याप्तोंके भी इसी प्रकार ही कहाना बाहिये। विशेषता यह है कि साधारणशरीरका परोद्य बन्ध होता है। प्रत्येकशरीरका परोद्य बन्ध होता है। प्रत्येकशरीरका परोद्य बन्ध होता है। प्रत्येकशरीरका परोद्य बन्ध होता है।

तेजकायिक और वाउकायिक वादर सुरूम पर्याप्त व अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके समान है । विशेषता केवल यह है कि मनुष्यासु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वा और उच्चगोत्र प्रकृतियां इनके नहीं हैं ॥ १३८ ॥

यह अर्पणासूत्र देशामर्शक है, इसीलियं इससे सुचित अर्थोकी प्ररूपणा करते हैं — परायात, उच्छ्यास, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका सान्तर बन्ब होता है, क्योंकि, देवोंकी तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमें उत्पत्ति नहीं होती। तिर्यमाति, तिर्वेतातु-पूर्वी और नीचगोत्रका बन्ध निरन्तर व स्रोदय ही होता है। विशेषता यह है कि तिर्यगानुपूर्वीका बन्ध स्रोदय परोदय होता है। आताप और उद्योतका परोदय बन्ध होता है।

र्शका — वायुकायिक जीवॉमें आताप और उद्योतका अभाव भले ही हो, वर्योकि,

सुद्याभावो', तत्थ तदणुवलंभादो । ण तेउकाइएस तदभावो, पण्चक्खेणुवलंभपाणतादो ? एस्थ परिहारो वुल्वदे — ण ताव तेउकाइएस आदाओ अश्यि, उण्डरपहाए तत्थाभावादो । तेउम्हि वि उण्डतसुवलंभइ च्चे उवल्कमउ णाम, [ण] तस्स आदावववएसो, किंतु तेजासण्णा; "म्लोष्णवती प्रभा तेजः, सर्वागच्याप्युण्णवती प्रभा आतापः, उष्णरिहता प्रभोषोतः," इति तिण्हं भेदोवलंभादो । तम्हा ण उज्जीवो वि तत्थिथ, स्लुण्डुज्जीवस्स तेजववएसादो । एतिओ चेव भेदो, ण अण्णत्थ कत्थ वि । णवीर सञ्चार्सि पयडीणं तिरिक्खगड्कंकुत्तो वंधो ।

तसकाइय∙तसकाइयपज्जत्ताणमोघं णेदव्वं जाव तित्थयरे ति ॥ १३९ ॥

एदं देसामासियवापणामुत्तं, तेणेदेण सुइदत्थपरूवणा कीरदे — वीइंदिय-तीइंदिय-

उनमें वह पाया नहीं जाता। किन्तु तेजकायिक जीवोंमें उन दोनोंका उदयाभाव सम्भव नहीं है, क्योंकि, यहां उनका उदय प्रत्यक्षसे देखा जाता है।

समाधान — यहां उक्त शंकाका परिहार कहते हैं — तेजकायिक जीवोंमें आतापका उदय नहीं है, क्योंकि, वहां उष्ण प्रभाका अभाव है।

र्शका — तेजकायमें भी तो उप्जना पायी जाती है, फिर बहां आनापका उदय क्यों न माना जाय ?

समाधान—तेजकायमें भले ही उष्णता पायी जाती हो, परस्तु उसका नाम आनाप [नहीं] हो सकता, किन्तु 'तेज' संबा होगीः क्योंकि, मूलमें उष्णवती प्रभाका नाम तेज. सर्वोगच्यापी उष्णवती प्रभाका नाम आनाप, और उष्णता रहित प्रभाका नाम उद्योत है, इस मकार तीलोंके भेद पाया जाता है।

इसी कारण यहां उद्योत भी नहीं है, वयोंकि, मूलोप्ण उद्योतका नाम तेत्र है [न कि उद्योत]। केवल इतना हो भेद है, और कही भी कुछ मेद नहीं है। विशेष इतना है कि सब मकतियोंका तिर्यस्पतिसे संयुक्त बन्ध होता है।

त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तोंके तीर्थकर प्रकृति तक ओपके समान लें जाना चाहिये॥ १३९॥

यह देशामर्शक अर्पणासूत्र है, इसलिये इससे सुचित अर्थकी प्रकपणा करते

१ प्रतिषु ' सुद्याभात्रादी ' इति पाठः ।

चर्डिरिदय-र्चिचित्याणं सोदय-परोदओ वंघो । तस-बादराणं सोदओ चेव । प्र्हिय-यावर-सुहुम-साहारणादावाणं परोदओ चेव बंघो । अवसेसाणं पंचिदिय-पंचिदियपज्जताणं उत्ति-विहाणेण वत्तन्वं ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचविचजोगि-कायजोगीसु ओघं णेयव्वं जाव तित्थयरेति ॥ १४० ॥

श्रीयिम उत्तसतारसण्टं सुताणमत्थी ससुत्ती एत्थ णिरवयवी वत्तव्वी, भेदाभावादी । णविर प्रवयादी भेदी श्रिथ तं परूवेमी— मणजोगे णिरुद्धे छाएताछीस एकेताछीस सत्ततीस [सत्तिस] वत्तीस उणवीस' सत्तारस सत्तारस एक्कारस दस णव श्रष्ट सत्त छ पंच [पंच चत्तिरि चत्तिरि] देणिण मिन्छाइडिपटुडिसव्वगुणदाणाणं जहाक्रमेण एदे प्रचया होति । अण्णे। वि विसेसी मणजोगे णिरुद्धे संते अरिथ— चदुजादि चत्तारिशालुपुव्वी-श्रादाव-थावर-सुहुम-अपञ्जत-साहारणाणं परोदएणं, उवधाद-परघादुस्सास-तस-षादर-पञ्जत-पत्तेयसरिर-पींचिदियजादीणं सोदएणं श्रेयो ति वत्तव्वं। एवं चेव चदुण्डं मणजोगाणं परूवणा

हैं — द्वीन्ट्रिय, त्रीन्ट्रिय, चतुरिन्ट्रिय और एंचेन्ट्रियका स्वोदय-परोदय बन्ध द्वाता है। त्रस और बादरका स्वादय ही बन्ध हतता है। पक्तेन्द्रिय, स्थावर, सुक्ष्म, साधारण और आतपका परोदय ही बन्ध होता है। दोव प्रकृतियोंके पंचेन्ट्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंकी प्रकृपणांक अनुसार कहना चाहिये।

योगमार्गणानुसार पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी और काययोगियोंमें तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान जानना चाहिये ॥ १४०॥

ओधर्में कहे हुए सत्तरह (५ वें सृत्रसे ३८ में सुत्र तक १७+१७=३४) सूत्रोंका अर्थ ससूत्र यहां संपूर्ण कहना चाहिये, फ्योंकि, ओधसे यहां विदोषताका अभाव है। विदोष यह है कि प्रत्ययगत जो कुछ भेद है उसे यहां कहते हैं— सनोधोगके निकस्त होने अर्थात उसके आश्रित व्यावणान करनेपर छ्याळीस, हकताळीस, सैंतीस, [सैंतीस] बत्तीस, उन्नीस, संतरह, स्यारह, ददा, नी, आठ, सात, छह, पांच, [पांच चार, चार] और दो, इस प्रकार ये क्रमसे मिध्यादि आदि सब गुणस्थानोंके प्रत्यय होते हैं। मनोधोगके निरुद्ध होनेपर और भी विदेषता है— चार आतियां, चार आतुपूर्वी, आताप, अध्यावर, स्वस्त्र, स्वस्त्र, अपर्याद, पराचात, उच्छ्वास, अपर्याद, पराचत, प्रत्याद, उच्छ्वास, त्रस, वादर, पर्याद्त, पराचत, प्रत्याद, इस, वादर, पर्याद्त, पराचत, प्रत्याद, इस, वादर, पर्याद्त, पराचत, मिस्ति होते हैं। स्वाचित्र के स्वच्या स्वस्त्र वात्र कातिका स्वेदयसे बच्च होता है, ऐसा कहना चाहिये। इसी प्रकार ही चार मनोयोगोंकी प्रक्रपणा करना चाहिये।

१ प्रतिषु ' सत्तारस ' इति पाठः ।

२ मण-वयणसद्यो ण हि ताविगिविगळं च थावराष्ट्रचओ ॥ गो. क. ३१०.

: **क्रायच्या । ज**र्वारे एक्कस्टि मणजोगे णिरुदे अवसेससन्त्रजोगा मुलेछ्तरपञ्चएपु अवणेदच्या । - **जन्दे**सा जिरुद्धमणजोगीणं पञ्चया होति । णत्थि अण्णत्य कत्य वि विसेसी ।

विजोमीणमेवं चेव वत्त्वं, सांतर-णिरंतर-सांदय-परोदय-सामितपञ्चसार्द्रीहि बणजोशीहिंतो विजोमीणं भेदाभावादो । णर्वरि बीहेदिय-तीहेदिय-च उर्तिदेय-पेचिंदियाणं सोदय-परोदओं वेधो ति वत्त्वः । असःच-मोसविजोमीणं विचेन्नोपिमंगी । णविर सञ्चरुणाणं उत्तरपञ्चएसु असञ्च-मोसविजोमं मोतूण सेससञ्जोमा अवणेदञ्वा। सञ्च-मोस-सञ्चमोस-विजोमीणं सञ्च-मोस-सञ्चमोसमणजोगिमंगो, विसेसाभावादो ।

कायजोगीण पि ओघमंगो चेव । णविर सव्वगुणडाणाणमाघपन्चएसु मण-विचिजागडु-पन्चया अवणेदव्वा । सजोगिपन्चएसु दोहोमण-विचिजागण्चया अवणेदव्वा । णरिथ अण्णस्थ विसेसो । ओघम्मि पुत्रुत्तंसत्तारससुत्तेसु चउत्थसुत्तम्म भेदपदुप्पायणडसुत्तरसुत्तं भणदि —

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा । एदे बंधा, अबंधा णित्थ ॥ १४१ ॥

विदेश्यता यह है कि एक मनेत्योगके निरुद्ध होनेपर रोप सब योगोंको मूलोघ उत्तर अत्यर्थोमेंसे कम करना चाहिये। इस प्रकार रोप रहे निरुद्धमनोयोगियोंके अन्यय होते हैं। अन्यत्र और कहीं विदोषता नहीं है।

वजनयोगियोंके भी इसी प्रकार ही कहन। चाहिये, क्योंकि सान्तर-निरन्तर, क्वोदिय-परोत्य, क्वासिय और प्रस्यादिकांकी अपना मनायोगियोंने वक्षनयोगियोंके केही भेर प्रस्यादिकांकी अपना मनायोगियोंने वक्षनयोगियोंके केही भेर पेकेहिय कोहिय प्रतिह्म कर्नुतरिहिय और पेकेहिय क्वातिका क्वोदय-परोत्य वन्ध होता है, ऐसा कहना चाहिये : अस्यय्वयावक्षनयोगियोंकी प्रकारणा वक्षनयोगियोंकी समान है। विशेषता यह है कि सब गुणस्थानोंके उत्तर प्रस्यामी से अस्यय्ववक्षनयोगियों के छोड़कर शेष सब योगोंका कम करना चाहिये। स्वस्य, स्वा और सत्यय्वा वक्षनयोगियोंकी प्रकारणा सन्य, स्वा और सत्यय्वा वक्षनयोगियोंकी प्रकारणा सन्य, स्वा और सत्यय्वा वक्षनयोगियोंकी प्रकारणा सन्य, स्वा और सत्यस्य च्यानियोंकी समान है, क्योंकि, कोई विशेषता नहीं है।

काययोगियोंकी भी प्ररूपणा ओघके समान ही है। विशेष इतना है कि सब ग्रुमस्थानोंके ओघ प्रत्ययोंमेंसे चार मनोयोग और चार वचनयोग, इस प्रकार आठ प्रत्ययोंको कम करना चाहिये। अन्यत्र विशेषता नहीं है। ओघमें पूर्वीक सक्तरह सुर्वोमेंसे चतुर्थ सुक्रमें भेद प्ररूपणार्थ उत्तर सुत्र कहते हैं—

साता वेदनीयका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है? मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं है॥ १४१॥

१ मतिषु ' पुब्बिवुत्त- ' इति पाठः ।

1 400

ओचम्मि 'अवसेसा अवंघा 'ति उत्तं। एत्थ पुण 'अवंघा णारिध 'ति क्लाम्बं. जेगापणादी । ण च संजेगेस अजेगा होंति. विप्यहिसेहादो । जदि पत्तियमेसी चेव भेदी तो एतियस्तेव णिहेसी किण्ण कदो १ ण एस दोसी, थलव्यकीणं पि सहन्गहणकं तघोवदेसादो ।

ओरालियकायजोगीणं मणुसगइभंगो ॥ १४२ ॥

वंचणाणावरणीय-च उदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं बंधोदयवोच्छेदे सणसगदीदो णस्थि विसेसो. विसेसकारणाभावादो । जसकित्ति-उच्चागोदेस विसेसो अत्थि, तेसिमेत्थदयवाच्छेदा-भावादो । मणुसगदीए पुण उदयवोच्छेदो अत्थि, अजोगिचरिनसमए मणुसगदीए सह एदासिमदयवी च्छेददंसणादी । सोदय-परोदय-सांतर-णिरंतरपरिक्खास णार्थि भेदी. भेदकार-णाणुवलंभादो । परुचएस अत्थि भेदो, ओरालियमिस्स-कम्मडय-वेजव्वियदग-चढमण-विचयनचएडि विणा मिन्छाइडिम्हि सासणे च जहाकमेण तेदाठीस-अडतीसपन्चयदंसणादी.

ओछमं 'अवदोय अवन्धक हैं' पेसा कहा गया है। परन्तु यहां 'अवन्धक कोई नहीं है ' ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, यहां योगकी प्रधानता है। और संयोगियोंमें अयोगी होते नहीं हैं, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है।

शंका - यदि केवल इतनी मात्र ही विशेषता थी तो इतनेका ही निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान - यह कोई दोप नहीं है, क्योंकि, स्थूलबुद्धि शिष्योंके भी सुखपूर्वक घहण हो. पतवर्थ उक्त प्रकार उपदेश किया गया है।

औदारिककाययोगियोंकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है १४२॥

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय, इन प्रकृतियाँके बन्धोदयव्यक्केदमें मनुष्यगतिसे कोई विशेषता नहीं है. क्योंकि, विशेष कारणीका यहां अभाव है। बशकीर्ति और उश्वगोत्रमें विशेषता है, क्योंकि, यहां उनके उदय-न्युच्छेदका अभाव है। परन्तु मनुष्यगतिमें इनका उदयव्युच्छेद है, क्योंकि, अयोगकेवळी गुणस्यानके अन्तिम समयमें मनुष्यगतिके साथ इनका उक्यव्युव्छेद देखा जाता है। स्वोदय-परोदय और सान्तर-निरन्तर बन्ध की परीक्षामें कोई विशेषता नहीं है. क्योंकि. यहां बिहोयताके उत्पादक कारणीका अभाव है। प्रत्ययोंमें विहोयता है, क्योंकि औक्तरिक-मिश्र, कार्मण, वैक्रियिकक्रिक, चार मनोयोग और चार बचनयोग प्रत्ययोंके विना मिथ्या-इपि और सासादन राणस्थानमें यथाकमसे तेतालीस और अस्तीस प्रत्यय देखे जाते हैं.

१ प्रतिषु ' ग एस दोसी एवस्स एष्टरस एव्हिम उद्देशविसेसी अस्यि धुरुकंशीगं ' इति वहहः ।

सम्मामिच्छादिद्वि-असंजदसम्मादिद्वीयु चोत्तीसपरूचयदंसणादो, उविरिमगुणहाणपरुचएसु वि बोराळियकायजोगं मोनूण सेसजोगपरुचयाणमभावादो । उविरिपरिक्खासु वि णरिथ विसेसी । णविरि मिच्छाइिट्वासणसम्माइिट्व-सम्माभिच्छाइिट-असंजदसम्माइिट्व-संजदासंजदा तिरिक्खायह-मणुसगइमहििट्वरा सामि ति वत्तव्यं । एसी पढमसुत्तिद्वियमेदो । एत्य उत्तपरुच्य-गह-गयसामित्तमेजो सव्वसुत्तेसु दह्व्यं । णविरि विद्वाणियपर्यद्वीसु तिरिक्खाउ-तिरिक्खायह-तिरिक्खायहपाओगगाणुपुव्यी-उज्जेवाणां बंधो मणुसगईए परोदओ, एत्य पुण सोदय-परोदओ । ति वत्तव्यं । णविर तिरिक्खगइपाओगगाणुपुव्यीए परोदओ वंधो, ओराठियकायजोगो । तिस्ते उदयाभावादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खाणुपुव्यीए मणुसगईए सांतरे। बंधो, एत्य पुण सोतर-णिरंतरे। एत्य पुण सोदय-परोदओ। [ओराठियकायजोगो । सांतर-णिरंतरे। एवं चेव णीचागोदस्स वि वतव्यं । मणुसगईए मणुसगईए मणुसगईए । सांतर-णिरंतरे। मणुसगईए बंधो, एत्य पुण सांतर। मणुसगईपाओगगगाणुप्व्यीए सणुसगईए सोदय-परोदओ बंधो, एत्य पुण सोदय-परोदओ । ओराठियसरीरस्स मणुसगईए सोदय-परोदओ बंधो, एत्य पुण सोदय-परोदओ । ओराठियसरीरस्स मणुसगईए सोदय-परोदओ बंधो, एत्य पुण सोदय-परोदओ ।

सम्यग्मिश्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें चौतीस प्रत्यय देखे जाते हैं. तथा उपरिम गणस्थान प्रत्ययोंमें भी औदारिककाययागका छाडकर होप याग प्रत्ययोंका अभाव है। उपरिम परीक्षाओंमें भी कोई विशेषता नहीं है। केवल इतना विशेष है कि मिध्याहरि सासाटनसम्यग्दिष्ट. सम्यग्मिथ्यादिष्ट, असंयतसम्यग्दिष्ट और संयतासंयत तिर्यगाति व मनष्यगतिके आश्रित होकर स्वामी हैं, ऐसा कहना चाहिय। यह प्रथम सुत्रस्थित भेद है। यहां पर्वोक्त प्रत्यय और गतिगत स्वामित्वका भेद सब मुत्रांमें देखना चाहिय । विदेश इतना है कि द्विस्थानिक प्रकृतियोंमें तिर्थगाय, तिर्थगाति, तिर्थगातिप्रायाग्यागुर्वी और उद्योतका बन्ध मनुष्यगतिमें परोदय हाता है: परन्त यहां इनका बन्ध स्वादय परोदय होता है. ऐसा कहना चाहिये। विशेषता यह है कि तिर्थगातिश्रायोग्यानपूर्वीका परोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, आदारिककाययोगमें उसके उदयका अभाव है। तिर्यगाति और तिर्येगानुपूर्वीका मनुष्यगतिमें सान्तर बन्ध होता है, किन्तु यहां उनका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है। इसी प्रकार ही नीचगोत्रके भी कहना चाहिये। मनुष्यायु और मनुष्यगतिका मनुष्यगतिमें स्वोदय बन्ध होता है, परन्तु यहां स्वोदय परोदय बन्ध होता है। [औदारिकशरीरांगोपांग] और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका वन्ध मनुष्यगतिमें सान्तर निरन्तर होता है, परन्तु यहां सान्तर होता है। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मनुष्य-गतिमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, परन्तु यहां परोदय बन्ध होता है । औदारिक-इारीरका मनुष्यगतिमें स्वोदय परोदय बन्ध है, परन्त यहां स्वोदय बन्ध होता है। भीदारिकशरीरका मनुष्यगतिमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, यहां भी सान्तर-निरन्तर

चेव । एसो बेडाणिसुत्तडियभेदो ।

एइंदिय-बाइंदिय-तीइंदिय-चर्डारेंदिय पंचिंदियजादि-आदान-थावर-सुहुम-साहारणाणं मणुसगईए परेदओं बंधो, एत्थ पुण सोदय-परेदओं। अपञ्जतस्स मणुसगईए सोदय-परेदओ, एत्थ पुण परेदिओं। एसो एगडाणियसुत्तडियभेदों।

संपिय अण्णसुत्तेसु भेदाभावादो ताणि मोनूण अद्वहाणियसुत्तिहियभेदो उच्चदे— मिच्छादिहि-सासणसम्मादिहि-असंजदसम्मादिहीसु उवधाद-परधाद-उस्सास-अपञ्जत्ताणं मणुसगईए सोदय-परोदओ, एत्य पुण सोदओ चेव । पंचिदियजादि-तस-बादगणं मणुसगईए सोदओ, एत्य पुण सोदय-परोदओ । जेणंद देसामासियमप्पणासुत्तं तेणेदे सव्वविसंसा एत्युवरुक्मेति । अण्णं पि भेददंसणद्वमुबरिमसुत्तं भणदि—

णविर विसेसो सादावेदणीयस्स मणजोगिभंगो ॥ १४३ ॥ ओराल्यिकायजोगीस अवंधगाभावादो ।

ओराल्यिमिस्सकायजोगीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय-चारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-

ही होता है। यह द्विस्थानिक सुत्रस्थित भेद है।

पकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, आताप, स्थावर, सुक्षम और साधारणका मनुष्यातिमें परोदय वन्ध होता है. परन्तु यहां स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। अपर्याप्तका मनुष्यातिमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, परन्तु यहां परोदय बन्ध होता है। यह एकस्थानिक सुत्रिस्थित भेद है।

इस समय अन्य स्त्रॉमें भेद न होते से उन्हें छोड़कर अष्टस्थानिक स्त्रिस्थित भेदको कहते हैं— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थातों में उपधात, परघात, उड्यूबास और अपयीजका मनुष्यगतिमें स्वोत्य परोद्य बन्ध होता है। परन्तु यहां स्वोत्य ही होता है। पंचेन्द्रिय जाति, अस और बाहरका मनुष्यगतिमें स्वोत्य बन्ध होता है, परन्तु यहां स्वोद्य-परोद्य बन्ध होता है। ज्विक यह अपणीस्त्र हैशामर्शक है, अत एवं ये सव बिदोयतायें यहां पायी जाती हैं। अन्य भी भेद दिखलानेके लिये उपरिम सन्न कहते हैं—

बिशेषता यह है कि साता बेदनीयकी प्ररूपणा मनोयोगियोंके समान है ॥ १४३ ॥
क्योंकि. औदारिककाययोगियोंमें साता बेदनीयके अवस्थकोंका अभाव है।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, असाता वेदनीय, बारह कवाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, छुगुप्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस दुगंडा-पंचिंदियजादि तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससं**ठाण-चण्ण-गंध-रस•कास-अगुरुअलहुअ-**उक्घाद-परघाद-उस्सास-पसत्थिवहायगइ-तस-बादर-पऊजत-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग−सुस्सर -आदेज्ज− जसिकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ?

11 488 11

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १४५ ॥

परघादुस्सास-पसत्थविद्यायगङ्-सुस्सराणमेत्थुदयामावादो वंघोदयाणं पुज्वावरकालन् संबंधिवोच्छेदविचारो णिथि । अवसेसाणं पयडीणं वंघोदया समं वोच्छिज्जंति, असंजदसम्मा-दिष्टिम्हि तदुभयामावदंसणादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरिर-वण्ण-गय-रस-फास-अगुरुब-रुदुभ-उवघाद-थिराथिर-सुद्दासुद्द-णिमिण-पंचेतराइयाणं सोदेओ वंथो, एत्थ धुवीदयत्तादो ।

व कर्मण करीर, समचतुरस्नसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरूरुष्ट, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविद्यायोगित, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक्झरीर, स्थिर. अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आंदेय, यशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्चक और कौन अबन्धक है ? ॥ १४४॥

यह सूत्र सुगम है।

मिष्यार्द्धाः, सासादनसम्यग्दिष्टं और असंयतसम्यग्दिष्टं बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं॥ १४५॥

परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगित और सुस्वरका यहां उदयाभाव होनेसे बच्घ व उदयक पूर्व और अपर काल सम्बर्धा ल्युच्छेदका विचार नहीं है। होच प्रक्रियोंका वस्त्र और उदय होनों साथ ख्युच्छित्र होते हैं, क्योंकि, असंयतसम्बरहष्टि गुणस्थानमें उन्न होनोंका अभाव देखा जाता है।

पांच बानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तेजल व कामेण रारीर, वर्ण, गम्ध, रस, स्वर्श, अगुरूलघु, उपघात, स्थिर, अस्थिर, ग्रुम, अग्रुम, निर्माण और पांच अक्तराय, इनका सोदय कम्ब होता है, क्योंकि, यहां थे धुवोदयी हैं। निद्रा, मचला, बारह कसाय, जिद्य-पराठ्य-नारसकसाय- इस्स-रदि-अरदि-साग-अय-दुगंच्छा-असादावेदणीय-उञ्चानीदाणं सोदय-परोदओ वंधो। कषमुण्यागोदवंधो सम्मादिष्टीसु परोदओ ? ण, तिरिक्षेसु पुत्र्वाडववंषवक्षेणुप्पणस्वश्यसम्मादिष्टीसु परोद्एणुवागोदस्स वंधुवरुंगादो । पुरिसवेद-सम्बउ-रससंठाण-सुभगादेज्ज-जमिक्तीणं भिच्छाइिह-सास्पेसु सोदय-परोदओ। असंजदसम्मादिष्टिव्दि सोदओ। पंचिदियजादि-तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं भिच्छाइिहिद्द सोदय-परोदएण वंधो। सासणसम्मादिहि-असंजदसम्मादिहीसु सोदएण । परघादुस्सास-पसरथविद्वायगइ-अप्परथ-विद्वायगद्-सुप्तराणं तिसु वि गुण्डाणसु परोदएण वंधो। अजसिकतीए मिच्छाविहि-सासणसमादिहीसु सोदय-परोदएण वंधो, असंजदसम्मादिहीसु परोदएण।

पंचणाणावरणीय-च्छदंसणावरणीय-चारसकसाय-भय-इगुंछा-तेजा-कम्मइयससर बण्ण-गंघ-रस-कास-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचतराइयाणं णिरंतरे। वंघो । असाद-इस्स-रदि-अरदि-सोग-जसिकेति-अजसिकिति-थिराथिर-मुभासुमाणं सांतरे। वंघो , तिसु वि गुणद्वाणेसु एगसमएणं वंधुवरमदंसणादो । पुरिसवेद-समचउरससंठाण-सुभगोदेज-उचागोद-पसत्थविद्वाय-

हास्य, राति, अराति, शोक, भय, जुगुष्सा, असाता वेदनीय और उश्चगोत्रका स्वोदय-परोतय वन्ध होना है।

शंका-सम्यग्दृष्टियोंमें उच्चगोत्रका परोदय बन्ध कैसे होता है ?

समाधान---यह शंका ठीक नहीं, क्योंकि, पूर्व आयुबन्धके वशसे तिर्पेचोंमें उत्तक हुए शायिकसम्यादियोंमें परोत्यसे उच्चगोत्रका बन्ध पाया जाता है।

पुरुपयेद, समजनुरस्नसंस्थान, सुमग, आदेय और यद्मकौर्सिका विष्याचिष्ठ व सासादनसम्पराष्टि गुणस्थानों सीत्रय-परोत्य बन्ध होता है । असंयतसम्पराष्टि गुणस्थानों सीत्रय-परोत्य बन्ध होता है । असंयतसम्पराष्टि गुणस्थानमें स्वोद्य प्रचार जाति, जस, बाहर, पर्योप्त और प्रसंकदारीप्ता मिध्यादि गुणस्थानमें स्वोदय-परोत्यसे बन्ध होता है । सासादनसम्पराष्टि और असंयतसम्पराष्टि गुणस्थानमें स्वोदयसे बन्ध होता है । परधात, उच्छवास, प्रदास्तविहायोगाति और सुस्वरक्षा तीनों ही गुणस्थानोंमें परोत्यसे बन्ध होता है । अयदाक्षीर्तिका मिध्यादि व सासादनसम्पराष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदयसे बन्ध होता है । अयदाक्षीर्तिका मिध्यादि व सासादनसम्यराष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदयसे बन्ध होता है ।

पांच झानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कपाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कामेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुल्यु, उपधात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरस्तर बच्च होता है,। असाता वेदनीय, हास्य, रित, अराति, शोक, पराक्तीति, अयाता होता है, चर्चाकीति, अयाता केदियर, अस्थिर, शुभ और अगुभका सान्तर गन्ध होता है, चर्चाकि, तीनों ही गुणस्थानोंमें हनका एक समयसे बन्धियाम देखा जाता है। पुरुषेद, समस्यतुरुक्ष-संस्थाल, सुम्मण, आदेष, उच्चकोच, प्रशस्त्राक्षित्व और सुस्वरुक्त सम्यात्व स्वरूक्त सम्रात्व स्वरूक्त सम्यात्व स्वरूक्त सम्यात्व स्वरूक्त स्व

गइ-सुस्सराणं मिन्छादिहि-सासणसम्मादिहीसु सांतरा बंधो, असंजदसम्मादिहीस् िणरंतरो । पंचिंदिय-तस बादर-पज्जत-पत्तेयसरीर-परघादुस्सासाणं मिन्छाइहीसु सांतर-णिरंतरो बंधो । कपं णिरंतरो १ तिरिक्ख-मणुस्मुप्पण्णसणक्कुमारादिदेवाणं णेरइयाणं च णिरंतरबंधुवरुंभादो । सासणसम्मादिहि-असंजदसम्मादिहीसु णिरंतरो ।

मिच्छाइडिस्स तेदाठीस पच्चया, ओघपच्चएसु ओराठियभिस्सकायजेगगविरित्त-बारसजोगाणमभावादो । सासणस्स अङ्गीस, असंजदसम्माइडिस्स वत्तीस पच्चयाः तेर्सि चेव जोगाणमभावादो असंजदसम्मादिङिगु त्थी-णवंसयवेदेहि सह बारसजोगाभावादो । एदाओ सव्यपयडीओ असंजदसम्मादिङिगो देवगइसंजुत्तं वंधीत । मिच्छाइडि-सासणसम्मा-दिङ्गिणो उच्चागोदं मणुसगइसंजुत्तं, सेसाओ सव्यपयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं वंधीत । देव-णिरयगईओ मिच्छादिङि-सामणसम्मादिङिगो किण्ण वंधीत ? ण, अपञ्जतद्वाए तार्सि बंधाभावादो ।

सासादनसम्यग्दिष्ट गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है, असंयतसम्यग्दिष्ट गुणस्थानमें निरन्तर बन्ध होता है। पंचेन्द्रिय, बस, बादर, पर्यान्त, प्रत्येकदारीर, परघान और उच्छ्वासका मिथ्यादिष्टयोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है।

शंका---निरन्तर बन्ध केसे हाता है ?

समाधान —क्योंकि. तिर्यंच व मनुष्योंमं उत्पन्न हुए सानत्कुमारादि देवों और नारकियोंके निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

सासादनसम्यग्दिष् और असंयतसम्यग्दिष्ट गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है।

मिध्यादिष्कं तेतालीस प्रत्यव होते हैं, क्योंकि, ओघ प्रत्ययोंमेंसे उसके औदा-रिकमिश्र काययोगको छोड़कर अन्य बारह योगोंका अभाव है। सासादनसम्प्यदिष्ठे अइतीस और असंयतसम्यदिष्ठे क्लीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उन्हों योगोंका यहां भी अभाव है, चूंकि असंयतसम्यदिष्टेंगोंमें की और नर्तुसक घेदोंके साथ बारह योगोंका अभाव है। इन सन प्रहृतियोंको असंयतसम्यदिष्ट देवालीस संयुक्त बांधते हैं। मिध्यादिष्ट व सासादनसम्यदृष्टि उच्चांतको मुदुष्यातिस संयुक्त, तथा शेष सन प्रकृतियोंको तिर्यगति और मुदुष्यातिस संयुक्त बांधते हैं।

शंका —देवगति व नरकगतिको मिथ्याटिष्टि और सासादनसम्यग्दिष्ट क्यों नहीं वांघते ?

समाधान -- नहीं बांधते, क्योंकि, अपर्याप्त कालमें उनका बन्ध नहीं होता।

तिरिक्ख-मणुस्ता सामी । षंधदाणं बंधविणइद्वाणं च सुगमं । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-षारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइय-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचतराइयाणं मिन्छाइडिम्हिं चउन्विहो वंधो । सेसेसु तिविहो, धुवबंधाभावादो । अवसेसाणं सव्वपयडीणं तिसु वि गुणद्वाणेसु बंधो सादि-अद्धवो ।

णिद्दाणिद्दा - पयळापयळा - थीणगिद्धि - अणंताणुवंधिकोध-माण-माया खोभ-इत्थिवेद : तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओराळियसरीर-चउसंठाण -ओराळियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओगगाणु-पुज्वी - उज्जोव-अप्पसंथिविद्दायगइ-दुभग-दुस्सर-- अणादेज्जं - णीचागोदाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ १४६ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी बंधा ! एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १४७ ॥

तिर्यंच व मनुष्य सामी हैं। बन्धाध्यान और बन्धविनपृश्धान सुगम हैं। पांच हानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कपाय, भय, जुगुन्सा, तैजस व कामेण शरीर, वर्णादिक चार, अगुन्तरसु उपधात, निर्माण और पांच अन्तराय. इनका मिध्यादिष्ट गुणस्थानमें चारी प्रकारका वन्ध होना है। शेष दे। गुणस्थानमें चारी प्रकारका वन्ध होता है, वर्षाक्ष क्रमाच है। शेष सव प्रकृतियोंका बन्ध सीनों हां गुणस्थानोंमें सादि व अधुव होता है।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचल, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी कोभ, मान, माया, लेभ, श्रीवेद, तिर्येग्गति, मनुष्यगति, औदास्किशरीर, चार संस्थान, ओदास्किशरांगोपांग, पांच संहनन, तिर्येग्गति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अपशस्तिविद्यायोगिति, दुर्भग, दुस्व₹, अनादेय और नीचगोत्रका कीन षन्धक और कीन अषन्धक है ? ॥ १४६॥

यह सूत्र सुगम है।

मिष्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं॥ १४७॥

१ प्रतिष्ठु '-मि॰काइडीहि 'इति पाठः । २ प्रतिष्ठु 'आदेब्ज 'इति पाठः ।

पदस्स अत्यो उच्चदे — अणंताणुवंधिचउनकं त्यीवेद चउसंठाण पंचसंघडण-दुमग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं चंघोदया सासणसम्माइडिम्डि समं वोच्छिज्जंति, ण मिच्छाइडिम्डिः अणुवरुंमादो । अवसेसाणं पयडीणमेत्युदयवोच्छेदो णत्यि, उविर तदुवरुंमादो । केवलो एत्थ बंघवोच्छेदो चेव, तस्स दंसणादो ।

थीणगिद्धितिय-तिरिक्खगइ मणुसगइपाओगगाणुपुञ्ची-उज्ञाव-अपसरथविद्यायाइ-दुस्सराणं परादओ वंघी, अपञ्चत्तपमु एदासिमुदयाभावादो । ओरालियसरीरस्स सोदओ वंघो,
एस्य धुवोदयत्तादो । ओरालियसरीरअंगोवंगस्स मिच्छाइडिम्हि सोदय-परोदओ वंघो, सासणे
सोदओ । अणंताणुवंधिचउकक-इत्थिवद-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-चउसंठाण-पंचसंघडण-दुभगअणादेञ्ज-णीचागोदाणं दोसु वि गुणदाणेसु सोदय-परोदओ वंघो, अद्धवोदयत्तादो ।
शीणगिद्धितिय-अणंताणुवंधिचउकक-ओरालियसरीराणं णिरंतरो वंघो, एत्य धुववंधित्तादो ।
इत्थिवद-चउसंठाण-पंचसंघडण-उज्ञाव-अपसरथविद्यायाइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं सांतरो
वंघो, एगसमएण वंधुवरसर्दसणादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइनाओग्गाणुपुज्वी-णीचागोदाणं

इस सृत्रका अर्थ कहते हैं— अनत्तातुविध्यतृष्क, स्त्रीवेद, चार संस्थान, पांच संहनन, दुर्भेग, अनोदेय और नीचगोत्रका बन्ध य उदय दोनों सासादनसम्यन्दिष्ट गुणस्थानमें एक साथ उद्गुटिक्षन होते हैं, मिध्यदिष्ट गुणस्थानमें नहीं, क्योंकि, वहाँ इनका स्युटकेष्ट पाया नहीं जाना। रोप प्रकृतियोंका यहां उदयन्युटकेष्ट नहीं है, क्योंकि, ऊपर उनका उदय पाया जाता है। उनका यहां क्यन वश्यन्युटकेष्ट ही है, क्योंकि, यह यहां देखनेमें आता है।

स्त्यानगृद्धित्रय, निर्युगाति व मृतुष्याति प्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविद्वायोगिति और दुस्तरका परातृय बन्ध हाता है, क्योंकि, अप्रयोग्तीमें हनके उत्त्यका
अमाव है। औदारिकशरीरका स्वोदय बन्ध हाता है, क्योंकि, यहां वह धृवोदयी है।
औदारिकशरीरांगोपांगका मिथ्यादिष्ट गुणस्थानमें स्वात्य परातृय बन्ध होता है,
सासादनमें स्वोद्य बन्ध होता है। अननतानुयिध्यनुष्क, स्रीवद, निर्युगाति, मृत्युगाति,
बार संस्थान, पांच संहनन, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रक्त होतां है। गुणस्थानोंमें
स्वोदय-परातृय बन्ध होता है, क्योंकि, य अधुवोदयी है। स्थानगृद्धित्रय, अन्ततानुविध्यस्वाद्य को औदारिकशरीरका निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुववन्धी हैं।
स्वीद्व, बार संस्थान, पांच संहनन, उद्योत, अश्वशस्तविहायोगति, दुर्भग, पुस्तर,
कीर अनदियका सान्तर वन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा
जाता है। विर्युगाति, विर्युगातिमायोगयानुपूर्वी और नीचगोत्रका बन्ध मिथ्याहिष्ट

१ आप्रतौ 'चउनिक्त्थी- ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु 'तत्थ- ' इति पाठः ।

मिच्छाइड्डिस्ट् बंधो सांतर-णिरंतरो । कथं णिरंतरो १ ण, ते उ-वाडकाइएसु सत्तमपुडवीए तिरिक्खेसुप्पण्णेरइएसु च णिरंतरबंधुवरुभादो । सासणसम्मादिड्डिस्ट् सांतरो, तत्थ तेसिसुववादाभावादो । [मणुसगइ] मणुसगइपाओग्गाणुपुर्व्वीणं सांतर-णिरंतरो । कथं णिरंतरो १ कर्ष णिरंतरे १ आणुदादिदेवसु मणुसेसुप्पण्णेसु दुविहरुणेसु सुहुत्तस्थेतो णिरंतरबंधुवरुभादो । ओराल्यिससीरअंगोवंगस्स मिच्छाइडिस्ट् बंधो सांतर-णिरंतरो । कथं णिरंतरो १ ण, सणक्कुमारादिदेव-णिरइएसु तिरिक्ख-मणुस्सुप्पण्णेसु अंतोसुद्वृत्तं णिरंतरबंधुवरुभादो । सासणसम्मादिडिस्ट् णिरंतरो ।

मिच्छाइडिम्डि तेदाठीस, सासणे अहतीसुत्तरपच्चया । सेसं सुगमं । तिरिक्खगड्ड-[तिरिक्खगड्-]पाओग्गाणुपुत्री-उज्ञोवाणं तिरिक्खगड्संद्धतं:।[मणुसगड्-]मणुसगड्पाओग्गाणु-

गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर होता है।

शंका — निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समापान — यह ठीक नहीं है, क्योंकि, तेज य वायुकायिकोंमें तथा तिर्येकोंमें उत्पक्ष हुए सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें उनका निरन्तर वन्ध पाया जाता है।

सासादनसम्यग्दिए गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां उनके उत्पादका अभाव है । [मनुष्यगित और] मनुष्यगितमयोग्यानुपूर्वीका सान्तरः निरन्तर बन्ध होता है।

शंका - निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, मजुष्योंमें उत्पन्न हुए आनतादिक देवोंमें दोनों गुणस्थानोंमें अन्तर्भुद्दर्ग तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है । औदारिकदारीरांगोपांगका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर होता है ।

शंका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह टीक नहीं, क्योंकि, तिर्येच व मनुष्योंमें उत्पन्न हुए सानत्कुमारादि देव और नारकियोंमें अन्तर्मुहर्न तक उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

सासादनसम्यग्द्रष्टि गुणस्थानमें उसका निरन्तर बन्ध होता है।

मिथ्यादृष्टि ग्रुणस्थानमें तेतालीस और सासादन गुणस्थानमें अइतीस उत्तर प्रत्यव होते हैं। शेष प्रत्ययप्रहृपणा सुगम है। [तियंगाति], तियंगतिप्रायोग्यासुर्वी और उद्योतका तियंगातिसे संयुक्त, [मनुष्यगति] और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मनुष्यगतिसे संयुक्त,

१ मतिषु ' मिण्कारहिं ना ' इति पाठः ।

पुर्व्वाणं मणुसगइसंजुत्तो, सेसाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो बंघो । तिरिक्ख-मणुसिम्ब्ब्बाइहि-सासणसम्मादिहिणो सामी । बंधद्धाणं बंधनिणदृहाणं च सुगमं । धीणगिद्धितय-अर्णताणुषंचि-चउक्काणं मिच्छाइहिस्हि बंघो चउच्चिहो । सासणे दृविहो, अणादि-धुवत्ताभावादो । सेसाणं पयद्यीणं सन्वत्थ सादि-अद्धवो ।

> सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १४८ ॥ _{सगमं} ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी सजोगिकेवली बंधा । एदे बंधा, अवंधा णिथ ॥ १४९ ॥

सादांबेदणीयस्स बंधारा उद्भे पुत्रं पच्छा [वा] वोच्छिण्णां ति विचारा णरिथ, चर्सु गुण्डाणेसु तदुभयवोच्छेदाणुवरुंभादा । मिच्छाइडि-सासणसम्माइडि-असंजदसम्माइडि-सजोगीसु बंधो सोदय-परोदश्रो, पगवनणणुदयत्तादा । मिच्छाइडि-सासणसम्माइडि-असंजदसम्मादिडीसु बंधो सांतरो, प्रगसमण्ण बंधुवरमदंसणादा । सजोगीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए

तथा शेष प्रक्रांतयोंका तिर्यगति व मनुष्यगतिसं संयुक्त बन्ध होता है। तिर्यंच और मनुष्य मिथ्यादिए एवं मामादनसम्पग्दिए सामी हैं। वन्याप्यान और वन्ध्रविनपृश्यान सुगम हैं। स्पानगृद्धित्रय और अननानुयन्धित्वनुष्कका वन्ध मिथ्यादिए गुणस्थानमें साप्ते मकारका होता है। सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका होता है, क्योंकि, यहां अनावि और अध्रव होता है। होरा प्रकृतियोंका वन्ध सर्वत्र सादि और अध्रव होता है।

साता वेदनीयका कोन बन्धक और कोन अबन्धक है ? ॥ १४८ ॥ यह सुत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि ओर सयोगकेवळी बन्धक हैं। य बन्धक हैं, अबन्धक नहीं है।। १७९॥

साता वेदनीयका उदय वन्ध्रमे पूर्वमे या पश्चान् व्युच्छित्र होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, चारों गुणस्थानोंमें उन दोनोंका व्युच्छेद पाया नहीं जाता। मिथ्याहरि, सासादनसम्यन्दि, असंयतसम्यन्दिए और सम्रोगकेवर्टी गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां पर्वानित होकर जन्यका भी उदय होता है। मिथ्याहादि सासा-दनसम्यन्दिष्ट और असंयतसम्यन्दिए गुणस्थानोंमें साता वेदनीयका सान्तर कन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे यहां उसका बन्धविद्याम देखा जाता है। सयोगकेवहियोंमें निरन्तर बंबामावादो । मिच्छाइडि-सासणसम्माइडि-असंजदसम्मादिडीसु जहाकमेण तेदाळीस-अइतीस-बत्तीसपच्चया । सजोगिन्दि एक्को चेव ओरालियमिस्सकायजोगपच्चओ । सेसं सुगमं । मिच्छाइडि-सासणसम्मादिडिणो दुगइसंज्ञतं, असंजदसम्मादिडिणो देवगहसंज्ञतं, सजोगिजिणा अगद्दसंज्ञतं बंधति । तिरिक्ख-मणुसगद्दमिच्छाइडि-सासणसम्मादिडि-जसंजदसम्मादिडिणो मणुसगइसजोगिजिणा सामी । बंधदाणं वंधविणइडाणं च सुगमं । सादावेदणीयस्स बंधो सव्यत्थ सादि-अद्धवो, अद्धवबंधितादो ।

मिच्छत्त-णउंसयवेद-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-चदुजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-णामाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ १५० ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १५१ ॥ एदस्स अत्थो बुच्चदे — वंशोदयाणमेत्य वोच्छेदो णत्थि, उवलंगादो । अथवा,

बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है। विध्यादाष्ट्र, सासादन-सम्प्रग्रहाष्ट्र आंत असंयतसम्प्रग्रहाष्ट्र गुणस्थानांमें यथाकमसं तेतालीस, अब्तीस आंत चलीस प्रत्यय होते हैं। सयोगकेवली गुणस्थानमें एक ही औदारिकमिश्रकाययोग प्रत्यय होता है। होष प्रत्ययप्रकृषणा सुगम है। विध्यादिष्ट और सासादनसम्प्रग्रहाष्ट्र हो गतियोंसे संयुक्त, असंयतसम्प्रग्रहाष्ट्र देवगतिसे संयुक्त, और सयोगी जिन अगतिसंयुक्त बांधते हैं। त्रियंगति व मनुष्यातिके विध्यादिष्ट, सासादनसम्प्रग्रहाष्ट्र और असंयतसम्प्रन्दाष्ट्र, तथा प्रमुख्यातिके सयोगी जिन स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। साता वेदनीयका बन्ध सर्वत्र सादि व अध्रव होता है, क्योंकि, यह अध्रवस्पी है।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु, मनुष्यायु, चार जातियां, ढुंडसंस्थान, असंप्राप्त-सुपाटिकासंहनन, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मका कीन सन्यक और कीन अवन्यक है ? ॥ १५० ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादिष्ट बन्धक हैं। ये बन्धक है, शेष अवन्धक हैं ॥ १५१ ॥ इस समका अर्थ कहते हैं— बन्ध और उदयका यहां व्युच्छेद नहीं हैं, क्योंकि, सिच्छन्त-बदुजादि-थावर-सुहुम-अपञ्जन्त-साहारणसरीराणमेत्य बंधोदया समं वोच्छिण्णा, अव-ससाणं पयडीणं पुञ्चं बंधो पञ्छा उदओ वोच्छिण्णो । आदावस्स एत्य उदओ णत्थि चेव । मिच्छन्तस्स सोदओ वंधो । आदावस्स परोदओ, अपञ्जनकाले आदावस्सुद्यामावादो । णउं-सयवेद-तिरिक्ख-मणुसाउ-चदुजादि-हुंडसंटाण-असंपत्तसेवहसंघडण-थावर-सुहुम-अपज्ञत्त-साहा-रणाणं सोदय-परोदओ वंधो । मिच्छत-तिरिक्ख-मणुसाउआणं वंधो णिरंतरो । अवसेसाणं सांतरो, एगसमएण वंधुवरसुवलंभादो । पञ्चया सुगमा । तिरिक्खाउ-चदुजादि-आदाव-थावर-सुदुम-साहारणाणं तिरिक्खगइसंसुनी, मणुसाउअस्स मणुसगइसंजुनी, सेसाणं तिरिक्ख-मणुस-गहसंजुनी वंधो । दुगइभिच्छाइही सामी । बंधदाणं वंधविणहृहाणं च सुगमं । मिच्छन्तस्स चदुविहो बंधो, सुवबंधितारो । सेसाणं सादि-अद्वो ।

देवगइ-वेजिवयसरीर-वेजिव्ययसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणु-पुर्व्वीतित्थयरणामाणं को वंधो को अवंधो ? १५२ ॥

सुगमं ।

षे दें लों पाये जाते हैं। अथवा मिथ्यान्व, चार जातियां, स्थावर, मृहम, अपर्यान्त और साधारणदारीर, इनका वन्ध और उदय दें लों यहां साथमें न्युव्छिन्न होते हैं। दोष मृहित्यं का पूर्वेम वन्ध और पश्चात् उदय उद्देश होता है। आगाप महित्रका उदय यहां है ही नहीं। मिथ्यान्य महित्रका स्वेदय वरात होता है। आगापण महित्रका उदय यहां है ही नहीं। मिथ्यान्य महित्रका स्वेदय वरात होता है, क्योंकि, अपर्योग्त कालमें आतापकं उदयका अभाव है। नपुंमकंवर, तिर्थेगायु, मृतुष्वायु, ज्ञार जातियां, हुण्डसंस्थान, असंप्रान्तस्थारिक सांवरण सहस्म, अपर्योग्त और साधारण, इनका सांदय-पादेश्य वन्ध होता है। मिथ्यान्व, तिर्थेगायु और मृतृष्यायुका वन्ध तिरस्तर होता है। हो। प्रेम महत्यायुका वन्ध तिरस्तर होता है। हो। या महत्वयांका सात्तर वन्ध होता है, स्थांकि, एक समयसं इनका वन्धवाम पाया जाता है। मृत्यय पुष्म हैं। तिर्थेगायु, चार जातियां, आताप, स्थावर, सहस्म और साधारण, इनका निर्थमतिसे संयुक्त, मृत्यायुका मृत्यमाकेसे संयुक्त, तथा दोष मृत्वत्योंका तिर्थमति व मृत्यप्य दो गतियोंक मिथ्यादिष्ट स्थामी हैं। वन्धाप्यान और वन्ध्यवनप्टस्थान सुगम है। तिर्थेव व मृत्याव वन्ध चारों प्रकारका होता है। क्याप्यान आर वन्ध्यवनप्टस्थान सुगम है। विर्येव व अष्टुय होता है। होप प्रकृतियोंका वन्ध सारी व अष्टुय होता है।

देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोगांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और तीर्थकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १५२ ॥

बह सूत्र सुगम है।

असंजदसम्मादिट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥१५३॥

एदस्तत्यो बुच्चदे — एत्थ षेषा उद्यो वा पुत्रं पच्छा वा बोच्छिज्जिदि ति पित्रखा णित्य, उदयाभावादो । णविर तित्थयरस्स पुत्रं वंघो पच्छा उदयो बोच्छिज्जिदि । एदाबो पंच वि पयडीओ परादएण बन्झित, ओरालियमिस्सकायजागिम्म एदासिमुदयिवराहारा । णितंतरा बंघो, पडिवक्खपयडीणं बंघाभावादो । असंजदसम्मादिष्टिम्हि एदार्सि बंघस्स बत्तीसुत्तरपच्चया, ओषपच्चएसु बारसजोगित्य-णबुंसयवेदाणमभावादो । सेसं सुगमं । चडण्हं पयडीणं तित्थिय-स्प्त चणुसाइ-असंजदसम्मादिष्टी सामी । तित्थयरस्स मणुसा चेव, तिरिक्खेसु उप्पण्णाणं तत्थुपत्तिपाओग्गसम्माइटीण तित्थयरस्स बंघाभावादो । गइसंज्ञतत्तमभणिय किमिदि सामित्तं परुविदं ? ण, देवगइसंज्ञतं बन्झंति ति अणुत्तसिद्धीदो । बंधदाणं बंधविणहृद्दाणं च सुगमं । सादि-अद्धवो बंघो, अद्धवंधिताहो ।

वेउव्वियकायजोगीणं देवगईए' भंगो ॥ १५४॥

असंयतसम्यग्दष्टि चन्धक हैं। ये चन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं॥ १५३॥

हमका अर्थ कहते हैं — यहां वन्ध व उद्य पूर्वेमें अथवा पश्चात् ब्युच्छिन्न होता है, यह परीक्षा नहीं है; क्योंकि, यहां उन मकृतियोंके उदयका अभाव है। विशेष इतना है कि तीर्थकर मकृतियांके उदयका अभाव है। विशेष इतना है कि तीर्थकर मकृतियां परोदयसे वैधती हैं, क्योंकि, औदारिकिमिश्रकाययोगमें इनके उदयका विश्व हैं। विराज्य हम्म होता है, क्योंकि, कि मतियक्ष मकृतियोंक कन्धका यहां अभाव है। निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष मकृतियोंके कन्धका यहां अभाव है। असंयतसम्यग्दिष्ट गुणस्थानमें इनके वन्धक वत्तीस उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि, ओधमत्ययोमिसे वारह योग, स्त्रेविद और नपुंसकेवदका अभाव है। शेष प्रत्ययमक्ष्पणा सुगम है। चार प्रकृतियोंके तिर्यंच व मनुष्यातिके असंयतसम्यग्दिष्ट सामी हैं। तीर्थकर-प्रकृतिके मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, निर्यंचोंमें उत्पन्न हुए वहां उत्पक्तिके योग्य सम्यग्दिष्टीके तीर्थंकर प्रकृतिक मनुष्य ही स्वामी हैं। क्योंकि, निर्यंचोंमें उत्पन्न हुए वहां उत्पक्तिके योग्य सम्यग्दिष्टीके तीर्थंकर प्रकृतिक वस्त्र नहींका वस्त्र वहाँका वहाँका वहाँका वस्त्र वहाँका वहाँका वस्त्र वहाँका वस्त्र वहाँका वस्त्र वस्त्र वहाँका वस्त्र वस्त वस्त्र वस्त वस्त्र वस

शंका—गतिसंयुक्तताको न कहकर स्वामित्वकी प्ररूपणा क्यों की गयी है ?

समाधान — चूंकि उक्त प्रष्टतियां देवगतिसे संयुक्त बंधती हैं, यह विना कहे ही सिद्ध है, अतः गतिसंयोगकी प्ररूपणा नहीं की।

बन्धाच्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं। सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुवबन्धी प्रकृतियां हैं।

वैक्रियिककाययोगियोंकी प्ररूपणा देवगतिके समान है ॥ १५४ ॥

१ प्रतिषु 'देवगईणं ' इति पाठः ।

एदमप्पणासुन्तं देसामासियं, तेणेदेण सुइदत्थपरूवणा कीरदे— पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंच्छा-मणुसगइ-पंचिदियजादि-ओरालिय तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग वज्ञरिसह-संघडण-वण्णचउक्क-सणुसाणुपुट्वी-अगुरुअलहुअचउक्क-पसत्थविद्दायगइ-तसचउक्क-थिराथिर-सुद्दासुह-सुमग-सुस्सर-आदेज्ज-जसिकिति-अजसिकिति-णिमिणुच्चागोद-पंचतराइयपयडीओ एत्थ चदुसु गुणहाणेसु वंथपाओग्गाओ । एत्थ पुच्वं वंथो उदशो वा वोच्छिण्णो ति विचारी परिथ, मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगावंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणु-पुत्र्वी अजसिगित्तीणसुद्याभावादो सेसाणं पयडीणसुदयवोच्छेदाभावादो च ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पॉचिंद्यजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-स-फास-अगुरुअटहुअ-उवघाद-परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुद्दामुह-णिभिण-पंचंतराइयाणं सोदजो वंधो, वेउव्वियकायजोगम्हि एदासि धुवादयत्तदंसणादो । णविर सम्माभिच्छाइड्डि मोचूण अण्णत्य उस्मासस्सं सोदय-परोदजो वंधो, सरीरपञ्जतीए

यह अर्पणास्त्र देशामर्शक हैं, इसिलये इससे स्वित अर्थकी प्रक्षणण करने हैं— पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वदनीय, बारह कराय, पुरुष्त्र, सार, रति, अरति, श्रोक, अय, जुगुष्त्रा, मनुष्याति, पंचित्रिय ज्ञाति, अविदारिक, तेजस व कार्मण शरीर, समजवुरक्षसंख्यान, औदारिकशरीरांगांपांग, वज्रपंभसंहतन, वर्णादिक चार, मनुष्यानुपूर्वा, अगुरुल्यु आदिक चार, प्रशस्तिवहायांगांति, अस आदिक चार, ध्रियर, अस्थिर, शुभ, अगुरु, सुभग, सुस्वर, आदेय, पशक्तिति, अस आदिक चार, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अगुरु, सुभग, सुस्वर, अदिय, पशक्तिति, अस्यकार्ति, तिनीला, उच्चांगिक और पांच अन्तराय प्रकृतियां यहां चार गुणस्थानों से बन्धक योग्य हैं। यहां पूर्वमें बन्ध या उदय शुन्छिक्ष होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, मनुष्यगति, ओदारिकशरीर, औदारिकशरीर।गोपांग, वज्रपंभसेहनन, मनुष्यगति, मनुष्यगति, आयोर हो और अथशकीर्ति, हनका उदयाभाव तथा दोष प्रकृतियोंक उदयन्यञ्चलेहरू आभाव है।

पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचीन्द्रय जाति, तेजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुल्य, उपधात, परधात, उच्छ्वास, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका स्वीद्य वन्ध होता है, क्योंकि, वैकियिककाययोगर्मे इनका धुवोदय देखा जाता है। विशेष इतना है कि सम्यग्मिध्यादृष्टिको छोड़कर अन्धन उच्छ्वासका स्वोदय परोद्य बन्ध

१ प्रतिपु ' बस्सास ' इति पादः

पञ्जक्स अंतोब्रहुत्तं गंत्ण आणापाणपञ्जतीए पञ्जतयद्स्स उस्सासस्रोद्यदंसणादो । णिदा-वयटा-सादासाद बारसकसाय-सत्तणोकसाय-समचउरससंठाण-पसत्यिवद्वायगद्द्यमा- सुस्सर-आदेज्य-जसिकिति-अञ्चसिकिति-उञ्चागोदाणं सोदय-परेदओ वंधो, अमुद्दाणं णरद्वप्रसु उदयदंसणादो । मणुसगद्द-ओराहियसरीरअंगोवंग-वञ्जरिसद्वसंघडण-मणुसगद्द्योगमाणुपुर्व्वीणं परेद्दे ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-ओराठिय-तेजा कम्मह्य-सरीर-षण्ण-गंध-रस-फास- अगुरुवलहुव- उवधाद -परधादुस्सास-बादर-पञ्जत-पत्तेयसरीर--णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधित्तादो । सादासाद-हस्स-रिद्दे-अरिद-सोग--थिराथिर-सुद्दासुद्द-जसिकित्ति-अजसिकत्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो । पुरिसवेद-समच उरससंठाण-वञ्जरिसहसंघडण-पसत्थविद्दायगइ-सुभग-सुस्सर आदेञ्ज्जण्यागोदाणं मिच्छाइडि-सासणसम्मादिद्वीसु सांतरा बंधो, पडिवक्खपयडिवंधासभवादो । सम्मामिण्छादिद्व-असंजदसम्मादिद्वीसु णिरंतरा, पडिवक्खपयडिवंधासगवादो । पंचिंदियजादि-ओराठियसरीर-

होता है, क्योंिक, हारीरपर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवके अन्तर्भुहर्त जाकर आनप्राणपर्याप्तिसे पर्याप्त होनेपर उच्छ्वासका उदय देखा जाता है। निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, बारह कपाय, सात नेक्ष्याय, समजनुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगित, सुभम, सुस्वर, आदेय, यदाकीर्ति, अयदाकीर्ति और उच्चगेत्र, हनका स्वोदय-परीदय कथ्य होता है, क्योंिक, नाराकवर्षेत्र अगुभ प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है। मनुष्यगति, औदारिकदारीरांगोपांग, वक्रपंत्रसंहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदय बच्छ होता है, क्योंिक, वेदिश्यककाय्योगमें हनके उदयका विरोध है।

अंगोनंग-तसणामाणं मिच्छाइडिन्द्रि सांतर-णिरंतरो । कथं णिरंतरो ? ण, णैरहएसु सणक्कु-मारादिदेवेसु च णिरंतरबंधुवठंमादो । सासणसम्मादिडि-सम्मामिच्छादिडि-असंजदसम्मादिडीसु णिरंतरो, पडिवक्सवपयडिबंधामावादो । मणुसगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुर्व्वीणं मिच्छाइडि-सासणसम्मादिडीसु सांतर-णिरंतरो । कथं णिरंतरो ? ण, आणदादिदेवेसु णिरंतरवंधुवठंमादो । सम्मामिच्छाइडि-असंजदसम्मादिडीसु णिरंतरो, पडिवक्सवपयडिवंधामावादो ।

मिच्छाइही एदाओ पयडीओ तेदाठीसपच्चएहि, सासणी अहतीसपच्चएहि, सम्मामिच्छाइडि-असंजदसम्मादिडिणी चोत्तीसपच्चएहि बंधति, मृठोपपच्चएसु बारसजोग-पच्चयामावादी । सेसं सुगर्म ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुत्र्वी–उच्चागो(दाणि मिच्छाइडि-सासणसम्माइडि-सम्मामिच्छाइडि-असंजदसम्मादिडिणो मणुसगइमंजुतं। अवसेससन्वपयडीओ मिच्छाइडि-

जाति, औदारिकदारीरांगोपांग और त्रस नामकर्मका मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शुंका - निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि नारकियों और सनत्कुमारादि देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

सासादबसम्यन्दष्टि, सम्याग्मध्यादष्टि और असंयतसम्यन्दष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। मनुष्यगति और मनुष्यगतिष्ठायोग्यानुपूर्वीका सिध्यादष्टि व सासादनसम्यन्दष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका--निरन्तर बन्ध केसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि आनतार्द देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध देखा जाता है।

सम्यग्मिथ्याद्दष्टि और असंयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंक बन्धका अभाव हैं।

मिष्यादृष्टि इन प्रकृतियोंको तेनालीस प्रत्ययोंसे, सामादनसम्यग्दृष्टि अङ्गीस प्रत्ययोंसे, तथा सम्यग्निष्यादृष्टि और अस्वयनसम्यग्दृष्टि चौतीस प्रत्ययोंसे बांधते हैं। क्योंकि, मुलोघ प्रत्ययोंमें बारह योग प्रत्ययोंका यहां अभाव है। शेप प्रत्ययमरूपणा सुगम है।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रको भिष्यादिष्ट, सासादन-सम्यग्दिष्ट, सम्यग्मिष्यादिष्ट और असंयतसम्यग्दिष्ट मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। श्रेष सासणसम्मादिष्टिणो तिरिक्ख मणुसगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छादिष्टि—असंजदसम्मादिष्टिणो मणुसगइसंजुत्तं वंधति ।

देव-गरइया सामी। बंधद्धाणं सुगमं। बंधविणासो णास्य। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुर्गुछा-तेजा-कम्मइय-वण्णचउककः अगुरुअरुहुअ-उवधाद— णिमिण-पंचतराइयाणं मिच्छाइडिम्डि चउन्त्रिहो बंधो। अण्णस्य तिविहो, धुवबंधित्ताभावादो । सेससन्वपयडीओ सन्वत्य सादि-अद्धवाओ।

थीणगिद्धित्तय-अणंताणुवंधिचउक्क-इत्थिवेद्-तिरिक्खाउ-तिरिक्खाउ-चउसंप्रज्ञण-चउसंप्रडण-तिरिक्खगइराओगगाणुपुन्ती-उज्जोव अप्पसत्थिविद्यायाइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि बेहाणियपयडीओ । एदासु अणंताणुवंधिचउक्कस्स वंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणिम तदुभयाभावंदंसणादो । इत्थिवेद अप्पसत्थिविद्यायाइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं पुन्यं वंथो पच्छा उदओ वोच्छिज्जिदि, सासणसम्मादिष्टि-असंजदसम्मादिद्वीसु वंभोदयवोच्छेददंसणादो । अवसेसाणं ऐसा परिक्खा णित्य, उदयाभावादो ।

सव प्रकृतियोंको मिथ्यादष्टि व सासादनसम्यग्दष्टि तिर्यग्गति एवं मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा सम्यग्मिथ्यादष्टि और असंयनसम्यग्दष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं।

देव और नारकी स्वामी हैं। वन्धाध्वान सुराम है। वन्धविनाद्य है नहीं। पांच हानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, वारह कयाय भय, जुगुप्ता, तेजस व कार्मण दारीर, वर्णादिक सार, अगुरूक्यु, उपघात निर्माण और पांच अन्तरायका मिध्यादि गुणस्थानमें वारों प्रकारका वन्ध होता है। अन्य गुणस्थानोंम उनका तीन प्रकारका वन्ध होता है। अन्य गुणस्थानोंम उनका तीन प्रकारका वन्ध होता है, क्योंक, यहाँ इनके भ्रुव वन्धका अभाव है। दोप सब प्रकृतियां सर्वत्र सादि व अभ्रुव वन्धवाठी हैं।

स्त्यानगृक्षित्रय, अनन्ताजुविश्यजु-क, स्नीवेद, तिर्यगायु, तिर्यगाति, ज्ञार संस्थान, जार संस्थान, जार संस्थान, जार संस्थान, जार संस्थान, त्यार संस्थान, त्यार संस्थान, व्यार संस्थान, व्यार संस्थान, व्यार संस्थान प्रकृतियां हैं। इनमें अनन्ताजुविश्यजुक्का वन्ध और उदय दोनों साथमें व्युक्तिश्रव होते हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है। स्नीवेद, अम्रशस्तविहायोगित, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका पूर्वेमें वन्ध और प्रक्षात्र उदय व्युक्तिश्च होता है, क्योंकि, सासादनसम्भवश्चि और असेवतसम्भवश्चि गुणस्थानमें कमारः दुनके वन्ध और उदयका व्युक्तेष्ठ देखा जाता है। श्रेष मक्कितयोंके यह परीक्षा नहीं है, क्योंकि, उनका उदयानाव्य है। श्रेष

१ प्रतिषु ' तदुसयभाव- ' इति पाढः ।

अर्णताणुर्विच वजक - इत्यिवद - अप्यत्तविहायगइ - हुममः दुस्सर-अणादेज्य - णीचा-गोदाणं सोदय-परोदओं वंघो, वजिव्यकायजीगामि पडिवक्खुत्यदंसणादो । अवसेसाणं पयडीणं परोदओं वंघो, तासिमेत्युदयिरोहादो । थीणगिद्धितय-अणंताणुर्विच उक्क-तिस्चिजज्ञाणं णितंतरे वंघो, एगसमएण वंधुत्रसामावादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइ-पात्रोमाणुपुज्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरे वंघो । कर्ष णिरंतरे १ ण, सत्तमपुद्धिणेदर्एसु णिरंतर्त्वधुवरुमादो । अवसेसाणं पयडीणं वंघो सांतरे, एगसमएण वंधुवरमदंसणादो । पच्चया सुगमा । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओगगाणुपुज्वी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइ-संस्रुतं, सेससव्यपडीओं तिरिक्ख-मणुसगद्दसंस्रुतं वंघति । देव-णरहया सामी । वंधद्धाणं वंघविणहृद्धाणं च सुगमं । सत्तण्हं धुवपयडीणं मिल्छाइट्टिस्ट चउन्विहो वंघो । सासणे दुविहो वंघो ।

- मिच्छत्त-णद्वंसयवेद-एर्ड्रद्यजादि-हंडसंठाण-असंपत्तसंबद्दसंघडण-आदाव-धावर-पयडीओ मिच्छाइडिणा बज्जमाणियाओ । एत्य मिच्छत्तस्स बंधोदया समं बैच्छिज्जेति,

अनन्तानुबन्धिवनुष्क, स्वीवद, अप्रशस्त्तविहायोगाति, दुर्भग, दुस्वर. अनादेय और नीवगोत्रका स्वेत्रय परोदय बन्ध हाता है, क्यांकि, वैक्रियिककाययागमें इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है। द्वार प्रकृतियोंका परोदय बन्ध हाता है, क्यांकि. यहां उनके उदयका विरोध है। स्थानपृद्धित्रय, अनन्तानुर्याध्यवक्ष और निर्यगायुका निरन्तर क्य होता है, क्योंकि, एक समयस इनके वन्धविश्रामका अभाव है। तियंगाति, विर्यगातिमायोग्यानुपूर्वी और नीवंगोत्रका सान्तर-निरन्तर वन्ध होता है।

शंका -- निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान :—यह शंका ठीक नहीं, क्योंकि, सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें उनका निरस्तर बन्ध पाया जाता है ।

शेष प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, फ्योंकि, एक समयसे उनका बन्ध-विश्राम देखा जाता है। प्रत्यय सुगम हैं। तिर्यगायु, तिर्यगाति, तिर्यगति वायोग्यायुप्तीं और उद्योतको तिर्यगातिसे संयुक्त, तथा शेष सब प्रकृतियोंको तिर्यगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधने हैं। देव व नारकी स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनएस्थान सुगम हैं। सात धुवमकृतियोंका मिथ्यादि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। सासाइनमें दो प्रकारका बन्ध होता है।

मिष्यात्व, नपुंसकवेद, एकेन्द्रियजाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्ताख्पाटिकासंहनन, आताप और स्थावर, ये मिष्याद्यक्ति द्वारा वथ्यमान प्रकृतियां हैं। यहां मिष्यात्वका कथ और उदय दोनों मिष्याद्यप्ति गुणस्थानमें साथ ही श्रुष्टिक होते हैं, क्योंक, उपरिम

१ अप्रती ' बंधुवरमानामावादी ' इति पाठः ।

उविरमगुणेसु तदुभयाणुनर्जभादो । णबुंसयनेब्-हुंडसंठाणाणं पुर्व्वं बंघो पच्छा उद्यो विच्छिज्जिदि, भिच्छाइहि-असंजदसम्मादिहीसु तदुभयाभावदंसणादो । सेसासु एसो विचारो णित्य, उदयाभावादो । मिच्छत्तस्स सोदएण, णबुंसयनेद-हुंडसंठाणाणं सोदय-परोदओ, अन्तेससाणं परोदओ बंधो । मिच्छत्तस्स बंधो णिरंतरा, अन्तेससाणं सांतरा । पच्चया सुगमा । णविर एइंदियजादि-आदान-थानराणं णबुंसयनेदपच्चओ अन्णेदच्जो, णेरइएसु एदार्सि बंधाभावादो । मिच्छत्त-णबुंसयनेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेन्द्रसंघडणाणि तिरिच्छ-मणुसगइसंज्ञतं, अनसेसाओ पयडीओ तिरिच्छन्यइसंज्ञतं बच्छति । एइंदियजादि-आदान-थानराणं बंधस्स देव सामी, अनसेसाणं बंधस्स देव-णेरहया सामी । बंधदाणं बंधनिणहुहाणं च सुगमं । मिच्छत्तस्य ज्विन्देही बंधो, अनसेसाणं सादि-अद्वो ।

मणुसाउअस्स बंधो उदयादो' पुन्नं पच्छा वा बोच्छिज्ञदि ति णत्थि [विचारो], संता-संताणं सण्णियासविरोहादो। परोदओ बंधो, वेउच्चियकायजोगाम्म मणुसाउअस्स उदयविराहादो। णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। मिच्छाइडि-सासणसम्माइडि-असंजदसम्मादिडीणं

गुणस्थानों में ब दोनों पाये नहीं जाते । नपुंसकवेद और हुण्डसंस्थानका पूर्वमें बन्ध और प्रभात उदय खुण्डिक होता है, क्योंकि, मिध्यादि और असंयतसम्यन्दि गुणस्थानमें कमसे उन दोनोंका अभाव देखा जाता है। शेष प्रकृतियों में यह विचार नहीं है, क्योंकि, नक्षाते उन दोनोंका अभाव देखा जाता है। शेष प्रकृतियों में यह विचार नहीं है, क्योंकि, जनका उदयाभाव है। मिध्यात्वका देखें दूर्य से नुध्य और हुण्डसंस्थानका स्वीद्य परोदयसे, तथा शेष प्रकृतियोंका परोदयसे वन्ध होता है। मिध्यात्वका वन्ध निरन्तर और शावा प्रकृतियोंका साम्तर होता है। प्रत्यय सुगम हैं। विशेष हतना है कि एकेन्द्रिय-जाति, जाताप और स्थायरके प्रथा में प्रकृतियों नार्पक्षकेद प्रस्थयकों कम करना चाहिये, क्योंकि, नारिकीयों हा समाव्यात्वका विशेष हाना होते प्रकृतियां नारिकीयों हे। मिध्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और अस्तियां विशेषातिसे संयुक्त वंधती हैं। एकेन्द्रियजाति, आताप और स्थायरके वन्धके देव स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंक वन्धके देव स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंक वन्धके देव स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंक सन्धके देव स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंक सन्धके देव स्वामी हैं। श्राम प्रकृतियोंका सादि व अभुव होता है। प्रिध्यात्वका बन्ध सारें। प्रकृतियांका, तथा शेष प्रकृतियोंका सादि व अभुव होता है।

मनुष्यापुक्ता बन्ध उदयसे पूर्व या पक्षात् व्युव्छित्र होता है, यह विचार यहां नहीं हैं, क्योंकि, सन् (बन्ध) और असन् (उदय) की तुञ्जाका विरोध है। परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, बैक्रियिककाययोगमें मनुष्यायुक्ते उदयका विरोध है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे हसके बन्धविभ्रामका अभाव है। मिथ्याडाहे, सासादनसम्यग्डाहे और असंयत-

१ सप्रती ' वंशोदयादो ' इति पाठः ।

तेदात्वीस-बहत्तीस-चोत्तीसपन्चया । मणुसगद्दसं<u>ज</u>त्तं । देव-णेरऱ्या सामी **। अद्धार्ण प्रिन्कादिहि-**सासणसम्मादिहि-असंजदसम्मादिहि त्ति।बंधविणासो णत्थि।सादि-अद्धुवो बंधो।

तित्थयरस्स भंभोदयभेन्छेदसिणियासो णरिथ, संतासंताणं सिण्णयासिविरोहादो । स्रोहको भंभो, मणुसगई मोनूणणणत्युदयाभावादो । णिरंतरी मंभी, एगसमएण मंधुवरमाभावादो । स्च्या सुगमा । मणुसगदसंजुत्ते । देव-णेरइया सामी । असंजदसम्मादिही अद्धाणं । बंधविणासो मस्यि । सादि-अद्धवो भंभो ।

वेउब्वियमिस्सकायजोगीणं देवगइभंगों ॥ १५५॥

एदस्स देसामासियअपणासुत्तस्स अत्यो बुज्बदे । तं जहा — पंचणाणाबरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-चारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-अय-हुगुंॐ-मणुसगड्-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंद्राण-ओरालियसरीरअंगोवंगे-वज्ज-रिसहसंघडण-चण्णचडक्क-मणुस्साणुपुष्वि-अगुरुवल्डुव-उवघाद-परघादुस्सास-प्सत्यविहायगड्-

सम्यग्दिष्टिके क्रमसे तेताळास, अड्तीस व चौंतीस प्रत्यय होत हैं । मनुष्यगतिसं संयुक्त वन्त्र होता है। देव व नारकी स्वामी हैं । वन्धाध्वान मिध्यादिष्ट, सासादसमप्रयदिष्ट व असंयतसम्यग्दिष्ट तक है । वन्धविनादा हे नहीं । सादि व अध्रुव वन्ध्र होता है ।

तीर्यंकत्मकृतिके बन्ध व उदयके व्युष्डेंद्रकी सहजाता नहीं है, क्योंकि, सन् और असत्की तुळनाका विरोध है। एरोदय बन्ध होता है, क्योंकि, मनुष्यातिको छोड़कर हुसरी जगह तीर्यंकत्मकृतिके उदयका अभाव है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयबेशमाका अभाव है। प्रत्य बन्ध होता है, क्योंकि, चक्क बन्धविश्रमाका अभाव है। प्रत्य बन्ध होता है। वेद ब नारकी स्वामी हैं। क्याप्यान असंयतसम्यन्हिए गुणस्थान है। बन्ध-विनाश है नहीं। सादि व अध्रव बन्ध होता है।

वैिकियिकमिश्रकाययोगियोंकी प्ररूपणा देवगतिके समान है ॥ १५५ ॥

इस देशासर्शक अर्पणास्त्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— पांच इजाचरणीय, ग्रह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेतृनीय, वारह कपाय, पुरुषवेद, इस्य, रात, अराते, शोक, भय, जुगुष्ता, मगुष्यगति, पंचेन्द्रियज्ञाति, औदारिक, तेजस व कार्मण झरीर, समजनुरुस्नसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वस्त्रपंभसंहतन, वर्णादिक चार, मजुष्याज्ञपूर्वी, अगुरुख्यु, उपघात, परधात, उच्छ्वास, प्रशस्तविद्वायोगाति, वस्त्र-

१ अ-आप्रत्यीः ' देवगईण भंगो ' इति पाठः ।

२ अप्रतो 'दुगुंकाणं 'इति पाठः।

त्रतिष्ठ ' ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवग ' इति पाठः ।

तसः बादर-पञ्जत-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुमासुम-सुमग सुस्सर-आदेज्व-असकिति-अजसकिति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ तीहि सुणहाणेहि बज्झमाणियाओ हिवय परुचणा कीरदे-- बंधोदय-वोच्छेदविचारी णारिध, बंधेणुदएणुभएहि वा विरह्निद्गुणहाषाणसुद्धिः अणुवरुंभादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिदियजादि-तेजा-कम्मद्दयसरीर-कण्ण-गंप-रसफास अगुरुवलहुव उवधाद-तस बादर-पञ्जत पत्तयसरीर थिराथिर सुद्दासुद्द णिमिण-पंचेतराद्दयाणं
सोदओ वंधो, एत्य धुवोदयत्तादो । णिदा-पयला-सादासाद-वारसकसाय-छणोकसाय-सुरिसवेदाणं
पंधो सोदय-परेदओ, उमयथा वि वंधविरोद्दाभावादो । समचउरससंद्रणण-सुभगादेज्जजसिकिति-उच्चागोदाणं वंधो मिच्छाइडि-असंजदसम्मादिद्वीसु सोदय-परेदओ । सासणें
सोदओ, अपञ्जतद्धाए णेरइएसु सासणाणमभावादो । मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीर-अंगोवंग-वज्जिरसहसंघडण-मणुस्साणुपुन्व-परधादुस्सास-पसत्यविद्वायगइ-सुस्सराणं परोदओ पंधो, एत्थ एदासिमुदयविरोदादो । अजसिकतीए मिच्छाइडि-असंजदसम्मादिद्वीसु सोदय-

वादर, पर्याप्त, प्रत्येकदारीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यद्यकीर्ति, अयदाकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अस्तराय, इन तील शुणस्थानवर्षी वैकिथिककाययोगियोंके द्वारा वध्यमान प्रकृतियोंको स्थापित कर प्रकृपणा करते हैं— इनके वम्भ व उदयके व्युच्छेदका विचार यहां नहीं है, क्योंकि वन्ध, उदय या दोनोंके रहित शुणस्थान ऊपर पांच नहीं जाने।

पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण दारीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलपु, उपघात, त्रस, वादर, पर्यारत, प्रत्येकदारीर, स्थिरः अस्थिर, ग्रुम, अग्रुम, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका स्वोद्य बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये भुवोद्दर्श हैं। निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, बारह कपाय, छह नोकपाय और पुरुपवेदका बन्ध स्वोद्य-परोद्य होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी हनेक बन्धविरोधका अभाव है। सम्बनुरुलसंस्थान, सुभग, आदेय, यहार्किती और उच्चेगात्रका वन्ध सिध्यादृष्टि और असंयत्तसम्यग्दृष्टि गुग्वस्थानोंके स्वोद्यप्रदेश एवंद्रव होता है। सासादन गुणस्थानका अभाव है। मनुष्याति औदारिकरारीर, औदारिक हार्राक्षेति सासादन गुणस्थानका अभाव है। मनुष्याति औदारिकरारीर, लोदारिक हार्रारांगोगांग, वक्षप्रसंहनन, मनुष्यापुर्वी, परधात, उच्छ्वास, प्रशस्तविद्वायोगति और सुस्वरका परोद्य बन्ध होता है, क्योंकि, ग्रंपानका विरोध है। अयश-कीर्तिका प्रिध्यादृष्टि और असंयत्वसम्बन्ध होता है। स्वस्वरक्ष परोद्य वन्ध होता है। स्वस्वरक्ष परोद्य क्ष्य होता है। स्वस्वरक्ष परोद्य क्ष्य होता है। स्वस्वरक्ष परोद्य अपदान क्ष्य होता है। स्वस्वरक्ष परोद्य अस्य होता है। स्वस्वरक्ष परोद्य अस्थ होता है। स्वस्वरक्ष परोद्य अस्य होता है। स्वस्वरक्ष परोद्य अस्य होता है। स्वस्वरक्ष परोद्य अस्य होता है। स्वस्वरक्ष परोद्य परोद्य अस्य होता है। स्वस्वरक्ष स्वत्य स्वस्वरक्ष स्वयं स्वस्वरक्य स्वत्य स्

परोदको । सासणे परोदको, देवगदीए तिस्से उदयाभावादे। ।

पंचणाणावरणीय छदंसणावरणीय बारसकसाय भय द्रगुंछा ओरालिय तेजा कम्माइयसरीर-वण्ण-गंघ-रस-फास-अगुरुअल्डुअ-उवघार-परघादुस्तास-चादर-पञ्जत-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एरथ थुवर्चिचतारो । सादासाद-इस्स-रिद-[अरदि-] सोग-थिराथिर-सुद्दासुइ-जसिकेति-अजसिकितीण सांतरो बंधो, रागसमरण बंधुवरमदंसणारो । पुरिसवेद-समचउ-रससंठाण-वञ्जिरसंपडण-परस्थविद्यायाः-सुभग-सुस्वर-आदेञ्ड्-च्यागोदाणं निच्छाइडि-सासणसम्मादिद्वीसु बंधो सांतरा । असंवदसम्मादिद्वीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधा-मावारो । पंचिदियजादि-ओरालियसरीरअंगोवंग-तसणामाणं मिच्छाइडिन्हं सांतर-णिरंतरो । कथं णिरंतरो १ ण, सणवन्तुमारादिदेवेसु णेरइएसु च णिरंतरबंधुवलंभारो । सासणसम्मादिडि-असंजदसम्मादिद्वीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावारो । मणुसगइ-मणुसाणुपुज्वीणं

है। सासादन गुणस्थानमें परोदय बन्ध होता है, क्योंकि देवगतिमें उसके उदयका अभाव है।

पांच झानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कपाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक, तैजस व कार्मण द्वारीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलयु, उपघात, परघात, उच्छ्रवास, बादर, पर्याप्त, प्रत्यात, उच्छ्रवास, बादर, पर्याप्त, प्रत्यात, प्रत्यात, उच्छ्रवास, बादर, पर्याप्त, प्रत्यात, त्रांच्य, तिमाण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक्स पर्वां ये प्रवचनर्थी हैं। साना व असाता वेदनीय, हास्य, रित. [अरित], दोक, स्थिर, अस्थिर, गुम, अगुम, यशकीर्ति और अयदाकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयले इनका बन्धविधाम देखा जाता है। पुरुपंदर, समचनुरक्षसंस्थान, वक्यप्रेम संहनन, प्रशस्तविहायोगित, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, इनका मिथ्यादाष्टि और सात्यादनसम्यग्दिष्ट गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है। असंयतसम्यग्दिष्टयोंमें निरन्तर बन्ध होता है। स्पर्थात् प्रदेश प्रतिपक्ष प्रकृतियाँके वन्धका अभाव है। पंचित्रय जाति, औदीरिकशरीरांगेषांग और त्रस नामकर्मका मिथ्यादिष्ट गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका-निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि सनत्कुमारादि देवों और नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

सासादनसम्यग्दि और असंयतसम्यग्दि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंके, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका असाव है। मनुष्यगति और मनुष्यगति मिच्छाइडि-सासणसम्मादिडीसुं सांतर-णिरंतरा । कपं णिरंतरा १ ण, आणदादिदेवेसु णिरंतरबंधुवरुंभादो । असंजदसम्मादिडीसु णिरंतरा, पडिवक्खपयडीणं बंघाभावादो ।

मिच्छाइहिस्स तेदाळीस पच्चया, ओषपच्चएसु चदुमण-वच्चिन्कायजोगपच्चयाणम-मावादो। सासणस्स सत्ततीसुत्तरप्रवया, मिच्छाइडिपच्चएसु पंचमिच्छत्तःणतुंसयवेदाणममावादो। असंजदसम्मादिद्वीसु तेतीस पच्चया, मिच्छाइडिपच्चएसु पंचमिच्छत्ताणंताणुवंधिचउविकस्थि-वेदाणमभावादो। सेसं सुगर्म।

मणुसगइ-मणुसाणुपुन्वी-उच्चागोदाणं मणुसगइसंजुत्तो, अवसेसाणं पयडीणं घंघो भिच्छाइडि-सासणसम्मादिडीसु तिरिक्व-मणुसगइसंजुत्तो, असंजदसम्मादिडीसु मणुसगइसंजुत्तो। भिच्छाइडि-असंजदसम्मादिडिणो देव णरइया सामी। सासणसम्मादिडिणो देवा चेव सामी।

प्रायोग्यातुपूर्वीका मिथ्यादिष्ट और सामादनसम्यग्दिष्ट गुणस्थानीमें सान्तर-निरन्तर शस्य होता है।

शंका --- निरन्तर बन्ध कैस होता है।

समाधान—नहीं. क्योंकि, आननादिक देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध <mark>पाया जाता है ।</mark> असंयतसम्यन्दिष्योंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

मिथ्याष्टिके तेतालीस प्रत्यय होतं हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंमें यहां चार मनोयोग, चार वचनयोग और चार काययोग प्रत्ययोंका अभाव है। सासादन सम्यग्टिके सैंतीस उत्तर प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादिष्ठके प्रत्ययोंमेंसे यहां पांच मिथ्यात्व और न्युंककवेदका अभाव है। असंयतसम्यग्टिप्योंमें तेतीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादिके प्रत्ययोंमेंसे यहां पांच मिथ्यात्व, अनन्तानुष्रिचित्रुष्क और स्त्रीवेद प्रत्ययोंका अभाव है। शेष प्रत्ययप्रकृषण सुगम है।

मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी और उद्यगोत्रका बन्ध मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा शेष प्रकृतियोका बन्ध मिथ्यादिष्ट एवं सासादनसम्यग्दिष्ट गुणस्थानोमें तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त, और असंयतसम्यग्दिष्टयोंमें मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है। मिथ्यादिष्ट और अस्यतसम्यग्दिष्ट देव व नारकी स्वामी हैं। सासादनसम्यग्दिष्ट देव ही स्वामी हैं। क्ष्या-

१ अप्रती 'सासणसम्मादिङीहि ' इति पाठः ।

षंपद्धाणं सुगर्म । बंधवोच्छेदो णस्थि । बंधेण धुवपयडीणं मिच्छाइद्विम्हि चउन्बिहो बंधो । अण्णत्य तिविहो, धुवाभावादो[†] । सेसाणं पयडीणं वंधो सादि-अद्धुवा, अद्भुववंधित्तादो ।

यीणमिद्धितय-अर्णताणुवंधिचउनिकत्थिवेद-तिरिक्खगर्-चउमंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगर्पाओम्माणुपुञ्चि-उज्जीव-अप्पत्थिवद्ययाद-दुभग-दुम्सर-अणादंज्ज णीचागोदाणं परुवणा कीरदे— अर्णताणुवंधिचउनिकत्थिवेदाणं वेथाद्या समं वेक्छिजति सासणगुणहाणे, ण अण्णत्यः, मिन्छाइहिन्दि तरणुवरुंभादे। दुमग-अणादंज्ज-णीचागोदाणं पुत्रवं वेथो पन्छा उद्यो वोच्छिजति, उचरिमअसंवदसम्मादिहिगुणिम वेथेण विणा उदयरसेव दंसणादा । अवसेसाणमेसो विचारी णरिव, वेथस्करम्मुवरुंगादो ।

अणंताणुर्वधिचउक्कित्थिवेदाणं वेशे मेहत्य पेगदशे, उमयशायि अविगेहादा । दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाण मिच्छादृद्धिःह मेह्य-पेगदश्री । गामण पेगदश्री, णग्हण्सु अपञ्जतद्धाए तदभावादो । समसोतमपयडीशे परादण्णेव वज्योते, ताभिमन्युद्यविगहादो ।

ध्वान सुगम है। बन्धरपुरुकेद नहीं है। बन्धर धुवमकृतियोका मिश्यादाँए गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। अन्य गुणस्थानोमें तील प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां धुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोका बन्ध सादि व अधृव होता है क्योंकि, व अधुवबन्धी हैं।

स्त्यानगृहित्त्रयः अनस्तानुबस्धिजनुषः खीयरः निर्यमानिः चार संस्थानः चार संहननः, तिर्यमानिप्रायानुष्यीः उद्योगः अप्रशास्त्रीवस्यानांतः दुर्धागः दुस्यः, व्यादः संहननः, तिर्यमानिप्रायानुष्यीः उद्योगः अप्रशास्त्रीवस्यानुष्यः क्षेत्रः विस्त्रा प्रथा उद्यव्य देशेनीः सामान्यः सा

अनन्तानुबन्धिवनुष्क और स्त्रीवृदका बन्ध स्वादय परादय होता है, क्योंकि, दोनों ही मकारले कोई विरोध नहीं है। दुसँग, अनादेय और नीचगात्रका मिथ्यादिष्ट युष्कस्थानमें स्वीदय-परोदय बन्ध होता है। सामादन गुणस्थानमें परादय बन्ध होता है, क्योंकि, नार्ताकवींमें अपयोगकालमें सामादन गुणस्थानका अभाव है। देश सोल्ड्ड प्रकृतियां परोदयसे ही बंधती है, क्योंकि, यहाँ उनके उदयका विरोध है।

१ अप्रतो 'वधेणवपयङ्गणं 'इति पाठः ।

२ प्रतिषु 'धुवसावादो ' इति पाठ ।

श्रीणागिद्धितिय-अर्णताणुवंधिच उक्काणं णिरंतरो वंधो, धुववंधिचादो । इस्थिवेद-च उसंद्राण-च उसंघडण उज्जेाव-अप्पतत्थविद्यायाइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं स्रांतरो वंधो, पडिवक्खचयाडिवंधदंसणादो । तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुन्त्व-णीचागोदाणं मिच्छा-इडिन्टि सांतर-णिरंतरे। कंधं णिरंतरे। १ सत्तमपुद्धविणरइप्सु णिरंतरबंधुवलंभादो । सासणे सांतरे।, अपज्जतद्धाएं सत्तमपुद्धविद्धियसासणाणुवलंभादो ।

पश्चया सुगमा। निरिक्खगइ-निरिक्खगइपाओग्याणुकुत्री-उउजीवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं, अवसेसाओः तिरिक्ख-मणुस्सगइसंजुत्तं चंधीतः। मिच्छाइहिदेव-गरइया, सासणा देवा सामी। चंधदाणं चंधविणहृद्दाणं च सुगमं। सत्तण्हं धृववंधगयडीणं मिच्छाइहिन्दि वंधो चउन्विहो। सासणे दुविहो, अणादि-धृवामावादे।। सेमाणं सन्वत्थं सादि-अद्भवे।।

भिच्छत-णवंभयवेद-एईदियजादि-हुंडमंठाण-असंपत्तसेवहसंघडण-आदा**व-यावराणं** परुवणं करूपामा — भिच्छतरूप वंधादया समे वाल्छिण्या, उविरि तदुभयाणुवर्छमादो[®] । णवंसप-

स्त्यानगुद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचनुष्कका निरन्तर बन्ध होता **है, क्योंकि, वे** धृववन्धी हैं। स्त्रीत्द, चार संस्थान, चार संहनन, उद्योत, अप्रशस्त्रविद्यागाति, दुर्भग, दुस्तर और अनादेशका सान्तर यथ्य होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका कन्ध देखा जाना है। निर्मागति, निर्मानिप्रायाग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका मिथ्या**दि गुणस्थानमें** सान्तर निरन्तर वस्थ होता है।

शंका-निरन्तर वन्ध केसे हाता है ?

समाधान—क्योंकि, सनम पृथिवीके नारकियोंमें निरन्तर वन्ध पाया जाता है। सामादन गुणस्थानमें सान्तर वन्ध होता है, क्योंकि, अवयोग्तकालमें सप्तम पृथिवीस्थ सासादनसम्पर्दाष्ट नारकियोंका अभाव है।

प्रत्यय मुनम हैं। निर्यमानि, निर्यमानिप्रायाग्यानुपूर्वी और उद्योतको तिर्यमानिसे संयुक्त, नथा शेष प्रकृतियोको निर्यमानि च मनुष्यगनिसे संयुक्त बांधेने हैं। मिथ्यादिष्ट देव व नारकी, नथा सामादनसम्पद्धि देव स्वामी हैं। वस्त्राध्वान और बन्धिबनदृश्यान सुगम हैं। सान ध्रुवक्थी प्रकृतियोक्त मिथ्यादिष्ठ गुगस्थानि वारों प्रकृतका बन्ध होता है। सामादन गुगस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां कनादि व ध्रुष बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोका सर्वत्र सादि व अध्रव बन्ध होता है।

मिध्यात्व, नपुंसकवेद, एकेन्द्रियजाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तस्पाटिकासंहनन, आताप और स्थावर प्रकृतियाँकी प्रकृपणा करते हैं — मिध्यात्वका बन्ध और उद्दय होनों [मिध्यादिष्ट गुणस्थानमें] साथ ही व्युष्ठित होते हैं, स्थाकि,मिध्यात्व गुणस्थानसे ऊपर

१ प्रतिषु ' तदुदयाश्ववसंमादी' इति पाठः ।

वेद्-सुंबर्धराणाणं पुष्वं षंषो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि,मिच्छार्डि-असंबदसम्मादिडीसु कमेण **पंत्रोदयवोच्छेद**दंसणादो । अवसेसासु एसा विचारो णत्थि, वंधस्सेकस्सव दंसणादो ।

मिच्छत्तस्स सेदएण, णवंतयवेद-हुंडसंठाणाणं सोदय-परोदएण, अवसेसाणं परोदएण षेषो । मिच्छत्तस्स णिरंतरा । अवसेसाणं पयडीणं सांतरा, वंधगद्धागयसंखाणियमाणुवरुभादो । पच्चया सुगमा । णविर एइंदिय-आदाव-थावराणं णवंसयवेदपच्चओ णिर्ध ति दुग्गममेयं संमेरदच्वं । एदंदिय-आदाव-थावराणं तिरिक्खगइसंज्ञतं, सेसाओ तिरिक्ख-मणुसगइसंज्ञतं षच्छंति । एदंदिय-आदाव-थावराणं देवा सामी । सेसाणं देव-णरइया । वंधद्धाणं वंधविणहृद्दाणं च सुगमं । मिच्छत्तस्स वंधो चउन्विहो । सेसाणं सादि-अद्भवा ।

तित्थयरस्स बंधोदयबोच्छेदविचारा णत्थि, वंशअइक्कियादो । परादओ वंधो, सजीगिभडारयं मोत्तृण तित्थयरस्सण्णत्थुदयाभावादो । णिरंतरो वंधो, एगसमएण वंशुवरमा-

षे दोनों पाये नहीं जाते। नपुंसकवेद और हुण्डसंस्थानका पूर्वमें बन्ध और पक्षान उदय स्पुन्धिक होता है, क्योंकि, मिय्याहिध और असंयतसम्प्रवृष्टि गुणस्थानोंमें कमसे उनके बन्ध और उदयका खुन्छेद देखा जाता है। होय प्रकृतियोंमें यह विचार नहीं है, क्योंकि, उनका केवल एक बन्ध ही देखा जाता है।

मिध्यात्वका स्वोद्ध्यसे, नर्पुसकेवर यहण्डसंस्वानका स्वोद्ध्य-पराद्यसे, तथा दोष प्रकृतियोंका परोद्ध्यसे बन्ध हेला है। मिध्यात्वका निरन्तर बन्ध हेला है। होण प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है। है। या प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है। व्योप क्षाता प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, स्वीपक काता। प्रत्य सुगम हैं। विदोप दत्ता है कि एकेन्द्रियज्ञाति, आताप और स्थावरका नर्पुसक्वेद प्रत्यय नहीं है, स्व दुर्गम बातका समरण रजना चाहिये। एकेन्द्रियज्ञाति, आताप और स्थावर प्रकृतियां तिर्यगतित संयुक्त और प्रकृतियां तिर्यगतित संयुक्त और प्रकृतियां तिर्यगतित संयुक्त और स्थावर प्रकृतियांकि देव स्वामी हैं। येष प्रकृतियोंके देव स्वामी हैं। विष्याय्वा और बन्धविनप्रस्थान सुगम हैं। मिध्यात्वका गन्ध चारों प्रकृतका है। दोष प्रकृतियोंका सादि व अधुव सम्ब होता है।

तीर्थंकर प्रकृतिके बन्ध व उदयक ब्युच्छन्का विचार नहीं है, क्योंकि, उसका एक बन्ध ही होता है। परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, सयोगी भट्टारकको छोड़कर अन्यक्ष तीर्थंकर प्रकृतिके उदयका अभाव है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे

१ अप्रती ' मिन्क्रवस्त णवृंसयवेद सोदएण हुंब्संठाणाणं ' इति पाठः ।

भावादो । पच्चया सुगमा । मणुसगइसंजुतो वंघो । देव-णेरहयअसंजदसम्मादिही सामी । षंघद्धाणं षंघविणह्हाणं च सुममं । सादि-अद्धुशे वंघो । पयडिवंघमयविसेसपरूवणहसुत्तर-सुत्तं भणदि —

णवरि विसेसो बेट्टाणियासु तिरिक्खाउअं णित्य मणुस्साउअं णित्य ॥ १५६ ॥

कुदो ? देव-णेरइयाणमपज्जत्तद्वाए आउवबंधविराहादो ।

आहारकायजोगि-आहारिमस्सकायजोगीय पंचणाणावरणीय- छदंसणावरणीय-सादासाद-चदुसंजलण-पुरिसवेद--हस्स-रिद-अरिद- सोग-भय-दुगंछा-देवाउ-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्महय- सरीर-समचउरससंठाण-वेउव्विय-सरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देव- गइपाओग्गाणुपुर्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहाय- गइ-तस-बादर-पञ्जत-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह--सुभग-सुस्सर- आदेज-जतिति-अजसिकति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंत- राह्याणं को बंधो को अवंधो ? ॥ १५७॥

बम्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । मनुष्यगतिले संयुक्त बन्ध होता है । देव ब नारकी असंयतसम्यग्हिए खामी हैं । बम्धाप्वान और बम्धविनहस्थान सुगम हैं । सादि ब अभुष बन्ध होता है । प्रकृतिबन्धगत विहोगके प्ररूपणार्थ उत्तर सुत्र कहते हैं—

विशेषता केवल इतनी है कि द्विस्थानिक प्रकृतियोंमें तिर्यगायु नहीं है और मनुष्यायु नहीं है ॥ १५६॥

हसका कारण यह है कि देव व नाराकियोंक अपर्याप्तकालमें आयुवस्थका बिरोध है।
आहारकाययोगी और आहारमिश्रकाययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय,
साता व असाता वेदनीय, चार संज्वलन, पुरुषेवद, हास्य, रित, अरित, ग्रोक, भय, खुगुप्सा,
देवायु, देवगित, पंचेन्द्रियजाति, वैकियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान,
वैकियिकश्चरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगितप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरूल्ख, उपचात,
परस्रत, उच्क्वास, प्रशस्तिवहायोगित, त्रस, बाहर, पर्योप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर,
धुम, श्रञ्चम, सुमन, सुस्वर, आदेय, यशकीति, अयगकीति, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगेश्च
और पांच अन्तराय, इतका कीन बच्चक और कीन अवन्यक है ? ॥ १५७॥

सुगमं ।

पमत्तसंजदा वंधा । एदे वंधा, अवंधा णत्थि ॥ १५८ ॥

एदस्तरथे। उच्चदे — एत्थ वंघो उदशे वा पुट्यं वेष्टिष्णणो ति विचारी णित्थि, एक्कगुणहाणिम पुट्यावरभावाभावादो । पंचणाणावरणीय-चउदंभणावरणीय-पुरिसवद — पंचिदियजादि-तेजा-कम्महयसरीर-समच उरससंग्रण-गण्णच उक्क-अगुस्तरुहुव च उक्क-पमत्थ-(विह्यपगइ-तसच उक्क-थिराशिर-मुहामुह-सुभग-सुस्तर-आदेज-जमाकिति-णितिण-उच्चागोद — पंचेतराह्यणां सोदओ वंघो । णिहा-पयल-सादासाद-चहुसंजल्ण-ल्रण्णोकसायाणं सोदय-परिद्यो वंघो, उभययावि वंघविरोहाभावादो । द्वाउ-देवगइ-चउित्ययसरीर चउन्वियसरीरोग्वंग-देवगङ्गामाणुद्वी-अजसिकिति-तित्थयराणं परादओ वंघो, आहारकायजांगीसु एदामिमुदय-विरोहते।

पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - चहुसंजरूण- पुरिसवेद-भय- हुगुंळा-देवा उ-देवगइ -पंचिदियजादि वेउन्विय तेजा-कम्मइयसरीर समच उरमसंठाण चे उन्त्वियमरीरअंगांचग-वण्ण चेउन्न-देवगइपाओग्गाणुपुन्वि-अगुरुवरुहुवच उकक-पसःथविदायगई-तमच उकक-मुभरा-गुम्सर-आंद्रजन

यह सूत्र सुगम है।

प्रमत्तसंयत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अवन्धक नहीं हैं ॥ १५८ ॥

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, दार संद्यलन, पुरुपंचर, भय, जुगुप्सा, देवायु, देवगति, पंचेन्द्रियज्ञाति, वैक्शियक, तैजस व कामण शरीर, समचतुरस्नसंस्थान, वैक्शियकदारीरांगोपांग, वर्णादिक चार, देवगतिमायोग्याजुपूर्वी, अगुरुलयु आदिक चार, मदास्तविद्यायोगति, ज्ञसादिक चार, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थकर, उच्चतोष्ट्र णिमिण-तिरथयर-उच्चागाद-पंचंतराइयाणं-णिरंतरा चंघो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । सादासाद-इस्स-दि-अगदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरा बंघो, एगसमएण वंधुवरमदंसणादो ।

चदुसंजरुण-पुरिसंवर-हस्प-रिर्-अरिद सोग-अय-दुगुंछा-आहारकायजोगेहि बारस— पञ्चएहि एराओ पयडीओ वज्झीत । मेसं सुगमं । एरासि बंधो देवगदिसंजुत्तो । मणुसा सामी । बंधदाणं सुगमं । बंधबोच्छेरो णन्धि । धुवबंधपयडीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्धवो ।

एवमाहारमिस्सकायज्ञानीणं पि वत्तव्यं । णवीरे परघादस्सास-पसत्थविहायगङ्-दुस्सराणं पराद्रशे वंधे। । पुत्रमारात्वियसरस्स उद्ग् संते एदासिं संतोदयाणं कथमेत्य अकारणण उद्ययेग्वेद्धरा होज्ज? ण, आरात्वियसरीरोद्द्ग्लोदङ्क्लाणं तदुद्याभावेणेदासिसुद्या-भावस्म णाड्यतादो। पचाप्य आहारकायज्ञागमयणेद्ण् आहारमिस्सकायज्ञागो पिकस्विद्व्यो । एत्तिओ चेव भेदो, णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि ।

और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्ध-विधामका अभाव है। साता व असाता बेदतीय, हास्य, रति, अरति, द्रोक, स्थिर, अस्थिर, गुभ, अजुभ, यजकीति और अयजकीतिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयस इनका बन्धविधाम देखा जाता है।

य प्रकृतियां चार संज्वलन पुरुषंबद , हास्य, रित, अरति, श्रोक, भय, जुगुष्सा और आहारकाययांग, इन बारह प्रत्ययांत वंपती हैं। शेत प्रत्ययमक्षण सुगम है। इनका बच्ध दिवगतिस संयुक्त होता है। प्रमुख स्वामी हैं। वच्धाव्यान सुगम है। वच्धाव्युक्छेद नहीं है। धुवयरुतियांका तीन प्रकारका वच्य होता है, क्योंकि, धुवयरुपका अभाव है। शेप प्रकृतियांका तीन प्रभुव बच्च होता है।

इमी प्रकार आहारमिश्रकाययोगियोंके भी कहना चाहिय । विशेषता केवल इतनी है कि इनके परधान, उच्छ्वास. प्रशस्तविहायोगित और दुस्वरका परोदय बच्ध होता है ।

र्शका—चृंकि पूर्वमें औदारिकशरीरके उदयके होनेपर इनका उदय था. अतपव अय यहां उनका निष्कारण उदयव्युच्छेद क्यों हो जाता है ?

समाधान — ऐसा नहीं है, क्योंकि, औदारिकशरीरके उदयके साथ उदयको प्राप्त होनेवाली इन प्रकृतियोंका उसके उदयका अभाव होनेसे उदयाभाव न्याययुक्त है।

प्रत्ययों में आहारकाययोगको कम करके आहारिमिश्रकाययोगको जोवना चाहिये। केवल इतना ही भद है, और कहीं कुछ भेद नहीं है। कम्मइयकायजोभीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादा-वेदणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-इस्स-रिद-अरिद-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-संठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वञ्जिरसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुन्वी-अगुरुवल्डुव-उवधाद-परधादुस्सास-पसत्थ-विद्यायाइ-तस-बादर-पञ्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसिकति-अजसिकति-णिमिणुन्चागोद-पंचेतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १५९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी वंधा। एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १६० ॥

एदस्सत्ये। बुच्चदे — एत्थ बंघो उद्दओ वा पुत्र्यं वोच्छिण्णां ति णत्थि विचारो, एत्थ ओरालियदुग-समचउरसमंद्राण-वज्जिरसहमंबडण-उनचाद-परघादुस्मास-पसत्थविहायगड्-

कार्मणकाययोगियों में पांच जानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, असातावेदनीय, शरह कथाय, पुरुषवेद, हास्य, रित, अरित, श्रोक, भय, जुणुप्पा, मतुष्याति, पेचेन्द्रियजाति, औदारिक, तेजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशिरागोपांग, वज्रपेभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मतुष्यातिप्रायोग्यातुपूर्वी, अगुरुरुष्ठ, उपधात, परघात, उच्छ्वास, प्रसस्तिविद्यायोगित, त्रस, बाहर, पर्याप्त, प्रत्यक्षतीर, स्थिर, अस्थिर, श्रुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, विमाण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन वन्यक और कौन अबन्धक है ? ॥ १५९॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १६० ॥

इसका अर्थ कहते हैं — यहां बन्ध या उदय पूर्वेमे व्युच्छिन्न होता है, यह विसार नहीं है, क्योंकि, यहां औदारिकद्विक, समजनुरक्तसंस्थान, वज्रवेमसंहनन, उपवात, पत्तपसरीर-सुस्सराणमेयंतेण उदयाभावादो, सेसाणगुदयसंभवादो च । पंचणाणावरणियचउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-चण्णचउक्क-अगुरुवरुहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिणपंचेतराइयाणं सीदओ वंधो, एत्थतणसञ्चगुणहाणेसु णियमेणुदयदंसणादो । णिदा-पयलाअसादावेदणीय-धारसकसाय-हस्स-रिद-अरिद-सोग-मय-दृगुंछा-पुरिसवेद-सुमगादेज्ज-असितिउच्चगीत्राणं सेत्दय-परेत्वओ वंधो । मणुसगइ-मणुसगइपाओगगाणुपुञ्जीणं मिच्छाइहिसासणग्रममादिहीसु सोत्य-परोदओ वंधो, उभयथा वि बंघियरोहाभावादो । असंजदसम्मादिहीसु
परोदओ, मणुस्सअसंजदसम्मादिहीणं मणुनदृगस्स वंधिवरीहारो । पंचिदिय-तस्तद्य-पज्जाणं
भिच्छाइहिन्दि सोदय-परोदओ वंधो, पिडवक्तसुद्यसंभवादो । सामणसम्मादिहि-असंजदसम्मादिहीसु सोदय-परोदओ वंधो-एवेसि दोणणं गुणहाणाणं अभावादो । ओरालियसरीरसमचउरससंठाण-आरालियसरीरअंगोवंग-वज्जिरसहसंघडण-उवधाद-परवाद-उस्साम-पसरथविहायगइ-पत्नेवसरीर-सस्साणं परोदओ वंधो, विग्गहरादीए एदासिमदयामावादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-वारसकसाय-भय-दुगुंछा-ओरालिय-नेतजा-कम्मइय- • सरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलद्भव-उवघाद-णिमिण-पंचतराइयार्ण णिरंतरो बंघो, एत्थ

परधान. उच्छृवास. प्रशस्तविहायोगानि, प्रत्येकशारीर और सुस्वरका नियमसे उद्याभाव है, तथा रोप प्रकृतियोंके उद्यक्ती सम्भावना है। यांच झालावरणीय, चार दर्शनावरणीय, केंक्र व कांमण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरूज्य, स्थिर, अस्थिर, गुभ, अगुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वाद्य वच्छ होता है. क्योंकि, यहां सब गुणस्थानीमें इनका नियमसे उद्य देखा जाना है। निद्रा, प्रचला, असानावदनीय, वारह कथाय, हास्य, राते, अराते, शोक, भय, जुएसा, पुरुवंद, सुभग, आदय, यशकीति और उच्चगोत्रका, स्वोद्य परोद्य वच्छ होता है। मनुष्यानिय व मनुष्यानियायानुपूर्वीका सिथ्यादि और सासादनसम्बन्धियायानुपूर्वीका सिथ्यादि और सासादनसम्बन्धियायानुपूर्वीका सिथ्यादि है। सन्वयत्त स्वयत्त स्वयत्त है। संकित केंद्रिय वच्छ होता है, स्वयंकि, मनुष्य असेयतसम्बन्धियोंक महत्य प्रवादक केंद्रिय वच्छ होता है, स्वयंकि, मनुष्य असेयतसम्बन्धियोंक मनुष्यद्विक व वच्छ होता है। पंचित्रवाति, अस, बाह अति पर्वादक सामाव है। सासादनसम्बन्धियों से सनुष्य असेयतसम्बन्धियों के मनुष्यदिक व वच्छ होता है। पंचित्रवाति, अस, बाह अति पर्वाद वच्छ होता है, स्वयंकि, वह अति स्वाद स्वयंद्य वच्छ होता है, स्वयंकि, विकलेद्रियों है। स्वाद प्रवाद वच्छ होता है, स्वयंकि, विकलेद्रियों है। स्वाद सम्भव होता है, स्वयंकि, विकलेद्रियों है। स्वाद सम्भव होता है। स्वयंकि, वक्ष स्वाद सम्भव होता है। स्वाद सम्भव होता है। स्वयंकि, वक्ष स्वाद सम्भव होता है। स्वयंकि, वक्ष स्वयंकि, विकलेद्रियों है। स्वाद स्वयंकि पर्वाद सम्भव होता है। स्वयंकि, विकलेद्रियों है। स्वाद सम्भव होता है। स्वयंकि, विकलेद्रियों है। स्वयंकि, विकलेद्र है। स्

पांच क्षानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कपाय, अय, जुगुल्सा, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, असुरुख्यु, उपधात, निर्माण और पांच ७. वं. ३०. धुवंधितादो । असादावेदणीय-इस्स-रि-अरिद-संग-थिराथिर-सुहासुह-जसिकित अजसिकतीणे सांतरे। वंशे, एगसमण्ण वंधुवरमदंसणादो । पुरिसंवद-समचउरमसंठाण-वज्जिरसहमंघडण-वज्जिरसहमंघडण-वज्जिरसहमंघडण-वज्जिरसहमंघडण-वज्जिरसहमंघडण-वज्जिरसहमंघडण-वज्जिरसहमंघडण-वज्जिरसहमंघडण-वज्जिरसहमंघडण-वज्जिरसहमंघडण-वज्जिरसादे । असंजद-सम्मादिद्वीसु णिरंतरे, पडिवक्खपयडीण वंधाभावादो । [मणुसगइ-] मणुसगइपाओग्गाणु-पुव्नीणं मिच्छाइडि-सासणेसु वंशे सांतर-णिरंतरे । कपं णिरंतरे ? ण, आणदादिदेवीहेते विम्महगदीण् मणुसेसुप्पण्णाणं मणुमगइदुगस्य णिरंतरवंधुवरुंमादे । असंजदसम्मादिद्वीसु णिरंतरे वंधो, विम्महगदीण् मणुवदुगवंधपाओग्गामग्मादिद्वीणमण्णगइदुगस्य वंधाभावादो । पंचिदिय-ओराल्यिसरीरअंगोवंग-तम-वादर पज्जत-रधादुम्सास-पंचयसरीराणं वंशे मिच्छाइडिस् सांतर-णिरंतरे । कथं णिरंतरे ? ण, मणवकुमारादिद्व गरइण्हिता तिरिक्य-मणुम्मेसुप्पण्णाणं

अन्तराय, इतका तिरस्तर वस्थ होता है. क्योंकि. यहां ये धृववस्थी प्रकृतियां हैं। अमाता-वेदनीय, हास्य, रित, अरति, द्रोकि. स्थिर, अस्थिर, गुम, अशुम, यशकीति और अयशकीतिका सास्तर वस्थ होता है, क्योंकि, एक समयक्ष रमका वस्थिश्राम देखा जाता है। पुरुष्वद, समज्जुरस्वसंस्थान, यश्चर्यभंतहतन, प्रशस्तविहायोगति, सुस्थर, सुभग, आदेष और अस्ति विरस्तर प्रस्थ होता है, क्योंकि, यहां उनको प्रतिपक्ष प्रकृतियोक वस्थका अभाव है। [मनुष्यमति] और मनुष्यातिकायोग्यानुष्यंका मिथ्याद्ध व सामादनसम्ययद्धि गुमस्थानीमें सास्तर निरस्तर वस्थ होता है।

शंका-निरन्तर बन्ध केसे होता है ?

समाधान — नही, क्योंकि, आनतादिक देवीसेन सनुष्योमें उत्पन्न हुए जीवीके विष्रहगतिसे सनुष्यातिहिकका तिरन्तर यन्ध पाया जाता है।

असंयतसम्यर्ग्डिएयोमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगिनिमें मनुष्यिकिके बन्धके योग्य सम्यन्डिएयोके अन्य दो गितयोंके वन्धका अभाव है। पंबेन्द्रियज्ञाति, औदारिकशरीरांगोषांग, वस, वाहर, पर्यान्त, परधात, उच्छ्यास और प्रत्येकशारीरका बन्ध मिथ्याइिएयोमें सान्तर जिरन्तर होता है।

शंका - निरन्तर बन्ध केसे होता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, सनत्दु पारादि देव व नारकियोंमेंसे तिर्येची व

१ प्रतिषु ' मणुसेसुनवण्णाणं ' इति पाठः ।

णिरंतरबेधुबरुंभादो । सासणसम्मादिङि-असंजदसम्मादिङीसु णिरंतरो, तत्थ पडिवक्खपयडीणं वंधाभावादो ।

मिच्छाइडीसु तेदालीसुत्तरपच्चया, ओघपच्चएसु कम्माइयकायजोगं मोत्तृण सेस-बारसजोगपच्चयाणमभावादो । तत्थ पंचमिच्छतेसु अविणदेसु अद्वतीस सासणसम्मादिडि-पच्चया । तत्थ अणंताणुर्वधिचउविकत्थिवेदेसु अविणदेसु तेतीस असंजदसम्मादिडिपच्चया होति । सेसं सगमं ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादांवदणीय-चारसकसाय-पुरिसवेद-इस्स-रिद-अरिद-सीग-भय दुगुंछा-पेचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवरुदुुुं अ-उवघाद-पराधाद-उम्साम-पसत्थविद्यायग्इ-तम-बादर-पज्जत-पत्तेयसरीर-धिराधिर-सुद्दासुद-सुमग-सुम्मर-आदज्ज-जसिकित-अजसिकिति-गिर्मण-पंचतराइयाणं मिच्छाइट्टी सासणों वितिन्य-मणुसगइसंग्रुतं, एदेसिमपज्जतकोठ णिरय-देवगईणं वंधाभावादो । असंजद-सम्मादिद्विणो देव-मणुमगइसंग्रुतं वंधीत, तेसि णिरय-तिरिक्यवाईणं वंधाभावादो । मणुसगइ-

मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवोंके निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

सासादनसम्मार्ग्डाए और असंयतसम्यग्डाए गुणस्थानोमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वन्धका अमाव है।

मिध्याद्यध्योमें नेताकीम उत्तर प्रत्यय होते हैं. क्योंकि, ओघप्रत्ययोमें कार्यण-काययोगको छोड़कर रोग वारह योगप्रत्ययोका अभाव है। उनमेंस पांच मिध्यात्वोको करनेपर अहतीस सासादनसभ्यग्दिष्योकं प्रत्यय होते हैं। उनमेंसे अनन्तानुविध्य-चतुष्क और स्प्रीवृदको कम करनेपर तेतीस असंयतसभ्यग्दिष्योके प्रत्यय होते हैं। शेप प्रकृषण सुनाम है।

पांच क्षानावरणीय छह दर्शनावरणीय, असानावरमीय, वारह कपाय, पुरुषयेद, हास्य, रिन, अरिन, श्रोक. भय, जुगुरमा, पंचेन्द्रियजाति, तेजस व कामण शरीर, समजुरस्यसंख्यान, वर्ण, गंध, रस, स्वतं, अगुरुक्त, उपायत, परधात, उरुक्वास, प्रशस्तविहायेगानि, जस, वादर, पर्याप्त, प्रत्यकशरीर. स्थिर, अस्थिर, गुभ, अगुरु, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीति, अयशकीति, निर्माण और पांच अन्तरायकी मिथ्यादि व सासादनसम्बग्धि तिर्यमाति एवं मनुष्यगितसे संयुक्त बांधन हैं, क्योंकि, हनके अपर्यात्वकाति नरक व देव गतियोंक वर्षाय है। अस्पेयनसम्बग्धि देवपाति व सनुष्यात्वात्वाति संयुक्त बांधन हैं। इस्पेयनसम्बग्धि देवपाति व सनुष्यात्वाति संयुक्त बांधन हैं, क्योंकि, इनके अभाव व सनुष्यात्वाति संयुक्त बांधन हैं। अस्पेयनसम्बग्धि अभाव व सनुष्याक्षिति संयुक्त बांधन हैं, क्योंकि, इनके सरकाति और तिर्यगातिके बन्धका अभाव

१ अप्रती ' मिच्छाइडिंसासणे च ' इति पाठः ।

मणुसगद्दशाओगगाणुउन्बीओ सन्त्रे मणुसगइसंजुत्तं बंधीत, साभावियादो । ओराल्यिससीर-ओराल्यिससीरअंगोवंग-वञ्जिरसहसंघडणाणि सिच्छादिष्टि-सान्तणसम्मादिष्टिणो तिरिक्ख-मणुस-यद्संजुत्तं, असंजदसम्मादिष्टिणो मणुसगइसंजुत्तं वंधीत, एदासिमण्णगईहि सह विरोहादो । उन्न्यागोदं मिच्छादिष्टि-साम्तणसम्मादिष्टिणो मणुसगइसंजुत्तमेदेसिमपञ्जतकाले उन्न्यागोदा-विणाभाविदेवगईए वंधाभावादो । असंजदसम्मादिष्टिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं वंधीत, तस्सु-भयस्य वंश्रसंभवदंसणादो ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुप्वी-औरालियसरीर-औरालियसरीरअंगोवंग-वञ्जरिसह— संघडणणं चउगइमिन्छाइडि-तिगइसासणसम्माइडि-देवंणरइयअसंजदसम्माइडिणो सामी । अवसेसाणं पयडीणं चउगइमिन्छाइडि-असंजदसम्माइडिणो तिगइसासणसम्माइडिणो च सामी । _ मंथदाणं सुगमं । एदेसिमेत्य वंथविणासा णान्ध । पंचणाणावरणीय-छदंमणावरणीय-कारस-कसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुअ-उवधाद-णिमिण-पंचतराइ— याणं मिन्छाइडिम्डि चउन्त्रिदो वंथो । अण्णत्य तिविहो, धुववंथाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं वंथो सव्वत्थ सादि-अद्धवो, अद्धवंथिनाहो ।

है। महुष्यगित और महुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको सव महुष्यगित संयुक्त यांधेत हैं. क्योंकि, येसा स्वामाधिक है। औदारिकतारीर, औदारिकतारीरांगीपांग और यक्षप्रससंहतनको मिष्यादृष्टि और सामादनसम्यप्राहि निर्दमानि व महुष्यगतिसे संयुक्त तथा असंयत-सम्यप्ति महुष्यातिसे संयुक्त तथा असंयत-सम्यप्ति महुष्यातिसे संयुक्त वांधेत हैं, क्योंकि, इनका अत्य गतियोंके साथ विरोध हैं। उच्चातिको मिथ्यादृष्टि और सामादनसम्यप्ति महुष्यातिसे संयुक्त वांधेत हैं, क्योंकि, इनकी अश्वर्यात्मित्र संयुक्त वांधेत हैं, क्योंकि, असंयत्र अस्य सम्यप्ति संयुक्त वांधेत हैं, क्योंकि, उच्चानोत्रकी सम्यक्ती संयुक्त वांधित है, क्योंकि, उच्चानोत्रकी सम्यक्ती सम्यादना उक्त होनों गतियोंक साथ देवी जाती है।

सनुष्यगति, मनुष्यगतित्रायाग्यानुपूर्वा, औदारिकदारीर, औदारिकदारीरांगोपांग और वज्रपंसर्वहनके चारों गतियोंक प्रिथ्यादीष्ट, तीन गतियोंक सालादनसभ्यादिष्ट, तथा देव व नारकी असंयतसभ्यादिष्ट स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंक चारों गतियोंक सिधादनसभ्यादिष्ट, तथा तीन गतियोंक सालादनसभ्यादिष्ट स्वामी हैं। स्विध्यादिष्ट व असंयतसभ्यादिष्ट, तथा तीन गतियोंक सालादनसभ्यादिष्ट स्वामी हैं। वस्त्रभा यहां प्रभावनाश नहीं है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, वारह कराय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण हारीर, वर्णादिक चार, अगुरुळवु, उपघान, निर्माण और पांच अन्तरायका मिथ्याहरि ग्रुणस्थानमें चारों प्रकारका वस्थ होता है। अस्यव तीन प्रकारका वस्थ होता है, क्योंकि, वहां भ्रुयवस्थका अथाव है। रोप प्रकृतियोंका वस्थ सर्वत्र आदि व सञ्चव होता है, क्योंकि, वे अभुववस्थी हैं। णिद्दाणिद्दा-पयलापयल-योणिगिद्ध-अर्णताणुत्रंभिकोभ-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्लगइ-चउसंठाण-चउसंघडणं-तिरिक्लगइ--पाओग्गाणुपुन्वि-उज्जोव-अप्पसत्थविद्दायगइ-दुभग-दुस्तर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १६१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १६२ ॥

एदस्सत्ये। बुच्चदे — अणंताणुवंधिचउकिकत्थिवेदाणं वंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणसम्मादिङ्गिन्द्र तदभयाभावदेसणादो । एवमण्णपयडीणं जाणिय वत्तन्त्रं ।

थीणगिद्धितय-चउसंठाण-चउसंघडण-उज्जोन-अपम्सत्थविहाबगइ-दुस्सराणं परोदःबो वंथो, विग्गहगदीए एदासिमुद्रयाभावादो । अर्णताणुर्वथिचउक्कित्थिबेद-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओगगाणुपुव्व-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं सोदय-परोदंओ वंथो, एदासिमेत्थ

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी कोध, मान, माया, लेभ, स्त्रीवेद, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तिबहायोगति, दुर्भग, दुस्त्रर, अनादेय और नीचगोत्रका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १६१ ॥

यह सूत्र सुगम है।

सिष्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं॥ १६२॥

इस सुनका अर्थ कहते हैं — अनन्तानुवन्धिन्यनुष्क और स्विदका बन्ध व उदय रोनों साथमें ग्युष्ठिक होते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दि गुणस्थानमें उन रोनोंका अभाव देखा जाता है। इसी प्रकार अन्य प्रकृतियोंका पूर्व या प्रकान् होनेवाला बन्ध व उदयका स्युष्केष्ठ जानकर कहना चाहिए।

स्त्यानगृद्धित्रय, चार संस्थान, चार संहतन, उपोत, अप्रशस्तविद्दायोगित और दुस्यरका परोदय क्या होता है, क्योंकि, विप्रहगितमें इनके उदयका अभाव है। अनन्तातुवश्यिचतुष्क, क्वियेद, तिर्वस्मति, तिर्वस्मतिप्रायेग्यानुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्र, इनका स्वोदय-परोदय वन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनके उदयके

१ मतिष ' पंचसघडण' इति पाठः ।

उदयणियमाभावादो । यीणागिद्धितय-अणंताणुवंधिचउक्काणं णिरंतरो वंधो, धुववंधितादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओगमाणुपुच्ची-णीचागोदाणं मिच्छाइडिम्हि सांतर-णिरंतरो वंधो । कर्ष णिरंतरो ? सत्तमपुद्धविणेरद्गएहिंतो तेउ-वाउक्काइएहिंतो व कविवग्गहाणं णिरंतरवंधदंसणादो । सासणसम्माइडिम्हि सांतरे, तत्ते विणग्गयसासणसम्माइडीणं संभवागावादो । अवसेसाणं पच्छीणं सव्वत्य सांतरो वंधो, अणिवर्मण बंधुत्रमत्रंसणादो । पच्चया सुगमा । तिरिक्खाइ-तिरिक्खगइपाओग्याणुपुच्ची-उज्जीवाणि तिरिक्खाइ-तिरिक्खगइपोओग्याणुपुच्ची-उज्जीवाणि तिरिक्खा-समादिडिणां च सामी । वंधदाणं वंधावणहरूषाणं च सुगमे । वंधदाणं वंधावणहरूषाणं च सुगमे । वोणागिद्धितय-अर्णताणुवंधिचउक्काणं मिच्छाईडिम्हि चउव्विटो वंधो । सामणे दुविहो, अणाइ-धुवाभावादो । अवसेसाणं पच्छीणं सव्यत्य वंधो सादि-अद्धो ।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १६३ ॥ सुगर्म ।

नियमका अभाव है। स्त्यानगृद्धिचय और अनन्तानुवध्यिचुप्कका (नरःनर वस्य होता है, क्योंकि, ये भ्रुवकन्धी हैं। निर्यमानि, निर्यमानिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचमोत्रका मिथ्यादिष्ट गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर वस्य होता है।

शंका-निरन्तर बन्ध केसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, सप्तम पृथिवीके नारकियों और तेजकाथिक व वायुकाथिकों-मेंसे विष्ठहकों करनेवाले जीवोंके निरन्तर वस्थ देखा जाता है

सासादनसम्यग्रहीर्षः गुणस्थानमें इनका सान्तर यन्त्र होता है, क्योंकि, वहांसे निकले हुए सासादनसम्यग्रहीयोकी सम्मावना नहीं है । शेष प्रकृतियोका सर्वत्र सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अनियमसे उनका बन्धविधाम देखा जाता है । प्रत्यय सुराम हैं ।

तिर्यमाति, तिर्यमातियायाग्यानुपूर्वा और उद्यानको निर्यमानिस सयुक्तः नथा दोष मक्तियोंको तिर्यमाति व मनुष्यानिस संयुक्तः वाधाने हैं। चारो गांनयोंक मिध्यादिष्ट और तीन गतियोंके साध्यादिष्ट और तीन गतियोंके साध्यादिष्ट स्थामी हैं। वन्धाध्यान और उन्धिवनप्रस्थान सुगम हैं। स्थानपृक्षित्रय और अनःतानुबन्धियनपुष्कका मिध्यादिष्ट गुणस्थानमें चारों सकारका वन्ध होता है। सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका वन्ध होता है, क्योंकि, वहां अनादि व धुव बन्धका अभाव है। रोप प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि व अधुव बन्ध होता है।

सातावेदनीयका कीन बन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ १६३ ॥ **यह सूत्र सुराम है** ।

मिन्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी सजोगिकेवली बंघा । एदे बंघा, अबंघा णित्य ॥ १६४ ॥

सादावेदणीयस्स बंधो उदओ वा पुष्यं वेचिळणणो किं पच्छा वोच्छिणणो ति एत्थ परिक्खा णरिथ, तदुभयवोच्छेदाभावादो । सोदय-परोदओ बंधो, अद्भुवेदयत्तादो । सजोगि-केविलिग्दि णिरंतरो बंधो, पिडवक्खपयर्डाए बंधाभावादो । अण्णत्य सांतरो । पच्चया सुगमा । णवि सजोगिकेविलिग्दि कम्मइयकायजोगपच्चओ एक्को चेव । मिच्छाइडिःसासणसम्मा-इडिणो तिरिक्ख मणुमगइसंजुत्तं असंजदसम्मादिडिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं बंधीत । सजोगि-केविली अगइसंजुत्ते । चउगइमिच्छाइडि असंजदसम्मादिडिणो तिगइसासणसम्मादिडिणो मणुसगइसजोगिकेविलिणो च सामी । बंधदाणं सुगमं । एत्थ बंधवाच्छेदो णिरिथ । सादि-अद्धेवा बंधो, परियत्तमाणवंधादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-चउजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १६५ ॥

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतमम्यग्दृष्टि और सयोगकेवली बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अवन्धक नहीं हैं॥ १६४॥

सातांबरनीयका वन्य अथवा उत्य पूर्वमें ब्युच्छिन्न होता है या क्या पक्षात् व्युच्छिन्न होता है, रसकी यहां परीज्ञा नहीं है, क्योंकि, उन दोनोंके व्युच्छेदका यहां आवा है। स्वांदय-परोद्य बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रवोदयी प्रकृति है। सयोग-कंवली गुणस्थानमें निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके कन्धका अभाव है। अन्यव सान्यत वन्ध होता है। प्रत्यय सुगम हैं। विशेष इतना है कि सयोगकेवली गुणस्थानमें एक ही कार्मणकाययोग प्रत्यय है। मिथ्यादिए व सासादनसम्पवरि वियंगाति व मनुष्यातिकं संयुक्त, तथा असंयतसम्प्रयदि देव व मनुष्य गतिसं संयुक्त वांधने हैं। स्वारंग नितयोंके प्रिष्यादिए व असंयतसम्प्रयदि क्या मनुष्यातिकं सर्थानकंवली वांधने हैं। स्वारंग गतियोंके सिध्यादिए व असंयतसम्प्रयदि तथा मनुष्यातिकं स्वारंग विश्वचन्न क्या मनुष्यातिकं स्वारंग क्या मनुष्यातिकं स्वारंग क्या स्वारंग क्या मनुष्यातिकं स्वरोगकंवली क्या मनुष्यातिकं स्वरोगकंवली है। स्वरोगकंवली स्वर्थान है। यहां वाध्यनुच्छेद नहीं है। सादि व अध्रय बन्ध होता है, क्योंकि, उसका वन्ध परिवर्तनवील है।

मिध्यात्व, नषुंसक्तेवर, चार जातियां, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तस्रपाटिकासंहनन, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मका कीन बन्धक व कीन अवन्धक है ? ॥ १६५ ॥ सुगमं ।

मिच्छाइट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १६६ ॥

एस्य पुन्यं पच्छा वा बंधो बोन्छिणो' ति विचारो णित्य, एक्कगुणहाणिम तद-संभवादो । मिन्छत्तस्त सोदंशे वंधो, अण्णहा वंधाणुवरुंभादो । णवुंसयवेद-चउजादि-थावर-सुहुम-अपञ्जतणामाणं चंधो सोदय-परोदंशे, विग्गहमदीए उदयणियमाभावादो । हुंडसंठाण-असंपत्तसेवहसंघडण-आदाव-साहारणसरीरणामाणं परोदंशे वंधो, विग्गहमदीए णिवसंणदासिं उदयामावादो । मिन्छत्तस्त बंधो णिरंतरो । अवसेसाणं पयडीणं सांतरो, अणियमेण एगसमय-बंधदंसणादो । पच्चया सुगमा । मिन्छत-णवुंमयवेद-कुंडसंठाण-अपंपत्तमेवहसंघडण-अपज्ञातीणं तिरिक्ख-मणुसगइसंहतो, चदुजादि-आदाव-यावर-सुहुम-साहारणाणं तिरिक्वाइसंहती वंधो, अण्णगर्देहि सह एदासिं बंधविराहादो । मिन्छत-णवुंसयवद-हुंडसंठाण-असंपत्तसंबहसंवडणाणं चउगाइमिन्छाइडी सामी, चउगाइउदएणं सह एदासिं वंधस्स विरोहाभावादो । एइंदिय-

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेप अवन्धक हैं ॥ १६६ ॥

यहां उरयसे पृथेमें अथवा पीछं बन्ध ब्युच्छिल होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें वह सम्भव ही नहीं है । मिथ्यात्वका स्वोदय बन्ध होता है: क्योंकि, अपने उदयके विना उसका बन्ध पाया नहीं जाता। । नर्थुसकंबर, चार जातियां, स्थाय, स्कूस और अपर्यात्न नामकर्मका वन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, विष्रहमिनों इनके उदयका नियम नहीं है । हुण्डसंस्थान, असंग्रात्तवृपादिकासंहनन, आताप और साधारणग्रारीर नामकर्मका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, विष्रहमिनों नियमसे इनके उदयका अगाव है।

मिध्यात्यका बन्ध निरन्तर होता है। होप प्रकृतियाँका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनका अनियमसे एक समय बन्ध देखा जाता है। प्रत्यय सुगम हैं। मिध्यात्व, नपुंककवेद, हुण्डसंस्थान, असंप्राणसप्पाटिकासंहन और अपयोग्तका तिर्थमाति व मनुष्यमातिसे संयुक्त तथा चार जातियां, अग्रताद्वास, स्कृत और साधारणका तिर्यमातिसे संयुक्त वथा होता है, क्योंकि, अग्रतातियोंक साथ हमके वन्धका विरोध है। मिध्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राणतप्पाटिकासंहननके चारों विरोध सिक्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राणतप्पाटिकासंहननके चारों गतियोंके सिक्यादिष्ट स्वामी हैं, क्योंकि, चारों गतियोंके उदयके साथ हनके क्यान

र कानतो 'पण्का वाबोच्किण्णो ' इति पाठः ।

आदाव-यावराणं तिगर्मिन्छार्डी सामी, णिरयगर्मिन्छार्डिस्ट् तार्सि बंघाभावादो । बीइंदिय-तीइंदिय-बर्जरिदिय-सुद्दम-अपज्जत-साहारणाणं तिरिनख-मणुसगर्मिन्छार्डी सामी, देव-णेरड्-एसु एदार्सि बंघाभावादो । बंधद्वाणं वंधविणङ्डाणं च सुगमं । मिन्छत्तस्य बंघो चउन्त्रिहो । सेसाणं सादि-अद्धवे ।

देवगइँ-वेउब्वियसरीर-वेउब्वियसरीरंगीवंग-देवगइपाओग्गाणु-पुब्वि-तित्थयर**णामा**णं को बंधो को अबंधो ? ॥ १६७ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिद्दी वंधा । एदे बंधा. अवेससा अवंधा ॥१६८॥

कि बेघो पुत्र्वे पच्छा वा बान्छिणो ति एत्थ विचारा णस्यि, एक्कस्टि तद्दसंभवादो । एदासिं पंचण्टं पि परोदओ बेघो, सोदएण सह सगबंधस्य विरोहादो । णिरंतरो बेघो, णियमेणाणेगससयबंधदंसणादो । विग्गहगदीए दाण्टं समयाणं कथमणेगववएसो १ ण, एगं मोनुणुवरिमसञ्बसंखाए अणेगमदयबुत्तीदो । पच्चया सुगमा । णवरि णबुंसयवेदपच्चओ

विरोध नहीं है । एकेन्द्रिय, आताप और स्थावर प्रकृतियोंक तीन गतियोंके मिथ्यादाष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नरकगतिमें मिथ्यादाष्टि गुणस्थानमें उनके बन्धका अभाव है । द्वीन्द्रिय, बीन्द्रिय, क्युरिस्ट्रिय, सहस, अथ्योंकि, तेर साधारण प्रकृतियोंके तिर्यगति व मनुष्य-गितके मिथ्यादाष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, देव व नारक्षियोंमें इनके बन्धका अभाव है । क्यायायान और बन्धियानप्रस्थान सुगम है। मिथ्यायका बन्ध चारों प्रकारका होता है । रोष प्रकृतियोंका साहि व अधुव बन्ध होता है ।

देवगति, वैकियिकसरीर, वैकियिकसरीरांगोपांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और तीर्थकर नामकर्मका कीन बन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ १६७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्बन्दिष्ट बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं।। १६८।।

क्या बन्ध उद्यक्त पूर्वेम या पश्चात् न्युच्छित्र होता है, यह विचार यहां नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें उक्त विचार सम्भव नहीं है। इन पांची महतियाँका परोत्त्य बन्ध होता है, क्योंकि, इनके अपने उदयके साथ बन्ध होनेका विरोध है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तियमसे इनका अनेक समय नक बन्ध देखा जाता है।

शुंका-वित्रहगतिमें दो समयोंका नाम अनेक समय कैसे हो सकता है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, एकको छोड़कर ऊपरकी सब संख्यामें 'अनेक ' शब्दकी प्रकृति है।

प्रस्यय सुगम हैं। विशेष इतना है कि यहां नपुंसकवेद प्रत्यय नहीं है, क्योंकि,

स्प्रत्यः, विष्यद्वगदीप् वद्दमाणपेरद्वयअसंजदसम्मादिष्टीस् वेउन्वियचउनकस्य वंधाभासादो । तित्वयरस्य पुण ते चेव तेतीस पत्रया, तत्य णवंसयवेदपत्रयदंसगादो । वेउन्वियचउनकस्य देवमञ्जलकस्य देवमञ्जलकस्य देवमञ्जलकस्य देवमञ्जलकस्य देवमञ्जलकस्य तिरिक्ख-मणुसअसंजदसम्मादिङी सामी । तिरिव्यदस्य तिरिक्ख-मणुसअसंजदसम्मादिङी सामी । तिरिव्यदस्य तिरिक्ख-प्रत्यसम्मादिङी सामी । तिरिव्यदस्य तिरिक्ख-प्रत्यसम्मादिङी सामी । तिरिव्यदस्य तिर्वयस्य विष्या विष्या स्वयम्यादिङीस्र तिरिव्यवस्य विष्या सामि न्या सम्मादिङीस्र तिरिव्यवस्य विष्या स्वयम्यादिङीस्र तिरिव्यवस्य विष्या सामि न्या स्वयम्यादिङीस्र तिरिव्यवस्य विषय स्वयम्यादिङीस्र तिरिव्यवस्य विषय स्वयम्यादिङीस्य सामि न्या स्वयम्यादिङीस्य तिरिव्यवस्य स्वयम्यादिङीस्य सामि न्या स्वयम्यादिङीस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य

वेदाणुनादेण इत्थिवेद-पुरिसवेद-णवुंसयवेदएसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-चदुसंजलण-पुरिसवेद-जसिकिति उचा -मोद-पंचंतराइयाणं को बंधो की अबंधो ? ॥ १६९ ॥

सगम ।

मिच्छाइडिप्पहुडि जाव अणियट्टिउवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णित्य ॥ १७०॥

विष्रहगातिमें वर्तमान नारकी असंयत्तसम्यर्धियोंमें बैकिशिकचतुरकं वन्धका अभाव है। किन्तु तीर्यंकर प्रकृतिक वे ही तेतीस प्रत्यय है, स्योंकि, उनमें नपुंतकवेद प्रत्यय देखा जाता है। बैकिशिकचतुर्कका देवगतिस संयुक्त और तीर्यंकर प्रकृतिका देव एवं मनुष्य गतिसे संयुक्त क्षेर तीर्यंकर प्रकृतिका देव एवं मनुष्य गतिसे संयुक्त वन्ध होता है। बैकिशिकचतुर्कित वन्धक तिर्यंच व मनुष्य असंयतसम्यर्शिष्ट स्वामी हैं। तीर्यंकर प्रकृतिक तीत गतियोंके असंयतसम्यर्शिय द्वामी हैं, क्योंकि, तिर्यमातिक असंयतसम्यर्शियोंमें तीर्यंकरके बन्धका अभाव है। वन्धाप्वान और बन्ध सुव्यक्षित्रस्थान सुगम हैं। इनका वन्ध सादि और अनुव होता है, क्योंकि, वे भ्रुवक्यी नहीं हैं।

वेदमार्गणानुसार स्त्रीवेदी, पुरुपंवदी और नपुंसकवेदियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, चार संज्वरुन, पुरुषंवद, यशकीति, उञ्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन वन्यक और कौन अवन्धक है ? ॥ १६९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिध्यादृष्टिसे ठेकर अनिवृत्तिकरण उपशासक और क्षपक तक धन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ १७०॥ इस्पिनेदस्स ताव वुच्चदे— एस्य उदयादो वंधो पुत्रं पच्छा वा नेच्छिणणे सिं विचारे णस्थि, पुरिसनेदस्स एयंतेणुदयाभावादो संसाणं च पयडीणं वंधोदववीच्छेदामावादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं च सोदओ बंघो, धुवादयत्तादो । पुरिसवेदस्स परोदओ बंघो, इत्थिवेदे उदिण्णे पुरिसवेदस्स्याभाक्षदे । सादावेदणीय-चदुसंजरुणां सोदय-परोदओ बंघो, उदएण परावत्तणपयिडत्तादे । जसिकतीए मिच्छाईई-प्यहुडि जाव असंजदसम्मादिई ति सोदय-परोदओ, एदेसु पडिवक्खुर्यसंभवादो । उविर सोदओ चेव, पडिवक्खप्यडीए उदयाभावादो । उच्चागोदस्स मिच्छाईई-प्यहुडि जाव संजदासंजदा ति बंधो सोदय-परोदओ, एदेसु णीचागोद्दस्यसंभवादो । उविर सोदओ चेव, णीचागोदस्स्यदयाभावादो ।

पंचणाणावरणीय चउदंसणावरणीय-चउसंजरुण-पंचेतराह्याणं णिरंतरा वंषो, धुवबंषि-त्तादो । सादावेदणीय-जसकितीणं मिन्छादिहिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदे। ति सांतरा वंषो, पडिवकखपयडीण् वंधुवरुंमारो । उत्तरि णिरंतरो, णिप्पडिवकखत्तादो । पुरिसवेदुज्वागोदाणं

पहले स्वीवेदीके विषयमें कहते हैं — यहां उदयसे बन्ध पूर्वमें या पक्षात् न्युन्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, नियमसे वहां पुरुषवेदके उदयका अभाव है, तथा शेष प्रकृतियोंके बन्ध और उदयके व्युच्छोदका अभाव है।

पांच झानायरणीय, चार दर्शनायरणीय और पांच अन्तरायका स्वोद्य बन्ध होता है, क्योंकि, व ध्र्योद्यी हैं। पुरुपवेदका परोद्य बन्ध होता है, क्योंकि, क्रिवेदका उदय होतेपर पुरुपवेदके उदयका अभाव है। सातावेदनीय और चार संन्वलनका उदय होतेपर पुरुपवेदके उदयका अभाव है। सातावेदनीय और चार संन्वलनका है। सातावेदनीय गरिवर्तनवरील हैं। यशक्षीतिका मिथ्याइष्टिसे लेकर असंयत्तसम्बन्धि तक स्वेदय-परोद्य बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय सम्भव है। उपरिम्म गुणस्थानोंमें उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय सम्भव है। उपरिम्म गुणस्थानोंमें उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदयका अभाव है। उपरोम गुणस्थानोंमें मिक्योक्ष होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंसे नीक्योक्ष उदयक्ष सम्भव हे। संयत्तासंयत्त उपर स्वोद्य होता है, क्योंकि, वहां मिक्योक्ष उदयक्ष अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, चार संज्वलन और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंके, ये अवबन्धी हैं। सातावेदनीय और यदाकीरिका मिण्या-हिसे लेकरप्रमचसंयत तक सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है। उपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंके, यहां इनका बन्ध प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है। पुरुषेष्ठ और उच्चाणीकका मिण्यादाहै प्रवं मिच्छादिङि-सासणसम्मादिङ्गीसु सांतर-णिरंतरो बंचो।कंध णिरंतरो ? ण, पम्म-सुक्कलेस्त्रिएसु तिरिक्ख-मणुरसेसु पुरिसवेदुच्चागोदाणं णिरंतरवंषुवलंमादो। उविर णिरंतरो, पडिवक्ख-पयङीणं षंघाभावादो।

सन्वगुणडाणाणमाघपन्चएसु पुरिस-णतुंतयंबेदेसु अवणिदेसु अवसेसा एरथ एदार्सि प्रक्षया होति । णवरि पमत्तसंबदेसु आहार-आहारमिस्सकायजोगपन्चया अवणेदेव्या, इस्यिबेदोदइल्डाणं तदसंभवादो । असंबदसम्मादिई।सु औरातिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकाय-जोगपन्चया अवणेदच्या, तत्य असंबदसम्मादिई।णभग्डवतकालामाबादो । सेसं सुगमं ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-चडुसंजरुण-पंचतराइयाणं मिन्छाइट्टी चउगइ-संजुत्तं । सासणसम्माइट्टी तिगइसंजुत्तं, णिरयगईए अभावादा । सम्मामिन्छादिष्टि-असंजदसम्मा-दिष्टिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं । उविरमा देवगइसंजुत्तं अगइसंजुत्तं च वंधंति । सादावेदणीय-पुरिसवेद-जसिकत्तीओ मिच्छादिष्टि-सामणसम्मादिष्टिणो तिगइसंजुत्तं, सम्मामिन्छादिष्टि-असंजद-

सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका -- निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि पद्म और शुक्छ लेक्यावाले निर्यंच व मनुष्योंमें पुरुषवेद और उच्चगोत्रका निरन्तर वन्ध पाया जाता है ।

ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है।

सब गुणस्थानोंके ओधप्रत्ययों में पुरुषवेद और नयुंनकवेदको कम करदेनपर दोष यहां इन प्रकृतियोंके प्रत्यय होते हैं। विशेषना इतनी हैं कि प्रमत्तसंयतों में आहारक और आहारकिमिश्र काययोगप्रत्ययों कम करना चाहिय, क्योंकि, स्वीवदके उदय युक्त जीवींके वे दोनों प्रत्यय सम्भव नहीं असंयतसम्पर्ग्हिएयों अंदारिकिमिश्र, विकियकामिश्र और कार्मण काययोग प्रत्ययोंको कम करना चाहिय, क्योंकि, स्वीवदियों में असंयत-सम्मर्ग्हिपयोंके अपर्यान्तकालका अभाव है। दोष प्रसूषणा मुगम है।

पांच क्षानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, चार संज्वलन और पांच अन्तरायको सिध्याहि चारों गतियोंसे संयुक्त, तथा सासादनसम्यग्हिए तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्हिए योंने नक्कातिक वन्धका अभाव है। सम्यग्निमध्याहि के और असंवतसम्यग्हिए देवाति व मनुष्यातिसं संयुक्त बांधते हैं। उपित स्वांदेवी जीव देवातिसं संयुक्त और तातिसंयोगसे रहित बांधत हैं। मानावदनीय, पुरुषवेद और यशक्तिको सिध्याहिए व सासादनसम्यग्हिए तीन गतियोंसे संयुक्त सम्यग्निमध्याहिए

१ अप्रतो ' पुरिसवेदुच्चागोदाणं पि ' इति पाढः ।

सम्मादिष्टिणो देव-मणुसगइसंज्ञतं, उविरेमा देवगइसंज्ञत्तमगइसंजुतं च वंधित । उच्चागोदं सव्य देव-मणुसगइसंजुत्तमगइसंजुत्तं च वंधीत ।

तिगद्दिन्सासणसम्मादिहि-सम्माभिन्छादिहि-असंजदसम्मादिष्टिणो सामी, णिरयगदीए इत्थिवेदस्पुद्याभावादे। । दुगद्दसंजदासंजदा सामी, देव-णेरद्रएसु अणुव्वर्दण-मभावादो । उत्तरि मणुस्सा चेव, अण्णत्युविरमगुणाभावादो । वंपद्धाणं सुगमं । वंपचोच्छेदो णत्यि । वंचणाणावरणीय चउदंसणावरणीय-चउसंजरुण-पंचंतराद्याणं मिन्छाइद्दीसु चउन्चिद्दो षंषो । अण्णत्य तिविद्दो, सुवाभावादो । सेसपयडीणं सादि-अद्धवो, अद्धववंधितादो ।

बेट्टाणी ओघं ॥ १७१ ॥

बेहाणी' मिच्छाइडि सासणसम्माइडीसु वंषपाओग्गमावेण अवडिदाणि ति सुर्त होदि । तेर्सि परूवणा ओपं होदि ओषतुरुठेति ज सुर्त होदि । एदमप्पणासुर्त्त देसामासियं, ओघादो एदिन्हि योवभेरुवरुभादो । तं भण्णमाणसुरत्येण सह सिस्साणुग्गहर्द्ध परुवेमो— थीणगिद्धितिय-

और असंयतसम्यग्दष्टि देवगति व मनुष्यगतिसे संयुक्तः तथा उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त और गतिसंयोगसे रहित वांघते हैं। उच्चगोत्रको सब स्वीवेदी जीव देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त तथा गतिसंयोगसे रहित वांघते हैं।

तीन गतियोंके मिध्यादिए, सासादनसम्यग्दिए, सम्यग्निम्प्यादिए और असंवतसम्यग्दिए स्वामी हैं, क्योंकि, तरकानिमें कीवेदके उदयका अमाद है। दो गतियोंके
संयतासंयत स्वामी हैं, क्योंकि, देव-तारिकांके अपुवतियोंका अमाद है। उपितम
गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंके उपितम गुणस्थानोंका अमाद
है। बन्धाध्वान सुग्रम है। बन्धवुष्कुद्धेद है नहीं। पांच बातावरणीय, चार दर्शनावरणीय,
चार संत्र्वकन और पांच अन्तरायोंका मिध्यादिष्टोंकें चारी प्रकारका बन्ध होता है। अन्य
गुणस्थानोंकें जीन प्रकारका बन्ध होता है, स्योंकि, अद्यो ध्व बन्धका अमाद है। दोव
प्रकारीमों तीन प्रकारका बन्ध होता है, स्योंकि, वे अधुवबन्धी हैं।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १७१ ॥

द्विस्थानिकका अर्थ मिथ्यादष्टि और साक्षादनसम्यग्दिष्ट गुणस्थानीमें बन्धकी योग्यताले अवृद्धित मृकृतियां है। उनकी प्ररूपणा ओघ हे अर्थान् ओघके समान है, यह अभिप्राय है। यह अर्थणासुत्र देशामशैक है, क्योंकि, ओघके समी थोड़ा मेद पाया जाता है। मस्तत सुत्रके अर्थके साथ शिष्योंके अनुमहार्थ उक्त भेदकी प्ररूपणा करते हैं— अर्णताषुर्वभिषउषिकतिथवेद -तिरिक्खाउ-तिरिक्खार-चउसंठाण-चउसंघण-तिरिक्खगहराष्ट्रीम म्माणुपुष्टि-उज्जोव-अप्यतरथीवहायगह-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि बेद्दाणियाणि । एदेसु अर्णताणुर्वपिषउक्कस्स वेपोदया समं बोन्छिण्णा । अण्णपयडीणे' सर्व्वार्सि पि पुर्व्व बंघो पच्छा उदओ बोन्छेदुसुवगओ । कुदो ? तघोवटंमादो ।

थीणांगिद्धित्य-अणंताणुर्वधिचउक्क-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगड्-चरुसंठण-चर्हुसंघडण-तिरिक्खाणुपुञ्च-उज्जोव-अप्पसत्थिवहायगइ-दुभग-दुम्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं वंथो सोदय-परोदओ, उभयथा वि बंघाविरोहादो । इत्थिवेदस्स सोदएणेव वंथो, तदुदयमहिकिच्चं परूर्यणापारमादो । ओघादो एत्थ विसेसो एसो, तत्थ सोद्य-परोदएहि वंधोवदेसादो ।

थीणागिद्धित्तिय-अणंताणुवंधित्र उक्कतिरिक्खा उआणं वेघो णिरंतरा । तिरिक्खगड्-तिरिक्खगड्र पाओर गाणुपुःवी-णीचागोदाणं मिच्छाइडिम्डि सांतर-णिरंतरा, सत्तमपुढनीणेरहएहिंता तेउ-बाउकाइएहिंता च णिप्फिडिट्णिरियवेदेसुपण्णाणं सुहुत्तस्संता णिरंतरवंधुवलंभादा ।

स्थानगृद्धित्रय, अनन्तानुवन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, तिर्यगानु तिर्यगानि, चार संस्थान, सार संदतन, निर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्यात, अप्रशस्तिवडायोगानि, दुर्मण, दुस्वर, अनादेय और नीचगीन, ये द्विस्थानिक प्रकृतियां हैं। इनमें अनन्तानुवन्धियनुष्कता बन्ध और उद्दय दोनों साथ द्वुस्थित्र होते हैं। अस्य सब ही प्रकृतियाँका पूर्वमें बन्ध और पक्षान् उद्य द्वुस्केंद्रकी प्राप्त होता है, क्योंकि, वैसा पाया जाता है।

स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धिनतुष्क, निर्यमाषु, नियमानि, चार संस्थान, चार संहतन, तिर्यमानुपूर्वी, उद्योत, अवशस्त्रीवहायामित, दुर्मग, दुम्बर, अनादेय और नीवगोत्रका वस्य स्वीदर परोदय होता है, क्योंकि, दोनों, प्रकारसे ही उनके बन्धके विरोधका अभाव है। स्वीवदका स्वीदयसे ही वस्य होता है, क्योंकि, उसके उदयका अधिकार करने इस मकरवाका प्रारम्भ हुआ है। आयस यहां यह विदेश है, क्योंकि, वहां स्वीदय-परोदयसे बन्धका उपदेश हैं।

स्त्यानगुद्धित्रय, अनन्तानुवन्धिचतुष्क और तियंगायुका वन्ध निरन्तर होता है। तिर्यम्गति, तिर्यमातिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका वन्ध मिध्यादि गुणुस्थानमे सान्तर निरन्तर होता है, क्योंकि, सप्तम गृथिवीके नारकियोंमेंने तथा तेजकाथिक व वायुकायिक कीवोंमेंसे निकलकर स्विविदयोंमें उत्पन्न दुए जीवोंके अन्तर्गुष्ठते काल तक निरन्तर बन्ध

१ प्रतिषु 'अण्णापयक्षीणं ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु 'तदुशयमहिकिल्व ' इति पाठः ।

सासणम्य संतरो, तत्तो तेसिसुववादाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधे सांतरो, अणिवभेणेण-समयबंधुबरुभादो । एसा परूवणा ओघादो थोवेण वि ण विरूज्झदि, समाणनुवरुभादो ।

पच्चया ओघपच्चयतुल्ला । णविर मिच्छादिष्टि-सासणसम्मादिष्टीणं जहाकमेण तेवण्णहेत्ताठीसुत्तरपत्रया, पुरिस-णवुंसयवेदपच्चयाणममावादो । तिरिक्खाउअस्स मिच्छादिष्टि-सासणसम्मादिष्टीसु कमेण पंचास पंचेताठीस पच्चया, ओराठिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकाय-जोग-पुरिस-णवुंसयवेदपच्चयाणमभावादो । तदभावा वि इत्थिवेदोदइल्ठाणमपञ्जतकाठे आउअकम्मस्स वंथामावादो ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ्-तिरिक्खगइ्पाओग्गाणुपुविव-उज्जोवाणि भिच्छादिष्टि-सासण-सम्मादिष्टिणो तिरिक्खगइ्संजुत्तं वंधति । अप्यमत्थविद्यायगदि-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचा-गोदाणि भिच्छाद्द्विणो तिगद्मंजुत्तं वंधति, देवगईए वंधाआवादो। सासणसम्माइष्टिणो तिरिक्ख-मणुसगइ्संजुत्तं वंधति, देव-णिरयगईए सह वंधाआवादो। चउसंठाण-चउसंघहणाणि तिरिक्ख-मणुसगइ्संजुत्तं वंधति, एदासि णिरय-देवगईहि सह वंधाआवादो। थीणगिद्धित्य-अणंताणु-

पाया जाता है। सासादनसम्बग्दाट गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होना है, क्योंकि, उस गुणस्थानसे उक्त जीवोंक उत्पादका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, विना नियमके उनका एक समय बन्ध पाया जाता है। यह प्ररूपणा ओघसे थोड़ी भी विकस नहीं है, क्योंकि, समानना पायी जाती है।

प्रत्यय ओघप्रत्ययोंके समान हैं। विशेषता इतनी है कि मिध्यादृष्टि और सामादृत्तसम्प्रगृदृष्टियोंके यथाक्रममे तिरेपन और अइतालीस उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके पुरुषेद्र और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है। तिर्पगायुके मिध्यादृष्टि और सासादृत्तसम्प्रगृद्धि गुणस्थानोंमें कमसे पचास और पेतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके जीदारिकमिश्र, बेकिथिकमिश्र, कार्मणकाययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है। उनका अभाव भी स्वोवेदोद्य युक्त जीवोंक अपयोत्तकालमें आयु कर्मके बन्धका अभाव होनेसे है।

तिर्यगायु, निर्यगाति, तिर्यगातिप्रायोग्यानुष्यी और उद्योतको मिथ्यादिष्ट च सास्तादनसम्प्रग्रहि जीव तिर्यगातिस संयुक्त बांधते हैं। अप्रशस्तविद्यागाति, नुभँग, नुस्त्र, अनादेय और तीवगावको मिथ्यादिष्ट जीव तीन गतियोसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनके देवगतिक बाधका अभाव है। सास्तादनसम्प्रग्रहि तिर्यगाति व मनुष्य-गतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनके देव व नरक गतिक साथ उनका बन्ध नहीं होता। बार संस्थान और चार संहतनको तिर्यगति व मनुष्य-गतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, इनका नरकगति व देवगतिके साथ वन्ध वहीं होता। स्वाक्यासिकय और अननतानु

षंधिचउक्काणि मिच्छाइहिणो चउगइसंजुत्तं, सासणसम्मादिष्टिणो तिगइसंजुत्तं षंधंति, णिरयगर्हेए अभावादे। ।

सन्वासि पयडीणं तिगड्सिन्छादिष्टि-सासणसम्मादिष्टिणो सामी, णिरयगर्धए इत्यिनेदु-दयाभावादो । बंधदाणं बंधविणदृद्धाणं च सुगमं, सुनुहिड्सादो । सत्तण्डं धुवपयडीणं मिन्छा-इड्टिस्टि च उञ्चिहो बंधो । सासणे दुविहो बंधो, अणाड-धुवाभावादो । अवसेसाणं सन्वत्थ सादि-अद्धवो, अद्धववंधित्तादो ।

णिद्दा पयला य ओघं ॥ १७२ ॥

एदासिं दोण्हं पयडीणं जहा ओषम्मि परूवणा कर्। तहा कायव्या । णविर पञ्चएसु पुरिस-णबुंसयवेदपञ्चया अवणेदव्या । णविर असंजदसम्मादिडिम्हि ओरालिय-वेउव्यियसिस्स-कम्मृह्यकायजोगां च, इस्थिवेदाहियरादो । पमत्तसंजदाग्दि पुरिस णबुंसयवेदेहि सह आहारदुंग च अवणेदव्यं, अप्यसत्यवेदोदइल्लाणमाहारसरीरस्पुदयाभावादो । तिगद्दिमच्छादिडि-सासणसम्मा-दिडि-सम्मामिच्छादिडि-असंजदसम्मादिडिणों सामी, णिरयग्र्हेण् दृश्यिवेदोदइल्लाणमभावादो ।

वन्धिचतुष्कको मिध्याद्यष्टि चार गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं। सासादनसम्यग्द्यप्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उनके नरकगतिका बन्ध नहीं होता।

सव प्रकृतियोंके तीन गतियोंके मिथ्यादिष्ट ओर सासादनसम्यग्दिष्ट स्वामी हैं, क्योंकि, तरकगतिमें खोबेदके उदयका अभाव है। बच्धाध्वान और बच्धिवनष्टस्थान सुगम हैं, क्योंकि, व सुबंग ही निर्दिष्ट हैं। सात धुवप्रकृतियोंका मिथ्यादिष्ट गुणस्थानमें बारों प्रकारका बच्ध होता, क्योंकि, वहां अनादि व अधुव बच्धा होता है, क्योंकि, वे अधुव बच्धा होता है, क्योंकि, वे अधुव बच्धा होता है,

निद्रा और प्रचला प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १७२ ॥

इन दो ग्रह्मियोंको जैसे ओघमें प्रक्रपणा की गई है वैसं करना चाहिये । दिवोग यह है कि प्रत्ययों में पुरुषदेव और नर्जुसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । इतनी और भी विशेषना है कि असंयतनम्प्यादिष्ट गुण्यानामें औदािकिसिक तै विशेषकिष्ठ और कार्मण कार्याग प्रत्ययोंको भी कम करना चाहिये, क्योंकि, स्विविद्य अधिकार है । प्रमत्तसंवय गुणस्थानमें पुरुष और नपुंतक वर्दोंके साथ आहारकिककों भी कम करना चाहिये, क्योंकि, अपग्रस्त वेदोवय युक्त जोवोंके आहारकहारीरके उदयका अभाव है । तीन गतियोंके मिख्यादिष्ट, सासादननम्प्यादिष्ट, स्वायानिष्ठ अध्याद स्वामी हैं, क्योंकि, नरकगतिमें स्वीवेदोदय युक्त जीवोंका अभाव है । केवळ इतनी ही जोवसे हैं, क्योंकि, नरकगतिमें स्वीवेदोदय युक्त जीवोंका अभाव है । केवळ इतनी ही जोवसे

१ प्रतिषु 'कायजोगो ' इति पाठः ।

२ काप्रती ' सासणसम्मारही असंजदसम्मादि हिणो ' इति पाठः ।

एत्तिओ चेव विसेसो, णस्थि अण्णस्थ कस्थ वि। तेण दम्बद्धियणयं पहुच्च श्रोषमिदि दुत्तं। असादावेदणीयमोघं ॥ १७३ ॥

असादवेदणीयमिन्चेदेण पयिष्टिणिहेसो ण कदो, किंतु असादवेदणीय-अस्दि-सोग-अथिर-असुह-अजसिक्ति' ति छप्पयिष्ट्यिक्षिओ असाददंडओ असादवेदणीयमिदि णिहिद्दो। जहा सच्चहामा भामा, शीममेणो सेणो, बलदेवो देवा ति । एटासि छण्णं परूवणा ओप-तुल्ला। णविर एत्थ वि पच्चयविसेमा सामित्तविसेसा च णायच्वो।

एक्कट्टाणी ओघं ॥ १७४ ॥

ण्क्किम मिन्छाइडिगुणडाण जाओ पयडीओ वंधपाओग्गा होद्ण चिडंति तासिमेगडाणि नि मण्णा । तिस्म एक्कडाणीए परुवणा ओशतुल्ला । तं जहा — मिन्छत्तस्म वंधोदया समे वेश्ळिण्णा । णुबंमयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुत्र्यी एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाब-थावर-सुहुम-अपज्जत-माहारणाणं वंधोदयवोच्छेदविचारो णस्थि,

विशेषता है, अन्यय और कहीं भी विशेषता नहीं है । इसीलिये द्रव्या<mark>र्थिक नयकी अपेक्षा</mark> कर 'ओवक समान है, 'एसा कहा गया है ।

असातावेदनीयकी प्ररूपणा ओधके समान है ॥ १७३ ॥

असातायेदनीय इन पद्देस प्रकृतिका निर्देश नहीं किया है, किन्तु असातायेदनीय, अर्गत, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति, इन छह प्रकृतियाँसे सम्बद्ध असातादण्डक 'असातायेदनीय पद्देस निर्देश किया गया है और सन्यभामाको 'मामा', भीमसेनको 'सेन' और बर्ध्देसको 'देब' पद्से निर्देश किया जाता है। इन छह प्रकृतियाँको प्रकृता आयके समान है। विशेष दतना है कियहों भी प्रत्ययेगद और स्वामित्योदे जानता चाहिये।

एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा आधके समान है ॥ १७४ ॥

एक मिथ्यादिष्ट गुणस्थानमं जो प्रकृतियां बन्धयोग्य होकर स्थित हैं उनकी 'एकस्थानिक 'संबा है। उन एकस्थानिकोंबी प्रमूपणा आघके समान है। वह इस प्रकार है— मिथ्यात्यका गन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिज्ञ होते हैं। नयुंस्तकेद्द नारकायु, नरकाति, नरकगनिप्रायोग्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, होन्द्रिय, ब्रोन्ट्रिय, चतुर्सिन्द्र्य जाति, आताप, स्थायर, सहस, अपर्यान्त और साधारण, इनके बन्ध और उदयके ब्युच्छेदका विचार

१ कापतो ' असह-जस-अजसकिचि ' इति पाठः ।

ण्दासिमेस्थ णियमेण उदयाभावादो । अवसेसाणं पुन्तं वंशो पच्छा उदओ वोच्छिण्णा, वंशे फिट्टे वि उत्तरिमगुणद्दाणेसु एदासिमुदयदंसणादा ।

मिच्छत्तस्स सोदओ वंथो । णउंमयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-ए-इंदिय-बीइंदिय-नीइंदिय-चर्डीरिदयजादि णिरयाणुपुचिन-आदाव-धावर-सुहुम-अपण्डत्त-माहारणमगिरणामाणं परेदओ वंधो, इत्थिवेदोदएण सह एदामिमुदयविराहारे। । एसे। एस्य ओधादा विसेसो, तत्य सोदय-परेदएणेदासि वंधोवदेसारे। इंडसंठण-असंपत्तमग्रहसंघडणाणं सोदय-परेद्दओ वंधो, इत्थिवेदोदएण सह एदासिमुदयम्स विप्तिडंमहाभावादा । मिच्छत्त-णिरयाउआणं णिगंतरे। वंधो । अवसेमाणं मांतरे, अणियदेगमग्रववंयदंमणादी ।

मिच्छत्त-णृत्तुंसयबेद्द-हुंडमंठाण-असंपत्तरगढ्टसंघडण-णृर्द्दिय-आदाव-धावराणं तेवण्ण पञ्चया, पुरिस-णृतुंसयबेदाणमभावादा । णिरयाज-णिरयगर्द-णिरयगद्दाणंशस्याणुपुरवीणमगुण-वंचास पद्यया, ओषपचएसु ओर्गाठियमिस्स-करमद्दय-वेजिवयदग-पुरिस-णृतुंसयवेदाण-ममाबादो । बीह्दिय-तीहंदिय-चर्जिदियजाद्-सुदुम-अदञ्जत-साहारणाणं एक्कवंचास पद्यया, ओषपुरचएसु वेजन्वियद्ग-पुरिस-णृतुंभयवद्वरच्याणमभावादो । ससं सुगमे ।

नहीं है, क्योंकि. यहाँ नियमते इनके उद्यक्षा अमृत्य है । द्रोप प्रकृतियोंका पूर्वमें वस्थ और पश्चात् उद्य ब्युव्छित्र होता है, क्योंकि वस्थेके नष्ट होलपर मी उपरिम गुणस्थानीमें इनका उदय देखा जाता है ।

सिध्यात्वका स्वेदिय यन्त्र होता है । नतुंतकयेद, नारकायु, नरकाति, एकेन्द्रिय, क्रीह्रिय, क्रीह्रिय, युन्ति, युन्ति, नारकातुत्वी, आताप, स्थायार, स्वक्ष, अपयोपन और साधारकारीर नासकी, इनका पराद्य वन्ध होता है, क्योंकि, खोवद के दूब से स्वक्ष होत्र इसके दूब क्या विरोध है। यह यहां आवते विरोध ते हैं। यह यहां आवते विरोध ते हैं। यह यहां आवते विरोध ते हैं। यह यहां आवते विरोध ते स्वचित्र के स्वच्छ का उपहार के स्वच्छ का उपहार है। हुण्डलंडना और आतंप्रात्मह्याधिकालंडनाका स्वादय-परोद्य वन्ध होता है। स्वच्यात्व अपहार वन्ध होता है। सम्बद्धात्व का स्वच्यात्व का स्वच्यात्य का स्वच्यात्व का स्वच्यात्य का स्वच्यात्य का

सिध्याय, नर्जुंसक्येद, इण्डमंस्थान, असंबाद्यस्यायकार्महानन, एकेन्द्रिय, झालाप आर स्थायर प्रकृतियाँक निरंपन प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहां पुरुपंयद और नर्जुंसक्येद अस्तात्र आर स्थायर प्रकृतियाँके निरंपन प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहां पुरुपंयद और नर्जुंसक्येद अस्तात्र अस्य हैं। इसार्वात्र अस्य हों हें अद्देशिक निरंप के स्थायन स्थाय हैं। अस्ति होति हों हो होति हों हो हो हो हो हो हो हो हो स्थाय है। इसार्व्यक्ष अस्त हो होतिह्रय, बीन्द्रिय, चुतिह्रिय जाति, सुक्ष्म प्रयायका अपर्याप्त और साधारण प्रकृतियोंके इक्यावन प्रत्यय हैं, क्योंकि, ओष्प्रयत्योंके विकायकार्विक, पुरुपंबद और नर्जुंसक्येद प्रत्ययोंका असार्व है। होष प्रत्ययक्षरणा सुरास है।

मिन्छतं चउगइसंख्तं वंथइ। णउंसरवेद-हुंडसंठाणाणि तिगइसंख्तं, देवगईए सह वंधाभावादो। णिरयाउ-[णिरयगइ-]णिरयगइदाओग्गाणुपुन्वीओ णिरयगइसंख्तं वंधइ। कुदोः? साभावियादो। अवज्ञतासंपत्तेवद्वसंघडणाणि तिरिक्त-मणुसगइसंख्तं, णिरय-देवगईहि सहः वंधाभावादो। अवसंसाओ पयडीओ तिरिक्तगइसंख्तं, तत्य ताणं णियमदंसणादो। मिन्छत्त-णुद्धसयवेद-एइंदियादाव-थावर-हुंडसंटाण-असंपत्तसेवहसंघडणाणं तिगइमिन्छाइडी सामी, णिरयगईए इत्थिवदुद्याभावादा। णिरयाउ-णिरयगइ-धीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियज्ञादि-णिरयाणुपुन्वि-सुदुम-अपज्जत-साहारणाणं तिरिक्त-मणुस्ता सामी। वंधदाणं वंधविणइङ्काणं च सामं। मिन्छत्तस्य चउन्विद्वां वंधो। सिसाणं सादि-अद्धों।

अपच्चक्खाणावरणीयमोघं ॥ १७५ ॥

एत्य वि पुत्र्वं च ५६वेद्रच्वं । अह्वा अपचन्त्वाणावरणीयप**हाणां दंडओ अपचन्त्वाणा-**वरणीयमिद्रि भण्णद्र । जहा जिवेद-क्वयंच-जंबु-जंबीरवणमिदि । अपच्चन्त्वाणचाउक्क मणुसगड्- ओराट्यिससीर-ओराट्यिसमीरअंगांवंग-वज्जिसहवड्ररणारायणसरीरसंघडण-मणुसगड्रपाओरगाणु—

सिध्यात्वका चारो गांतरों सं संयुक्त बांधता है। नपुंसकबंद और हुण्डसंस्थानको तीन गांतियांस संयुक्त बांधता है, क्योंकि, द्वयातिक साथ उनके बण्धका आगा है। नारकातु, [नरकाति] आर नरकातियांस्यायुर्धीका नरकगतिस संयुक्त बांधता है, क्योंकि, येसा स्वमाव है। अपयोग्त और असंप्रात्तरपूर्विका संदन्तको नियंगांति और मयुष्यातिसे संयुक्त बांधता है, क्योंकि, तरकगांति और असंप्रात्तरपूर्विका संयुक्त बांधवा है। अपयोग्त और असंप्रात्तरपूर्विका संयुक्त बांधता है। अपयोग्त संयुक्त बांधता है। हिप्पातिक साथ उनके बच्छका नियम देखा जाता है। नियम्याय, नुण्डसंस्थान और असंप्रात्तरपूर्विका संयुक्त वांधता तीन नियम देखा जाता है। नियम्याय, नुण्डसंस्थान और असंप्रात्तरपूर्विका साथ है। नियम तियम स्थायत्त हुण्डसंस्थान और असंप्रात्तरपूर्विका साव है। नियम तियम स्थायत्त हुण्डसंस्थान और असंप्रात्तरपूर्विका साव है। नारकायु, नरकगति हीन्द्रिय, चित्रय, चतुर्विद्य जाति, नारकायुर्वी, स्वस्त अपर्यान्त और साधारण, इन प्रकृतियोक वन्धक तियंच व मयुष्य स्वामी हैं। वन्धाध्वान और वन्धिका सावि व अध्रव वन्ध होता है। श्रेष्यात्वच वार्री प्रकारका बन्ध होता है। श्रेष्यात्वचा चार्री प्रकारका वन्ध होता है। श्रेष्यात्वचा चार्री प्रकारका वन्ध होता है। श्रेष्यात्वचा चार्री प्रकारका चार्री प्रकारका सावि व अध्रव वन्ध होता है।

अप्रत्याख्यानावरणीयकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १७५ ॥

यहां भी पूर्वक समान प्रक्रपणा करना चाहिये। अथवा अप्रत्याच्यानावरणीय-प्रधान दण्डकको अप्रत्याच्यानावरणीय नाव्हसं कहा जाता है। जैसे कि नीम, आम, कदम्ब, जामुन और जम्बीर, इन वृक्षांकी प्रधानताक हरा दुक्षांसे भी गुक्त वनांको नीमवन, आमयन, कदम्बवन, जामुनवन और जम्बीरचन नाव्होंसे कहा जाता है। अप्रत्याच्यान-चतुष्क, मनुष्यानित, शैद्धारिकारीर, औदारिकारीरांगोपांग, वश्चयेमवज्ञानाराच्यातरिर-संहत्वन और मनुष्यानितमायोग्यानुपूर्वी, इन अप्रत्याच्यानावरणीयसंहित प्रकृतियोंकी पुर्व्वाणमपञ्चनखाणावरणीयसण्णिदाणं परुवणा ओधनुल्छा। तं जहा--- अपबन्धाणच उक्कस्स षंषोदया समे वोच्छिण्णा, असंजदसम्मादिष्टिन्टि चेव तदुभयदंसणादो । मणुमगङ्गाओगगाणु-पुर्व्वाए पुर्व्व उदओ पच्छा वंधो, सासणसम्माङ्गि असंजदसम्मादिष्टीसु तच्वाच्छेददंसणादो । अवसेसाणं पयडीणं पुर्व्व वंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णा. तहीवलंभादो ।

प्रक्रपणा आयोक समान है। यह इस प्रकारने हैं — अवन्यत्स्य संघण्यक्ष सम्ब हो। यह इस प्रकारने हैं — अवन्यत्स्य संघण्यक्ष समान है। उन दोनीका अध्ययन्त्रसम्भाष्ट गुणस्थान मो उन दोनीका खुच्छेद्र देखा जाता है। मनुष्यानिका नेप्यापुत्रीका प्रवेश उत्य और प्रधान वस्य बुच्छिद्य होता है, प्रयोक्त, सामहत्यसम्भयद्धि ग्रीत अध्ययसम्भयद्धि गुणस्थानोम कम्या उनका ब्युच्छेद्र देखा जाता है। या प्रकृतियोगा पृथ्य प्रस्य और प्रधान उदय ब्युच्छिद्य होता है, स्योक्ति, वसा पाया जाता है।

सव म्हात्योंका वन्ध सर्वत्र स्वोत्य परादय होता है। विशेष उत्तम है कि सम्यामिश्यादिष्ठ और असंयत्तसभ्याद्यष्टि गुणस्थानीम राष्ट्रप्यातिकिक, ओदारिकिक असे वस्त्रप्रसंहतनका परोदय वस्त्र होता है, क्योंकि, देवीम इनका उद्दराभाव है। अबस्यास्थानावरणव्यक्तिका वस्त्र निरुप्याति अक्षर्यास्थानावरणव्यक्तिका वस्त्र निरुप्याति और मनुष्यातिस्थान्यात्वर्याक्ष मिश्यादिष्ट और सामान्त्रसभ्यदिष्ट गुणस्थानीम सान्तर-निरन्तर वस्त्र होता है।

शंका--निरन्तर वन्ध कसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, आनतादिक देवोंमेंन श्रीवर्दा मनुष्येंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्भुहर्त काल तक निरन्तर रूपमे उन दोनों प्रकृतियोंका वन्य देखा जाता है।

सासादनसं ऊपर उनका निरुक्त बन्ध होता है क्योंकि. सम्याभिध्यादिष्ट और असंयतसम्यव्हिदेवोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। इसी प्रकार औदारिकदारीर और औदारिकदारीरांगोपांगक भी कहना चाहिय, क्योंकि, सनन्कुमारादिक देवोंमेंसे स्रीदिदियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। बजर्पससंहनतका मिध्यादिष्ट और सासादनसम्यव्हि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है। उपरिम

1 243

उवरि णिरंतरो. पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो ।

अपच्चक्खाणचउक्कस्स सन्वगुणहाणेसु ओघपच्चया चेव । णवरि पुरिस-णवंसयपञ्चया सञ्बन्ध अवणेदन्ता । असंजदसम्मादिद्विभ्हि ओरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया च अवणेदच्या । एवं वज्जिरिसहवइरणारायणसरीरमंघडणस्स वि वत्तच्वं । णवरि सम्मामिच्छाइट्टि-असंजदसम्माइट्टीस् ओरालियकायजोगपच्चओ अवणेदव्वो । मणुसगइ-मणुसगङ्गपाञाग्याणुपूर्वाः जाराठियसरीरः जाराठियमरीरंगोवंगाणं मिच्छाङ्कि-सासणसम्मादिङ्गीम दुरुवुणाधपच्चया चेत्र होति, पुरिस-णवंसयवेदपच्चयाणमभावादो । सम्माभिच्छादिहि-असंजदमम्मादिहीस चार्लाम पञ्चया, पुरिम-णवंसयवेदेहि सह ओरालियदगाभावादो. असजदसम्मादिद्विम्हि वउव्वियमिस्स-कम्महयपच्चयाभावादो च । सेसं सगमं ।

अपरचक्याणचउक्कं सिच्छाःही चउग्रसंजत्तं. सासणी तिग्रसंज्ञतं. उवरिमा दगइमंज्रतं वंबति । मणुमगइ-मणुमगइपाओगगाणुप्रकीओ मणुमगइसंज्रतं सब्वे बंधीत ।

राणस्थानेमि निरस्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है।

अप्रत्यारयानावरणचतुःककं सव गुणस्थानोंमें ओष्यत्रत्यय ही हैं। विदेशकता कवल इतनी है कि परुषंबद और नप्सकबद प्रत्ययोंको सर्वत्र कम करना चाहिये। असंस्यतसम्यग्दिष्टं गुणस्थानमे औद्गिन्किमिश्र, विकियिकिमिश्र और कार्मण प्रत्ययाँको मी कम करना चाहिय । इसी प्रकार बज्जर्यभवजनाराचशरीरसंहननके भी कहना चाहिय । विदेश इतना है कि सम्यामध्याद्धि और असंयतसम्यग्द्धि गणस्थानीम श्रीदारिक काययाग प्रत्यय कम करना चाहिय। मन्त्यगति, मन्त्यगतिप्रायोग्यानपर्वी, अंद्रारिकदारीर और ओदारिकदारीरांगे:वांगंक मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थाने में दो कम जेव्यप्रत्यय ही हैं, क्योंकि, पुरुष और नपुंसक वेद्यत्ययोंका अभाव है। सम्यामाध्यादृष्टि और असंयतसम्यादृष्टि गुणस्थानाम चालीस प्रत्यय हैं, क्यांकि. वहां परुप और नवंसक, वेदोंक साथ औदारिकद्विकका अभाव है तथा असंयतसम्बग्हाप्रे गुणस्थानमें विकिथिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोका अभाव भी है । शेष प्रत्ययप्रकृषणा सुगम है।

अवन्याख्यानायरणचत्रककी निथ्याद्यप्ट चार गतियोंसे संयुक्त, सासादन-सम्यन्द्रशि तीन गतियाँसे संयुक्त, और उपस्मि जीव दें। गतियाँसे संयुक्त बांधते हैं। मनस्यगति और मनस्यगतिप्रयोग्यातपूर्वीको मनस्यगतिसे संयक्त सभी स्त्रीवेदी जीव

१ काप्रतो ' परित णवृत्तयवेदपञ्चयागमभाव,दा । सम्मामिष्काइडी असंजदत्तमादिडीस वेडव्यियमिस्स-कम्मद्रयपञ्चयानावादी च 'हति पाठः।

अवसेसतिणिण्वयङ्गोशे। भिच्छादिङ्गिःसासणसम्मादिङ्गिणे। तिरिक्ख मणुसगइसंजुत्ते,सम्माभिच्छा-दिङ्गिःसंजदसम्मादिङ्गिणे। मणुसगइसंजुत्ते वंधति ।

अपञ्चक्खाणावरणच उक्कस्स तिगहच दुगुण ट्वाणिणो सामी । अवसेसाणं पयडीणं तिगद्दमिच्छादिद्धि सासणसम्मादिष्टिणो देवगद्दसम्माभिच्छादिद्धि-असंजदसम्मादिष्टिणो च सामी। बंधद्वाणं बंधविणद्वद्वाणं च सुगमं । अपञ्चक्खाणच उक्कस्स भिच्छाइद्विग्दि चउित्वहा बंधो। अण्णत्य तिविहो । अवसेसाणं पयडीणं सादि-अद्धवो ।

पच्चक्खाणावरणीयमोघं ॥ १७६ ॥

एत्थ ओघपरूवणं किंचिविभमाणुविद्धं संभारिय वत्तव्यं ।

हस्त-रदि जाव तित्थयरेत्ति ओघं ॥ १७७ ॥

ञोघादो एदेसुं सुनेसु अवडिदयोवभेयसंदरिसण्डं मेदबुद्धिस्स्साणुग्गहडं च पुणरिब परूवेमो — हस्स-रइ-भय-दुगुंछाणं वेवादया मर्म वोच्छिङवंति, अपुट्यकरणचरिमसमण्

बांधेत हैं। रोव तीन प्रकृतियोंको मिथ्यादिए च सामादनसम्यग्दीए निर्परगानि एवं मनुष्पगतिसे संयुक्त, तथा सम्याध्मध्यादिए व असंयनसम्यग्दीए मनुष्यगतिस संयुक्त बांधेते हैं।

अवस्यास्थानावरणवनुष्कंक नीन गतियोंक चार गुणस्थानयर्नी स्वीवेदी जीव स्वामी हैं। रोप मक्तियोंके तीन गतियोंक मिथ्यादि व मानादनसम्बन्धि तथा देव-गतिके सम्यग्निथ्यादि व असंयतसम्बन्धि स्वामी है। बस्वाच्यान और वन्धविनष्ट-स्थान सुगम हैं। अध्ययास्थानावरणवनुष्कका मिथ्यादि गुणस्थानमें चारी प्रकारका और अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका वस्त्र होता है। प्राय प्रकृतियोंका सादि व अध्यव वस्त्र होता है।

प्रत्याख्यानावरणीयकी प्ररूपणा आवके समान है ॥ १७६ ॥

यहां कुछ विशेषतासं सम्बद्ध आध्यप्ररूपणाका स्मरणकर कहना चाहिय ।

हास्य व रतिसे ठेकर तीर्थंकर प्रकृति तक आधके समान प्ररूपणा है ॥ १७७ ॥

क्षेष्रकी अवेक्षा इन सूर्वेमें अवस्थित कुछ थोड़ीसी विशेषताको दिखलाने तथा मन्दुकुकि शिष्पक अनुप्रदक्षे लिये फिर भी प्ररूपणा करते हें— हास्य, रति, भन्न और जुगुस्सका बन्ध व उदय दोनों साथमें ब्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, अपूर्वकरणके अस्तिम

१ अप्रतौ 'पञ्चनस्काणावरणी ओघ 'इति पाठः । २ श्रांतग्रु 'देवेस् **'** इति पाठः ।

दोण्हं' बेच्छेदुबर्लमादे। । सव्बगुणहाणेष्ठु बंबो सोदय-परीदक्षे, परोदए वि सैते बंधविरोहा-भावादो। भय-दुगुंछाणं सव्बगुणहाणेष्ठु णिरंतरे। बंबो, धुवबंधितादो। हस्स-रदीणं मिच्छाईहि-प्यहुढि जाव पमत्तसंबदो ति वंबो मांतरे।, एत्थ पडिवक्खरयिडवंबुवर्लमादो। उत्वरि णिरंतरे।, पडिवक्खरपरिडवंबोमावादो। पच्चया सुगमा, बहुसा परुविदत्तादो। मिच्छाईही चडमहसंख्रते बंधीत। णविर हस्स-रदीका तिगइसंख्रते, णिरयगईए सह बंघितरोहादो। सव्यपस्डिको सासगा तिगइसंग्रुतं वंबइ, तत्थ णिरयगईएं बंघाभावादो। सम्माभिच्छादिहि-अवंबदसम्मा-दिहिणो दुगइसंग्रुतं, तत्थ णिरय-निरिक्खाईणं बंघाभावादो। उत्वरिमा देवग्यइसंग्रुतं, तत्थ सिसगईणं बंघाभावादो। जविर अपुव्यकरणे चिरामतत्तमागे अगइसंग्रुतं बंधीत। तिगइ-मिच्छादिद्वि-मासगममादिदि मम्माभिच्छादिहि-अमंत्रसम्मादिहिणो सामी, णरयगईए णिरुद्वित्थिवराभावादो। दुगाइसंजदानंत्रदा सामी, देवगईए देसव्बर्श्णमभावादो। उत्वरिमा मणुस्मा चव, अण्णत्य महव्वर्णमभावादो। वंघद्याणं बंघविणहृहाणं च सुगमं। भय-दुर्गुछाणं

समयमें उनके बन्ध व उदय दें।नेंका ब्युच्छेद पाया जाता है। सब गुणस्थानोंमें उनका बन्ध स्वादय परादय होता हैं, क्योंकि, अन्य प्रहातियोंके उदयक भी होनेपर इनके बन्धका कोई विरोध नहीं है। भय और जुलुक्साका सब गुणस्थानोंमें निरम्तर बन्ध होता है. क्योंकि, व अववन्धी हैं। हास्य और रानिका मिथ्यादिष्टसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है. क्योंकि, यहां इनको प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका <mark>बन्ध पाया आता</mark> है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, बहां प्रतिपक्ष प्रकृतियों<mark>के बन्धका अभाव</mark> है। प्रत्यय सराम है, क्योंकि, उनका बहुत बार प्ररूपण किया जा चका है। मिथ्यादृष्टि जीव उन्हें चार गांतर्योंसे संयुक्त वांधते हैं । विशेष इतना है कि हास्य और रतिको तीन गतियोंने संयुक्त वांधते हैं, क्योंकि, नरकगतिक साथ उनके बन्धका विरोध है। सब प्रकृतियोंका साक्षादनसम्यग्दष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त वांधता है, क्योंकि, इस गुणस्थानमें नरकगतिका बन्ध नहीं होता। सम्यग्मिध्याहृष्टि और असंयतसम्यग्दाप्ट दे। गतियास सबक्त बांधत हैं, क्योंकि, उन गुणस्थानीमें नरकगति और निर्यम्मतिके बन्धका अभाव है । उपारम जीव देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, उपरिम गुणस्थानोंमें दोप गतियोंके वन्धका अभाव है। विदेशवता यह है कि अपूर्वकरणके अन्तिम सप्तम भागमें गतिसंयोगस रहित बांधते हैं। तीन गतियोंके मिध्यादृष्टि, सासादन सम्यग्दिए, सम्यग्मिथ्यादिए और असंयतसम्यग्दिए स्वामी है, क्योंकि, नरकगातिमें स्रोवेदके उदय सहित जीवोंका अभाव है। दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं. क्योंकि. देवगतिमें देशवतियाका अभाव है। उपारेम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें महाव्रतियोंका अभाव है। बन्धाध्वान और बन्धविनप्रस्थान स्वतम है।

र प्रतिषु 'चदुण्ह ' इति पाठः । २ अप्रतौ 'णिरयगईणं ' इति पाठः । ३ प्रतिष 'देसञ्जगईणः ' इति पाठः ।

मिञ्जाइहिम्ह बंधो चउष्टिबहो । उविर तिविहो, धुवबंधाभावारे। । हस्स-रदीणं सन्तरथ सादि-**अद्धवो**, अद्भवबंधितारो ।

भय और जुगुप्साका मिथ्याद्दछि गुगस्थानमें चारों प्रकारका वस्त्र होता है। उपीरम गुगस्थानोमें तीन प्रकारका वस्त्र होता है, क्योंकि, वहां प्रत्य वस्त्रका अमाव है। हास्य और रतिका सर्वत्र सादि च अधूच वस्त्र होता है, क्योंकि, च अपूचवस्त्री है।

मनुष्यायुक्त पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उद्य रचुनिक्कत होता है, क्योंकि, असंयत-सम्बग्धि और अतिबृत्तिकरण गुणस्थातीम क्रमम उसके बन्ध व उद्यक्त व्युटेउद दुखा जाता है। मिथ्यदिष्टि और सामादनसम्बग्धि गुणस्थाति नेवाद्य पांद्रवस यन्ध्र होता है। असंवतसम्बग्धि पीर सामादनसम्बग्धि गुणस्थाति रूपांक्र स्वाद्य होता है। असंवतस्य व्युटेव प्रमाण पाया जाता है। मिथ्यदिष्टि पत्रात्त और सामादनसम्बग्धि प्रमालेस प्रत्य है, क्योंकि, बहाँ औदारिकिमिश्च विकायिकमिश्च, कार्मण कार्यमा, पुन्तवह और जानुसक्तवह, प्रत्योंकि, असाव है। असंवतसम्बन्धियाँ चालीन प्रत्यव है, क्योंकि, आप अस्वयाँकि औदारिकिमिश्च, विकायक्रिया, कार्मण कार्ययात, पुन्तवह आप नर्नुसक्तवह प्रप्यांक्र असाव है। यो प्रत्यवस्वस्या सुनाम है। सब है। मनुष्यात्रिम संयुक्त ही बांधित है, क्योंकि, अन्य पार्त्याक्ष साथ उत्तक क्ष्यका विराध है। निम्माम है, क्योंकि, अस्य सासादनसम्बग्धरिष्ट स्वामी हैं। असंयतसम्बन्धरिष्ट है। हो। स्वामी हैं, क्योंकि, अस्य गति योम क्रोबेदादय युक्त सम्बन्धरिष्ट समुष्यायुक्त वस्थमा अभाव है। वस्थाध्यान और बन्धितसम्बन्धरिक्षा सुगम है। सर्वत्र साद्व व अध्रव बन्ध होता है।

१ प्रतिषु ' ओषपच्चयासु ' इति पाठ ।

1, 100.]

देवाउवस्स पुव्यमुदक्षो पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि, अप्पमत्तासंजदसम्मादिष्टीसु समेण कंषोदयवाच्छेददंसणादो । सञ्ज्याणहाणेस परोद्रणेव वंधो, सोदयम्हि वंधस्स अवंतानावस्स अबद्वाणादी । णिरंतरी बंधी, अंतीमुहत्तेण विणा बंधवरमाभावादी । मिच्छाइद्विस्स एगणवंचास. सासणस्य चउवेतालीस्, असंजदसम्मादिहिस्स चालीसुत्तरपचया, वे उव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरा-लियमिस्स-कम्मइयकायजोग-पुरिस-णवुंसयवेदाणमभावादो । उवरि पुरिस-णवुंसयवेदाहारदुविह विणा ओघपचया चेव वत्तव्वा। संसं सुगमं। सन्वत्य देवगइसंज्ञतो बंघो, अण्णगईहि सह संघ-विरोहादो । तिरिक्ख-मणस-मिच्छाइद्रि-सासणसम्माइद्रि-असंजदसम्माइद्रि-संजदासंजदा सामी. अण्णत्य द्वियाणं तन्त्रंथिवरोहादो । उवरिमा मणुसा चेव, अण्णत्य महन्त्रईणमभावादो । षंधदाणं सगमं । अप्यमत्तदाए संखेज्जदिभागं गंतण बंधो वोच्छिज्जदि। कदो ? सत्ताशसारि-गुरूवदेसादो । सादि-अद्धवो बंधो ।

देवगइ-पंचिदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीर-<mark>अंगोर्वग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगद्दपाओग्गाणुपु</mark>व्वि-अगुस्वलहुव-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थ-विहायगइ-तस-बादर-पञ्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणेसु देवगइ-देव-

देवायका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युछिन्न होता है, क्योंकि, अप्रमत्त और असंयतसम्यग्दाष्टि गुणस्थानोंमें कमसे बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है। सब गुणस्थानोंमें परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, अपने उदयके होनेपर उसके बन्धका अत्यन्ताभाव है। उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्भृद्वर्तके विना उसके बन्धविश्रामका अभाव है। मिध्यादृष्टिके उनंचास, सासादनसम्यग्दृष्टिके चवालीस और असंयतसम्यग्दृष्टिके चालीस उत्तर प्रत्यय हैं,क्योंकि,यहां वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, औदा-रिकमिश्र, कार्मण काययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है। असंयतसम्य-ग्हाष्टि गुणस्थानके ऊपर पुरुषवेद, नपुंसकवेद और आहारकद्विकके विना ओग्रवत्यय ही कहना चाहिये। शेष प्रत्ययप्रकृपण सुगम है। सर्वत्र देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उसके बन्धका विरोध है। तियेंच और मनध्य मिध्याद्वि, सासादनसम्यन्दृष्टि. असंयतसम्यन्दृष्टि एवं संयतासंयत स्वामी हैं, क्योंकि, अन्यन्न स्थित जीवींके उसके बन्धका विरोध है। उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं. क्योंकि, अन्य गतियोंमें महाव्रतियोंका अभाव है। बन्धाध्वान सुगम है। अप्रमत्तकालके संस्थातवें भाग जाकर बन्ध व्यव्यव्यक्ष होता है, क्योंकि, पेसा सुत्रानुसारी गुरुका उपदेश है। सादि व अध्य बन्ध होता है।

देखमति, पंचेन्द्रियजाति, वैकिथिक, तेजस व कार्मण शरीर, समचतरस्वसंस्थान, विकिथिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघ, उपघात. परवात, उच्छवास, प्रशस्तविद्दायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सभग, सस्बर, आहेय व निर्माण, इनमेंसे देवगति, देवगतिप्रायोग्यानपूर्वी, वैक्रियकशरीर €. 4. 22.

गद्दपाओम्माणुपुन्नी-वेउन्नियसरीर-वेउन्नियसरीरअंगोवंगाणं पुन्वसुदओ पच्छा बंधो वोच्छि-ज्जिदि, अपुन्नासंज्ञदसम्माइडीसु देवगद्दपाओम्माणुपुन्नीए अपुन्य-सासणेसु कमेण बंधो-द्यवोच्छेदुवरुंभादो । तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवरुहुअ-उवचाद-परपाद-उस्सास-पसत्थविद्वायगद-पत्तेयसरीर-विर-सुह-सुस्सर-णिमिणाणं पुन्नं बंधो पच्छा उदबो वोच्छिज्जिदि, अपुन्य-अणियटीसु कमेण बंधोदयबोच्छेदुवरुंभादो । पेचिदियजादि-तस-बादर-पज्जत-सुभगादेज्जाणं पि एवं चेव वत्तन्त्रं।

देवगह्-देवगह्पाओगगाणुपुन्वि-वेउन्वियसरीर-वेउन्वियसरीरअंगोवंगाणं परोदएणेव सव्वत्थ बंघो, सोदएणेदासिं बंधविरोहादो। पंचिदियजादि-तेजा-कम्मह्यसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवठहुअ-तस-बादर-पञ्चत-थिर-सुभ-णिमिणाणं सोदओ सव्वगुणद्राणेसु बंघो, एत्थेदासिं धुवेद्धयत्त्दंसणादो । समचउरससंठाण-पसत्थविद्यायाह-सुस्सराणं सन्वत्थ सोदय-परोदओ बंघो, उभयहा वि बंधाविरोहादों। उचधाद-परधाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं मिन्छादिष्टि-सासणसम्मादिहीसु बंघो सोदय-परोदओ, विग्गहगदीए केसिंचि अपञ्जतकाठे च उदएण

देवगति, देवगतिप्रायोग्याजुपूर्वी, वैकिधिकतारीर और वैक्रिधिकतारीरांगोणांगका परोत्तयसे ही सर्वेत्र बन्ध होता है, क्योंकि, स्वात्रयंत तृतक यन्धका विद्याय है। पंचेविद्रयज्ञाति, तैजस व कार्मण दारीर वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्ध, अगुरुलपु, त्रस, वादर, पर्यात्त, विस्पर, गुभ और निर्माणका सव गुणस्थानोंमें स्वोदय वन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ ये प्रवृतियां पुर्वाय्त्री देवती विद्याया कार्ती हैं। समस्वतृत्वसंस्थान, प्रशस्तविद्यायोगित और सुस्यका सर्वत्र स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, व्याव्यक्त स्वाद्य परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, विक्रास कार्यक्र विद्याद कि स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य वन्ध होता है, क्योंकि, विद्याद वन्ध विद्याद विद्याया होता है, अपयोक्त वन्ध विद्याद है और सास्वादनसम्परहिष्ट गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, विद्यह्मातिमें और किन्हींके अपयोक्तकाल्ये

१ प्रतिष्ठ ' बंधविरीहादो ' इति पाठः ।

विणा बंधुवरुंभादो । उनिरिमेसु गुणहाणेसु सोदएणेव, अपञ्जतद्वाए तेसिं गुणाणमभावादो । मिच्छादिहि-सासणसम्मादिहि-सम्मामिच्छाहृहि-असंजदसम्मादिहीसु सुमगदिञ्जाणं सोदय-परोदओ बंधो । उनिर सोदओ चेन, साभावियादो ।

तेजा-कम्मह्यसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उनघाद-णिमिणाणं बंघो णिरंतरो, धुवषंधित्तादो। पंचिदियजादि-परघादुस्सास-पसत्थिवद्ययगृह-तस-बादर-पञ्जत-पत्तेयसरीरसुमग-सुस्सर-आदेज्ज-देवगृह देवगृहपाओरगाणुपुन्ती-वेउव्वियसरीर-बंगोवंगाणं मिच्छाइडिम्ह्रि
सांतर-णिरंतरो बंघो। कथं णिरंतरो ? ण, असंखेज्जताउजतिरिक्ख-मणुस्सेसु णिरंतरबंधुवलंमादो। एवं सासणस्स वि वत्तव्वं। णविर पंचिदियजादि-परघादुस्सास-तस-बादर-पञ्जतपत्तेयसरीराणं कंगो णिरंतरो वेव। सम्माभिच्छाइडिप्पहुडि उवरिमाणं सासणभंगो। णविर्र देवगृह-वेउच्चियसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगृहपाओनगाणुपुन्ती-सुमगस्वसरादेज्जाणं णिरंतरो वंथो, पडिवक्खपडिबंधाभावादो। यिर-सुमाणं मिच्छाइडिप्पहुडि
जाव पमत्तसंजदो ति सांतरो वंथो, पडिवक्ख-

भी इनका उदयके विना बन्ध पाया जाता है। उपरिम गुणस्थानेंमें खोदयसे ही बन्ध होता हैं, क्योंकि, अपर्यान्तकालमें उन गुणस्थानेंका अभाव है। मिध्याहाष्टे, सासादनसम्याहाष्टे, सम्यग्निध्याहाष्टे और असंयतसम्याहार्ष्ट गुणस्थानेंमें सुमग व आदेयका स्वादय परोदय बन्ध होता है। उपरिम गुणस्थानेंमें खादय ही बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा समाव है।

तेजस व कार्मण दारीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात और निर्माणका बन्ध निरत्वर होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं। एंकेन्द्रियज्ञाति, परघात. उच्छ्वास, प्रदास्तविद्यायेगाति, त्रस, बाहर, पर्याज्त, प्रत्यकदारीर, सुभग, सुस्वर, आदेष, देवगति, देवगतिप्रायोग्यावुपूर्वी, वैकिथिकदारीर और वैकिथिकदारीरांगोपांगका मिथ्यादाष्टि गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर यन्ध्र होता है।

र्शका — निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यंच और मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

हसी प्रकार सासादन गुणस्थानके भी कहना चाहिये। विशेषता केवल यह है कि पंचेन्द्रियज्ञाति, परघात, उञ्च्यास, त्रस, बादर, पर्याप्त और अत्येक-शारीरका बन्ध निरन्तर ही होता है। सम्यग्निप्यादिष्टें लेकर उपरिम्न गुणस्थानोंकी प्रक्रपणा सासादनसम्बन्धिके समान है। विशेष यह है कि देवनाति, बैकिषिकशारीर, समजनुरस्त्रसंस्थान, बैकिषिकशारीरांगोपांग, देवगतित्रायोग्यानुपूर्वी, सुभग, सुस्वर और आदेयका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोके बन्धका ज्ञमाव है। स्थिर और ग्राप्तका मिटवाइष्टिके लेकर प्रमन्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है। क्यर इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, प**गहिषंषाभावा**हो । पञ्चया सुगमा, बहुसो परुविदत्ताहो । णविर देवग**ह-वेउल्वियहुवार्ष** वे**ऊल्विय-वेउ**ल्वियमिस्स-ओराज्यिमिस्स-कम्मश्यपञ्चया पुरिस-णबुंसयवेदेहि सह व्य**वेदर्याः** सेसं सागं ।

देवगइ-वेडिक्यदुगाणि सन्वत्य देवगइसंजुत्तं बज्जति । णवि वेडिक्यदुगं मिच्छा-इट्टीं देव-णिरवगइसंजुत्तं वंधित । समयउरससंद्राण-पसत्यिवद्दायगइ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जणामाओ मिच्छादिहि-सासणसम्मातिष्टिणो तिगइसंजुत्तं, णिरवगईए सह वंधाभावादो । सम्मामिच्छादिहि-असंजदसम्मादिष्टिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं । सेसा देवगइसंजुत्तं वंधित । अवसेसाओ पवडीओ मिच्छाइडीं चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छादिहि-असंजदसम्मादिष्टिणो देवगइ-मणुसगइसंजुत्तमुविरमा देवगइसंजुत्तं वंधित ।

देवगद्द-वेजव्यियदुगाणं तिरिक्ख-मणुसीमच्छाद्दि-सासणसम्माद्दि-सम्मामिच्छाद्दि-असंबद्सम्माद्दि-संजदासंजदा सामी । उवरिममणुसा चेव, अण्णत्य तेसिममादारो । अवसेसाणं पयडीणं तिगद्दीमच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वि-सम्मामिच्छादिद्वि-असंजदसम्मादिद्वी दुगद्दसंजदा-

बहुां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वन्धका अभाव है।

प्रत्यय सुनम हैं, क्योंकि, उनकी प्रकपणा बहुत वार की जा जुकी है। विदेशका यह है कि देवपात और वैकियिकद्विकके वैकियिक, विकियिकसिश्च, आदारिकसिश्च और कार्सण प्रत्ययोंको पुरुष और नपुंसक वेदोंके साथ कम करना चाहिय। दोष प्रत्ययमक्षपणा सनम हैं।

देवगतिहिक और वैकियिकहिक सर्वत्र देवगतिसे संयुक्त वंधते हैं। विशेषता हतनी है कि वैकियिकहिक भीर वैकियिकहिक सर्वत्र देव व नरक गतिसे संयुक्त बांधते हैं। समखतुरक्षसंस्थान, प्रशास्तविद्यायोगित, स्थिर, गुप्त, सुरुप्त, सुरुप्त, थार आदेव नामकर्मोको
सिध्यांदृष्टि व सासादनसम्पन्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, नरकमातिके साध
इनके बन्धका अभाव है। सम्यिमध्यादृष्टि और असंयतसम्पन्दृष्टि देव व मुत्र्य गतिसे
संयुक्त बांधते हैं। शेष गुणस्थानवर्ती देवगतिस संयुक्त बांधते हैं। शेष प्रकृतिवर्गोको
सिध्यादृष्टि वारों गतियोंसे संयुक्त, सासादनसम्पन्दृष्टि नीन गतियोंसे संयुक्त, सम्यसिध्यादृष्टि और असंयतसम्पन्दृष्टि नेवगति एवं मनुष्यातिसे संयुक्त, तथा उपरिम्म
गुणस्थानवर्ती देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं।

देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकंक तिर्यंच व मनुष्य मिध्यादृष्टि, सासादृत्तसम्बग्दाष्टे, सम्बग्नीमध्यादृष्टे, असंवत्तसम्बग्दाष्टे और संयतासंयत स्वामी हैं। उपरिम गुणस्थातवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अस्य गतियोंमें उन गुणस्थानोंका अभाव है। शेष प्रसृतियोंके तीन गतियोंके मिध्यादृष्टे, सासादृतसम्बग्दाष्टे और असंयतसम्बग्दृष्टे, हो गतियोंके

१ मतिषु ' मिण्काइद्रि ' इति पाठः ।

संककः मणुस्ताक्षकंपदाः च सामी । वेषदाणं वंषविणहङ्गणं च सुगमः। प्रवर्षाणं भिण्कादिक्षितः वंबोःचक्किकहः । भण्मस्य तिविद्दीः, प्रवर्षमाबामादोः। अवसेसाणं वयबीणं वंषोःसाबिःमञ्जूबोः; अद्यवर्षिक्तादेः ।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोनंगाणं आवपरह्नवणमनहारिय वत्तन्वं । तिरथयरस्स वि ओषणह्नवणं नेव णाट्णं वत्तन्वं । णविरं वेउन्निय वेउन्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मद्दय-कावजीय-पुरिस-णवुंसपवेदा असंजदसम्मादिडियण्यस्य अवणेदन्ता । अण्णस्य पुरिस-णवुंसप-पण्यक्य नेव अवणेदच्या । तिरथयरवंपस्स मणुसा चेव सामी, अण्णस्थिरिपवेदीददृश्त्यक्षं तिरथयरस्स वंधामावादो । अपुज्यकरणउनसामण्यु तिरथयरस्स वंधो, ण वस्त्रवण्युः इस्थि-वेजीकण्य तिरथयरकर्म वंधमाणाणं स्वनगसिडिसमारोष्टणाभावादो ।

जहा इस्थिवेदोदङ्काणं सन्त्रसुत्ताणि परूषिदाणि तहा णदुंसयवेदोदङ्काणं पि वत्तन्त्रं । णवरि सन्त्रत्य इस्थिवेदम्मि भणिदपन्चएसु द्वियेवेदमवणिय णदुंसयवेदो पश्चित्रवि-दन्त्रो । असंजदसम्मादिद्विपन्चएसु वेउन्त्रियमिस्स-कम्मइयकायजोगपप्चया पश्चित्तविदन्त्रा,

संयक्तसंयतः तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं। बन्धान्यल और बन्धान्यल्हस्सानः सुगम हैं। ध्रुवनची महातियोंका मिथ्यादाष्टे गुणस्थानमें वारों प्रकारका बन्ध होता है। अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका अभाव है। रोप प्रहातियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुववन्धी हैं।

आहारकदारीर और आहारकदारीरांगोपांगकी प्रक्रपण ओध्यक्रपणका लिख्य कर कहना चाहिये। तीर्धकर प्रकृतिकी भी ओघ्यक्रपणको ही जानकर कहना चाहिये। विश्लेषका प्रकृतिकी भी ओघ्यक्रपणको ही जानकर कहना चाहिये। विश्लेषका केवळ यह है कि विकायक, वैकिथिकामिश्र, औदारिकामिश्र, कार्मण कायकोग, पुत्रकवेद और नपुंसकवेद प्रत्योंको असंयत्सक्यहिके प्रत्योंको काम करना चाहिये। तीर्धकर प्रकृतिक चन्यके प्रवुच्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें लिखेदोहय युक्त जीर्षके तीर्यकर प्रकृतिक वन्यका अभाव है। अपूर्वकरण उपशामकोमें तीर्यकर प्रकृतिका वन्यक लिखेदोहक उदयके साथ तीर्थकरकर्मको वांधनेवाळे जीर्वोंके प्रत्यकर्मणोंके आरोहणका अभाव है।

क्रिस प्रकार खोंबेरीत्य कुक जीवोंकी अपेका सब स्ट्रॉकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार नपुंसकवेरीत्य युक्त जीवोंके भी कहना चाहिये। विशेषता केवल इतनी है कि सर्चत्र खांबेर्स कहे हुए प्रत्ययोंमेंसे खींबेरको कम कर नपुंसकवेरको जोड़ना चाहिये। असंयतसम्यव्हिष्टके प्रत्ययोंमें वैकियिकमिध और कार्मण क्रायवोग प्रत्यवाको जोड़ना णेरहपुसु आउजवंधनसेण सम्मादिद्दीणसुप्पतिदंसणादो। णिरयाउ-णिरयदुग-इस्थिनदाणं सन्वत्थं । पुरिस्वेदरसेव परोदएण वंधो। णदुंसयनेदरस सोदएण। एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चर्डारिंदिय-जादि-जादान-यादा-सुदुम-अपञ्जत-साद्दारणाणं सोदय-परोदओ वंधो, एदेसु तुत्तद्दाणेसु एदेसिं पडिवक्खद्दाणेसु च णदुंसयनेदुदयदंसणादो।

तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुन्ति-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरी बंधो । कुद्री ? तेउ-वाउकाइएसु सत्तमपुद्विणरइएसु च दोसु वि गुणहाणेसु णिरंतरबंधुवरुंमादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुन्त्र्वाणं सांतर-णिरंतरी मिच्छादिहि-सासणसम्मादिहीसु बंधो । कुद्री ? आणदारिदेवेहिंतो णवंसयवेदोदइल्टमणुस्सेसुप्पण्णाणं तित्थयरसंतकम्मेण णेरइएसुप्पण्णामिच्छा-इहीणं च णिरंतरबंधुवरुंमादो । ओराल्यिसरीर-ओराल्यियसरीरंगोवंगाणं मिच्छाइहि-सासण-सम्मादिहीसु सणवकुमारादिदेव-णेरइए अस्सिद्ण णिरंतरो बंधो । अण्णत्य सांतरो वत्तत्त्र्वो, असंखेज्जवासाउएसु णवंसयवेददयाभावादो।तेउ-पम्म-सुक्कलिस्स्यणवंसयवेदोदइल्टातिरिक्ख-मणुस्सिमिच्छाइहि-सासणे अस्सिद्ण देवगइ-वेउव्ययसरीरदुगाणं णिरंतरो बंधो वत्तत्त्र्यो ।

चाहिये, क्योंकि, आयुष्यभके बदासे सम्यग्हिएयाँकी नारकियोंमें उत्पत्ति देखी जाती है। नारकायु, नरकगतिहिक और रुखिदका सर्वेच पुरुषेद्रके समान परादयसे वन्य होता है। नर्जुसकदेदका सोवयसे वन्य होता है। एकेन्द्रिय, झीन्ट्रिय, चानिट्रिय, चानिर्क्रिय जाति, आताप, स्थायर, सूक्ष्म, अपयोग और साधागणका सोदय-पराद्य वन्य होता है, क्योंकि, इन उक्त स्थानोंमें तथा इनके प्रतिपक्ष स्थानोंमें नपुंसकदेदका उद्य देखा जाता है।

तिर्यगति, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और तीन्यगोत्रका सान्तर-निरम्तर बन्ध होना है, क्योंकि, तेज य बायु कायिक तथा सप्तम पृथिबीके नारिक्योंमें मिध्यादिष्ट व सास्तदन-सम्यग्दिष्ट इत दोनों ही गुणस्थानोंमें निरम्तर बन्ध पाया जाता है। मनुष्यगित और मनुष्याकि सार्याचिक साम्यग्दिष्ट इत दोनों ही गुणस्थानोंमें सान्तर-निरम्तर बन्ध होता है, क्योंकि, आनतादिक देवोंमेंसे नपुंसकवदोदय युक्त मनुष्योंमें उत्पन्न हुए तथा तीर्थकर प्रकृतिकी सत्ताक साथ नारिकरोंमें उत्पन्न हुए मिध्यादिष्टियोंके निरम्तर बन्ध होता है। अदारिकरारीर और औदारिकरारीरांगोपांगका मिध्यादिष्ट और सासादनसम्यग्दिष्ट गुणस्थानोंमें सनन्तुमारादि देव व नारिकरोंका आध्यकर निरम्तर बन्ध होता है। अस्य सान्तर बन्ध कहना चाहिय, क्योंकि, असंस्थातवर्षायुक्तोंमें नपुंसकवदेके उदयका अभाव है। तेज, पदम और गुष्क ठेहयावाले नपुंसकवदेश्य युक्त विरोच व मनुष्य मिथ्यादिष्ट संसादनसम्यग्दिष्ट जीरोंका आध्यकर देवगतिदिक और सीर्थकर समुद्र सम्बन्ध सान्तर स्थानसम्यग्दिष्ट जीयोंका आध्यकर देवगतिदिक और सीर्थकर समुद्र सम्बन्ध सान्तर साम्यवनसम्यग्दिष्ट जीयोंका आध्यकर देवगतिदिक और सीर्थकरियकरारिद्यकक्त निरम्तर सम्बन्ध सान्तर साम्यवनसम्यग्दिष्ट जीयोंका आध्यकर देवगतिदिक और सीर्थकरियकरारिद्यकक्ता निरम्तर सम्बन्ध कहना चाहिये।

१ मतिषु 'सम्ब ' इति पाठः ।

उवधाद-परधादुस्सास-बत्तेयसरीराणं असंजदसम्मादिहीसु सोदय-परोदओ वंघो, णिरयगईए अपञ्जतासंजदसम्मादिहीसु वि एदासि बंधुवरुंभादो । तस-बादर-पञ्जत-पत्तेयसरीर-पंचिंदियजादीणं मिच्छाइहिम्दि बंधो सोदय-परोदओ, शावर-सुहुमापञ्जत-साहारण-विगर्लिदिएसु एदासि बंधुवरुंभादो । सञ्चपयडीणं बंधस्स णित्य देवाणं सामित्तं तत्य णतुंसयवेदुदयाभावादो । एइंदिय-आदाव-यावराणं तिरिक्खगइ-मणुसगइ-मिच्छाइही चेच सामी, देवा ण होंति; तेसु णतुंसयवेदुदयाभावादो । अण्णो वि जदि भेदो अत्थि सो संमालियं वत्तव्यो ।

जधा इत्यिवदस्स परुवणा कदा तथा पुरिसवेदस्स वि कायव्वा । णवरि ओघपचएसु इत्थि-णवुंसयवेदपच्चया चेव सञ्जगुणहाणेसु अवणेद्व्या, संसासेसपच्चयाणं तत्थ संभवादो । इत्थि-णवुंसयवेदाणं वंधो परोदओ, पुरिसवेदस्स सोदओ । उवधाद-परधादुस्सास-पत्तेय-सरीराणमसंजदसम्मादिद्दिन्हि सोदय-परोदओ वंधो । तित्थयरस्स परुवणा ओघतुव्हा । एव-मण्णो वि जित भेदो अत्थि सो संभालिय वत्तव्वा ।

उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशारीरका असंयतसम्यग्दृष्टियों में स्वोदय-परोद्य बन्ध होता है, क्योंकि, नरकगितमें अपर्यात असंयतसम्यग्दृष्टियों में भी इनका बन्ध पाया जाता है। त्रस, बादर, पर्यात, प्रत्येकशारीर और पंचेन्द्रियजातिका मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोद्य वन्ध होता है, क्योंकि, स्थादर, सृक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण और विकलेन्द्रियों में इनका बन्ध पाया जाता है। सब प्रकृतियोंक बच्छे स्थामी देव नहीं हैं, क्योंकि, उनमें नपुंसकवेदके उदयका अभाव है। एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरके तिर्यम्मति य प्रतुष्पातिक मिध्यादिष्ट हो सामी हैं, देव नहीं हैं, क्योंकि, उनमें नपुंसकवेदके उदयका अभाव है। अन्य भी यदि भेद है तो उसको स्थायकर कहना चाहिये।

जिस प्रकार खाँवेदकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार पुरुषवेदकी भी करना चाहिये। विदोण इतना है कि ओघमलयों मेंसे खाँवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययों को ही सब गुणस्थानों में कम करना चाहिये, क्यों कि, दोण सब प्रत्ययों की वहां सम्भावना है। खाँवेद और नपुंसकवेदका क्या परोदय होता है। युष्पात, परात, उच्छवार, और प्रत्येकदारीयक पर्यात, उच्छवार, और प्रत्येकदारीयक प्रस्तात है। सुण्येकदारीयक प्रत्यात, उच्छवार, और प्रत्येकदारीयक असेवस्थान है। इसी प्रकार अस्य भी यदि भेद है तो उसको स्मरण कर कहना चाहिये।

१ अप्रती ' पृहंदिय अण्णो ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' सा संमरिय ', मत्रती ' सा संमालिय ' इति पाठः । 🧸

श्वनगदवेदएसु पंचणाणावरणीय-चडदंसणावरणीय-जसिकति-उचागोद-पंचतराइयाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ १७८ ॥

्सुगम् ।

अणियट्टिप्पहुिंड जाव सुद्धमसांपराइयउवसमा स्ववा वंशा । सुद्धमसांपराइयसुद्धिसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतृण वंथो वोच्छिन्जिदि । एदे वंशा, अवेससा अवंधा ॥ १७९ ॥

देसामासियसुचमेदं, बंधदाणं वंधविणइङ्गाणं दोणणं चेव परूवणारो । तेणेदेण सुद्धरत्थपरूवणा कीरदे । तं जधा— एदासिं सोलसण्हं पयडीणं पुन्वं बंधो पच्छा उदबो वोच्छिज्जदि, तहोवरंभादो । एत्थुवउज्जंती गाहा—

> आगमचन्ख् साह्र इंदियचनन्त् असेसजीवा जे । देवा य ओहिचनन्त्र् केवलचनन्त्र जिणा सन्वे ॥ २४ ॥

पंचणाणावरणीय-च उदंसणावरणीय-पंचंतराइय-जसिकत्ति-उच्चागोदाणं सोदेशे चेव

अपगतवेदियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यज्ञकीर्ति, उञ्चगोत्र और संच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १७८ ॥

यह सूत्र सुगम है।

अनिवृत्तिकरणसे टेकर स्क्ष्मसाम्परायिक उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । स्क्ष्म-साम्परायिकद्वद्विसंयतकाटके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १७९ ॥

यह सुत्र देशामर्शक है, क्योंकि, वह बन्धाच्यान और बन्धविनष्टस्थान इन दोनोंका ही प्रकाण करता है। इसीलिए इससे सुचित अर्थकी प्रकाणा करते हैं। वह इस प्रकार है— इन सोलह प्रकृतियोंका पूर्वेमें बन्ध और प्रधात् उदय ब्युच्छित्र होता है, क्योंकि, वैसा पाया जाता है। यहां उपयुक्त गाया—

साधु आगम रूप चश्चसे संयुक्त, तथा जितने सब जीव हैं वे इन्द्रिय चश्चके धारक होते हैं। अवधिज्ञान रूप चश्चसे सहित देव, तथा केवलज्ञानरूप चश्चसे युक्त आव जिन होते हैं॥ २४॥

पांच श्रानावरणीय, जार दर्शनावरणीय, पांच अस्तराय, वशकीति और उध-

षंषो, एत्थ एदासिं धुवोदयत्तदंसणादो । णिरंतरो षंषो, एत्थ षंधुवरमायावादो । पञ्चका सुगमा, बोषम्म पर्विदत्तादो । जगहसंज्जतो षंषो, अवगदवेदेसु चदुण्णं गईणं षंघाभावादो । मणुका चेव सामी, जण्णत्य खवगुवसामगाणमभावादो । षंघद्वाणं षंषविणष्टद्वाणं च सुगमं । पंचणाणाद्वरणीय-चडदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं तिविद्वो षंघो, धुवत्ताभावादो । जसकिति-उच्चागोदाणं सादि-अद्धवो, अद्धवर्षितादो ।

सादावेदणीयस्स की बंधो को अबंधो ? ॥ १८० ॥ _{सगम ।}

अणियट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा ! सजोगिकेवलि-अद्धाए चारीमसमयं गंतूण वंधो वोच्छिज्जिद । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १८१ ॥

एदस्स अत्था बुच्चदे । तं जहा- पुट्वं बंधा पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सजीगि-

गोत्रका स्वादय ही बन्ध होना है, क्योंकि, यहां इन प्रकृतियोंके ध्रवोद्धित्व देखा जाता है। बन्ध इक्का तिम्लग्त होता है, क्योंकि, यहां वन्धिश्वासका अभाव है। प्रत्यय खुगस है, क्योंकि, अध्यय हक्का हिन्द है, क्योंकि, अध्यय खुगस है, क्योंकि, अध्य अध्यय खुगस है, क्योंकि, अध्य अध्यय होता है, क्योंकि, अध्य अध्यय है। साही हैं, क्योंकि, अध्य गतियोंमें क्षपक और उपशासकोंका अभाव है। मनुष्य ही साही हैं, क्योंकि, अध्य गतियोंमें क्षपक और उपशासकोंका अभाव है। वन्धाध्यान और बन्धिवनष्टस्थान खुगस हैं। एांच झालावरणीय, जार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, खुन बन्धक अभाव है। यशकीर्त और उद्यागित्रका सादि व अधुन बन्ध होता है, क्योंकि, अंत अध्यवन्धी हैं।

सातावेदनीयका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ १८० ॥ यह सब सगम है।

अनिवृत्तिकरणसे ठेकर सयोगकेवठी तक बन्धक हैं । सयोगकेवठिकाछके अन्तिम समयको जाकर बन्ध च्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं. श्रेष अबन्धक हैं ॥ १८१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है— पूर्वेम बन्ध और पश्चात् उदय ब्युष्टिछन्न होता है, क्योंकि, स्योगकेवली और अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें क्रमसे

१ प्रतिषु 'चदुट्ठाण ' इति पाठ ।

अजोगिचरिमसमयम्म षंपोद्यवोच्छेद्रदंसणादो । सोदय-परोदओ षंधी, परावत्तण्णुदयत्तादो'। फिरंतरो बंघो, परिवत्त्वणुदयत्तादो'। फिरंतरो बंघो, परिवत्त्वस्वपददीए बंघामावादो । पञ्चया सुगमं, ओघम्मि परुविदतादो । अगद्दसंखुतो बंघो, अवगदवेदेसु गइचउनकरस बंघामावादो । मणुसा सामी, अण्णत्य अवगयवेदाणमभावादो । बंघदाणं बंघविण्डहाणं च सुगमं । सादि-अद्भुवो बंघो, अद्भुवबंधितादो ।

कोधसंजलणस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ १८२ ॥ _{सुगर्म ।}

अणियट्टी उवसमा खबा बंधा । अणियट्टिबादरद्वाए संस्केज्जे भागे गंतूण बंधो बोन्छिजदि । एदे बंधा, अबसेमा अबंधा ॥१८२॥

एदस्सत्थो बुच्चरे — वंधोदया समं वीच्छिज्जीत, वंधे वीच्छिण्णे सेते उदया-णुवरुंभादो । सोदय-परादश्रो वंधो, उभयहा वि वंधविरोहाभावादो । णिरंतरा, धुवर्वधितादो ।

उसके बन्ध और उदयका ब्युच्छेद देखा जाता है। सोदय-परोदय यन्ध होता है, क्योंकि, परिवर्तित होकर उसके प्रतिपक्षमून असाता बदनीयका उदय पाया जाता है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतिक बन्धका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, अध्म उनकी प्रकृतण की जासुकी है। अगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अपमत्वदियाँमें चारों गतियाँके बन्धका अभाव है। मनुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, अपगत्वदियाँमें चारों गतियाँके बन्धिका अभाव है। मनुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियाँके अपगत्वदियाँका अभाव है। साध्याधान और बन्धविनप्रस्थान सुगम हैं। सादि व अध्रव बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियाँके अपगत्वदियाँका अभाव है। सादि व अध्रव बन्ध होता है, क्योंकि, यह अध्रव गन्धी प्रकृति है।

संज्वलनकोषका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १८२ ॥ यह सब स्रगम है ।

अनिवृत्तिकरणगुणस्थानवर्ती उपग्रमक व क्षपक वन्धक हैं । बादर अनिवृत्तिकरण-कारुके संख्यात बहु भाग जाकर बन्ध ब्युन्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, श्रेष अबन्धक हैं॥ १८३॥

इस सुत्रका अर्थ कहते हैं — संज्वलनकोधका बन्ध और उदय दोनों एक साध व्युच्छित्र होते हैं, क्योंकि, बन्धके व्युच्छित्र होनेपर फिर उदय पाया नहीं जाता। स्वोदय-परोदय कच्छ होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी वन्ध होनेका विरोध नहीं है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वह धुयबन्धी है। अगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि,

१ कामती ' परावत्तशुदयत्तादो ' इति पाठः ।

अगद्दसंजुतो, एत्य चउगद्दबंपाभावादो । पञ्चया सुगमा, ओघंपञ्चएहिंतो बिसेसाभावादो । मणुसा चेव सामी, अण्णत्येदेसिमभावादो । बंधदाणं णत्थि, एक्किम्म अद्धाणविरोहादो । अधवा अत्थि, पञ्जविद्ययणए अवर्लविञ्जमाणे अवगदवेदाणमणियटीणं संखेळाणसुवर्लभादो अणियटिकालं संखेज्जाणि खंडाणि' करिय तत्थ बहुखंडेसु अइक्केंतेसु एगखंडावसेसे कोध-संजलणस्स बंधो वोञ्क्रिणो । तिविद्दो बंधो, पुवबंधिचादो ।

माण-मायांसंजलणाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ १८४ ॥ सुगमं।

अणियट्टी उवसमा खवा वंधा । अणियट्टिवादरद्धाए सेसे सेसे संखेज्जे भागे गंतूण वंधा वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १८५ ॥

एदासिं बंधोदया समं वोन्छिज्जैति, विणड्वंचाणमुदयाणुवलंमादो । सोदय-परोदंबी, उभयहा वि बंधुवलंमादो । णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । अवगयपच्चओ, ओघपच्चएहिंतो अविसिद्ध-

यहां चारों गतियों के बन्धका अभाव है। प्रत्यय छुगम हैं, क्यों कि, ओघमत्ययों से यहां कोई भेद नहीं है। मनुष्य ही स्वामी हैं, क्यों कि, अन्य गतियों में अपगतवेदियों का अभाव है। बन्धाध्वान नहीं है, क्यों कि, एक गुणस्थान में अध्वानका विरोध है। अध्वा बन्धाध्वान है, क्यों कि, पर्यायार्थिक नयका अवरुग्धन करनेपर अपगतवेदी अतिवृत्तिकरणों के संख्यात पाये जाने से अतिवृत्तिकरणों के संख्यात पाये जाने से अतिवृत्तिकरणों के संख्यात खण्ड करके उनमें बहुत खण्डों के बीत जाने और एक खण्ड के दोन रहनेपर संज्यलनकों धका बन्ध खुन्धिक होता है। तीन प्रकारका बन्ध होता है। तीन प्रकारका बन्ध होता है। क्यों कि, बहु धववन्धी है।

संज्वलनमान और मायाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १८४ ॥ यह सुत्र सुराम है।

अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक बन्धक हैं। अनिवृत्तिकरणवादरकालके केष श्रेष कालमें संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, श्रेष अबन्धक हैं ॥ १८५॥

इन दोनों प्रकृतियोंका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छित्र होते हैं, क्योंकि, बन्धके नष्ट हो जानेपर इनका उदय नहीं पाया जाता। स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी बन्ध पाया जाता है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे विषक्षाहो । अमद्रसञ्जले, १२४ चउगङ्कंषाभावारो । मणुससामिओं , अण्णस्थवमद्वराभाकारो । क्षंप्रहाक्वाकारो, दच्कित्यणयविसयम्म सन्वसंगहे अद्धाणगणुववतीरो । अथवा अद्धाणसम् विषक्षो, अवसंवियपञ्जविद्यणयतारो । कोधवंपविन्छण्णहाणारो उवस्मिमद्धाणं संखेळाखंडाणि काऊण्ण बहुखंडेसु अङ्क्कितेसु एयखंडावरेसे माणवंघो वोन्छिज्जिर । पुणो सेसमेयं खंडं संखेज्जाणि खंडाणि करिय तस्य बहुखंडेसु अङ्क्कितेसु एयखंडावसेसे मायवंघो वोन्छिज्जिर । एदं खुदी वगम्मदे ? सेसे सेसे संखेज्जाभागं गंतृणे ति जिणवयणारो वगम्मदे । तिविहो, ध्वतामावारो ।

लोभसंजलणस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ १८६ ॥

भुववन्त्री प्रकृतियां हैं। प्रत्यय अवगन हैं, क्योंकि, ओग्रप्तययोंस यहां कोई विशेषता नहीं है। अगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहां चारों गतियोंके बन्धका अभाव है। मनुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें अपगत्वेदियांका अभाव है। वन्धाप्त्वान नहीं है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयक विषयभूत सर्व संप्रदुके होत्तेपर अध्वान बनता नहीं है। अध्वा पर्याधार्थिक नयका अवरुध्वन करते अध्वान सिहित बन्ध होता है। अध्वा पर्याधार्थिक नयका अवरुध्वन करते अध्वान सिहत बन्ध होता है। क्रोधके क्याध्युच्छित्तिस्थानसं उत्पर्क कालके संख्यात खण्ड करके बहुत खण्डोंको विताकर एक खण्डके शेष रहतेपर मानका बन्ध ब्युच्छित्र होता है। तत्पश्चात् रोप एक खण्डके संख्यात खण्ड करके श्वा रहतेपर मानका बन्ध ब्युच्छित्र होता है। तत्पश्चात् साम स्वर्थक स्वष्टक होता है। क्याध्यात खण्ड करके होष रहतेपर मानका बन्ध व्यक्ति विताकर एक खण्डक रोप रहतेपर मानका बन्ध व्यक्ति विताकर एक खण्डकर होता है।

शंका-यह कहांसे जाना जाता है?

समाथान—'दोष दोषमें संख्यात बहुभाग जाकर' इस जिनवचनसे उक्त वन्धच्युच्छिचिकम जाना जाता है।

तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है। संब्वलनलोभका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १८६ ॥ यह सुत्र सुगम है।

अणियट्टी उवसमा खवा बंधा। अणियट्टिबादरद्धाए **बरि**मसमयं गंतुष बंधो वोन्छिज्जिदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ४ १८७ ॥

एदस्स अत्था बुट्चदे — बंघा पुष्टमुद्दओ पच्छा वीन्छिञ्जस्ति, अणिबद्धिसुद्धव-सांपराइयचरिमसमयिन बंधोदयवीच्छेदुवलंमादो। सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधुवलंभादो। शिरंतरो बंघो, धुवबंधितादो। अवगयपच्चओ, ओाबंपच्चएहिंतो अविसिद्दपच्चयत्तादो। अगद्द-संस्रुतो, चउनइबंधामावादो। मणुससामिओं, अण्णत्य खचगुक्सामगणमभावादो। बंधद्धार्ण लाद्यि, सुत्ते अणुवदिद्धतादो। किमद्दमणुवदिद्वं १ दव्बद्धिवावलंग्यणादो। क्षिक्हो बंघो, धुब-बंधितादो।

कसायाणुवादेण कोधकसाईसु पंचणाणावरणीय [चउदंसणा-वरणीय सादावेदणीय] चदुसंजलण जसिकत्ति उचागोद चंचंतराइयाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ १८८ ॥

अनिवृत्तिकरण उपरामक व क्षपक वन्यक हैं। अनिवृत्तिकरणबादरकारुके अन्तिम समयको जाकर बन्य व्युच्छित्र होता है। ये बन्यक हैं, ग्रेष अबन्यक हैं॥ १८७ ॥

इस स्वका अर्थ कहते हैं— यन्ध पूर्वमें न्युन्निज होता है, पक्षात् उदय ज्वुन्निज होता है, पक्षात् उदय ज्वुन्निज होता है, प्रश्नोत्त अतिवासक अतिवास समयमें कमसे बन्ध और उदयका ज्वुन्ने प्रधा जाता है। स्वीद्य परोद्य बन्ध होता है, स्थांकि, होनो ही प्रकारसे बन्ध पाया जाता है। निरन्तर बन्ध होता है, स्थांकि, उक्त प्रकृति ध्रवन्धों है। ओध्रमस्ययास यहां कोई विशेषता न होनेसे उक्त प्रकृति के बन्धक प्रस्पय बवात है। अगतिसंजुक बन्ध होता है, स्थांकि, यहां चारों गतिस्योक कन्धका अमाय है। अगतिसंजुक कन्ध होता है, स्थांकि, यहां चारों गतिस्योक कन्धका अमाय है। अग्रिक स्थांकि, यहां चारों गतिस्योक कन्धका अमाय है। अग्रिक स्थांकि, स्थांकि, यहां चारों गतिस्योक स्थान हो। सन्धान्मा है। सन्धान्मा हो। सन्धान्मा है। सन्धान्मा हो। सन्धानिक सन्धानिक

शंका- सुत्रमें बन्धान्वानका उपदेश क्यों नही किया गया है ?

समाधान—द्रव्यार्थिकनयका अवलम्यन करनेसे स्त्रमें उसका उपदेश नहीं किया गया है।

तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह धुवबन्धी प्रकृति है।

कषायमार्गणानुसार कोधकषायी जीवोंमें पांच झानावरणीय, [चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय], चार संज्वलन, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कीन षन्धक और कीन अवन्धक है?॥ १८८॥ सुगमं ।

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अणियट्टि ति उवसमा स्ववा बंधा । एदे बंधा. अबंधा णत्थि ॥ १८९ ॥

एदासि पयडीणं बंधो उदयादो पुज्वं पच्छा वा बोच्छिणो ति परिक्खा णस्थि, उदयबोच्छेदाभावादो तिणणं कसायाणं णियमेण उदयाभावादो च । पंचणाणावरणीय-चउ-दंसणाबरणीय-कोहसंजरूण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । सादाबेदणीयस्स सव्वत्य सोदय-परोदओ अदुवोदयत्तादो । जसकितीए मिच्छाइडिप्पहुडि जाव असंजद-सम्माइडि ति उच्चागोदस्स मिच्छाइडिप्पहुडि जाव संसजद-सम्माइडि ति उच्चागोदस्स मिच्छाइडिप्पहुडि जाव संजद्र-सम्माइडि ति उच्चागोदस्स मिच्छाइडिप्पहुडि जाव संजदासंजदो ति सोदय-परोदओ बंधो । उविर सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो । तिण्णं संजरुणाणं परोदएण बंधो, कोहोदय-पणादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-चउसंजठण-पंचतराइयाणं णिरंतरे। वंधो, धुव-वंधितादो । सादावेदणीयस्स मिच्छाइडिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो ति सांतरे। वंधो । उचिर णिरंतरो, पडिवन्सवपदडिए वंधाभावादे। । एवं जमकितीए वत्तत्वं । उच्चागोदस्म मिच्छाइडि-

यह सुत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकाण गुणस्थानेक उपशमक और क्षरक तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं. अवेन्धक कोई नहीं हैं ॥ १८९ ॥

हन मक्तियोंका बन्ध उदयसे पूर्व या पश्चातः इतुच्छित्र होता है, इस प्रकारकी परीक्षा यहां नहीं है, क्योंकि, इनके उदय-पुञ्छाइका अभाव है, तथा मानाईक तीन करायोंका नियमसे यहां उदय भी नहीं है। पांच बानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, संज्ञ्छन क्रांध और पांच अन्तराय, इनका स्वेद्ध बन्ध होता है, क्योंके, ये ध्रुवादयी हैं। चातावेदतीयका सर्वत्र संक्षात अन्तराय, इनका स्वेद्ध बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवादयी है। वशकीतिका मिथ्यादिएसे क्रेकर असंयतसम्यग्दिए तक, तथा उच्चगोत्रका मिथ्यादिएसे लेकर संयतासंयत तक स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। उपरिम गुणस्थानों परवास स्वंदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां मानकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है। तीन संज्वलन कथायोंका परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, यहां क्रांधिक होता है, क्योंकि, यहां क्रोधकी प्रयानना है।

पांच क्षानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, चार संज्वळन और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये धुववन्धी हैं। सातावेदनीयका मिथ्यादिक्षे लेकर प्रमचसंयत गुणस्थान तक सान्तर बन्ध होता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है। इसी प्रकार यशकीर्तिके भी कहना चाहिये सासणसम्मादिद्दीसु सांतर-णिरंतरा । कथं णिरंतरा ? असंखेञ्जवासाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु सुदुलेस्सियसंखेञ्जवासाउएसु च णिरतर्र्वभुवलंभादो । उत्तरि णिरंतरो, पढिवक्खपयडीए वैधामावादो ।

मिच्छाइडिम्हि तेदाठीसुत्तरपञ्चया, सामणे अडत्तीस, बारसकसायाणमभावादो । सम्मामिच्छादिडि-असंजदसम्मादिडीसु जहाक्रमेण चोत्तीस-सत्ततीसपञ्चया, णवकसायपञ्चया-भावादो । संजदासंजदेसु एक्कत्तीसपञ्चया, छक्कसायाभावादो । पमत्तसंजदेसु एक्कतीस-पञ्चया, कसायतियाभावादो । अप्पमत्त-अपुञ्चकरणेसु एक्कूणवीसपञ्चया, कसायतिया-भावादो । उत्रि तेरसआर्दि काद्ण एग्णादिक्रमेण पञ्चया जाणिय वत्तन्वा । सेसं सुगमं ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-चउमुंजरुण-पंचंतराह्याणि मिन्छाइद्दी चउगइ-संज्ञतं, साम्रणसम्माइट्टी तिगइसंज्ञतं, सम्मामिन्छाइट्टि-असंजदसम्माइट्टिणो देव-मणुसगइ-संज्ञतं, उवरिमा देवगइसंज्ञतमगइसंज्ञतं च वंधीत । सादावेदणीय-जसिकत्तीओ मिन्छाइट्टि-सासणसम्माइट्टिणो तिगइसंज्ञतं, णिरयगईए सह वंधाभावादो । उवरि णाणावरणभंगो । उन्चा-

उच्चगेत्रका मिथ्याद्दष्टि और सासादनसम्बग्दिष्ट गुणस्थानीमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है। निरन्तर बन्ध केस हाना है ? क्योंकि, असंख्यानवयोगुष्क तियंच और मनुष्योंमें तथा नुभ लेहरावाले संख्यानवर्षायुष्कोंमें भी उसका निरन्तर वन्ध पाया जाता है। उत्पर निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, वहां उसकी प्रतिपक्ष मक्तिके कन्धका अभाव है।

भिष्याद्दृष्टि गुणस्थानमें तेताळीस और सासादन गुणस्थानमें अक्तीस उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहां बारह करायोंका अमाव है। सम्यगिमध्यादिष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे चीतीस और सिता उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहां नी कलाय प्रत्ययोंका अभाव है। संयतासंयतोंमें एकतीस उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनमें छह कथायोंका अभाव है। प्रमत्तसंयतोंमें इक्कीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनमें तीन कथायोंका अभाव है। अप्रमत्त और अपूर्वकरण संयगेंमें उक्कीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहां भी तीन कथायोंका अभाव है। उत्तर तरहको आदि छकर एक कम दो कम इत्यादि कमसे प्रत्ययोंको जानकर कहना चाहिये। शेष प्रत्यप्रकृषणा सुगम है।

पांच क्रानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, चार संज्वलन और पांच अन्तरायको सिध्यादृष्टि चार गतियोंसे संयुक्त, सालादनसम्बग्धि चार गतियोंसे संयुक्त, सालादनसम्बग्धि हो ना गतियोंसे संयुक्त, सम्बग्धियादृष्टि और असंवतसम्बग्धि देव व महुष्य गतिसे संयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त और गतिसंयोगसे रहित बांचते हैं। सालाद्वनीय और यहाक्षीतिको सिध्यादृष्टि व सालादनसम्बग्धि तीन गतियोंस संयुक्त बांधते हैं, क्यांकि, नरकगतिके साथ इनके बन्धका अभाव है। उपरिम गुणस्थानोमें क्रानावरणके समान प्रकरणा है।

गैर्द निष्कार्द्ध-साराणसम्माइडि-सम्मामिष्कार्द्ध-असंजदसम्मादिष्टिणे देव-मणुसगृहसंज्ञतं पैवेति, जण्णगर्देहि चेचविरोहादो । उवरिमा देवगइसंजुत्तमणियट्टिणो अगृहसंजुत्तं वेवंति ।

चउगइमिच्छादिहि-सासणसम्मादिहि-सम्मामिच्छादिहि-असंजदसम्मादिहिणो सामी । दुगदसंजदासंजदा'। अवसेसा मणुसा, अण्णत्थ तेसिमणुवरुभादो। बंधदाणं सुगमं। बंधविणासा णरिष, बंधुवरुमादो । धुवबंधीणं मिच्छाइहिम्हं चउश्विहो बंधो। उवरिमगुणेसु तिबिहो, धुवतामावादो । अवसेसाणं पयडीणं सादि-अद्वों, अद्भववंधितादो ।

बेट्टाणी ओघं ॥ १९० ॥

थीणगिद्धितय-अर्णताणुर्वधिचउनकद्भस्थिवर्-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगङ्-चउसंठाण-च**उसंघडण-तिरिक्**खगङ्गाओग्गाणुपुन्वि-उज्जोव अप्पसत्धविद्वायगङ्-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज**-**णीचागोदार्ण बेद्धाणियसण्णा, दोसु गुणहाणेसु चिट्ठति ति उप्पतीदो । एदासिं पञ्चणा

उच्चगोत्रको मिध्यादृष्टि, सासादृतसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिध्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देव व मनुष्य गातिसं संयुक्त वांखते हैं, क्योंकि, अन्य गातियोंके साथ उसके यन्यका विरोध है। उपरिमा जीव देवगतिसं संयुक्त, तथा अनिवृत्तिकरणगुणस्थानवर्ती अगाति-संयुक्त वांखते हैं।

चारों गतियोंक भिध्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिध्यादृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं। दोष गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं, क्वोंकि, अन्य गतियोंके व गुणस्थान पाय नहीं जाते। वन्धाध्वान सुगम है। क्यविनादृ है नहीं, क्वोंकि, उनका क्ष्य पाया जाता है। धुचवन्धी मकृतियोंका मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। उपरिम गुणस्थानों में तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्वोंकि, वहां धुच बन्धका अमाव है। दोष प्रकृतियोंका सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुववन्धी हैं।

हिस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १९० ॥

स्त्यानगृहित्रय, अनन्तातुवन्धिवतुष्क, स्रीवेद, तिर्यगायु, निर्यगाति, चार संस्थान, कार संहचन, तिर्यगातिप्रायोग्यातुपूर्वी, उद्योत, अप्रदास्तविहायोगाति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेप और नीचगोत्र, इन प्रकृतियोकी द्विस्थानिक संखा है, क्योंकि, 'जो दो गुणस्थानोंमें रहें वे क्रिस्थानिक हैं 'पेसी श्युरपत्ति है। इनकी प्रकृपणा ओघके समान है, क्योंकि,

बोधतुल्ला, विसेसाभावादो । तं जहा — बर्णताणुषंधिचउक्तस्स षंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणिम तदुभयाभावदंसणादो । यीणिगिद्धितयस्स पुल्वं वंघो पच्छा उदबो वोच्छिज्जिदि, सासणसम्माइहि-पमत्तसंजदेसु कमेण वंघोदयवोच्छेदुवलंभादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खाग्रह-उज्जोव णीचागोदाणयेवं चेव । णवरि संजदासंजदीम उदयवोच्छेदो । एवमित्यिवेदस्स वि । णवरि शणियद्विहित तहुन्छेदो । चउसंघडण-अप्पसत्यिविहायग्रह-दुस्सराणमेवं चेव । णवरि एत्य उदयवोच्छेदो । णद्यसंघडणाणमेवं चेव । णवरि अप्पमत्तसंजदेसु विदिय-तिदय-संघडणाणसुदयवोच्छेदो । चउसंघडणाणमेवं चेव । णवरि अप्पमत्तसंजदेसु विदिय-तिदय-संघडणाणसुदयवोच्छेदो, उवसंतकसापसु तदुच्छेद-दंसणादो । तिरिक्खाद्यशोग्राणुपुच्ची दुमग-अणादेआणे पुल्वं षंघो पच्छा उदबो वोच्छिण्णो, सासणसम्मादिहि-असंजदसमादिहीस कमेण षंघोदयवोच्छेददंसणादो ।

अर्णताणुवंधिकोधस्स सोदओ वंधो । तिण्हं कसायाणं परोदओ, तेसिमेत्थुदयाभावादो । अवसेसपर्यडीणं सोदय-परोदओ, उभयहा वि वंधविरोहाभावादो । इत्थिवेद-च**उसंग्रा**ण-चउ-

आयमं इनमें कोई भेद नहीं है। यह इस मकार है— अनम्तानुविश्वचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें उनुचिछन होत हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है। स्यानगृद्धित्रयका पूर्वमें बन्ध और प्रकात उदय स्युच्छिक होता है, स्योंकि, सासादन गुणस्थानमें कमसे नस्य व उदयका स्योंकि, सासादनसम्ययदि और प्रमत्तसंयत गुणस्थानोंमें कमसे नस्य व उदयका स्योंकि स्वात है। तियंगायु, तियंगाति, उद्यात और नीचगोत्रकी भी प्रक्रपणा इसी प्रकार हो है। विदायता केवल इतनी है कि संवतासंयत गुणस्थानोंमें उनका उदयस्यपुच्छेद होता है। इसी प्रकार कोवेदनी भी प्रक्रपणा है। विदाय दतना है कि अगिवृत्तिकरण गुणस्थानमें उसके उदयका स्वुच्छद होता है। चार संस्थान, अम्प्रस्तविद्यागिति और दुस्वस्की प्रक्रपणा भी इसी प्रकार हो है। विदोय इतना है कि यह वास संद्रलांभी प्रक्रपणा भी इसी प्रकार हो है। विदोय हतना है कि स्वात उदयस्यपुच्छेद नहीं है। चार संहननोंकों प्रक्रपणा भी इसी प्रकार हो है। तियेगाति स्वात संद्रलांभी काता है। तियेगाति प्रायायानुपूर्वी, दुर्नोग और अनादस्वका पूर्वेमें कन्ध और प्रवीव संहननका उदयस्युच्छेद होता है। चार संहननका उदयस्युच्छेद होता है। चार संहननका उदयस्युच्छेद नहीं है। चार संहननका उदयस्युच्छेद होता है। स्वर्गे और प्रकार दूस खुच्छिक होता है। स्वर्गे कन्ध और प्रकार हुच्छेद देखा जाता है। तियेगाति प्रयोग्यानुपूर्वी, दुर्नोग और अनादेवका पूर्वेमें कन्ध और प्रकार उदयक्ष खुच्छेद होता है। इसी हमात व्यव्यानुपूर्वी, दुर्नोग और अनादेवका पूर्वेमें कन्ध और प्रकार उदयक्ष खुच्छेद देखा जाता है। विदेशित स्वर्वेम प्रवृत्ति हमसे प्रवृत्ति केव देवका जाता है।

अनत्तानुबन्धिकोधका स्वोदय वन्ध होता है। तीन कपार्योका परोदय **बन्ध होता** है, क्योंकि, यहां उनके उदयका अभाव है। रोष प्रकृतियाँका स्वेदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उनके बन्धका कोई विरोध नहीं है।

स्रीवेद, चार संस्थान, चार संहनन, उद्योत, अप्रशस्तिविद्यायोगति, दुर्भग, दुस्वर, इ. वं. ३५. संबंदण-उज्जोवः अप्यसत्यविद्वायगद् दुमग-दुस्सर-अणादेज्जाणं वंधे। सतिरा, एगसमएण वि बंधुवरस्दंसणादा । तिरिक्खगद्द-तिरिक्खगद्दगाश्चग्याणुपुन्वि-णीचागोदाणं देग्धः वि गुणहाणस् स्रोतर-णिरंतरा वंधो, तेज-वाउक्काइएसु सत्तमपुद्विणेरद्दसु च णिरंतरवंधुवरुंमादो । अवसेसाणं पयद्यीणं वंधो णिरंतरो, एगसमएणं वंधुवरमाभावादो । एक्चया सुगमा ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुविन-उञ्जोवाणि तिरिक्खगइसंद्धतं वंघति । इरिध-वेदं तिगइसंद्धतं, णिरयगईए वंघाभावादा । चउसंठाण-चउसंघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंद्धतं वंचति, अण्णगईहि वंघाभावादा । अप्पसरथिन्द्वायगइ-दुम्मग-दुस्सर-अणादेञ्ज-णीचागोदाणि तिगइसंद्धतं वंघति, देवगईए वंघाभावादो । सासणे। तिरिक्ख-मणुसगइसंद्धतं वंघइ, तस्सण्ण-गईहि विरोहादो । चउगइमिच्छादिष्टि-सासणसम्मादिष्टिणो सामी । उवरि सुगमं, बहुसो फ्रिविटनादो ।

जाव पच्चक्खाणावरणीयमोघं ॥ १९१ ॥

बेडाणदंडयं परुविय पच्छा जेणेदं सुत्तं परुविदं तण णिहादंडयमादि काद्णे ति अत्यावत्तीदो अवगम्मदे । णिहा-असादेगडाण-अपचक्लाण-पचक्लाणदंडयाणं परुवणाए

और अनाहेयका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम देखा जाता है। तिबंगाति, तिबंगातिप्रायोग्यापृष्ठीं और नीचगोक्रका देलीं ही गुणस्थानीमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तेजकायिक व वायुकायिक तथा सनम पृथिवीके नारकियोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। दौर प्रकृतियोंक बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धविश्रामका अभाव है। प्रथय सुनाम हैं।

तिर्यगायु, तिर्यगातिप्रायगयानुष्यी और उद्योतका तिर्यगितिसे संयुक्त बांधाते हैं। स्विवस्का तीन गतियांसे संयुक्त बांधाते हैं, क्योंकि, नरकमित्तेक साथ उसके बन्धका अभाव है। चार संस्थान और चार संहतनोंका तिर्यगाति और मनुष्यगतिस संयुक्त बांधाते हैं, क्योंकि, अन्य सन्तिवांशाति, दुर्भग, हुस्वर, अनादेश और नीचगीत्रको तीन गतियांस संयुक्त बांधाते हैं, क्योंकि, क्यांकि, त्रेचगित्के साथ इनके बन्धका अभाव है। स्वायोक्त देवगितेक साथ इनके बन्धका अभाव है। सामादनसम्यग्हिए इन्हें तिर्यगाति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधात है, क्योंकि, उसके अन्य गतियांके साथ इनके बन्धका विरोध है। चारों गतियांके सिथ्यादाष्टि से सीर सामादनसम्यग्हिए स्वायो सीर सामादनसम्यग्हिए स्वायो सीर सामादनसम्यग्हिए स्वायो कीर सामादनसम्यग्हिए स्वायो है। चारों गतियांकि साथ इनके बन्धका खिराध है। चारों गतियांकि साथ इनके बन्धका खारा से सामादनसम्यग्हिए स्वायो है।

प्रत्याख्यानावरणीय तक सब प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १९१ ॥

हिस्थानन्ण्डककी प्ररूपणा करके पीछे चूंकि इस सुत्रकी प्ररूपणा की गई है अत एवं 'निद्रान्ण्डकको आदि करके', यह अर्थापत्तिस जाना जाता है। निद्रा, असाताबेदनीय, एकस्थानिक, अप्रत्यास्थान और प्रत्यास्थान नृण्डकाकी प्ररूपणा ओघके समान है। उसको ओघमंगो । सो वि चिंतिय एत्य वत्तव्वा ।

पुरिसवेदे ओघं ॥ १९२ ॥

एसी पुरिसवेद शिक्षी जेण देसामासियों तेण पुरिसवेद इंडय-माणदंडय-लोहंदंडयाणं गहणं । जहां एदेंसिं दंडयाणमाधिम परुवणा करा तहा एत्थ विकायच्वा । णविर पच्चयविसेसी जाणिय वत्तव्याः ।

हस्स-रदि जाव तित्थयरे ति ओघं ॥ १९३ ॥

हस्त-रिदेसुतमार्दि कार्ण जाउ तित्थयरसुतं ति ताव एदेसिं' सुत्ताणमोषपरूवण-मनहारिय परुवेदन्वं ।

मागकसाईसु पंचगागावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-तिण्णिसंजल्लण-जमिकति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १९४ ॥

सुगमं ।

भी विचार कर यहां कहना चाहिये।

पुरुषवेदकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १९२ ॥

यह पुरुषवेद परका निर्देश चूंकि देशामर्शक है। अतः इससे पुरुषवेदक्षण्डक, मानदृष्टक और लें।भदृण्डकका प्रहण करना चाहिये। जिस प्रकार इन दृण्डकोकी ओखर्मे मक्षणण की गई है उसी प्रकार यहां भी करना चाहिये। विशेष इतना है कि प्रस्ययभेद जानकर कहना चाहिये।

हास्य व रतिसे लेकर तीर्थकर प्रकृति तक ओघके समान प्रहरूगा है ॥ १९३ ॥

हास्य-रति सुवको आदि करके तीर्थकर सुव तक इन सुवेंकी ओध्यमक्रपणाका निकाय कर प्ररूपणा करना चाहिये।

मानकपायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावदनीय, तीन संज्वलन, यशकीर्ति, उच्चेगात्र और पांच अन्तरायका कीन बन्धक और कीन अवन्धक है १॥ १९४॥

यह सूत्र सुगम है।

१ प्रतिषु ' एदासिं ' इति पाठः । २ अ-आप्रत्योः ' जामिदस्यो ' इति पाठः ।

मिञ्छाइद्विपहुडि जाव अणियद्वि उवसमा स्ववा वंधा । एदे बंधा, अवंधा णरिय ॥ १९५ ॥

कोषसंजलणेमेंस्य एटाहि सह किण्ण पहाित्तरं ? ण, तस्स माणसंजलणवंचादो पुष्वमेव वेन्छिण्णवंघस्स माणादीहि वंवद्वाणं पिष्ठ पन्चासन्चीए अभावादो। एदस्स सुत्तस्स पह्याणए कोषभंगो। णविर माणस्त सोदशे।, अण्णेसिं कसायाणं परोदशे। वंशे। पन्चएसु माणकपायं मोत्तृणं सेसकसाया अवणेदस्या। सेसं जाणिय वत्तस्यं।

बेट्टाणि जाव पुरिसवेद-कोधसंजलगाणमोधं ॥ १९६ ॥

षेद्वणि ति तुते चेद्वाणिय-णिदा-असार्य-मिच्छत-अगन्वम्खाण-पन्चमखाणदंडया धेत्तव्या, देसामासियतादो । पुरिसचेद-कोधसंजरुणे ति तुते तस्म एक्कस्मेव सुत्तस्य ग्रहणं कायव्यं । एदेसि सुत्ताणमेश्वपरुवणमनद्वारिय वत्तव्यं ।

मिध्यादृष्टिसे ठेकर अनिवृत्तिकरणगुगस्थानवर्ता उपरामक व क्षश्क तक चन्यक हैं । ये बन्यक हैं, अवन्यक केई नहीं हैं ॥ १९५ ॥

शंका-यहां इन प्रकृतियोंके साथ संज्वलन क्राधकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है?

समाधान—नहीं, षयोंकि संज्वलनमानके वन्धम उसका वन्ध पूर्वमं ही ब्युटिउन्न हो जाता है, अत एव मानाहिकोंके साथ वन्धान्त्रवानके प्राति उसकी प्रत्यामित्रका अभाव है। इसी कारण उसकी प्रकृषणा यहां नहीं की गई है।

इस सुत्रकी प्ररूपणा कोधके समान है। विशेष इतना है कि मानका स्वाद्य और अन्य कथायाँका परोदय बन्ध होता है। प्रत्ययोंमें मानकपायको छोड़कर शेष कथायाँको कम करना चाहिये। शेष प्ररूपणा जानकर कहना चाहिये।

द्धिस्थानिक प्रकृतियोंको लेकर पुरुषवेद और संज्यलनकाथ तक ओघक समान प्ररूपणा है ॥ १९६ ॥

' ढिस्थानिक ' ऐसा कहनेपर द्विस्थानिक, निद्रा, असानावेदनीय, मिध्यात्व, अप्रत्यास्थानावरण और प्रत्यास्थानावरण दण्डकोंका प्रहण करना चाहिये, फ्योंकि, यह देशामशैक पद है। पुरुषवेद व संज्वलनकोश, ऐसा कहनेपर उस एक ही सूत्रका प्रहण करना चाहिये। इन सूत्रोंकी ओध्यक्षपणका निश्चय कर व्यास्थान करना चाहिये।

१ प्रतिषु ' सादअसाद ' इति पाठः ।

हस्स-रिद जाव तित्थयरे ति ओघं ॥ १९७ ॥ सगमेनंदं, बहुने। पुरुषिदत्थतादो ।

मायकसाईसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-दोण्णिसंजलण-जसिकिति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १९८ ॥

सुगममेदं ।

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अवंधा णत्थि ॥ १९९ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं।

बेट्राणि जाव माणसंजलणे ति ओघं ॥ २००॥

ेवद्दाणि-णिदासोदीगद्दाण-अपस्यक्ताण-पञ्चक्ताण-पुरिस-कोध-माणसुत्ताणमोाघपरू-वणमवद्दारिय पर्वेदव्यं ।

हास्य व रतिंस ठेकर तीर्थिकर तक ओघंके समान प्ररूपणा है ॥ १९७ ॥

यह सत्र सुगम है. क्योंकि, हमके अर्थकी वहुन बार प्ररूपणा की जा चुकी है। मायाकपाथी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, दो संज्यलन, यशकीति, उच्चेगात्र और पांच अन्तराय, इनका कीन चन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ १९८ ॥

यह सुत्र सुगम है।

मिष्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकाण उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अयन्धक कोई नहीं हैं॥ १९९ ॥

यह भी सूत्र सुगम है।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंको लेकर संज्वलमान तक ओघके समान प्ररूपणा है॥२००॥ द्विस्थानिक, निद्रा, असातावेदनीय, एकस्थानिक, अप्रत्यास्थान, प्रत्यास्थान, पुरुषवेद, कोध और मान सुत्राँकी ओघप्ररूपणाका निश्चय कर प्ररूपणा करना चाहिये।

१ प्रतिष्ठु 'सादास।देग- ' इति पाठः ।

ह्रस्स-रदि जाव तित्थयरे ति ओघं ॥ २०१ ॥ _{सगमेषदं ।}

लोभकसाईसु पंचणाषावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-जसिकत्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥२०२॥ सर्गमं ।

मिच्छाइट्रिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णित्य ॥ २०३ ॥

एदं सुगमं ।

सेसं जाव तित्थयरे ति ओघं।। २०४॥

सुगमं ।

अकसाईसु सादावेदणीयस्स को बंधो की अबंधो ? ॥१०५॥ स्रुगमं।

हास्य व रतिसे लेकर तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ २०१ ॥ यह सुत्र सुगम है।

लेभकषायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, यशकीर्ति, उच्चेगोत्र और पांच अन्तरायका कीन बन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ २०२ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमक व क्षपक तक वन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अवन्धक कोई नहीं हैं॥ २०३॥

यह सूत्र सुगम है।

तीर्थंकर प्रकृति तक शेष प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २०४ ॥ यह सुत्र सुराम है।

अकषायी जीवोंमें सातावेदनीयका कीन बन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥२०५॥ यह सृत्र सुगम है। उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था सीणकसायवीदरागछदुमत्था सजोगिकेवली बंधा । सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो बोन्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २०६ ॥

ष्टस्स अरथो । तं जहा — सादावेदणीयस्स' पुन्नं कंघो पच्छा उदबो वोच्छिण्णो, सजीगि-अजीगिकेवलीसु कमेण वंघोदयवोच्छेददंसणादो । सोदय-परोदजो, उमयद्दा वि बंघा-विरोहादो' । णितंतरो, पडिवक्सपयडीए वंघाभावादो । उनसंत-खीणकसाएसु णव जोगपत्रया । सजोगीसु सत्त । अगइसंजुत्तो कंघो । मणुसा सामी । सादि-अद्धनो वंघो, अद्धवबंधितादो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणि-विभंगणाणीसु पंच-णाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-सोल्लसकसाय-अट्टणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-देवाउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदिय-जादि-ओराल्लिय-वेउन्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-पंचसंठाण-ओराल्लिय-

उपशान्तकपाय वीतरागछद्मस्य, श्लीणकपाय वीतरागछद्मस्य और सयोगकेवळी बन्धक हैं। सयोगकेविक्तारुके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, श्रेष अवन्यक हैं॥ २०६॥

इस सुत्रका अर्थ कहते हैं। यह इस प्रकार है— सातावेदनीयका पूर्वमें बच्ध और पश्चात उदय ज्युव्छित्र हाता है, क्योंकि, सयोगकेवली और अयोगकेवली गुणस्थानोंमें क्रमसे उतके बच्च और उदयका ज्युव्छेट्ट देखा जाता है। उसका स्थादय परोदय बच्च होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उसके बच्धका विरोध नहीं है। निरन्तर बच्च होता है, क्योंकि, उसकी प्रतियक्ष प्रकृतिका यहां अभाव है। उपात्तकवाय और झोणकपाय जीवोंमें मौ योग प्रत्यय तथा सयोगी जिनोंमें सात हैं। अगतिसंयुक्त बच्च होता है। मनुष्य स्वामी हैं। सादि व अधुव बच्च होता है, क्योंकि, वह अधुववन्धी है।

ज्ञानमार्गणाके अनुसार मत्यज्ञानी, श्वताज्ञानी और विभंगज्ञानी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, तौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोट्ट कपाय, आठ नोकषाय, तिर्येगासु, मनुष्यासु, देवासु, तिर्येगाति, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, औदारिक, वैकियिक, तैजस व कार्मण शरीर, पांच संस्थान, औदारिक व वैकिथिक शरीरांगोपांग, पांच

र अप्रती सादासादवेदणीयस्स ', आप्रती ' सादासादयस्स ' इति पातः ।

२ प्रतिषु ' बंधनिरोहादो ' इति पाठः।

वेजिव्यसरीरअंगोवंग-पंत्रसंघडण-वण्ण-गंधरस- फास-तिरिक्खगइ -मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुन्वी - अगुरुअलहुअ-उवघाद-परपाद-उस्सास-उज्जोव दोविहायगइ-तस-वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग सुस्सर-दुस्सर--आदेज्ज--अणादेज्ज- जसिति-अजसिकति-णिमिण-णीचुचागोद-पंत्रतराइयाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ २०७॥

सगमं ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी बंघा । एदे बंघा, अवंघा णत्थि ॥ २०८ ॥

एस्य उदयादो वंधा पुख्यं पच्छा वा वोच्छिजनित ति विचारा णस्यि, एदासि पयडीणं बंधोदयबोच्छेदाभावादा । पंचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअञ्जुअ-थिराधिर-सुहासुद्ध-णिमिण-पंचेतराङ्गाणं मोदओ वंधो, धुवादयत्तादो । देवाउ-देवगइ वेउब्बियसरीर-वेउब्बियसरीरअंगोवंग-देवगङ्गाओरगाणुपुच्यीणं परादओ वंधो,

संहतन, वर्ण, गन्य, रस, स्पर्श, तिर्यमाति, मनुष्याति व देवगतित्रायीग्यानुपूर्वी, अगुरूष्ध, उपवात, परवात, उच्छ्वाम, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रम, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकगरीर, स्थिर, अस्थिर, शुम, अशुम, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच व ऊंच गोत्र और पांच अन्तराय, इनका केंग वन्धक और कीन अबस्यक है ? ॥ २०७॥

यह सूत्र सुगम है।

मिष्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि वन्यक हैं। ये वन्यक हैं, अवन्यक कोई नहीं हैं॥ २०८॥

यहां उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् ब्युच्छित्र होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, इन मक्टतियोंके बन्च व उदयके ब्युच्छिदका यहां अभाव है।

पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजल व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस. स्पर्श, अगुरुल्घु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वादय वन्य होता है, क्योंकि, य धुवोदयी प्रकृतियां है। देवायु, देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इन पदासिं वैभोदयाणमक्तमेण वृत्तिविरोहारो । पंचदंसणावरणीय-सादासाद-सोठककसाय-अष्टणोकसाय-तिरिक्ख-मणुसाउ-तिरिक्ख-मणुसगइ-ओरालियसरीर--पंचसंठाण-ओरालियसरीर--अंगोवंग--पंचसंघडण-तिरिक्ख-मणुसगइपाओग्गाणुपुती--उवघाद--परघाद--उस्सास-उज्जोब--दोविहायगइ-पत्तेयसरिर-सुमग-दुमग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसाकिति-अजसाकिति-णीचागोदाणं सोदय-परोदओ वंथो, दोहि' वि पयोरिह वंधविरोहामावादो । पंचिदियन्तस-बादर-पज्जाणं मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइडीस सोदय-परोदओ वंथो। सासणसम्माइडीस सोदओ चेव, ब्रदासि पडिवक्खपयडीणं तत्थुरयाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस-देवाउ-तेजा-कम्पद्रयसरीर-वण्ण-गंघ-रस-फास-अगुरुवल्द्वअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णितंतौर बंघो, एगसमद्रयंघाणुवलंभादो । सादासाद-पंचणोकसाय-पंचसंक्राण-यंचसंघडण-उज्जोब-अप्पसत्यविद्यायगद्द-थिराथिर-सुभागुभ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसिकतीणं सांतरा बंघो, एस-

प्रकृतियोंके बन्ध व उदयके एक साथ रहनेका विरोध है। पांच दर्शनावरणीय, साता ब असाता बेदनीय, सोलह कपाय, आठ नोकपाय, तिर्यगाय, मनुष्याय, तिर्यगाति, मनुष्याय, विर्माति, मनुष्याय, विर्माति, मनुष्याति, औदारिकशरीर, पांच संहनन, तिर्यगाति क मनुष्याति पांच संहनन, तिर्यगाति ब मनुष्याति पायोग्यानुपूर्वी, उपवात, परवात, उठ्यताम, उद्योत, हो विहायोगतियां, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुभग, सुभव, सुस्वर, असंद्य, असंद्य, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और नीचगाप्रका स्वेदय-परेद्य वस्थ होना है, पर्योक्त, देनों ही प्रकारीसे उन्हे स्व होनें के कोई विरोध नहीं है। पंचित्रयाति, वस, वादर और पर्योप्तका मित व अत अकानी मिर्याटिएयों से स्वोद्य परोदय नच्छ होता है। सासादनसम्बग्हिएयों से स्वोदय दी बन्ध होता है। सासादनसम्बग्हिएयों से स्वोदय दी बन्ध होता है। सासादनसम्बग्हिएयों से स्वोदय दी बन्ध होता है। सासादनसम्बग्हिएयों से स्वोदय ही बन्ध होता है। सासादनसम्बग्हिएयों से स्वोदय ही बन्ध होता है। सासादनसम्बग्हिएयों से स्वोदय स्व

पांच झानावरणीय. नी दर्शनावरणीय, सीलह कपाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवायु, तेजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुल्यु, उपचात, निर्माण और पांच अन्तरायका निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, हनका एक समयिक बच्ध नहीं पाया जाता । साता व असाता वेदनीय, पांच नोकपाय, पांच संस्थान, पांच संहमन्त्र, उच्छेत, अमशस्तविहायोगति, स्थिर, अस्थिर, छुअ, बुअंग, बुस्वर, अनहेव्य और वश्चाति, स्वारा व ह्या होता है, क्योंकि, एक समयके भी हनका बन्धाविश्वाम देखा

१ प्रतिषु 'हि दोहि ' इति पाठः । २ अप्रतौ 'सुस्सर ' इति पाठः ।

समएण वि पदासिं बंधुवरमदंसणादो । पुरिसवेदस्स सांतर-णिरंतरो । कुदो णिरंतरो ? पम्म-सुक्क-लेस्सियतिरिक्ख-मणुसिच्छाइडि-सासणसम्माविद्वीसु पुरिसवेदस्स णिरंतरबंधुवर्ठभादो । मणुस-गद्म-मणुसपद्मश्रीमगाणुपुज्वीणं सांतर-णिरंतरो वंशे । होतु सांतरो, कुदो णिरंतरो ? ण, सुक्क-लेस्सयिनच्छाइडि-सासणसम्मादिड्वेदवाणं णिरंतरबंधुवर्लभादो । ओरालियसरीरअंशो-वेनाणं सांतर-णिरंतरो । कथं णिरंतरा ? ण, णाइल्यु सणक्कुमारादिदेवेद्य च णिरंतर-बंधुवर्लभादो । देवगइ-पीलियद्यादि-वेउविवयसरीर-वेउविवयमरीरअंगोवं च गिरंतर-बंधुवर्लभादो । देवगइ-पीलियद्यादि-वेउविवयसरीर-वेउविवयमरीरअंगोवंग देवगइपाओगगणुपुष्टि-परस्यविद्वायगइ-सुमग-सुस्वर-आंद्रज्ञ-उचानोदाणं सांतर-णिरंतरो वंशे । कथं णिरंतरो ? ण, असंखेजवासाउअतिरिक्खं मणुसिन्छाइडि-सासणयम्मादिद्वीसु तेउ-पम्म-सुक्कलिस्सय-संखेक्जवासाउअतिरिक्ख-मणुपिनच्छाइडि-सामणयम्मादिद्वीसु च णिरंतरबंधुवर्लभादो । परघा-

जाता है। पुरुषवेदका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है।

शंका -- निरन्तर बन्ध केल सम्मव है ?

समाधान — फ्योंकि, पदम और राक्त लेक्याबाले नियंच व मनुष्य मिथ्याद्यप्ति एवं सासादनसम्यग्दरियोंमें पुरुषवेदका निरन्तर वस्थ पाया जाना है ।

मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शंका — इनका सान्तर बन्ध भले ही हो, पर निरन्तर बन्ध कसे सम्भव हैं ?

. समाधान—नहीं, क्योंकि, गुक्केट्यावाले मिथ्यादिए और सामादनसम्पर-'ए देवोंके निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

औदारिकशरीर और औदान्किशरीरांगोपांगका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है। शंका – निरन्तर बन्ध केसे होता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि. नाराकेयों तथा सनश्कुमारादि देवोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

देवगति, पेचेन्द्रियजाति, वैकियिकदारीर, वैकियिकदारीरांगापांग, देवगतिमायोः ग्यानुपूर्वी, मदास्तविद्दायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्रका सान्तर-निरान्तर बन्ध होता है। निरन्तर बन्ध केसे होता है? नहीं, क्योंकि, असंख्यात वर्गागुष्क तिर्येच व मनुष्य मिष्यादिष्टे एवं सासादनसम्बन्धियाँ तथा तेज, पद्म व गुक्क लेह्याबारु संख्यातवर्यायुष्क तिर्यंच य मनुष्य मिथ्यादिष्ट एवं सासादनसम्बन्ध्यादिष्ट्योंमें निरन्तर दनस्य

१ अप्रतो ' नासाउअस्थितिरिक्ख ' इति पाठः ।

दुस्सास-तस-बादर-पज्जत-पत्तेयसरीराणं भिच्छाइड्विम्ह बंधे। सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो १ देव-णेरह्एसु असंखेज्जवासाउअतिरिक बन्भणुस्सेष्ठ च णिरंतरां अवस्थान्यादां । सासणसम्मादिड्वीषु णिरंतरो, तत्थ पडिवक्खपयडिवंधाभावादो परधादुस्सासवंधविरोहिअपज्जत्तस्स वंधाभावादो च । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुन्ति-णीचागोदाणं पि वंधो सांतर-णिरंतरो । कर्षे णिरंतरो १ ण, तेउ-बाउकाइयमिच्छाइड्वीसु सत्तमपुढविमिच्छाइड्विसासणसम्मादिङ्कीसु च णिरंतर-वंधवरुमादो ।

पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो भेदाभावादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खनइ-तिरिक्खन गृहपाओग्गाणुपुन्ति-उउजीवाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो । मणुसाउ-मणुसगइ-मणुसगइ-पाओग्गाणुपुन्त्रीणं मणुगइसंजुत्तो बंधो । देवाउ- [देवगइ-] देवगइपाओग्गाणु-पुन्त्रीणं देवगइसंजुत्तो । ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंठाण-पंचसंघडणाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो, अण्णार्यहि बंधविरोहादो । णवरि समचउरससंठाणस्स तिगइ-संजुत्ता, णिरवर्गाइण अभावादो । वेउन्वियसरीर-वेउन्वियसरीरओगोवंगाणं मिन्छाइहिम्हि देव-गइ-णिरयगइसंजुत्तो। सासणे देवगइमंजुत्तो। सादावेदणीय-इत्थि-दुरिस-हस्स-रिद-पसरथिनहाय-

पाया जाना है। परचान, उरुक्वास, बस, वादर, पर्याप्त और प्रत्येकशारीरका सिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरम्तर बरुष होता है। निरम्तर बरुष केत होता है? क्योंकि, देव-नारिक्यों और असंख्यानवर्षायुष्क निर्यंच व मनुष्योंमें उनका निरम्तर वस्थ पाया जाता है। सासादनसम्प्रावृष्ट्योंमें निरम्तर बस्य हाता है, क्योंकि, वहाँ प्रतिषक्ष मकृतियोंके क्यकां अभाव है, तथा परचान और उरुक्वासके बस्थकं विरोधी अपर्याप्तकं भी बस्थका अभाव है। विर्यमाति, निर्यमातियायायायुपूर्व और नीचयोगका भी बस्य सान्तर-निरम्तर होता है। निरम्तर वस्य केस होता है? नहीं, क्योंकि, तज्ञ व बायु कायिक सिथ्यादृष्टियों तथा सप्तम पृथिवोंक सिथ्यादृष्टि और सासान्तनसम्बरदृष्टियों में निरम्तर वस्य पाया जाता है।

प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, आध्यत्ययंसि यहां कोई भेद नहीं है। तियेगातु, तियंगाति, तियंगातिमायाग्यानुपूर्वी और उद्योतका तियंगतिसे संयुक्त बच्च होता है। मनुष्यातु, मनुष्याति और मनुष्यातिप्रायाग्यानुपूर्वी और उद्योतका तियंगतिसे संयुक्त बच्च होता है। मनुष्यातु, [वेवगति] भीर देवगतियायाग्यानुपूर्वीका मनुष्यातिसे संयुक्त बच्च होता है। भीदारिकदारीर, आदारिकदारीरांगांपांग, पांच संस्थान और पांच संहतनका तियंच व मनुष्यातिसे संयुक्त बच्च होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उनके बच्चका विरोध है। विशेष हतना है कि समजनुरस्रसंस्थानका तीन गतियोंके संयुक्त बच्च होता है, क्योंकि, नरकगतिके साथ उसके बच्चका अभाव है। विक्रियक्तरारि संयुक्त तथा सासादन सार्यारांगोपांगका मिथ्याहिष्ट गुणस्थानमें देवगति व नरकगतिके संयुक्त, तथा सासादन गुणस्थानमें देवगतिक संयुक्त, तथा सासादन गुणस्थानमें देवगति व नरकगतिके संयुक्त, तथा सासादन गुणस्थानमें देवगतिक संयुक्त, तथा सासादन गुणस्थानमें देवगतिक संयुक्त, तथा सासादन गुणस्थानमें देवगतिक संयुक्त, तथा सासादन गुणस्थानमें प्रसाद संयुक्त स्वयं होत्य है। सातावेदनीय, स्वंविद्य प्रस्थेवद, हास्य,

मर्-बिर-सुद्द-सुभग-सुस्सर-आदंज्ज-जसिकत्तीणं तिगइसंजुत्तो संघोत, णिरयगईए अभावादो । अप्यस्त्यविद्यायगङ्ग दुभग-दुस्सर-अणादेज-णीचागोदाणं तिगइसंजुत्तो संघोत, देवगईए अभावादो । णविर सासणे तिरिक्ष्य-मणुसगइसंजुत्तो । उच्चागोदस्स देव-मणुसगइसंजुत्तो, अण्णगईदि विरोहादो । पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असादावेदणीय-सोलसक्तमाय-अरिद-सोग-अय-दुगुंळ-पॉचिंदियजादि-तेजा-कम्भइयसरीर-वण्ण-गंघ-रस-फास-अगुरुवलङ्क्अ-जवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पञ्जत-पतेयसरीर-अथिर-असुद्द-अजसिकित-णिमिण पंचंतराइयाणं मिन्छ्य-क्रिक्क च-जवघादे । सासणे तिगइसंजुत्तो, जिरयगईए अभावादो ।

देवाउ-देवगइ-चेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरगोवंग-देवगइपाओगगाणुपुञ्जीणं षंघस्स तिरिसक मणुसिनच्छाइडि-सासणसम्मादिष्टिणो सामी। अवसेसाणं चउगइया। वंघदाणं सुगमं। वंघतोच्छेदो णस्य, 'अवंघा णस्यि ' ति सुजुदिइतादो। धुववंघीणं मिन्छाइडिम्हि वंघो चउव्विद्दो। सासणे तिविद्दो, धुवताभावादो। अवसेसाणं पयडीणं वंघो सादि-अदुवो, अद्धववंधितादो। एवमेसा मदि-सुदअण्णाणीणं परुवणा कदा।

रति, प्रशस्तविहायोगित, स्थिर, गृभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, और यशकीर्तिका तीन गितयोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, नरकार्तिके साथ इनके बन्धका अभाव है। अप्रशस्तविहायोगित, दुर्भग, दुन्धर, अनादेय और नीचगोतका नीन गितयोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, दुवगित हमार्थ दनक वन्धका अभाव है। दिशायना इनमी है कि सासादन गुणस्थानमें तिर्यगाति और मुख्यगिति संयुक्त वन्ध होता है। उच्चगोतका देवाती के मुख्यगिति और मुख्यगिति संयुक्त वन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उसके बच्चका बिरोप है। पांच कानावरणीय, ने दर्शनावरणीय, अमानावेदनीय सोळह कथाय, भरति, शोक, भय, खुगुस्था, पंचीन्द्रय जाति, तेजस व कामेण शरीर, वर्ण, तम्ध, रस, स्वर्ग, अगुरुक्यु, उपधात, परगत, उच्कृयास, त्रस, बादर, पर्योक्त, प्रत्येक्तशरीर, क्रिस्त, अगु, अयशकीर्ति, निर्मण और पांच अन्यरायका मिष्याविद्य गुणस्थानमें सार्थ वर्गक, अयशकीर्ति, निर्मण और पांच अन्यरायका मिष्याविद्य गुणस्थानमें कीन गतियोंके संयुक्त बन्ध होता है। सासादन गुणस्थानमें तीन गतियोंके संयुक्त बन्ध होता है। स्वर्योक्त बन्धका अभाव है।

देवायु, देवगात, वैकियिकरारीर, वैकियिकरारीरांगापांग और देवगातिप्रायोग्यायुपूर्वीक कम्प्रके तिर्येच व मतुम्य मिरयाराष्टि एवं सातादनसम्यग्दाष्टि स्वामी हैं। देश महातिर्योक्षे कम्प्रके चारों गतिर्योके जीव स्वामी हैं। वश्याच्यान सुनम है। कम्बयुच्छेद है नहीं, क्योंकि, वह 'अवस्थक नहीं हैं' हस मकार स्वेतक ही है। धुववस्थी प्रकृतियोका वस्थ मिरयादिए गुणस्थानमें चारों प्रकारका होता है। सांसादन गुणस्थानमें तीन मकारका वस्थ हाता है, क्योंकि, वहां धुव वस्थका अमाय है। होव महतियोका वस्थ सादि य अधुव होता है, क्योंकि, वे अधुववस्थी हैं। इस प्रकार बहु मतिश्वत स्वामियोकी प्रदर्गणा की गाहै है विभंगणाणीणं पि एवं चेव वत्तव्तं, विसेसाभावादो । जविर उत्तवाद-परवाद-इस्तास-पतेयसिरीराणं सोद्रओ बंबो, अगज्जतकाठे विभंगणाणाभावादो । तस-वादर-पज्जताणं मिन्धा-इिद्विग्द्व सोद्रओ बंधो, थावर-सुहुम-अपज्जतएसु विभंगणणाणाभावादो । तिण्णमाणुपुष्त्रीणं वंधो परोद्रओ, अपज्जतकाठे विभंगणाणाभावादो । पषएसु ओराठिय-वेउव्वियमिस्स-कम्म-इयपच्चया अवणेदव्या, विभंगणाणस्स अपज्जतकाठेण सह विरोहादो । अण्णो वि जङ्ग अस्थि भेदो सो संभाठिय वत्तव्यो ।

एक्कट्राणी ओघं ॥ २०९ ॥

भिच्छत्त-णबुंसयवेद-णिरयाउ णिरयगइ-एइंदिय-चीइंदिय-तीईदिय-चर्डरिदियजादि— हुंडसंठाण-असंपत्तसेवहसंचडण-णिरयाणुपुत्री-आदाव-यावर-सुहुमः अपञ्जतः -साह्नारणणभेक्क-हाणिसण्णा, एक्कम्हि चेव भिच्छाइहिगुणहाणे' वंधसरूत्वेण अवहाणादो । एदासि परूचणा आधतुल्ला । णवरि विभंगणाणीसु एइंदिय-वेहंदिय-तीइंदिय-चर्डरिदियजादि-आदाव-थावर-

विभंगव्यक्तियों के भी इसी प्रकार कहना चाहिये, क्यों कि, मित-श्रुत अव्यक्तियों से इनके कोई विरोपता नहीं है। भेर केवल इतना है कि उपधात, परधात, उच्छ्वास और अत्येक इति, इत्त है, क्यों कि, अपर्यंप्तकाल में विभंगवानका अभव है। अस, बहर और पर्याप्तका मिन्याइि गुणस्थानमें स्वाद्य बन्ध होता है, क्यों कि, क्यावर, स्वस्म और अपर्याप्तका मिन्याइि गुणस्थानमें स्वाद्य बन्ध होता है, क्यों कि, क्यावर, स्वस्म और अपर्याप्तक जीवों में विभंगवानका अभाव है। तीन आनुपूर्वी नामकर्मोका बन्ध परोद्य होता है, क्यों कि, अपर्याप्तकाल में विभंगवानका अभाव है। प्रत्ययों में औदारिकिमिश्र वैक्षितिकिमिश्र और कार्मण प्रत्ययों को कम करना चाहिय, क्यों कि, विभंगवानका अपर्याप्तकालके साथ विरोध है। और भी यदि कोई भेद है तो उसको स्मरणकर कहना चाहिय।

एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २०९॥

सिध्यात्व, नपुंसकवेद, नारकायु, नरकगित, एकेन्द्रिय, झीन्द्रिय, चीन्द्रिय, चातुरिन्द्रिय जाति, इण्डलंस्थान, असंमासस्यादिकालंडनन, नारकातुपूची, अस्ताय, स्थावर, स्पृक्ष, अपर्याप्त अदि साधारण, इनकी एकस्थानिक संझा है, स्वीक, एक सिम्प्यादि हो। प्राप्त का सम्बद्धि प्राप्त की स्वाप्त की स्वाप्त

१ अ-आप्रलोः 'पंच सुएसु', काप्रती 'एसुपंच सु' इति पाठः ।

२ अप्रतो ' इत्थि सेदो ', आ-काप्रकोः ' इत्थि नेदो ' इति पाठः ।

व प्रतिष्ठ ' मिच्छावद्वीस समद्वागे ' वृति पाढः ।

सुदुम-अपञ्जत-साहारणै-शिरयाणुपुर्व्वीणं परोदओं वंधो, एदेसु विमंगणाणीणमभावादो । सेसं सगमं ।

आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणीसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणा-वरणीय-जसिकति-उचागोद-पंचंतराइयाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ २१०॥

एदं सुगमं ।

असंजदसम्माइट्टिपहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा वंधा । सुहुमसांपराइयअद्धाए चरिमसमयं गंतूण वंधो वोच्छिजदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २११ ॥

एदासिमुदयादो बंधो पुर्व वेन्डियणो, बंधे वेन्डियणो संत वि पच्छा उदयदंसणादो । पंचणाणावरणीय-चंदसणावरणीय-पंचंतराइयाणे सोदधो वंधा । जसकित्तीए असंजदसम्मा-दिद्दिग्हि सोदय-परादधो, पडिवक्खुदयदंसणादो । उविर सोदधो चेव, पडिवक्खुदयाभावादो ।

जाति, आताप. स्थावर. सुक्षम, अपर्याप्त, साधारण ओर नारकानुपूर्वीका पराद्य बन्ध होता है, क्योंकि, इनमें विभेगवानी जीवेंका अभाव है। दोष प्रकृषणा सुगम है।

आभिनिवाधिक, श्रुत और अबिध जानी जीवोंमें पांच जाणावरणीय, चार दर्शना-वरणीय, यज्ञकीतिं, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका कीन वन्यक और कीन अवन्यक है ?॥ २१०॥

यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्यग्दियं लेकर स्क्ष्मनाम्परायिक उपगमक व क्षपक तक बन्धक हैं। स्क्ष्मसाम्परायिककालके अन्तिम समयकी जाकर बन्ध ब्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, ज्ञेप अबन्धक हैं ॥ २११ ॥

हन प्रकृतियोंका वन्ध उद्यक्ष पूर्वमें न्युचिछन्न होता है. क्योंकि, वन्धेक न्युचिछन्न हो जानेपर भी पीछ हनका उदय देखा जाता है । पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है यदाकीतिका असंयतस्ययदृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां उसकी प्रतिषक्ष प्रकृतिका उदय देखा जाता है। ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतिक उद्यका असाव है।

१ प्रतिपु 'साहारणा ' इति पाठः । २ प्रतिपु 'सेस ' इति पाठः ।

श्रितिपु ' जाव सहुमसांपराइयअद्धाए ' इति पाठः ।

उच्चागोदस्स असंजदसम्मादिष्टि-संजद।संजदेसु सोदय-परोदओ, पडिवक्खुदयदंसणादो । उविर सोदओ चेव ।

पंचणाणावरणीय-चडदंसणावरणीय-उच्चामीद-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंघो, एत्थ बंधुवरमामावादो । असंजदसम्मादिडिप्यटुडि जाव पमतसंजदो ताव जसकितीए बंघो सांतरो । उवरि णिरंतरो, पडिवरुखाय-डिवंबामावादो । पच्चया सुगमा । असंजदसम्मादिडीणं देव-मणुमगःइसंजुत्तो । उवरिमेसु देवगइसंजुत्तो । चदुगइअसंजदसम्मादिडी, दुगई-संजदासमा । उवरिमेसु देवगइसंजुत्तो । चदुगइअसंजदसम्मादिडी, दुगई-संजदासंजदा सामी । उवरिमा मणुमा चेव । वंघउद्याणं वंधवीच्छिण्णडाणं च सुगमं । धुव-बंधोणं तिविही वंधो, धुवनाभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्यो, अद्धववंधितादो ।

णिहा पयला य ओघं ॥ २१२ ॥

णवरि 'असंजदसम्मादि'डिप्पहुडि' जाव भणिदच्वं । ओघिम्म 'मिन्छाइडिप्पहुडि' ति बुत्तं ; एस्थ पुण असंजदसम्मादिडिप्पहुडि ति वत्तन्त्वं, सण्णाणस्स देडिमगुणदाणेसु अभावारो ।

उच्चगोत्रका असंयतसम्यग्दिष्ट श्रीर संयतासंयन गुणस्थानीमे स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिका उद्य देखा जाता है । ऊपर उसका स्वोदय ही बन्ध होता है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, उच्चमात्र और पांच अन्तरायका निरन्तर वन्ध होना है, क्योंकि, यहां इनके वन्धविध्रासका अभाव है। असंयतसम्यर्हिष्ट कर प्रसन्तसंयन तक यदाकीर्तिका वन्ध सान्तर हिता है। ऊपर निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, वहां उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिक वन्ध का अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं। असंयतसम्यन्दिष्ट सेंकि हे व व मनुष्य गार्तिन संयुक्त वन्ध होता है। उपरिम्म जीवोंके देवगतिसे संयुक्त वन्ध होता है। चारों गतियोंके असंयतसम्यन्दिष्ट और दो गतियोंक संयतान्यत स्वामी हैं। वारों गतियोंके असंयतसम्यन्दिष्ट और दो गतियोंक संयतान्यत स्वामी हैं। वन्धार्था मुणस्थान मुणस्थान स्वामी हैं। वन्धार्थान अंश वन्ध-द्विक्ष स्थान सुगम हैं। धुववन्धी प्रहृतियोंका तीन प्रकारका वन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुववन्धी हैं। क्यांकि, वे अधुववन्धी हैं।

निद्रा और प्रचलाकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २१२ ॥

विशेषता केवल यह है कि 'असंयतसम्यग्हिंग्स लेकर 'कहना चाहिये। ओघर्मे 'मिथ्याहिंग्से लेकर ' ऐसा कहा गया है, परंतु यहां 'असंयतसम्यग्हिंग्से लेकर ' कहना चाहिये, क्योंकि, अधस्तन गुणस्थानोंमें सम्यग्हानका अभाव है। इतना ही यहां

१ अ-काप्रस्थोः ' माणिदव्यं ' इति पाठः ।

एसिकी चेव विसेसी, णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि ।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २१३ ॥ _{धुगमं} ।

असंजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था बंभा ! एदे बंधा. अबंधा णित्य ॥ २१४ ॥

सादावेदणीयस्स बंधे। उदयादो पुन्नं पच्छा वा बोन्छिण्णो ति विचारो णस्थि, एस्य धंषोदयाणं बोन्छेदाभावादो । सोदय-परादओं बंधो, अद्धुवोदयत्तादो, असंजदसम्मादिष्टि-पहुडि जाव पमत्तसंजदो ति बंधो सांतरो । उदारि णिरंतरो, पडिवनस्वपयडीए बंधाभावादो । पच्चया सुगमा । असंजदसम्मादिष्टी देव-मणुसगइसंज्ञतं, उदारिमा देवगइसंज्ञतमगइसंज्ञतं च बंधंति, साहावियादो । चउगइअसंबदसम्मादिष्टिणो, दुगइसंजदासंज्ञदा सामी । उदारि मणुसा चेव । बंधदाणे सुगमं । बंधवोन्छेदो णस्थि, 'अबंधा णस्थि ' ति सुनुहिङ्कतादो । सादि-

विद्योग है, अन्यत्र कहीं भी और कुछ विद्योगता नहीं है।

सातावेदनीयका कीन बन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ २१३ ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्पर्ग्यास्थि लेकर क्षीणकपायवीतरागछर्मस्थ तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २१४ ॥

साताबेदनीयका बन्ध उदयसे पूर्वमं या प्रधान व्युच्छित होता है, यह विचार मेहीं है, स्पीकि, यहां उत्तके बन्ध ओर उदयके व्युच्छेदका अभाव है। स्वोदय-परोद्दय बन्धे होता है, स्पीकि, यहां उत्तके बन्ध ओर उदयके व्युच्छेदका अभाव है। स्वोदय-परोद्दय बन्धे होता है, स्पाकि, वहां उसकी प्रतिपक्ष कन्ध सात्तर होता है। उत्तर तिरात ह नम्ध होता है, क्पीकि, वहां उसकी प्रतिपक्ष महातिके बन्धका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं। असंयतसययहि जीव देव व मृत्युच्च गतिसे संयुक्त बीधि हैं। उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त और अगीतसंयुक्त बांधित हैं; उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त और अगीतसंयुक्त बांधित हैं। उपरिम जीव देवगतिसे असंयतसययहि और हो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं। उपरिम गुणस्थानवर्ती मृत्युच्छ हो स्वामी हैं। वन्धापानवर्ती मृत्युच्छ हो स्वामी हैं। वन्धापान सुगम है। वन्धयुच्छेद नहीं हैं, क्योंकि, वह अञ्चच्चक वहीं हैं 'स प्रकार सुत्रमें ही निर्विष्ट है। सादि व अध्नय बन्ध होता है, क्योंकि, वह अञ्चच्चकी है।

सेसमोघं जाव तित्थयरे ति । णवरि असंजदसम्मादिद्विपहडि ति भाणिदव्वं ॥ २१५ ॥

एदस्स अत्थो जदि वि सुगमो ते। वि सण्णाणपनखवाएणानिखत्तचित्तो दम्मेहजणाण-गाहहं च पुणरिव परूवेमि - असादावेदणीयस्स पुत्र्वं बंधो बोच्छिण्णो । उदयवोच्छेदो णिथः, केबलणाणीसु वि तद्दयदंसणादो । एवमथिरासुहाणं पि वत्तव्वं । अरदि-सोगाणं पुर्वं बंधी पच्छा उदबो वोच्छिण्णो. पमतापुच्वेस बंधोदयवे।च्छेदवलंभादो । अजसिकतीए पुच्चमुदबो पच्छा बंधी वोच्छिण्णो, पमत्तासंजदसम्मादिद्रीस बंधोदयवोच्छेदवलंभादो । असादावेदणीय-अरदि-सोगाणं बंधा सोदय-परादओ, अद्धवादयत्तादा । अथिरासहाणं सोदओ, ध्रवादयत्तादी । अजसिकतीए असंजदसम्मादिद्रिम्हि वंथा सोदय-परादओ । उद्योर परादओ चेव । एदासि पयडीणं सव्वासिं पि बंधो सांतरा. एगसमएण वि बंधवरमदंसणादो । पञ्चया सगमा । असंजदसम्मादिहिन्हि सञ्वपयडीणं दुगइसंजुत्तो, उवरिमाणं देवगइसंजुत्तो बंधो । चलगइ-असंजदसम्मादिही दगुडसंजदासंजदा मणुसगृहसंजदा च सामी । असंजदसम्मादिद्रिप्पहिड

शेष प्ररूपणा तीर्थंकर प्रकृति तक ओधके समान है। विशेषता केवल इतनी है कि ' असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर ' एसा कहना चाहिये ॥ २१५ ॥

इस सुत्रका अर्थ यद्याप सुगम है तो भी सम्यक्तानके प्रभुपातसे आक्षिप्राचित्त अर्थात् आकृष्ट होकर और दुर्बुद्धि जनोंके अनुप्रहार्थ फिरसे भी प्रहरणा करते हैं-असाताबेदनीयका पूर्वमें बन्ध व्युव्छिन्न होता है। उदयव्युव्छेद उसका नहीं है, क्योंकि, केवलज्ञानियोमें भी उसका उद्य देखा जाता है। इसी प्रकार अस्थिर और अञ्चलके भी कहना चाहिये। अरात व शोकका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय अ्युक्छिक होता है, क्योंकि, प्रमत्त और अपूर्वकरण गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्यूक्छेद पावा जाता है। अयदाकीर्तिका पूर्वमें उदय और पश्चात बन्ध व्याध्यन होता है, क्योंकि, प्रमत्त और असंयतसम्यग्हि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पावा जाता हैं। असातावेदनीय, अरति और शोकका बन्ध खोदय परोदय होता है, क्योंकि, वे अञ्चर्तेवयी हैं। अस्थिर और अश्मका खोद्य बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रवेद्यी हैं। अवदाकीर्तिका बन्ध असंयनसम्यग्दप्ति गुणस्थानमें खोदय-परोदय होता है। ऊपर उसका परोक्य ही बन्ध होता है। इन सब ही प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम देखा जाता है। प्रत्यय सुगम है। असंयतसम्बन्हाद्द गुणस्थानमें सब प्रकृतियोंका दो गतियोंसे संयुक्त तथा उपरिम जीवोंके देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। चारों गतियोंके असंयतसम्यन्द्रष्टि, दो गतियोंके संयत्तासंयत. और मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं। असंयतसम्यग्द्दष्टिसे लेकर प्रमन्तसंयत तक बन्धाध्वान ¥. ŧ. ≥ v.

जान पमत्तसंजारी ति बंधद्धाणं । पमत्तसंजदामा बंधवोच्छेदो । एदासिं बंधो सादि-अदुवो ।

अप्रच्यवस्वाणावरणचउक्क-मणुसगइ-भोराल्यिसरीर-अंगोवंग-चज्जिरसहवइरणारायण-सरीरसंघडण-मणुसगइपाओगगाणुपुज्जीओ एक्किन्दि असंजदसम्मादिष्टिगुणद्वाणे वर्ज्यंति ति एदासिमेस्य एगडाणसण्णा । दर्थ अपच्चक्खाणचउक्क-मणुसगइपाओगगाणुपुज्जीणं वंधोदया समं वें।च्ळिण्णा, असंजदसम्मादिष्टि मोत्तृगुर्वरिं चंधुदयाणुत्रच्भादो । अवसेसाणं पर्यडीण-मेस्य खोलसीयणाणमगणाण् चंधोबोन्छेदी चेत्र, उदयबोन्छेदी णरिष, केत्रच्याणादाणि वि उदयदंसणादो । अपच्चक्खाणावरणचउक्कस्स वंधो सोदय-रोरदिओ, अद्धजोदयत्तादो । मणुसगइद्देगोरालियदुग-वज्जिरसंघडणाणं वंधो परेदिओ, सम्मादिष्टीसु एदासि सोदएण वंधस्स विरोहादो । गिरंतरो चंपा, असंजदसमादिट्टिम्द एगसमएण वंधुवरमाभावादो । पच्चा सुरामा । ज्विर सणुसगददुगोरालियदा-चज्जिरसहदर्गाणायणमरिरसंघडणाणमसंजदसम्मादिद्दिम्द ओरा-लियस्काद्योग-ओरालियिसस्सकायोगभण्या णिथि, तिरिक्ख-मणुसअसंजदसम्मादिद्दिम्द एदार्मि वंधाभावादो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स देव-मणुसगदसंजुत्तो वंघो । अण्णासि पयडीणं मणुस-

अप्रत्याच्यानावरणजनुष्क, मनुष्यगति, श्रीदारिकदारीर. श्रीदारिकदारीरांगापांग, वक्षपंभवक्षाराजदारीरसंहनन और मनुष्यगतिमायांग्यानुष्कीं, य प्रकृतियां एक असंयत-स्वयन्दिष्ठ गुणस्थानमें थंशती है, अत एव इनकी यहां एकस्थान संझां है। यहां अप्रत्याख्यान्व जुष्क और मनुष्यगतिमायांग्यानुष्वींका वन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिक होते हैं, क्योंकि, असंयतसम्यव्दि गुणस्थानको छोड़कर उपरिम गुणस्थानोंमें इनका वन्ध और उदय नहीं पाया जाता। शेष प्रकृतियोंका चहां आयोषपामिक ब्रानमार्गणमें बन्धवनुच्छेद ही है, उदयन्युच्छेद नहीं है: क्योंकि, अक्तानावींमें भी उनका उदय देखा जाता है। अप्रत्याख्यानावरणजनुष्कका बन्ध सादय परोदय होता है, क्योंकि, वह अधुवादयी है। अप्रत्याख्यानावरणजनुष्कका बन्ध सादय परोदय होता है, क्योंकि, वह अधुवादयी है। अप्रत्याख्यानावरणजनुष्कका बन्ध सादय परोदय होता है, क्योंकि, वह अधुवादयी है। अप्रयाख्यानाविक, औदारिकिक और विक्रयन बन्ध होता है, क्योंकि, असंयतसम्यव्दिक, अप्तानिकिक और स्वयं प्रवास विवेच विक्रयन होता है, क्योंकि, असंयतसम्यव्दिक, अप्तानिकिक और स्वयं प्रवास हो। विद्याय होता है। अप्रयाख्यान होता है। अप्रयाख्यान होता है। अप्रयाख्यान क्योंक, त्रिवंच और सनुष्क असंयतसम्यव्दिक और सनुष्क असंयतसम्यव्दिक और सुक्ष असंयतसम्यव्दिक स्वाप के अप्रयाख्यान स्वापिकिम काययोग प्रत्या नहीं है, क्योंकि, विवंच और समुष्क असंयतसम्यव्दिक सेंप्त है। अप्रयाख्यान विक्रयोक हेन स्वापिकिम के स्वर्ण क्योंकि, त्रिवंच और समुष्ठ असंयतसम्यव्दिक सेंप्त है। अप्रयाख्यान विक्रयोक होता है। अप्रयाख्यान विक्रयोकि, त्रिवंच विक्रयाकि, विवंच के स्वर्ण काया है। अप्रयाख्यान विक्रक होता है। अप्रयाख्याक विक्रक होता है। अप्रयाख्यान होता है। अप्रयाख्यान होता है। अप्रयाख्यान हिता है। अप्ताख्यान हिता होता होता होता होता होता है। अप्ताख्यान होता होता होता होता ह

है । प्रमत्तसंबत गुणस्थानमें बन्धव्युच्छेद होता हे । इन प्रकृतियोंका बन्ध सादि और अधुव होता है ।

१ अप्रती 'मोचुणुवस्ट्राणं ' इति पाठः ।

गर्हसंजुत्ती, अण्णगर्देहि सह विरोहारो । अपन्चनस्ताणचउनकस्स चउग्रह्जसंजदसम्माइही सामी । अवसेसाणं पयडीणं देव-णेरहया सामी । बंघद्धाणं णत्थि, एनकन्दि गुण्हाणं भूजोगुण-हाणजणियद्धाणविरोहारो । असंजदसम्मादिहिन्दि बंधो वोच्छिज्जदि । अपन्चनस्वाणचउक्कस्स तिविहो बंधो, धुवाभावारो । अवसेसाणं सादि-अद्धवो ।

पच्चक्खाणावरणचउककोत्थ वेद्वाणियमसंजदममाविद्वि-संजदासंजदरोगुणहाणेषु समं चेव बंधुवलंभादो । बंधोदया समं वोच्छिण्णा, संजदासंजदम्म तदुभयाभावदंसणादो । सोदय-परादओ बंधो, धुवांदयत्तादो' । णिरंतरा बंधो, धुवांधितादो । पच्चया सुगमा । असंजदसम्मादिद्वीसु देव-सणुसगइसंज्ञत्ते । संजदासंजदेसु देवगइसंज्ञते । चउगइअसंजद-सम्मादिद्वीसु देव-सणुसगइसंज्ञते । संजदासंजदेसु देवगइसंज्ञते । चउगइअसंजद-सम्मादिद्वी दुगइसंजदासंजदा सामी । असंजदसम्मादिद्वी दुगइसंजदासंजदा सामी । असंजदसम्मादिद्वी दुगइसंजदासंजदा सामी । असंजदमम्मादिद्वी पुणहाणेसु तिविद्दो बंधो, धुवाभावादो ।

पुरिसवंद-चउसंजलण-हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं सोदय-परोदओ बंधो । सांतर-णिरंतर-

होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंक साथ इनके बन्धका विरोध है। अप्रत्याच्यानचतुष्कके चारों गानियोंके असंयतसम्यग्हाप्ट स्वामी हैं। रोण प्रकृतियोंके देव व नारकी स्वामी हैं। बन्धाप्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें बहुत गुणस्थान जानित अध्वानका विरोध है। अस्यतस्यग्रहाप्ट गुणस्थानमें बन्ध व्युव्छिष्ठ होता है। अप्रत्याख्यानचतुष्कका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उसके ध्रुव बन्धका अभाव है। रोप प्रकृतियोंका सादि व अध्व बन्ध होता है।

प्रत्याच्यानावरणच्युग्क यहां द्विस्थानिक है, क्योंकि, असंयतसम्यन्दिष्ट और संयतासंयत इन दो ग्रुणस्थानों से समान ही बच्च पाया जाता है । बच्च और उदय दोनों साध्र ज्युनिक्क होते हैं, क्योंकि, संयतासंयत ग्रुणस्थानमें उन दोनोंका अभाय देखा जाता है। स्वोदय परोद्धय बच्च होता है, क्योंकि, वह ध्रुवोदयी है। निरत्यत बच्च होता है, क्योंकि, वह ध्रुवेवर्यी है। निरत्यत बच्च होता है। असंयतसम्यन्द्दियों देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त तथा संयतासंयतीं देवनातिसे संयुक्त वच्च होता है। बारों गतियोंके असंयतसम्यन्दि और केंद्र संयतासंयत स्वामी है। असंयतसम्यन्दियों केंकर संयतास्यत्वसम्यन्दियों केंकर संयतासंयत प्राप्त वच्च व्युच्छिक होता है। दोनों ही ग्रुणस्थानों से तीन प्रकारका वन्ध होता है। इसे ग्रुणस्थानों से तीन प्रकारका वन्ध होता है। क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है।

पुरुषवेद, चार संज्वलन, हास्य, रति, भय और जुगुप्साका स्वोदय परोदय बन्ध

ः पञ्चय-गह्संजोग-सामित्तद्धाण-बंधवियणा जाणिय वत्तव्वा^र ।

मणुसाउअस्स पुञ्चावरकारुसंबंधिबंधोदयपरिक्खा सुगमा । परोदओ बंधो, मणुस्साउ-बंबोदयाणमसंजदसम्मादिद्विस्द्विअक्क्मेण बुत्तिविरोहादो । णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । बाएतार्जीस पञ्चया, ओराल्यिय-ओराल्यियस्स-वेउग्वियमिस्स-कम्मद्दयपञ्चयाणमभावादो । मणुस्यदसंजुत्तो बंधो । देव-णरह्या सामी । बंधळाणं णत्थि, एक्किन्डि गुणहाणे अद्धाणविरोहादो । क्संजदसम्मादिद्विस्टि बंधो बोच्छिज्जदि । सादि-अदुवो, अद्भुववंधितादो ।

देवाउअस्स पुट्यमुद्दओ पच्छा वंथी बोच्छिज्जदि, अप्यमत्तासंजदसम्मादिद्दीसु षंषोदयवोच्छिदुवर्तमादो। परोदओ, सोदएण वंधविरोहादो। णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरसाभावादो। पच्चया ओषतुल्ला। देवगद्दसंजुतो वंथो। तिरिक्ख-मणुसअसंजदसम्मा-दिद्धि-संजदासंजदा मणुससंजदा च सामी, अण्णत्य बंधाणुवर्लभादो। असंजदसम्मादिष्ठिप्पहुडि जाव अप्यमत्तसंजदा ति वंधदाणं। अप्यमत्तसंजददाए संखेज्जदिमं भागं गंतृण वंषो

होता है । सान्तर-निरन्तरता, प्रत्यय, गतिमंग्रोग, स्वामिन्व, अध्वान और बन्धविकस्प, इनको जानकर कहना चाहिये ।

सनुष्पायुके पूर्वापर काल सम्बन्धी बन्ध और उदयंक अपुन्छेदकी परीक्षा सुगम है। परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, मनुष्पायुक बन्ध और उद्यंक असंयतसम्बन्ध है। परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, मनुष्पायुक बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयक्षे उपक्षे बन्धिका से असित्वका विरोध है। तिरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, क्षेत्रारिकामिश्च, उद्यक्त बन्ध होता है। व्यालास क्यांक अभाव है। मनुष्पातिकामिश्च, क्षेत्रारिकामिश्च, बैक्तियकामिश्च और कामण प्रत्ययाँका अभाव है। मनुष्पातिकामिश्च और कामण प्रत्ययाँका अभाव है। मनुष्पातिकामिश्च अपना कामण प्रत्ययाँका अभाव है। सनुष्पातिकामिश्च अपना कामण प्रत्ययाँका अभाव है। क्यांक्त स्वामी है। बन्ध प्रत्यक्त स्वामी है। बन्ध अभुववन्धी है।

देवायुका पूर्वमें उदय और प्रधान् बन्ध व्युच्छित्र होता है, क्येंकि, अग्रमक्त और असंयतसम्बन्ध गुण्यानोंमें कमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेत्र पाया जाता है। परोत्तर बन्ध होता है, क्योंकि, स्वेद्दयसे उसके बन्धका विरोध है। निरम्तर बन्ध होता है, क्योंकि, स्वाद्यसे उसके बन्धका विरोध है। निरम्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्गुक्त के बना उसके बन्धविधामका अभाव है। प्रयय ओधके समान हैं। देव-वातिसे संयुक्त क्य होता है। तियंच यमनुष्य असंयतसम्बन्धि और संयतसम्बन्धक स्वाद्यक्त स्वाद्यक सम्बन्ध होता है। तियंच यमनुष्य असंयतसम्बन्धक स्वाद्यक स्वाद्यक समान है। अप्रमक्त विराद्यक समान है। अप्रमक्त विराद्यक संयत्य तक बन्धा वाता। असंयतसम्बन्धक सेक्य

वोच्छिज्जदि । सहदिन्मद्वे, अद्भवंधितादी ।

देवगइ-पॅचिंदियजारि-वेउब्वियस्तान्त-समझ्यसरीर-समवउरससंठाण-वेउब्वियसरीर-अंगोवंग-वण्ण-गंध-रस फास-देवगइपाओग्गाणुपुब्वी-अगुरुअल्हुअ-उवचाद-परघाद-उस्सास-पस्त्वविद्यायगइ-तस-मादर-पञ्जत-पत्त्वसरीर-बिर-सुम-सुमग-सुस्तर-आदेज्ज-विग्निणणामाणं सुन्वदे-- देवगङ्गाओग्गाणुपुब्वी-वेउब्वियसरीर-वेऽब्वियसरीरंगोवंगाणं पुच्चपुद्यो पन्छ। बंदो बोध्बिज्जिर, अयुन्वासंजदसम्मादिद्वीसु बंदोदयवी-छेदुवलंमादो । अवतेसत्तेवीसपयडीणं क्र्यु-इयवोच्छेदो शस्त्रि, बंदाबोच्छेदो वेव; केवल्याणीसु उदयवीच्छेदुवलंमादो ।

देवगइ-वेउन्वियदुगाणं सञ्चगुणहाणेसु परोदओ वंथो, एदासिसुदयवंथाणमक्कमेण द्वितिविरोहादे। । पेंचिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-चण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअल्हुअ-तस-बादर-पञ्जत-थिर-सुभ-णिमिणाणं सोदओ वंथो । समच उरससंठाण-उचघाद-परघाद-उस्सास-पचेय-सरीराणमसंजदसम्मादिष्टिन्हि सोदय-परोदओ वंथो । उर्वारमेसु गुणहाणेसु सोदओ चेव, तेसिमपञ्जतद्वाण् अभावादो । जविर समच उरससंठाणस्स सन्वगुणहाणेसु सोदय-परोदओ वंथो । सस्वयिद्वायगह-सुस्सराणं सन्वगुणहाणेसु सोदय-परोदओ वंथो । सुमग-आदेञ्जाणं

्युच्छित्र होता है ! सादि व अध्रव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रवबन्धी है ।

देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैकिथिक, तैजस व कार्मण दारीर, समजतुरक्षसंस्थान, वैकिथिकदारीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यायुर्ची, अगुरुक्य, उपधात, परधात, उरुक्वास, प्रदास्तविद्वायोगाति, चल, वादर, पर्योग्त, प्रयेकदारीर, स्थिर, छुप्त, सुद्भात, सुस्थर, अल्देव और निर्माण नामकर्माकी प्रकृपणा करते हैं— देवगतिप्रायोग्यायुर्ची, वैकिथिकदारीर और वैक्षिथिकदारीरांगोपांगका पूर्वमें उदय और प्रधात् वन्ध व्युच्छिछ होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और असंयत्तसम्पर्दिष्ट गुष्टास्थानीम कमदाः उनके वन्ध व उदयक्त व्युच्छिछ होता है, क्योंकि, केवल्य होता है, क्यांकि, अपूर्वकरण और असंयत्तसम्पर्दिष्ट गुष्टाक्षमों कमदाः उत्तर्वेद्ध नहीं है, केवल वन्ध-व्युच्छेद नहीं है, केवल वन्ध-व्युच्छेद हो है, क्योंकि, केवलक्षानियोंमें उनका उद्वय्वुच्छेद पाया जाता है।

 असंजदसम्मादिहिम्हि सोदय-परादओ । उत्तरि सोदओ चेत्, पडिवक्खुदयाभावादो ।

थिर-सुमाणमसंजदसम्मादिष्ट्रिप्यहुडि जाव पमत्तसंजदा ति सांतरा बंधो । उबीर णिरंतरा । अबसेसाणं पयडीणं सव्वगुणहाणेसु बंधो णिरंतरा, पडिवक्तवपडीणं बंधाभावादा ।

देवगद्द-वेउव्वियदुगाणं वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सपञ्चया असंजदसम्मादिद्विम्मि अवशे-दच्चा । संसपयडीणं पत्रया ओषतुला । देवगद्द-वेउव्वियदुगाणं भंधो सत्वयुणहाणेसु देवगद्द-संजुत्तो । अवसेसाणं पयडीणं भंधो असंजदसम्मादिद्विम्दि देव-मणुसगदसंज्ञतो । उत्तरिमेसु गुण-हाणेसु देवगद्दसंज्ञतो । देवगद्द-वेउव्वियदुगाणं दुग्डअधंजदसम्मादिद्वि-संजदा मणुसगद्द-संजदा सामी । सेसाणं पयडीणं चउगदशंजदसम्मादिद्विणो दुग्डअधंजदस्त्रसंजदा मणुसगद्दसंजदा च सामी। असंजदसम्मादिद्वप्यदुद्धि जाव अपुव्यकरणं ति यंघदाणं। अपुव्यकरणदाण् संखेजजे भागे गंतृणं चेपो नोच्छिज्जदि । णिमिणस्स तिविद्धो बंधो', धुवाभावादो । अवसेसाणं चंघो सादि-अद्भवी ।

आहारदुग-तित्थयराणमोघपरूवणमवहारिय भाणिदःवं ।

असंयतसम्यग्दिष्ट गुणस्थानमं स्वादय-परोदय वन्ध होता है। ऊपर स्वोदय ही वन्ध होता है, क्योंकि, वहां उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंक उदयका अभाव है।

स्थिर और शुभका असंयतसम्यादृष्टिसे लेकर प्रमक्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है। शेष प्रकृतियोंका सब गुणस्थानों में निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंक बन्धका अभाव है।

देवगति और वैकियिकद्विकके बैकियिक अर वैकियिकमिश्र काययोगमय्योंको असंयतसम्यद्धि गुणस्थानमें कम करना चाहिय। द्वारा मृजियोंके प्रत्यय ओपके समान हैं। देवगितिह्व और वैकियिकद्विकका वस्थ सव गुणस्थानों में देवगतिहिक और वैकियिकद्विकका वस्थ सव गुणस्थानों में देवगतिहिक और वैकियिकद्विकका वस्थ प्रत्या गुणस्थानों देव मानुष्य गतिस्त संयुक्त होता है। देवगतिद्विक और वैकियिकद्विकके है। उत्पत्ति गुणस्थानों में देवगतिस्त संयुक्त वस्थ होता है। देवगतिद्विक और वैकियिकद्विकके गो गतियों के संयतस्यवस्थादि व संयतासंयत, तथा मनुष्यातिक संयत स्वामी हैं। व्यापतासंयतस्थादाष्टि लेकर अपूर्वकरण कर स्वयासंयत्व तथा मनुष्यातिक संयत्व स्वयासंयव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यवस्थात्व स्वयं प्रत्यासंयत्व स्वयं प्रत्यासंयत्व स्वयं प्रत्यासंयत्व स्वयं मनुष्यातिक संयत्व स्वयास वही अपूर्वकरणकाल संव्यात बहुमाग जाकर वस्थ व्यव्यव्यव्यव्यव्यवस्थात्व है। निर्माण नामकर्मका तीन मन्नारका वस्थ होता है, स्यांकि, उसका भ्रुष वस्य नहीं होता। तोष प्रकृतियोंका वस्थ सति है ।

आहारकाद्विक और तीर्थंकर प्रकृतिकी प्रकृपणा ओश्रप्रकृपणाका निर्णय करके करना चाहिये।

१ अ-काप्रस्थोः 'पयडीषु **' इति पा**ठः]

मणपज्जवणाणीसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसिकत्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २१६ ॥

सुगमं ।

पमत्तसंजदप्रहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा स्ववा बंधा । सुहुमसांपराइयसंजदद्धाए चरिमसममं गंतूण बंधो वोन्छिज्जिदि । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २१७ ॥

एस्य एदासि पयडीणं मिहणाणमम्गणाए पमत्तसंजद्रपहुडिगुणहाणेसु जघा परूनणा कदा तथा परूनेद्रव्या । णविर एस्य सन्त्रसिधि-णउंसयनेद्रपञ्चया अवणेदन्त्रा, अप्पसत्य-नेदीद्रह्त्ल्यण मणपन्ननणाणाणुप्पत्तीदो । पमतपञ्चएसु आहारदुगमवणेदन्त्रं, मणपञ्चनणाणस्य आहारसिशस्त्रगीदएण सह निरोहादो । पुरिसनेदस्स सोदओ वंधो । एनमण्णो नि निसेसो जिद अस्थि सो संभरिय नत्तन्त्रो ।

णिद्दा-पयलाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २१८ ॥

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २१६ ॥

यह सूत्र सुगम है।

प्रमत्तसंयतसे लेकर सुक्ष्मसाम्परायिक उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । सूक्ष्म-साम्परायिकशुद्धिसंयतकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध न्युन्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २१७ ॥

यहां इन प्रकृतियाँकी मतिक्षानमार्गणार्म प्रमत्तसंयतादिक गुणस्थानोंमें जैसे प्रकृतणा की गई है वंसे प्रकृतणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि यहां सर्वेच ऋषित्र कीर नर्षुक्तकेय प्रत्यांकों कम करना चाहिये, क्योंकि, अम्रास्त वेदाय युक्त जीवोंके मन-पर्ययक्षानकी उत्पाले नहीं होती। प्रमत्तसंयत गुणस्थान सम्बन्धी प्रत्ययोंमें आहारक-दिकको कम करना चाहिये, क्योंकि, मन-पर्ययक्षानका आहारशरिदिकके उद्यक्ते साथ विरोध है। पुरुष्वेदका स्वोदय बन्ध होता है। इसी प्रकार अन्य भी यदि भेद है तो उसको स्मरण कर कहना चाहिये

निद्रा और प्रचलाका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ २१८ ॥

सुपर्ष ।

पमत्तासंजदपहुि जान अपुज्वकरणपरहुउवसमा स्वा बंधा। अपुज्वकरणद्वाए संसेज्जिदिमं भागं गंतूण बंधो नोन्छिजिदि । एदे बंधा, अनुसेसा अबंधा ॥ २१९ ॥

एदं पि सुगमं, ओधन्मि बुत्तत्थतादो ।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २२० ॥

सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव स्त्रीणकसायवीयरायछदुमत्था बंधा। एदे बंधा, अवंधा णित्य ॥ २२१ ॥

सुगममेदं ।

सेसमोघं जाव तित्थयरे ति । णवरि पमत्तसंजदप्पहुडि ति भाणिदव्वं ॥ २२२ ॥

एदं पि सुगमं ।

यह सूत्र सुगब है।

प्रमत्तसंयतसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपग्रमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरण-कालके संख्यातवें भाग जाकर बन्ध न्युन्छित्र होता है। ये बन्धक हैं, ग्रेष अबन्धक हैं ॥२९॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, ओघमें इसका अर्थ कहा जा सुका है।

सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २२० ॥

यह सूत्र सुगम है।

प्रमत्तरायतसे लेका क्षीणकवायनीतराय छन्मस्य तक बन्धक हैं। । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं।। २२१॥

यह सुत्र सुगम है।

शेष प्ररूपणा तीर्थेकर प्रकृति तक ओषके समान है। विशेष इतमा है कि 'प्रमक्त-संयतसे टेकर 'ऐसा कहना चाहिये॥ २२२॥

यह सूत्र भी सुगम है।

केवल्रणाणीसु सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥२२३॥ सुगर्ग ।

सजोगिकेवली बंधा । सजोगिकेवलिअद्धाएं वरिमसमयं गंतूण बंधो वोन्छिजदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २२४ ॥

एदस्स बंधो पुन्तं वोन्छिज्जिदि, उदओ पन्छा वोन्छिज्जिदि; सजोगि-अजोगिचरिम-समएसु बंधोदयवोच्छेदुवर्लभादो । वंधो सोदय-परोदओ, अद्धवोदयतादो । णिरंतरो, पिट-बन्खपयडीए बंधाभावादो । सन्चमणजोगो असन्चमेससणजोगो सन्चविजोगो असन्च-मोसनिचिजोगो ओरालियकायजोगो ओरालियमिस्सकायजोगो कम्मइयकायजोगो ति सत्त पदस्स बंधपन्चया । वंधो अगइसंजुतो, एत्थ गइबंधेण विरुद्धबंधादो । मणुसा सामी, अण्णत्य केवलीणमभावादो । बंधदाणं णित्य, एक्किन्हि गुणहाणे अद्धाणविरोहादो । अजोगिचरिमसमए वंधो वोन्छिज्जिदि । सादि-अद्धवो वंधो, अद्धवर्षधितादो ।

केवलज्ञानियोंमें सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २२३ ॥ यह सूत्र सुगम है ।

सयोगकेवरी बन्धक हैं। स्योगकेवरिकारके अन्तिम समयको जाकर बन्ध न्युज्ज्ज्ञि होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं॥ २२४॥

इसका बन्ध पूर्वमें ग्युच्छिक होता है, उदय पश्चात ग्युच्छिक होता है; क्योंकि, सबोगकेवली और अयोगकेवली ग्रुणस्थानोंके मित्रत समयोंमें कासे उसके बन्ध और उदयका ग्युच्छेद पाया जाता है। वन्ध उसका स्वोदय-परीदय होता है, क्योंकि, वह अञ्चले सूची प्रकृति है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वह प्रतिपक्ष मफलके बन्धका अमाव है। सायमनोयोग, असत्य मुशावचनयोग, औदारिकः काययोग, असत्य-मुशावचनयोग, औदारिकः काययोग, असत्य-मुशावचनयोग, और कामणकाययोग, य सात इसके बन्धप्रत्यय हैं। बन्ध पातिबन्ध रहित होता है, क्योंकि, यह निर्मेशकाययोग क्यांकि, क्यांकि, क्यांकि, क्यांकि, क्यांकि, क्यांकि, क्यांकि अध्यांकि विरोध है। अयोगकेवलीक अस्तिम समयमें बन्ध च्युच्छिक होता है। सादि व अध्या बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्यावन्यी है। सादि व अध्याव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्यावन्यी है।

१ प्रतिषु 'सजीगक्ष्मकी वधादु 'इति पाठः । २ प्रतिषु 'अत्थाण ' इति पाठः ।

संजमाणुवादेण संजदेसु मणपज्जवणाणिभंगो ॥ २२५ ॥

जवा मणपञ्जवणाणसगणाए परुवणा करा तथा एत्य कायच्या । णवरि पञ्चयादि-विसेसी जाणिय वत्तच्या । एत्य विसेसपदुष्पायणहमुत्तरसुत्तं भणदि —

णवरि विसेसी सादावेदणीयस्म को बंधो को अबंधो ? ॥ २२६ ॥

सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवली वंधा । सजोगिकेवलि अद्धाए चरिमसमयं गंतृण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २२७ ॥

सुगममेदं ।

सामाइय-छेदोबद्वावणसुद्धिसंजदेसु पंचेणाणावरणीय-सादावेद-णीय-स्टोभसंजलण-जसिकिति-उच्चागोद-पंचेतराइयाणं को वंधो को अबंधो ? ॥ २२८ ॥

संयममार्गणानुसार संयत जीवोंमें मनःपर्ययज्ञानियोंके समान प्रकृपणा है ॥ २२५॥

जिस प्रकार मनःपर्ययक्षानमार्गणामें प्रकृषणा की गई है, उसी प्रकार यहां करना चाहिये। विशेष इतना है कि प्रस्ययादिक भेदको जानकर कहना चाहिये। यहां विशेषना कराठानेके लिये उत्तर सत्र कहते हैं—

विशेषता इतनी है कि सातावेदनीयका कीन बन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥२२६॥ यह सुब सुगम है ।

प्रमत्तसंयतसे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं। सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध ब्युच्छित्र होता है। ये बन्धक हैं, शेष अयन्धक हैं।। २२७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

सामायिक-छेदोपस्थापनगुर्धितसंयतोमं पांच ज्ञानावरणीय, सातावेदनीय, संज्वलनलोम, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २२८॥ सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिउवसमा खवा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णरिथ ॥ २२९ ॥

एदार्सि पयडीणमेत्य धंषीद्यवीच्छेदाभावादो ' उदयादे। किं पुब्वं पच्छा वा धंषो वीच्छिण्णो ' ति विचारो णत्थि । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसिकिति-उच्चामोद-पंचंतराइयाणं सोदओ वंषो, एत्य युवोदयत्तादो । सादावेदणीय-छोभसंजलणाणं सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । सादावेदणीय-जसिकतीणं पमत्तसंजदिम्म सांतरो वंषो, पडिवक्खपयडि-वंयुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, तदभावादो । सेसाणं पयडीणं वंषो सम्बत्य णिरंतरो, अप्यद्संजदेसु वंयुवरमादो । पच्चया सुगमा, ओधपच्चण्हिंतो विसेमाभावादो । एदार्सि सम्बत्य पर्यडीणं पमत्तसंजदप्दुढि जाव अपुव्यकरणद्वारा छमतमागी ति वंषो देवगइसंजुतो । उवरि अगइसंजुतो, तत्थ गईणं वंथाभावादो । मणुसां सामी, अण्यत्य संजदाभावादो । वंषद्वाणं

यह सूत्र सुगम है।

प्रमत्तसंयतसे ठेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अवन्धक नहीं हैं।। २२९ ॥

यहां इन प्रकृतियोंक बन्ध और उदयका ध्युच्छेद न होनेसे 'उदयसे क्या पृष्ठीमें या प्रश्नान् वन्ध व्युच्छित्र होता है 'यह विचार नहीं है। पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यात्रकीरिं, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका स्वोदय वन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनका ध्रुव उदय है। सातावेदनीय और संज्ञ्जनकोक्ताक स्वोदय-परोद्द्र्य कन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनका ध्रुव उदय है। सातावेदनीय और यराक्रांतिका प्रमत्तत्तेत्र गुणस्थानमें सान्तर वन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका कन्ध पाया जाता है। ऊपर निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका अभाव है। होप प्रकृतियोंका वन्ध सर्वत्र निरन्तर है, क्योंकि, विवक्षित संयतोंमें इनके सम्भविद्यामका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओध्यस्ययोंसे यहां कोई भेद नहीं है। इन सब प्रकृतियोंका वन्ध प्रमत्तसंयतसे लेकर अपूर्वकरणकलेक छह सन्तम माग कहेवातिसे संयुक्त होता है। उत्पर अगितसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां गितियोंके वन्धका अभाव है। मुख्य स्वासी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें संयतोंका अभाव है। मुख्य स्वासी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें संयतोंका अभाव है। मुख्य स्वासी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें संयतोंका अभाव है।

१ प्रतिषु ' मणुसाउव ' इति पाठः ।

सुगमं, सुत्तुदिहत्तादो । बंधवोच्छेदो णात्थि, उवरि वि बंधुवलंभादो 'अबंधा मात्थि 'ति सुसारो वा । चोइसण्णं धुवबंधीणं बंघो तिविहो, धुवाभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्धवो, अद्धवषंधित्तादो ।

सेसं मणपज्जवणाणिभंगो ॥ २३० ॥

जहां मणपञ्जवणाणीस सेसपयडीणं परूवणा कदा तहा एत्थ वि कायव्या । को वि विसेसी अरिथ', णवुंसयवेदाहारदुगपच्चयाणं तत्थासंताणमत्थित्थत्तदंसणादी'।

णिहा-पयलाणं पुच्वं वंधो वोच्छिण्णो । उदयवोच्छेदो णत्थि, सुहमसांपराइय-जहा-क्खादसंजदेसु वि तद्वदयदंसणादो । वंधो सोदय-परोदओ, अद्धवोदयत्तादो । णिरंतरा, धुव-**षंधितादो ।** पञ्चया सुगमा, ओघपञ्चएहिंतो विसेसाभावादो । देवगइसंजुत्तो, गत्तंतरस्स बैधाभावादो । मणसा सामी, अण्णत्य संजमाभावादो । पमत्तसंजदपद्दि जाव अपुच्वकरणो

बम्धाध्वान सुगम है, क्योंकि, वह सूत्रमें निर्दिए है। वन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर भी बन्ध पाया जाता है: अथवा 'अवन्धक नहीं है ' इस सुत्रस भी वन्धव्युच्छेदका अभाव सिख है। चौदह भुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध तीन प्रकार होता है, क्योंकि, भुव बन्धका भभाव है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्वय बन्ध होता है, क्योंकि, व अध्वयनधी हैं।

शेष प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मनःपर्ययज्ञानियोंके समान है ॥ २३० ॥

जिस प्रकार मनःपर्ययज्ञानियोंमें शेष प्रकृतियोंकी प्ररूपणा की है उसी प्रकार वहां भी करना चाहिये। यहां कुछ विशेषता भी है, क्योंकि, नपुंसकवेद और आहारिक्रिके मत्यय. जो मनःपर्यवज्ञानियोंमें नहीं थे, यहां देखे जाते हैं।

निद्रा और प्रचलाका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है। उनका उदयव्युच्छेद नहीं है. क्योंकि. सक्मसाम्परायिक और यथास्यातसंयतोंमें भी उनका उदय देखा जाता है। बच्च स्वाहय-परोदय होता है, क्योंकि, व अधुवोदयी हैं। जिरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, भ्रव-बन्बी हैं। प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, आध्यत्ययोंसे कोई भेद नहीं है। देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, संयतोंमें अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है। मनुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें संयमका अभाव है। प्रमत्तसंयतसे लेकर अपूर्वकरण तक बन्धाध्वान है। अपूर्व-

र अ-आप्रलोः 'को विसेसो अध्य गध्य', काप्रती 'को वि विसेसो स्राध्य गश्चि ' इति पाठः ।

२ प्रतिष्र ' तथासंताण ' इति पाठ. | ३ काप्रतावत्र ' वंशी सीदय-परोदओ ' इ**लविकः पाठः ।**

४ मतिषु ' गम्भंतरसा ' इति पाठः ।

ति वंश्वद्वाणं । अयुज्यकरणदाए सत्तममागयरिमसमए वंशे वेश्व्य्य्यदि । कधमेदं णव्यदे ? कुत्ताविरुद्धावरियववणादो । तिविद्दो' वंथो, धुवामावादो ।

एवं चेव पुरिसवेदस्स वत्तव्यं । णवि अद्धाणमणियद्विअद्धाए संखेज्जा भागा ति वत्तव्यं । देवगइ-अगइसंजुत्ती । दुविहा वंषा, अद्भववंधितादो ।

कोषसंजठणस्स ठोमसंजठणमंगो । णवरि अद्धाणमणियट्टिअद्धाए संखेजा भागा ति । एवं माण-मायासंजठणाणं पि वत्तव्वं । णवरि कोषयंपवोच्छिण्णुवरिमद्धाए संखेज्जाभागे गंतूण माणबंषद्धाणं समप्पदिं । संसद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण मायवंषद्धाणं समप्पदिं ति वत्तव्वं ।

इस्स-रदि-भय-दुर्गुछाणं चंधोदया समं वोच्छिण्णा, अपुष्वकरणद्धाए चरिमसमए तदभावदंसणादो। वंधो सोदय-परोदओ, अद्धवोदयत्तादो। इस्स रदीणं वंथो पमत्तिम्म सांतरा।

करणकालके सप्तम भागके अन्तिम समयमें बन्ध व्युव्छिन्न होता है।

शंका - यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — सूत्रसे अविरुद्ध आचायाँके वचनसे वह जाना जाता है। उनका तीन प्रकारका वन्ध होता है, क्योंकि, धव वन्धका अभाव है।

इसी प्रकार ही पुरुषवेदके भी कहना चाहिये। विशेषता यह है कि बन्धाध्यान अनिवृत्तिकरणकालका संख्यात बहुभाग है, ऐसा कहना चाहिये। देवगतिसंयुक्त और अगतिसंयुक्त बन्ध होता है। दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रयरन्धी है।

संज्यलनकोधकी प्रक्षणा संज्यलनलोधके समान है। विशेष इतना है कि बण्धा-ध्वान अनिवृत्तिकरणकालका संस्थातबहुमाग है। इसी प्रकार संज्यलन मान और मायाके भी कहना चाहिये। विशेषता यह है कि संज्यलनकोधके बण्डले व्युल्लिज होनेके उपरिम कालका संख्यात बहुमाग विताकर मानयन्धाप्यान समान होता है। शेल कालके संक्यात बहुमाग ब्राकर मायावन्धाप्यान समान होता है, ऐसा कहना चाहिये।

हास्य, रति, मय और जुगुप्साका बन्ध व उदय दोनों सायमें व्युव्धिक होते हैं, क्योंकि, अपूर्वकरणकालके अन्तिम समयमें उनका अभाव देखा जाता है । बक्ध उनका स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, वे अधुवोदयी प्रकृतियां हैं। हास्य और रतिका बन्ध प्रमत्त-

१ प्रतिषु ' विविद्धों ' इति पाठः । २ प्रतिषु ' समप्पवि ' इति पाठः । ३ व्य-कामस्योः ' समप्पवि ' इति पाठः ।

उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । भय-दुगुंछणं सव्वत्थ णिरंतरो, धुवबंधितादो । पच्चया सुगमा, ओघपण्चएहिंतो विसेसाभावादो । देवगदसंजुत्तो अगइसंजुत्तो वि, अपुच्च-करणद्धाए चरिमसत्तमभागे गईए बंधाभावादो । मणुसा सामी । पमतसंजदप्पहुढि जाव अपुच्च-करणो ति बंधद्धाणं । अपुच्चकरणचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि । भय-दुगुंछाणं तिविद्दो बंधो, धुवबंधितादो । सेसाणं सादि-अद्भुतो, तन्त्रिवरीयबंधादो ।

देवाउअस्स पुव्यावरकालेमु बंधोदयवीच्छेदपरिक्खा णरिध, उदयाभावादो । परोदओ बंधो, साभावियादो । णिरंतरो, अंतोमुहुतेण विणा बंधुवरमाभावादो । पञ्चया सुगमा । देवगङ्संजुत्तो । मणुसा चेव सामी । पमतः अध्यमतसंजदा बंधदाणं । अध्यमतदाए संखेञ्जदिमं भागं गंतृण बंधो बोच्छिज्जदि । सादि-अदुबे। बंधो, अदुवयंधितादो ।

संपिद्धे देवगइसहगयाणं सत्तावीसपयडीणं भण्णमाणे पुत्वावरकालेसु वंधोदयवीन्छेद-पित्क्खा जाणिय कायस्या । देवगइ-वेडन्थियुरागणं वंधो परे।दएण, साभावियादा । समचउ-रससंद्राण-पसत्यविद्धायगङ्गसुस्सराण सोदय-परोदओ, संजदेसु पडित्रक्खपयडीणं पि उदय-

संयत गुणस्थानमें सान्तर होता है। अयर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष मृक्तित्योंके बन्धका अभाव है। भय और जुगुन्साका संबंव निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, बे धुववन्धी हैं। प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, बोप्यमन्ययोंके कोई विदोपता नहीं है। देवपातिसंगुक और अगतिसंगुक भी बन्ध होता है, क्योंकि, अगुवेकरणकान्त्रक अनिस्त सप्तम भागमें गतिक बन्धका अभाव हो जाता है। मगुन्य स्वामी हैं। प्रमन्तसंयतसे लेकर अपूर्वकरण तक बन्धाध्वान है। अपूर्वकरणके अनिस समयमें बन्ध द्युव्हिज होता है। क्या कार्कावन्य होता है। अपूर्वकरण तक बन्धाध्वान है। अपूर्वकरणके अनिस समयमें बन्ध द्युव्हिज होता है। अप अपित्रोंका साम अपित्रोंका साम कार्यक्रमा होता है। अप्त प्रकृतियोंका सामित्र व अथुव बन्ध होता है। क्योंका वेत्र उनसे विपर्तत (अथुव) क्रथ्यवाली हैं।

देवायुके पूर्वापर काळमावी बन्ध व उदयके ब्युच्छेदकाँ परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहां उसका उदयाभाव है। परादेय बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है। तिरत्नर वन्ध होता है, क्योंकि, अक्ष्में हुने विवा उसके बन्धियामका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं। देवगतिसंयुक्त कथा होता है। मुख्य ही स्वमानी हैं। प्रमुक्त और अप्रमुक्त संयत बन्धायान हैं। अग्रमकाल्येक संस्थातवे आगु जाकर बन्ध ब्युच्छिन्न होता है। स्यादि व अधुव बाध होता है, क्योंकि, वह अधुवक्ष होता है। स्यादि व अधुव बाध होता है, क्योंकि, वह अधुवक्ष होता है।

भव देवगतिके साथ रहनेवाळी [परभविक नामकर्मकी] सत्तार्रस म्हातियोक्ती मरुपणा करते समय पूर्वापर काळोंमें वन्ध व उदयके खुच्छेदकी परीक्षा जानकर करना चाहिये । देवगतिद्विक और बंकियिकद्विकका बन्ध परोदयसे होता है, क्योंकि, पेसा स्वमाव है । समस्त्रप्रसंस्थान, प्रशास्त्रीवहायो-गति और सुस्तरका स्नोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, संवतीमें रनसी दंसणादो । अत्रसेसाणं पयडीणं वंघो सोद्भा, धुनोदयत्तादो । धिर-सुभाणं पमत्तसंजदिमः वंधो सांतरो, पिर्वचस्वपथिकंधुनरुंमादो । उत्रति णिरंतरो, तद्भावादो । अवसेसाणं पयडीणं वंधो णिरंतरो, एर्थ धुनवंधितादो । पञ्चया सुगमा । सञ्जासि पयडीणं वंधो देनगद्दसंजुतो । मणुसा सामीओ । वंधदाणं वंधविणदृष्टाणं च सुगमं । धुनवंधीणं वंधो तिविहो । अवसेसाणं सादि-अद्ववो ।

असार्गिदणीय-अरित्-सोगः अधिर-असुह-अजसिकतीणमेगद्दाणियाणं सांतरबंधीणमोष-पण्चयाणं देवगद्दसंजुत्ताणं मणुससामियाणं बंधद्धाणितरिह्याणं पमत्तसंजर्मम् बोष्डिण्णबंधाणं बंधेण सादि-अद्धुवाणं बंधो सोदओ परोदओ सोदर्य-परोदओ वे त्ति जाणिय परूबेदच्चो । आहारदुगः तित्थयराणं वि जाणिय वत्तन्त्रं ।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादा-वेदणीय-चदुसंजुलज-पुरिसवेद-हरस-रिद-भय-दुगुंछा-देवगइ-पंचिंदिय-

प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका भी उदय देखा जाता है। रोप प्रकृतियोंका बन्ध खोदय होता है, क्योंकि, वे ध्रुवेदयी हैं। दियर और शुभका बन्ध प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें सान्तर होता है, क्योंकि, व ध्रुवेदयी हैं। दियर और शुभका बन्ध प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें सान्तर होता है, क्योंकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वन्ध पाया जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध तिरन्तर होता है, क्योंकि, यहां वे ध्रुववन्धी हैं। प्रत्यय सुगम हैं। सब प्रकृतियोंका बन्ध देवाति सेयुक्त होता है। हनक बन्धके स्वामी मनुष्य हैं। वन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्यान सुगम हैं। ध्रुववन्धी प्रकृतियोंका बन्ध सादि ब अध्य वहीता है। रोप प्रकृतियोंका बन्ध सादि ब अध्य वहीता है।

असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति, इन एकस्थानिक, सान्तर बन्धवाली, ओघ प्रत्ययांसे युक्त, देवगतिसंयुक्त, मनुष्यस्वामिक, बन्धाष्वानसे रहित, प्रमत्तसंपत गुणस्थानमावी बन्धवृष्टछेदसे सहित, तथा बन्धकी अपेक्षा सादि व अभुव प्रकृतियाँका बन्ध स्वेदय, पराद्व अथवा स्वेदय पराद्व हैं: इसकी जानकर प्रस्पा करना चाहिये। आहारद्विक और तींधेंकर प्रकृतिकी भी प्रस्पणा जानकर करना चाहिये।

परिहारगुद्धिसंयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रिविक, तैजस

१ अ माप्रस्थोः 'सोदयो ', काप्रती 'सोदओ ' इति पाठः ।

जादि-वेजिवय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचजरससंद्राण-वेजिब्बयसरीर-अंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवाणुपुव्वि-अगुरुवलहुअ-जवघाद-परघादु-स्सास-पसत्थविद्यायगइ-तस-बादर-पज्जत-पत्तेपसरीर-थिर-सुइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसिकति-णिमिण-तित्थयरुव्यागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ २३१ ॥

सुगमं ।

पमत्त-अपमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णित्य ॥२३२॥

उदयादो बंधो पुत्रं पन्छा वा बोच्छिज्जिद ति एत्य विचारा णिष्य, षदासिं वंधवोच्छिदाभावादो च । देवगङ् देवगङ्भाकोग्गाणुपुन्ति-वंधवेचगुरु-तित्थयराणं परोद्दशे बंधो, एदासिं बंधोद्याणमन्कमयुत्तिविरोहादो । णिष्टा-पयला-सादावेदणीय-चदुर्भजलण-इस्स-रिट्-भय-दुगुंछा-समचउरससंठाण-पसत्यविहायगङ्-सुस्सराणं सोदय-परोद्दशे बंधो, एदासिं पिष्ठवन्खपर्यडाणं पि उदयदंसणादो । अवसेसाणं पर्यडीणं सोद्दशे बंधो, एत्य एदासि पर्यडीणं पुनादयनुनर्लमादो ।

व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैकिथिकशरीरांगोषांग, वर्ण, गन्य, रस, स्पर्ध, देवातु-पूर्वी, अगुरुञ्छ, उपवात, परवात, उच्छ्वास, प्रशस्तविद्दायोगति, त्रस, बादर, पर्योप्त, अत्वेकश्वरीर, स्विर, शुभ, सुमग, सुस्वर, आंदेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थिकर, उच्चगोन्न और पांच अन्तराय, इनका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ २३१ ॥

यह सूत्र सुगम है।

प्रमत्त और अप्रमत्त संयत बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २३२ ॥

उदयसे बन्ध पूर्वेम या प्रश्नान व्युच्छित्र होता है, यह विचार यहां नहीं है, क्योंकि, इनके बन्धपुट्छद्रका अमाव है, तथा उदय युक्त म्हातियोंक उदयव्युच्छेद्रका अमाव है। देवगति देवगतियायाजुपूर्वी, विक्रियकिक्कि और तीर्यकर, इनका परादय बन्ध होता है, क्योंकि, इन म्हात्योंके बन्ध और उदयके एक साथ अस्तितका विरोध है। तिद्रा, प्रचला, सातवेदनीय, चार संज्यलन, हास्य, रिते, अय, बुग्लुस्का, समज्जुरक्षसंख्यान, मशस्तिविद्योंकी से सुस्दरका स्वेदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनके प्रतिपक्ष मक्तितेवांको अपराद्य स्वयंक्त स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उद्योंकि, उद्यों

सादाबेदणीय-हस्स-(दि-थिर-सुम-जसिक्तीणं पमत्तसंजदामि बंघी साँतरें। उतिर णिरंतरें, पिडवक्सपयडीणं वंधामावादे। अवसेसाणं पयडीणं बंघो णिरंतरें, अंतोसुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादे। पञ्चया सुगमा, ओघपञ्चएहिंतो विसेसामावादे। । णविर हस्य-णर्दुसर्यवेदपञ्चया णात्य, अप्यसत्यवेदोद्दल्लाणं परिहारसुद्धिसंजमामावादे। । आहारदुगपचया वि णात्य, परिहारसुद्धिसंजमण आहारदुगोदयविरोहादे। तित्ययरपादमूले द्वियाणं गयसेदेहम्णं आणाकणिहदासंजमबहल्तादिआहारुद्दवणकारणविरिद्धिदाणमाहारसरीरोवादाणासंमवादो वा ।

देवगद्दसंजुत्तो वंधो, एत्थण्णगृदंधाभावादो । मणुसा सामी, अण्णत्य संजमामावादो । वंधद्वाणं सुगर्म । वंधवोच्छेदो णत्यि, 'अवंधा णत्यि ' ति सुत्तणिदेसादो । धुववंधीणं बंधीं तिविहो, धुवाभावादो । अवसेसाणं सादि-अदवो, अद्धववंधितादो ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अधिर-असुह-अजसिकितिणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २३३ ॥

सातावेदनीय, हास्य, रित, स्थिर, शुभ और यशकीर्तिका प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है। उपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंके, नद्दां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वन्ध अभाव है। श्रेप प्रकृतियोंको वन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, नदां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वन्ध अभाव है। श्रेप्य सुगम हैं, स्योंकि, ओषप्रत्ययंगेंकों में में नहीं है। विशेष दतना है कि स्रांविद और नपुंककेद प्रस्यप नहीं हैं, क्योंकि, अप्रशास्तवेदोंदय पुक जीवोंके परिहारशृद्धिसंयमका अभाव है। आहारकदिक प्रत्यय भी नहीं है, क्योंकि, परिहारशुद्धिसंयमका अभाव है। आहारकदिक प्रत्यय भी नहीं है, क्योंकि, परिहारशुद्धिसंयमके साथ आहारकदिककी उत्पत्तिका विरोध है; अथवा तीर्थकरके पादमूलमें स्थित, सन्देह रहिन, तथा आहाकिनिष्ठता अर्थान् आनववचनमें सन्देहजनित शिथका और असंयमवहुळताति कर आहारकरिकी उत्पत्तिके कारणोंसे रिहेत परिहारशिखळा और असंयमवहुळताति कर आहारशरीरकी उत्पत्तिके कारणोंसे रिहेत परिहारशृद्धिसंयतीके आहारकररीरकी उत्पत्ति असंसय है।

देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है, स्योंकि, यहां अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है। मतुष्य स्वामी हैं, स्योंकि, अन्य गतियोंमें संवयका अभाव है। बन्धाच्यान सुगम है। बन्धानुरुखेद नहीं है, क्योंकि अबन्धक नहीं हैं। देवा सुबमें कहा गया है। हनमें धुबबन्धी प्रकृतियोंका वन्ध तीन प्रकारका होता है, क्योंकि, उनके धुख बन्धका अभाव है। होचं. प्रकृतियोंका सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुबबन्धी हैं।

असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति नामकर्मका कौल बन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ २३२ ॥

१ आ काप्रस्रोः ' मूरुद्वियःणं ' इति पाठः ।

२ अ-आपत्योः ' बहुलावादि ', ' का समझोः बहुलालादि ' इति पाठः ।

सुगमं ।

पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा,अवसेसा अबंधा ॥ २३४ ॥

भसादोबदणीय-अरदि-सोगाणमेत्थ वंषवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदो णियः, उतिर तदुदयवोच्छेदुवर्दभादो । अधिर-असुमाणं पि एवं चेव वत्तस्त्रं, पमत सजोगीसु वंधोदय-वोच्छेद्दैसणादो । अप्रसिक्तीए पुत्वसुदओ पच्छा वंधो बोच्छिज्जिदि, पमतासंजदसम्मादिद्दीसु वंधोदयवोच्छेददंसणादो । अधिर-असुद्राणं सोदओ, अजसिक्तिशि परोदओ, सेसाणं वंधो सोदय-परोदओ । सांतरे। वंधो, एदासिभगसमरण वि वंधुवरमदंसणादो । इत्थि-णवुंसयवेदाहार-दुगविरिहेदोचपच्चया एत्थ वत्तच्वा । देवगइ [-संजुतो] वंधो । मणुसा सामी । वंधदाणं णत्थि, एगगुणद्राणस्थि तदसंभवादो । पमत्तसंजदचिमसमए वंधो वोच्छिज्जिदि । सादि-अदुवे। वंधो, अद्धवंधितादो ।

देवाउअस्स को बंधो को अबंधो १॥ २३५ ॥

ब्रह् सूत्र सुगम है।

प्रमत्तसंयत बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, क्षेष अवन्धक हैं।। २३४॥

क्रसाताबेदनीय, अरति और शोकका यहां बन्ध्ययुख्छेद ही है उद्यय्युच्छेद नहीं है। क्यांक्षि, ऊपर उनका उदय्युच्छेद पाया जाता है। अस्थिर और अग्रुभके भी इसी प्रकार कहना चाहिये, क्योंक, प्रमत्त और स्वयोगकेवळी गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका खुच्छेद देखा जाता है। अयदाक्षीतिका पूर्वम उदय और प्रधान, बन्ध जाता है। अयदाक्षीतिका पूर्वम उदय और प्रधान, बन्ध और अद्यक्ता खुच्छेद देखा जाता है। अयदाक्षीतिका पूर्वम उपल्डिक स्वयं और उदयका सुच्छेद देखा जाता है। अस्थिर और अग्रुभका स्वोद्य, अयदाक्षीतिका परोद्य, तथा शेष प्रकृतियोक्ता बन्ध स्वादय परोद्य होता है। सन्दित्य का होता है, क्यांकि, हन प्रकृतियोक्ता एक समयक्षे में बन्धिस्थाम देखा जाता है। क्षीवद, नयुंसकेद और आहारकृद्धिकास एक समयक्षे भी बन्धिस्थाम देखा जाता है। क्षीवद, नयुंसकेद और आहारकृद्धिकास रहित यहां ओध्ययय कहना चाहिये। देवगतिसंकुक वन्ध होता है। मनुष्य स्वामी हैं। क्षाध्यान नहीं है, व्यांकि, एक गुणस्थानमें उसकी सम्भावना नहीं है। प्रमन्तसंयस युगस्थान के अन्तिम समयमें बन्ध ज्युच्छक्त होता है। सादि व अध्रव बन्ध होता है, क्योंकि, व सञ्चवन्धी प्रकृतियां हैं।

देवायुका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ २३५ ॥

६ मतिषु ' गुणहानाणिन्ह ' इति पाठः ।

सुगमं ।

पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा बंधा। अप्पमत्तसंजदद्वाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जिद । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा॥२३६॥

उदयादो बंघो पुन्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो ति विचारो णित्थ, संजदेसु देवाउश्वस्स उदयाभावादो । परोदओ बंधो, बंघोदयाणमनकमञ्जतिविरोहादो । णिरंतरो, अंतोग्रहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो । णवरि आहारदुगित्य-णबुंसयवेदपच्चया णित्थ । देवगइसंज्ञतो, मणुसा सामीओ, अवगयबंधद्धाणो, अप्पमत्तद्धाए संखेज्जे भागे गंतृण वोच्छिण्णवंधो । सादि-अद्धवो ।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगणामाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ २३७ ॥

सुगमं ।

अपमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥२३८॥

यह सूत्र सुगम है।

प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत वन्धक हैं। अप्रमत्तसंयतकारुका संख्यात **बहुमांग** जाकर बन्ध व्यक्लिक होता है। ये बन्धक हैं. शेष अबन्धक हैं ॥ २३६॥

उदयसे बन्ध पूर्वमें या प्रकात न्युञ्छिल होता है, यह विचार यहां नहीं है, क्योंकि, संयत जीवोंमें देवायुक उदयका अभाव है। परांदय बन्ध होता है, क्योंकि, उसके बन्ध और उदयके एक साथ रहनेका विरोध है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्वाहुक्ति विना उसके बन्धविश्वामका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओध्यारव्योंसे कोई विरोपता नहीं है। विरोप इतना है कि आहारकैद्विक, स्विद और नपुंसकवेद प्रत्यव नहीं हैं। देवगति संयुक्त बन्ध होता है। मानुष्य स्वामी हैं। बन्धाप्वान स्वत्ये जातां जाता है। अप्रमत्तकालके संक्यात वहुभाग जाकर बन्ध ब्युञ्जिल होता है। सादि व अभुव बन्ध होता है।

आहारकशरीर और आहारकशरीरांगापांग नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ?॥ २३७॥

यह सूत्र सुगम है।

अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं॥ २३८॥

एदार्सि देवाउअमेगो । णवरि चंघदाणं णस्यि, एक्कम्हि गुणहाणे अद्धाणासमवादो । चंघचोज्डेदो णस्यि, उत्तरि (१ वंघुवठंमादो ।

सुद्धमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-जसिकति-उचागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २३९॥

सुगमं ।

सुहुमसांपराइयउवसमा स्ववा बंधा। एदे बंधा, अवंधा णित्य।। २४०।।

एदा. अंधोदयवाच्छेदाभावादो उदयादो वंबा पुष्तं पच्छा वा वोच्छिण्णो ति ण परिक्खा कीरदे । सादावेदणीयस्स वंधा सोदय-परादशा, अणुदए वि बंधितराहा-भावादो । णिरंतरा सन्वपपडीणं वंधो, एत्ध गुणडाणेषु वंधुवरमाभावादो । ण एगसमयमच्छिय सुदसुहुमसांपराइएहि वियहिचारो, सुहुममांपराइयगुणडाणाम्म नि वियमणारो । ओरास्टिय-

इन दोनों प्रकृतियोंकी प्ररूपणा देवायुके समान है। विदेश इतना है कि यन्धाध्यान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्यानकी सम्भावना नहीं है। यन्धम्युच्छेद नहीं है. क्योंकि, ऊपर भी बन्ध पाया जाता है।

सक्ष्मसाम्पराधिकशुद्धिसंयतींमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, यशकीति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कोन चन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ २३९॥

यह सूत्र सुगम है।

सक्ससाम्परायिक उपशमक और क्षपक बन्धक हैं। ये वन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २४० ॥

इन प्रकृतियोंके बन्ध व उत्यक्षे व्युच्छितका असाव होनेसे उत्यसे बन्ध पूर्वसे व्युच्छित्र होता है या पक्षात्, यह परीक्षा यहां नहीं की जानी है। सातावेदमीयका बन्ध स्वोदय-परोत्य होता है, वर्षोक, उत्यक्षेत्र होता है। स्वातावेदमीयका वन्ध स्वोदय-परोत्य होता है, क्योंक, इत गुणस्थातमें बन्धियक्षासका स्वात्य है। इन सब प्रकृतियाँका निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, इत गुणस्थातमें बन्धियक्षासका स्वात्य है। यहां प्रकृत प्रात्य हुए सूक्ष्मसाम्परायिक संयतांसे स्वात्य होता है, क्योंकि, चेह्मसाम्परायिक संयतांसे स्वात्य होता, यह भी नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि, चेह्मसाम्परायिक गुणस्थातमें प्रकृति होता, यह भी नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि, चेहमसाम्परायिक गुणस्थातमें ऐसा विशेषण दिया गया है। औदारिक काययोग, छोम कथाय, आर मनोयोग और बार

कायजोग-स्त्रेककसाय-चटुमण-विजोगा ति दस पञ्चया । अगइसंद्वतो षेषो, एट्स चउगइ-बंधाभावादो । मणुसा सामी, अण्णत्य सुहुमसांपराइयाणमभावादो । वंधदाणं प्रत्यि, सुहुम-सांपरायप्यहुष्टि ति सुते अणुवदिहत्तादो । वंधत्रोज्छेदो णत्थि, 'अवंधा णत्थि 'ति वयणादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचतराइयाणं तिविद्दो वंधो, धुवामावादो । सेसाणं सादि-अबुदो ।

जहाक्खादिवहारसुद्धिसंजदेसु सादावेदणीयस्त को वंधो को अवंधो ? ॥ २४१ ॥

सुगर्म ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्या स्त्रीणकसायवीयरायछदुमत्या सजोगिकेवळी वंधा । सजोगिकेवळिअद्धाए चरिमसममं गंतूण [बंधो] वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २४२ ॥

स्गममेदं, केवलणामग्गणापरूवणाए समाणतादे। ।

वचनयोगा, ये दश प्रत्यय हैं। गतिसंयोगासे रहित बन्ध होता है, क्याँकि, यहां चारों गतियाँके बन्धका अभाव है। मजुष्य स्वामी हैं, क्याँकि, अन्य गतियाँमें स्हमसाम्परायिक संवतींका अभाव है। बन्धाध्वान नहीं है, क्याँकि, 'सहमसाम्परायिक आदि ' ऐसा सुत्रमें निर्देश नहीं किया गया है। बन्धाध्वान नहीं है, क्याँकि, 'अवंधक नहीं है 'ऐसा सुत्रका बचन है। पांच झानावरणीय, चार दशेनावरणीय और पांच अन्तराय, इनका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्याँकि, उनके छुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियाँका साहि व अभ्व बन्ध होता है, क्याँकि, उनके छुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियाँका साहि व अभ्व बन्ध होता है।

यथाल्यातविहारग्रुद्धिसंयतोंमें सातावेदनीयका कीन वन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ २४१ ॥

यह सुत्र सुगम है।

उपशान्तकषाय बीतराग छद्मस्य, क्षीणकषाय बीतराग छद्मस्य और सयोगकेवठी बन्धक हैं। सयोगकेविकालके अन्तिम समयको जाकर [बन्ध] ब्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, श्रेष अवन्धक हैं॥ २४२॥

यह सूत्र सुगम है, वर्योकि, केवलबानमार्गणाकी प्रक्रपणासे इसकी समानता है।

र मतिप्र ' सजोशिकालि ' इति पाठः ।

संजदासंजदेषु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-अट्टकसाय पुरिसवेद-इस्स-रिद्सोग-भय-दुगुंछ-देवाउ-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-चण्ण-गंध रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविद्दायगइ-तस-बादर-पञ्जत-पत्तेयसरीरथिराथिर-सुद्दासुद्द-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसिकति-अजसिकतिणिमिण-तित्थयरुव्चागोद-पंचंतराइयाणं को वंधो को अवंधो ?
॥ २४३॥

सगमं ।

. संजदासंजदा वंधा । एदे वंधा, अवंधा णत्यि ॥ २४४ ॥

उदयादो पुन्नं पच्छा वा वंधो बोच्छिणी ति एत्थ विचारे। णत्थि, बंधवेच्छिदा-भावादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउकक-अगुरुभरुद्धअचउक्क-थिराथिर-सुहासुह-सुमगोदेज्ज-असिकति-णिमिण-पंचेतराइयाणं सोदओ

संयतासंयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, आठ क्षाय, पुरुषवेद, हास्य, रित, श्रोक, भय, खुगुप्सा, देवायु, देवगित, पंचेन्द्रियजाति, वैकिथिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैकिथिक,शरीरांगायांग, वर्ण, गन्ध, रस, देवगित्रायोग्यावुपूर्वी, अगुरूठ्यु, उपचात, परचात, उच्छ्नास, प्रशस्तविह्योगिति, जस, षादर, पर्यात, प्रत्येक,शरीर, स्थिर, अस्थिर, ग्रुस, अशुभ, सुमग, सुस्यर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कीन सन्धक और कीन असन्धक है ? ॥ २४३ ॥

यह सूत्र सुगम है।

संयतासंयत बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २४४ ॥

इन मक्तियोंका बन्ध उदयसे पूर्वमें या पश्चात् ब्युच्छिन्न होना है, यह विचार यहां नहीं है, क्योंकि, उनके बन्धव्युच्छेदका अभाव है। पांच झानावरण, बार दर्शनावरण, पंचेत्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुळ्यु आदिक चार, स्थिर, झरिखर, ग्रुप्त, अग्रुप्त, सुभग, आदेय, यहाकीर्ति, निर्माण और पांच अन्सरायका स्थोक्य षंषो, एरष धुवोदयञ्चवरंभादो । देवाउ देवगइ-वेउन्वियसरीर-अंगोवंग-देवगइराओग्गाणुप्रणी-अजसिकति-तिरथयराणं परोदओ वंषो, वंषोदयाणमण्णोण्णविरोहादो । णिदा-पयख्य-सादासाद-अङ्कसाय-पुरिसवेद-इस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-समवउरससंठाण-पसत्यविहायगइ-सुस्सरु-चागोदाणं वंधा सोदय-परोदओ, उदयदा वि वंधविरोहामावादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-अइकसाय-पुरिसवेद-अय-दुगुंछा-देवाउ-देवगइ-पैचि-दियजादि-वेउञ्जिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउन्वियसरीरअंगोवंग-वण्णचउकक-देवगइपाओगगाणुपुन्वी-अगुरुवरुद्धव उठक-पतःथविद्वायगद्द-तसचउकक-सुमग-सुस्सरदिज्ज -णिमिण-तिस्ययरुच्चागोद-पंचतराइपाणं वंघो गिरंतरो, एगसमएण चंघुवरमामावादो। सादासाद-इस्स-दि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुद्दासुद-जसकिति-अजसिकतीणं वंघो सांतरो, एगसमएणं चंघु-वस्मदंसणादो। पच्चया सुममा, ओघाणु-जद्दश्चर्णहिंतो भेदामावादो। सव्वासि पयडीणं देवगद्द-संजुत्ती चंघो, अण्णगईणं चंघाभावादो। दुगद्देसच्वद्दणों सामी, अण्णत्य तिसिममावादो। वंघद्वाणं णविंथ, एक्कगुणद्दाणं तदसंसवादो। अथवा अस्थि, पज्जविद्वणयावरुक्णादो।

पांच हानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, आठ कपाय, पुरुषवेद, अय. जुगुप्सा, देवापु, देवगति, पंचिन्ट्रिय ज्ञाति, विकिथिक, तेज्ञस व कार्मण शारीर, समचतुरक्रसंस्थान, वैकिथिकरारीरांगोपांग. वर्णादिक चार, देवगतिप्रयोग्यायुर्खी, अगुरुल्छ, आदिक चार, प्रशस्तिविद्यायोग्यातुर्खी, अगुरुल्छ, आदिक चार, प्रशस्तिविद्यायोग्याते, प्रसादिक चार, सुभग. सुस्वर, अविय, निर्मण, तीर्थकर, उच्चगोन और पांच अन्तराय, इनका बन्ध निरम्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धियामका अभाव है। साता च असाता वेदनीय, हास्य, रित, अराति, होकि, स्थिर, अस्थिर, गुज, अगुअ, यशकीतिं और अयदाकीतिंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनका बन्धविक्षाम देखा जाता है। प्रत्यय सुपत हैं, क्योंकि, सामान्य अणुवतिक प्रत्ययोंके केदा केदी हैं। सब प्रकृतियोंका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके बन्धका वहां अभाव है। दो गतियोंके देशवती स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंके उनका अभाव है। वन्धारचान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानों उसकी सभावतानी संस्थी

१ मतिषु ' देसव्यगहणे ' इति पाठः ।

पंपकाण्डेदो णस्यि, 'अर्चचा णस्यि 'ति वयणादो । धुववंघीणं तिविहो वंघी, धुवामायादो । सेसार्च सादि-अद्धरो, अद्धववंषितादो ।

असंजदेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारस-कसाय-पुरिसवेद-हरस-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओराल्चिय-वेउन्त्रिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-संद्राण-ओराल्चिय-वेउन्त्रिय-बेग्जिय-विज्जिरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुन्ती-अगुरुअल्ड्डअ-उवघाद-परघाद-वस्सास-पसत्यविद्यायगइ-तस-बादर-पञ्जत-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुद्दा-सुद्द-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसिकित्त-अजसिकित्त-णिमिणुच्चागोद-पंचेतराइयाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ २४५ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइडिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिडी बंधा । एदे बंधा, अबंधा गरिथ ॥ २४६ ॥

बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ' अबन्धक नहीं हैं ' ऐसा स्वर्म कहा गया है। ध्रुवबन्धी मक्रतियोंका तीन प्रकारका वन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुव बन्धका अभाव है। होष मक्रतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, व अध्यवनधी हैं।

असंवर्तेर्गे पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बासह कसाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, ब्रोक्त, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, देवगति, पंचिन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्षियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचत्तुरस्वसंस्थान, औदारिक व वैक्षियिक अंगोपांग, वज्रवैभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी, अनुस्रुष्ठेश, उपपात, परधात, उच्छ्वास, प्रशस्तीवहायोगित, त्रस, बादर, पर्याप्त, पर्वेक्श्यार, स्थिर, अख्यिर, अस्वर, अगुप्त, सुस्य, सुस्य, सुस्य, अद्य, व्यक्तीर्ति, अयुग्रकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कीन बन्धक और कीन अवस्थक है ? ॥ २४५ ॥

यह सुत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अवन्धक नहीं हैं॥ २४६॥ पत्थादहल्लाणं षंधोदयवा च्छदामावादा उदयादा वंघा कि पुत्रं पच्छा वा वा चिच्छणो वि विचारा णित्य । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-चण्णचउकक-अगुरुअठहुब-ियायिर-खुहासुह-िणिमण-पंचेतराइयाणं सोदओ वंघो, ध्रुवादयचादो । देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुउच्चीणं परोदओ वंघो, वंघोदयाणं परोप्परिवादो । शिदा-पयठा-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रिद-अरिद-सीम-भय-दुर्गुझ-समचउरसंक्रण-पसत्थिहायगइ-सुग्ग-सुस्सर-आदेज-असिकित-अञ्चरिकित च्यायादाणं वंघो सोदय-परोदओ उह्यहा वि वंगुवर्लमादो । मणुसगइ-मणुसगइराओग्गाणुउच्ची-ओराठिय-सरीर-ओराठियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं विच्छादिष्ट-सासणसम्मदिद्वीसु सोदय-परोदओ स्वय-परो-क्योर ह्याया विच्यायाच्याय

यहां उदय युक्त प्रकृतियोंके बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव होनेसे उदयकी अपेक्षा बन्ध क्या पूर्वमें और या पश्चात् व्युव्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है। पांच ब्रानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तेजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगरुलच स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशभ, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है. क्योंकि, ये भ्रवोदयी प्रकृतियां हैं। देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग और वेवगतिप्रायोग्यानपूर्वीका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनके बन्ध और उदयके परस्पर बिरोध है। निद्या, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, बारह कवाय, परुववेद, हास्य, रति, भरति, शोक, भय, जुगुल्सा, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय. यशकीर्ति. अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है. क्योंकि. दोनों प्रकारसे भी इनका बन्ध पाया जाता है। मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, भीदारिकदारीर, औदारिकदारीरांगोपांग और वजर्पभसंहननका मिथ्याहाष्ट्र और सासाहनसम्बन्हार गणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वहां दोनों प्रकारसे भी इनका बन्ध पाया जाता है। सम्यग्मिध्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें परोद्यय बन्ध होता है. क्योंकि. अपने उदयके साथ अपने बन्धका वहां विरोध देखा जाता है। पंचेरितय जाति, श्रम, शहर और पर्याप्तका बन्ध मिथ्याहरियोंमें स्वोदय परोदय होता है। ऊपर इनका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, विकलेन्द्रिय, स्थावर, सुक्स और अपर्याप्तकोंमें सासादनादिक गुणस्थानोंका अभाव है । उपघात, परघात, उच्छवास और प्रत्येकशरीरका मिथ्याहरि, सासाहनसम्यग्दरि और असंयतसम्यग्दरि गणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय W. W. Yo.

ंपरोदको । सम्मामिन्छाइडिन्हि सोदको चेव, अपञ्जतदाए तस्सामावादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-वारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचन्नक-अगुरुअल्डुअ-उवचाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरी वंधो, धुववंधितादो । सादासादइस्स-रिद-अरिद सोग-थिराधिर-सुझासुइ-जमिकेति-अजमिकेतीणं वंधो सांतरी, एगासमएण वि
चेषुस्वसुवरुंभादो । देवाव: देवगदायोआगाणुपुच्यी-वज्यसरीर वेजवियसरीरअंगोवंग-समचरससंठाणाणं वंधो मिच्छादिडि-सासणसम्मादिई।सु सांतर-णिरंतरी । वण्णंतरो १ ण, असंखेजवासाजअतिरिक्ख-मणुसिम-च्यादिडि-सासणसम्मादिई।सु सुहतिर्छिस्पयसंख्याणाउएसु च
णेरंतरांचुवरुंभादो । उचरि णिरंतरो, पविवक्तवायवर्धणं वंधाभावादो । प्रसिवेदस्स मिच्छादिक्ष-सामणसम्मादिई।सु सांतर-णिरंतरो । कथं णिरंतरो (पम-सुक्कोरिस्पतिरिक्ख-मणुसंससु
पुरिसवेदस्सव वंधुवरुंभादो । उचरि णिरंतरो, पविवक्तवायवर्धिकं वंधाभावादो । मणुसगइ-मणुस-

कृष्य होता है। सम्यग्मिथ्यादाष्टे गुणस्थानमें उनका स्वोदय ही वन्ध होता है, क्योंकि, अपूर्यान्तकालमें उस गुणस्थानका अभाव है।

पांच हानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कपाय, अय, जुगुश्सा, तेजस व कामेण हारीर, वर्णाविक चार, अगुरुव्यु उपधात, निर्माण और पांच अन्तरायका निरन्तर बच्च होता है, क्योंके, वे घुयवरची है। साना व असाता चेदनीय, हास्य, रति, अरति, होक, स्थित, अस्थित, अस्थित, अस्थित, व्यक्त प्राप्त, प्राप्त, हास्य, अध्या, अध्या, यदाकीर्ति और अयशकीर्तिका वच्च सान्तर होता है, क्याँकि, एक समयसे भी उनका वच्चित्रभाम पाया जाता है। देवगाति, वेवगित्रमायायानु चूर्ची, वैक्रियिकहारीर, वैक्रियिकहारीरांगायां अर समयत्रस्थानका बच्च मिथ्यारिष्ठ और सामवतुरस्वसंस्थानका बच्च मिथ्यारिष्ठ और सामवतुरस्वसंस्थानका बच्च मिथ्यारिष्ठ और सामवतुरस्वसंस्थानका वच्च मिथ्यारिष्ठ सीर सामवतुरस्वसंस्थानका वच्च मिथ्यारिष्ठ

शंका - निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि असंख्यातवर्णयुष्क तियंत्र व मजुष्य मिध्यादृष्टि एवं सासादनसम्बग्धादियोंमें तथा शुभ तीन लेड्यावाले संख्यातवर्णायुष्कोंमें भी उनका निरन्तर क्रिप्र पाया जाता है।

ऊपर अनका निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। पुरुषवेदका मिथ्यादष्टि और सासादनसम्यग्दष्टियोंने सान्तरःनिरन्तर बन्ध होता है।

शंका---निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, पद्म और शुक्ल लेक्यावाले तिर्येच पर्व मतुष्योंमें पुरुषवेदका **ही बन्च** पाया जाता **है**।

ऊपर उसका निरन्तर बन्ध होता है, वयोंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका

गद्दगं औरंगाणुउन्त्रीणं मिच्छादिद्धि-सायणसम्मादिद्वीसु वंधो सांतर-णिरंतरो । कवं णिरंतरो १ ण, आणदादिदेवेसुं णिरंतरवंधुवरुंभादो । उविर णिरंतरो, णिप्पडिवन्सवंधादो । ओरालियस्तरिर-ओरालियसरीरअंगोवंगाणं मिच्छाइद्वीसु सासणसम्मादिद्वीसु च सांतर-णिरंतरो धंधो । कथं णिरंतरो १ ण, देव-णरइएसु णिरंतरवंधुवरुंभादो । उविर णिरंतरो, णिप्पडिवक्खवंधादो । वज्यिस्तर्क्षस्र मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वीसु सांतरे । उविर णिरंतरो, णिप्पडिवक्खवंधादो । पस्तर्यविद्वायगद्द-सुमग-सुस्सरोदे ज्ञुचागोदाणं मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वीसु सांतर-णिरंतरो, असंखे ज्ञवासाउएसु णिरतरवंधुवरुंभादो । उविर णिरंतरो, णिप्पडिवक्खवंधादो । पंचिदियजादि-परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत-पत्तेयसरीराणं बंधो मिच्छाइद्विग्दि सांतर-णिरंतरो,

अभाव है। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्याद्वाष्टि और सासाहन-सम्यग्हियाँमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका -- निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान - नहीं, क्योंकि आनतादिक देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां वह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है।

श्रीदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगोपांगका मिश्यादियों और सासादन-सम्यग्दाध्योंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका-इनका निरम्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि देव और नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है। बजर्पभरंदिहनका मिध्यादि और सासाइनसम्बग्धियोंने साम्तर बन्ध होता है। अपर निरन्तर वन्ध होता है। अपर निरन्तर वन्ध होता है। दे प्रदासने स्वत्य होता है। क्या है। क्या होता होता है। क्या होता

१ प्रतियः ' देवीस ' इति पाठः ।

देव-णरहएसु णिरंतरबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खबंधादो ।

पञ्चया सुगमा, ओषपण्चएहिता विसेसाभावारे । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-श्वसादावेदणीय-शारसक्ताय-अरिद-सोगा-मय-दुगुंछा-पींचिरियजादि-तेजा कम्मइयसिर-वण्ण-ग्रंघ-रस-प्तास-अगुक्वरुद्ध-उक्षयाद-परधाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जन-पत्तेयसिर-अपिर-अपुड-ज्वजसिकिति-णिमिण-पंचेत्रस्रइयाणं मिच्छाइडिन्दि चउगइसंख्रतो । सामणे णिरयगईए विणा तिगइसंख्रत्तो । सम्मामिन्छादिडि-असंजदसम्मादिडीसु देव-मणुसगइसंख्रतो । सारावेदणीय-पुरिसवेद-इस्स-पि-समव-उरससंग्रण-परस्यविद्यायाइ थिर-सुम-सुभ्य-सुस्र- आदेज्ज-जस-कित्तीणं मिच्छादिडि-सांसणसम्मादिडीसु वंशे तिगइसंख्रतो, णिरयगईए अभावादो । सम्मा-मिच्छादिडि-सांसणसम्मादिडीसु वंशे तिगइसंख्रतो, णिरयगईए अभावादो । ओराज्यिसरिर-कोराज्यिसरिरोगेर्वग-वज्वरिसहसंग्रहणणं मिच्छादिडि-सांसणसम्मादिडीसु चंशे तिरिक्स-मणुसगइसंख्रतो । सम्मामिच्छादिडि-असंजदसम्मादिडीसु मणुसगइसंख्रतो । गशुसगई-संख्रतो । स्वामान्द्रस्यादिडि-असंजदसम्मादिडीसु मणुसगइसंख्रतो ।

निरन्तर बन्ध पाया जाता है। ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, फ्योंकि, वहां वह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धले रहित है।

प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओधप्रत्ययोंसे यहां कोई विशेषता नहीं है। पांच झानावर-णीय. छह दर्शनावरणीय, असाता वेदनीय, बारह कपाय, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पंचे-दिवय जाति. तेजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघ, उपधात, परधात. क्रकवास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, अयशकीर्तिः निर्माण और पांच अन्तरायका बन्ध मिथ्यादप्रि गुणस्थानमें चारों गतियोंसे संयुक्त, सामार्थन गणस्थानमें नरकगतिके विना तीन गतियोंसे संयुक्त, तथा सम्यग्मिश्यादाष्टे और असंयतः सम्बद्धि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त होता है। सातावेदनीय, परुषवेद. हास्य. रति. समचतरस्रसंस्थानः प्रशस्तविद्वायोगति, स्थिर, श्री, समग, सस्यर, आदेय और यहाकीर्तिका बन्ध मिध्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोमे तीन गतियोसे संयक्त होता है, क्योंकि, इनके साथ नरकगगतिके बन्धका अभाव है। सम्यग्निध्याहाष्ट्र और असंग्रतसम्बन्हाध गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अरकताति और तिर्थमातिका अभाव है। औदारिकशरीर, भौदारिकशरीरांगोपांग और वज्जवेमसंहननका बन्ध मिथ्यादिष्ठ और सासादनसम्यदिष्ट गुणस्थानोंमें तिर्यमाति और मनन्यगतिसे संयक्त होता है। सम्यग्मिध्यादाष्टि और असंयतसम्यग्द्रष्टि गुणस्थानीमें जनका बन्ध मनव्यगतिसे संयक्त होता है। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानपूर्वीका मनकारतिसे संग्रक बन्ध होता है। देवगति और देवगतिप्रायोग्यानपूर्वीका बन्ध वेउव्यियसरीर-वेउन्वियसरीरअंगोवंगाणं मिन्छाइडीसु दुगइसंखतो, तिरिन्ख-मणुसगईण-ममावादो । सासणसम्मादिडि-सम्मामिन्छादिडि-असंजदसम्मादिडीसु देवगइसंखतो । उच्चा-गोदस्स देव-मणुसगइसंखतो, अण्णत्य तस्सुदयामावादो ।

चउगइमिच्छादिहि-सासणसम्मादिहि-सम्मामिच्छादिहि-असंजदसम्मादिही सामी । वंधद्वाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णत्थि, ' अवंघा णत्थि ' ति वयणादे। । धुववंधीणं मिच्छा-इहीसु चउिवहो वंघो । सासणादीसु तिविहो, धुववंधाभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्भुवो, अद्धवबंधितादो ।

बेट्टाणी ओघं ॥ २४७ ॥

बेडाणपयडीणं जधा म्लोधम्मि परूवणा कदा तथा कायव्वा, विसेसामाषादो ।

एक्कट्ठाणी ओघं ॥ २४८ ॥

सुगममेदं ।

मणुस्साउ-देवाउआणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २४९ ॥

देवगतिसं संयुक्त होता है। वैक्रियिकरारीर और वैक्रियिकरारीरांगोपांगका बन्छ प्रिथ्या-दृष्टियोंमें दो गतियांस संयुक्त होता है, क्योंकि, उनके साथ तिर्यगगति और मजुष्यगतिके क्ष्मका अभाव है। सासादनसम्यन्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि अंग असंयतसम्यादृष्टि ग्रुण-स्थानोंमें देवगतिसे संयुक्त उनका बच्च होता है। उच्चगोप्रका बच्च देवगति और मजुष्य-गतिसे संयुक्त होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें उसके उदयका अभाव है।

चारों गतियों के मिण्यादिष्ट, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्निभ्यादृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। बन्धाप्वान सुगम है। बन्धायुच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अबन्धक नहीं हैं' ऐसा सुत्रमें कहा गया है। ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध मिण्यादृष्टियों सार्टी मकारका होता है। साराद्वानादिकोंमें तीन मकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह ं ध्रुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अध्रुव होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २४७ ॥

हिस्थानिक मक्रतियोंकी प्ररूपणा जैसे मूलोघमें की गई है उसी प्रकार करना चाहिये, क्योंकि, मूलोघसे यहां कोई विरोषता नहीं है।

एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओषके समान है ॥ २४८ ॥ यह सूत्र सुगम है।

मनुष्यायु और देवायुका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ २४९ ॥

सुममं ।

मिच्छाइटी सासणसम्माइटी असंजदसम्माइटी वंथा। एदे वंथा, अवसेसा अवंथा॥ २५०॥

सुगमं ।

तित्थयरणामस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २५१ ॥

असंजदसम्माइट्टी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥२५२॥ _{सगरं}।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणीणमोघं णेदव्वं जाव तित्ययरे ति ॥ २५३ ॥

तिण्णं जाईणमादाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं चक्खुदंसणीसु परादयक्तुवरुंभादा ओघ-

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादिष्टे, सासादनसम्यान्दिष्टे और असंयतसम्यान्दिष्टे चन्धक हैं। ये चन्धक हैं, श्रेष अवन्धक हैं॥ २५०॥

यह सत्त्र सगम है।

तीर्थंकर नामकर्मका कीन बन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ २५१ ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्यग्दिष्ट बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं॥ २५२॥

यह सूत्र सुगम है।

दर्शनमार्गणानुसार चछुदर्शनी और अचक्कुदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा तीर्थंकर प्रकृति तक ओपके समान जानका चाहिये ॥ २५३ ॥

ग्रंका---तीन जातियां, आताप, स्थावर, स्क्म और साधारण प्रकृतियोंका बाह्यदर्शीवयोंने खूंक्रि परोह्य कथ पाया झाता है, लत एव /जनकी प्रकृषण सोप्रके सकता भिदि ण घडदे ? ण, दप्वडियणयमवर्लमिय हिददेसामासियमुत्तेषु विसेहामानादो । पयडि-चंघदाणगयभेदपद्रपायणहमुत्तरमुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो, सादावेदणीयस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ २५४॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव स्त्रीणकसायवीयरायछदुमत्था वंधा । एदे वंधा, अवंधा णत्थि ॥ २५५ ॥

सुगममेदं ।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ २५६ ॥

सुगमं ।

केवलदंसणीं केवलणाणिभंगो ॥ २५७ ॥

सुगमं ।

है ' यह घटित नहीं होता ?

समाधान—यह कोई दोण नहीं है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन कर स्थित देशामर्शक सुबोंमें विरोधका अभाव है।

मकति । स्थाध्वानगत भेदके प्ररूपणार्थ उत्तर सत्र कहते हैं-

इतनी विशेषता है कि सातावेदनीयका कौन यन्यक और कौन अवन्यक है ? ॥२५४॥ यह सब सगम है ।

यह सूत्र सुगम ह।

मिष्यादृष्टिसे ठेकर श्लीणकषाय वीतराग छद्मस्य तक षन्यक हैं। ये बन्यक हैं, अषन्यक नहीं हैं !! २५५ !!

यह सूत्र सुगम है।

अवधिदर्शनी जीवोंकी प्ररूपणा अवधिज्ञानियोंके समान है ॥ २५६ ॥

थह सूत्र सुगम है। केवटदर्शनियोंकी प्ररूपणा केवटजानियोंके समान है ॥ २५७॥

कारण्यापयाम् प्रकारा कारण्यात्रात्याक समाव ह ।। २५७ यह सत्र सगम है।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सियाण-मसंजदभंगो ॥ २५८ ॥

किण्हेलस्साए ताव उच्चदे — पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-षारस-कसाय-पुरिसंवद-हस्स-रिद-अरिद-सोमा-भय-दुगुंज-सणुसगइ-देवगइ-पेचिंदियजादि-जोरालिय-वेउन्विय-तेजा-कम्मद्वयसीर-समय-उर्ससंठाण-गोरालिय-वेउन्विययसीरंगोवंग-बजिरसद्वसंपडण-वण्णच उक्क-मणुसगइ-देवगइपाओगाणुपुन्वी-अगुरुवलहुअच उक्क-पसत्थविद्दायगइ-तस च उक्क-थिराथिर-मुद्दासुद्व-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसिकित-अजसिकित-णिमिणु-चागोद-पंचतराइयाणि किण्हलेसियन उराणद्वाणजीवेदि वज्झमाणाणि । तत्थुदयादे। वंघो पुन्तं पच्छा वा वोच्छिणणो ति परिक्ताए' असंजदमंगो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वगणचउक्क-अगुरुवलहुअ-थिरा-थिर-सुद्दासुद्द-णिमिण-पंचंतराइयाणं वंघो सोदञ्जो, धुवोदयत्तादो । देवगददुग-वेउन्वियदुगाणं परोदञ्जो, वंघोदयाणं समाणकालउत्तिविरोद्दादो । णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-

लेस्यामार्गणानुसार कृष्णलेस्यावाले, नीठलेस्यावाले और कापोतलेस्यावाले जीवोंकी प्ररूपणा असंयतोंके समान है।। २५८॥

पहले रुणलेश्याके आश्रित प्ररूपणा करते हैं— पांच झानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता विद्नीय, बारत कयाय, पुरुष्य, हास्य, रिह, अपति, रोके, अय, जुगुप्सा, मनुष्यगित, देवगति, पंचेदिन्य जाति, जीदारिक, वैकिथिक, तैनस व कार्मण शरीर, समचनुरस्नसंस्थान, जीदारिक और वैकिथिक रारीरांगोपांग, वस्रपंभसंहनन, वर्णादिक चार, मनुष्यगित और देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुष्य, अर्थिय, प्रशासनिवहायोगित, समादिक चार, स्थिर, अस्थिर, गुप्त, अनुम्त, सुमान, सुस्यर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, ये अरुतियां रुण्णत्यान्यस्यान वार, प्रशासनिव सन्ध पूर्वमें ज्युष्टिक होता है या पक्षान् 'हम अकारकीर्ति परीक्षा यहां असंयत जीवींक समान है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैज्ञस व कामंण शरीर, वर्णांदिक चार, अगुरुकछु, स्थिर, अस्थिर, ग्रुम, अगुम, निर्माण और पांच अन्तरायका बन्ध स्रोहय होता है, क्योंकि, व ध्रुवोदयी हैं।देवातिहिक और वैक्षियिकद्विकता परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, सनके बन्ध और उदयके समान काळमें रहनेका विरोध है। निद्रा, मचला, साता व असाता वेदनीय, बारह कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रित, अरति, श्रोक, अस्य,

१ अप्रती ' परिक्खाणं ' इति पाठः ।

188

हस्स-रिद-अरिद-सोग-भय-इगुंछा-समचउरससंठाण-पसत्थविद्यायगद्य-सुगग-सुस्सर-आदेज-जसकित्ति-अजसिकति-उच्चागोदाणं सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधुवरुमादो । मणुसगद्दुगोराठियदुग-वज्निसिहसंघडणाणं भिच्छादिडि-सासणसम्मादिडीसु सोदय-परोदओ, उभयहा वि
बंधुवरुमादो । सम्माभिच्छादिडि-असंजदसम्मादिडीसु परोदओ, सोदयवंघाणमेदेसु गुणहाणेसु
अक्कमउत्तिविरोहादो । पंचिदियजादिनस-चादर-पञ्जत्ताणं भिच्छाइडीसु सोदय-परोदओ,
एत्थ पडिवनख्ययडीणं पि उदयसंभवादो । उस्मितिक्यादेसीस वेच, विगर्ळिदिय-धावर्त-सुदुम,
अवज्जतपसु सासणादीणमभावादो । उत्पाद-यराचुर्सास-पेत्यसरीराणं भिच्छादिडि-सासणसम्मादिडीसु सोदय-परोदओ । असंजदसम्मादिडीसु सोदय-परोदओ, छटुरुवीपच्छायदाणमयज्जतकाठे असंजदसम्मादिडीणं परोदयण वंधसंभवादो । सम्माभिच्छाइडीसु सोदओ,
एदेसिमपञ्जतदामावादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-नारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-नण्ण-चउक्क-अगुरुवलह्व-उवघाद-णिमिण-पंचेतराइयाणं वंधी णिरंतरी, धुवबंधितादी । सादासाद-

जुगुष्सा, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्तविद्यायेगाति, सुभग, सुस्वर, आदेष, यदाकीर्ति, अयराकीर्ति और उच्चगोत्रका स्वाद्य परोदय वन्ध होता है, क्येंकि, दोनों प्रकारसे भी इनका वन्ध पाया जाता है। मतुष्यातिद्वक, औदारिकद्विक और वक्कंप्रसंहदनका मिध्यादि और सासादनसम्यादि गुगस्थानों से स्वीद्य परोदय वन्ध होता है, क्येंकि, वहां दोनों प्रकारसे भी वन्ध पाया जाता है। सन्यिमध्यादि और असंवनसम्यादि गुगस्थानों में उन प्रकृतियोंक अपने बन्ध सोता दें, क्योंकि, इन गुगस्थानों में उन प्रकृतियोंक अपने बन्ध सोत उद्यक्त एक साथ रहने का विरोध है। पंजेत्वित जाति, इस यादर और व्योत्तका मिध्यादियों में स्वोदय परोदय वन्ध होता है, क्योंकि, विकले-द्वित स्वीद्वत्य ताति, क्या तादर और व्योत्तका मिध्यादियों में स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, विकले-द्वित्य, स्थावर, स्कृत और अपर्यात्तकों में सासादनादिक गुगस्थानोंका अभाव है। उपधात, परधात, उच्चवास और प्रयोक्तकारीरका मिध्यादि और सासादनसम्यन्दिय गुगस्थानों में स्वोदय परोदय कन्ध होता है, क्योंकि, छठी पृथिबीसे पोछे आपे दुए असंयतसम्यन्दियों में परोदयसे वन्ध होता है, क्योंकि, छठी पृथिबीसे स्था देण संस्वतसम्यन्दियों में परोदयसे वन्ध होता है, क्योंकि, छठी पृथिबीसे स्वोद वन्ध होता है, क्योंकि, उनमें अपर्यात्वाका अभाव है। सम्यग्निध्यादियों में स्वोदय पर्यास का साव है। सम्यग्निध्यादियों में स्वोदय पर्यास का साव है। सम्यग्निध्यादियों में स्वोदय वन्ध होता है, क्योंकि, उनमें अपर्यात्वाका अभाव है।

पांच क्वानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कवाय, भय, जुगुप्सा, तेजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुल्यु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तरायका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, वे धुचवनधी हैं। साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति,

१ प्रतिपु ' वाबरे ' इति पाठः ।

हस्स-रि-जरिद-सोग-ियराथिर-सुद्रासुद्व-लसिकिति-अनसिकितीणं सांतरो, अद्भुवर्षिपतारो । पुरिसवेद-देवमद्दुग-वेउन्वियसरीर-वेउन्वियसरीरअंगोवंग-समचउरससंठाण-वज्जिरसद्द्रसंघ्डण-पस्त्यविद्वायगर्-सुमग-सुस्सर-जादेज्जु-चागोदाणं निच्छादृद्वि-सासणसम्मादिद्वीसु सांतरो । उत्तरि णिरंतरो, णिपडिवनस्वयंधादो । मणुसगद्द-मणुमगद्द्वाणं मणुससुववण्याणं सुक्किरसा-सम्मादिद्वीसु णिरंतरो । कर्ष णिरंतरो १ ण, आरणण्युद्वाणं मणुससुववण्याणं सुक्किरसा-विणासेण किण्हरुसाए रिणदाणमंतीयुद्धतकार्थं णिरंतर्यस्वयत्वसादो । सुक्किरसार (डिदो पम्म-तिज्ञात्वस्ताओ वोल्यि कम्मक्रमेण किण्हरुस्सापरिणदो होल पुक्किरसार्थो । मणुससुक्कित्सार्थो काज-णील्येरसामु परिणामिय पच्छा किण्णदसापद्माण्य परिणमणच्युवनमादो । ज च मणुसगद्व-वंषयाद्वा काज-णील्येरसामु परिणामिय पच्छा किण्णदसापद्माण्य परिणामणच्युवनमादो । जच मणुसगद्व-वंषयाद्वा काज-णील्येरसामुक्तारो थोया, ततो तस्स बहुचुवरुमादो । अथवा गज्जिमसुक्किर्ससा देवी जद्दा क्रिण्णाउओ होद्ग जहण्यसुक्काइणा अपरिणमिय असुद्दितिरुस्साए' णिवददि

शोक, स्थिर, अस्थिर, गुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर वन्ध्र होता है, क्योंकि, वे अध्यवस्थी हैं। पुरुषवेर, देवगतिक्रिक, विकिषिकरारीर, विकिषिकरारीर गोगोगोग, समयतुरुससंस्थान, वजर्षभसंहतन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आद्य और उक्त्योंकिका मिथ्याइष्टि और सासादनसम्प्रदिष्टींमें सान्तर वन्ध्र होता है। उत्तर किल्ला किला है। स्वरूप किला किला है। स्वरूप है। स्वरूप है। स्वरूप किला है। स्वरूप है। स्वरूप किला ह

शंका-निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान —नहीं, क्योंकि मनुष्योंमे उत्पन्न हुए आरण अच्युत देवोंके शुक्कलेश्याके विनाशसे रूप्णलेश्यामें परिणत होनेपर अन्तर्मुहर्त काल तक निरन्तर वन्ध्र पाया जाता है।

र्शका— शुक्कलेक्यामें स्थित जीव पद्म, तेज, कापोत और नील लेक्याओंको लांचकर कैसे दक साथ रूप्णलेक्यामें परिणत हो सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, गृह्रलेश्यासे क्रमशः कापोत और नीळ लेश्यालोंमें परिणमन करके पीछे कृष्णलेश्या पर्यायसे परिणमन स्वीकार किया गया है। और मुख्यातिबन्धककाळ कापोत और नीळ लेश्याके कालसे योश नहीं है, क्योंकि, वह उत्तरी बहुत पाया जाता है। अथवा, मध्यम गुक्ललेश्याताओ देव जिस प्रकार आयुके श्लीण होनेपर ज्ञधन्य ग्रुक्ललेश्याहिकसे परिणमन न करके अग्रुम तीन लेश्यालोंमें गिरता

१ अ-कामस्रोः '-मंतोसुहुषं काल ' इति पाठः । २ अप्रतो ' सुनक्रसेसाणं ' इति पाठः । १ अप्रतो ' अपरिणासिङ असर्गतेलेस्साल ' इति पाठः ।

तद्द्वा सन्त्रे देवा सुरयनस्वणेण विच अणियमेण असुद्दितिलेस्सासु णिवदिति ति गहिदे जुञ्जदे । अण्णे पुण आइरिया किण्णलेस्साए मञ्जसगद्दगुगस्स णितंतरं वंधं णेच्छंति, मणुसगिदि- वंधगद्धाए काउलेस्सावंधगद्धावद्धानस्य । तं ि कुदो हे सुददेवाणं सन्त्रेसि पि काउलेस्साए चेच परिणामन्धुवगमादो । उविर णितंतरो । ओरालियसरीर-अंगोवंगाणं मिच्छाइहिसासणस्मादिद्वीसु सांतर-णितंतरे । वृद्धो हे णेरहप्सु णितंतरं अवलंकमादो । उविर णितंतरो, पडिवनस्वपयडिवंधाभावादो । पंचिदियजादि-परघादुस्सास-तस-नादर-पञ्जत-पतेयसरीराणं मिच्छाइहीसु सांतर-णितंतरे, गेरहएसु णितंतरं चुवलंकमादो । उविर णितंतरे, पडिवनस्वपयडीणं वंधाभावादो ।

पत्रयाणमेाघभंगो । णवरि असंजदसम्माइहिपचएसु वेउव्वियमिस्सपत्रको अवणेदच्चो । ओरालियदून-मणुसगइ-मणुसगइपाओम्गाणुपुर्व्वीणं सम्मामिच्छाइहिम्हि' ओरालियकायजोनिस्थि-

है, उसी प्रकार सब देव मरणक्षणमें ही नियम रहित अगुभ तीन लेहवाओंमें गिरते हैं, ऐसा प्रहण करनेपर उपर्युक्त कथन संगत होता है।

अन्य आचार्य इच्छालेश्यामें मनुष्यगतिद्विकका निरन्तर बन्ध नहीं मानते हैं, क्योंकि, मनुष्यगति बन्धककालसे कापोतलेश्याका बन्धककाल बहुत स्वीकार किया गया है।

शंका - वह भी कैसे ?

समाधान —क्योंकि, सब ही मृत देवोंका कापोतलेक्यामें ही परिणमन स्वीकार किया गया है।

ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होना है। औदारिकदारीर और औदारिकदारीरांगोपांगका मिथ्याइष्टि व सासादनसम्यग्दिष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, नारिकरोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वन्धका अभाव है। पंचेन्द्रिय जाति, परधात, उच्छ्वास, अस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकदारीरका मिथ्याइष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, नारिकयोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है।

प्रत्ययोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । विशेष इतना है कि असंवत-सम्यग्दिष्टिके प्रत्ययोंमें वैकियिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये। औदारिकद्विक, मनुष्यगति और भनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके सम्यग्मिथ्यादिष्ट गुणस्थानमें औदारिक

१ अप्रती ' देवा प्रदयक्खणोण ', आ-काप्रत्योः ' देवाणप्रदयक्खणोण ' इति पाठः । २ प्रतिष ' सम्माभिण्डाहद्वीति ' इति पाठः ।

पुरिसंवेद्पञ्चएहि विणा चाळीसपञ्चया । देवगङ्-देवगङ्गाओग्गाणुपुञ्वी-वेउव्वियसरीर-वेड-व्वियसरीरंगोवंगाणं वेउव्विय-वेउव्वियसिर-वेड-व्वियसिर्सपञ्चया सन्वगुणहाणपञ्चएतु सन्वत्य अवणेदन्या । अोरालियदुग-मणुसगङ्-मणुसगङ्गाश्यापणुपुञ्वीणं असंजदसम्मादिष्डिम्हि चाळीस पञ्चया, वेउव्वियमिस्स-ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मडय-इश्यि-पुरिसनेद्पञ्चयाणमभावादो । वज्जिर-सहंसघडणस्स सम्मामिच्छाइष्डिम्ह चाळीस पञ्चया, ओरालियकायजोगिरिय-पुरिसनेद्पञ्चयाण-मभावादो । असंजदसम्माइष्डिम्ह चाळीस पञ्चया, ओरालिय-अरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकायजोगिरिय-पुरिसनेदपञ्चयाणमभावादो । असंजदसम्माइष्डिम्ह चाळीस पञ्चया, ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकायजोगिरिय-पुरिसनेदपञ्चयाणमभावादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय-वारसकसाय-अरदि-सोग-अय-दुर्गुख-पंचिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवळहुअ-उवचाद-परचाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत-पत्त्रयसरीर-अथिर-अगुरु-अजमिकिति-णिमिण-गंचितराइयाणं मिच्छाइडिम्डि चउ-गृह्संजुत्ती वंघो । सासणे तिगृहसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो । असंजद्सम्माइडि-सम्मा-मिच्छाइडिमु दुगृहसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणमभावादो । सादावेदणीय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-सम्बद्धससंग्रण-पसस्थविद्यायाङ थिर-सम-सुभग-सुस्सर-आदेज-जसकित्तीणं मिच्छाइडि-सासण-

काययोग, खाँवद और पुरुष्वेद प्रत्ययों के विना चालीस प्रत्यय हैं । देवगित, हैवगितिश्रयोग्यानुष्वी विकियकसरीर अंग विकियकसरीरांगोगोग वेकियिक और वैकियिक प्रत्यों को सब गुणस्थानों के प्रत्यों से सवेत कम करना चाहिये । श्रीदारिकिक के पर प्रत्यों को सब गुणस्थानों स्वाप्त कम्मयनस्प्यन्दि गुणस्थानमें बालीस प्रत्यय हैं क्योंकि. वहाँ विकिथिकाम्य श्रीदारिक अदारिक अदारिक अदारिक अदारिक आदारिक स्वाप्त सम्प्राप्त क्यायों का चहाँ क्याय है। चलपिकाम्य स्वाप्त स्वाप्त सम्प्राप्त सम्प्राप्त स्वाप्त सम्प्राप्त सम्प्र सम्प्राप्त सम्प्राप्त सम्प्र सम्प्राप्त सम्प्र सम्प्त सम्प्र सम्य सम्प्र सम्य सम्प्र सम्प्र सम्प्र सम्प्र सम्प्र सम्य सम्प्र सम्य सम्प्र सम्प्र सम्प्र सम्प्र सम्प्र सम्प्र सम्प्र सम्प्र सम्प्र

पांच ज्ञानावरणीय. छह दर्शनावरणीय, आसाना वेदनीय, बारह कथाय, अरित, शोक. अय, जुगुल्सा, पंचेन्द्रय जाति. तजस व कामण शरीर. वर्ण, गण्य. रस, स्पर्ध, अस्मुमल्यु, उपधान, परमान, उर्ज्ज्ञ्वास, चस, वादर, पर्योज, प्रत्येक्तशरीर, अस्थिर, अनुभ, अवशक्तीति, निर्माण और पांच अन्तरायका मिध्यादि गुणस्थानमें वार्त गतियोंसे संयुक वन्ध होता है, क्योंक, वहां क्ष्य होता है, क्योंक, वहां क्षय होता है। सालावन गुणस्थानमें नीन गतियोंसे संयुक्त वन्ध होता है। सालावन वित्यांसे संयुक्त वन्ध होता है। क्योंक, वहां निर्माण, व्यास्त्र क्यांक, अभाव है। साला वेदनांय, पुरुष्यंदर, हास्य, रति, समचुरत्यसंस्थान, प्रश्नस्थानित, स्थिय, सुभ, सुभ्या, पुरुष्यंदर, हास्य, रति, समचुरत्यसंस्थान, प्रश्नस्थानित, स्थिय, सुभ, सुभ्या,

सम्मादिद्वीसु तिगश्संज्ञत्तो, णिरयगर्इए अभावादो । सम्माभिन्छार्द्विः अर्धनदसम्मादिद्वीसु दुनद्व-संज्ञतो, णिरय-तिरिन्खगर्शणमभावादो । मणुसगद्द-गणुसगद्दगोगगाणुपुञ्चीणं सञ्चगुणद्दाणेसु चंदो मणुसगद्दसंज्ञतो । ओराटियसरीर-ओराटियसरिरंगोवंग-वज्जिरसद्दसंघहणाणं भिन्छाद्दि-सासण-सम्मादिद्वीसु तिरिन्ख-मणुमगद्दसंज्ञत्तो । सम्माभिन्छादिद्वि-असंजदसम्माद्दश्चेसु मणुसगद्दसंज्ञतो, अण्णगद्दश्चाभावादो । देवगद्दुगस्स देवगद्दसंज्ञतो । वेडान्वियदुगस्स भिन्छाद्विश्चसु दुगद्द-संज्ञतो, तिरिन्ख-मणुसगर्शणमभावादो । सासणसम्मादिद्व-सम्मागिद्विद्व-सम्माविद्वि-सम्माभिन्छादिद्वि-असंजदसम्मा-दिद्वीसु देवगद्दसंज्ञतो, अण्णगद्वंभेण संज्ञेगविरोद्वादो । उच्चागोदस्स सन्वगुणद्वाणेसु देवगद-मणुसगदसंज्ञतो भंयो।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-इस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुर्गुळा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवठहुव चउकक-पसत्थविद्यायाइ-तस-बादर-पञ्जत-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुद्दासुद्द-सुभग-सस्सर-आंदेज-जसकित्ति-अजसकिति-णिमिण-पंचेतराइय-उच्चागोदाण चउगइमिच्छाइडि-सासण-

हुस्बर, आदेय और यदाकीर्तिका मिध्यादृष्टि और सासादनंसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तीन गित्यांसे संयुक्त बन्ध होता है क्यांकि, वहां तरकातिका अभाव है। सम्यग्निष्णादृष्टि और असंयत्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध हाता है, क्योंकि, वहां तरकाति ग्रें से स्वयुक्त विश्व सिक्त वहां और असंयत्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थानों में मनुष्याति और मनुष्याति ग्रें सायायायायानुष्वीका सब गुणस्थानों में मनुष्याति संयुक्त बन्ध होता है। औदारिकहारीर औदारिकहारीर गोर्वा और मनुष्याति संयुक्त बन्ध होता है। सम्यग्निष्यादृष्टि और असंयत्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थानों में निर्यमाति और मनुष्याति संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अन्य गातियों के वन्धका अभाव है। देवगितिहकका देवगाति संयुक्त वन्ध होता है, क्योंकि, वहां अन्य गातियों के वन्धका अभाव है। वासाद्यत्तसम्यगद्धि, सम्यग्निमध्यादृष्टि और असंयत्तसम्यगद्धि गुणस्थानों में देवगिति संयुक्त वन्ध होता है, क्योंकि, तिर्यगति और मनुष्यातिक वन्धका अभाव है। सासाद्यत्तसम्यगद्धि, सम्यग्निमध्यादृष्टि और असंयत्तसम्यगद्धि गुणस्थानों में देवगिति संयुक्त वन्ध होता है, अन्य गतियोंक वन्धके साथ उसके संयोगका विरोध है। उच्चानिक संय गति होता है, क्योंकि, त्रव्याति संयत्ति संयुक्त वन्ध होता है, अन्य गतियोंक वन्धके साथ उसके संयोगका विरोध है। उच्चानिक संय का सुक्त होता है, विरोध और अस्यत्तस्ति संयुक्त बन्ध होता है।

पांच झानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कवाय, पुरुषवेद, हास्य, रिन, अरित, शोक, अय. जुगुन्सा, पंचेत्न्द्रय जाति, तेजस व कार्मण दारीर, समजतुरस्नसंस्थान, वर्ण. गत्थ, रस, स्पर्श, अगुरुख्यु आदिक चार, प्रशस्तविहायोगिति, अस, बादर. पर्योप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अगुभ, सुभग, सुसंबर, आदेण, यदाकीर्ति, अयराकीर्ति, निर्माण, पांच अन्तराय और उच्चगोनक चार्की गृतियोंक सम्मादिष्टिणो, तिगइसम्मामिन्छाइडि-असंजदसम्मादिष्टिणो सामी, देवगईए अभावादो । मणुसगइ मणुसगइ पाञ्चामाणुपुच्ची-भोरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं चउगइमिच्छाइडि-आसंजदसम्मादिष्टिणो णिरयगइसम्मामिन्छाइडि-असंजदसम्मादिष्टिणो च सामी। देवगइ-वेउव्वयदुगाणं दुगइमिन्छादिङि-सासणसम्मादिङि सम्मामिन्छादिङि-असंजद-सम्मादिष्टिणो च सामी, णिरय-देवगईणमभावादो।

वंश्वद्धाणं सुगमं । वंश्वी ग्लेटो णित्य, ' अवंशा णित्य ' ति वयणादो । धुववंशीणं मिच्छादिद्विम्ह वंशो चउच्विहो। अण्णत्य तिविहो, धुवाभावादो । अद्भुववंशीणं सञ्चत्य सादि-अद्भवो, अणादि-धुवाणमभावादो ।

संपिद्व दुडाणवयडीणं परूवणा कीरदे— अर्णताणुवेधिचउनकस्स बंघोदया समं बोच्छिज्जति, सासणसम्मादिद्विग्दि तदुमयबोच्छेदुबर्लभादो । एवं तिरिक्खगदपाओग्गाणुपुत्त्रीए वि बत्तन्त्रं । असंजदसम्मादिद्विग्दि वि तदुदशे अस्थि ति चे ण, किण्णलेस्साए णिरुद्धाए

सिध्याहाष्ट्रे और सासादनसम्यग्दाए, तथा तीन गतियोंके सम्यग्मिध्यादाष्ट्रे और असंयत-सम्यग्दाप्ट स्वामी हैं, क्योंकि, यहां देवगतिमें इनके वन्धका अभाव है। मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुषूर्वी, औदारिकदारीर, औदारिकदारीरांगोपांग और वज्रपैभसंहननके चारों गतियोंके पिथ्यादाष्ट्रे और सासादनसम्यग्दाष्ट्रे और तरकगितिक सम्यग्मिथ्यादाष्ट्रे व असंयतसम्यग्दाप्ट स्वामी हैं। देवगतिद्विक और वैकियिकाद्विक हे हो गतियोंके मिथ्यादाष्ट्र, सासादनसम्यग्दाप्ट, सम्यग्मिथ्यादाप्टि और असंयतसम्यग्दाप्ट स्वामी हं, क्योंकि, नरक और देव गतिमें इनके वन्धका अभाव है।

बन्धाश्चान सुनाम है। बन्धव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अवन्धक नहीं है' ऐसा सुन्नमें कहा गया है। ध्रुचवन्धी महानियोंका मिथ्यादिए गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका वन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रुच बन्धका अभाव है। अध्रुचवन्धी प्रहातियोंका सर्वत्र सादि च अध्रुच बन्ध होता है, क्योंकि, उनके अनादि और ध्रुच वन्धका अभाव है।

भव द्विस्थान प्रकृतियोकी प्ररूपणा करते हैं — अनन्तानुवन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें ब्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्हिष्ट गुणस्थानमें उन दोनोंका ब्युच्छेद पाया जाता है। इसी प्रकार तिर्यगातिप्रायोग्यानुपूर्वीके भी कहना चाहिये।

गुंका—असंयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानमं भी तो तिर्यग्गतिमायोग्यातुपूर्वीका उदय है, फिर उसका उदयन्युच्छेद सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानमं केसे सम्भव है।

समाधान--देसा नहीं है, क्योंकि, कृष्यलेश्याका अनुषंग होनेपर उसका वहां उदय

तद्धत्यासंभवादो । अवसेसाणं पयडीणं उद्दवन्धेन्द्रो णित्थ, वंधवेष्ड्येहे वेन । सन्वार्षि पयडीणं बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । शीणगिद्धितिय-अणंताणुवंधिचउनक-तिरिक्खाउआणं बंधो णिरंतरो, एगसमएण वंधुवरमाभावादो । इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-उज्जोव-अण्यसत्थिविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमुव-रुमादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइ्शाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो । कुदौ १ सत्तमपुद्धविद्विद्विद्यान-छाद्दि । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगद्द्याओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो । कुदौ १ सत्तमपुद्धविद्विद्विद्यान-छाद्द्विद्व । णिरंतरषंपु-वर्छमादो । पच्चया सुगमा । णवरि तिरिक्खाउअस्स मिच्छाइद्विद्वि वेउन्त्रियमिस्स-कम्मइय-पच्चया अवभेवव्या। सासणसम्मादिद्विन्द्व ओराज्यिमस्स-वेउन्त्रियमिस्स-कम्मइय-पच्चया अवभेवद्वा। योणगिद्धित्य-अर्णताणुवंधिचउक्काणं वेधो चउगइसंज्ञतो । इत्थिवेदस्स तिगइसंज्ञतो, णिरय-देवगईणमभावादो । अप्यसत्थिवद्वायगद्द-दुभग-दुस्सरं-अणादेज-णीचागोदाणं मिच्छाइद्वित्व तिगइसंज्ञतो, देवगईण

असम्भव है ।

शेप प्रकृतियोंका उदययुच्छेद नहीं है, केवल वन्धव्युच्छेद ही है। सब प्रकृतियोंका बन्ध स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, व अध्वोदयी हैं । स्त्यानगृद्धित्रय, अनन्तानुबन्धि-चतुष्क और तिर्यगायुका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धविधामका अभाव है। स्वीवेद, चार संस्थान, चार संहतन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दर्भग, दुस्वर और अनादेयका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम पाया जाता है। तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायाग्यानपूर्वी और नीचगोत्रका बन्ध सान्तर निरन्तर होता है. क्योंकि सप्तम प्रथिवीमें स्थित मिध्यादृष्टि व सासावनसम्बग्दृष्टि नारकियोंमें तथा तेज व वायु कायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंमें भी उनका निरन्तर वन्ध पाया जाता है। प्रत्यय समम हैं। विशेष इतना है कि तिर्यगायुके मिध्यादि गुणस्थानमें वैक्रियिकामिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये। सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिश्र, वैकियिकामिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये। स्त्यानग्रिजय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका वन्ध चारों गतियोंसे संयुक्त होता है। स्विवेदका बन्ध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, उसके साथ नरकगतिके बन्धका अभाव है। चार संस्थान और चार संद्रननका बन्ध दो गतियोंसे संयुक्त होता है,क्योंकि, उनके साथ नरकगति और देवगतिके बन्धका अभाव है। अप्रशस्तिवहायोगाति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका मिथ्यादृष्टियोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, देवगतिका वहां अआव है।

१ अ-आप्रस्तोः 'पुदर्गनिद्धिदः '' इति पाठः । २ अप्रतो 'सस्सर ' इति पाठः ।

षण्यादो । सासणे दुगइसंजुतो, णिरय-देवगईणमभावादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खनः निर्विक्खनः निर्विक्खनः निर्विक्खनः गृहण्योग्याणुपुळी-उज्जीवाणं तिरिक्खनः संभावियादो । थीणगिद्धितियादीणं पयडीणं षंषस्स चउमाद्दमिन्छादृष्ठे-सासणसम्मादिष्ठिणो सामी, अविराहादो । वंधदाणं वंधविणदृष्ठाणं च सुगमं । धुववंषीणं मिन्छादृद्धितं च उच्चिहो वंधो । सासणे दुविहो, अणाइ-धुववंधामावादो । अवसेसाणं षंधो सादि-अद्धवो, अद्धववंधीनादो ।

एगद्वाणपयडीणं परुवणा कीरदे — मिच्छत्तेइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-वडरिंदियजादि-णिरपाणुपुच्वी-आदाब-धावर-सुहुम-अपज्जत-साहारणसरीराणं बंघोदया समं वोच्छिज्जंति, मिच्छाइंडिम्झि चेव तदुभयवोच्छेदुबरुंभादो । अवभेसाणं पयडीणं उदयवोच्छेदो णित्थ, बंधवोच्छेदो चेव । मिच्छत्तस्त वंधो सोदओ । णिरपाउ-णिरपगइ-णिरपगइपाओगगाणुपुर्व्वाणं परोदओ, सोदएणं बंधविरोहादो । अवसेसाणं पयडीणं बंघो सोदय-परोदओ, उभयहा वि अविरुद्धवंधारो । मिच्छत्त-णिरपाउआणं बंघो णिरंतो । अवसेसाणं सांतरे, एगससएण वि बंधुवरमदंसणादो । पच्चया सुगमा । णवरि णिरयाउ-णिरयाइ-णिरयापुपुर्व्वाणं वेउन्विय-

स्नासादनमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होना है, क्योंकि, वहां नरकगति और देवगतिका स्नास है। तिर्यमायु, तिर्यमाति, तिर्यगतिमायोग्यात्पुर्वों और उद्योतका तिर्यमातिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, एसा स्वभाव है। स्थानगृद्धित्रय आदि प्रकृतियोंक क्योंक व्यक्ति मायोगित स्वभाव है। स्थानगृद्धित्रय आदि प्रकृतियोंक कि स्वभाव हो। स्वभाव है। क्योंकि, हममें कोई विरोध नहीं हैं। वन्धाध्वान ओर वन्धविनपुरुथान सुगम हैं। ध्रवत्यी प्रकृतियोंका मिथ्यादिष्ट गुणस्थानमें नो प्रकारका वन्ध होता है, क्योंकि, वहां अनादि और अध्यवस्थी है। स्थानमें दो प्रकारका वन्ध होता है, क्योंकि, वहां अनादि और अध्यवस्थी है। स्वभाव होता है, क्योंकि, वहां अनादि और अध्यवस्थी है।

पकस्थान प्रकृतियाँकी प्रकृत्या करते हैं — मिथ्यान्य. एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, विदित्र्य, विदित्र्य, विदित्र्य, विदित्र्य, विदित्र्य, विदित्र्य, विद्यान्ति क्षांत्र क्षांत्र, विद्यान्ति क्षांत्र क्षांत्र, विद्यान्ति क्षांत्र क्षांत्र, विद्यान्ति क्षांत्र व्यान्ति क्षांत्र व्यान्ति क्षांत्र व्यान्ति क्षांत्र कष्णात्र क्षांत्र क्षांत्र क्षांत्र क्षांत्र कष्णात्र क्षांत्र

वेउव्वियमिस्सः जोरालियमिस्स-कम्माइयपञ्चया णित्य, अपञ्जतकाले एदासिं षंषाभाषादोः ।
एइंदिय-आदाव-मानराणं वेउव्वियकायजोगपञ्चनो अवणेयव्यो । बीइंदिय-तीइंदिय-चर्डारेंदिय-सुद्दुम-अपञ्जत-साहारणाणं वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सपञ्चया अवणेदव्या, देव-फेरइएसु एदासिं भंषामावादो । मिञ्चतस्स चउगइसंजुतो । णवुंसयवेद-हुंडसंद्र्यणाणं तिगइसंजुतो, देवमदीए अमावादो । असंपत्तसेवृद्धसंघरण-अपञ्जताणं दुगइसंजुतो, णिरय-देवगईणमभावादो । णिरयाउ-णिरयदुगाणं णिरयगइसंजुतो । अवसंसाणं पयडीणं तिरिक्खाइसंजुतो बंधो । णिरयाउ-णिरयदुग-बीइंदिय-तीइंदिय-चऽरिंदियजादि-सुदुम-अपज्ञत-साहारणाणं तिरिक्ख-मणुसा साषी । मिञ्चत-जावेव-दुंडसंजण-असंगतसेवृद्धसंघरणाणं चउगइमिञ्चाइडी । पाइदिय-जादाव-यावराणं तिराइमिञ्चाइडी सामी । वंयद्धाणं णिरय, एक्कनिट अद्धाणविरोहादो । षंपचोच्चेदो सगमो । मिञ्चतस्स वंदो चउन्तिहो । अवसंसाणं सादि-अद्धवी, अद्धववंषिताहो ।

मणुसाउत्रस्स मिच्छाइडि-सासणसम्मादिडीसु बंधे। सोदय-परोदओ । असंजदसम्मा-दिडीसु परोदओ । सन्वत्य णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । पच्चया **ओचसिद्धा** ।

नरकगानि और नारकानुपूर्वीके वैकियिक, येकियिकामिश्र, औदारिकामिश्र और कार्मण प्रत्यय नहीं हैं, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनके बन्धका अभाव है। पकेष्ट्रिय, आताप और स्थावरके वैकियिककाययोग प्रत्यय कम करना चाहिये। द्वीप्ट्रिय, जीप्ट्रिय, चतुरिष्ट्रिय सूक्ष, अपर्याप्त और चतुरिष्ट्रिय सूक्ष, अपर्याप्त और चतुरिष्ट्रिय सुक्ष, अपर्याप्त और चतुरिक्षिप्त प्रत्ययोक्तों कम करना चाहिये, क्योंकि, देव और नारकियोंमें इनके बन्धका अभाव है।

मिध्यात्वका वन्ध चाराँ गतियाँसे संयुक्त होता है। मुजुंसकवेद और हुण्डसंस्थातका वन्ध तीन गतियाँसे संयुक्त होता है, क्योंकि, इनके साथ द्वगतिके बन्धका अभाव है। असंग्राप्तरायुपाटिकासंहतन भेर अपर्याप्तका वन्ध वो गतियाँसे संयुक्त होता है, क्योंकि, इनके साथ नरक और देव गतिके वन्धका अभाव है। नारकायु और नरकिहका बन्ध नरकगतिसे संयुक्त होता है। येप प्रकृतियाँका वन्ध तिर्यमातिसे संयुक्त होता है। येप प्रकृतियाँका वन्ध तिर्यमातिसे संयुक्त होता है। येप प्रकृतियाँका वन्ध तिर्यमातिसे संयुक्त होता है। नारकायु, नरकिहक होता है। क्याप्ताप्त स्वाप्तका क्षाप्तकार करियं और सम्याप्त स्वाप्तकार कि तिर्यम के स्वाप्तकार करियं और सम्याप्तकार करियं के सिष्याप्त कि तिर्यम के स्वाप्तकार करियं के स्वाप्तकार करियं के सिष्याप्त कि तिर्यम के स्वाप्तकार करियं के सिष्याप्त के स्वाप्तकार करियं के सिष्याप्त के स्वाप्तकार करियं के सिष्याप्त के स्वाप्तकार करियं के सिष्याप्तकार करियं के सिष्याप्त के सिष्य के सिष्ठ के सिष्य के सिष्

मञ्ज्यायुका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्बन्दृष्टि गुणस्याक्रीमें स्थेत्वव-पराद्य होता है। असंयतसम्बन्धयाँ उतका पराद्य बन्ध होता है। सर्वेष निरस्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविद्यामका बभाव है। प्रत्यय बोधसे सिक्स हैं। इ. इ. ४२. णविर मिन्छाइहिन्द् वेडन्थियमिस्स-कम्मइयपचया, सासणे वेडन्थियमिस्स-कोमालियमिस्स-कम्मइयपच्चया, असंजदसम्मादिहिन्दि ओरालियदुग-वेडन्थिमिस्स-कम्मइय-इत्यि-पुरिसवेदपञ्चया
अवगेदच्या; असुंदितिलेस्सासु मणुसाउभं वंधमाणाणं देवासंजदसम्मादिहीणमणुवलंमादो । ण
च देवेसु पञ्जतणसु असुइतिलेस्साओ अत्थित, भवणवासिय-वाणवेतर-जोदिमप्सु
अपजत्यदेवेसु वेच तासिसुवलंमादो । ण च देवा णरहया वा पञ्जतणामकम्मोदयितित्मिक्समणुसा अपञ्जतयदा संता आउभं यंपित तिरिक्ख-मणुसअवज्जते मोनूण अण्णय्य तब्वंधाणुतसम्बा । मणुसन्दसंजुत्तो । तिगइमिच्छाइहि-सासणसम्मादिहिणो णिरयगइअसंजदसम्मादिहिणो
च सामी । वेधदाणं सुगमं । वेधवोच्छेदो णिथ्य, किण्डलेस्साण वहमाणसंजदासंजदाणमणुवलंमादो । सादि-अद्भवे वंधो, अद्भववंधितादो ।

देवाउश्वस्स सन्दर्थ बंधो परोद्रओ, बंधोदण्सु उदयबंघाणमञ्चेताभावावद्वाणादी । णिरंतरो, अंतोसुदुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो । सन्द्रीसिं पि वेउन्दिय-वेउन्दियसिस्स-ओरालिय-मिस्स-कम्मइयपच्चया सग-सगोघपच्चणिंदतो अवणेयन्दा । देवगद्दसंजुतो । तिरिक्ख-मणुसा

विशेष इतना है कि प्रिथ्यादि गुणस्थानमें वैकियिकामध्य और कार्मण प्रन्ययों को, सासादन गुणस्थानमें वैकियिकामध्य, शेदारिकामध्य और कार्मण प्रत्ययों को, तथा असंयत-स्वयादि गुणस्थानमें शैदारिकामिध्य, शेदारिकामध्य और कार्मण कर्ययों को, तथा असंयत-स्वयादि गुणस्थानमें शैदारिकाहिक, वैकियिकामध्य, कार्मण, कीविद और पुरुपयेद प्रत्ययों के कम करना चाहिय, क्योंकि, अशुभ तीन लेश्याओं में महुष्यायुक्को वाध्येनाव्य देव असंयतसम्यग्दादि पाय नहीं जाते । और देव पर्यान्तकों अशुभ तीन लेश्यायें होती नहीं हैं, क्योंकि अमनवादाती, वानव्यन्तर और ग्रंपीतियी अपयोग्तक देवोंमें हो वे पार्य जाती हैं। नहीं हैं। तथा देव, नार्यक्र अपयोग्त होकर आयुक्को बाधित नहीं हैं, क्योंकि, तियंच और महुष्य अपयोग्तिकों छोड़ कर अन्यत्र असका बन्ध पाया नहीं जाता। महुष्यगतिसे संयुक्त वन्ध होता है। तीन गतियोंके मिध्यादि और सासादनसम्यग्दारि तथा नरकगतिके असंयत सम्यग्दारि मी वामी हैं। वन्धाध्यान प्राप्त है। वन्धाध्यान प्रमुक्त वन्ध होता है, क्योंकि, कृष्णलेश्योमें वर्तमान संयतासंयत पाय नहीं जाते। सादि व अधुव वन्ध होता है, क्योंकि, कृष्णलेश्योम वर्तमान संयतासंयत पाय नहीं जाते। सादि व अधुव वन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुववन्धी है।

देवायुका सर्वत्र परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, बन्ध और उदयके होतेपर क्रमसे उसके उदय और बन्धका अत्यन्तामाख अवस्थित है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्गुहुर्तके विना उसके बन्धविश्रामका अमाव है। सभी जीवोंके वैक्तियक, विकायक मिश्र, औदारिकिमिश्र और कार्मण प्रन्ययोंको अपने अपने ओश्रास्ययोंसेसे कम करना चाहिये। देवगतिसंगुक बन्ध होता है। तिर्यंच और मनुष्य ही स्वामी हैं। बन्धाश्वान

१ अ-आप्रलोः ' असुहा ' इति पाठः ।

चेन सामी । चंपद्वाणं सुगमं । चंधवोच्छेदो णस्यि, उविराम्हि वंशुवलंमादो । सादि-अदुवो, असुवचंपितादो ।

तित्थयरस्स बंधो परोदओ, वंधे उदयविरोहादो। णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरसाभावादो। अ।धपन्चएसु वेजन्विय-वेजन्वियमिस्स-कम्महयपन्चया अवणेदन्वा। देवगहसंजुतो, किण्ण-लेस्सियणेरहएसु तित्थयरवंधाभावेण मणुसगृहसंजुतताभावादो। सामी मणुसा चेव, अण्णत्या-संभवाञ्च। बंधदाणं णत्थि, एक्सिन्ह असंजदसम्मादिष्टिहाणे अद्धाणविरोहादो। बंधवोच्छेदो णत्थि, उवर्ति पि बंधदंसणादो। सादि-अजुवो, अदुवबंधितादो।

एवं चेव णीळळेसाए परुवेदव्व । णवीर तिरिक्खगद्द-तिरिक्खगद्दशाओगगाणुप्रवी-णीचागोदाणं सासणसम्माइडिग्डि सांतरे। बंबी, सत्तमपुढवीसासगसम्माइडिणो मोत्तूणण्णरथेदार्सि सासणेसु णिरंतरबंघाणुवळंभादो । ण च सत्तमपुढवीणीळळेस्सिया सासणसम्माइडिणो अस्थि, तत्थ किण्णळेस्सं मोत्तूणण्णळेस्साभावादो । कथं मिच्छाइडींग णीळळेस्साए णिरंतरो बंघो १ ण,

सुगम है । वन्धन्थुच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर वन्ध पाया जाता है । सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुववन्धी है ।

तीर्थकर प्रकृतिका बन्ध परादय होता है, क्योंकि, बन्धके होनेवर उसके उद्यक्ता विरोध है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयवे उसके बन्धविश्रामका अभाव है। ओधमत्यमाँ बीक्षियक, बीक्षियकिसंध और कार्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये। विचानित्य कन्ध होता है, क्योंकि, उपालक्ष्यावार्ध नारिक्योंमें तीर्थकर प्रकृतिक वन्यका अभाव होनेसे महुप्यातिक संयोगका अभाव है। स्वामी महुप्य ही हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंक छुण्णलेह्या युक्त जीयोंमें उसके बन्धकी सम्भावना नहीं है। बन्धाक्यान नहीं है, क्योंकि, यक असंयतसम्यग्हिष्ट गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है। बन्धाक्यक्य नहीं है, क्योंकि, उपर भी बन्ध देखा जाता है। सादि व अध्वय बन्ध होता है, क्योंकि, बह्व अध्वयन्धि है।

इसी प्रकार ही नील लेहरामें प्रकारणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि तिर्यगातिम तिर्यगातिमायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सासादससम्पन्दिष्ट गुणस्थानमें सान्तर वन्य होता है, क्येंकि, सप्तम पृथिश्रीके सासादनसम्यन्द्रष्टियोंकी छोड़कर अन्यत्र इनका सासादनसम्यन्द्रियोंकी छोड़कर अन्यत्र इनका सासादनसम्यन्द्रियों में निललेहर वन्य पाया नहीं जाता। और सप्तम पृथिवीमें नीललेहरवायाले सासादनसम्यन्द्रियें हैं नहीं, क्योंकि, वहां कृष्णलेहयाको छोड़कर अन्य लेहराओंका अभाव है।

शंका — नीळळेड्यामें मिथ्यादृष्टियोंके उनका निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

१ अ आप्रत्योः ' अण्यद्धाः ' इति पाठः ।

तेउ-नाउकाष्ट्रस्य णीटलेस्सिएसु तिरिन्खगडदुग-णीचागोदाणं णिरंतरबंधुवर्ठमादो । तिष्यपुदर्वीपः णीटलेस्साए वि संभवादो तित्थयर्वधस्य मणुस्सा इव णरङ्या वि सामिणो होति चि किण्ण परु-विज्जदे १ तत्थ हेडिमइंदण णीटलेस्सासिष्टणं तित्थयरसंतकामियमिन्छाइडीणमुववादाभावादो । कुदो १ तत्थ तिस्स पुदर्वीप उनकासाउदसणादो । ण च उनकासाउपसु तित्ययरसंतकामिय-भिन्छाइडीणमुववादो अरिथ, तहोवणसाभावादो । तित्थयरसंतकामियमिच्छाइडीणं णेरङप्सुववज्ज-माणाणं सम्माद्दीणं व काउन्टेस्सं मोत्ण अण्णलेस्साभावादो वा ण णीट-किण्डलेस्साए तित्थयरसंतकामिया अरिथ ।

एवं काउठेस्साए वि वत्तवं । णवीर तिरथपरस्स मणुसा इव णरङ्गा वि सामिणो । मणुस-देवगङ्संजुत्तो बंघो। ओघपन्चएसु एकको वि पन्चओ णावणेयव्वो, वेउव्वियदुगोराठिय-मिस्स-कम्मद्भयप्च्याणं मावादो । ओराठियदुग-मणुसगङ्गुग-वञ्जरिसङ्संघडणाणं असंजद-सम्मादिङ्गिन्द वेउव्वियमिस्स-कम्मङ्गयप्च्या णावणेयव्वा । तिरिक्खगङ्गाओग्गाणुपुन्वीए

समाधान — नहीं, क्योंकि तेज व वायु कायिक नीळळेड्यावाळे जीवॉमें तिर्यग्गति-क्किक और नीवगोत्रका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

श्रंका — नृतीय पृथिवीमें नीठलेड्याकी भी सम्भावना होनेसे तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धके मनुष्योंके समान नारकी भी स्वामी होते हैं, ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान—पेक्स नहीं है, बयोंकि, वहां नीललेस्या युक्त अधस्तन इन्द्रकर्मे तीर्येक्ट प्रकृतिके सत्त्ववाले मिध्यादृष्टियोंकी उत्पत्तिका अभाव है। इसका कारण यह है कि वहां उत्पृत्तिकों उत्कृष्ट आयुवाले जीवोंमें तीर्येक्टरात्तिकार्मिक मिध्यादृष्टियोंका उत्पाद है नहीं, क्योंकि, वेसा उपदेश नहीं है। अथवा नातिकार्यों उत्पन्न होनेवाले तीर्थेक्टरकार्मिक मिध्यादृष्टियोंके समान कापोत लेस्याकों छोड़कर अन्य लेस्यामें कापा होनेसे नील और छुण्ण लेस्यामें तीर्थेक्टरको स्वाचाल जीव नहीं होते।

हसी प्रकार कार्यातलेश्यामें भी कहना खाहिये। विशेषता इतनी है कि तीर्यंकर प्रकृतिके प्रवृत्योंके समान नारकी भी स्वामी हैं। मृतुष्य और देव गतिसे संयुक्त बच्य होना है। ओध्यस्ययोंमेंसे एक भी अस्यर कम नहीं करना चाहिये, क्योंकि, वैकियिकहिक, सेह्मरिक्सिक और कार्मण प्रत्योंका यहां सद्भाव है। औदारिक्कि, मृतुष्यातिहिक और वक्क्षभसंहननके असंयतसम्यर्गिट गुणस्थानमें वैकियिकसिश्र और कार्मण प्रत्योंकि कम नहीं करना चाहिये। निर्यगतिवायोग्यानुपूर्वीका पूर्वमें बच्य और एक्यानु उक्स

र प्रतिषु ' हेडिमइंदिए णीलकेस्सासहर ' बति वादः ।

षंघो पुञ्चसुरओ पच्छा वोच्छिञ्जदि, सासणसम्मादिहि-असंजदसम्मादिहीसु षंघोदयवोच्छेदुव-ठंभादो । अण्णो वि जइ भेदो अत्थि सो वि चिंतिय वत्तव्वो ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिष्यु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादावेदणीय-चउसंजलण पुरिसवेद-इस्स-रिद-भय-दुगुंछा-देवगइ-पंचिं-दियजादि-वेउन्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउन्विय-सरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुन्वी-अगुरुव-लहुव उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविद्यायगइ-तस-बादर-पजत्त-पत्तेय-सरीर-थिर-सुद-सुभग-सुस्सर-आदेजज-जसिकति-णिमिणुच्चागोद-पंचं-तराइयाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ २५९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णस्यि॥ २६०॥

देवगइ-वेउन्वियदुगाणं पुन्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि । अवसेसाणं पयडीण-

म्युच्छित्र होता है, क्योंकि, सासाइनसम्यग्हिए और असंयतसम्यग्हिए गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्घ और उदयका न्युच्छेद पाया जाता है । अन्य भी यदि भेद है तो उसे भी विचारकर कहना चाहिये।

तेज और पद्म लेश्याबाले जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता-वेदनीय, चार संज्वलन, पुरुववेद, हास्य, रित, भय, खुगुप्सा, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैकिथिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैकिथिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुल्ध, उपघात, परधात, उच्छ्वास, प्रशस्तविद्वायोगित, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकश्ररीर, स्थिर, झुभ, सुभग, सुस्वर, आंदेय, यशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कीर बन्धक और कीन अवस्थक है ? ॥ २५९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिष्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक न**हीं हैं** ॥ २६० ॥

देवगतिहिक मार वैकियकदिकका पूर्वमें उदय भार प्रधात बन्ध खुक्किक होता

पुरवादो बंघो पुन्यं पच्छा वा वोच्छिण्णो ति परिक्ता णस्यि, एरथ वंधोदयवोच्छेदाभावादो । पंचणाणावरणीय -चउदंसणावरणीय -पंचिंदियजादि-तेजा-कम्महयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुक्बल्हुब-तस-बादर-पञ्जत-थिर-सुह-णिमण-पंचेतराह्यणं सोदओ वंधो, धुनोदयत्तादो । णिहा पयला-सादावेदणीय-चदुसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रि-भय-दुगुंछा-समचउरससंठाण-पसरथ-विहायगह-सुस्सराणं सन्वयुणद्रणिसु सोदय-परेगदओ वंधो, अनुनोदयत्तादो । देवगह-देवगह-पाओगगाणुपुन्ती-वेजिन्वससरिर-वेजिन्वसरिरअंगोवंगाणं वंधो परेगदओ, सोरप्ण वंधविरोहादो । उन्याद-परवाद-उस्सास-प्रेचसरिराणं मिन्छाइडि-सासणसम्माइडि-असंजदसम्मादिडीणं सोदय-परेग्वा, अपञ्जतकाले उदयाभावादो । रेसेसु वंधो सोदओ, तिसमण्जनद्वाए अभावादो । प्रभा-आदेज-जसाकेतीणं मिन्छाइडिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिडि त्वंचो सोदय-परेगदओ। उन्यिर सोहको चेन, परिवन्छद्वयाभावादो । उन्यागोदस्स मिन्छाइडिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति वंधो सोदय-परेगदओ। उन्यिर सोदयो, प्रडिवनस्वदयाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-छड्सणावरणीय-चदुसंजरुण-भय-दुर्गुछ-देवगइ-वेउव्वियदुग-तेजा--

है। दोप प्रकृतियोंके उदयसे बन्ध पूर्वमं या पश्चान् ब्युच्छिन्न होता है, यह परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहां उनके बन्ध और उदयके ब्यूच्छेदका अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, खार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रिय जाति, नेजस व कामण दारीर, वर्ण, गम्ब, रस, स्पर्दो, अगुरुल्यु, ज्ञम, वादर, पर्यान्त. स्थिर, ग्रुप, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वेदय वन्ध होना है, क्योंकि, य धुवोदयी हैं। निद्रा, प्रचला, साता-वेदनीय, बार संज्वलम, पुरुषेद, हास्य, रित, भय, जुगुप्ता, समयनुरुक्तसंख्यान, प्रश्नस्तिवहायोगित और युस्यका सब ग्रुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय वन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्वादयी हैं। देवार्गत, देवातियायोग्यायुव्ध, वीक्रियकश्चरीर और विक्रियक होता है, क्योंकि, अपने जदयक साथ हनके वण्यका विरोध है। उपधात, परधात, उच्छवास और प्रत्येकशर्रीरका वन्ध मिथ्याविध, साधादनसययहाई और असंवतस्ययहियाँके स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, अपने ज्ञाक अथाय है। श्रेप गुणस्थानोंमें स्वोदय वन्ध होता है, क्योंकि, जनके अथयोग्त-कालका अभाव है। होप गुणस्थानं से स्वोदय वन्ध होता है। उपधात, स्वाद्य वन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिप्रक्ष प्रकृतियोक उदयक्त किया निय्याविधि लेकर असंवत-सम्याविध गुणस्थान तक स्वोदय-परोदय गन्ध होता है। उपप स्वोदय ति वन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिप्रक्ष प्रकृतियोक उदयक्त किया हो। उच्च स्वाद्य होता है। क्यांकि, वहां प्रतिप्रक्ष प्रकृतियोक उदयक्त किया होता है। उपप स्थावत कियाविध होता है। उपप स्थावत कियाविध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिप्रक्ष प्रकृतियांके उदयक्त अभाव है। उच्च होता है, क्योंकि, वहां प्रतिप्रक्ष प्रकृतियांके उदयक्त अभाव है। उच्च होता है, क्योंकि, वहां प्रतिप्रक्ष प्रकृतिक उदयक्त अभाव है। उपप स्थावत कियाविक उपविक्त उदयक्त अभाव है। उपप स्थावत तक स्वोदय-परोदय वन्ध होता है, उपर स्थावय विक्त होता है, क्योंकि, वहां प्रतिप्रक्ष प्रकृतिक उद्यक्त अभाव है। उपप स्थावत विक्त स्वतिक उपविक्त विक्त होता है, क्योंकि, वहां प्रतिप्रक्ष प्रवृत्व विक्त इत्यक्त का होता है। उपर स्थावय होता है, क्योंकि,

पांच श्रानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, चार संस्वलम, भय, जुगुण्सा, देवगति.

कम्महयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवरुहुअ-उवचाद-यरषादुस्सासं-बादर-पञ्जत-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंतरतह्याणं चंधा णिरंतरा, एत्य धुववंधितादे। सादावेदणीय-हस्स-रदि-थिर-सुद्द-जसिकतीणं मिन्छाइडिप्पट्टुडि जाव पमतसंजदा ति बंधो सांतरा। उतिर णिरंतरो, पिडिवक्स-पद्धीणं वेधाभावादे। पंचिंदियजादि-तसणामाणं मिन्छाइडिन्दि वंधो सांतर-णिरंतरो, तिरिक्सेषु सणक्कुमारादिदेवेसु च णिरंतरचंधुवलंमादो। उतिर णिरंतरो, पडिवक्सप्यव्हीणं बंधाभावादो। पुरिसवेदस्स मिन्छाइडि-सासणसम्मादिडीसु सांतरो, एगसमण्ण वि बंधुवरसुवलंमादो। उत्तरि णिरंतरो, पडिवक्सप्यडिवंश्यभावादो।

पच्चया सुगमा, ओषपण्चपरितो विसेसामावारो । णवरि देवगर्-चेउन्वियदुगाणं भिच्छार्राड-सासणसम्मादिर्द्वासु ओरालियमिस्स-चेउन्वियदुग-कम्मह्यकायजागपण्चया अव-णेयन्त्रा, दव-णरर्गम्स अपञ्जतितिसन्त-मणुसेसु च एदासि भंधामावारो । सम्मामिण्छार्द्वहिन्ह चेउन्वियकायजागपण्चयो, असंजदसम्मादिर्द्विन्हि चेउन्वियदुगपण्चयो अवणेदन्त्रो । सिम्छा-इर्डि-सासणसम्माइर्द्वासु सन्वपयद्योणं पि ओरालियमिस्सपण्चयो अवणेयन्त्रो, तिरिक्ख-सणुस-

वैकियिकडिक. तेजस व कामंण दारीर. वर्ण. गन्ध, रस. स्पर्श, अगुरुल्यु, उपवात, परघात, उच्ल्युस, वादर, प्यांत, प्रयोक्तारीर, निर्माण और पांच अन्तरायका बच्ध निरन्तर, उच्ल्युस, वादर, प्यांत, प्रयोक्तारीर, निर्माण और पांच अन्तरायका बच्ध निरन्तर होता है, क्यांकि, यहां ये भ्रुषवन्धी हैं। सातावेदनीय, हास्य रति. स्थिर, द्याम और यशकीर्तिका मिध्यारिख, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियों क बन्धका अभाव है। पंचित्रय निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियों के बन्धका अभाव है। पंचित्रय ज्ञाति क्षेत्र कर्माक, स्थानिक, व्यांतिक, व्यांतिक, व्यांतिक, विश्वं और सातावह है। उपर निरन्तर वन्ध्य होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष मकृतियोंके बन्धका अभाव है। पुरुषवेदका निरम्दाख और सातावहनसम्परिक ग्रुप्तिका क्षेत्र क्षेत्र के स्थानिक, विश्वं क्षेत्र क्

प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, आंधप्रत्ययोंसे कोई विशेषना नहीं है। भेद इतना है कि देवनातिक्रिक और वैकिथिकद्विकके मिध्याहिष्ट और सासादमसम्यग्डिष्ट गुणस्थानोंमें औदा-रिकमिश्र, वैकिथिकद्विक और कामेण काययोग प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, देव नारकियों तथा अपर्यात तिर्वेच व मनुष्योंमें भी इनके वण्यका अभाव है। सम्य-सम्यग्डिष्ट गुणस्थानमें वैकिथिक काययोग प्रत्यय तथा असंयतसम्यग्डिष्ट गुणस्थानमें वैकिथिक काययोग प्रत्यय तथा असंयतसम्यग्डिष्ट ग्रीर सासादन-सम्यग्डिष्ट ग्रीर सामा करना चाहिये।

विच्छाइडि-सासणसम्मादिडीणमपञ्जत्तकाले सुदृलेस्साणमभावादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादांवरणीय-चउसंजळण-पुरिसवेद-इस्स-र्धदे भय-द्वुगुंज-पंचिंदिय-तेजा-कम्मइय-समचउरससंठाण-वण्णचउकक-अगुरुवळहुअचउकक-पस्तय-विद्यायादि-थिर-सुभग-सुस्सर-आरेज्ज-जसिकिति-णिमिण-पंचेतराहवाणं भिरुळाहिट-सावणसम्मा-दिशीयुं वंशो तिगहसंजुजो, णिरवर्गकृष अभावादो । सम्मामिन्छ्ळाहिट-असंजदसम्मादिशीयु द्वग्रहसंजुजो, णिरय-तिरिक्सगर्हणमभावादो । उवर्षिक् देवगदसंजुजो, तत्थण्णगर्हणं चंपा-मावादो । देवगह-वेउव्वियदुगाणं देवगहसंजुजो, अण्णगर्हाद वंपविरोहादो । उच्चागोदस्स मिन्छ्याहि-सासणसम्मादिटि-सम्मामिच्छादिहि-असंजदसम्मादिशीयुं देव-मणुसगहसंजुजो । उवरि देवगाइसंजुजो चंथो ।

सन्वासि पयडीणं तिगृहमिन्छादिङ्गि-सासणसम्मादिङ्ग-सम्मामिन्छादिङ्ग-असंजद-सम्मादिङ्गो सामी, णिरएसु तेडठेस्सादिसुहरुस्साभावादो । दुगृहसंजदासंजदा, मणुसगृहसंजदा

क्योंकि, तिर्येख व मनुष्य मिध्यारष्टि एवं सासादनसम्यग्रहियोंके अपर्याप्तकालमें शुभ लेक्याओंका समाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, चार संज्यलन, पुरुवदेद, हास्य, रति, अय, जुगुल्सा, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस व कार्मण दारीर, समयनुरस्नसंस्थान, वर्णादिक चार. अगुरुल्य, पंचेन्द्रिय जाति, तेजस व कार्मण दारीर, समयनुरस्नसंस्थान, वर्णादिक चार. अगुरुल्य, आदेक चार, प्रशास्तिवहायोगाते, स्थिर, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशक्तिंति, निर्माण और पांच अन्तरायका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्बग्ध्यानीम तीन गतियांसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नरकगतिका अभाव है। सम्यामिथ्या-हृष्टि और असंयतसम्बग्ध्य गुणस्थानोम दे गतियांसे संयुक्त चन्ध होता है, क्योंकि, वहां नरकगति और तिर्यगातिका अभाव है। उपरिम्म गुणस्थानोमें देवगति संयुक्त चन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियांके संयुक्त चन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियांके संयुक्त चन्धका विरोध है। उपरिम्म गुणस्थानोमें स्वयान संयुक्त चन्धका विरोध है। उपरिम्म प्राप्ति संयुक्त चन्धका विरोध है। उपराप्ति संयुक्त चन्धका विरोध है। उपराप्ति सम्यानुष्टि, सासादनसम्बग्धि और असंयतसम्बग्धि और असंयतसम्बग्धि गुणस्थानोमें देव व मतुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है। उपर देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है।

सन महातयों के तीन गतियों के भ्रिष्यादृष्टि, सासादनसम्बादृष्टि, सम्यग्मिध्या-दृष्टि और असंयतसम्बादृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नारकियोंमें तेजोलस्वावि शुभ लेह्याजीका अभाव है। हो गतियों के संयतासंयत और मतुष्यगतिके संयत स्वानी हैं। सामी । णंवरि वेउन्वियचउक्कस्स तिरिक्ख-मणुसगइभिन्छाइडि-सासणसम्माइडि-सम्मा-मिन्छाइडि-असंजदसम्माइडि-संजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी । बंघदाणं सुगमं । बंधवेन्छेदो णरिय, 'अबंधा णरिय 'ति वयणादा । धुवबंधीणं मिन्छाइडिम्हि बंघो चउन्विहो । अण्णत्य तिविहो, धुवाभावादो । अबसेसाणं पयडीणं सन्वत्य सादि-अदुवो, अद्भवबंधिचादो ।

बेट्टाणी ओघं ॥ २६१ ॥

तं जहा — अणंताणुवंधिचउक्कस्स वंधोदया समै वोच्छिण्णा', सासणसम्मा-दिद्विन्दि दोण्णं वोच्छेदुवरुंभादो । तिरिक्खगङ्गाओग्गाणुपुव्वीए पुणो उदओ चेव णरिध, तेउरुस्साहियारादो । सेसाणं पयडीणं वंधवे।च्छेदो चेव, उदयवोच्छेदाभावादो । थीणगिद्धित्तय-अणंताणुवंधिचउक्किरियवेदाणं सोदय-परोदओ । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुग-चउसंक्रणं-चउसं-घडण-उज्जोव-अपसरथविद्वायगङ्-दुभग-दुस्सर-अणादेज-णीचागोदाणं दोसु वि गुणदृणिसु वंधो

विशेषता इतनी है कि वैकिषिकचनुष्कि तिर्यंच और मनुष्य गतिके मिथ्यावृष्टि, सासादन-सम्यग्वृष्टि, सम्यग्निथ्यावृष्टि, असंयतसम्यग्द्रष्टि और संयतासंयतः तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं। वन्धारवान सुगम है। वन्धरुगुच्छंद्र नहीं है, फ्योंकि, 'अवन्यक नहीं हैं' ऐसा सुन्नमें निर्देष्ट है। ध्रवयन्धी प्रकृतियोंका मिथ्याद्रष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका यन्ध्र होता है। अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां ध्रव बन्धका अभाव है। रोण प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि च अध्रव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रववन्धी हैं।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओवके समान है ॥ २६१ ॥

वह इस प्रकार है—अनग्तानुविश्घनतृष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादनसम्बूहिष्ट गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छिद्र पाया जाता है। एरन्तु तियंग्गतिमायोग्यानुर्वीका यहाँ उदय ही नहीं है, क्योंकि, तेजोरुह्याका अधिकार है। रोप प्रकृतियोंका केवल बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, उनके उदयव्युच्छेद्देका आधात है। स्थानपृत्तित्रय, अनन्तानुविध्यनुष्क और स्वीवदका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। तिर्थगायु, तिर्यग्पतिष्ठक, चार संस्थान, चार संहनन, उद्योत, अप्रशस्तिबहायोगिति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका दोनों ही गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय

१ प्रतिपु 'बोध्किण्णो ' इति पाठः ।

२ अ आप्रस्रोः '-गङ्कुगसंठाण-च उसंघडण ', काप्रती ' गङ्कुगसंठाणच्यसंठाण-च उसंघडण ' इति पाठः ।

सोदय-परेद्द्यो । थीणगिद्धितय-अणंताणुवंधिच उक्क तिरिक्खा उआणं वंधो णिरंतरो । से साणं सांतरा, एगसम्बण्ण वि वंधुवरस्वतंत्रादो । सन्वययदीणं मिन्छाइडि-सासणसम्मादिष्टीस् च उवण्णेयाणेवंचास पन्चया, ओरालियनिस्सपचयाभावादो । णवीर तिरिक्खा उअस्स ओरालिय-दुग-चेउलियपिस्स-कम्मदय-णबुंसयेदेपन्चया अवणेद्व्या, पज्जत्तंवे मोचूण अण्णत्थ वंधाभावादो । तिरिक्खा इदुगुज्जोव-च उसंराण-च उसंपहण-अप्पस्तभव द्वाया-दुम्प-दुम्प-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं ओरालियदुग-णबुंसयेदपन्ययः अवणेयव्या, तिरिक्ख-मणुस्से मोचूण देवाणोदिस्सि पञ्जतापञ्जतावस्थासु चंधुवरुभादो ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुऽजीवाणं वंधी तिरिक्खगइसंजुत्तो। चउसंठाण-चउसंघडण-अप्यस्त्यविद्वायगङ्-दूभग-दुस्सर अणादेज-णीचागेदाणं दुगइसंजुत्तो, णिरय-देवगईणमभावादा। । भीणगिद्धितिय-अणंताणुवंधिचजिक्षित्यवेदाणं वंधी तिग्रहसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुऽजीव-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्यस्थिविद्यायगङ्-दुभग-दुस्सर-अणादेजज-णीचागोदाणं वंधस्स देवा चेव साभी. सुद्दातिर्शस्यनिरिक्ख-मणुस्मयु एडार्सि

बन्ध होता है। स्टानगुद्धित्रय, अनन्तानुविश्यितृ के और तिर्यगायुका वन्ध निरन्तर होता है। येप प्रकृतिसंका सान्तर वन्ध होता है, वर्योकि, एक समयम भी उनदा बन्धविश्वाम गाया जाता है। यर प्रकृतिसंके मिरगहाएँ के स्वास्त्र सम्ययन्त्र भी उनदा बन्धविश्वाम गाया जाता है। यर प्रकृतिसंक प्रत्य होते के अंदारिक प्रस्य प्रस्य स्वय प्रवास के स्वय के स

तिर्यगायु, तिर्यग्गतिष्ठिक और उद्यातक वन्ध तिर्यगातिसं संयुक्त होता है। चार संस्थान, चार संहनन. अधरास्त्रविहायोगित, दुभँग, दुस्यर, अनादेय और नीचगोतका बन्ध दो गतियोंसे संयुक्त होता है. क्योंकि, नरक और दव गतिक साथ इनके बन्धका अभाव है। स्यानगृष्ठित्रय, जनतानुबन्धिचलुक और खींचदका बन्ध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, यहां नरकगतिक बन्धका अभाव है। तिर्यगायु, तिर्यगतिकिक, उद्योत, चार संस्थान, चार संहनन, अप्रसास्त्रिहायोगित, दुभँग, दुस्यर, अनादेय और नीच-गोत्रके बन्धके दव ही स्वामी हैं, क्योंकि, गुभ तीन लेक्यावाले तिर्यंच च मनुष्योंमें इनके

१ अ-आप्रकोः 'चउववण्णेगुण ' इति पाठः ।

1119

बंधाभावादो । धीणगिद्धितय-अणंताणुबंधिच अिक्तरियवेदाणं तिगर्हामच्छार्हि-सासणसम्मादिहिणो सामी, णिरयगर्ड्ए सुहतिलेस्साभावादो । बंधद्धाणं बंधवोच्छिणणहाणं च सुगमं । धुवबंधीणं मिच्छार्हिहिन्ह चउन्त्रिहा बंधो । सासणें दुविहो, अणार्झ्युवाभावादो । सेसाणं पयडीणं बंधो सन्वत्थ सादि-अङ्को ।

असादावेदणीयमोघं ॥ २६२ ॥

देसामासियसुत्तेणेदेण सुइदत्थपरूवणा कीरदे । तं जहा — अजसिकतीए पुन्वसुद्धेश पच्छा वंधो वोच्छिज्जदि, पमतासंजदसम्मादिहीसु वंधोदयवोच्छेदुबरुंभादो । असादिवदणीय-अरिद-सोग-अधिरासुहाणं पुन्वं वंधो पच्छा उद्देओ वोच्छिज्जदि, तहोबरुंभादो । अधिर-असुहाणं वंधो सोदओ, सुवोदयत्तादो । अजसिकतीए मिच्छाइडिण्यहुडि जाव असंजदसम्माइडि ति सोदय-परोदओ । उविर सोदओ वेव । असादावेदणीय-अरिद-सोगाणं सोदय-परोदओ, सन्वत्थ अञ्चवोदयत्तादो । सांतरा वंधो, सन्वासिमरासिमेगसनएण वि तन्वगुणद्वाणेसु वंधुवरसुवरुंमादो । पच्छा सुगमा, ओघएचचएहिंतो विसेसाभावादो । णविर मिच्छाइडि-

बन्धका अभाव है । रूपान गृहित्रयः अनस्तानुबन्धिक तुष्क और क्षेत्रिक तीन गतियोंके मिथ्याद्यष्टि और स्पन्त इनक स्वप्टाष्टि स्वामी है, क्योंकि, नरकगतिमें तुम तीन छेदयाओंका अभाव है। बन्धा पान और बन्ध्य द्यापित स्वप्ताम हैं। हुवबन्धी महतियोंका मिथ्याद्येष्ट गुणस्थानमें चारी मक्ताका बन्ध होता है। सासादन गुणस्थानमें दो मकारका बन्ध होता है, क्योंकि, तहा अनाि और भ्रुव बन्धका अभाव है। रेप महतियोंका बन्ध सर्वेष्ठ साहित्योंका वन्ध्य सर्वेष्ठ साहित्योंका बन्ध सर्वेष्ठ साहित्योंका विश्व स्वर्थक स्वर्यक स्वर्थक स्वर्थक स्वर्यक स्वर्थक स्वर्यक स्वर्यक स्वर्यक स्वर्यक स्वर्थक स्वर्यक स्वर्यक

असाताबेदनीयकी ५ रूपणा ओघके समान है ॥ २६२ ॥

इस नेतामदाँकः खुन स्पायत अथकी प्रकाणा करते हैं। वह इस प्रकार हे—
अयराकीर्तिका पूर्वम उदय और प्रधान वन्ध प्रुच्छिल होता है, क्योंकि, प्रमत्त और
असंयत्तसम्यव्हिं गुणस्थानों में प्रमत्त उत्तेव क्या व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है।
असातावेदनीय, अराति, शोक, अस्यिर और अशुमका पूर्वम वन्ध व पश्चात् उदय
ब्युच्छिल होता है, क्योंकि, वैद्या पाया जाता है। अस्थिर और अशुमका बन्ध क्योद्य
होता है, क्योंकि, वे ध्रवोद्यी हैं। अयराकीर्तिका मिथ्यादिसे छेकर असंयतसम्यव्हिष्ट
तक स्वोद्य-परोद्य क्या होता है। असर स्वोद्य ही बन्ध होता है। असातावेदनीय,
अराति और शोकका स्वोद्य-परोद्य व न्ध्य द्वान समयक्षि से सर्व गुणस्थानों में क्यांकि, स्वांकि, स्वांकि,

१ प्रतिष्ठ ' सासणी '"इति पाठः ।

सासणसम्मादिद्वीसु ओराल्यिमिस्सपच्चेजो अवणेयच्चो । तिगइसंजुत्तो बंधो मिच्छाइडि-सासणसम्मादिद्वीसु । सम्मामिच्छाइडि-असंजदसम्मादिद्वीसु दुगइसंजुत्तो । उत्तरि देवगइसंजुत्तो । तिगइमिच्छाइडि-सासणसम्मादिडि-सम्मामिच्छादिडि-असंजदसम्मादिद्विणो, दुगइसंजदासंजदा, मणुसगइसंजदा च सामी । मिच्छाइडिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदे। ति अद्धाणं । बंधवोच्छेदद्वाणं सुगमं । सादि-अदुवो वंधो, अञ्चवंधितादो ।

मिन्छत्त-णबुंसयवेद-एइंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघ-डण-आदाव-थावरणामाणं को बंधो को अवंधो ?॥ २६३॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २६४ ॥

भिच्छतस्स वंदोदया समं वोच्छिण्णा । णवंसयवेद-हंडसंठाण-असंपत्तसेवद्वसंघडण-एइंदिय-आदाव-यावरणामाणं बंधवोच्छेदो चेव, उदयाभावादो । भिच्छतस्स सोदगण वंधो, उदयाभावे बंधाणुवरुभादो । णउंसयवेद-हंडसंठाण-असंपत्तसेवद्वसंघडण-गर्हदिय-आदाव-यावराणं

इतनी है कि मिथ्यादिए और सासादनसम्यग्दिए गुणस्थानोंमें औदारिकिमध्य प्रत्यय कम करना चाहिये। मिथ्यादिए और सासादनसम्यग्दिए गुणस्थानोंमें उनका वन्य तीन गतियोंसे संयुक्त होता है। सम्योगमध्यादिए और असंयतसम्यग्दिए गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्य होता है। अवर उनका देवगतिसंयुक्त वन्य होना है। तीन गतियोंके सिथ्यादिए, सासा-दनसम्यग्दिए, सम्योगम्य्यादिए और असंयतसम्यग्दिए: दो गतियोंके संयतासंयत, तथ मनुष्यातिके संयत स्वामी हैं। सिध्यादिएसे लेकर प्रमक्तसंयत तक बन्धाच्चा है। बन्धस्यन्दछ्टेदस्थान सुगम है। सादि व अध्रुव वन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुववन्धी हैं।

मिथ्यात्व, नर्षुसक्वेद, एकेन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तस्पाटिकासंहनन, आताप और स्थावर नामकर्मका कीन बन्धक ओर कीन अवन्धक है? ॥ २६३ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं। ये पन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं॥ २६४॥

मिथ्यात्यका बन्ध और उदय दोनों साथ ब्युच्छिल होते हैं। नपुंतकवेद, हुण्ड-संस्थात, असंमात्तत्व्यारिकासंहतना पकेन्द्रिय, आताप और स्थावर नामकर्मका केवळ वध्यपुञ्जेद ही है, क्योंकि, यहां दनके उदयका आगव है। मिथ्यात्यका स्वीदयसे बच्च होता है, क्योंकि, उदयके आगवमें उसका बच्च पाया नहीं जाता। नपुंसकवेद, हुण्ड-संस्थान, असंप्राप्तत्व्यारिकासंहनन, एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरका बच्च परोदय षधे। परोदको, परासि देवसु उदयाभावादो । मिञ्छत्तसंघो णिरंतरो, भुवबंधितादो । अण्णपयद्वीणं सांतरो, पगसमपण वि बंधुवरसुवरूंमादो । पञ्चया सुगमा, भोषपञ्चपिहिता विसंसामावादो । णविर ओरालियमिस्सपञ्चको अवणेयव्वो, तत्य सुह्केस्साए अमावादो । णउंसपयेव-हुंड इंस्ठाण-असपत्तसेवहसंपडण-प्रदृंदिय-आदाव-यावराणं ओरालियद्वा कम्मद्रय-णवुंसयवेदपञ्चया अवणेयव्वा । मिञ्छत्वंची तिगृहसंखुत्ता। णवुंसयवेदपञ्डं इंस्टाण-असपत्तसेवहसंपद्या । एवंदिय-आदाव-यावराणं तिरिक्खग्रहसंपुत्ती । मिञ्छत्वंच एवंदिय-आदाव-यावराणं तिरिक्खग्रहसंपुत्ती । मिञ्छत्वंचस्स तिगृहसिञ्चाहिणे सामी । अवसंसाणं पयडीणं देवा चेव सामी । बंधद्वाणं भविष्विण्डाणं च सुगमं । मिञ्छत्तसः वंधो च उव्विहो, धुवबंधितादो । सेसाणं सादि-अदुवो अनुववंधितादो ।

अपन्यक्वाणावरणीयमोघं ॥ २६५ ॥

एर्द देसामाभियसुत्तं । तेणेदेण सुड्दत्थपरूवणा कीरदे — अपञ्चनखाणावरणीयस्स षंथोदया समं वोन्छिज्ञंति, असंजदसम्मादिङ्गिह्द तदुभयवोच्छेदुवर्लमादो । अवसेसाणं षंधवोच्छेदी चेव । अपञ्चनखाणचउनकस्स षंधो सोदय-परोदओ । मणुसगड्दुगोरालियदुग-

अत्रत्यारूयानावरणीयकी त्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६५ ॥ -

यह देशामर्शक सूत्र है, इसीछिय इससे सूबित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं— अप्रत्याख्यानावरणीयका बन्ध और उदय दोनों साधमें व्युष्टिछल होते हैं, क्योंकि, असंयतसम्यग्हिष्ट गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युष्टिय पाया जाता है। शेष प्रकृतियोंका बन्धान्युष्टिय ही है। अप्रत्याक्यानावरणचतुष्कका बन्ध स्थोदय-परोज्ञ होता है।

होता है, क्योंकि, इनका देयोंके उदयाभाव है। मिथ्यात्वका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, वह धुववन्धी है। अन्य प्रकृतियांका सानतर बन्ध होता है, क्योंकि, क्ष समयसे भी उनका बन्धविक्षाम पाया जाता है। प्रत्येष सुगम हैं, क्योंकि, कोष अव्ययं से कोई भेद नहीं है। विदेश दतना है कि यहां औदारिकाम्य प्रत्य काम करना वाहिये, क्योंकि, उसमें ग्रुम छेदयाका अभाव है। नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान, असंप्रान्तस्पर्धाको कम करना वाहिये, क्योंकि, उसमें ग्रुम छेदयाका अभाव है। नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान असंप्रान्तस्पर्धाको कम करना वाहिये। मिथ्यात्वका वन्ध तीन गतियोंके संयुक्त होता है। नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान क्षेत्र क्यांकि, क्योंकि, हनके साथ देवगाविके वन्धविक्षात्र काम करना वाहिये। मिथ्यात्वका वन्ध तीन गतियोंके संयुक्त वन्ध होता है, क्योंकि, हनके साथ देवगाविके वन्धका अभाव है। पकेन्द्रिय, आताप और स्थावरका तियंगातिसे संयुक्त बन्ध होता है। मिथ्यात्वके वन्धके तीन गतियोंके मिथ्यादि स्थामी हैं। होण प्रकृतियोंके देव ही स्वामी हैं। क्याध्यान और वन्धव्यान्ति के स्थावरको वन्ध वारों प्रकारका होता है, क्योंकि, वस्त्र धुवक्ष विक्ष होता है। क्याध्यान और वन्धव्यान्ति हो स्वामी है। हो स्वामी हो स्वामी है। हो स्वामी है। हो स्वामी है। हो स्वामी हो। हो हो हो हो हो। हो हो हो हो। हो हो हो

वञ्जिसिह्वइरणातायणसंपडणाणं वंथो परादशो, सुहरुस्सियितिरिक्ख-मणुस्सेसु एदासि बंधाभावादो। अपञ्चक्खाणचउकक-ओराल्यिसरीराणं वंथो णिरंतरा। वंथो मणुसगइदुगस्स मिच्छाइहि-सासणसम्मादिद्वीसु सांतरा। उविर णिरंतरा। एवं वञ्जिरसहसंपडणस्स वि वक्तव्वं ।
ओराल्यिसरीर्स्योगंगस्स वंथो मिच्छाइहिन्दि सांतरा। उविर णिरंतरा, एइंदियवंधाभावादो। ।
पञ्चया सुगमा। णविर अपञ्चक्खाणचउक्कस्स दोसु गुणहांणसु ओराल्यियसपञ्चलो ।
अवणेयव्वो। मणुसगइदुगोराल्यिद्या-वज्जिरसहसंपडणाणं ओराल्यिय्या-पञ्चयस्य सुग्रकालाहो। अपञ्चलया। सम्माभिच्छाइहिन्दि दो चेव अवणेयव्वा', ओराल्यिमस्सपच्यस्स पुज्यक्षेतामावादो। अपञ्चलखाणचउक्कस्स मिच्छाहि-सासणसमादिद्वीसु तिगइसज्जेता वंथो। उविर दुगहसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खाईणम्मावादो। मणुसगइदुगस्स मणुसगइद्वासः ।
ओराल्यिदुग-वज्जिसद्यसंखणाणं मिच्छाइहिन्सासणसमादिद्वीया दुगहसंजुत्ता विष्टा ।
ओराल्यिदुग-वज्जिस्वसंविद्याणं मिच्छाइहिन्समानिच्छान्ति । उवाहमेज्जित्वरिःसामार्माटिहिन्समामिच्छादिहि-सासणसमादिद्वीणां दवा सामी। वंधद्वाणं

मनष्यगतिविक, औदारिकविक और वज्जर्यभवज्जनाराचसंहननका बन्ध परोदय होता है. क्योंकि, शुभ लेड्यावाले तिर्येच व मनुष्योमें इनके बन्धका अभाव है। अत्रत्याख्यानावरण-चतष्क और औदारिकशरीरका बन्ध निरन्तर होता है। मनुष्यगतिद्विकका बन्ध मिथ्याहिए और सासादनसम्यग्दिष्ट गुणस्थानोंमें सान्तर होता है। ऊपर उसका निरन्तर बन्ध होता है। इसी प्रकार चर्जार्थभसंहननके भी कहना चाहिये। अंदारिकशरीरांगापांगका बन्ध मिथ्यादृष्टि ग्रणस्थानमें सान्तर होता है। ऊपर निरन्तर होता है, क्योंकि, वहां एकेन्द्रियके बन्धका अभाव है। प्रत्यय सुगम है। विशेष इतना है कि अप्रत्याख्यानावरणचतष्कके हो गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करता चाहिय । मनुष्यगतिहिक, औदारिक-बिक और वजर्षभसंहननके बादारिकद्विक और नपुंसकवेद प्रत्ययाँकी जीन गणस्थानों में कम करना चाहिये। सम्यग्मिथ्यादाप्टे गुणस्थानमें दा शत्ययाँको दी कम करना चाहिये. क्योंकि, औदारिकमिश्र प्रत्ययका पहले ही अभाव हो चुका है। अप्रन्याख्यानावरणनातकका मिध्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानीमें तोन गतियोंस संयुक्त बम्ध होता है। ऊपर दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नरकगति और तियेगातिका अभाव है। मनध्यगतिद्विकका मनुष्यगतिसंयक बन्ध होता है। औदारिकद्विक और वजवंभसंहननका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें ते गतियोंसे संयक्त तथा ऊपर मनुष्र्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अन्य गतियोंके बन्धका भमाव है। अप्रत्याच्यानावरणचतुष्कके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्योग्मध्यादिष्ट और असंयतसम्यग्दिष्ट स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंके देव स्वामी हैं।

१ प्रतिष्ठ ' अनमेयन्त्रो 'इति पाठः ।

बंधवोन्छिण्णहाणं च सुगमं । धुवबंधीणं मिच्छाइहिम्मि बंधो चउन्विहा । अण्णत्थ तिविहा, धुवाभावादो । सेसाणं बंधो सादि-अद्भवो, अद्भवबंधितादो ।

पञ्चक्खाणचउकक्रमोघं ॥ २६६ ॥

8, 240)

बंधोदया समं वीच्छिण्णा, संजदासंजदम्मि तेसि दोण्णमक्कमेण वीच्छेदवछंभादो । सोदय-परोदओ, दोहि वि पयोरहि बंधाविरोहादों । णिरंतरी, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । पञ्चया सुगमा, अपञ्चक्खाणपञ्चयतुल्ठतादो । भिञ्छाइडि-सासणसम्मादिडीस बंधो तिगड-संजुत्तो । सम्मामिच्छाइड्डि-असंजदसम्मादिद्वीस दुगइसंजुत्तो । उवीर देवगइसंजुत्तो । तिगइ-भिच्छाइहि-सासणसम्मादिहि-सम्माभिच्छादिहि-असंजदसम्मादिहिणो सामी । दगइसंजदासंजदा सामी । बंधद्वाणं बंधवो च्छिण्णङ्वाणं च सुगमं । मिच्छाइडिम्हि बंधो चउन्विहो । उनरि तिविहो, धुवाभावादो ।

मणस्याउअस्य ओघभंगो ॥ २६७॥

बन्धाध्वान और बन्धव्युव्छिन्नस्थान सुगम हैं। ध्रुववन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका वन्ध होता है। अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां भ्रव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अभव होता है, क्योंकि, वे अध्वयनधी हैं।

प्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६६ ॥

प्रत्याख्यानाचरणचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें ब्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, संयतासंयत गुणस्थानमें दोनोंका एक साथ व्युच्छेद पाया जाता है। स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों भी प्रकारोंसे उसके बन्धमें कोई विरोध नहीं है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविश्रामका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, व अप्रत्याख्यानावरणके प्रत्ययोंके समान हैं। मिथ्याहाध् और सासादन-सम्यग्दाप् गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है। सम्यग्मिथ्याद्यप्ट और असंयतसम्यग्द्रष्टि गुणस्थानोंमें हो गतियोंसे संयक्त बन्ध होता है। ऊपर देवगतिसे संयक्त बन्ध होता है। तीन गतियोंके मिध्याहष्टि, सासादनसम्यग्हिष्टि, सम्यग्मिथ्याहिष्ट और असंयतसम्यग्दाष्ट स्वामी हैं। दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं। मिथ्याद्दष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। ऊपर तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां श्रुव बन्धका अभाव है।

मनुष्यायुकी प्ररूपणा ओघके समान है ।। २६७ ॥

१ प्रतिप्र ' वंधविरोहादो ' इति पाठः ।

तं जहा— षंघो परोदओ, तेउठेस्साए सध्यगुणहाणेषु सोदएण बंघविरोहादो । कितंतरो, अंतोसुहुतेण विणा बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुममा, ओघाविसेसादो । जबिर तिसु वि गुणहाणेषु ओराठियदुग-चेउिवयमिस्स-कम्पदय-णउंसयेवद्गच-चया अवणेयव्या । मणुसनग्दर्संज्तो । देवा चेव सामी । मिन्छादिहि-सासणसम्माविहि असंजदसम्मादिहि ति वंषदाणं । वंषवोच्छेदो सुममो । वंषो सादि-अद्ववो ।

देवाउअस्स ओघभंगो ॥ २६८ ॥

परेण स्टब्स्थरस्वणा कीरदे । तं जहा — वंशे पगदशे, सोदएण वंशविराहारो । णिसंतरे, अंतोमुहुतेण विणा शंशुवरमाभावादे । पत्त्वया ओगतुल्छा । जविर ओषे वि वेउन्वियदुर्गाराल्यिमिस्स-कम्मद्रयाच्चया अवणेयव्या । वंशे देवगद्रसंजुत्ते । तिरिस्ख-मणुससामीओ । वंगद्वाणं सुगमे । अप्यमत्तद्वाण् संयेव्वे सागे गंतूण वंथवोच्छेदो । सादि-अनुनो वंशे ।

आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंगणामाणं को वंधो को अवंधो ? अष्पमत्तसंजदा वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २६९ ॥

बह इस मकार है— बन्ध उसका परे। द्रय होता है, क्योंकि, तेजोलेह्यामें सब गुणस्थानोंमें खोदयसे उसके बन्धका विरोध है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहतेके विना उसके बन्धविशासका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, उनमें ओधसे कोई भेद नहीं है। विदेश रतना है कि तीनों हो गुणस्थानोंमें ओदारिकाहिक, वैकिश्यकसिम, कामण और नर्पुक्किय अन्ययोंको कम करना बाहिय । मुख्यगतिसंगुक बन्ध होता है। देव ही स्वामी हैं। सिध्याहिए, सासादतसस्यव्ह और असंयतसस्यव्ह ए, यह बन्धारवान है। वन्धवुक्छेद सुगम है। सादि व अधुव बन्ध होता है।

देवायुकी प्ररूपणा ओवके समान है ॥ २६८ ॥

हस सुत्रने स्वित अर्थको प्रक्षणा करते हैं। वह इस प्रकार है — यन्ध उसका परोदय होता है, क्योंकि, स्वोदयने इसके यन्धका विरोध है। निरत्तर बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयने इसके यन्धका विरोध है। निरत्तर बन्ध होता है, क्योंकि, स्वाप्त अन्धान का अभाव है। प्रत्यय ओपक समान है। विशेषत हती है कि अपने भी श्रीक्षांकिक, ओदिक्किय और कार्मक आमे स्वर्णक के कर करना बाहें है। देवनाविस्त्रुक बन्ध होता है। तिर्पत्र वा अप्रमत्त्रकालके संस्थात बहुभार आफर सम्बन्ध स्वाप्त स्वाप्त है। क्याप्त स्वाप्त है। सम्बन्ध होता है। साह व अपने स्वर्णक होता है। साहि व अपने होता है। साहि व अपने होता है।

आहारकसरीर और आहारकसरीरांगोपांग नामकर्मका कीन बन्धक और कीन सबन्धक है १ अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं॥ २६९॥ सुगममेदं । कुदो १ अप्पमत्तसंजदा चेव बंधआं, उनीर तेउलेस्साए अभावादो ।

तित्थयरणामाणं को बंधो को अवंधो ? असंजदसम्बाहरी जाव अपमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २७० ॥

सुगमं । जदिर देव-मणुससामिओ षंभो । एवं तेउछेस्साए एसा परूतणा कदा । जहां तेउछेस्साए एस्त परूतणा कदा । जहि सांतर-जिरंतरा वि कायञ्चा । जदि पुरिस्रवेदस्स जिन्ह सांतर-जिरंतरा वि वचन्यो, परम्लेस्समितिरिक्स स्पुल्सेस्ट पुरिस्तवेद मोत्त्य अण्णवेदस्स वंशामावादो । जिस् पर्वहीणं वंशस्स देवा केव सम्भी तासिमित्यवेदपञ्चओ अवणेयञ्चो, देवेद्य पम्मलेस्साए इत्यिवेदाणुवर्जमादो । पंक्तिस्त-तसपयडीणं वंशो जिरंतरा ति वचन्यो, तेउछेस्साए पदासि पंश्वस सांतर-जिरंतरचुवर्जमादो । आराज्यिसरिक्ताए पर्यादेश वंशो विम्रत वंशो परोदओ । जिरंतरा, पम्मलेस्साए अंगोवंगण विणा वंशासावादो । पम्मलेस्साए पर्यादेशंशायभेत्रपर्वणदमाह-—

यह सूत्र सुगम है। कारण कि अप्रमत्तसंयत ही बन्धक हैं, क्योंकि, इससे ऊपरके गुणस्थानोंमें तेजोलेस्थाका जमाव है।

तीर्थंकर नासकर्मका कौन बन्धक और कौन अषन्धक है ? असंग्रतसम्यग्दृष्टियोंसे रुकर अप्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, श्रेष अबन्धक हैं ॥ २७० ॥

यह सूत्र सुगम है। विशेष इतना है कि इसके बन्धके स्वामी देव स मतुष्य हैं। इस प्रकार तेओलेश्याका भाभ्यकर यह प्रकपणा की गई है। जिस प्रकार तेओलेश्यामें प्रकरणा की है उसी प्रकार पद्मालेश्यामें भी करना चारिये। विशेषता यह है कि पुरुष-वेदका जहां सानर वन्ध कहा गया है वहां 'सान्तर-निरन्तर' ऐसा कहवा चारिये, क्योंकि, पद्मालेश्या युक्त कि स्व क्षा का स्व प्रवाद के स्व क्षा का स्व क्षा का स्व क्षा का स्व क्ष का स्व क्ष का स्व क्ष का स्व क्ष का साम के स्व का साम है। जिस प्रकृतियोंके बन्धके देव ही स्वामी हैं उनके कविद प्रत्यको कम करना चाहिये, क्योंकि, त्यांकि प्रदात का साम करना चाहिये, क्योंकि, त्यांकि प्रदात का साम प्रताद का साम का

१ प्रतिषु 'वंभको ' इति पाठः ।

पम्मलेस्सिएसु मिन्छत्तदंडओ णेरइयभंगो ॥ २७१ ॥

प्रहेरिय-आदाव-थावराणं वधाभावादो । एतिओ चेव भेदो, अण्णो णस्थि । जदि अस्थि सो चिंतिय वत्तव्यो ।

सुक्कलेस्सिएसु जाव तित्थयरे ति ओघभंगो ॥ २७२ ॥

एदेण सुद्धर्यपर्वणा कीरदे— पंचणाणावरणीय-चउरंसणावरणीय-पंचंतराष्ट्रयाणं पुद्धं बंघो पच्छा उद्यो बोच्छिज्जदि, सुदुमसांपराइय-खीणकसाएसु वंघोदयवीच्छिदुबर्छभादी। । जसिकित-उच्चागोदाणं पि एवं चेव वत्तन्वं । णविर उदयवीच्छेद्दं एत्थ णिल्य, अजीिगिहि उदयवीच्छेद्दंसणादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराष्ट्याणं सोद्यो बंघो, धुवोदयत्तादो । मिच्छाश्टिपपुढि जाव असंजदमम्मादिष्टि ति जसिकतीए सोदय-परीद्यो । उत्तरि सोद्यो चेव बंघो, पडिवक्षुद्धयामावादो । मिच्छाश्टिपपुढि जाव संजदासंजदी ति उच्चागोद्वंघो सोदय-परीद्यो । उत्तरि सोदय-परीद्यो । उत्तरि सोदय-परीद्यो । विच्छाश्टिपपुढि जाव संजदासंजदी ति उच्चागोद्वंघो सोदय-परीद्यो । उत्तरि सोदयं (भूववंधितादो । जसिकतीए मिच्छाश्टिपहि

पद्मलेक्यावाले जीवोंमें मिथ्यात्वदण्डककी प्ररूपणा नारिकयोंके समान है ॥२७१॥

क्यॉकि, उनके एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरके वन्धका अभाव है । केवल इतना ही भेद हैं, और कुछ भेद नहीं है । यदि कुछ भेद है तो उसे विचारकर कहना चाहिये ।

शुक्रुलेक्स्यावाले जीवोंमें तीर्थकर प्रकृति तक ओयके समान प्रकृपणा है। । २७२ ।।

इस सुकसे स्चिन अर्थकी प्रकृपणा करते हैं — पांच हानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका पूर्वमें यन्च और प्रकान उदय स्पृष्टिक होता है, क्योंकि,
सुक्तमालपायिक और क्षीणकराय गुणस्थानोंमें कमन उनके वन्ध और उदयका व्युच्छेत्र
पाया जाता ह। यशकीर्ति और उच्चगोत्रके भी इसी प्रकार कहना चाहिये। विशेष इतना है

कि उनका उदयव्युच्छेत्र यहां नहीं है, क्योंकि, अयोगकेवली गुणस्थानमें उनका उदय
व्युच्छेत्र देखा जाता है।

पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे धुवोदयी हैं। मिथ्यादिध लेकर असंयतसम्पर्धि तक यशकीर्तिका स्वोदय-परोदय बन्ध होता है। ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां मितपक्ष प्रकृतिक उदयका अभाव है। मिथ्यादिक्षे लेकर संयतासंयत तक उच्चगोत्रका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है। ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां नीचगोत्रके उदयका अभाव है।

पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अंतरायका निरन्तर थन्ध होता है, क्योंकि, वे भ्रवशन्धी हैं। यशकीर्तिका मिध्यादष्टिसे छेकर प्रमत्तसंयत तक जाव पमत्तसंजदो ति बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो । उविर णिरंतरो, पडिवक्ख पयिंदिवं सांतरा । मिच्छाइडि-सासणसम्मादिद्वीसु उच्चागोदस्स बंधो सांतर-णिरंतके, सुक्कलेसियतिरिक्ख-मणुरसेसु णिरंतरं । उचिर णिरंतरो । पच्चया सुगमा । णविर मिच्छाइडि-सासणसम्मादिद्वाच्यद्वर्सु औरालियिससपच्यो अवणेयच्यो, तिरिक्ख-मणुसमिन्छाइडि-सासणसम्मादिद्वाच्यप्यज्ञत्वर्सले सुद्धितिरुस्ताणमभावादो । मिच्छादिडि-सासणसम्मादिडि-सम्माभिन्छादिडि-असंजदसम्मादिडीसु बंधो देव-मणुसगद्वसंजुद्धो । उविर दिवगदसंजुतो चेव, अण्णगद्वंधाभावादो । तिगइमिन्छादिडि-सासणसम्मादिडि-सम्माभिन्छादिडि-सासणसम्मादिडि-सम्माभिन्छादिडि-असंजदसम्मादिडि-सम्माभिन्छादिडि-असंजदसम्मादिडि-सम्माभिन्छादिडि-सासणसम्मादिडि-सम्माभिन्छादिडि-असंजदसम्मादिडि-सम्माभिन्छादिडि-असंजदसम्मादिडि-सम्माभिन्छादिडि-असंजदसम्मादिडि-सम्माभिन्छा द्वाद्वसंजदा च सामी । बंधदाणं धंयदीन्छण्णहाणं च सुगमं । धुववंधीणं मिच्छाद्विदिड वंधो चउन्चिद्दा । सासणादीसु तिविद्दा, धुववंधाभावादो । ससाणं सादि-अन्नुवं।, अजुववंधितादो ।

एगडाण-वेडाणपयडीओ ठविय उविरमाओ ताव परूवेमी- णिदा-पयलाणं पुन्वं बंधी

सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी वहां उसका बन्धविश्राम देखा जाता है। उसर निरस्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है। मिध्याहिए और सासादनसम्बग्दिए गुणस्थानोंमें उन्कनोत्रका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, जुक्टरुदेवावार्ज तिर्यंव और मनुष्योंमें उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। उसर निरन्तर वन्ध होता है। प्रस्य सुगम हैं। विदोष हतमा है कि मिध्यादिष्ट और सासादनसम्बन्ध गुणस्थानक प्रस्ययामें से भेदारिकमिध्र प्रस्यवंक कम करना चाहिय, क्योंकि, तिर्यंव और मनुष्य मिध्यादिष्ट एवं सासादनसम्बग्दिष्ट गुणस्थानक प्रस्यवंक्षिय एवं सासादनसम्बग्दिष्ट गुणस्थानक प्रस्यवंक्षिय एवं सासादनसम्बग्दिष्ट गुणस्थानक प्रम्यवंक्षिय एवं सासादनसम्बग्दिष्ट गुणस्थानक प्रस्यवंक्षिय एवं सासादनसम्बग्दिष्ट गुणस्थानक प्रस्यवंक्षिय एवं सासादनसम्बग्दिष्ट गुणस्थानक प्रस्यवंक्षिय एवं सासादनसम्बग्दिष्ट गुणस्थानक प्रस्यवंक्षिय एवं सासादनसम्बग्द हिंग स्वाप्त स्वाप्

मिध्याद्दष्टि, सासादनसम्यग्दिए, सम्यग्मिथ्यादिष्टि और असंयतसम्यग्दिष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे संगुक्त बन्ध होता है। कपर देवगित संगुक्त ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है। तीन गतियोंके मिध्यादिष्ट, सासादनसम्यग्दिष्ट, सम्यग्मिथ्यादिष्ट और असंयतसंग्यग्दिष्ट, दो गतियोंके संयतासंयत, तथा मनुष्यगतिके संयत स्थामी हैं। बन्धाध्यान और बन्धव्युक्तिश्वस्थान सुगम हैं। धुष्यबन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादिष्ट गुणस्थानमें वार प्रकारका बन्ध होता है। सासादनादिक गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां उनके धुव बन्धका अभाव है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुवबन्धी हैं।

एकस्थानिक और द्विस्थानिक प्रकृतियोंको छे।इकर उपरिम प्रकृतिओंकी प्रकृपणा

१ अप्रती ' -सासगसम्मादिद्वीत पञ्चएत ' शति पाठः ।

पच्छा उद्देशो वोच्छिज्जदि, अपुन्न-बीणकसाएसु वंघोदयवोच्छेदुवरुंमादो । सोदय-परोदर्शे वंशो, अनुवोदयत्तादो । णिरंतरो वंथो, धुववंधितादो । पच्चया सुगमा । णवरि मिच्छाइडि-सासणसम्मादिद्दीसु श्रेरारियमिस्सपच्चशे अवणेयव्यो । मिच्छाइडि-सासणसम्मादिडि-सम्मामिच्छादिडि-असंजदरममादिडीसु देव-मणुसगद्दसंजुतो । उविर देवगद्दसंजुतो । तिगइ-मिच्छादिडि-सासणसम्मादिडि-सम्मामिच्छादिडि-असंजदसम्मादिडिणो दुगद्दसंजदासंजदा मणुसगद्दसंजदा च सामी । वंधद्वाणं सुगमं । अपुव्यवरुणद्वाए संखेज्जदिभागं गंतुण वंधो वोच्छिज्जदि ।

असादानेदणीयस्स पुन्तं वंघो वोच्छिण्णो । उदयवोच्छेदो णरिय । अरिद स्रोत्माणं पुन्तं वंघो पच्छा उदयो वोच्छिज्जदि, पमचापुन्तेसु वंघोदयवोच्छेदुवन्तंभादो । अधिर-असुभाणं वंघवोच्छेदो चेव, सुक्कलेस्सिएसु सन्तर्युद्धद्दसणादो । अजसिकत्तीए पुन्तयुद्धयस्स पच्छा वंघस्स वोच्छेदो, पमचासंजदतम्मादिष्ठीसु वंघोदयवोच्छेदुवर्लभादो । असादावेदणीय-अस्ति-सोगाणं वंघो सोदय-परोदयो, अद्धवोदयत्तादो । अधिर-असुद्दाणं सोदयो चेव, धुवोदयत्तादो । अध्यत्मादिष्ठी सि सोदय-

करते हैं— लिद्रा और प्रचलाका पूर्वमें बन्ध और पश्चान् उदय ग्युच्छित्र होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और श्रीणकपाय गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया आता है। स्वोदय परोय बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्योदयी हैं। तिरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये भुववन्धी हैं। त्रयय बन्ध होता है, क्योंकि, ये भुववन्धी हैं। तिरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये भुववन्धी हैं। प्रयय बन्ध में में स्वास्त्रवन्त्र सम्यादिष्ट गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्र प्रत्ययको क्रम करना चाहिये। प्रिष्याहिष्ट, सासावन्त सम्यादिष्ट, सम्यागिध्याहिष्ट और असंयतसम्यादिष्ट गुणस्थानोंमें देव व मजुष्य गतिक्से संयुक्त बन्ध होता है। उत्पर देवगतिस संयुक्त बन्ध होता है। तीन गतियोंके सिच्याहिष्ट, सासावनसम्यादिष्ट, सम्यगिमध्याहिष्ट, और असंयतसम्यादिष्ट, दो गतियोंके संयतासंयत, तथा मजुष्यगतिकं संयत स्वामी हैं। वन्धाध्यान सुगम है। अपूर्वकरणकालके संक्यातवैं भाग जाकर बन्ध नृत्यिक्ष होता है।

असातावेदनीयका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिक होता है। उदयनपुच्छेद नहीं है। असति और होकका पूर्वमें कम और प्रधात उदय न्युच्छिक होता है, क्योंकि, प्रमत्त और अपूर्व-का प्रणात कार्य के प्रधात के प्

असाताबेदनीय, अरात और शोकका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, वे अधुवोदयी हैं। अस्थिर और अग्रुभका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वे धुवोदयी हैं। अयशकीर्तिका मिष्यादृष्टिसे लेकर असंवतसम्यग्दृष्टि तक स्वोदय-परोद्य कम्ब होता

अपन्यनस्वाभावरणीयस्स वंघोदया समं वोन्छिणा, असंजदसम्पादिद्विस्द दोण्णं वोच्छेदुवरुंमादो । सेसाणं बंघवोच्छेद्दो चेव, उदयवोच्छेदाणुवरुंमादो । अपयमस्वाणचउक्रस्स सोदय-परोदएण वि वंघो, अन्तुवोद वत्त्वदो । अवसेसाणं वंघो परोदको, सुक्करुंस्साए स्व्यगुणद्वाणेसु सोदएणेदासिं वंघविरोहादो । अपच्यनस्वाणचउनक-भणुसगबदुगोराळियदुगाणं वंघो णिरंतरे, एगसमएण वंधुवरसाभावादो । वच्जरिसहसंघडणस्स मिच्छादिद्वि-सासण-सम्मादिद्वीसु वंघो सांतरे । उविर णिरंतरे, पडिवनस्वपयडिवंघाभावादो । पच्चया सुसमा ।

है। ऊपर परोदय ही बन्ध होता है, क्यांकि, वहां नियमसे यशकीर्तिका उदय देखा जाता है। छहां प्रकृतियोंका बन्ध साम्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम देखा जाता है। प्रत्यय ओघके समान हैं। विशेष हतना है कि मिम्यादिष्ट और सासाइन-सम्बन्धानों में औदारिकमिश्र प्रत्यकों कम करना वाहिये। मिप्यादिष्ट आसहान-सम्बन्धान सम्बन्धान हैं। स्वत्यादिष्ट अपिर सासाइन-सम्बन्धान सम्बन्धान हैं। सम्बन्धान हैं। सम्बन्धान हैं। सम्बन्धान हैं। स्वत्यादिष्ट आपिर सम्बन्धान हैं। स्वत्यादिष्ट अपिर स्वत्यादिष्ट सम्बन्धान सम्बन्ध के स्वत्यादिष्ट संबन्धान होता है। उत्पर देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। तीन गतियों के सम्बन्धान होता है। उत्पर देवगतिसे संयत स्वामी हैं। बन्धात्वान कीर बन्धान होता है। इन्धात्वान कीर बन्धान होता है।

अप्रत्याक्यानावरणीयका बन्ध और उदय दोनों साधमें न्युच्छित होते हैं, क्योंकि, असंयतसम्बग्दि गुणस्थानमें उन दोनोंका न्युच्छेद पाया जाता है। होप प्रकृतियोंका बन्ध-क्युच्छेद ही है, क्योंकि, उनका उदयव्युच्छेद नहीं पाया जाता। अप्रत्याक्यानच्युच्कका स्थेव्य-यरोद्यसे बन्ध होता है, क्योंकि, उद अधुनोदयी है। होप प्रकृतियोंका बन्ध प्रसेव्य होता है, क्योंकि, गुक्छिह्यामें स्व गुणस्थानोंमें स्वोद्यसे हानक बन्धका विश्वेष है। अप्रत्याव्यानावरणव्युच्क, अनुच्यानीतिहक और मौदारिकाहकका बन्ध निक्का होता है, क्योंकि, क्यांकि कर सम्बन्ध के क्यांकिआमका अभाव है। व्याच्यानावरणव्युच्छा अप्रत्यानमें सान्तर वन्ध होता है। अपर उसका विरत्यर वन्ध होता है। क्योंकि, यहां प्रतियस्य स्कृतियोंके बन्धका अभाव है। प्रस्थय सुवाम हैं।

णविर मिच्छाहि-सासणसम्मादिहीसु ओरालियमिस्सपच्चे अवणेयव्यो । मणुसगहदुगोरालियदुग-वज्जिरसहसंघडणाणमोरालियदुगिलिय-णवुंसयवेदपच्चरा अवणेयव्या, देवेसु एदासिमभावादो । अपच्चक्साणचउकस्स दुगइसंजुतो बंचे। अवसेसाणं मणुसगइसंजुतो । अपचम्साणचउकस्स तिगइजीवा सामी । अवसेसाणं पयडीणं देवा सामी । बंबद्धाणं बंधवेचिळणणडाणं च सुगमं । अपच्चक्साणचउक्कस्स मिच्छाहिन्हि बंधो चउव्यिहो । उत्रीर तिबिहो, धुवामावादो । अवसेसाणं सादि-अद्यवो, अञ्चवंधितारों।

पच्चक्खाणावरणीयस्स वंबोदया समं वोच्छिज्जंति, संजदासंजदिम्म तदुहयवे।च्छेड्-दंसणादो । बंबो सोदय-परोदओ, अनुवोदयत्तादो । णिरंतरो, एगसमएण वंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा । णविर मिच्छाईडि-सासणसम्मादिडीसु ओराल्यिमिस्सपच्चओ अवणेयच्चो, तिरिक्ख मणुसमिच्छाईडि-सासणसम्मादिडीसु अपञ्जतकाले सुहलेस्साणमभावादो । असंजदेसु बंबो देव-मणुसगृहसंख्तो, संजदासंबदेसु देवगृहसंख्तो । तिगृहअसंजदगुणद्वाणाणि, दुगृह-संजदासंबदा च सामी । बंपदाणं वंधवीच्छणणद्वाणं च सुगमं । मिच्छाईडिम्ह वंधो चुउव्विहो ।

विशेष इतता है कि मिथ्यादिष्ट और सासादनसम्बन्धि गुणस्थानों भे औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये। मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्रपंभसंहननके औदारिकद्विक, कींथेद और नवुंसकवेद प्रत्ययंको कम करना चाहिये, क्योंकि, देवींमें यहां इन प्रत्ययंको अभाव है। अप्रत्याक्यानायरणचनुष्कका दो गतियोंके संयुक्त बन्ध होता है। रोप प्रत्ययंका मनुष्यगतिसे संयुक्त नन्ध होता है। अप्रत्याक्यानायरणचनुष्कके दीन गतियोंके जीव स्वामी हैं। रोप प्रकृतियोंके देव स्वामी हैं। विष्यानायरणचनुष्कको सिम्याविष्ट गुणस्थान और वश्चव्युक्तिक स्वामी हैं। अप्रत्याक्यानायरणचनुष्कको मिथ्याविष्ट गुणस्थाने चारों प्रकृतियों हैं। सम्याविष्ट गुणस्थाने चारों प्रकृतिका वन्ध होता है। अपर तीन प्रकृतिका सन्ध होता है, क्योंकि, वहां भ्रव वन्धका नमाव है। रोप प्रकृतियोंका सादि व अभ्रुव वन्ध होता है, क्योंकि, वा अभ्रुववन्धी हैं।

प्रत्याक्यानावरणीयका बन्ध और उद्गय दोनों साथमें व्युन्छिन्न होते हैं, पर्योक्ष, संयतासंयत गुणस्थानमें उन दोनोंका ज्युन्छेद दक्का जाता है। स्वादय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्योदयी प्रहित है। निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, क्ष अध्योदयी प्रहित है। निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, क्ष समयसे उक्के बन्धविश्रामका अभाव है। प्रत्यय सुनाम हैं। विशेष इनना है कि मिध्याहि और सासादनसम्प्रवृद्धि गुणस्थानों औदारिकमिश्र प्रत्यय कम करना चाहिये, क्योंकि, तिर्यव और मनुष्य मिध्याहि एवं सासादनसम्प्रवृद्धियों अपर्याप्तकालमें ग्रुप्त लेहचा औका अभाव है। अस्यातीय देव मनुष्य गतिस संयुक्त क्या होता है। संपतासंयतोंमें देव म मनुष्य गतिस संयुक्त क्या होता है। संपतासंयतोंमें देवगातिस संयुक्त क्या होता है। तीम गतियोंके असंयत गुणस्थान और वो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थल सुगम हैं। विश्वाहि गुणस्थानमें बारों प्रकारका बन्ध होता है। क्याध्वान और बन्धविनष्टस्थल सुगम हैं। क्रिथाहि गुणस्थानमें कारों प्रकारका वन्ध होता है। क्याध्वान और बन्धविनष्टस्थल सुगम हैं। क्रिथाहि गुणस्थानमें कारों प्रकारका वन्ध होता है। क्याध्वान और बन्धविनष्टस्थल सुगम हैं। क्रिथाहि गुणस्थानमें स्वारों प्रकारका वन्ध होता है। क्याध्वान और बन्धविनष्टस्थल सुगम हैं। क्याधिक स्वाप्त कारों प्रकारका वन्धि होता है। क्याध्वान और बन्धविनष्टस्थल सुगम हैं। क्याध्वानस्थल सुगम स्वाप्त सुगम होता है। सुगम सुगमितिस सुगम

उवरि तिविहो, धुवाभावादो ।

पुरिसंवर-कीथसंजरुणाणं बंघोदया समं वोच्छिण्णा, अणियद्दिश्म तदुद्वयवेच्छेद-दंसणाद्दे । सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधुवरुभादो । कोघसंजरुणस्स बंघो णिरंतरो, धुवर्वधितादो । पुरिसवेदस्स मिच्छाइट्टि-सासणसम्मादिद्दीसु सांतर-णिरंतरो, पृडवक्खपयिद्दि-तिरिक्ख-मणुरसेषु पुरिसवेद मोतृणण्णवेदाणं बंघाभावादो । उवरि णिरंतरो, पिडवक्खपयिद्दि-बंघाभावादो । पच्चम सुगमा । णविर मिच्छाइट्टि-सासणसम्मादिद्दीसु ओशास्त्रियमिस्सप्बजो अवणेयव्यो । चदुसु अमंजदगुणहाणेसु दुगइसंज्ञतो, उविर देवगइसंज्ञतो वंश्वी अगइसंज्ञतो वा । तिगइअसंजदगुणहाणाणि दुगइसंजदासंज्ञते मणुसगइसंजदा च सामी । यंघदाणं सुगमं । अणियद्दिअद्धाणः संबेच्जे मागे गतृण वंघो योच्छिज्जिद । कोषसंजरुणस्स मिच्छाइट्टिन्दि चउच्चिद्धां यंघो । उविर तिविद्दो, पुवाभावादो । पुरिसवेदस्स सादि-अद्धवो, अदुव-वंधितादो ।

माण-माया-लोहसंजलणाणं कोहसंजलणभंगो । णवरि वंथवोच्छेदपदेसो जाणिय वत्तत्वो ।

वहां भ्रव बन्धका अभाव है।

पुरुषवर और संज्वलनफोधका वन्ध व उदय दोनों साथमें व्युच्छिल होते हैं, क्योंकि, श्रतिवृत्तिकरण गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है। स्वादय-परोह्य वन्ध होता है, क्योंकि, वृत्तों प्रकारोंसे ही बन्ध पाया जाता है। संवचलकोधका वन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, वृद्धिह हु ध्ववन्धी है। पुरुषवेदका मिध्याहिष्ट और सासादनसम्यग्दिष्ट गुणस्थानोंमें सान्तर निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, शुक्ल छेदयावाले तिर्यंव व मनुष्योंमें पुरुपवेदको छोदकर अन्य वेदोंके वन्धका अभाव है। अपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रशतियोंने वन्धका अभाव है। अपर निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रशतियोंने वन्धका अभाव है। अपर निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रशत्नामें वन्धका अभाव है। प्रत्याद सुगम हैं। विशेष दनना है कि मिध्याहिष्ट और सासादनसम्यग्दिष्ट गुणस्थानों औदारिक्तिश्रध प्रयत्य कम करना वाहिष्ट । वार असंयत गुणस्थानों में दो गतियोंक असंयत गुणस्थान, दो गतियोंके संयुक्त अथवा अगतिसंकुक्त बन्ध होता है। तीन गतियोंक असंयत गुणस्थान, दो गतियोंके संयतासंयत, और मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं। बन्धाध्वान सुगम है। अनिवृत्तिकरणकालके संख्यात बहुआग जाकर वन्ध उप्रचिक्त होता है। संव्याहिष्ट गुणस्थानमें चारों प्रकारका वन्ध होता है। उरार तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां धुव बन्धका अभाव है। पुरुपवेदका सादि य अधुव क्ल्ब होता है, क्योंकि, वहां अध्ववक्रित है, क्योंकि, वहां अध्ववक्षी है।

संज्वलन मान, माया और लोभकी प्ररूपणा संज्वलनकोचके समान है। विशेषता इतनी है कि वश्यव्युच्छेदस्थानको जानकर कहना खाहिये। हस्स रदि-अय-दुर्गुळाणं बंघोदया समं वोच्छिणणा, अपुष्वकरणचरिमसमय तहुरूय-सम्बेददंसणादो । बंघो सोदय-परोदबो, अद्धुवोदयत्तादो । मिच्छाहिङ्गपहुढि जाव पमत्तसंजदो ति इस्फरदीणं बंघो सांतरो । उत्तरि णिरंतरो, पडिवक्खपयिडिबपाशावादो । अय-दुर्गुळाणं बिस्तरो, पुवर्वाचतादो । पबया सुगमा । णवीर मिच्छाहिङ्ग-सामणतम्मादिङ्गीसु ओहािड्यमिस्स-पच्चो अवणेयन्तो । मिच्छादिङ्ग-सम्मणसम्मादिङ्ग-सम्मामि-छ्छादिङ्ग-सासणतम्मादिङ्ग-सम्मामि-छ्छादिङ्ग-सासणतम्मादिङ्ग-सम्मामि-छ्छादिङ्ग-सासणतम्मादिङ्ग-सम्मामि-छ्छादिङ्ग-सासणतम्मादिङ्ग-सम्मामि-छान्द्र। असंजदम्मानिङ्गा दुगद्रसंजद्यांचा । तिगइमि-छ्छादिङ्ग-सासणतम्मादिङ्गा दुगद्रसंजदात्तंचरा भणुसग्हसंजदा च सामी । बंधद्याणं भंपवीच्छिण्णहाणं च सुगमं । अय-दुगुळाणं मिच्छादिङ्गिङ चउन्विद्यां वंधो, पुवर्वाधाद्यादा । उत्तरि तिविद्यां, युवाभावादा । इस्स-दर्गणं सन्वस्थ सादि अद्भवो, अद्धवंधितादो ।

मणुसाउनस्स वंघवोच्छेदो चेन, सुक्कठेस्साए उदयवोच्छदाणुवर्लभादो। परोदको केंग्रो, सुक्कठेस्साए सञ्चरय सोदएण चंघविरोहादो। णिरंतरो, अंतोसुदुत्तेण विणा वंधुवरमाभावादो। पत्रया सुगमा। णवरि मिच्छादिदि-सासणसम्मादिहि-ससंजदसम्मादिहीसु ओरालियदुग-

मतुष्यायुका केवल बन्धन्युच्छेद ही होता है, क्योंकि, ग्रुक्ललेक्बामें वसका उत्तय-व्युच्छेद नहीं पाया जाता। परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ग्रुक्ललेक्बामें सर्वक स्केत्कर्स उसके बन्धका विरोध है। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुप्रतेके विका उसके बन्ध-विश्रामका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं। विश्रोध हतना है कि मिध्यासुन्हें, सांसावनकान्यावृधि वंडिष्यियमिस्त कम्पद्य-इस्थि जउंतववेदपष्या अवणेदन्ता । मणुसगदसंजुती । देवा सामी ।' भिष्णादद्वि-सासणसम्मादिक-असंजदसम्मादिष्टिणे ति वंपदाणं । वंपवेशिकण्यद्वाणं सुगर्म ।' सारि-असुवो वंपो, असुवर्षपितादो ।

देवाउअसस पुष्यमुद्यस्स पच्छा षेषस्स वोच्छेदो, अप्यमत्तासंजदसम्मादिद्वीषु
षंषोदयवीच्छेदुवरुंभादो । परोदओ षंषो, सोदएण षंषविरोहादो । णिरंतरी, जंतीसहुत्तेण
विणा षंधुवरमामावादो । पच्चया सुगमा । णविर मिच्छादिडि-सासणसम्मादिडि-असंजदसम्मादिद्वीसु वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेयव्या । देवगाइसंज्ञतो षंषो ।
मिच्छाइडिप्पहुढि जाव संजदासंजदा ति तिरिक्ख-मणुसा सामी । उत्तरि मणुसा चेव ।
संषद्वाणं सुगमं । अप्यमत्तद्वाए संखेज्जे भागे गंतृण षंषो वोच्छिज्जदि । सादि-अद्ववो,
अद्यवर्षभिकाहो ।

देवगद्द-चेउन्वियदुगाणं पुब्चमुदयस्य पच्छा बंधस्स वोच्छेदो, अपुब्वासंबदसम्मादिहीसु बंधोद्दयवोच्छेदुवरुंमादे। अवसेसाणं पयडीणं बंधवोच्छेदो चेव, सुक्करेस्साए उदयवोच्छेदाणुव-रुंमादो । देवगद्द-चेउन्वियदुगाणं परोदञ्जो बंधो, सोदण्ण बंधविरोहादो । पंचिंदियजादि-तेजा-

मौर असंयतसम्यष्टृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकद्विक, वैक्तियक्तिभ, कार्मण काययोग, झांबेद भौर नर्षुसकवेद प्रत्यर्योको कम करना चाहिये। मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है। देव स्वामी हैं। मिथ्यादि, सासादनसम्यग्दिष्ट और असंयतसम्यग्दिष्ट गुणस्थान बन्धाप्वान है। बन्धन्युरुक्षेदस्थान सुगम है। सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्रुवबन्धी है।

देवगतिष्ठिक और वैकियिकद्विकके पूर्वेश्वं उदयका और यक्षात् वन्धका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण व असंयतसम्बयहाटि गुणस्थानोमें कमशः उनके वन्ध व उद्यक्त म्युच्छेद पाया आता है। शेष प्रकृतियोका केवल वन्धन्युच्छेद ही है, क्योंकि, शुक्ललेक्यामें जनका उदयस्युच्छेद नहीं पावा जाता। देवगतिद्विक और वैक्षियिकद्विकका परोज्जल वन्ध इ. इ. ४५. कम्मह्यस्परिर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवरुहुअ-तस-बादर-पञ्जत-थिर-सुद्द-णिमिणाणं सोदओ वंषो, पर्थ धुवोदयत्तादो । समच उरससंठाण-पसत्यविद्वायगङ्ग-सुस्सराणं सोदय-परोदओ, उमयद्वा वि बंधाविरोहादो । उवघाद-परघादुस्सास-गंत्रयसरीराणं मिन्छादिष्ठि-सासणसम्मादिष्ठि- असंजदसम्मादिष्ठीसु वंषो सोदय-परोदओ । अण्णत्य सोदओ चेव, अपञ्जतदामावादो । णविर पमतसंवरेसु परघादुस्सासाणं सीदय-परोदओ । सुमगादेञ्जाणं मिन्छादष्ठि-पहुि जाव असंजदसम्मादिष्ठि वि षेषो सोदय-परोदओ । उविर सोदओ चेव, पडिवनस्वर्यमावादो । देवगङ्ग-पंविर्वयादि-वेऽविव्य-तेजा-कम्मइयसरीर-वेऽविव्यसरीरअंगोवंग-वण्ण-सस्न-गंध-फास - देवगङ्ग-पंविर्वयादि-वेऽविव्यव्यक्ति-वेऽविव्यसरीरअंगोवंग-वण्ण-सस्न-गंध-फास - विवायक्षाण्याद्वी-अगुरुवरुष्ठ-उवपाद-परपाद-उस्सास-तस-बादर-पञ्जत-पत्रेयसरीर-णिमिणणामाणं णितरी वंषो, एदय धुवर्वाधिजुवरुमादि । समच उरससंठाण-पसत्यविद्वायगङ्-सुमग-सुस्सर-आदेञ्जाणं मिन्छाइडि-सासणसमाद्वीसु सांतर-णिरंतरो । होटु णाम सुक्करिस्सय-तिरिक्ख-गणुस्सेसु देवगइसंजुतं वंधमाणेसु णिरंतरो वंषो, ण सांतरो १ ण, देवेसु सुक्करिस्सय-तिरिक्ख-गणुस्सेसु देवगइसंजुतं वंधमाणेसु णिरंतरो वंषो, ण सांतरो १ ण, देवेसु सुककरिस्सय-

होता है, क्योंकि, स्वोदयक्षे इनके बन्धका विरोध है। पंजेन्द्रियजाति, तैजस व कार्मण दारीर, वर्ण, गन्ध, रास, स्पर्य, अगुरुव्यु, यस, वादर, पर्योप्त, स्पर, गुम और निर्माणका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवेदयों हैं। समजुरुक्ससंखाल, प्रदास्तिवहायोगाति और सुस्वरका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोसे ही दनके बन्धमें कोई विरोध नहीं है। उपधात, परधात, उच्छ्यास और प्रत्येकदारीरका मिध्यादृष्टि, सासादत्तस्ययदृष्टि और असंयतस्ययदृष्टि गुणस्थानोमें स्वोदय परीदय बन्ध होता है। सम्य गुणस्थानोमें स्वोदय परीदय क्या होता है। स्वयाद्यु क्या अभाव है। विश्वयादृत्ती है कि प्रमत्तसंयनोमें परधात और उच्छ्यासका स्वोदय-परीदय बन्ध होता है। सुभग और आदेयका मिथ्यादृष्टि लेकर असंयतस्ययदृष्टि तक स्वोदय-परीदय बन्ध होता है। सुभग और आदेयका मिथ्यादृष्टि लेकर असंयतस्ययदृष्टि तक स्वोदय-परीदय बन्ध होता है। सुभग और आदेयका मिथ्यादृष्टि लेकर असंयतस्ययदृष्टि तक स्वोदय-परीदय बन्ध होता है। सुभग और आदेयका मिथ्यादृष्टि लेकर असंयतस्ययदृष्टि तक स्वोदय-परीद्य बन्ध होता है। उपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोके अदयका अभाव है।

देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण दारीर, वैक्रियिकदारीरांगोपांग, वर्ण, रस, गम्ध, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपद्यात, परघात, उक्क्वास, जस, बादर, पर्योन्त, प्रत्येकदारीर और निर्माण नामकर्मोका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां दर्म ध्रुववन्धीपना पाया जाता है । समज्ञुरस्नसंस्थान, प्रशस्त-विहापोगति, सुमग, सुस्यर और आन्येयका प्रिथ्वाहिष्ट व सासादनसम्यग्हिष्ट गुणस्थानोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

शंका—इन मकृतियोंको देवगतिसे संयुक्त बांधनेवाले शुक्लकेश्याबाले तियंच व मनुष्यामें निरन्तर बन्ध मले ही हो, परन्तु सान्तर बन्ध होना सम्भव नहीं है ?

समाधान--- पेसा नहीं है, क्योंकि, शुक्छलेश्यावाले देवोंमें उनका सान्तर कथा

सांतर्वभुवरुमादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयिष्ठैवंधामावादो । थिर-सुमाणं मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव पमत्तरंजदो ति सांतरो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयिववंधामावादो ।

पञ्चया सुगमा । देवगइ-वेउन्वियदुगाणं वंघो देवगइसंजुतो । सेसाणं पयढीणं मिच्छादिहि-सासणसम्मादिहि-असंजदसम्मादिहीसु देव-मणुसगइसंजुतो । उत्तरि देवगइसंजुतो । देवगइ-वेउन्वियदुगाणं दुगइमिच्छादिहि-सासणसम्मादिहि-सम्माभिच्छादिहि-असंजदसम्मादिहि-संजदासमादिहि-संजदासमादिहि-संजदासमादिहि-संजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी । अवसेसाणं पयडीणं वंघस्स तिगइमिच्छादिहि-सासणसम्मादिहि-असंजदासमादिहिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी । वंघदाणं सुगमं । अपुन्वकरणद्वाए संखेज्जे भागे गंतृण वंघो वोच्छिज्जदि । तेजा-कम्माइयसरीर-वण्णचउनक-अगुरुज्दुन-उवघाद-णिमिणाणं मिच्छादृहिन्दि वंघो चउन्विद्दो । उत्तरि तिविद्दो, युववंपितादो । सेसाणं पयडीणं सादि-असुवो वंघो ।

आहारदुगस्स ओघभंगो । तित्थयरस्स वि ओघभंगो । दुगइअसं जदसम्मादिद्विणो मणस-

पाया जाता है।

ऊपर मिरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। स्थिर और शुभका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है।

प्रत्यय सुगम हैं। देवगति और वैक्षियिकद्विकका बन्ध देवगतिसंयुक्त होता है। होष प्रकृतियोक्ता बन्ध मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानीम देव व मतुष्य गतिसे संयुक्त होता है। ऊपर देवगतिसे संयुक्त होता है।

देवगति और वैकिथिकद्विकके दो गतियोंके मिध्यादृष्टि, सासादृनसम्बग्दार्ट, सम्बाग्नस्यग्दार्ट, सम्बाग्नस्यग्दार्ट, सम्बाग्नस्यग्दार्ट, असंयतसम्यग्दार्ट व संयतासंयतः तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं। दोष प्रकृतियोंके वन्धेक तीन गतियोंके मिध्यादृष्टि, सासादृनसम्यग्दार्ट, सम्बाग्नस्थान्द्रि, असंयतसम्यग्दार्ट, सम्बाग्नस्थान्द्रि, असंयतसम्यग्दार्ट, दो गतियोंके संयतासंयत, तथा मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं। अन्यास्थान सुगम है। अपूर्वकरणकालके संख्यात बहुभाग जाकर वन्ध्य न्युव्छिक्ष होता है।

तैज्ञस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुख्यु, उपधात और निर्माणका मिण्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है। उपर तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वे भुववन्धी हैं। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्वय बन्ध होता है।

आहारकद्विककी प्ररूपणा ओधके समान है। तीर्थंकर प्रकृतिकी भी प्ररूपणा ओधके समान है। विशेषता इतनी है कि उसके हो गतियोंके असंयतसम्बन्धाः और

सुद्धांजदांसजदणहुढिओ च' सामी ।

णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स मणजोगिभंगो ॥ २७३ ॥

श्रीषादी को एत्य विसेसी? ण, श्रीषम्मि अर्षधगाणसुबळंग्रादो। एत्य पुण ते णस्पि, अजोगीसु ठेस्सामावादो। का ठेस्सा णाम? जीव-कम्माणं संसिठेसणयेरी, मिन्छत्तासंजम-कसाय-जीगा' ति मणिदं होदि। सेसं जसकित्तिसंगो।

बेद्घाणि-एक्कट्ठाणीणं णवगेवज्जविमाणवासियदेवाणं **मंगो** ॥ २७४ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स अत्थे। उच्चेद् । तं जद्या — थीणगिद्धितय-अणंताणुकंषि-चउक्कित्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्यसत्थिविद्यायगृह-दुभग-दुस्सर-अणादेऽज-णीचा –

मनुष्यगतिके संयतासंयतादिक स्वामी हैं।

परन्तु विशेष इतना है कि सातानेदनीयकी प्ररूपणा मनोयोगियोंके समान है ॥२७३॥ अंका—ओष्टर्स क्या क्या केंद्र है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि ओघमें सातावेदनीयके अवन्धक पांच जाते हैं। किन्तु यहां वे नहीं हैं, कारण कि अयोगी जीवोंमें लेहवाका अभाव है।

शंका-लेक्या किस कहते हैं ?

समाधान—जो जीव य कर्मका स्थवन्ध कराती है वह लेह्या कहलाती है। अभिधाय यह कि मिध्यात्व, असंयम, कथाय और योगा ये लेह्या हैं।

शेष विवरण यशकीर्ति के समान है।

द्विस्थानिक और एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा नौ ग्रेवेयक विस्ननवासी देवोंके समान है ॥ २७४॥

इस देशामशंक सुत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है — स्त्यानगृद्धित्रव, अनन्तानुबन्धिवनुष्क, स्रविद, चार संस्थान, चार संहमन, अमशस्तविद्वायोगति, दुर्भग,

१ जाप्रती '-संजदासंजदपहुष्टिसंजदाओ च ' इति पाठः।

२ अ जाप्रकोः 'संकिष्ठिस्सणयरि ', कापता 'संकिश्वस्तणरहय ' इति पाठः ।

१ अन्ती 'कसायाजीगा ' इति पाठः ।

गोदाणि बेद्दाणपयदीको । एत्य अणंताणुवंधिचउक्कस्स वंधोदद्या सुत्रं सेन्सिकण्या । स्तिस्तर्णं पयदीणं प्रवंधे गंची पच्छा उदन्ने नेन्दिकज्जदि, तद्दे। वर्षमांसे पव्यविधं पि वंधो परेत्ते, ध्रवंधित्तारो । इरिस्वेद —च उसंद्राण —च उदंगद्दल-अपस्यावद्वायगद्द —इस्तर-अणादे ज —णीचागोदाणं सितरो, एनसमरण व वंधुवरस्व उत्तरादो । पद्या सुगमा । णतिर नेगारिक्यासस्यवचो अवगेयक्या । इरियंद- च उतंद्राण —च उसंपदण-अपस्यावद्वायगद्द पुगम—दुस्तर —अणादे ज — जीचागोवाणं नेगारिक्य प्रमान । जिल्ला ने स्वाचित्र व अस्तर —अणादे ज — जीचागोवाणं नेगारिक्य प्रमान प्रमान । स्वयं नेप्याव्या एदार्सिं वंधाभावालो । सेनाणं मणुसम्बन्धं संस्वती, देवगईण सह व्यव्यविद्वायगद्द प्रमान्य प्रमान । सेनाणं मणुसम्बन्धं संस्वती, देवगईण सह व्यव्यविद्वायगद्द प्रमान । सेनाणं मणुसम्बन्धं संस्वती, देवगईण सह व्यव्यविद्वाया । योणागिद्वातिय-अणासुवंधिच उक्काणं तिगद्भीचा सामी । सेमाणं पद्धीणं व्यक्त व सामी । सेमाणं पद्धीणं व्यक्त व सामी । सेमाणं पद्धीणं व्यव्यविद्वाया ।

दुस्बर, अनादेय और नीचगोत्र, ये द्विस्थानिक प्रकृतियां हैं। इनमें अनुस्तातुबन्धिकतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्यव्छित्र होते हैं। श्रेप महतियोंका पूर्वमें बन्ध और प्रधान उदय व्यव्यिक होता है, क्योंकि, वैसा पाया जाता है। इन सद ही प्रकृतियोंका बन्ध परीवृत्य होता है। स्त्यामगृक्षित्रय और अनन्तानुबन्धिवनुष्कका बन्ध निरन्तर होता है. क्योंकि, ये अवक्ष्मी हैं। स्विवेदका, चार संस्थान, चार संहतन, अप्रशस्तविद्वायोगति, दर्भग. दश्वर. अनादेय और नीचगोत्रका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी इजका बन्धविधाम पाया जाता है। प्रत्यय सगम हैं। विशेष इतना है कि औतारिकमिश्र प्रत्यवको कम करना चाहिये। स्रीवेद, चार संस्थान, चार संहनन, अप्रशस्तविद्वायोगति, बुर्धम, बुच्चर, अनादेय और नीचगोत्रके औदारिकद्भिक, स्रविद और नपुंसकवेद प्रत्ययोको कम करना चाहिये. क्योंकि, शुक्छछेस्यामें इस प्रकृतियोंके बन्धका सभाव है। स्त्याक्षशक्षित्रय और अनन्तान्यन्धियत्कका देव व मन्त्यगतिसे संयुक्त बण्य होता है। शेष मक्तियोक्ता मनुष्यगतिसे संयुक्त बण्य होता है, स्पीक्त, देवतिके साथ उनके बण्यका विरोध है। स्पानगृद्धित्रय नीर जनण्यानुबण्यित्रय तीन गतियोंके जीव सामी हैं। दोव प्रकृतियोंके कथके देव सामी हैं। बन्धाध्वान और बन्धव्यविक्रमस्थान सगम हैं। अवबन्धी प्रकृतियोका मिथ्यादिष्ट गुणस्थानमें बारों प्रकारका बन्ध होता है। सासाइन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता है. क्योंकि. क्ट्रों अलाहि और अब कथका अभाव है। शेष प्रकृतियाँका सावि य अध्रव बरश होता है.

१ सं-काशत्वोः ' सुनककरताप् तिगदमण्यत्तेता एपार्ति ', जामती ' सुनककरताप् तिगदमण्यतस्य पदावि ' वृति पादः ।

सादि-अदुवी, अदुववंधितादी ।

मिन्छत-णबुंसयवेद-डुंडसंठाण-असंपत्तसेवहसंघडणाणि एयाद्वाष्णपदांजो । एत्य मिन्छत्तस्त षंघोदया समं वोच्छिण्णा, मिन्छाइडिन्हि चेव तदुइर्यदंसणादो । णंउसयवेद-असंपत्तसेवहसंघडणाणं पुन्वं बंधो पन्छा उदजो वेन्छिज्जादि, तहोवर्ठमादो । हुंडसंठ्यणस्स बंधवोच्छेदो चेव, सुक्करेरसाए उदयवोच्छेदाभावादो । मिन्छत्तस्त बंधो सोदजो । सेसाणं तिण्णं पि परोदजो । मिन्छत्तस्त णिरंतरो । सेसाणं सांतरो । मिन्छत्तस्त दुगङ्संजुत्तो । सेसाणं मणुसगद्दसंजुत्तो । मिन्छत्तस्त तिगइया सामी । सेसाणं देवा । बंधदाणं बंधवेनिच्छण्णहाणं च सुगमं । मिन्छत्तस्त चउन्विहो बंधो । सेसाणं सादि-अद्धवो ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धियाणमोघं ॥ २७५ ॥ णस्य एत्य श्रोषपरुवणारो को वि विसेसो, तेण श्रोषमिटि जडजेटे ।

क्योंकि, वे अध्यवनधी हैं।

मिध्यात्व, नपुंसकवेद, हण्डसंस्थान और असंप्राप्तस्यादिकासंहनन, ये एकस्थान प्रकृतियां हैं। इनमें मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों साधमें म्युच्छिल होते हैं, क्योंकि, मिथ्यात्वि गुणस्थानमें ही वे दोनों देखे जाते हैं। नपुंसकवेद और असंप्राप्त-स्यादिकासंहननका पूर्वमें बन्ध और प्रभात उदय न्युच्छिल होता है, क्योंकि, वसा पाया जाता है। हुण्डसंस्थानका बन्धन्युच्छेद हो है, क्योंकि, ग्रुक्तलेद्यामें उसके उदयन्युच्छेदका अभाव है। मिथ्यात्वका बन्ध स्वोदय होता है। दोष तीनों प्रकृतियाँका पराद्य बन्ध होता है। मिथ्यात्वका वन्ध स्वोदय होता है। दोष प्रकृतियाँका सान्तर बन्ध होता है। मिथ्यात्वका विरान्तर और दोष प्रकृतियाँका मानुष्यगति संयुक्त बन्ध होता है। मिथ्यात्वक बन्ध होता है। मिथ्यात्वक बन्ध होता है। मिथ्यात्वक बन्ध होता है। मिथ्यात्वक बन्ध होता है। सिथ्यात्वक बन्ध होता है। सिथ्यात्वक बन्ध होता है। सिथ्यात्वक बन्धक तीन गतियोंके जीव स्वामी हैं। होष प्रकृतियोंके वेद स्वामी हैं। होष प्रकृतियोंका सादि व अधुव बन्ध होता है।

भव्यमार्गणातुसार भव्यसिद्धिक जीवोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २७५ ॥ चूंकि यहां ओघपरूपणासे कोई भेद नहीं है भत एव ' भोषके समान है 'येखा कहना योग्य है ।

१ अ-कामकोः ' तद्वदय- ' इति पाठः ।

अभवसिद्धिएषु पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत-सोलसकसाय-णवणोकसाय-चढुआउ-चढुगइ-पंचजादि-ओरा-लिय-वेउिवय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालिय-वेउिवयअंगो-वंग-छसंघडण-वण्ण-गंभ-रस-फास-चत्तारिआणुपुज्वी-अगुरुवलहुव-उव -घाद-परघाद-उस्सास-आदावुज्ञोव-दोविद्यायग्द-सस-बादर-थावर-ग्रुहुम-पज्जत-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुद्वासुद्व-सुमग-दुमग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणोदेज्ज-जसिकिति-अजसिकित-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराह्याणं को बंधो को अवंधो ? ॥ २७६ ॥

सुगम ।

सब्वे एदे बंधा. अबंधा णत्थि ॥ २७७ ॥

प्दस्स देसामासिबसुतस्स अत्थपरूनणा कीरदे — एदासु पयडीसु एत्य ण कार्सि पि षपोदयवोच्छेदो अत्थि, उवलभगाणाण वोच्छेदविरोहादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-

अभव्यसिद्धिक जीवों में पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, मिण्यात्व, सोठह कपाय, नौ नोकषाय, चार आयु, चार गतियां, पांच जातियां, जीदारिक, वैिक्षियक, तैजस व कार्मण शरीर, छह सस्यान, औदारिक व वैिक्षियक अभोषांग, छह संहनन, वर्ण, गन्य, रस, स्पर्श, चार आनुप्तीं, अगुरुठष्ठ, उपधात, परधात,उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विद्वायोगतियां, त्रस, बादर, स्थावर, स्प्रस्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारणश्ररीर, स्थिर, अस्यर, धुम, अश्वभ, सुमा, दुर्मग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनोदेय यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच व ऊच गोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्यक है है ॥ २७६॥

यह सूत्र सुगम है।

ये समी बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २७७ ॥

इस देशामर्शक खुबके अर्थकी प्रक्षण करते हैं— इन प्रकृतियोंमें यहां फिन्हीं के भी बच्च और उद्यक्त स्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, विद्यमन होनेसे उन दोनोंके खुच्छेदका विदोच है। पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिण्यास्त, वैकस व कार्मण शरीर, विकंत्र रेकः के स्ववृत्त्वस्ति-वक्षणव उक्क- अगुरुअल्डु अ-विराक्तिः सुद्दाश्चर्दः विनिध्य - पंकत्तावर्षाणं स्वेक्को वंशे । पंचरं सणावरणीय-सादासाद-सोल्यकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्त्व- पणुस्ताउ-तिरिक्त्व- मणुस्तवद्- पाँचेदियजादि- ओराल्यिसीर - क्रसंत्रणः - ओराल्यिसीरांगांवय- क्रसंप्रवण्-तिरिक्त्व- मणुस्तवद्वानाणुपुत्र्यी- उवचाद-परपाद- उस्सास- आदासुञ्जोव - दोविद्वायगद्- तस-पावर-वादर- सुद्दुय- पञ्चत- अपञ्चत- पत्ति स्तादाणसरिर-सुवग- दूमग-सुस्सर- कुस्सर- अपञ्च-क्ष्मदेवज- क्सकिति- जवसिकिति- गणुद्व- गोग्दाणं सोदय-परेदको वंशे । देवाउ-णित्याउ-देवगद्व- वेत्तवद्वाओग्याणुपुत्र- गिर्यगद-गिर्यगद्वाओग्याणुपुत्री- वे उन्वियससरिगोवंगाणं परो-वंशे वंशे, सोदरण वंशविरोद्वादे ।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त सोलसकसाय-भय-दुसुंछा- चत्तारिआउ-तेजा-कम्मइयसरीर-चण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उत्तथाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो वंषो, एगसमप्ण बंधुवरमाभावादा । सादासाद-इस्पि-णउंसयवेद-इस्स-रिः अरदि-सोग-णिरयगइ-एईदिय-वीइंदिय-चीइंदिय-चर्डरिदयजादि-यंचसंठाण-छसंघडण-गिरयगइशओग्गाणुपुच्ची-आदा-उज्जोव-अप्पसत्यविदायगइ-यावर-सुद्धम-अपज्जत-साहारणसरीर-थिराथिर-सुद्धासुद-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-असिकिति-अजसिकतीणं सांतरी कंषो, एगसमप्ण बंधुवरमदंसणादो ।

वर्णादिक चार, अगुरुउषु, स्थिर, अस्थिर, शुप्त, अशुप्त, क्षिमीण और पांच अस्तरायका लीद्य वन्ध होता है। पांच वृश्चेतावर्षणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कपाय, नी नोकपाय, तीर्यायु, मुज्यायु, दिवंगादि, मुज्यायि, पंचेटिट्रय जाति, औदारिकशारीर, छह संस्थान, औदारिकशारीर, छह संस्थान, औदारिकशारीरांगांगांग, छह संस्थान, तियंगाति व मुज्यादि प्रायोग्यायुवृष्टी, उपधात, एरखात, उरुख्वास, आताय, उचोत, हो खिहायोगितयां, त्रस, स्थावर, बाहर, स्वस्त, पर्यान, अपर्याप्त, असे व साधारण शारीर, सुभ्रग, दुस्तर, अस्वर, स्वस्त, पर्याप्त, अपर्याप्त, मत्येक व साधारण शारीर, सुभ्रग, दुस्तर, अस्वर, अस्वर, अस्वर, अस्वर, स्वाप्त, स्वप्त, स्वप्त

पांच बानावरणीय, नी व्रांनावरणीय, प्रिष्यात्व, सालह कथाय, अय, जुगुष्वा, वार आयु, तेजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गण्ध, रस, स्पर्य, अगुरुलपु, उपधात, निर्मण और पांच अस्तरायका तिरस्तर बच्च होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बण्यविकासका अभाव है। साता व असाता वेदनीय, अलेंबर, जपुसंकंबर, हास्य, रति, जरति, शोक, नरकाति, प्रकेरिन्न्य अति, पांच संस्थान, छह संहनन, नरकाति, प्रकेरिन्न्य, ग्रीनिन्न्य, जीति, पांच संस्थान, छह संहनन, नरकाति, वांच सार्यान, स्वावर, सुद्म, अध्योच्य, साधारजाशीर, स्थिवर, सुद्म, अध्योच्य, साधारजाशीर, स्थिवर, सुद्म, अध्योच्य, अध्यास्ताविकायोगांत, स्थावर, सुद्म, अध्योच्य, अध्यास्ताविकायोगांति, स्थावर, सुद्म, अध्योच्य, अध्यास्ताविकायोगांति, स्थावर, सुद्म, अध्योच्य, अध्यास्ताविकायोगांति, स्थावर, सुद्म, अध्योच्य, अध्यास्ताविकायोगांति, स्थावर, स्थावर, सुद्म, अध्यास्ताविकायोगांत्र, स्थावर, स्थावर, सुद्म, अध्यास्ताविकायोगांत्र, स्थावर, स्थाव

पुरस्विषयस्य वंको स्रांतर-विरंतरो । कुदो १ पम्म-सुनकलेस्सिएसु किरंतरवंशुमलंबादो । देवगइ-पंचिदियजादि-वेउल्यियसरीर-समचउरससंद्राण-वेउल्ययसरीरकंगोवंग-देवगइशाकोम्माशु-पुष्ती-परसदुस्सास-पसत्यविद्वायगइ-तस-वादर-पज्जत-पत्तेयसरीर-सुमग-सुस्सर-ब्रादेज्ज-उच्चायदाणं सांतर-विरंतरो वंको । कुदो १ असंखेजजवासाउम-सुद्दितलेस्सियतिरिक्ख-मुस्स्सिसु च किरंतरवंशुबल्लमादो । मणुसगइ-मणुसग्रशकोम्माशुज्जीणं वंको सांतर-विरंतरो । कुदो १ आणदादिदेवेसु किरंतरवंशुबल्लमादो । तिरिक्खानुवलीरिक्खानुवलीर्माशुणुपुज्जी-ब्रावायगं वंको सांतर-किरंतरो । कुदो १ तेउ-वाउकाइएसु सत्तमपुद्वीभरहएसु च किरंतरवंशुबल्लमादो । ब्रोतालियसरीर-ब्रोतालियसरीरगोवंगाणं सांतर-किरंतरो, सणक्कुमारादि-देव-केरदस्य किरंतरवंशुबल्लमादो ।

सम्बक्तम्माणं पंचवंचास पञ्चया । णविः तिरिक्ख-मणुस्साउआणं तेवंचास पञ्चया, वेउन्वियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । देव-णिरयाउआणं एक्कवंचास पञ्चया, वेउन्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । देवगइ-वेवगइपानाम्माणुपुन्ती-णिरस्मह-णिरयगइपाओग्माणुपुन्ती-वेउन्वियसरीर-वेउन्वियसरीरंगोवंगाणमेक्कवंचास पञ्चया, वेउन्विय-

जाता है। पुरुषवेदका सान्तर-निरम्तर बन्ध होता है, क्योंकि, पद्म श्रीर गुक्ज लेक्ष्यावालं जीवोंमें उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। देवगति, पंकेरिद्रयजाति, वैकियिकारारीर, समक्तुराइसंस्थान, वैकियिकारारीरांगोपांग, देवगतियायोग्याजुर्षी, परावात, उच्छ्वास, प्रशास्त्रीवहायोगाति, ऋस, बादर, पर्याच, प्रत्येकहारीर, सुभग, सुस्वर, आदेय श्रीर उच्चयोगका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, असंस्थातवयांपुष्क श्रीर होभ तीन लेक्ष्यावाले विर्यय व समुष्योंने उनका निरन्तर बन्ध होता है, असंस्थातवयांपुष्क श्रीर होभ तीन लेक्ष्यावयांपुष्क श्रीर होभ तीन स्वत्यपातियायोग्याजुर्पीका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, अर्थोंके, श्रान्तवादिक देवोंगे उनका निरन्तर वन्ध पाया जाता है। विर्यगाति, लिर्फ-गातिमायोग्याजुर्पी श्रीर नीचयोगका सान्तर-निरन्तर वन्ध पाया जाता है। स्वर्योक्त, तेज व बायु कालिक श्रीवोंमें तथा सरकार पृथिवीके नारिकयोगिंग उनका निरन्तर वन्ध पाया जाता है। स्वर्योक्त, सिक्क्यारायी वीद श्रीर श्रीदारिकारीरायोगपांम सान्तर-निरन्तर वन्ध दाता है, क्योंकि, समस्क्रमारायी देव व नारिकारीयोगिं उनका निरन्तर तथा होता है, क्योंकि, समस्क्रमारायी देव व नारिकारीयोगिंग जनका निरन्तर तथा होता है, क्योंकि, समस्क्रमारायी देव व नारिकारीयोगिंग जनका निरन्तर वन्ध पाया जाता है।

सब कर्मोंके प्रवक्त प्रत्यय हैं। विशेष इतना है कि तिर्वगायु और अनुष्यायुक्ते विराम प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैकिविकनिश्र और कार्मण प्रत्ययोक्ता अभाव है। देवालु और कार्मण प्रत्ययोक्ता अभाव है। देवालु और कार्मण सरस्य हैं, क्योंकि, वैकिविकारिक, औदारिकिमिश्र और कार्मण प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैकिविकारिक, अपनित्यायोक्यायुक्तीं, निकिविकारिद और वैकिविकारिद और वैकिविकारिद और वैकिविकारिद और वैकिविकारिद और वैकिविकारिद और वैकिविकारिद और हम्यावन प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैकिविकारिक, श. १.४. १८.

दुगेराठियभिस्स-कम्मइयपद्ययाणमभावादो । बीडंदिय-तीडंदिय-चर्डारेंदियजादि-सुदुम-अपज्जत-साद्दारणाणं तेवंचास पञ्चया, वेउन्वियदुगाभावादो ।

देवाउ-णिरयाउ-देवगइ-णिरयगइ-बीइंदिय-तीइंदिय-च उरिंदियजादि-वे उञ्चियस्सरीर-

बोदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययांका अभाव है। द्वीन्द्रिय, श्रीन्द्रियः चतुर्गिन्द्रय जाति, सुक्त, अपयोक्त और साधारणके तिरपन प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके विकिथकद्विकका अभाव है।

साताबेदनीय, स्त्रींबद, पुरुपवेद, हास्य, राति, प्रशस्तविहायांगाति. समस्वतुरस्नसंख्यात, स्थिर, ग्रुम, युध्यग, युस्यर, आदेव और यशकीतिका तीन गतियाँस संयुक्त बन्ध होता है, स्योंकि, हनके साथ नरकगतिकं वन्धका अभाव है। नारकायु, नरकगति और नरकगति प्रावेपायुप्वींका नरकगतिसंयुक्त बन्ध होता है। देवायु, देवगति और नदकगतिप्रायोग्यायुप्वींका त्रवातिसंयुक्त बन्ध होता है। हार्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिस्रायोग्यायुप्वींका मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है। तिर्थगायु, निर्यगति व तिर्थगतिप्रायोग्यायुप्वींका मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है। तिर्थगायु, निर्यगति व तिर्थगतिप्रायोग्यायुप्वींत तथा वाद जातियां, आताप, उद्यात, स्थायर, सक्ष्य और साधारणका निर्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है। श्रीक्रियक्तरारिः और विक्रियक्तरारिरागोगिका देव पर्व नरक गतिसे संयुक्त बन्ध होता है। श्रीक्रियक्तरारिर औदारिकतरारिरागोगिका वार संस्थान, प्रक्र संक्रमक्त और आपवीप्त नामकर्मोक्ता तिर्थगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। दुण्डसंस्थान, अप्रदास्तविहायोगाति, अस्यर, अशुभ, दुभ्य, अन्तर, अनतिय और नीचगोगक्ता तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, स्योंकि, हनके साथ देवगतिके बन्धका अभाव है। उच्बगोवका देवगतिके बन्धका अभाव है। उच्बगोवका देवगतिका बन्ध नहीं होता। श्रेष प्रकृतियाँका बन्ध चारी गतियोंसे संयुक्त होता है। स्वातिका बन्ध नहीं होता। श्रेष प्रकृतियाँका बन्ध चारी गतियोंसे संयुक्त होता है।

देवायु, नारकायु, देवगति, नरकगाति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति,

अंगोर्चग-णिरयगद्द-देवगद्दपञ्जोग्गाणुपुन्नी-सुद्धम-अपञ्जत-साहारणसरीराणं षंघस्स तिरिवस्त मणुसा सामी । एइंदियजादि-आदाव-थावराणं तिगदिभच्छाद्दती सामी, णरहयाणमभावादी । अवसेसाणं पयडीणं चउगद्दमिच्छाद्दती सामी, तेर्सि तन्त्रपविरोद्दामावादो ।

बंघदाणं णस्यि, एक्कस्टि गुणहाणे अद्धाणविरोहादो । बंधवोच्छेदो वि णस्यि, एस्य उत्तासेसएयडीणं बंधवरुमादो । बज्झमाणपयडीसु धुवबंधीणमणादिओ धुवो बंबो । अवसेसाणं सादि-अदुवो ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइद्वीसु खहयसम्माइद्वीसु आभिणिबोहिय-णाणिभंगो ॥ २७८ ॥

जहा आभिणिबे।हियणाणपरूचणा कदा तथा णिरवसेसा कायच्या, बिसेसाभावादो । णवरि खहयसम्माइडिसंजदासंजदेसु उच्चागोदस्स सोदओ णिरंतरो बंघो, तिरिक्खेसु खहय-सम्माइडीसु संजदासंजदाणमणुवरुंभादो । मणुसाउअं बंधमाणाणिमिरियवेदपच्चओ णिरिय, देव-णिरइएसु इरियंवदखइयसम्माइडीणमभावादो । एत्तिओ चेव विसेसो । अण्णो जदि अरिय सो

बैकियिकदारीर, वैकियिकदारीरांगोपांग, नरकगति व देवगति प्रायोग्यातुपूर्वी, सुक्ष्म, अपर्यंग्त और साधारणदारीर, इनके बन्धके तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं। एकेन्द्रिय जाति, आताप और स्थावर्क तीन गतियोंके मिथ्याहिए स्वामी हैं. क्योंकि, नारकियोंके इनका बन्धे नहीं होता। देशप कहतियोंके वन्धके चारों गतियोंके मिथ्याहिए स्वामी हैं, क्योंकि, जनके इन प्रकृतियोंके वन्धक कोई विरोध नहीं है।

बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है। बन्धव्युच्छेड् भी नहीं है, क्योंकि, यहां सुत्रेक सब प्रकृतियोंका वन्ध पाया जाता है। बष्यमान प्रकृतियोंमें भुवबन्धी प्रकृतियोंका अनादि व भुव बन्ध होता है। रोप प्रकृतियोंका सादि व अभुव बन्ध होता है।

सम्यत्त्वसार्गणानुसार सम्यग्दिष्ट और क्षायिकसम्यग्दिष्ट जीवोंमें आभिनिवोषिक-ज्ञानियोंके समान प्ररूपणा है ॥ २०८ ॥

जिस प्रकार आभिनिवेधिकहानी जीवोंकी प्रकरणा की गई है उसी प्रकार पूर्णक्षसे यहां भी करमा चाहिये, क्योंकि, उनसे यहां कोहें भेद नहीं है। विद्योग इतना है कि झाधिकसम्यग्दिए संयतासंयतोंमें उच्चयोगका स्वोद्य एवं निरस्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तिर्येच झाधिकसम्यग्दिएयोंमें संयतासंयत जीव पाये नहीं जाते। मनुष्पायुक्ते बांधनेवाले जीवोंके क्रीवेद प्रस्था नहीं है, क्योंकि, देव व नारिक्योंमें जीवेदी सुर्थिकसम्यग्दिएयोंका बनाय है। इतनी ही यहां विद्योपता है। बन्य कोई बिद् वितिक वत्तन्त्रो । पयडिवंधगयभेदपरूवणद्वमृत्तरसुत्तं भवदि---

णवरि सादावेदणीयस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २७९ ॥ सुगर्ग ।

असंजदसम्मादिद्विप्पहुडि जाव सजोगिकेवली वंभा। सजोगिकेविलअद्धाए चरिमसमयं गंतूण वंधो वोन्छिज्जदि। एदे वंभा, अवसेसा अवंधा।। २८०॥

एदं पि सुगमं, बहुसी उत्तत्थतादीं ।

वेदयसम्मादिट्टीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादावेद-णीय-चउसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रिद-भय-दुगुंछ-देवगदि-पांचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवधाद-परधाद-उस्सास-पसत्यविद्दायगइ-तस-बादर-पजत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-

विद्येषता है तो उसे विचारकर कहना चाहिये । प्रकृतिवन्धगत भेदंक प्ररूपणार्थ उत्तर सुत्र कहते हैं---

विशेष यह कि सातावेडनीयका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥२७९॥ यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्यग्द्धिसे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं। सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेप अबन्धक **हैं।। २८०**।।

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, इसका अर्थ बहुत बार कहा जा शुका है।

वेदकसम्यग्दिथोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, सातावेबनीय, चार संज्वरुन, पुरुष्वेद, हास्य, रित, भय, खगुऱ्या, देवगित, पंचेन्द्रिय जाति, वैकिश्वेक, तैजस म कार्यण ग्रारीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैकिश्विकशरीशंगोर्पाण, वर्ण, गन्ध, रस, स्वर्श, देवगित-प्रायोग्यातुपूर्वी, अगुरुरुष्ठ, उपचात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविद्वायोगिति, वस, सादर,

१ मतिषु ' बचडावी ' इति पाउ. ।

सुस्सर-आदेष्ज-जसिकति-गिमिण-तित्थयरुज्वागोद-पंचंतराइयाणं को वंघो को अवंघो ? ॥ २८१ ॥

एत्य बक्खर्यचारं काऊन पण्यासः पण्णवंषा उत्यादयन्या । केहं क्वणं । असंजदसम्मादिष्टिप्पहुष्टि जाव अप्यमत्तसंजदा वंधा । ष्टे वंधा, अवंधा णस्यि ॥ २८२ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्य परूषणा कीरदे— देवगद्वः वेउव्विवद्वुवाणमस्वदसम्मा-दिद्विन्द्वि उदवो बोन्क्रिणणे पुल्वमेव । बंचबोच्क्रेदो णत्यि, उवरिन्दि बंधुवरुंमादे। । तित्य-यरस्स णत्यि उदयवोच्क्रेदो, एदेसु उदयामावादो । बंचवोच्क्रेदो वि णस्यि, उवरुंममाणतादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधोदयाणं दोण्यं पि वोच्क्रेदामावादो उदयादो बंचो बुच्चं पच्का बा वोच्क्रिण्णो ति ण परीक्क्षा कीरदे ।

पंचणाणावरणीय-च उदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मिश्यसरीर-वण्ण-गंघ रस-फास-अगुरुवलहुव-तस-षादर-२ऽजत-थिर-सुदु-णिमिण-पंचंतराह्याणं सोदओ वंघो, एरथ धुवो-

ष्योप्त, प्रत्येकक्षरीर, स्थिर, शु.म, सुभग, सुस्वर, आवेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थकर, उन्यमोत्र और पांच अन्तराय, इनका कीन बन्धक और कीन वयन्धक है ? ॥ २८१ ॥

वहां अक्षसंचार करके चौदह गुणस्थान और खिद्रोंके आश्वयसे एक संयोगी एन्द्रइ प्रक्रमंगीको उत्पक्ष करना चाहिये। शेष स्वार्थ सुगम है।

असंयतसम्बन्धिः लेकर अप्रमत्तसंबत तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं॥ २८२॥

इस देशायर्शक सूचकी प्रक्षण करते हैं—देवगति और वैक्रियेस्क्रिकका इस मसंवक्तस्यनदि ग्रुमस्थायमें पूर्वेत ही स्कुत्किक हो जाता है। वस्त्रस्युच्छेद नहीं है, स्पॉकि, ऊपर बच्च पाया जाता है। तीर्यकर महितका उदयन्युच्छेद नहीं है, स्पॉकि, इपर बच्च पाया जाता है। तीर्यकर महितका उदयन्युच्छेद नहीं है, स्पॉकि, स्पंचित, क्यांचित, त्रा पाया जाता है। शेष प्रकृतियोंके बच्च और उदय दोनोंक मी स्युच्छेदका नमाव होनेले 'उद्यक्ती अपेक्षा बच्च पूर्वेत अपवा बमाच स्वृच्छिद होता है' सह स्पंचित वर्षों की आती है।

योच ब्रालाबरबीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेल्ट्रय जाति, तेजस व कार्यण शरीर, वर्ण, जन्म, रस, स्वर्श, जगुरससु, वस, वादर, पर्यान्त, स्थिर, शुल, निजील कीर बांच दंशकारो । णिदा-पयला-सादावेदणीय-च उसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रिद-भय-दुगुंछ-समचज्रस-संग्रण-पसत्यविद्यायाद-सुस्सराणं सोदय-परोदओं बंधो, दोहि वि पयोरीह बंधुवलंभादो । देवगइ-वेजिवयदुग-तित्थयराणं परोदओं बंधो, सोदएण बंधविरोहादो । उवधाद-परचाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं असंजदसम्मादिष्टिन्हि बंधो सोदय परोदओ । उविर सोदओं वेव, तत्य अपञ्जतद्वाण् अभावादो । णविर पमत्ततंजदिम परधादुस्सासाणं सोदय-परोदओ । सुभगादेज-जसिक्तीणमसंजदसम्मादिष्टिन्दि बंधो सोदय-परोदओं । उविर सोदओं वेव, पिडवनस्वदया-भावादो । उच्चागोदस्स असंजदसम्मादिष्टिन् संभादे संजदासंजदेसु बंधो सोदय-परोदओं । उविर सोदओं वेव, पिडवनस्वरयाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-चद्संजरुण-पुरिसवेद-भय-दुगुंख-देवगइ-पंचिदिय-जादि-चेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-चेऽव्वियसरीरअंगोवंग-चण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुर्व्वी-अगुरुवरुहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविद्दायगइ-तस-बादर-पठजत-पत्तेयसरीर-सुमग्-सुस्सर-आदेठज-णिमिण-तित्थयरुबागोद-पंचेतराहयाणं बंघो णिरंतरो,

अन्तरायका स्वेदय बन्ध हाता है, क्योंकि, यहां ये धुवेदयी हैं। निद्रा, प्रचला, स्वतावदत्तीय, चार संउवका, पुरुपंदर, हास्य, रति, अय, ग्रुपुण्ता, समचतुरकासंस्थान, प्रदास्तविहायोगित और सुस्वरक स्वेदय-परोद्य बन्ध हाता है, क्योंकि, दोनों भी प्रकारों से उनका बन्ध पाया जाता है। देवानिहिक, वैक्षितंदिक और गीर्थक का परोच्य बन्ध होता है, क्योंकि, स्वेदयसे इनके बन्धका विरोध है। उपधात, परधात, उच्छवास और प्रत्येकशरीरका असंयतसम्यवदि ग्रुणस्थानमें स्वेदय-परोद्य बन्ध होता है। उपप्रत्य का असंयतसम्यवदि ग्रुणस्थानमें स्वेदय-परोद्य बन्ध होता है। अपर स्वेदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, व्यव्याक्त के अस्य होता है। अपर स्वेदय और उच्छवासका स्वादय-परोद्य बन्ध होता है। सुमा, आदेय और उच्छवासका स्वादय-परोद्य बन्ध होता है। अपर स्वेदय और व्यव्याक्त का प्रत्येक्ष का स्वादय-परोद्य वन्ध होता है। उपर स्वेदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिकों बन्धका सभाव है। उपर स्वेदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिक उद्यक्त अभाव है। उपर स्वेदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिक उद्यक्त अभाव है। उपर स्वेदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिक उद्यक्त अभाव है।

पांच झानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, चार संज्वलन, पुरुषवेद, अय, पुगुष्सा, देवनति, पंचेन्द्रिय जाति, वैकिथिक, तेजस व कार्मण शरीर, समबतुरस्त्रसंस्थान, वैकिथिक-शरीरांगीयांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पशं, देवगतिप्रायोग्यातुपूर्वी, अग्रुक्छपु, उपमात, प्रचात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगाति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुम्मा, सुस्वर, भादेय, निर्माण, तीर्थंकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका निरस्तर वन्ध दोता है, क्यीकि, एमसमएण चेश्वरामामावादो । सादावेदणीय-हस्स-रदि-यिर-सुम-जसकितीणं अर्धजदसम्मादिष्टि-प्यहुडि जाव पमत्तसंजदो ति बंघो सांतरो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्सपयडिवंप्रामानादो ।

पन्चया युगमा, भोषपवण्रहिता विसेसामावादो । देवगड्-वेउव्वियदुगाणं देवगड्-संज्ञता । सेसाणं पर्यकीणं असंजदसम्मादिद्वीसु बंबो दुगद्दसंज्ञता । उवरिमेसु देवगद्दसंज्ञता । देवगड्-वेउव्वियदुगाणं तिरिक्ल-मणुसअसंजदसम्मादिद्वि-संजदासंजदा सामी । तिरम्यरस्स् तिगद्दअसंजदसम्मादिद्विणो सामी, तिरिक्खगईए वभावादो । उवरिमा मणुसा बेव, तेसिमण्णत्थामावादो । सेसाणं पयडीणं चउगद्दअसंजदसम्मादिद्विणो दुगद्दसंजदासंजदा मणुसगद्द-संजदा च सामी । बंधदाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णिरिथ, 'अबंघा णिर्य ' ति वयणादो । भुवबंधीणं तिविद्यो बंधो, धुवाभावादो । सेसाणं सादि-अद्धवी, अद्भवबंधितादो ।

असादावेदणीय-अरिद-सोग-अथिर-असुह-जसिकितिणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २८३ ॥

एत्य पण्णभंगा जाणिय वत्तव्वा ।

एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है। सातावेदनीय, हास्य, रति, स्थिर, शुभ और यशकीर्तिका असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक सान्तर बन्ध होता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है।

प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है। देवगतिहिक और विकिथिकहिकका देवगितमंगुक्त बन्ध होता है। शेष प्रकृतियोंका असंयतसम्यग्दिष्टियोंमें दो गितियोंसे संयुक्त बन्ध होता है। उपिम गुक्तस्थानोंमें देवगितसंगुक्त बन्ध होता है। उपिम गुक्तस्थानोंमें देवगितसंगुक्त बन्ध होता है। देवगितियोंक और विकिथिकहिकके तिर्यंच व मगुष्य असंयतस्यग्दिष्ट संयतासंग्रत लामी हैं। तीर्थंकर प्रकृतिके तोन गितयोंके असंयतस्यग्दिष्ट लामी हैं, क्योंकि, तनका अन्य गतियोंमें अभाव है। उपिम गुक्तस्थानवर्ती मगुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, जनका अन्य गतियोंमें अभाव है। शेष ग्राह्मतियोंके चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दिष्ट, हो गतियोंके संयतासंग्रत और मगुष्यगतिक संयत स्थामी हैं। बन्धान्तान सुगम है। बन्धन्युक्तेवन नहीं हैं, स्थाकि, अवन्धक नहीं हैं 'पेसा सुनमें निर्देष्ट हैं। ध्रुवक्यी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, स्थांकि, ध्रुवक्यक अभाव है। शेष प्रकृतियोंका तादि व अधुवक्यों हैं।

असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकिर्ति नामकर्मक। कौन यन्यक और कौन अवन्यक है ? ॥ २८३ ॥

यहां प्रश्नसंगोको जानकर कहना चाहिय।

असंजदसम्मादिष्टिपहुडि जान पमत्तसंजदा नंभा । **ए**दे नंभा, अनमेमा अनंभा ॥ २८४ ॥

प्यस्पत्यो बुबदे — अरिः सोग-असादावेदणीय-अधिर-अधुसाणं वंववीय्केदो वेव । इद्यक्षेत्रकोर गिला, उविरिन्द्र इद्यस्तुन्दमादो । अअसिक्तीए पुज्यपुदयस्स पच्छा वंवस्स केच्केदो, पमतासंवदसम्मादिष्टीषु वंशोदयवीय्केदुन्दमादो । असादावेदणीय-अरिद-सोसाणं वंवी सोदय-परीदओ, दोहि वि पयोरिह वंयुन्दमादो । अधिर-अधुद्वाणं सोदओ वेव, वुवीदवक्तदो । अञ्चलिक्तीए असंवदसम्मादिष्टिम्ह सोदय-परीदओ । उविर परीदको वेव, परिवक्तमुद्वयावावादो । एदासि उण्हं प्यहीणं वंधी सांतरी, एगसमएण वि वंयुवरमदसणादो ।

पन्चया सुगमा, बहुसे। उत्ततादी'। देव-मणुसगइसंज्ञतो घेव, अण्णनसंबाधावास्त्री। चडमहर्वसंबदसम्मादिहिणो हुमहसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी । बंघदाणं बंध-बोच्छिण्णहाणं च सुगमं । सच्चासिं बंधो सादि-अखुवो, अजुवंधिचादो ।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं॥ २८४॥

इस स्वका अर्थ कहते हैं — अरित, होक असातावेदनीय, अस्थिर और अधुभका यम्बन्धुच्छेद ही है। उदयन्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर उनका उदय पाया जाता है। अयदाकीतिंके पूर्वेसे उदयका और पश्चात् कम्बन्ध च्युच्छेद होता है, क्योंकि, प्रमत्तसंयत और असंवत्तसम्यन्दिष्ट ग्रुप्यानीमें कमसे उसके वन्ध और उदयका उपुच्छेद पाया जाता है। असातावेदनीय, अरित और शोकका स्थादय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, होमों ही मकारीले बन्ध पाया जाता है। आस्थर और अग्रुभका स्थादय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वे धुवादयी हैं। अयदाकीर्तिका असंवतसम्यन्दि गुणस्थानमें स्थादय-परोदय वन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष महातिके उदयक्ता अभाव है। इन छह पहातिकों का स्थादयतसम्यन्दि गुणस्थानमें स्थादय-परोदय अभाव है। इन छह पहातिकों अद्यक्ता अभाव है। इन छह पहातिकों का सम्बन्ध होता है। इन छह पहातिकों का सम्बन्ध सात्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम हेखा जाता है।

सत्यय झुगम हैं, क्योंकि, बहुत बार कहे जा चुके हैं। देव भीर सनुष्य सित्यें संजुक हो कम्ब होजा है, क्योंकि, यहां सम्य गतियोंके वन्यका अभाव है। कारों गतियोंके असंयतसंस्यग्हारि, दो गतियोंके संयतासंयत, और मनुष्यगतिके संपत स्वासी हैं। बन्धान्वान और वन्यन्युष्टिकस्थान सुगम हैं। सब प्रकृतियोंका बम्ध साहि व अधुव होता है, क्योंकि, वे अधुवक्यी हैं।

१ मतिद्व ' वत्तवादो ' इति पाठः।

अपन्वनस्ताणावरणीयकोह-माण-माया-छोह-मणुस्साउ-मणुसगइ-ओराळियसरीर-ओराळियसरीरअंगोवंग-वज्जिरसहसंघडण-मणुसाणु-पुर्व्वाणामाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ २८५ ॥

सुगर्म ।

असंजदसम्मादिद्वी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २८६॥

अपच्चनखाणावरणचउनक मणुसगद्दपाओग्गाणुपुत्वीणं बंघोदया समं वोच्छिण्णा, असंबदसम्मादिद्विन्दि तद्दुरावोच्छेदुवरुंमादो । मणुसगइ-मणुसाउ-जोरालियमरीरअंगोवंग-वर्जारमद्वसंघडणाणं बंघवोच्छेद् वेव, उर्वारं पि' उदयदंसणादो । अपच्चन्खाणचउन्कस्स बंघो सोदय-परोद्जो । ससाण परोद्धा चेव, सोदएण बंघविरोहादो । दसण्णं पयडीणं बंघो णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमामावादो । अपचन्खाणचउक्कस्स चाठीस पच्चा । मणुसाउग्रस्स बादाठीस, ओरालियदुरा-वेउन्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । सेसाणं चोदाठीस,

अप्रत्याख्यानावरणीय कोध, सान, माया, ठोभ, मनुष्यायु, मनुष्यानत, औदास्कि-शरीर, औदास्किशरीरांगोपांग, वज्रपेभमंहनन और मनुष्यानुपूर्वी नामकर्मका कौन पन्यक और कौन अवन्यक है ? ॥ २८५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

अमंयतमस्यग्दष्टि बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २८६ ॥

अप्रत्याच्यानावरणचतुष्क और मतुष्यगितप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध व उदय दोनों साधमें उनुष्ठिछ होते हैं क्योंकि, असंयतसम्यव्हि गुणस्थानमें उन दोनोंका उनुष्ठेद पाया जाता है। मनुष्यगित, मनुष्यानु, औदिरिकारीरांगोपांग और वज्रपेमसंहतनका केवल वन्धवनुष्ठेद हो है, क्योंकि, उत्तर भी उनका उदय देखा जाता है। आस्वाच्याना वरणचतुष्कका बन्ध स्वोदय परोदय होता है। शेष प्रकारविषेका परोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है। दशों प्रकृतियोंका वन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धियक्षामका अभाव है। अप्रत्याव्यानावरणचतुष्कके चालीस समय है। मनुष्यावुकं क्यांकिस प्रत्य है, स्वेंदिक, भैदारिकादिक, वैकियिकसिथ और कार्यक विराव हो। अस्त्यव्यावुकं क्यांकिस प्रत्यय है। स्वेंदिक स्वाव है। अस्वय्यावुकं क्यांकिस प्रत्यय है। स्वेंदिक स्वाव है। अस्वय्यावुकं क्यांकिस प्रत्यय है। होर प्रकृतियोंके चवालीस प्रत्यय है, स्वेंदिक, उनके औदार

र प्रतिषु 'व ' इति पाठ ।

जैसीलिमहुगमानादी । अपन्यक्षाणवजन्त्रस्य देव-मधुसगङ्संखतो । सेसार्व मधुसंबदसंख्तो, साम्बन्धियादो । अपन्यनस्याणवजन्त्रस्य चंडगङ्भसंजदसम्मादिष्टिको सामी । सेसार्व हेर्य-परस्या । वंघदाणं णस्यि, एक्कस्टि अद्धाणविरोहादो । वंघवोच्डिण्णहाणं सुगर्व । अक्वन क्साणवजन्त्रस्य तिविहो वंघो, धुवामावादो । सेसार्ण सादि-अद्धवो, अद्धवयंधितादो ।

पच्चनस्राणावरणीयकोइ-माण-माया-छोभाणं को बंधी को अबंधी ? ॥ २८७ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्टी संजदासंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २८८ ॥

ण्दासि संजदासंजदान्द्र अक्कमेण वोच्छिणणवंघोदयाणं, सोदय-परोद्द्य**ि णिरंतर-वैमीणं,** असंजदसम्मादिक्वि-संजदासंजदेसु जहाक्रमेण छादाल-सत्ततीसपण्चयाणं, देव-मणुसन्तर-सं**हेत्वेषाणं,** वजगह-दुगहजसंजदसम्मादिक्व-संजदासंजदसामीयाणं, असंजदसम्मादिक्व-संज्ञदा

(कांद्रिकका ममाब है। अप्रत्याच्यानावरणचतुष्कका देच व मतुष्य गतिले संयुक्त बण्य होता है। शेष प्रकृतियाँका मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है। अप्रत्या-व्यानावरणचतुष्कके चारों गतियोंके असंयतसम्यग्हाएं सामी हैं। शेष प्रकृतियोंके देव ब नावायणचतुष्कके चारों गतियोंके देव ब नावायणचतुष्कके सामी है। बप्याच्या नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है। वण्याय्यानावरणचतुष्कका तीन प्रकारका बण्य होता है, क्योंकि, धुव बण्यका अमाव है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्वव बण्य होता है, क्योंकि, विश्व वण्यका अमाव है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्वव बण्य होता है, क्योंकि,

प्रत्याल्यानावरणीय क्रोध, मान, माया और लोभका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ?॥ २८७॥

बह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्यन्दिष्ट और संयतासंयत चन्धक हैं। ये बन्धक **हैं, शेष अवन्धक हैं** ॥ २८८॥

हण बार प्रष्ठतियोंका बण्ध और उद्दर्थ होनों एक साथ संयतासंख्य गुणस्थावर्षे श्रृष्टिक होते हैं। स्वोदय परोदय सहित बिरस्तर बण्ध होता है। असंयत्तवक्षण्यदि गुणस्थानमें छ्याठीस और संयतासंयत गुणस्थानमें सँतीस प्रस्यव हैं। देव और प्रदुष्ट गतिसे संयुक्त बण्ध होता है। चारों गतियोंके असंयतसम्यन्दिष्ट और है। गतिवाँके संयता संयत सामी हैं। असंयतसम्यन्दिष्ट और संयतासंयत बण्धाण्यान हैं। संयतासंयत गुण- कंपह द्वाबार्ण, संबदासंजदम्म बोन्स्रिण्णवंधाणं, श्वेषणं विषा विविद्यवंशवसमाणं परूवणा सगमा ।

देवाउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ २८९ ॥ सगमं ।

असंजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा बंधा। अप्पमत्त-द्वाए संस्रेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अर्बधा ॥ २९० ॥

पदस्स भत्यो डब्बदे । तं जहा - पुन्वबुदबो पच्छा विशे विविद्यवहारी. अप्पमत्तासंजदसम्मादिहीस् बंशोदयवोच्छेदवरुंभादो । परोदओ, णिरंतरो, असंजदसम्मादिहीस वे उब्बिबद्वगोरालियमिस्स-कम्मइय-पन्चयाणमभावादो बादालीसपन्चवो, उवरिमेस् गुणहाणेस् बोषपच्चओं. देवगइसंज्ञत्तो. दुगइथसंजदसम्मादिष्टि-संजदासंजद-मणुसगइसंजदसामीबो, मसंजदसम्मादिष्टि-संजदासंजद-पमत्त-अपमत्तसंजदद्धाणो, अप्पमतद्धाए संखेडमस् मानेस पत्तविरुओ, सादि-अद्भवो, देवाउभस्स बंधो ति अवगंतव्वो ।

स्थानमें बन्ध ब्युव्छित्र होता है। भ्रुष बन्धके थिन। दोष तीन प्रकारका बन्ध होता है। इस प्रकार इनकी प्रक्रपणा सगम है।

देवायका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ २८९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं। अप्रमत्तसंयतकालके संख्यात बहुमाग जाकर बन्य व्युच्छित्र होता है। ये बन्यक हैं, शेष अवन्यक हैं ॥ २९०॥

इस सुत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है – देवायुका पूर्वमें उदय और प्रश्नात बन्ध ब्याब्स्य होता है. क्योंकि. अप्रमत्त और असंयतसम्यग्द्रि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके कम्भ व उन्नयका व्यवक्रेष पाया जाता है। परोदय और निरन्तर बन्ध होता है। असंयत-कारवार क्रियों में वेकिविकदिक, और रिकमिश्र और कार्मण कायवाग प्रत्ययोंका अभाव होतेले ध्यासीस प्रत्यय हैं। उपरिम गुणस्थानोंमें भोघके समान प्रत्यय हैं। देवगतिसंयक बन्ध होता है । वो गतियोंके असंयतसम्यन्द्रष्टि व संयतासंयत, तथा मनुष्वगतिके संयत स्थामी है। बसंयतसम्बन्हहि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत बन्धाध्यान है। अप्रमत्त-कालके संख्यात बद्यभागोंके बीतनेपर बन्धन्युच्छेद होता है। सादि व अध्रव बन्ध होता है। इस प्रकार देवायुके बन्धकी प्रक्रपणा जानना चाहिये।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २९१॥

सुगमं ।

अप्पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २९२॥ पदस्स अत्था सगमे ।

उवसमसम्मादिट्टीसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जस-कित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ २९३ ॥ सगर्व ।

असंजदसम्मादिद्विष्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा बंधा । सुहुमसांपराइयउवसमद्धाए चरिमसमयं गंतृण बंधो वोन्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २९४ ॥

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जमिकति उन्चागाद-पर्चतराइयाणं वंधवोच्छेदो

आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांग नामकमेंका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ २९१ ॥

यह सुत्र सुगम है।

अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं॥ २९२॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है।

उपश्चमसम्यरदृष्टि जीवोंमें पांच जानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीतिं, ऊंच-गोत्र और पांच अन्तरायका कौन चन्यक और कॉन अजन्यक है ? ॥ २९३ ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्यन्दिष्टिसे लेकर सुक्षमाम्परायिक उपज्ञमक तक वन्धक हैं। सूक्ष्मसाम्परा-यिकउपज्ञमककालके अन्तिम समयको जाकर वन्त्र्य ब्युन्छित्र होता है। ये बन्धक हैं, श्रेष अवन्धक हैं॥ २९४॥

पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चमोत्र और पांच अन्त-

चेव । उदयवोच्छेदो णिल्प, खीणकस्मयादिष्ठ वि एदासिं पवडीणं उदयदंसणादो मेल उदयवोच्छेदादो बंभवोच्छेदो पुत्रं पच्छा वा होदि ति विचारो णिल्प, संतासंताणं सणिणयासविरोहादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराहयाणं सोदओ चंघो । जसिकतीए
असंजदसम्मादिद्वीलु सोदय परोदओ । उत्तरि सोदओ चेव, पिटवस्खुदयामावादो । उच्चागोदस्स असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेसु सोदय-परोदओ । उत्तरि सोदओ चेव, पिटवस्खुदयामावादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-उच्चागोद-पंचंतराहयाणं वंघो णिरंतरो, धुवबंधितादो । जसिकतीए असंजदसम्मादिट्टिप्सुडि जाव पमत्तसंजदो ति वंओ सांतरि । उत्तरि
णिरंतरो, पिडवस्ख्यपिटिवंचामांवादो । पच्चया सुममा । णविर असंजदसम्मादिद्वीलु ओराविरामिस्तपच्चओ, पमत्तसंजदेसु आहारदुगपच्चो णिरिय । असंजदसम्मादिद्वीलु एदार्सि
पयडीणं बंघो देव-मणुसगहसंजुतो । उत्तरिमेलु गुणद्वाणेसु देवगदसंजुतो अगदसंजुतो वा ।
चउगद्वअसंजदसम्मादिट्ठी दुगद्दसंजदा मणुसगद्दोजदा सामीओ । वंञद्वाणं वंघवोच्छिण्यहाणं च सुगमं । धुववंत्रीणं तिविहो वंओ, धुवामावादो । अवसेमाणं सादि-अद्धवो, अद्धववंधितादो ।

रायका बन्धन्युन्छेद ही है। उद्यव्युन्छेद नहीं है, क्योंकि, शीणकपायादिक गुजस्थानोंमें भी इन प्रकृतियोंका उदय देखा जाना है। इसी कारण उदयश्युन्छेद्देस बन्धव्युन्छेद पूर्वेमें या पश्चान् होता है, यह विचार नहीं हैं क्योंकि, सन् और अनन्त्री नुलनाका विरोध है।

पांच ज्ञान।वरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायका स्वोद्य बन्ध होता है। यशकीर्तिका असंयतसम्बन्धार्थों से स्वोद्य परोद्य बन्ध होता है। उत्पर स्वोद्य ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अमाव है। उच्चतोत्रका असंयतसम्बन्धार्थ और संयतांसंयत गुणस्थानों स्वोद्य परोद्य बन्ध होता है। उत्पर स्वोद्य ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदयाशाव है।

पांच झानावरणीय, चार दरीनावरणीय, उच्चनांच ओर पांच अन्तरायका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, वे भुवान्धी हैं। यशकीर्तिका असंतयसम्यादाधिसे लेकर प्रमत्तसंवत तक सान्तर बन्ध होता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ऊपर प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है।

शत्यब सुप्तम हैं। बिशेष इतना है कि असंयतसम्यग्दिएयों में श्रीवारिकस्थि प्रत्यय भीर प्रमत्त्रसंयतों में बाहारकद्विक प्रत्यय नहीं हैं। असंयतसम्यग्दिएयों में इन प्रकृतियोंका बन्ध हेव व मनुष्य गतिसंयुक्त होता है। उपित गुणस्थानों में दवगितसंयुक्त या अगति संयुक्त बन्ध होता है। चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दि हो गतियोंके संयतस्यत्त, और मनुष्यातिके संयत स्थामी हैं। बन्धास्थान और वन्ध्यस्थित्व क्षाया मनुष्यातिके संयत स्थामी हैं। बन्धास्थान और वन्ध्यस्थित सुप्तम हैं। सुववन्धी प्रकृतियोंका साथ क्षाय बन्ध होता है, क्योंकि, उनके सुख बन्धका अभाव है। शेष मकृतियोंका सादि व असुब बन्ध होता है, क्योंकि, व असुबवन्धी हैं।

बिदा-पयळाणं को वंधी को अवंधो ? ॥ २९५९ ॥ सुगर्व ।

असंजदसम्मादिट्टिप्पहुिंड जाव अषुव्यकरणउवसमा नंभा । अषुव्यकरणउवसमद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण नंभो वोच्छिज्जिद । एदे वंभा, अवसेसा अवंभा ॥ २९६ ॥

प्दापि वंघो पुन्वं वोच्छज्जदि । उदयवोच्छेदो प्यस्थि, खीणकसायसु वि उदयव-दंसमादो । सोदय-परोदयो वंघो, अद्धवोदयतादो । णिरंतरा, पुरवंधितादो । असंजदसम्मा-दिद्वीसु पंचेताळील पण्यया, ओरालियमिस्सपण्याभावादो । पसत्तसंजदिष्ट सावीस्यं पण्यस्य, आहारदुग्राभावादो । सेसगुणहाणेसु श्रोचपण्यको, विसेसाभावादो । असंजदसम्मादिङ्विस्ट् देव-मशुसगइसंहत्तो, उवस्मिद्ध देवगहसंहत्तो, चउगइसंजदसम्मादिङ्व-दुग्वसंजदासंजद-

निहा और प्रचलका कीन बन्धक और कीन अवस्थक है ? २९५ ॥ यह सूत्र सुगम है।

श्रवंपतसम्यग्टिक्षे ठेकर अपूर्वकरण उपश्रमक तक यन्यक हैं। अपूर्वकरण उपश्रम-कारुका संस्थातमं याग अकर बन्च म्युच्छिच होता है। ये पन्यक हैं, श्रेष अवन्यक हैं॥ २९६॥

१ वसतो ' क्यवतनंदा हि बार्सन ', मामती ' पमत्तकबद० वाबीत ', मामती पमक्तवहा बाहीश ' इति पाठः ।

ब्राह्ममार्कप्रसामीको, जनगर्वप्रसाम, जपुन्नकरणसाए संसेन्जरिक साँग नयविणासो, पुण्योणकारो तिनिद्याणो जिदा-पयठाणं बंधो ।

सादावेदणीयस्स को वं**षो को अ**वंधो ॥ २९७ ॥ इका ।

असंजदसम्मादिहिप्पहुडि जाव उक्संतकसायकीयरागञ्जदुमत्वा वंभा । एदे वंभा, अवंभा णत्यि ॥ २९८ ॥

षंपवीच्छेदं मोतृण उदयवीच्छेदाभाकादो, सोदय-परोद्ववववाबो, अर्धवदप्यदुढि जाव पमत्तसंबदो ति सांतरं वीवद्गुवरि णिरतरकंचितादो, ओवनचवर्णदेती वर्षजदरम्यादिटि-पमत्तसंबदे मोतृण अण्यस्य समाधपच्चवतादो, अर्धजदसम्मादिटि-मनत्तसंबदेसु जोरास्थि-मित्तादारदुवावावादो, अर्चजदसम्मादिट्टीसु दुगद्रकंक्रतादे। उपरि देवगद्धकंक्षतवंचादो, चउगद्दवसंबदसम्मादिट्टि-दुगद्दकंजदासंबद-मनुसगद्दसंजदत्तमार्थवादो, वंवेच सादि-बद्धव-तादो सगमेदं।

गतिके संयत स्वामी हैं। बन्धाध्वान कात ही है। अपूर्वकरणकालका संस्थातवां आग बीतनेपर बन्ध स्युष्टिक होता है। ध्रुवबन्धी होनेसे निद्रा व प्रचळाका तीन प्रकार बन्ध होता है।

> सातावेदनीयका कीन बन्धक और कीन जबन्धक है ? ॥ २९७ ॥ यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्पन्धिसे लेकर उपशान्तकथाय वीतराग छद्मस्य तक मुन्धक हैं। ये मन्यक हैं, अयन्यक नहीं है।। २९८।।

सातावर्गीयके वण्यन्युण्छेष्को छोड्कर उदयम्युण्छेष्का अभाव होनेसे, स्वोदय-परादय वण्य होनेसे, असंयतसम्यादृष्टिसे छेकर प्रमण्यसंयत तक साम्तर वंशकर ऊषर निरम्तरवण्यी होनेसे, असंयतसम्यादृष्टि और प्रमण्येवर्तोको छोड्कर अन्यत्र ओयके समान अस्ययं युक्क होनेसे, असंयतसम्यादृष्टियों में गीद्दारिकीय और अण्यास्यातीं माह्दरहिकका सभाव होनेसे, असंयतसम्यादृष्टियों हो गीत्योंसे संयुक्त स्वा ऊपर देवनासियुक्त सम्या होबेसे, बारी गतियोंके असंयतसम्यादृष्टि, दो गतियोंसे संयुक्त स्वा ऊपर देवनासियुक्त सम्या होबेसे, बारी गतियोंके असंयतसम्यादृष्टि, दो गतियोंके संयतासंयत, और मनुष्यातिके संयत स्वाली होनेसे, तथा वण्यसे सादि व अधुव होनेके वह सुक्त हुक्त है! असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसिकतिणामाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २९९ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्टिपहुडि जाव पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३०० ॥

सुगममेदं, मदिणाणमग्गणाए परूतिदत्थतादो ।

अपच्चक्खाणावरणीयमोहिणाणिभंगो ॥ ३०१ ॥

अपच्चक्खाणचउक्क-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वञ्जरिसह-संवडण-मणुसगद्वपञोग्गाणुपुच्चीणं एत्थ गहणं कायच्नं, देसामासियत्तादो । सेसं सुगमं । णवरि ओरालियमिस्सपच्चेञां अवणेयच्यो । कर्ञ वेदिवयमिस्स-कम्मदयाणमुवलंभो ? उव-समसम्मतेण उवसमसेहिं चिड्ठय कालं काऊण देवेसुप्पण्णाणं स्द्रवलंभादो ।

असातावेदनीय, अरानि, श्लोक, अस्थिर, अशुम और अयशकीर्ति नामकर्मोंका कौन बन्यक और कीन अबन्यक है ? ॥ २९९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे ठेकर प्रमत्तसंयत तक बन्धक हैं। ये बन्धक हैं, श्रेष अबन्धक हैं॥ ३००॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, मितहान मार्गणामें इसके अर्थकी प्ररूपणा की जाचुकी है।

अप्रत्याख्यानावरणीयकी प्ररूपणा अवधिज्ञानियोंके समान है ॥ ३०१ ॥

अवस्यविद्यानावरणचतुष्क, मनुष्यानि, औदारिकशारीर, औदारिकशारीरांनोपांग, वज्जर्यभसंहतन और मनुष्यानिप्रायोग्यानुष्यीका यहां प्रदण करना चाहिय, क्योंकि, यह सूत्र दशासर्थक है। तथ प्ररुपणा सुगम है। विशेष दतना है कि औदारिकसिश्च प्रत्ययको कम करना चाहिये।

शंका - विकिथिकमिश्र ओर कार्मण काययोग यहां केसे पाये जाते हैं ?

समाधान—उपशासस्यक्त्यके साथ उमशमश्रेणि वङ्कर और मरकर देवोंग्र उत्पन्न हुए जीवोंके व दोनों प्रत्यय पाये जात हैं।

१ प्रतिषु ' सुवक्षंमादो ' इति पाठः ।

णवरि आउवं णित्य ॥ ३०२ ॥

कुदो ? सम्मामिच्छाइहिस्सेव सञ्जवसमसम्माइहीणमाष्ठशस्स बंधामावादो । पच्चक्स्याणावरणचउक्कस्स को बंधो को अबंधो ? ३०३ ॥ सुगमं।

असंजदसम्मादिट्टी संजदासंजदा [बंधा] । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३०४ ॥

एदं पि सुगमं, सुद्रणाणपरूवणापरूविदत्थतादो ।

पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ३०५ ॥ सुगमं।

असंजदसम्मादिट्टिपहुडि जाव अणियट्टी उवसमा वंधा। अणि-यट्टिउवसमद्भाए सेसे संखेज्जे भागे गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि। एदे वंधा, अवसेसा अवंघा॥ ३०६॥

विशेष इतना है कि उनके आयु कर्मका बन्ध नहीं है ॥ ३०२॥

क्योंकि, सम्यग्मिथ्याद्यक्षिके समान ही सर्व उपरामसम्यग्दष्टियोंके आयुके बन्धका अभाव है।

प्रत्याख्यानावरणचतुष्कका कीन बन्धक और कीन अबन्धक है ? ॥ २०३ ॥ यह सुत्र सुगम है ।

असंयतसम्यग्दिष्ट और संयतासयत [बन्धक] हैं। ये बन्धक हैं, श्रेष अबन्धक हैं।। ३०४।।

यह भी सूत्र सुगम है, क्योंकि, इसके अर्थकी प्रकरणा श्रुतज्ञानप्रकरणार्भे की जा सुकी है।

पुरुषवेद और संज्वलन कोधका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ?॥ ३०५ ॥ यह सब सगम है ।

असंयतसम्यग्दष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपश्चमक तक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरण-उपश्चमककालके ग्रेपमें संख्यात बहुभाग जाकर बन्च व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, श्रेष अबन्धक हैं ॥ ३०६ ॥ सुगममेदं ।

माण-मायसंजरुणाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ३०७ ॥ _{सगरं}।

असंजदसम्मादिहिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा बंधा। अणि-यट्टिउवसमद्भाष सेसे सेसे संसेडजे भागे गंतृण वंथो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३०८ ॥

एदं ि सुनमं, बहुसो परूबिदत्तादो । स्टोभसंजरुणस्स को बंधो को अवंधो ? ॥ ३०९ ॥ सगम ।

असंजदसम्मादिट्टिपहुडि जाव अणियट्टी उवसमा बंधा । अणियट्टिउनसमद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो बोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अबसेसा अबंधा ॥ ३१०॥

यह सूत्र सुगम है।

संज्वलन मान और मायाका कौन बन्धक और कौन अवन्यक है ? ॥ २०७ ॥ यह सूत्र खुगम है ।

असंयतसम्यग्दियमे लेकर अनिवृत्तिकाण उपशमक तक बन्धक हैं। अनिवृत्तिकरण-उपशमकालेके शेष शेषमें संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध ब्युच्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं॥ २०८॥

यह स्त्र भी सुगम है, क्योंकि, यहत बार इसकी मरूपणा की जाचुकी है। संज्वलन लोभका कौन बन्धक और कौन अबन्यक है १॥ २०९॥ यह स्त्र सुगम है।

. असंयतसम्यग्र्टिमे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरण-उपशमकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छित्र होता है । य बन्धक **हैं, श्रेष अबन्धक** हैं ॥ ३१० ॥ एदं पि सुगमं।

हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ३११ ॥ _{युगमं}।

असंजदसम्माइहिप्पहुडि जाव अपुन्वकरणउवसमा बंधा । अपुन्वकरणुवसमद्धाए चरिमसमयं गंतृण वंधो वोन्छिजदि । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३१२ ॥

एदं पि सुगमं ।

देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस— संठाण-वेउव्वियअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवाणुपुञ्ची-अगुरुअलहुअ-जवघाद-परघाद उस्सास-पसत्थिवहायगदि-तस-वादर-पज्जत-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-तित्थयरणामाणं को बंधो को अवंधो ? ॥ ३१३ ॥

सुगमं ।

यह सत्र भी सगम है।

हास्य, रति, भय और जुगुप्साका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है? ॥ ३११ ॥ यह सन्न सगम है।

असंयतसम्यग्दिष्टिसे लेकर अपूर्वकरण उपशामक तक बन्धक हैं। अपूर्वकरण उपशाम-कालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर बन्ध च्युन्छिन्न होता है। ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं॥ ३१२॥

यह सूत्र भी सुगम है।

देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, वैकियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैकियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्च, रस, स्पर्श, देवातुपूर्ती, अगुरुठ्यु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविद्दायोगति, त्रस, बादर, पयोप्त, प्रत्येकश्चरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण और तीर्थकर नामकर्मका कौन बन्थक और कौन अवन्थक है ? ॥ ३ ऱ ३॥

यह सूत्र सुगम है।

असंजसम्मादिद्विपहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा । अपुव्वकरणुवसमद्धाए संस्रेज्जे भागे गंतृण बंधो वोच्छिज्जिदि। एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३१४ ॥

एदं पि सुगमं, बहुसी कयपरूवणादी।

आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंगाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ३१५॥

सुगर्म ।

अप्पमत्तापुज्वकरणउवसमा बंधा।अपुज्वकरणुवसमद्धाए संस्तेजे भागे गंतूण बंधो वोन्छिज्जिद । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३१६॥

एदं पि सुगम । ंं

सासणसम्मादिद्वी मदिणाणिभंगो ॥ ३१७ ॥

असंयतसम्यरहिसे ठेकर अपूर्वकरण उपशमक तक वन्त्रक हैं । अपूर्वकरण उपशम-कालके संख्यात बहुमाग जाकर बन्ध व्युच्छित्र होता है । ये वन्त्रक हैं, शेप अवन्यक हैं । ३ ४ ॥

यह सूत्र भी सुगम हे, क्योकि, बहुत बार इसकी प्ररुपणा की जासुकी है। आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांगका कीन बन्बक और कीन अबन्धक है ? ॥ २१५॥

यह सूत्र सुगम है।

अप्रमत्त और अपर्वेकरण उपरामक बन्धक हैं । अपर्वेकरण उपरामकालके संख्यात बहुमाग जाकर बन्ब ब्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, ग्रेप अबन्धक हैं ॥ ३१६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है।

सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानियोंक समान है ॥ ३१७ ॥

पंचणाणावरणीय-णवर्दसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अहणोकसाय-तिरिक्ख-मणुस-देवाउ-तिरिक्ख-मणुस-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेजिव्य-तेजा-कम्मह्यसरीर-पंच-संठाण-ओरालिय-वेजिव्य-वेजिव्य-वेजीवंग-पंचसंघडण-वण्ण-गंघ-रस-फास-तिरिक्ख-मणुस-देवगइपाओ-ग्गाणुपुब्वी-अगुरुवल्हुअ-उवधाद-प्रधाद-उस्सास-उज्जीव-दोविहायगइ-तस-बादर-पज्जत-पत्तय-सरीर-थिराधिर-सुहासुह-सुमग-दूमग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसिकित-अजसिकित-णिमिण-णीचुज्वागोद-पंचंतराह्यपयडीओ सासणसम्मादिक्षीहि बज्झमणियाओ । एदासिसुदयादो षंषो पुक्वं पच्छा [वा] वोच्छिण्णी ति विचारो णस्थि, एस्थ एदासि बंघोदयवोच्छेदाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-चिर्विदयजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वणण-मेघ-रस-फास-अगुरुअटुडुअ-तस-बादर-पञ्जत-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचेतराइयाणं सोदओ खेथो, धुवीदयतादो । देवाउ-देवगइ-वेडिवयदुगाणं परोदओ बंबो, सोदएण वंघविरोहादो । अव-सेसाणं पयडीणं वंघो सोदय-परोदओ, उदयहा वि वंधवटंगादो ।

पं चणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सोलवक्तसाय-भय-दुगुं डा-तिरिक्रख-मणुक्ष-देवाउ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-चण्ण-गं घ-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उचघाद-परघाद-उस्सास –

पांच क्षानावरणीय, नै। दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सीलह कथाय, आह नोकपाय, तिर्येषायु, मनुष्यायु, द्वाड. तिर्यमाति, मनुष्याति, देवातिक पेवेहिद्रय जाति, औदारिक, वेकियिक, नैजस व कार्मण दार्रर, पांच संस्थान, औदारिक वेकियिक अंगोपांग, पांच संस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यमातिप्रायोग्यानुष्यी, मनुष्याति- प्रायोग्यानुष्यी, देवातिप्रायोग्यानुष्यी, मनुष्याति- प्रायोग्यानुष्यी, देवातिप्रायोग्यानुष्यी, अगुक्रत्यु, उपवात, परधात, उन्ह्यास, उचीत, देविद्योगतियां, त्रत, बादर, पर्योग्त, प्रस्यक्ष, प्रस्यात, उन्ह्यास, उचीत, देविद्योगतियां, त्रत, बादर, पर्योग्त, प्रस्यक्ष, प्रस्यात, कुमैंग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अतादेय, यदाकीर्ति, अयदाकीर्ति, निर्माण, नीच व ऊंच गोत्र और पांच अनतराय, ये प्रकृतियां साक्षादम्बस्यव्यष्टि जीवें द्वारा वष्यमान हैं। इनका बन्ध उद्यक्षे पूर्वेस या पक्षात् व्युच्छित्र होता है, यह विचार नहीं हैं; क्योंकि, यहां इनके बन्ध और उदयके रपुच्छेद्रका अभाव है।

पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रिय जाति, तैजल व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुमलचु, त्रस, वादर, पर्याप्त, स्थिर, आस्पर, ग्रुम, अग्रुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वोद्य बन्ध होता है, क्योंकि, य ध्रुवाद्यी हैं । देवायु, वेवगतिहिक और वेक्तियक्तिकका परोद्रय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोद्रय स्वके बन्धका विरोध है । शेष प्रकृतियोक्तिक कम्प स्वोद्य-परोद्यसे होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारियोक्तिक कम्प स्वोदय-परोद्यसे होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंके औ उनका बन्ध-पांच जाता है।

पांच क्षानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, सोलक्ष कपाय, मय, जुगुप्ता, तिर्यगायु, मञ्जूष्यायु, देवायु, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अग्रुद- तस साह्यः, प्रञ्जूत-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंजंतराहयाणं णिरंतरो वंषो, एगसमएण बंधुवरमाणुव-ढंसादो । सादासाद-इस्स-रि-अरिद-सोगिरियंवर-मञ्ज्जिम व उसंद्राण-पंजंसचडण-उञ्जोव-दो-बिह्म प्रगृह-पिरामिर-सुहासुह-दुभग-दुस्सर-अणादेञ्ज जपिकिति जजसिकितीणं सांतरो षंघो, एग-सम्एष व वंधुवरादसणादो । पुरिसवेदस्स वंषो सांतर-णिरंतरो, पग्म-सुक्किलेस्पणु तिरिक्ष्व-मणुस्सेसु णिरंतर्वधुवरुमादो । देवगह-वेडिब्यियुत-साव-उरससंद्राण-सुम्म-सुस्सर-आदेञ्ज्ज्ज्ज्ञागोदाणं वंषो सांतर-णिरंतरो, असंखेञ्ज्ज्वासाउण्, सुहतिरुस्स्यितिरिक्ख-मणुस्सेसु क्यात्रेत्वस्य क्षेत्रक्षादो । मणुसगडदुगस्स वंघो सांतर-णिरंतरो, आणादादिदेवेसु णिरंतर्वपुत्र-रुमादो । तिरिक्खगइदुग्न-णीचागोदाणं वंघो सांतर-णिरंतरो, सत्तमपुद्धनीणदृष्ट् णिरंतर-बंधुवरुमादो । ओरालियसरिरदुगस्स वि सांतर-णिरंतरो वंघो, देव-णाइणुद्ध णिरंतर्वपुत्रन्त्राचा

देवाउ-देवगइ-वेउन्वियदुगाणं छादाठीस परचया, वेउन्वियदुगोराठियमिस्स-कम्म-इयाणमभावादो ! मणुस-तिरिक्खाउआणं सतेताठीस परचया, ओराठिय-वेउन्वियमिस्स-कम्म-इयपन्वयाणमभावादो । अवसेसाणं पयडीणं पंचास परचया, पंचमिन्छत्तपरचयाणमभावादो ।

लघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच सन्तरायको निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम नहीं पाया जाता। हास्क व असाता वेदनीय, हास्य, रित, अराति, शोक, क्रांविद, मध्यम चार संस्थान, पांच संहनन, उच्चेत, हो विहायोगतियां, स्थिर, अस्थिर, गुम, अगुम, दुम्मेग, दुस्यर, पांच संहनन, उच्चेत, हो विहायोगतियां, स्थिर, अस्थर, गुम, अगुम, दुम्मेग, दुस्यर, अस्थर, द्वाक्षीति और अयशकीतिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, पक्ष निर्माय सी इनका बन्धविश्राम देखा जाता है। पुरुपंवदका बन्ध सान्तर निरन्तर होता है, क्योंकि, पक्ष और शुक्ल लेदयावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। देवगतिविक्ष, विकित्तिक, समजतुरस्थलेखान, सुमग, सुक्य, आदेय और उच्चेत्राक्ष सान्तर-निरन्तर काता है, क्योंकि, असंख्यातवर्यायुक्त और शुम तीन लेदयावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें उनका निरन्तर काता है। स्थापतिविक्षका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, असंख्यातवर्यायुक्त और श्रीम तीन तिरन्तर काता है। स्थापतिविक्षका वन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, स्वापाया जाता है। तिर्यगतिविक्ष और नीचगोत्रका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, सप्तम प्रथिवोंके नारिकरोंमें उनका निरन्तर वन्ध पाया जाता है। स्थानतर-निरन्तर वन्ध सौत जनका निरन्तर वन्ध पाया जाता है। स्थानतर-निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, देव व नारिकरोंमें उनका निरन्तर काय पाया जाता है।

देवायु देवगतिद्विक और वैक्षियिकद्विक वे छाछील प्रत्यय हैं, क्योंकि, बैक्षियिकद्विक, भौदारिकिमिश्र कोर कार्मण काययोग प्रत्ययोंका अभाव है। मनुष्पायु और तिर्यगायुके सैताडीक प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिकिमिश्र, वैक्षियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका अभाव है। होच प्रकृतियोंके पचास प्रत्यय हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दद्वियोंके पांच मिथ्यात्व क्रक्स्योंका क्रमाय है।

देवाउ-देवगह-वेउव्वयदुगाणं भंघो देवगहसंज्ञता । मणुसाउ-मणुसगहदुगाणं भंधुर्सन्यहुत्वाचा वित्तव्यवदुगाणं भंधुर्सन्यहुत्वाचाणं तिरिक्खगहसंज्ञता । बाराज्यिसर्पर्सर्पर्माण्डम्य ज्ञानां तिरिक्खगहसंज्ञता । बाराज्यिसर्पर्सर्पर्माण्डम्य ज्ञानां तिरिक्खगहसंज्ञता विद्यानां क्षान्ति क्षानागिदाणं तिरिक्ख-मणुसगहसंज्ञता विद्या । उच्चागोदस्य देव मणुसगहसंज्ञता विद्या । ज्ञानसंब्यामावादा । अवसेसाणं प्यहीणं भंघो तिराहसंज्ञता, जिरवगहबंधामावादा । विद्या । ज्ञानसंब्यामावादा । विद्या । ज्ञानसंब्यामावादा । विद्या । ज्ञानसंब्यामावादा । व्यवस्याणं विविद्या विद्या । ज्ञानसंब्यामावादा । व्यवस्याणं विविद्या विद्या । ज्ञानसंब्याणं विद्या । ज्ञानसंब्याणं विविद्या विद्या । ज्ञानसंब्याचादा । ज्ञानसंब्याणं स्वादा ।

सम्मामिच्छाइद्वी असंजदभंगो ॥ ३१८ ॥

पंचणाणावरणीय-स्टदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि - अरिब-सोग-भय-इगुंडा-सणुसगद-देवगद-र्विदियजादि-ओरालिय-वेउव्यिय-तेजा-कंम्महयसरीर समचउ-रससंठाण-ओरालिय-वेउव्यियंगीवंग-वञ्जरिसद्दसंघडण-वण्ण-गंघ-रस-फास-मणुसगद्द-देवगद्द-

देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका बन्ध देवगति संयुक्त होता है। मयुष्यायु और मञुष्यागितिद्विक कोर अध्यायाति संयुक्त होता है। त्रियंगायु, त्रियंगातिद्विक कोर उद्योनका बन्ध तियंगाति संयुक्त होता है। जेवारिकारीर मध्यम बार संस्थाव, अहारिकारीरांगीरांग, पांच संहतन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग दुस्वर, अनादेव और नीचगोत्रका तिर्यंगाति और मञुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। उच्चगोत्रका देव य मञुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है। उच्चगोत्रका देव य मञुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है। देव प्रकृतियाँका वस्य तीन गतियाँसे संयुक्त हाता है, क्योंकि, त्यायान्य सामाय है। देव प्रकृतियाँका बन्ध तीन गतियाँसे संयुक्त हाता है, क्योंकि, सासादनसम्पर्धायाँके नरकगतिक वस्थका असाव है।

देवायु, देवगतिद्विक और वैकियिकद्विकके तिर्यंच व मजुष्य स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी चारों गतियोंके सासादन सम्यग्धि हैं। बन्धाप्यान और बन्धस्यु-छेद नहीं हैं। छगळीस छुषवन्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके छुब-बन्धका ममाव है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुव-बन्धि हैं।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा असंयत जीवोंके समान है ॥ ३१८ ॥

पांच क्षानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व ससाता वेदनीय, वाराह कसंब, पुरुषेयर, हास्य, राति, अरति, राति, अय, जुगुन्सा, सपुण्याति, देवगति, वेवनिहय जाति, भौदारिक, वेकियक, तैजस व कार्मण शरीर, समजतुरक्तंस्थान, भौदारिक व वेकियक भौदारिक, विकरियक, तैजस व कार्मण शरीर, समजतुरक्तंस्थान, भौदारिक व वेकियक अंगोर्पाग, वज्रवेससंहतन, वर्ण, गन्य, रस, स्वर्श, संदुष्यगति व देवगति मार्योग्यापुर पाओगगाणुपुटवी अगुरुवलहुज-उवचाद-परचाद-उस्सास-पसत्यविद्यायगद्द तस-बादर-पजत्त-पत्तय-सरीर-थिराथिर-मुद्दामुद्द सुभग-सुस्सर-आदेज-जसकिति-अजसिकिति-णिमिणुबागोद-पंचतराह्य – पयडीओ सम्मामिच्छाइद्वीदि चच्छमाणियाओ । उदयादो बंघो पुट्वं पच्छा [वा] वोच्छिणणो ति एसा विचारो णत्यि, पयडीणमेस्य बंघोदयबोच्छेदाणुवलंभादो ।

पंचणाणावरणीय-च उदसणावरणीय-पंचिदियजादिन्तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंघ -स्सफास-अगुरुवलहुअ-उवधाद-परधाद-उस्सास-तस-मादर-पञ्जत-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुद्दासुद्दणिमण-पंचतराइयाणं सोदओ वंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो । णिद्दा-पयञ-सादासाद-बारसक्तवायपुरिसवेद-इस्स-दि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछ-समचउरससंठाण-पसत्थविद्दायगइ-सुभग-सुस्सरआदेज्ज-असिकित-अजसिकित-उच्चागोदाणं वंधो सोदय-परोदओ, उद्दयदा वि बंधुवर्लभादो ।
मणुसगइ-देवगइ-वेउव्यिदसरीर-ओग्राठिय-वेउव्यियसरीरओगोवग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसगइदेवगइपाओग्गणुपुच्वीणं परोदओ बंधो, सोदएण बंचविरोहादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-देवगइ— पंचिंदियजादि-ओराल्यि-वेउल्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओराल्यि-वेउल्वियअंगो-

वृत्तीं, अगुरुलयु, उपधात, परवात, उच्हवास, प्रदास्तविहायोगित, श्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येक्त, प्रत्येक्त, प्रत्येक्तारीर, स्थिर, सस्थिर, श्रुस, अशुभ, सुभग, सुस्यर, आदय, यदाकीर्ति, अयदाकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्त और पांच अत्तराय प्रकृतियां सम्यगिमप्यादिः जीवीं हारा वच्यमान हैं। उदयसे वस्य पूर्वेमें या पश्चात् खुण्डिय होता है, यह विचार यहां नहीं हैं। क्योंकि, यहां उक्त प्रकृतियोंके वन्य और उदयका खुण्डेश्वर नहीं गाया जाता है।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, घेचेन्द्रिय जाति, तज्ञस य कार्मण शारीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुळपु, उपधात, परधात, उच्छ्यास, सस, वादर, पर्योत्त, प्रायेकशरीर, स्थिर, अगुरुळपु, उपधात, परधात, उच्छ्यास, सस, वादर, पर्योत्त, प्रायेकशरीर, स्थिर, अस्थिर, गुम, अगुम, निर्माण और पांच अन्तरायका स्त्रोद्दय बन्ध होता है, स्थांक, यहां य प्रजेवर्या हैं। निद्रा, मचळा, साला व असाना वेदनीय, बारह कथाय, पुरुषेदर, हास्य, रति, अरति, होते, भय, जुगुरुसा, समच्चुरुक्ससंस्थान, स्वास्त-विह्यांगाति, सुमग, सुस्यर, आदेय, यशकीतिं, अयशकीतिं और उच्चयोत्रका बन्ध स्वादय परोत्तय होता है, स्थांक, दोगा कार्रोस भी इनका बन्ध पाया जाता है। मनुष्य-विह्यांति, विकादिकशरीर, औदारिक व वैक्रियिक शरीरांगोपांग, वज्जपंभसंहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवातिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोद्य बन्ध होता है, स्यांकि, स्वोदयक्ष हनके बन्धका विरोध है।

पांच झानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कपाय, पुरुषवेद, अय, ज्रुगुस्सा, मनुष्यभति, देवमति, पेचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तेजस व कार्मण हारीर, ' वंग-वज्वरिसहसंघडण-वष्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइ-देवगङ्गोआग्गाणुगुन्ती-अगुरुवल्ट्रअ-उव-धाद-परघाद-उस्सास-पसत्यविद्यायग्र-तस-बादर-पञ्जत-पत्तेयसरीर-सुअग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंघो, एत्य धुवबंधदंसणादो । सादासाद-इस्स-रि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुद्यासुद-जसिकत्ति-अजसिकत्तीणं सांतरेग, एगसमएण वि बंधुवरम-दंसणादो ।

मणुसगइ-मणुसगदपाओगगाणुपुष्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जिरसद्ध-संघडणाणं बादालीस पश्चया, ओरालियकायजोगाभावादो । देवगइ-देवगइपाओगगाणुपुष्वी-वेडिब्बयसरीर-वेडिब्वयसरीरजंगोवगाणं पि बादालीस पच्चया, वेडिब्वयकाषजोगा-भावादो । अवसेसाणं तेदालीस पच्चया, पंचिमञ्ज्ञताणुषंचिचडककोरालिय-वेडिब्वय-िस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । मणुसगद्दगोरालियदुग-वज्जिरसद्धंघडणाणं बंघेग मणुसगद्दशेतो । देवगइ-वेटिब्वयदुगाणं देवगइसंख्रतो । सेससब्वययडीणं देव-मणुसगइसंख्रतो । मणुसगद्दगोरालियदुग-वज्जिरसद्धंघडणाणं देव-णर्द्या सामी । देवगइ-वेडिब्वयदुगाणं तिरिक्ख-मणुसा सामी । सेसाणं पयडीणं वंधस्स सामी

समखतुरस्नसंस्थान, औदारिक व वैकिथिक शरीरांगोपांग, वज्जर्यभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्ध, मनुष्यगति व देवनति प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुरुषु, उपधात, परधात, उरुङ्वाल, प्रशस्तविहायोगाति, जस, वादर, पर्याप्त, अत्येकशरीर, सुमग, सुस्वर, आदेष, निर्माण, उरुखगोत्र और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां हनका धुवबन्ध देसा जाता है। साता व असाता यदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुम, अशुभ, यशकिति सीर अयशकीरिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी हनका कृष्यभी वस्त्र वस्त्र सामयसे भी हनका कृष्यभी वस्त्र वस्त्र अस्थित।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिक दारीर, औदारिकदारीरांगो-पांग और वक्षर्यमसंहननके व्यालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिककाययोगका समाव है। देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैकियिकदारीर और वैक्षियिक-द्यारीगोगोगोक भी व्यालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहां वैकियिककाययोगका आवा है। दोष प्रकृतियोंके तेतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, पांच मिध्यात्व, अनस्तानुविध्यनुष्क, औदारिक-मिश्र, वैकिथिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययंका मिश्रगुणस्थानमें अभाव है।

मनुष्यगतिहिक, भीदारिकहिक और वज्जर्थमसंहननका बन्ध मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है। देवगतिहिक और वैकियिकहिकका बन्ध देवगित संयुक्त होता है। शेव सब मह-तियोंका बन्ध देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त होता है। मनुष्यगतिहिक, भौदारिकहिक व बज्ज-पंमसंहननके देव व नारकी स्वामी हैं। देवगतिहिक और वैकियिकहिकके तिर्येच व मनुष्य स्वामी हैं। शेव प्रकृतियेंकि बन्धके स्वामी खारों गतियोंके सम्यग्निप्रयादाष्टि हैं। बन्धाण्यान ह. ह. १९.

चउमइसम्मामिन्छाहाङ्को । बंधदाणं णत्थि, एक्किम्हि अदाणविरोहादो । बंधवेन्छिदो वि णत्थि, एत्य सन्वासि बंधुवरुंभादो । धुवबंधिपयङीणं तिनिहो बंघो, धुवाभावादो । सेसाणं सारि-अद्धवो, अद्धववंधित्तादो ।

मिच्छाइद्वीणमभवसिद्धियभंगो ॥ ३१९ ॥

सुगमेमंदं सुर्तं, विसेसामावादो । णवरि धुवयंधिपयडीणं चउन्त्रिहो यंघो, सादि-सांतर-यंधुवरुंभादो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु जाव तित्थयरे ति ओघभंगो ॥ ३२० ॥

एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चर्जरंदियजादि-भाराव-यावर-सुदृग-साहारणाणं परादयत्तुव-रुभादो पंचिंदियजादि-तस-बाराणं सोदयबंधुवरुंभादो णेदं सुर्त खुञ्जदे ? ण, देसामासिय-

नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है। वन्धव्युच्छेद्र भी नहीं हैं, क्योंकि, यहां सब मक्रतियोंका बन्ध पाया जाता है। ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका तीन मकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धका यहां अभ्यव है। रोष मक्रतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं।

मिथ्यादृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा अभव्यसिद्धिक जीवोंके समान है ॥ ३१९ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, यहां कोई विशेषता नहीं है। भेद इतना है कि भुव-बन्धी प्रकृतियोंका यहां चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, सादि व सान्तर अर्थात् अभुव बन्ध पाया जाता है।

संज्ञिमार्गणानुसार संज्ञी जीवोंमें तीर्थिकर प्रकृति तक ओषके समान प्ररूपणा है।। ३२०।।

शंका — चूंकि यहां एकेन्द्रिय, हीन्द्रिय, शीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, जाताप, स्थायर, सुक्म और साधारण महातियोंका बन्ध परोदयसे और एंबेन्द्रिय जाति, जस ब बादरका बन्ध स्थादयसे पाया जाता है, अतयब यह सुत्र गुक्त नहीं है ?

समाधान-यह कोई दोप नहीं हैं, क्योंकि, देशामार्शक सूत्रोंमें इस प्रकारकी

१ प्रतिषु अतोऽपे ' एगूणचाळीसपण्यया ' इत्यधिकः पाठः सम्रुपळभ्यते ।

युरोसु एवंविहमेदाविरोहादो । पयडिबंधद्धाणणिबंधणभेदपदुप्पायणहमाह—

णवरि विसेसो' सादावेदणीयस्स चक्खुदंसिणभंगो ॥ ३२१ ॥ सगम्भदं ।

असण्णीस अभवसिद्धियमंगो ॥ ३२२ ॥

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-भिच्छत्तः सोलसकसाय-णवणोकसाय-चड-आउ-चउग्रह-पंचजादि-ओरालिय-चेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालिय-चेउव्वियकंगो-वंग-छसंघडण-वण्ण-गंघ-रस-फास-चडआणुपुन्ती-अगुरुव्वल्ड अन्तवाद-परघाद-उस्सास-आदा-उज्जाव-दोविहायगृह-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जतापण्जत-पत्तय-साहारणसरीर-थिराखिर-सुह्म-सुह-सुभग-दूमग-सुस्सर-दुस्सर-आदंज-अणादेज्ज-जसिकति-अजसिकति-णिमिण-णीचुण्चागोद-पंचतराह्यपयहीओ असण्णीहि बज्झमाणियाओ । उदयादो बंघो पुन्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो ति परिस्चा णरिय, एरथदार्सि बंघोदयवोच्छेदाभावादो ।

विशेषता विरोधसे रहित है।

प्रकृतियोंके बन्धाध्वानमिमित्तक भेदके प्ररूपणार्थ सुत्र कहते हैं-

परन्तु विशेषता इतनी है कि साताबेदनीयकी प्ररूपण। चक्षुदर्शनी जीवेंकि समान है ॥ ३२१ ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंज्ञी जीवोंमें बन्धोदयव्युच्छेदादिकी प्ररूपणा अभव्यसिद्धिक जीवोंके समान है ॥ ३२२ ॥

पांच ज्ञानावरणीय, नी दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सिध्यात्व, सोजह क्याय, नी नोकपाय, जार आयु, जार गतियां, पांच ज्ञातियां, अंदारिक, वेकियेक, तेजस व कार्मण शरीर, छह संस्थान, जीदारिक व वैकियिक शरीरांगोपांगा, छह संहमन, की, गल्य, रस, स्पर्धा, ज्ञार आनुपूर्वा, अगुरुल्यु, उपधात, परधात, उच्छ्यास, आताय, उद्योत, हो विहायोगितयां, अस, स्थावन, वादर, सहस, पर्याप्त, अपर्याप्त, सरोक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्पर्याप्त, अग्रुम, सुभग, सुभग, सुस्वर, उसर आदेय, अनादेव, यशा-कीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, तीच व ऊंच गोत्र और पांच अन्तराय, ये प्रकृतियां असंकी अधीचेंक द्वारा वच्यमान हैं। उदयसे वन्य पूर्वें या पश्चात् स्थुच्छित्र होता है, यह परीक्षा वहां कीर्ति, क्यांकि, सहां इन प्रकृतियांके वन्य और उदयके खुच्छेद्दका अमाव है।

१ मतिष्र ' विशेषा ' इति पाढः ।

पंचणाणावरणीय-चडदंसणावरणीय-सिन्छत-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फस-अगुक्कल्रुख-थिराथिर-मुह्रागुह-गिमिण-णीचागोद-पंचंतराइय-तिरिक्खगईणं चंघो सीदवे । णिरस-देवाड-गिरिव-व्याव्यादि-पंचंतराइय-तिरिक्खगईणं चंघो सीदवे । णिरस-देवाड-गिरिव-व्याव्यादि-वेडिक्यसरीर-वेडिक्यसरीरकंगोवंग-गिरस-देवगइराओ गगाणुपुन्ती - उन्चरागीद-मणुषाउ-मणुससइद्वाणं परोद ओ वंघो । पंचर्दसणावरणीय-सादासाद-सोत्स्य-ससाय-णवणोकसाय-पंचजादि-ओरातिव्यसरीर-कंशंद्रण-औरातिव्यसरीरकंगोवंग-कंपवडण-तिरि - क्खाणुपुज्वी-आदाउज्जोव-दोवेडिक्यावाद-सम्बादर-यादर-सुह्रस-पज्जतापज्जत-पंचय-साहारण-सरित-सुग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज [जणादेज्ज-]जसिकित्त-अजसिकतीणं वंघो सोदय-परोदओ, उदयहा वि वंधविरोहागावादो । उनचाद-परावाद-उस्सासाणं पि सोदय-परोदओ, अपज्जतकोठ उदएण विणा वि वंधवर्त्नगरो ।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्तः सीत्यस्तराय-मय-दुगुंछ -चउआउ -तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास अगुरुवठहुअ-उवधाद-णिमिण-पंचेतराइयाणं णिरंतरो षंघो, एगसमएण वंधुवरमाभावादो । सादासाद-सत्तर्णोकसाय-णिरय-मणुस-देवगइ-पंचिदियजादि-वेउन्वियसरीर-छसंठाण-ओरात्विय-वेउन्वियसरीरअंगीवंग-छसंघडण-णिरय-मणुस-देवाणुकुर्वी-पर-

पांच झानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सिध्यात्व, तेज्ञल व कार्मण शरीर, वर्ण, सम्यात्व, रह्म स्यां, अगुरुल्यु, स्थिर, अस्थिर, तुम, अगुम, निर्माण, नीचगोत्त, पांच अन्तराय और तियंगातिका वन्य स्वादय होता है। जारकायु, देवायु, नरकाति, देवमति, वैकियिकशरीर, वैकियिकशरीर, गेकियिकशरीर, गेकियिकशरीर, गेकियिकशरीर, गेकियिकशरीर, गेकियात्व क्षाता के समाता वेदनीय, सोलह क्याय, जी नोकराय, पांच जातियां, और राहिकशरीर, छह संस्थान, औदारिकशरीरगेगांगांग, छह संहमन, तियंगातुपूर्वा, आताय, उद्योत, द्रां विद्यागतियां, क्षत, स्थावर, बादर, सुझ, पर्यात्त, अपर्यात्त, मन्यक व साधारण शरीर, सुभग, दुमेग, सुस्थर, दुस्थर, आदेय, [अनादेय], यशकीर्ति और अयशकीर्तिका वन्य स्वोदय-पर्यात्य होता है, क्यांकि, होनों पकारोत्त भी इनके बन्धक क्यांक, होनी पकारोत्त भी इनके बन्धक कोई विरोध नहीं है। उपधात, परधात कीर उच्चलक्षक भी स्वोदय-परोदय वाता है। स्वाद्य-परादय वाता है। स्वाद्य-परादय वाता है। स्वादय-परादय वाता है। स्वादय-परादय वाता है। स्वाद्य-परादय वाता है। स्वादय-परादय-परादय वाता है। स्वादय-परादय वाता है। स्वादय-परादय-परादय वाता है। स्वादय-परादय वाता है।

पांच झानावरणीय, नी इदीनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलइ कपाय, भय, खुराुप्सा, बार आयु, तैजस व कार्मण रारीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलयु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तरायकां निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविक्रामका अभाव है। साता व असाता वेदनीय, सात नोकपाय, नरकगित, मनुष्यगति, वेदगति, पंचेन्द्रिय जाति, वेदिकियक, सरीरांगीयांग,

चाहुस्सास-आदाडुन्योव-दोविद्यायगद्द-तस-यावर-स्वर-सुहुम-यन्जसापन्नस-पत्तय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुमग-दुमग-सुम्सर-दुम्सर-जादेन्ज-जणादेन्ज-असकित्ति-जनसकिति-उन्सा-गोदाणं सांतरो वंद्यो, एगसमएण वि वंद्य-रायदेसणादी । तिरिक्खगद्द-तिरिक्खगदाओग्गाणु-पुन्ती-जोरातिस्यसरीर-जीचागोदाणं वंद्यो सांतर-णिरंतरो, तेउ वाउकाइएसु णिरंतरवंद्यवटमादो ।

असण्णीसु पणदास्त्रेस पचया सञ्वपयडीणं, वेडन्वियदुग-च उविह्मण-तिविह्वचिजीग-माणसासंजमाभावादो । णवरि णिरय-देवाउअ-णिरय-देवगइ-णिरयगद-देवगइपाओगगाणुपुञ्वी-वेडन्वियसरीर-वेडन्वियसरीरअंगोवंगाणं तेदास्त्रेस पञ्चया, ओरास्त्रियमिस्स-कम्मद्दयपञ्चयाण-मभावादो । मणुस्स-तिरिक्खाउआणं चीदास्त्रेस पञ्चया, कम्मद्दयपञ्चयाभावादो । सादा-वेदणीय-इरिथ-पुरिसवेद-हस्स-रिद-समचउराससंठाण-यसत्थविहायगइ-थिर-खुद-सुभग-सुस्सर – आदेडज-जसिक्तिणं बंधो तिगद्संजुतो, णिरयगईए अभावादो । णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइ-पाओग्गाणुपुञ्जीणं णिरयगहसंजुतो । मणुसाउ-मणुसगइ-मणुसगदपाओगगाणुपुञ्जीणं मणुसगइ-संजुतो । देवाउ-देवगइ-देवगदाभाओग्गाणुपुञ्जीणं देवगदसंजुतो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-

छह संहतन, नारकाजुपूर्वी, मजुष्याजुपूर्वी, देवाजुपूर्वी, परघात, उच्हवास, बाताप, उघोत, हो बिहायोगितयां, त्रस, स्यावर, बादर, सुक्स, पर्यान्त, अपर्यान्त, प्रत्येक व साभारण द्वारीर, हिचर, अस्थिर, जुम, अग्रुअ, सुभग, दुभंग, सुस्वर, दुस्वर, आदेष, बनादेष, यद्याकीर्ति, अयदाकीर्ति और उच्चयोगका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविद्यास देखा जाता है। तियंगाति, तियंग्यतिप्रायोग्याजुपूर्वी, औदारिकदारीर और नीवगोगका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, तेज व वायुकायिक जीवाँमें सका सन्तर हम्भ पाया जाता है।

असंबी जीवोंमें सब प्रकृतियोंके पैताठीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके वैकियिकद्विक, बार प्रकारका मन, अनुभय क्वनयोगके विना तीन प्रकारका वचन योग भीर मन जनित असंयम प्रत्योंका अभाव है। विशेषता यह है कि नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगतिः नरकगति व देवगतियायोग्यानुर्यी, वैकियिकशरीर और वैकियिकशरीरांगोपांगके तेताठीस प्रत्य हैं, क्योंकि, अद्दारिकामिश्र और कार्य हैं, क्योंकि, अद्दारिकामिश्र और कार्यण प्रत्ययोंका अभाव है। मनुष्यायु और तिर्यगायुके वचाठीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, कार्मण प्रत्ययका अभाव है।

सातावदनीय, स्त्रीवद, पुरुवेवद, हास्य, रति, समयतुरस्न संस्थान, प्रशस्तविहयो-गति, स्विर, शुन्न, सुभग, सुस्वर, मादेग मीर यशकीर्तिका बण्य तीन गतियाँसे संयुक्त होता है, क्याँकि, हनके साथ नरकारतिके बण्यका धमाव है। मारकायु, नरकारित और नमातिप्रायोग्यातुपूर्वीका बण्य नरकारतिसंयुक्त होता है। समुष्यायु, मातुष्याति और मजुष्यातिप्रायोग्यातुपूर्वीका मनुष्यातिसंयुक्त बण्य होता है। देवायु, देवगति और देवगति-प्रायोग्यातुपूर्वीका देवगतिसंयुक्त बण्य होता है। विर्थ गायु, तिर्यमाति, तिर्यगातिम्रायोग्यातुपूर्वीका देवगतिसंयुक्त बण्य होता है। विर्थ गायु, तिर्यमाति स्तरियगतिम्रायोग्यात् तिरिक्सनाइपानोनगाणुपुःनी-एइंदिय-नीइंदिय-नीइंदिय-चर्डारेदियजादि-आदावुज्जोन-बावर-सुहुम-बाह्मरणसरीराणं तिरिक्सगइसंतुत्तो कंचा । वेउन्वियसरीर-वेउन्वियसरीरकंगो-वंगाणं देव णिरयगद्दसंतुत्तो । बीरान्टियसरीरअंगोनंग-मज्ज्ञिमचउसंठाण-क्रसंचडण-अपज्जताणं तिरिक्स-मणुसनाइसंतुत्तो कंचो । णउसयवेद-हुंडसंठाण-अप्यसरधविद्यायगई-दुभग-दुस्सर-अणादेन-जीवागोदाणं तिगइसंतुत्तो कंचो, देवगईए अभावादा । उञ्चागोदस्स दुगइसंतुत्तो, जिरय-तिरिक्सगईणं अभावादो । अवसेसाणं पयडीणं कंघो चउगइसंतुत्तो ।

तित्मिखा चेव सामी, अण्णत्यासण्णीणमभावादो । बंघद्धाणं णात्य, एक्किम्ब् अद्धाणविरोहादो । बंधवीच्छेदो वि णत्यि, बंधुवरुंभादो । सत्तेतालीसधुववंधिषयडीणं चउ-चिह्ना बंधो । सेसाणं सादि-अद्धवी, पडिवन्छबंधाणुवलंभादो ।

आहाराणुवादेण आहारएस ओघं ॥ ३२३ ॥

एदस्स धुत्तस्स जथा ओषम्मि परूवणा कदा तथा कायव्वा । णवरि सव्वत्थ कम्म-इष्यच्चको अवणेयव्वो । चदुण्णमाणुषुव्वीणं बंधो परोदओ । उत्रषादस्स सोदओ ।

पूर्वी, प्रकेन्द्रिय, क्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, जाति, आताप, उपोत, स्थावर, सूक्स और साध्यरणदरिका तिर्वगातिसंयुक्त कथ होता है। विक्रीयकदारीर और विक्रियक्त हार्रारागोपांगका देव व नरक गतिसे संयुक्त कथ्य होता है। औदारिकदारिंगोपांग, मण्यम बार संस्थान, छह संहनन और अपर्य-(त्रका तिर्यगाति व मयुष्यगतिसं संयुक्त कष्ण होता है। नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान, अप्रदास्तविहायोगाति, युभंग, दुस्वर, अनादेय और नीखगोक्का तीन गतियाँसे संयुक्त होता है, क्योंकि, इनक साथ देवगातिके बच्यका अभाव है। उच्चगोकका तीन गतियाँसे संयुक्त होता है, क्योंकि, उत्तक साथ नरक और तिर्यगातिका वस्थ नहीं होता। दोष महतियाँका वरुष्य वार्य होता है।

तिर्येच जीव ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियों में असंही जीवोंका अभाव है। बन्धाप्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्यानका विरोध है। बन्धायुद्धेत्व भी नंहीं है, क्योंकि, बन्ध पाया जाता है। सैंताठीस सुवदन्धी महातियोंका चारों मकारका बन्ध होता है। शेप महातियोंका सादि च अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, हनके मितपक्ष अर्थाव, अनादि य सुव बन्ध नहीं पाये जाते हैं।

आहारमार्गणानुसार आहारक जीवोंमें ओघके समान प्ररूपणा है ॥ ३२३ ॥

इस खुनकी जैसे ओघर्ने प्रकारणा की गई है उसी प्रकार यहां भी करना चाहिये। निवेचता केवल इतनी है कि सर्वत्र कार्मण प्रत्ययको कम करना चाहिये। चार आकु वृर्वियोक्य वन्य परोत्य होता है। उपधातका स्वीद्य वन्य होता है।

१ मतिष्ठ ' पश्चिमकावध्यकताची ' इति पाठः ।

अणाहारएसु कम्मइयभंगो ॥ ३२४ ॥

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय-वारसकसाय - पुरसवेद-हस्स-रिद-[अरिद-]सोग-भय-दुर्गुंडा-मणुसगइ-पंचिदियजादि-जोरालिय-तेजा कम्मश्यसरीर समच उरससंद्राण-श्रोरालियश्रेगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंच रस-फास मणुसगश्याश्रोग्गाणुपुर्वी-अगुरुवल्डुअ-उवचाद-परघाद-उस्सास-पराध्यविद्यायाह-तस-बादर-पज्ञत-पत्तेयसरीर-विराधिर-सुद्धासुह-सुमग-सुस्सर-आदेज-जसकिति-अजसिति-णिमिणुशागोद-पंचतराहवपयडीवो तीहि गुणक्काणेहि बज्ड-माणिवाजो । एदासिसुदयपुज्यावरकालसंबंधिवंधवोच्छेद्रपरीक्स्ता णस्यि, सच्चासिमेर्स्य वंधोदक-दंसणादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-ते ना-कम्बद्धयतीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अंगुस्त-ल्हुब-थिराथिर-सुद्दासुद्द-णिमिण-पंचंतराद्दयाणं सोदञो वंषो, धुवोदयत्तादो । ओरालिवसतीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग वज्जरिसद्दसंघडण-उवघाद-परघाद-उस्सास-प्सत्थ-विद्दायगद्द-पत्तेयसरीर-सुस्सराणं परोदओ वंषो, सोदएण एत्थ वंघविरोहादो । णिदा-पवल-असादावेदणीय-वारसकसाय-पुरिसवेद-दृस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-सुभग-आदेज्ज-जस-

अनाहारक जीवोंमें कार्मणकाययोगियोंके समान प्ररूपणा है ॥ ३२४ ॥

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, असाता वेदनीय, बारह कथाय, पुरुषवेद, हास्य, रित, [अरति], श्रोक, अप, जुलुप्सा, अनुप्याति, पेचेन्द्रिय ज्ञाति, औदारिक, तैजल व कार्मण शर्रार, समचतुरक्षसंस्थान, ग्रोवारिक, तीजल व कार्मण शर्रार, समचतुरक्षसंस्थान, ग्रोवारिक, ग्रोवारिक, राप्ता, त्राव्याति, अपात्ता, प्रवादात, प्रवादात प्रवासत्तिवहायोगित, अस, वादर, पर्योप्त, प्रत्येक्षशरीर, स्थिर, अस्थिर, ग्रुम, अग्रुम, सुमान, सुस्वर, अस्थिय, वश्चिम, अग्रुम, सुमान, सुस्वर, अस्थिय, वश्चिम, अग्रुम, सुमान, सुस्वर, अस्थिय, वश्चिम, वश्चम, वश्चम

्यांच बालाक्टचीय, चार दर्शनावरणीय, तेजल व कार्मण शरीर. वर्ण, गन्य, रस, स्वर्ण, मगुरुळपु, स्विर, वर्षिय, गुन, अगुम, निर्माण और पांच अन्तरायका स्थोदय बच्च होता है, क्योंकि, ये धुचीवर्षा हैं। औदारिकासरीर, समस्युद्धस्तरीयां, योदारिकासरीरां, वर्षायं, वर्षायं, उर्क्लवास, प्रशस्तिवहांथानाति, प्रत्येकासरीरां मार्ग, वर्षायं, पर्वात, उर्क्लवास, प्रशस्तिवहांथानाति, प्रत्येकासरीर स्थारका परोद्ध वच्च होता है, क्योंकि, स्थोदयं होता है। क्योंकि, स्थोदयं होता है। क्योंकि, स्थोदयं होता है। क्योंकि, वर्षायं प्रत्येक्ट होता है। क्योंकि, वर्षायं, पुरुषेवर, दास्थ, रति, क्योंकि, वर्षायं, पुरुषेवर, दास्थ, रति, क्योंकि, वर्षायं, क्योंकि, वर्षायं, व्यक्षिति और उच्चवोक्टका स्थोक्क

किति-अजसिकित-उच्चागोदाणं सोदय-गरोदओ, उद्दयहा वि वंबविरोहाभावादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओरगाणुपुच्त्रीणं वंचे। मिच्छाहिह-सासणसम्मादिहीसु सोदय-परोदओ । असंजद-सम्मादिहीसु परोदओ चेन, सोदएण वंघविरोहादो । पंचिंदियजादि-तस-बादर-पञ्चताणं मिच्छाहृहीसु वंचे। सोदय-परोदओ, पडिवक्खुदयदंसणादो । सासणसम्मादिहि-असंजदसम्मा-दिहीसु सोदओ चेन, पडिवक्खुदयाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-वारसकसाय-भय-दुर्गुळ-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुक्तवरहुअ-उवचाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरा वंघो, छुनवंधितादो । असादावेदणीय-हरस-दि-अरि-सांग-थिराथिर-सुहासुह-जसिक्ति-अजसिक्तीणं सांतरा वंघो । पुरिक्षवेदस्स मिच्छाइडि-सासणपम्मादिडीसु सांतरा। असंजदसम्मादिडीसु णिरंतरा, पिडवन्ख-पयदिवंघाभावादो । एवं समच उरससंठ्यण-वज्जिरसहसंघडण-पसत्यविद्यायगढ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जु-चागोदाणं पि वत्तवं । मणुसगढ-मणुसगक्षाजागगणुपुन्वीणं मिच्छाइडि-सासणसम्मा-दिडीसु सांतरा णिरंतरा, आणदादिदेवसुष्पिज्जय विग्महगईए वटमाणेसु णिरंतरबंपुवरुमादा ।

परोदय बन्ध होता है, क्योंक, दोनों प्रकारसे भी इनके बन्धका विरोध नहीं है। सनुष्य-गति और सनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध मिध्यादृष्टि व सासादनसम्यन्दृष्टि गुण-स्थानोंमें स्वोदय-परोदय होता है। असंयतसम्यन्दृष्टियोंमें परोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां स्वोदयसे दनके बन्धका विरोध है। पंचीनृत्य जाति, त्रस, बादर और पर्योक्तका बन्ध मिध्यादृष्टियोंमें स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, यहां दनकी प्राप्तसम् मकृतियोंका उदय देखा जाता है। सासादनसम्यन्दृष्टि और असंयतसम्यन्दृष्टि गुणस्थानमें उनका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, बहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है।

पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कवाय, मय, जुगुन्सा, तेजस ब कामंण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्वर्श, अगुक्लयु, उपधात, निर्माण और पांच अन्तराय, हनका निरन्तर बच्च होता है, क्योंकि, ये युववन्त्री हैं। असातावेदनीय, हास्य, रित, अराति, शोक, स्थिर, अस्पिर, गुम, अगुम, यशकीतिं और अयशकीतिंका सान्तर बच्च होता है। प्रवंपतसम्य- पुरुषका मिथ्याहि और सासादनसम्यन्द होतु पुण्यशानमें सान्तर होता है। अस्वयतसम्य- व्यथिमें उसका निरन्तर बच्च होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष मकृतियोंके बच्चका अभाव है। इसी प्रकार समयगुरकां स्वयाह वृद्धकर, अद्देय, अद्वयर, अद्वयर, अद्वयर, अद्वयर, अद्वयर, व्यव्याविक्रयोगित सुप्रमा, सुरव्यर, अद्वयं और उक्चाविक्र मी कहना चाहिये। मनुष्याति और मनुष्यातिमयोग्यानुवृद्धका विध्याहिष्ट व सासादनसम्यव्यव्यव्योगित सान्तर-निरन्तर बच्च होता है, क्योंकि, आनलाविक वेवोंके उराज होकर विमहगतिमं वर्तमान जीवोंके उत्वक्त निरन्तर वच्च पाया जाला है।

असंजदसम्मादिहीसु णिरंतरो, पडिवक्त्वपयडिजंशामावादो । पंचिदियजादि-**ओराज्ञित्तरीर-**जंभोवंम-परचादुस्सास-तस-बादर-पञ्जत-पत्तेयसरीराणं भिन्छाइहिन्दि सांतर-विरंतरो, सण-कक्तमारादिदेव-भरहएसु णिरंतरबंपुवरुंप्रादो । विम्गहगदीए कथं णिरंतरदा ? ण, सर्ति पक्टूच्य णिरंतरकुवदेसादो । सासणसम्मादिहि-असंजदसम्मादिहीसु णिरंतरो, पडिवक्स्वपय**दिवंधा**-भावादो । द्यक्मोराज्यिसरीरस्स वि वत्तन्त्रं ।

मिच्छाइहिस्स तेदाठीस, सासणस्स अहत्तीस, असंजदसम्मादिहिस्स ते**तीस**पच्चया । मणुसगइ-गणुसगइपाओग्याणुपुञ्चीणं बंधो मणुसगइसंजुतो । ओराठिय-सरीर-जोराठियसरीरंगोवंगाणं मिच्छाइहि-सासणसम्मादिहीसु तिरिक्ख-मणुसगइसंजुतो । असंजदसम्मादिहीसु मणुमगइसंजुतो । एवं वञ्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणस्स वि वत्तव्वं । उञ्चागोदस्स मिच्छाइहि-सासणसम्मादिहीसु मणुसगइसंजुतो, असंजदसम्मा-दिहीसु देव-मणुसगइसंजुतो । सेसाणं पयडीणं बंधो मिच्छाइहि-सासणसम्मादिहीसु तिरिक्ख-मणुसगइसंजुतो, एदेसिमपञ्जत्तकाले देव-णिरयगईणं बंधोमावादो । असंजदसम्मादिहीसु देव-

असंयतसम्यग्र्डियोंमें निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, उनमें मतिपक्ष म्रकृतियेंकि वन्धका अभावहै। पंचेन्द्रिय जाति, औदारिकदारीरांगोपांग, परघात, उच्ह्वास, वस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकदारीरका मिथ्यादिष्ट गुणस्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्वेंकि, सनकुमारादि देव और नारिकयोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

शंका-वित्रहगतिमें बन्धकी निरन्तरता कैसे सम्भव है ?

समाधान---नहीं, क्योंकि, शक्तिकी अपेक्षा उसकी निरन्तरताका उपदेश है।

सासादंनसम्यग्दाष्टे और असंयतसम्यग्दाष्ट्रयोमें उनका निरन्तर बन्ध होता है, वर्योकि, उनके प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। इसी प्रकार शौदारिकदारीरके भी कहता चाहिये।

मिध्याइष्टिके तेतालीस, सासादनसम्यग्दिके अड़तीस, और असंयतसम्यग्दिके तेतीस प्रत्य हैं। मनुष्याति और मनुष्यातिमंत्रीक होता है। अनुष्याति और मनुष्यातिमंत्रीक होता है। औदारिकदारीर और औदारिकदारीरांगोपांगका मिध्यादिष्ट और सासादनसम्बन्धान हिस्योमें सिप्तेणाति च मनुष्यातिसं संयुक्त बन्ध होता है। असंयतसम्यग्दियोमें मनुष्यातिसं संयुक्त बन्ध होता है। असंयतसम्यग्दियोमें मनुष्यातिसं सामाद्रिक स्वाहिये । उच्चगोवक्षा मिध्यादि और सासादनसम्यग्दियोमें मनुष्यातिसं सुक्त तथा असंयतसम्यग्दियोमें मनुष्यातिसं सुक्त तथा असंयतसम्यग्दियोमें देव व मनुष्य गतिसं संयुक्त वन्ध होता है। रोग प्रकृतियोक्त बन्ध संयत्तिसं संयुक्त होता है। असंयतसम्यग्दियोमें निर्यादिष्ट और सासादनसम्यग्दियोमें तिर्याति और मनुष्यातिसं संयुक्त होता है, क्योंकि, इनके अपर्यातकालमें देव व नरक गतिके बन्धका अभाव है। असंयतसम्यन्धियां

मणुसगइसंजुत्तो, तत्थण्णगईणं वंधाभावादो ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओरगाणुपुत्र्योः ओरालियससीरः ओरालियससीरः ओरागाणं चउगइ-मिन्छाइडि-सासणसम्मादिडी सामी, देव-णिरयगइअसंजदसम्मादिडी सामी। एवं वज्ज-रिसहसंचडणस्स वि वत्तर्यं । सेसाणं पयडीणं चउगडिमिन्छाइडि-सासणसम्मादिडि-असंजद-सम्मादिडिणो सामी। वंधदाणं सुगमं। वंधवीन्छेदो च सुगमे। गुववंत्रीणं वंधो मिन्छाइडीसु चउन्त्रिदो, सासणसम्मादिडि-असंजदसम्मादिडीसु तिविदो । सेसाणं पयडीणं सब्बस्य सादि-असुवो।

श्रीणागिद्धितय-अणंताणुविध्यउक्कित्थिवेद निरिक्खगर्-चउसंघडण-चउसंठाण-तिरिक्ख-गृहपाओगगाणुपुञ्ची-उज्जेव-अपसन्धविहायगर्-द्रभग-दृम्भा-अणार्देज-णीचागीदाणं दुहाण-पयडीणं बुच्चदे — अणंताणुविध्यउक्कित्थिवदाणं वंशोदया समं वोच्छिणणा । दृभगाणादेज-णीचागीद-तिरिक्खदुगाणं पुन्वं वंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि । अवसेसाणं पयडीणं बंधवोच्छेदो चेन, पन्धुद्यविरोहादो । अणंताणुवंधिच उक्कित्थिवंद-तिरिक्खगद्दुग-दुभगाणा-देज्ज-णीचागोदाणं वंधो सोदय-परोद्ञो, उद्घहा वि वंश्वविरोहामाबादो । सेसाणं परोद्रओ

ग्डप्रियोमें देव व मनुष्य गतिले संयुक्त दन्ध होता है,क्योंकि, उनमें अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्राये। त्यातृष्यं, औदारिकदारीर और औदारिकदारीरांगो-पांगकं चारों गतियांक भिध्यादिष्ट च सामादनसम्प्रश्यक्षि, तथा देवगति व नरक-गतिकं असंयनसम्प्रवृष्टि स्वामी हैं। इसी प्रकार वज्यंभनंदननंक भी कहना चाहिये। रोप प्रवृतियोकं चारों गतियोकं मिथ्यादिष्ट, सामादनसम्पर्श्यक्ष और असंयनसम्प्रवृष्टि स्वामी हैं। बन्धाष्त्रान सुगम है। बन्धस्युद्ध्युद्ध सी सुगम है। धुवबन्धी प्रकृतियोका वन्ध मिथ्यादिष्ट्योमं चारों प्रकारका होता है। सासादनसम्प्रवृत्ति और असंयनसम्प्रवृत्ति स्विमी तीन प्रकारका बन्ध होना है। जोप प्रकृतियोका सर्वत्र सादि व अधुव बन्ध होता है।

स्थानमृद्धित्रय, अनन्तानृबन्धियानुष्क, स्त्रीवर, निर्यगाति, चार संहतन, चार संस्थात, तिर्यगातियायोशयानुपूर्वा, उद्यात, अप्रशस्त्रीवहायोगिति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगात्र, इत हिस्थान प्रश्तियाकी प्रस्पवा करते हैं — अनन्तानुबन्धियानुष्क और स्त्रीवर्षा चय उद्य दानों साथ व्युच्छित्र होते हैं। दुर्भग, अनादेय, नीचगोत्र और तिर्यगातिहकका पूर्वेन वस्य और पश्चात् उदय व्युच्छित्र होते है। हो प्राप्त प्रस्तियोक्ता केवल वस्थव्युच्छेद ही है, क्योंकि, यहां उनके उदयका विरोध है। अनन्तानुबन्धियानुष्क, स्त्रीवर, तिर्यगातिहक, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका वस्य स्वीद्य-परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके वस्थक विरोध नहीं हैं। शेष प्रकृतियोंका परोह्य वस्थ

षंभा, परश्वदयामावादो । यीणगिद्धितिय-अणंताणुवंधिच उनकाणं णिरंतरा वंधा, अणेगसमय-वंधसित्तर्यस्त्रतादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपओग्गाणुपुव्व-णीचागोदाणं मिच्छाइडीसु सांतर-णिरंतरो, तेउ-वाउकाइएसु विग्गद्वं काऊणुप्णणाणं तदो विग्गदाईए गयाणं सत्तमपुद्ववीदो विग्मद्वं काऊण णिग्गयाणं च णिरंतावंधुवरुमाद्वा । सावणिम्म सांतरा, एगसमएण वि बंधु-वरमसर्तिदंसणादो । सेसाणं पयडीणं वंधो सम्बद्ध सांतरा, सामावियादो । पच्चा सुगमा । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुन्थी-उज्जोवाणं तिरिक्खाइसंख्तो । वउतंद्राण-चउसंघडणाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंख्ता । इरिथेवदस्स दृगइसंख्तो, देव-णिरयगईणमभावादो । अप्यस्त्यविद्यायाद्व-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं वंधो मिच्छाइडिम्ड सासणे दुगइसंख्तो, देव-णिरय-गईणमभावादो । थीणगिद्धितिय-अणंताणुवंधिच उक्काणं मिच्छाइडिम्ड सासणे दुगहसंख्तो, णिरय-देवगईणममावादो । चउगइमिच्छाइडि-सासणसम्मादिडिणा सामी । वंधद्धाणं वंध-वोच्छरइाणं च सुगमं । धुववंधीणं यंधो मिच्छाइडिम्ड चडिवदो । सासणे तिविद्दो,

होता है, क्योंकि, यहां उनका उदयाभाव है। स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानवन्धिचतुष्कका निरस्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये अनेक समयरूप बन्धशक्तिसे संयुक्त हैं। तिर्यगाति, तिर्य-गातिप्रायोग्यानपूर्वी और नीचगोत्रका मिथ्यादृष्टियोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि. तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमें विग्रह करके उत्पन्न हुए, उनमेंसे विग्रहगतिमें गये हुए,तथा सप्तम पृथिवीसे विग्रह करके निकले हुए जीवोंके उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। सासादन गुणस्थानमें उनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी बन्धविश्रामशक्ति देखी जाती है। शेष प्रकृतियोंका यन्य सर्वत्र सान्तर होता है, क्योंकि. पेसा स्वभाव है। प्रत्यय सगम हैं। तिर्यगातिप्रायागपूर्वा और उद्योतका तिर्यगातिस संयुक्त बन्ध होता है। चार संस्थान और चार संहतनका तियुग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। स्त्रीवेदका दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहां उक्त दो गणस्थानोंमें देव व तरक गतिके बन्धका अभाव है। अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनोदेय और नीचगोत्रका वन्ध मिथ्यादप्रिय सासादनसम्यग्दाप्रे गुणस्थानमें दो गतियाँसे संयुक्त होता है. क्योंकि. देव व नरक गतिके वन्धका अभाव है । स्त्यानगृद्धित्रय और अनन्तानवन्धिचतष्कका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, नरक च हेव गतिके बन्धका अभाव है। चारों गतियोंके मिथ्याद्दरि भार सासाउनसम्यग्दरि स्वामी हैं। बन्धाध्वान व बन्धन्युच्छेदस्थान सुगम है। ध्रवबन्धी प्रकृतियाँका बन्ध मिथ्यादिश गुणस्थानमें चारों प्रकारका होता है। सासादन गुणस्थानमें तीन प्रकारका बन्ध

१ प्रतिषु 'संख्वादी ' इति पाठः । १ प्रतिषु 'तरी ' इति पाठः ।

अप्रती ' सिन्छाइडिन्डि चउदिवही सासणे ' इति पाठः ।

धुक्राभावादो ।

सिच्छत्त-णहुंसयवेद-चउजादि-ढुंडसंठ्रण-असंपरासेवहसंघडण-आदाव-यावर-मुहुमअप्रज्ञत-साहारणसरीराणमेगडाणाणं हु-चदं — उदयादो षंघो पुत्वं पच्छा वा वोच्छिण्यो सि
[विचारो] मिन्छत-चउजादि-थावर-सुहुम-अपज्ञताणं णिट्य, अक्कमेण षंघोदयवोच्छेदरंसणादो ।
ण्डंसयवेदस्स पुत्वं षंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, असंजदसम्मादिहिन्दि उदयवोच्छेददंसणादो । हुंडसंठाण-असंपत्तेसवृद्धंचडण-आदाव-साहारणसरीराणं यंभ्योच्छेदो चेव, उदयबोच्छेदो णित्य, अभावस्स मावपुरंगमत्तदंसणादो । ण च एदासि पयडीणं विम्मह्मदीए
इदो अत्य, अणुवरुंगादो । मिच्छत्तस्स वंधो सोदर्गण, णुंउसयवेद-चउजादि-यावर-सुहुमअपज्जताणं सोदय-परोद्गण, हुंडसंठाण-असंपत्तिवृद्धंचडण-आदाव-साहारणाणं परोदरण ।
भिच्छत्तस्स वंधो शिरंतरो । सेसाणं सोतरो, णियमाभावादो । पच्चा मुगमा । मिच्छतणुंसववेद-हुंदसंठ्यण-असंपत्तेसवृद्धंचडण-अपज्ञताणं वंधो तिरिक्त मणुसगद्दंचुतो । चउव्यादि-आदाव-यावर-सुहुम-साहारणाणं तिरिक्तव-गद्धंचुतो । मिच्छत-णुंसयवेद-हुंडसंठ्यणअसंपत्तिस्वःसंचुलाणं चराइमिच्छादृद्धी सामी । एदंदिय आदाव-यावराणं तिगद्दमिच्छादृद्धी सामी ।

होता है. क्योंकि, वहां भ्रवबन्धका अभाव है।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, चार जातियां, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप, स्थावर, स्थम, अपर्याप्त और साधारणदारीर, इन एकस्थान प्रकृतियोंकी महत्त्वणा करते हैं — उदयसे बन्ध पूर्व या पश्चात ब्युच्छिन्न होता है यह विचार मिथ्यात्व, चार जातियां, स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त प्रकृतियोंके नहीं है, क्योंकि, इनके बन्ध और उत्रयका व्यव्छेद एक साथ देखा जाता है। नयुंसकदेदका पूर्वमें बन्ध और पश्चात उदय व्यव्छित्र होता है, क्योंकि, असंयतसम्यग्दीष्ट गुणस्थानमें उसका उदयव्युच्छेद डेखा जाता है। इण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप और साधारणशरीरका केवल बन्धःयुच्छेद ही है, उदयव्युच्छेद नहीं है; क्योंकि, अभाव भावपूर्वक देखा जाता है। बीर इन प्रकृतियोंका विप्रहगतिमें उदय है नहीं, क्यांकि, वहां वह पाया नहीं जाता। मिण्यात्वका बन्ध खोदयसे; नपुंसकवद, चार जातियां, स्थावर, सुक्षम और अपूर्यातका खोड्य-परोवयसेः तथा हुण्डसंस्थान, असंभाष्तस्यादिकासंहनन, आताप और साधारणशरीरका जरोडयसे बन्ध होता है। मिथ्यात्वका बन्ध निरन्तर होता है। शेव प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनके बन्धका नियम नहीं है। प्रत्यय सुगम हैं। मिथ्यात्व, नवूंसकवेद, इण्डसंस्थान, असंप्राप्तस्पादिकासंहनन और अपर्याप्तका बन्ध निर्यगाति व मनुष्य-गतिसे संयुक्त होता है। चार जातियां, आताप, स्थावर, सुक्ष्म और साधारणका तिर्यगाति-संयक्त बन्ध होता है। मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तस्पाटिका-संहतनके चारों गतियोंके मिथ्यादिष्ट स्वामी हैं। एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरके तीन साबी, भिरयवर्षेत्र भगानादो । मीदंदिय-वीदंदिय-वार्डिदिय-वार्ड्स्य-वार्ट्स्य-वार्ड्स्य-वार्य-वार्ड्स्य-वार्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ट्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्य-वार्य-वार्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्ड्स्य-वार्य-वार्य-वार्य-वार्य-वार्य-वार्य-वार्य-वार्य-वार्य-वार्य-वार्य-वार्य-वार्य-वार्य-वार्य-

सादावेदणीयस्स अणाहारीधु वंधवोच्छेदा चेव, उद्ववोच्छेदानावादो । सम्बत्ध वंधो सोदय-परेत्दवो । मिन्छाइडि-सासणसम्मादिडि-असंबदसम्मादिडीसु सांतरे, पडिवृक्ख-पयिडेवंपुवरुंमादो । सजोगिन्दि णिरंतरो, पडिवृक्ख-पयिडेवंपुवरुंमादो । पञ्चया सुगमा । णविर सजोगिन्दि कम्मद्वयकायजोगपञ्चजो एकको चेव, अण्णेसिमसंभवादो । मिन्छाइडि-सासणसम्मादिडीसु तिरिक्ख-मणुसगद्दसंजुतो । असंजदसम्मादिडिसु देव मणुसगद्दसंजुतो । सजोगीमु अगद्रसंजुतो । चउगद्दमिन्छाइडि सासणसम्मादिडि-असंवदसम्मादिडिको मणुसगद्द केवलिणो च सामी । वंधदाणं वंधवेन्छिण्णहाणं च सुगर्म । साझि-अखुवो वंधो, सामावियादो ।

देवगइ-वेउव्वियसरीर वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गालुपुन्नी-तिरथयरणामाण-

गतियोंके मिष्यादिष्ट स्वामी हैं, क्योंकि, तरकगतिमें इनके बन्यका समाव है। द्वीरिद्रय, त्रीरिद्रय, चतुरिरिद्रय, सदस, अपर्याप्त और साधारणके तिर्यंच और मजुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, देव व नारकियोंमें इनके बन्यका समाव है। बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्यानमें अध्वानका विरोध है। बन्धव्युच्छेदस्यान सुगम है। मिष्यात्वका बन्ध चारों मकारका होता है। येप महतियोंका सादि व अञ्चव बन्ध होता है।

सातावदनीयका अनाहारी जीवोंमें केवल वन्यव्युच्छेद ही है, क्योंकि, वहां उसके उदयव्युच्छेदका अभाव है। सर्वेत उसका स्वोद्य परोदय बन्य होता है। निष्याद्याहे, साला-दनस्वय्व्यहिश्वेश असंवत्यस्यव्यहिश्वेश अस्पेक्त स्वयं प्रत्येक, स्वाप्त क्या होता है, क्योंकि, स्वाप्त स्वयं होता है, क्योंकि, स्वाप्त स्वयं होता है, क्योंकि, स्वयं प्रत्यं के स्वयं कि स्वयं स्वयं के स्वयं कि स्वयं के स्वयं के स्वयं है। स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं है। स्वयं स्वयं

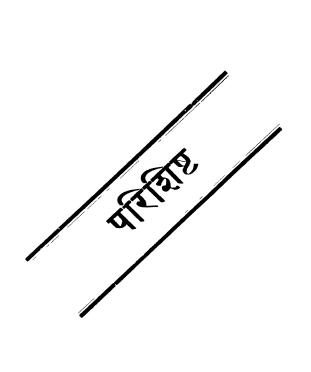
देवगति, वैकियिकदारीर, वैकियिकदारीरांगोपांग, देवगतिमायोग्यानुपूर्व और

मसंबदसम्मादिष्टिणो बन्हमाणाणं पयडीणं उच्चदे — एदासिं परोदएण बंधो । कुदो, साहा-वियादो । णिरंतरा, एगसमएण बंधुबरमसत्तीए अभावादो । पच्चया सुमा। । णवरि देवबाह-चउनकस्स वर्डसयपच्चजो णस्य । तित्ययरस्स देव-मणुसगद्दसंजुतो । तित्ययरस्स तिरिक्खगईय विणा तिगद्दशसंबदसम्मादिष्टिणो सामी । सेसाणं तिरिक्ख-मणुसा सामी । बंधदाणं बंध-वोच्छिण्णद्दाणं च सुगमं । सादि-अन्दनो बंधो, अन्दनवंधितादो ।

एवं बंधसामित्तविचओ समत्ते। !

तीर्थंकर नामकर्म, इन असंयतसम्यग्राष्टि जीवों द्वारा वध्यमान प्रकृतियों की प्रकरणा करते हैं-इनका परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है। तिरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके कम्पविधामशाकिका अभाव है। प्रत्यय सुगम हैं। विशेषना इननी है कि देवगतिवातुष्कके नपुंसकवेद प्रत्यय नहीं है। तीर्थंकर प्रकृतिका दिव और सन्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। तीर्थंकर प्रकृतिके तिर्यगतिके विना तीन गतियों के असंयतसम्यग्राष्टि स्वामी हैं। शेष प्रकृतियोंके तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं। वन्धाप्यान और बन्धव्युन्धिक्र स्वास्तर स्वास स्थान सुगम हैं। सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुवबन्धी प्रकृतियों हैं।

इस प्रकार बन्धस्वामित्वविचय समाप्त हुआ।



1793	संख्या	सूत्र	П£Т	सूत्र संह्या	सूत्र	28
/ A -1	(141)	· & - 1	ટ૦	174 CIA-11	W.	50
ę	जो सो बंधसामित्र तस्स इमो दुविद्यो। आदेसेण य।	विचओ जाम णिहेसो ओघेज	ą	बंघा, ७ णिहा	वंधो वोच्छिज्जदि । पदे अवसेसा अवंघा । णिद्दा-पयलापयला-थीण-	१ ३
2	ओघेण बंधसा चोइसजीवसमास न्वाणि भवंति ।	मित्तविचयस्स ाणि णादः	ષ્ઠ	माया [.] तिरिः	-अणंताणुर्वधि-कोह-माण- लेभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ- म्खगइ च उसंडाण-च उसंघ-	
¥	मिच्छाइट्टी स सम्मामिच्छाइट्टी इट्टी संजदासंजदा	असंजदसम्मा- पमत्तसंजदा		पुव्चि दुभग	-तिरिक्खगइपाओगगाणु - -उज्जोव-अप्पसत्थविद्वायगदि- -दुस्सर-अणादेज्ज−णीचा- णं को बंधो को अबंधो ?	₹o
	अप्यमत्तसंजदा आ उथसमा खवा व सांपराइयपइट्टउब सुदुमसांपराइयप उवसंतकसायवीय	मणियद्विबादर- समा खवा १९उवसमाखवा		अबंघ	। एदे वंधा, अवसेसा ।। -पयलाणं को वंधो को	3¢
	खीणकसायवीयर। सजोगिकेवली अर	यछदुमत्था	ช	करण	ग्रहिप्पहुडि जाव अपुरव- पविद्वसुद्धिसंजदेसु उव-	
ક	पदेसि चे।इसण्हं पयडिबंधवीच्छेदी भवदि ।		ų	द्धाप वंधी	खवा बंधा । अपुष्यकरण- संखेजजदिमं भागं गंत्प वोच्छिज्जदि । एदे बंधा,	
•	दंसणावरणीयाणं	ब् वागोद—पंचण्डमंतराइ याणं । वंधो को अवंधो ?	y	अवलेसा अवंघा। ११ सादावेदणीयस्स को वंधो को अवंघो?	3 8	
	को बंधो को अवंध			केवरि	ग्रहट्टिप्पहुडि जाव सजोगि- ठ सि बंधा। सजोगि-	
	सांपराइयसुद्धिसं	मिच्छादिद्विप्पदुढि जाव सुदुम- सांपरादयसुद्धिसंजदेसु उवसमा खवा बंघा । सुदुमसांपरादय-		वंधो	ठअद्धाप चरिमसमयं गंतूण बोव्छिज्जादि । पदे बंधा, वेसा अवंधा ।	3 9
	सुद्धिसंजवद्धाय चारिमसमयं			१३ असा	दावेदणीय-अरिद-सोग	

8. 4. 4₹.

80

धश

૪ર

કરે

38

40

,,

પર

प्रष्ठ सूत्र संख्या

सुत्र

98

अधिर-असुह-अजसकित्ति-णामाणं को बंधो को अबंधो ?

१४ मिच्छादिद्विष्पद्वांडे जाव पमत्त-संजदावंधा। एदे वंधा, अव-सेसा अवंधा।

- १५ मिच्छत्त-णवंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगद्ग-एइंटिय-वेइंटिय-ती-इंदिय-चउरिंदियजादि-इंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण - -णिरयगइपाओग्गाणुपुद्धि आदाव-थावर-सुदुम-अपञ्जल-साहारण-सरीरणामाणं को बंधो को अबंधो ?
- १६ मिच्छाइट्री बंधा । एवे बंधा. अवसेसा अबंधा ।
- १७ अपच्चक्खाणावरणीय-कोध-माण-माया लोभ मणुसगइ-ओरा-लियसरीर-ओरालियसरीरअंगी-वंग-वज्जरिसहवहरणारायणसंघ-डण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्यि-णामाणं को बंधो को अबंधी?
- १८ मिच्छाइट्रिप्पहुडि जाव असंजद-सम्माइट्टी वंघा । एदे वंघा, अव-सेसा अवंधा।
- १९ पच्चक्खाणावरणीयकोध-माण-माया लोभाणं को बंधो अवंधो ?
- २० मिच्छाइद्विष्पहुडि जाव संजदा-संजदावंधा। एदे वंधा, अव-सेसा अवंधा ।
- २१ परिसवेद कोधसंजलणाणं वंधो को अवंधो ?

२२ मिच्छाइद्रिप्पहुडि जाव अणि-यद्भिवादरसांपराइयपइट उवसमा-अणियदि-वादरद्वाप सेसे संखेज्जाभागं गंतुण बंधो बोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा।

२३ माण-मायसंजलणाणं को बंधो को अवंघो ?

२४ मिच्छाइट्रिप्पइडि जाव अणि-यदिवादरसांपराइयपविद्रु उवसमा खवा बंघा। अणियद्विबादरद्वाए सेसे सेसे संखेउजाभागं गंतूण बंधो बोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ।

२५ ले।भसंजलणस्स की बंधी की अवंधा ?

२६ मिच्छाइट्रिप्पहुडि जाव अणि-यद्विवादरसांपराइयपविद्रुउव ---समा खवा बंधा । अणियट्टि-बादरद्वाए चरिमसमयं गंतुण बंधा बोच्छिज्जदि । एदे बंघी. अवसेसा अवंधा ।

२७ हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं का बंधो को अबंघो।?

२८ मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अपूब्य-करणपविद्वउवसमा खवा बंधा। अपूब्बकरणद्वाप चरिमसमयं गंतुण बंधो बोच्छिज्जादि। एदे षधा अवसेसा अवधा ।

२९ मणुस्साउअस्स को बंधो को अवंघो ?

३० मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी बंधा । एदे वंघा, अवसेसा अवंघा।

પર 44

48

40

५९

٤o

६१

६२

अपुञ्चकरणयष्ट्रउवसमा

गदि-पंचिदियजादि-ओराहिय-

63

••

९८

,,

१०१

१०२

पृष्ठ सूत्र संख्या

सूत्र

68

803

.,

१०४

१०५

१०५

308

तका कामहरकसरीर-समय उरस-संद्राक कोराक्षियररिर्जगोवंग -वरजिरस्रहर्सक्ष्य-वर्ण-गंध-रस-पत्तस-मणुस्तारपामांगाणु-पुढिव-भगुरकहुग-उवधाव-पर-धाव-उस्सास पस्तव्यविद्यायगिर-तस-बादर-पज्ञत-पत्तेयसरीर-विराधिर-सुहासुह-सुभग-सुस्तर-मोर्गज-जसकि तम्बासकिति-णिमणुञ्चागोद-पंचतराऱ्याणं को बंधो को अपंधी?

का बधा का अबधा : ४४ मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव असंजद-सम्मादिद्री बंधा । एदे वंधा,

अबंधा परिधा

४५ णिहाणिहा-पयलापयला-र्याण-गिज्ञिश्रणंताणुर्वधिकोध-माण-माया-लोभ दृश्यिकेन तिरिक्खाउ-तिरिक्खाउ-चउसंदाण-चउसंघ-डण-तिरिक्लग्रहाथोगगाणु-पुत्वी-उज्जोब-अप्पसन्धविहाय-गह-दुमग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधों को

४६ मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी बंघा । पदे बंघा, अवसेसा अवंघा।

४७ मिच्छत्त-गबुंसयवेद-हुंडसंडाण-असंपत्तसेवदृसरीरसंघडण-— णामाणं को बंधो को अवंधो ?

४८ मिच्छाइही बंघा । एदे बंघा, अवसेसा अबंघा।

४९ मणुस्लादशस्य को बंधो की अबंधो ? ५० मिच्छारट्टी सासणसम्मारट्टी असंजदसम्मारट्टी बंधा । पदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।

५१ तित्थयरणामकम्मस्स की वंश्रो को अवंश्री?

५२ असंजदसम्मादिट्टी बंघा । एदे बंघा, अवसेसा अबंधा ।

५३ एवं तिसु उवरिमासु **पुढवीसु** णेयव्वं ।

५४ चउत्थीप पंचमीप छट्टीप पुढवीए एवं चंच णदृब्यं । णबरि विसेसी, तित्थयरं णत्थि ।

५५ सत्तमाए पुढवीय णेरस्या पंचणाणावरणीय-छुदंसणावरणीयसादासाह-वारसक्तमाय-पुरिसवद क्हस-दि-अरदि- सीग-अयदुगंछा-पाँचिदियजादि-ओरालियतज्ञा-का-का-प्रतिस-सम्बद्धससंडाण-औरालियस-दीर्श्योचीनका-रात्स-अगुरुवलकुव उवचादपरधाद-उस्सास-पसत्यविद्दायमाद-पज्जा-चोद--साद-भ्या-स्ति-धिराधियसुमा-सुस्स-अपुक्ज-ज्ञसिकितअजसिकित-णिमिण-पंजताह्याणं को बंधो को अवंदो ?

५६ मिच्छादिद्विष्पद्वृडि जाव असं-जदसम्मादिद्वी वंश्वा। पदे वंश्वा, अवंश्वा णित्य।

५७ णिहाणिहा-पयळापयळा-शीण-गिद्धि-अणंताणुर्वधिकोध-माण-माया-छोम-इग्यियेट्-तिरि**व्हड-**गृह्य-युउसंटाण-स्वडसंग्रहण-

,,

अवसेसा भवंधा।

ह्यस्सर-मादेख-जसकित्ति-भजस-

१२६

,,

१२७

१३०

१३४

१३७

१३८

७१ देवाउअस्स को वंधो को अवंधो ? ७२ मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी संजदासंजदा

असंजदसम्माइट्टी संजदासंजदा बंघा । एदे बंघा, अवसेसा अवंघा।

७३ पंचिदियतिरिश्खअपज्जत्ता पंच-णाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-

सावासाद-भिच्छत्त-सोलस-कसाय-णवणोकसाय-तिरिश्वाउ-मणस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुस-गइ-पहंदिय-भीइंदिय-तीइंदिय-च उरिदिय-पंचिदियजादि-ओरा-क्रिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छ-संक्षण-ओराहियसरीरअंगे(वंग-ळसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगह-मणुसगइपाओ-म्माणुपञ्ची-अगुरुगलहुग-उच--घाद-परघाद-उस्सास-आदा-उड़जोब दे।बिहायगद्द-तस थावर-बादर सहम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह सुभग- [दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणा-देज्ज-जसकित्ति-अजसकिति — णिभिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइ-याणं को बंधों को अबंधो ?

७४ सब्बे षरे बंधा, अबंधा णत्थि ।

४५ मणुसगदीए मणुस-मणुसपटजत्त-मणुसिणीसु ओधं णेयव्यं जाव तित्थयरे सि । णबरि बिसेसो, बेट्टाणे अपच्चक्खाणावरणीयं जधा पींचिदियतिरिक्खमंगो।

७६ मणुसक्षपञ्जत्ताणं पंचिदियः तिरिवस्त्रभणञ्जत्तामंगो । ७७ देवगदीए देवेस पंचणाणावर-णीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय--पुरिसवेद-हस्स~ रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसग६-पंचिदियजादि-ओरा-लिय-तेजा-कम्म६यसरीर-सम-चउरससंठाण-ओरालियसरीर-अंगोवंग-चन्जरिसहसंघडण-वण्ण गंध-रस-फास-मणुसाण-पृथ्वि-अगुरुअलहुब-उवधाद-पर-घाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तम-वादर-पञ्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराह्याणं को बंधो को अवंधो ?

७८ मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाब असंजदः सम्माइट्टी बंबा । पद बंघा, अवंधा णित्य ।

५२ जिहाजिहा पयलापयला घीण— गिद्धि-अणंताणु पेथिकोच-माण— माया लोम-स्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खार-च उसंत्राण-च उसंघ-इण-तिरिक्खग्दपाओगगाणुपृथ्वी-उऽजोच—अप्पस्थावहायगर— दुसग-दुस्स-सणादेऽज-णीचा— गेदाणं को वेद्यों को सब्देधों ?

८० मिच्छारट्टी सासणसम्मा**रट्टी** वंघा । एदे वंघा, अवसेसा अवंधा ।

८१ मिच्छत्त-णवंसयवेद-पदंदिय-जादि हंडसंठाण-असंपत्तसेवह-संघडण-आदाब-धावरणामाणं को बंधो को अवंधो ?

१४३

,,

188

				` .
सूत्र संख्या सूत्र	åâ	सूत्र संख्या	सूत्र	বৃষ্ণ
८२ मिच्छाइट्टी वंघा । एदे वंघा, अवसेसा अवंघा । ८३ मणुस्साउअस्स को वंघो को	१४३	उच्चागोद वंधो को अ		१४९
अवंघो ? ८४ मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी वंघा । पदे वंघा, अवसेसा अवंघा । ८५ तित्थयरणामकम्मस्स की वंधी	? 33	सम्मादिट्टी अवंधा णि ९२ णिहाणिहा	प्पहुडि जाव असंजदः वंधा । एदे बंधा, ध्य । प्यकापयलाःथीण— ताणुवंधिकोच-माण —	"
को अवंधो ? ८६ असंजदसम्माइट्टी वंदा । एदे वंदा, अवसेसा अवंदा ।	१ ४५	माया-लोभ च उसंघडण दुभग दुस्स	इत्थिवेद-चउसंठाण- त-अण्पसत्थिवद्दायगद्द- तर-अणादेउज-णीचा- वंधो को अवंधो ?	१५२
८७ भवणवासिय-वाणवेतर-जोदि- सियदेवाणं देवभंगो । णवरि विसेसो तित्थयरं णित्थ ।	१४६	९३ मिच्छाइट्ठी बंधा । प अवंधा ।	सासणसम्माइट्टी रदे बंघा, अवसंसा	,,
८८ सोहम्मीसाणकण्यवासियदेवाणं देवभंगो । ८९ सणक्कुमारण्यहुडि जाव सदर-	ર્ધ૭		बुंसयबेद-हुंडसंठाण- बट्टसंघडणणामाणं को क्षेत्रो ?	१५३
सहस्सारकप्पवासियदेवाणं पढ माप पुढवीप णरहयाणं भंगो ।	१४८	९५ मिच्छाइट्टी अवसेसा	वंधा। एदे वंधा, शर्वधा।	,,
९० आणद् जाव णवगेवज्जिधिमाण- वासियदेवसु पंचणाणावरणीय- छदंसणावरणीय-सादासाद-		अवंधो ?	मस्स को बंधो को सासणसम्माद्दी	१५४
बारसकसाय-पुरिसचेद हस्स- रहि भय-दुगुंछा मणुसगह पाँचे- दियजादि ओरालिय-तेजा-कस्म-	_	असंजदस बंधा, अवर	म्माइड्डी बंधा । यदे तेसा अवंधा।	,,
इयसरीर समचउरससंठाण ओरा ल्यिसरीरअंगोवंग-चःआरिसह-	-	को अवंधो	ामकम्मस्स को बंधो ? स्मादिद्री बंधा । परे	,,
संघडण वण्ण-नंघ रस-कास— मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुव लडुव उवघाद परघाद-उस्सास–		बंधा, अव	नारहा प्याः २२ सेसा अवंधा। जाव सम्बद्धसिद्धिः	१५५
पसत्यविद्वायगद्दः तसः — बादरः — पञ्जतः पत्तेयसरीरः चिराचिरः — स्टहासुदः सुभगः सुस्सरः आदेण्जः		वरणीय-छ	संयंदेवेसु पंचणाणाः दंसणावरणीय-सादा- सकसाय-पुरिसवेद	

لإلبالع

દ્રષદ

يهاع

१७०

१७२

सूत्र

몃종

हस्स रिद-अरिद-सोग-अय — दुर्गुछा-मणुस्साड-मणुसगह — पंचिदियजादि शेरालिय-तेजा-कंम्मह्मस्दर्गर— सम्बद्धरस— संग्राज-श्रोराक्रियसरीरअंगो— वंग-बज्जिरसहसंघडण-वण्ण-गंध रस-प्तास-मणुसगहराशो-गाणुपुञ्जी-अगुठ्यकहुश-उव-घाद परचाद उस्लास-पस्त्य-विहायगह तस बाहर-पज्जस— पत्तेयसराई-पिराधिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-भादेज्ज-जस-कित्ति-अजसांकिपि-णिमिण— तिस्थर उक्लागोद (पंजार)-तास्थर उक्लागोद (पंजार)-राणं को बंधों को अबंधों?

सूत्र

१०१ असंजदसम्मादिद्वी वंधा। अबंधा णात्थि।

१०२ इंदियाणुवादेण पहेंदिया बादरा सुद्धमा पञ्जला अपज्जला बीइविय-तीइदिय- स्वऽरिदिय-पञ्जला अपञ्जला पींसिदिय-अपञ्जलाणं पींसिदियातिरिक्ख-अपञ्जलभंगो ।

१०३ पंचित्रिय-पेचित्रियपण्डक्तस्यस् पंचणाणावरणीय चउदंसणा — वरणीय-जसिकत्ति-उच्चागोद-पंचेतराइयाणं को वंधो को अवंधो ?

१०४ सिच्छाइद्विष्णड्डि जाव सुडुम-सांपराइयसुद्धिसंजदेसु उव-समा खवा षेथा। सुडुमसांप-राइयसुद्धिसंजद्वार चरिम-समयं गेन्ण षेथो बोच्छि-ष्जदि दे बेथा, अवसेसा श्रवंधा। १०५ जिहाजिहा-पयळापयळा-यीणनिविः अर्णताणुकं विकोध-माणमाया जोभ-हरियवेह — तिरि--क्वाड-तिरिक्खगह- चाउसंत्रणचाउसंघडण-तिरिक्खगह पाभेगाणुपुक्यी उज्जोब- अप्पसत्यविहायगह-दुमम दुस्सर-अणादेज्ज-णीखाणोदाणं को बंधो
को अर्थथो?

१०६ मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी बंघा। एदे बंघा, अवसेसा अवंधा।

१०७ णिहा पयलाणं को बंधो की अवंधो ?

१०८ मिञ्छारिट्टेणहुडि जाव अपुञ्च करणपयिट्टसुडिसंजरेसु उथ-समा खवा वेषा। अपुञ्चकरण-संजददाए संखज्जिदिमं आगे गेत्ण वेषा बोच्छिज्जिद । पदे बेधा, अवसंसा अवेषा।

१०९ सादावेदणीयस्स को वंधी को अवंबो?

११० मिच्छाइट्टिप्यडुडि जाब सजोगि-केवली बंधा। सजोगिकेवलि-अद्वार चरिमसमयं गंतृण बंधो वोच्छिन्जदि। पदे बंधा, अध-सेसा अवंधा।

१११ असादावेदणीय-अरिद-स्रोग-अधिर-असुह--अज्ञसकिति--णामाणं की वंधी को अवंधी ?

११२ मिच्छादट्टिपबुडि जाव पमत्त-संजदो ति बंधा। ददे यंधा, अवसेसा अवंधा। १७४

--

१७७

। ।दे

102

१७९

१८०

१८२

१८३

858

124

१८६

٠,

,,

१८७

सूत्र

११६ मिन्छल-णहुंसयवेदः णिरवाउ णिरवगद्द प्रदेविय-बीहं विय तीरं दिय-बार्विय जातिः बुंडसंठाण-असंप्रक्षेत्रहः संग्रहण-णिरवाणु-पुरुषीः आदाकं थावर-सुदुम-अप-ज्जल-साहारणसरीरणामाणं को वंघो को अवंघो ?

११४ मिच्छाइट्टी बंधा। एदे बंबा. अवसेसा अवंधा।

११५ अवञ्चन्छाणावरणीयकोध — माण-माया-लोम-मणुसाह — सेरालिववसीर — सेरालिव — सरीरवंगोवंग-वःजरिसहवदर-णारावणसरीरसंघद्दण-मणुस-गहपामागाणुपुविषणामाणं को बंधो के अवंधो ?

११६ मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव असं-जदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अवंधा।

११७ पच्चक्खाणावरणकोध-माण — माया-लोभाणं को वंधो को अबंधो ?

११८ मिञ्छादिहिप्पदुडि जाव संजदा-संजदा बंधा। पदे बंधा, अव-सेसा अबंधा।

११९ पुरिसचेद कोघसंजलणाणं को वंघो को अवंघो ?

१२० मिच्छाविद्विप्यदुष्टि जाव अणि यद्दिषादरसांपरादपाविद्वडव-समा सवा बंधा । अणियद्वा बादरदाप लेसे संकेण्जामगे गेतृण बंधी वीच्छिज्जदि । परे बंधा, अवसेसा अवंधा । १२१ माण-मायासंजलणाणं को बंधो को अबंधो ?

१२२ मिच्छादिद्विष्णद्विष्ठ जाव आणि-यद्दी उवसमा खवा बंधा । अणियद्विषाद्रद्वाप सेसे सेसे संखेण्जे मागे गंतृण बंधो वोच्छिज्जदि । पदे बंधा, अवसेसा अबंधा।

१२३ लोभसंजलणस्स के। वंधी की अवंधी?

१२४ मिच्छादिद्विष्पद्वृद्धि जाव आणि-यद्दी जबसमा खवा बंघा। अणियद्विवादरद्वाए चरिम-समयं गत्ण बंघो बोच्छिज्जदि। एदे बंघा, अदसेसा अवंघा।

१२५ हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं की वंधी की अवंधी ?

१२६ सिन्छाइट्टिन्यहुडि जाव अपुज्व-करणपविट्टउवसमा खवा बंधा । अपुज्वकरणद्वाप चरिमसमयं गंत्ण बंघो वोच्छिज्जदि । पदे बंघा अवसेसा अवंधा ।

१२७ मणुस्साउभस्स को वंधी की अवंधी?

१२८ मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी बंघा। परे बंघा, अवसेसा अवंघा।

१२९ देवाउथस्स को वंधी को अवंधो?

१३० मिच्छाइट्टी सासणसम्माइटी असंज्ञदसम्माइट्टी संज्ञदासंज्ञदा पमत्तसंज्ञदा अप्यमत्तसंज्ञदा बंघा । अप्यमत्तदाय संखे १८७

228

१९१

,,

,,

HU	सहया

अवंधा ।

सूत्र

कादिमं भागं गत्ण बंधो बोच्छि-ज्जादि। एदे बंधा, अवसेसा

१३१ देवगइ-पंचिदियजादि-चेडव्बिय-तेजा-कम्मार्यसरीर-समचउरस-संठाण वेउविययसरीरअंगीवंग-वण्ण-गंध रस-फास-देवगइ-पाओरगाणुपुब्त्री-अगुरुवलहुब-उबघाद- परघाद— उस्सास — पसत्थविद्दायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आंद्रज्ज-णिमिण-णामाणं को बंधो को अवंधा ?

१३२ मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अपुरुव-करणपर्दृउवसमा खवा बंघा। अपुष्वकरणद्वाप संखेजि भाग गंत्रुण बंधो बोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अवंधा।

१३३ आहारसरीर आहारअंगोवंग -को वंधो गामाणं अबंघो ?

१३४ अप्पमत्तसंज्ञदा अपुव्यकरण-पद्दुउवसमा खवा बंधा। अपुव्यकरणद्वाप संखेज्जे भागे गंतुण बंधो बोच्छिज्जदि । एरे वंघा, अवसेसा अवंधा।

१३५ तित्थयरणामाए को वंधो को अवंधी ?

१३६ असंजदसम्मादिद्विष्पद्वृडि जाव अपुव्यकरणपरद्व उचलमा खवा बंघा। अयुव्यकरणद्वाए संखेज्जे-भागे गंत्रुण बंधो बोच्छिज्जिति । व्हे बंधा, अबसेसा अबंधा।

पृष्ठ सूत्र संख्या

सूत्र

पृष्ठ

१९९

200

२०२

२०५

पुढांविकार्य-१३७ काचाणुवादेण आउकाइयः-वणप्कदिकाइय --णिगोदजीव-बादर-सुदुम-पण्जसापञ्जसाणं बाद्रवण-कदिकाइयपत्तेयसरीरपञ्जला-पज्जसाणं च पंचिदियनिरिक्खः अपञ्जत्तभंगे। ।

१३८ तउकाइय-वाउकाइय-बादर-सुद्रुम-पञ्जलापञ्जलाणं सो चेव भंगो । जवरि विसेसो मणुस्साउ मणुसगइ मणुसगइ पाओग्गाणुपुर्वा—उच्चागोर् णान्थि ।

१३९ तसकाइय तसकाइयपज्जनाण-मोघं णेद्व्यं जाच तित्थयरे

१४० जे(गाणुवादेण पंचमणजीगि-पंचवचिजोगि-कायजोगीस् आर्घ ंणयञ्चं जाच तित्थयरे सि । २०१

१४१ सादावेदणीयस्स को बंधो को अवंघो ? मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव सजीगिकेवली बंधा। एदे बंधा, अवंधा णत्थि ।

१४२ ओरालियकायजोगीणं मणुस-२०३ गइमंगो। विसंसा

सादावेद-

जीयस्स मणजोगिभंगो । १४४ ओरालियमिस्सकायजोगीसु

१४३ णवरि

पंचणाणावरणीय छदंसणावर-णीय-असादावेदणीय-बारस-कसाय-पुरिसवेद-इस्स-रिद-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचि-दियजादि-तेजा-कम्म**इयसरीर**-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-

अजस कि कि - जिमिज-तित्थयर-

उच्चागोद-पंचतराद्याणं को

संढाण-बसंपत्तसेवष्टसंघडण-

आदाब-थावर-सुद्धम-अपङक्त-

(° ११ °)		परि	शिष्ट		
सूत्र संख्या	सूत्र	वृष्ट	सूत्र संस्या	स्प्र	ÂŖ
वंधी को अप १५८ पमससंजदा अवंधा णति	वंघा। एदे वंघा,	२ २ ९ २३ ०	अवंघो ? १६४ मिच्छाइ		२३८
वरणीय—— असादाचेदण पुरिसवेद-ह् सोग-भय-दु	जोगीसु पंचणाणः छ्रदंसणावरणीय — शिय-बारसकसाय- स्स - रिव-भरिद — गुंछा-मणुसगइ — दे स्रोराहिय तेजा-		केवली बं णत्थि । १६५ मिच्छत्त- बुंडसंठाण	तम्माहट्टी सजोगिः घा । एदे बंघा, मबंघा -णबुंसयवेद खउजादिः त-असंपद्यसेवद्दसंघ- ।व-धावर-सुदुम-अप-	२३९
कम्मइयसरी संदाण-ओरा वज्जरिसहर	र — समचउरस — हियसरीरअंगोवंग- वंघडण वण्ण-गंध- पुसगद्गपाओग्गाणु-		ज्जनसा वंधो को १६६ मिच्छाइ	हारणसरीरणामाणं को	" ২৮০
परघादुसास तस-बादर-प यिरायिर-सु	बलहुब-उबघाद — ।-पसत्थविहायगह्- ज्जन्त-पत्तेयसरीर- हासुह — सुभग — ज्ज—जसकित्ति-		व्यियसर् पाओग्गा	उब्बियसरीरबेउ रअंगोवंग-देवगइ णुपुब्दितिन्धयर को बंधो को अवंघो ?	૨ હ ૄ
अजसकिति पंचेतराहया	-णिमिणुच्यागोद- णंको वंघो को		बंधा, अर	तम्मादिद्वीषंघा। एदे स्तेसा अवंघा।	,,
असंज्ञदसम् बंघा, अवसे १६१ णिद्दाणिद्दा- गिद्धि-अर्णत	सासणसम्माहरी ग्राहरी बंघा। पदे सा अबंघा। ग्यलापयलाः थीण- गणुबंधिकोधः माण- (त्थिवेद-तिरिक्ख-	२ ३२ "	वेद-णबुंस् वरणीय - सादांवेद पुरिसवेद	रेण इत्यिवेद्-पुरिस- ग्यवेद्रपसु पंचणाणाः -चउदसणाचरणीय णीयचदुसंजळण :जसकिचि-उद्यागोद- याणं को बंघो को	
तिरि क्ख ग इ उज्जोब-अप दुभग-दुस्स	ाण-चडसंघडण — पामोग्गाणुपुव्यि — स्ट्यिद्दायगद्द — र-भणादेज्ज-णीचा वंधी को अवंधो ?	২২৩	यष्टिउवस् बंधा, अ १७१ बेट्टाणी व		
१६२ मिञ्छाइडी वंधा । परे	सासणसम्माइट्टी वंघा, अवसेसा		१७२ णिहा पर १७३ असादावे		२४८ २४ ९
भवंषा ।		"	१७४ एकद्वाणी	भोषं।	. 11

स्त्र संस्था	सृत्र	äs	सूत्र संख्य	स्त्र	ă s
१७५ अप स्थानस १७६ प स्यवसा र	ाणावरणीयमोघं । गाव्रणीयमोघं ।	૨ ૫૧ ૨ ૫૪	अवं	मसंजलणस्य को वंघो को iघो ?	२६८
ओघं। १७८ अवगद्वेद णीय-चउदं	जाव तित्थयरे ति पद्ध पंचणाणावर- सणावरणीय-जस— वागोव-पंचंतराइयाणं	"	र्आ सर प्रदे	भयद्दी उबसमा सबा बंधा। भयद्दिवादरद्वायः बरिम गयं गंतुण वंधो बोच्छिक्रदि। वंधा, अवसेसा मवंधा। तायाणुवादेण कोधकसाईसु	२६९
की वंधी के १७९ अणियदिण सांपराइय सुदुमसांप		२६४	बर स्ट रा १८९ मि	ाणावरणीय-[च उद्देसणा- णीय-सादावेदणीय-]चदुसँज- ग-जसिफित्ति-उच्चागीद-पंच- द्याणं को वंधो को सर्वधो ? च्छाइट्टिपदृढि जाव अणि-	. "
उजदि। य अवंधा।	रेंद्र बंधा, अवसेसा			हे ति उवसमासवा वंधा। १ वंधा, अवंधा णत्य।	ફ 00
	ोयस्स की बंधी की	,,		ाणी ओर्घ।	ર૭૨
मबंधो ?		2 54	1	व पञ्चक्खाणाबरणीयमोघं।	રહ્ય
	पदुडि जाब सजोगि-			रेसवेदे ओघं।	२७५
अद्धार स	षा । सजोगिकेविल- रिमसमयं गंतूण वंघो दि । यदे वंघा, अव- षा ।	,,	अ १९४ म	स्स-रिद जाब तित्थयरे सि १घं। ।णकसाईसु पंचणाणावर- ।य-चउदंसणाबरणीय सादा-	,
अवंघो ?	रणस्स को बंधो को उवसमासवाबंधा।	१ ६६	व	र्षीय-तिष्णिसंज्ञळण-जस- सि उच्चागोद-पंचेतराह्याणं । वंधी को अवेधो !	,,
अणियष्टि भागे गंत्र	बाद्रसाप् संखेजने ण बंधो बोडिस्रज्जदि । अवसेसा मबंधा ।	,,	य	ाच्छाइट्टिप्पहुडि जान मणि- ही उवसमा सना बंधा। परे घा, मबंघा णत्यि।	२७६
को सर्वधे		२६७	ŧ	द्वाणि जाव पुरिसवेद-कोध- जसमाणमोधं।	,,
गणियहिः संबोज्जे	उवसमा सवा बंधा। गदरद्वाप सेसे सेसे मागे गंत्रण बंधा गि। वदे बंधा, अव		श १९८ म	स्स-रिद् जाव तित्थवरे चि ोषं। पदस्साईसु पंचणाणावर- पिर-षडदंसणावरणीव-सादा-	
क्षेत्रा भव		,,		दणीय-दोण् णसंत्रहण-त्रस -	

२१३ सादावेदणीयस्स को बंधो को

. 966

अवंधो ?

क्काउ-मणुसार-देवाउ-तिरि---

क्यानर-मञ्जलगर-देवगर-पंकि-

				,	٠.,
स्त्र र	संख्या सूत्र	δâ	स्व संख्या	सूत्र	.58
	मसंजन्समानिष्टिपहाडे जाव बीवकसावनीन्रागळहुमत्था नंबा। यहे बंबा, अवंधा वस्थि। सेसमोर्च जाव तित्थवरे सि। वत्वरिमसंजनसम्मानिष्टिपहाडे	२ ८८ -	केवलिव गंत्रूण वं वंघा, अ २६५ संजमा	ाचा वोष्टिङम्बदि । यदे विसेसा अबंधा । गुवादेण संखदेसु प्रण	६९७
२१६	ति भाणिद्वं । मणपञ्जवणाणीसु पंचणाणा-	२८९	२२६ णवरि	राणियंगो । वेसेसो सादावेदणीयस्स १ को अवंधो ?	३९८
	बरणीय-चउदंसणावरणीय — जसकिचि उच्चागोद पंचंतराइ- याणं की वंधी को अवंधी ?	२ ९५	२२७ पमत्तसं	। का मवधाः जदप्पहुद्धि जाच सजोगि वंधा । सजोगिकेवछि-	·. "
२१७	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सुहुम- सांपराह्यउवसमा स्ववा बंघा। सुहुमसांपराह्यसंजद्ञाप चरिमसमयं गंगुण वंधो बोच्छि-		वंधी वो अवसेस	चरिमसमयं गंत्र्ण च्छिज्जदि। पदे बंधा, ।। अयंधा।	"
२१८	उत्तरि । पदे वधा, अवसेसा अवंधा । णिद्दा पयलाणं को वंधो को	,,	संजदेस सादावे	यछेदोवट्टावणसुद्धि — ऽ पंचणाणावरणीय — इणीय-लोभसंजलण — त्ते उच्चागोद-पंचंतरा-	
	अवंधो ? पमत्तसंजदण्यहुद्धि जाव अपुन्व-	,,	1	के। बंधो को अबंधो ? जदप्पहुडि जाच अणि-	"
	करणपद्दुउवसमा खवा वंधा। अपुरुवकरणद्वापः संखेजजदिमं		बंधा, अ	समा खबा बंघा । परे वंघा जित्य । गपज्जवजानिमंगे ।	६९९ ३००
	भागं गंतृण बंधो वोच्छिज्जदि । पदे बंधा, अवसेसा अवंदा ।	६९६	५३१ परिहार	सुद्धिसंजरेस पंच-	400
२२०	सादावेदणीयस्स को बंघो की अवधो ?	,,	सादावे	रणीय-छदंसणावरणीय- रणीय—चदुसंजुरूण— द- हस्स – रदि-भय —	
	पमससंजद्पदुढि जाव खीण- कसायवीयरायछदुमत्था वंघा। पदे वंघा, अवंघा णत्थि।	,,	दुगुंछ। वेउव्य	५ ६२२	
	सेसमोधं जाव तित्थयरे ति । णवरि पमससंजदव्यहुडि ति भाषिद्व्यं ।	,,	सरीरअं फास-दे	नोवंग वण्ण गंच-रस- वाणुपृथ्वि अगुरुवलडुअ परधातुस्सास-पद्मश्य-	,
	केवस्रणागीसु सादावेदसीयस्स को वंद्यो को अवंद्यो ?	२९७	विद्वाया	गइ-तस-बादर-वञ्जल- रीर-थिर−सुह–सुक्क-	

२४२ उवसंतकसायवीवरागछदुमत्था

.,

सूत्र सुस्सर-भावेज्ज-जसकित्त---जिमिन तिस्थयरुवागोव-पंच-तराइयाणं को बंधो को अबंधो? 303 १३२ पमत्तः अप्यमत्तसंजवा बंधा । पदे बंधा, अबंधा गरिध। 30₽ २३३ असादावेदणीय-अरदि-सोग-अधिरः-असुद्द−अजसकिश्ति---णामाणं को बंधो को अबंधो ? 304 २३४ पमत्तसंजवा बंधा। एवे बंधा. अवसेसा अवंधाः। 308 २३५ देवाउअस्स की बंधी की अबंधो ? २३६ पमत्तसंजदा अप्पमतसंजदा भणमत्तसंजद्वाए संखेजने भागे गंतूण बंधी बोच्छिजजदि। एदे बंधा, अव सेसा अबंधा। 3019 २३७ आहारसरीर-आहारसरीरंगी-वंगणामाणं को बंधो की अवंधो ? २३८ अप्यमत्तरंजवा वंधा । एदे बंघा. अवसेसा अवंधा । २३९ सुदुमसांपराइयसुद्धिसंजवेसु पंचणाणावरणीय-चडवंसणा---वरणीय-सादावेदणीय-जस-कित्ति-उचागोद-पंचंतराह्याणं को बंधो को अवंधो ? ३०८ २४० सहमसांपराहयउवसमा खवा वंघा। पदे वंघा, अवंघा णस्थि। ,, २४१ जहाक्सावविहारसुद्धिसंजवेसु

सादावेदणीयस्स की वंधी की

३०९

अवधो ?

सीजकसाय बीयराय छुदुमत्था सजोगिकेवली बंधा । सजोग-केवलिअग्राप चरिमसमयं गैतुण [बंधो] वोव्छिज्जदि । वरे बंधा. अवसेसा अबंधा। 306 २४३ संजवासंजवेस पंचणाणावर-णीय-छदंसणावरणीय-सादा --सार-अटकसाय--पुरिसवेद---हस्स-रवि-सोग-भय-दुगंछ-देवाउ देवगइ पंचिदियजादि---वेडब्बिय रोजा- कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-घेउव्यय — स्वरीर अंगोचंग-ष्ठणा-गंध-रस्र--फास-देवगइपाओग्गाणुपुब्बी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविद्वायगर्-तस-बादर-पञ्जल — पत्तेयसरीर — थिराथिर-सहासुद्द - सुभग--सस्सर-आवेज-जसकिन-अजसकित्रि-णिमिण-तित्थ--यरुच्चागोद-पंचंतराष्ट्रयाणं को वंधो को अवंधो ? 310 २४४ संजदासंजदा बंधा। एदे बंधा, सर्वधा परिधा २४५ असंजवेस पंचणाणाधरणीय-छत्रंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रवि-अरदि-सोग-भय-दुर्गुखा-मणुसगइ-देवगइ-पंक्षितिय--जावि-भोरालिय वेडव्स्थिन नेजा-कम्मद्दयसरीर-समग्रदस-संठाण-ओरालिय वेडव्यियशंगी-वंग-चरजरिसहसंध्डल-वच्छ-गंध-रस-फास-मणुसगइ-देवगइ-

(10)	••••	••=		
सूत्र संख्या सूत्र	БВ	सूत्र संख्या	सूत्र	Бâ
६६९ आहारसरीर-आह(रसरीरअंगो- यंगणामाणं को पंघो को अवंघो? अप्यमत्तसंजदा वंबा। एदे पंघा, अवसेसा अवंघा।	३४४	कित्ति-णि	-जसकिसि-अजस- मिण-णीखुच्चागेदः याणं को बंधो व	_
२७० तित्ययरणामाणं को बंबो को अबंघो?असंजदसम्माइट्टीजाव अप्पमत्तसंजदा बंघा । पदे बंधा, अवसेसा अवधा।	३४५	२७७ सन्धे परे २७८ सम्मत्ताण खह्यसम् बाहियणा	माइद्वीसु आभिति	सु
२७१ पम्मलेस्सिपसु मिच्छत्तदंडभी वेरहयमंगी।	३४६	२७९ णवरि व वैधोको	पादावेदणीयस्स । अवंधो ?	कें। ३६४
२७२ सुक्कलेस्सिण्सु जाव तित्थयरे त्ति ओघभंगो।	"		म्मादिष्टिपहुडि ज। वली पंधा । सजोति	
२७३ णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स मणजोगिभंगो ।	३५६		वे। वे।च्छित्रज्ञदि । प	-
२७४ वेट्ठाणि-ए स्कट्ठाणीणं णवगेवज्ञः विमाणवासियदेवाणं भंगो ।	,,	बंधा, अव २८१ वेदयसम्म	संस्ताअवधा। ॥दिद्वीसु पंचणाण	,, π.
२७५ भवियाणुवादेण भवसिद्धियाण- मोघं ।	३५८	वेदणीय	इंस्लगावरणीय-सार चउसंज्ञरूण-पुरिस्	r -
२७६ अभवसिद्धिरसु पंत्रणाणावर- णीय-णवर्दसणावरणीय सादा- साद-भिच्छत-सांग्रस्साय- णवणाकसाय-चदुशाउ-चदुशाउ-चदुशा- पंचजादि-औराहिय-चे डव्यिय- तेजा-कम्मद्रथसरीर-छर्नटाण- ओराहिय-चे उव्यियशंगी- वंग-छस्तेव्यशंगी- वंग-छस्तेव्यशं अगुरुव- सास-चत्तारिआणुपुत्र्यो अगुरुव- छहुव-उवचाद-परधाद-उस्सास- आदाकुजोव-तोविह्यपाद तस- बादर-थावर-सुदुम-पठजत- अपजत पत्त्य-साहाराणसरीर-		गदिःपंचि तेजा कम्भ संठाण चः मध-रस- माणुपुट्ट घाद-परध् पत्तेयसरी सुस्तर ॥ णिमिण-दि	र्रात् भय दुगुळ-नेव दियज्ञादि - बडिवय इधनरीर समज दर इधिवयञ्जगोत्रेग चण्ण स्मान - बुद्धनादिया उस्मास - पुस्प तस्स बादर- पडजस र-चिग- सुम- सुमन प्रोत्य - सुमन्तुम प्राप्य गुरुवागोत् र्यंक को बंधो को अवधो	स- स- - - - - - - - - - - - - - - - - -
थिराथिर-सुहासुह — सुभग— दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-		अप्पमसस्	जिदा वंधा । ए बाणस्थि ।	
		,		44,

	4.1			•	• • /
सूत्र संख्य	ग सूत्र	पृष्ठ सूर	म संख्या	सूत्र	ã8
आ ण २८४ अ	लादावेदणीय अरदि सोग— थिर-अलुह—अजलकिति — ामाणं को बंघो को अयंघो ? संजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव	३६७	बरणीय- जसकिषि याणं को	म्मादिट्टीसु पंचणाणा- चडदंसणावरणीय त उच्चागोद-पंचतराइ- वंघो को अवंघो १	३७२
थ २८५ अ म म ओ स	मचसंज्ञदा बंघा। पदे बंधा, बसेसा अबंधा। एष्ड्यक्षाणावरणीयकोह — गण-माथा- छोह मणुस्साउ- णुसगइ — ओराल्यिसरीर — रातिस्यसरीरअंगोवंग-चज्जरि- हसंघइण – मणुसाणुपुर्वी —	236	सुदुमसां सुदुमसां चरिमस उज्जादे । अवंघा । २९५ णिद्दा-पर	यलाणं को वंध्रो को	,,
२८६ अ वं २८७ प म	ामाणं के। बंधों के। अर्बेंबों ? संजदसम्मादिट्टी बंधा । एदे धा, अवसेसा अर्वधा । च्चक्खाणावरणीयके।इ.माण- ाया ठोमाणं के। वंधे। को बंधों ?	₹ <i>६०.</i> ''	अपुन्वक अपुन्वक जुजहिमं	सम्मादिट्टिप्पहुद्धि जाव त्रणउवसमा बंघा । त्रणउवसमद्धाए संखे- भागं गंमूण बंधो जदि। एदे वंघा, अव-	₹ 9 %
સં સે	संजदसम्मादिट्टी संजदा- जदाबंघा। एदेवंघा, अव- साअवंघा। वाउअस्स को बंधो को	"	२९७ सादावेर अवंधो ! २९८ असंजद	रणीयस्स को बंधो को १ सम्मादिष्टिप्पद्वडि जाव	" ३७५
अ २९० अ स म	विजयस्य जा जा जा संजदसम्मादिहिष्पदुडि जाव व्यापमस्तित्र वंघा । अप्प- सद्धाप संखेजे भागे गंतूण चो बेष्टिकुज्जित्र । पदे वंघा,	३७१	वंधा। प २९९ असादारे अधिरः-	कसायवीयरागछडुमत्था दि वंघा, अवंधा णत्थि वेदणीय-अरादि-सोग- -असुह-अजसकिसि — को वंधो को अवंधो १	
ब २९१ झ वं	वा वा १७०० जार्ग २२ १ २५। विसेसा अवंधा । ग्रहारसरीर-भाहारसरीरंगो- गणामार्णको वंघो को वंधो ?	,, ইওহ	पमत्तसं अवसेस ३०१ अपच्च	सम्मादिष्टिप्पहुडि जाब जदा बंघा । पदे बंघा, 11 अबंधा । क्खाणावरणीयमोहि—	"
	प्पमत्तसंज्ञदा बंधा ।	"	णाणिमं ३०२ णवरि	गा। आउवं णत्थि।	" ३७७

प्रष्ठं

(₹●)	परिचार				
सूत्र संख्या	सूत्र	<u> বিদ্রু</u>	सूत्र संख्या	स्≉	98
वंधो को अ		३ ७७	व्यय-ते	पंचिदियजादि-चेऽ ज्ञा-कम्मइयसरीर स् तंठाण -वेउव्वियकं	नम-
[वंधा]। अवंधा।	मादिट्टी संजदासंजदा एदं बंधा, अवसेसा क्षेत्रसंजलणाणं को	,,	वंग वण्ण पुब्वी-अ परघादः	ा गंध रस-फास देव गुरुअलडुअ उवधार उस्सास पसत्थविह बादर पज्जत्त पत्ते	त्तणु- र — ाय-
३०६ असंजदसम् अणियद्दी उ यद्दिउवसम	भववाः मादिद्विष्पद्वुडि जाव वसमा बंधा। अणि- ।द्वाप सेसे संखेरजे वंबो वेक्टिस्स्वादि ।	,,	सरीर थि आदेजा वि को वंधो	ार-सुह-सुभग-सुस्स् जमिण तित्थयरणार को अवंधो ? तस्मादिद्विपद्वद्वि उ	ार- माणं ३७९
	अवसेसा अवंधा। iजलणाणं को वंधो ?	,, ₹७८	अपुत्रवकः भागे गंत्	(ण इवसमा वंधा 'णुवसमद्गाण संखे ण वंधो वोच्छिज्जी	दे।
अणियटी उ यद्विउवसम	मादिष्टिप्पहुद्धि जाव विसमा बंधा। अणि- द्धाए सेसे सेसे मागे गंतुण बंधे।	1	३१५ आहारसः वंगाणं के	, अवसेसा अर्थघा रीर आहारसरीरअं । यंथो को अर्थघो ! पुब्वकरणउवसमा स	गोः- ? ,,
सेसा अवंघ	है। पदे वैधा, अव- ा। गस्स को वैधो को	,,	भागे गं ज्जादि । अवंधा।	णुवसमद्धाप संखे तृण वंधा वाहि पदे वंधा, अवसे	छ- स्रा ,,
भणियद्दी उ यष्टिउवसम	मादिट्टिप्पहुडि जाव वसमा बंधा। अणि- द्धाप चरिमसमयं बोब्झिज्जदि। एदे				
	सा अवंधा। य-दुर्गुछाणं को	,, ३ ७ ९	३२० सण्णिया	गुवादेण सण्णी प्रयरे ति ओघभंगो	मु । "
अपुव्यकरण अपुव्यकरणु	गइद्विष्पहुडि जाव उवसमा बंधा । वसमदाए चरिम- बंधो वोच्छिज्जदि।		३२२ असण्णीस्	वक्तवुदंमणिभंगो । १ अभयसिद्धियभंगे वादेण भाहार ए	३८७ ते। ,.
	वसेसा अवधा।	,,		सु कम्मद्यभंगी।	346

२ अवतरण-गाथा-सूची

新耳	संख्या गाथा	पृष्ठ अन्यत्र कहा	क्रम संख्या	गाया	विष्ठ	अन्यत्र कहा
१६	अगुरुअलहु उवघादं	१७	२२ पणत्रण्या	इर वण्णा	રષ્ઠ	
ર૪	आगमचक्कु साह्	२६४ व. सा. ३-३४	९ पण्णरस	कसाया विणु	१२	
٤s	इत्थि-णउंसयवेदा	१ ८	१८ पंचासुहर	वंघडणा	१८	
٩१	उवरिस्लपंचर पुण	२४ गो. क. ७८८	१० पुन्तु सव स	संसाओं	१३	
२०	चदुपच्च(गो बंधो	., ", ააა	१ यंधेण य	संजे।गो	3	
१५	णाणंतरायदसयं	হ ড়	३ वंधोदय	पुरुवं वा	c	
१२	णाणंतरायदंसण	१५	ч "	,,	,,	
११	तित्थयर-णिरय-देव।उ	अ१४	२ वंधो वंध	विही पुण	,,	
२ ३	दस अट्टारस दसयं	२८ गो.क. ७९२	८ मिच्छत्तः	भय-दुगुंछा	१२	
દ્	दम चदुरिगि सत्तार	सर१ ,, २६३	१३ सत्तावीसे	संदाओं	१५	
ی	देवाउ देवचउक्काहा	c "	१४ सत्तेताळ	धुवाओ	१६	
ક	पच्चयमामित्तविही	٠.	१९ सांतरणि	रंतरेण य	१९	

३ न्यायोक्तियां

particulation as principle and						
क्रम संख्या न्या	य पृष्ठ	क्रम संख्या	स्याय	бâ		
१ 'जहा उद्देसी तहा वि जाणावण हमी घणे सि उ			णण अविलंबिजण स भावाभावव्यवहारः			
२ 'यवस्ति न तद द्वयमाते	। छंप्य वर्त्तत '	चिरोहाभावादो	1.1	Ę		

४ प्रन्थोल्लेख

१ कसायपाहुड

कसायपाहुडसुत्तेणेदं सुत्तं विरुज्यदि ति उत्ते सच्चं विरुज्यह किंतु। ५६

२ चूर्णिसूत्र

चुण्णिसुत्तकत्ताराणपुवएसेण पत्रण्ण पयडीणपुदयवेष्टेछेदो, चदुजादिः थावराणं सासणसम्मादिद्विस्हि उदयवोष्टेष्टदःभुवगमादो ।

३ महाकर्मप्रकृतिप्राभृत

मिच्छत्तः प्रांदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-च अरिदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-शपन्जत्तः साहारणाणं दसण्हं पयशीणं मिच्छाहद्विस्स चरिमसमयस्मि उद्ययोच्छेदो । एसो महाकम्मपयश्चिपाहुडउवएसो ।

४ व्याकरणसत्र

٩

60

६५

'पप छच्च सामणा 'ति सुत्तेण आदिबुड्डीए कयअकारत्तादी ।

५ सूत्र पुस्तक

अप्यमत्तदाय संखेडजेसु भागेसु गदेसु देवाइअस्य वंश्रो वोच्छिडजिदि क्ति केसु वि सुत्तपोत्थयसु उवलञ्जद ।

५ पारिभाषिक शब्दसूची

	शब्द	प्रष्ट	शब्द	58
अगतिसंयुक्त अगुरुलघु अवश्चदर्शनी	अ	८ १० ३ १८	अज्ञानमिध्यात्य श्रतिचार अध्वान अध्रुष अनग्तानुबन्धी	૨૦ ૮૨ ૮, ૩ ૧ ૮

पारिभाविक	शब्दसूची
-----------	----------

(२१)

शब्द	वृष्ठ	शब्द	бâ
अनर्पित	ę :	अप्टस्थानिक	२०५
अना दिक	è	असंस्थातवर्षायुष्क	298
अ नादेय	۹ ا	असं क्री	20
अ नाहारक	398	असं प्राप्तसृपाटिकासंहनन	१०
अनिवृत्तिकरण	8	असंयत	3 १ २
अनुभाग बन्ध	ર '	असंयतसम्यग्दृष्टि	ષ્ઠ
अनेकान्त	१४५	असंयम	૨ , १૧
अन्तर	६३	असंयम प्रत्यय	२ ५
अन्तरकरण	५३	असातादण्डक	રકર, ૨૭૬
अन्तराय	१०	अस्थि र	१०
अपगतवेद	२६५, २६६	आ	
अपर्याप्त	٩,		
अपूर्वकरण	ક	शाचार्य	હર, હરૂ
अप्कायिक	१९२	आताप	۹, २००
अप्रत्यय	۷	आदेय	23
अप्रत्याख्यानावरणदण्डक	२५१, २७४	आदेश	65
अप्रमत्तसंयत	8	આ નુવર્ધ	٩
अभन्यसिद्धिक	346	आमिनियोधिकश्चानी	२८६
अभिधेय	१	आभ्यन्तर तप	८६
अभीक्ण-अभीक्षणक्कानोपर्य	ोगयुक्तता ७९,९१	आवश्यक	<8
अयशकीर्ति	۹,	आवश्यकापरिहीनता	७२, ८३
अयोगिकेव ली	ષ્ઠ	आहारक	३९०
अरति	१०	आहारककाययोगी	२२ ९
भरहस्त	<i>د</i> ٩	आहारकमिश्रकाययोगी	,,
अरहरतभक्ति	७ ९, ८९	आहारकशरीरद्विक	•
अर्चना	९२	इ	
वर्थापत्ति	२७४	इन्द्रियासंयम	9.8
अर्धनाराचसंहनन	१०	शन्ध्रयासयम	**
अर्पणासूत्र	१९२, १९९, २००	3	
अर्पित	ч	उच्चगोत्र	**
अवधि	રદ્ય	उच्छ्वास	१०
अवधिशानी	२ ८६	उत्तरप्रकृतिबन्ध	· •
अवधिदर्शनी	३१९	उत्तर प्रत्यय	२०
अभ्वोगाढम्लप्रकृति वंध	2	उद्योत	९, २००
म शुभ	१० .	उपघात	१०

शब्द	£ 8	शब्द	<i>দু</i> দ্ধ
ত্ ৰহামক	२६५	क्षपक	२६ ५
उपश्रमसम्यग्दष्टि	३७२	क्षायिकसम्यग्द्रष्टि	\$9.8
उपद्यान्तकपाय	ં પ્ર	क्षीणकषाय	¥
उपसंदार	40	-	
		ग	
ए		गतिसंयुक्त	ے
एक-एक-मूलप्रकृतिबन्ध	2	गंध	१०
एकस्थानदण्डक	হওপ্ত	च	
एकस्थानिक	૨ ૪૧		386
एकान्त मिध्यात्व	२०	चभुदर्शनी	۶ ۱ ۶ ۹
पकेन्द्रिय	٩	चतुरिन्द्रिय	ده , دو
		चारित्रविनय	و , در
પે		चूर्णिस्त्र	`
ऐन्द्र स्वज	९ २	স	
ઐ		जीवसमास	8
		जीवस्थान	ب
औदारिककायये।गी	२०३	जुगुप्सा	و ن
औदारिकमिश्रकाययोगी	इ०५	शुरुता ज्ञानविनय	٠.
औदारिकदारीर	१०	ब्रानावर णीय	۶۰
औदारिकशरीरांगापांग	,,	ज्योतिपी	ર ક દ
क		त	
कल्पवृक्ष	९ २	तिर्थगाय	٩
कवाय	ર, રે લ્	तियेग्गति	
क्यायप्रत्यय	٠, ٠, ૨ ٢, ૨ ५		१ ९२
कापोतलेश्या	३२०, ३३ २		• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
कार्मणकाययांगी	२३ २		११, ७२, ७३
कार्मणदारीर	, , , , , ,	तीर्थकरनामगात्रकर्म	७६, ७८
कीलितसंहनन	,,	तीर्थकरसन्तकसिंक	333
क ारी	,, ,	तेज	₹90
रू णालेश्या	32o	तेजकायिक	१९२
केबल	રદ્દે ક	तेजोलेश्या	222
कवलकानी	२९६	तैजसदारीर	₹•
के बल प्दर्शनी	3 ? ?	त्रस	
भग -लवप्रतिबोधनता	७९, ८५	त्रीन्द्रिय	3

		पारिमाचिव	(२५)	
शब्द		\$8	शब्द	पृष्ठ
	द		निरन्तरवन्धप्रकाति	ર ૭
दर्शनविनय	•	۷۰	निर्माण	₹o.
दर्शनविशुद्धता		હવ	नीचगोत्र	٩
दर्शनावरणीय		१०	नीललेख्या	३२०, ३३१
दुर्भग		•	नैगमनय	Ę
दुस्बर		ŧ°.		
देवगति		,,	q	
देवायु		-	पद्मलेखा	३३३, ३४ ५
देशवती		२५५, ३११	परघात	ţo.
द्रव्यथुत		98	परिहारशुद्धिसंयत	\$0\$
द्रव्यार्थिकनय		3	परोदय	v .
डिस्थानदण्ड क		રહે	पर्याप्त	9.9
द्धिस्था नी		રક્ષ્ય, ૨૭૨	पर्याय	٠, ٤
झीन्द्रिय		٠٠, ١٥٠	पर्यायार्थिकनय	રૂ, ૭૮
		•	पंचेन्द्रियजाति	18
	ध		पंचेन्द्रियतिर्यंच	११२
धर्म		९२	पंचेन्द्रियतिर्येचअपर्याप्त	१२७
धुव			पंचेन्द्रियतिर्येचपर्याप्त	११२
भुववन्ध		१७	पंचेन्द्रियतिर्येचयोनिमती	**
भुवबन्धप्रकृति		,,	पुरुषवेद	१०
धुवदन्धी		"	पुरुषचेददण्डक	२७५
3 · · · ·		,,	पृथिवीकायिक	१९२
	न		प्रकृतिबन्ध	ર, ૭
नपुंसकवेद		ξo	प्रकृतिबन्धन्यु वृद्धेद	ષ
नमंसब		९ २	प्रकृतिसमुत्कीर्तेना	•
नरकगति		•	प्रकृतिस्थानबन्ध	ર
नारकायु		,,	प्रचला	१०
नाराचसंहनन		१ 0	प्रचला प्रचला	٩
निगोद जीव		१ ९२	प्रतिक्रमण	د¢, دلا
निदा		₹o.	प्रत्यक्षवानी	40
निद्रादण्डक		হ ঙ ধ	प्रस्थयविधि	۷
निद्रानिद्रा		•	प्रत्यास्यान	८३, ८५
निरतिचारता		૮ર	प्रत्याख्यानद्ण्डक	₹ ७४ -
निरन्तर		۷	प्रत्यास्थानावरण	٩
निरन्तरबन्ध		१७	प्रत्यासचि	•
9. d. 4x.				

परिशिष्ट

शब्द	ââ	शब्द	äa
अ त्येकशरीर	ţo	1 म	
प्रदेशबन्ध	२	मतिअञ्चानी	2:22
प्रम त्त संयत	8	मनःपर्ययक्तानी	૨ ૭ ૬
प्रमोक्ष	ą	मनुष्यअपर्याप्त	२९५
प्रयोजन	१		{ 30
प्रवचन ७	२, ७३, ९०	मनुष्यगति	११
प्रवचनप्रभावना	७९, ९१	मनुष्यनी	१३०
प्रवचनभक्ति	७९, ९०	मनुष्यपर्याप्त	"
प्रवचन वत्सलता	,,	मनुष्यायु	रर
प्रा ण्यसं यम	સ્ ર	महाकर्म प्रकृति प्राभृत	۹.
प्राधुकपरित्यागता	७२, ८७	महामह	• • •
•		महावती	२५५, २५६
ब		मानदण्डक	२७५
बन्ध	2 2 4	मार्गणास्थान	۷
वन्धक	२, ३, ८	मिथ्यात्व	૨, ૧, ૧ ૧
बन्धन बन्धन	•	मिथ्यादृष्टि	४, ३८६
बन्धनीय	,,	. मूलप्रकृतिबन्ध	ર
बन्धविधान		मूलप्रत्यय	२०
बन्धविधि	" ረ	_	
बन्धव्युच्छेद	ષ	य	
बन्धस्वामित्वविचय	3	यथाख्यातसंयत	३०९
बन्धाध्वान	2	यथाशक्तितप	७९, ८६
	, ७३, ८९	यशकीर्ति	
बहुश्रुतभक्ति	७९,८९	योग	२, २०
वादर	११	योगप्रत्यय	વર
बाह्यतप	૮૬		
		₹	
भ		राति	१०
	i	रस	**
भय	१०		"
भवनवासी	१४६	ह	
भव्यसिद्धिक भेग	३५८		
	१७१	लब्धि	८६
भाषश्रुत •	९१	लि धसंवेगसम्पन्नता	७९, ८६
भुजगारबन्ध	٩	लंड्या	346
	ι	ला भर्ण्डक	<i>قرن8</i> ادم

	पारिभाषिक	-सन्दम् चा	(२७)
शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
वज्ञनारावसंहनन	ę,	श्रुत अज्ञानी	૨૭૧
वज्रवृषभनाराचसंहनन	"	श्चतकेवली	40
वनस्पतिकायिक	१९२	श्रुतश्रानी	२८६
बन्दना	८३, ८४, ९२		
वर्गणा	ર	स	
वर्ण	१०	समता	૮૨, ૮૪
वानव्यन्तर	१७६	समाधि	.,
वायुकायिक	१९२	सम्बन्ध	१, २
विग्रहगति	१६०	सम्यग्द्रष्टि	₹६३
विनय 🕝	<0	सम्यग्मिध्यादृष्टि	8. 363
विनयसम्पन्नता	૭ ૧, ૮૦	सयोगकेवली	8
विपरीतमिथ्यात्व	२०	सर्वतोभद्र	92
विभंगक्रानी	२७९	संख्यातवर्षायुष्क	११६
विरति	૮ર	संबी	346
विद्यायागित	१०	संज्वलन	ţ.
वेदकसम्यक्त्व	"	संयत	ર ષ્ડ
वेदकसम्यग्द्दष्टि	३६४	संयतासंयत	ઇ, રૂર્
वेदना	२	संवेग	-
वदनीय	११	संस्थान	ŧo.
वैकियिककाययोगी	२१५, २२२	सादिक	`.
वैकियिकदारीर	٩	साधारण	٩
वैक्रियिकशरीरांगोपांग	"	साधु	८७, २६४
वैनयिकमिथ्यात्व	२० .	साधुसमाधि	نام, دد
वैयावत्य	22	सान्तर	9
वैयात्रत्ययोगयुक्तता	૭ ૧, ૮૮	सान्तर निरन्तर	۵
ज्य भि चार	≥ o€	सान्तरबन्धप्रकृति	ર હ
ब्युत्सर्ग	دء , د٩	सामायिकछेदोपस्थापनश्र	-
वत	ંટરે	सासादनसम्बग्हिष	8, 300
27		सांशयिकमिथ्यात्व	₹•
श		सुभग	88
शील	૮ર	सुस्वर	१०
शीलवतेषु निरतिचारता	७९, ८२	सुक्म	•
श्च इस्लेख्या	३४६	सुस्मसाम्पराविक	¥
হাম	१०	सुक्मसाम्परायिकसंयत	306
शोक	-,,	स्त्र	41.0

(२८)	परि	शेष्ट		
হা -হ	पृष्ठ	হান্দ্ৰ		पृष्ठ
स्तव	८३, ८४	स्वप्रत्यय		e
स्त्यानगृद्धि	۹.	स्वामित्व		,,
क ी वेद	१०	स्वोदय		•
स्थावर	٩	स्वोदय परोदय		,,
स्थितिबन्ध	વ	,		,,
स्थिर	१०		इ	
स्पर्ध	,,	हास्य		₹ o

